विषय - सूची

खण्ड 'अ'

अध्याय

खण्ड 'ब'

1

साझेदारी खाते
(Partnership Accounts)

भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 4 के अनुसार "साझेदारी उन व्यक्तियो के बीच का सम्बन्ध है जो एक ऐसे व्यापार के लाभो को बाँटने के लिए सहमत हुये है जिसका सचालन उन सबके द्वारा या उन सबकी ओर से उनमे से किसी के द्वारा किया जाता है।"[1] साझेदारी स्थापित करने वाले व्यक्तिगत रूप से 'साझी' और सामूहिक रूप से 'फर्म' कहलाते है।

साझेदारी सलेख
(Partnership Deed)

साझेदारी की परिभाषा से स्पष्ट है कि इसकी उत्पत्ति व्यक्तियो द्वारा किये गये आपसी समझौते से होती है। यह समझौता 'मौखिक' (Oral) हो सकता है अथवा पक्षो के आचरण से 'मनोनीत' (Implied) हो सकता है अथवा 'लिखित' (Written) हो सकता है। इस लिखित समझौते को 'साझेदारी सलेख' (Partnership Deed) कहते है। समझौता लिखित मे होना सर्वोत्तम है ताकि भविष्य मे साझियो के बीच मतभेद होने पर सुगमता से फैसला किया जा सके। साझेदारी सलेख तैयार करते समय प्रयास यह किया जाना चाहिए कि इसमे साझेदारी के समस्त पहलुओ पर शर्तो का समावेश कर लिया जावे। यहाँ पर हिसाब से सम्बद्ध कुछ शर्तो का उल्लेख किया जाता है जिन्हे साझेदारी सलेख मे शामिल किया जाना चाहिए :—

(1) फर्म का हिसाब किस प्रणाली मे रखा जावेगा तथा अंतिम खाते किस दिन तैयार किये जावेंगे।

(2) हिसाब-किताब का वार्षिक अंकेक्षण होगा या नही।

(3) साझियो द्वारा व्यापार मे पूँजी किस अनुपात मे लगाई जावेगी।

(4) पूँजी पर ब्याज दिया जावेगा अथवा नही और दिया जावेगा तो किस दर पर।

(5) आहरण (Drawings) पर ब्याज वसूल किया जावेगा या नही। यदि लिया जावेगा तो किस दर पर।

(6) साझियो द्वारा फर्म को दिये गये ऋण पर किस दर से ब्याज दिया जावेगा।

(7) साझियो को वेतन और कमीशन (यदि दिया जावे) किस दर से मिलेगा।

---

1 "Partnership is the relation between persons who have agreed to share the profits of a business carried on by all or any of them acting for all."
(Sec 4. Indian Partnership Act, 1932)

(8) साझियो मे लाभ-हानि का बँटवारा किस अनुपात मे होगा ।

(9) किसी साझी के प्रवेश पर अवकाश ग्रहण करने पर, उसकी मृत्यु पर अथवा किसी अन्य परिस्थिति में ख्याति का निर्धारण किस प्रकार किया जावेगा ।

(10) किसी साझी के अवकाश ग्रहण करने पर अथवा उसकी मृत्यु पर उसके हिसाब का निपटारा किस प्रकार किया जावेगा ।

(11) 'गार्नर बनाम मरे' नियम लागू होगा अथवा नही ।

समझौते की अनुपस्थिति मे लागू होने वाले नियम
(Rules applicable in the absence of Agreement)

यदि साझियो मे कोई मौखिक, मनोनीत या लिखित समझौता नही हुआ है तो उनके पारस्परिक सम्बन्ध भारतीय साझेदारी अधिनियम, 1932 की धारा 12 से धारा 17 तक में वर्णित नियमो द्वारा शासित होंगे । इनमे से नेता सम्बन्धी नियम निम्नलिखित हैं —

(1) प्रत्येक साझी को फर्म की पुस्तको तक पहुँचने, उनका निरीक्षण करने तथा उनकी प्रतिलिपि लेने का अधिकार होगा ।

(2) व्यापार के सचालन मे भाग लेने के लिए किसी साझी को कोई पारिश्रमिक नही दिया जावेगा ।

(3) फर्म के लाभ–हानि को साझियो मे बराबर-बराबर बाटा जावेगा ।

(4) साझियो को पूजी पर ब्याज नही दिया जावेगा ।

(5) यदि किसी साझी को पूजी पर ब्याज प्राप्त करने का अधिकार दिया गया है तो ऐसा ब्याज केवल लाभ मे से ही दिया जावेगा ।

(6) यदि कोई साझी व्यापार मे अपनी पूजी के अतिरिक्त धन लगाता है तो उस पर 6% वार्षिक ब्याज दिया जावेगा ।

(7) यदि किसी साझी को फर्म का व्यापार उचित रीति से चलाने या फर्म को अचानक किसी सङ्कट से बचाने मे कुछ हानि उठानी पडी हो तो फर्म द्वारा इसकी क्षतिपूर्ति की जावेगी ।

(8) यदि किसी साझी द्वारा जानबूझकर लापरवाही करने से फर्म को हानि होती है तो उस साझी द्वारा इसकी क्षतिपूर्ति की जावेगी ।

(9) ख्याति सहित फर्म की समस्त सम्पत्तिया साझियो द्वारा केवल व्यापार के उद्देश्यो के लिए रखी और प्रयुक्त की जावेंगी ।

(10) यदि कोई साझी फर्म से कुछ गुप्त लाभ कमाता है तो उसे फर्म को उस लाभ का हिसाब देना होगा और उसका भुगतान भी करना होगा ।

(11) यदि कोई साझी फर्म के व्यापार के समान अथवा उससे प्रतिस्पर्धा करता हुआ व्यापार करता है तो उसे ऐसे व्यापार मे कमाये गये लाभ का फर्म को हिसाब देना होगा और उसका भुगतान भी करना होगा ।

(12) यदि फर्म के सगठन मे कुछ परिवर्तन होता है तो पुनर्गठित फर्म मे साझियो के अधिकार व कर्तव्य वही होंगे जैसे पुनर्गठन के पूर्व थे ।

(13) जब एक निश्चित अवधि के लिए बनाया गया फर्म उस अवधि के पश्चात् भी व्यापार करता रहे तो साझियो के पारस्परिक अधिकार और कर्तव्य पूर्व की भाति ही रहेंगे ।

एकाकी व्यापारी और साझेदारी फर्म के लेखों में भिन्नता
(Partnership Accounts distinguished from Sole Trader's Accounts)

व्यवसाय सगठन के एकाकी व्यवसाय एव साझेदारी फर्म दो अलग-अलग रूप है। इन दोनो व्यवसाय सगठनो मे लेखे समान सिद्धातो के आधार पर किए जाते है तथा दोनो मे एक ही प्रकार की प्रारम्भिक लेखा पुस्तके एव खाता बहियें रखी जाती है। वर्ष के अत मे साझेदारी फर्म की खाता बहियो से अतिम खाते बनाने मे भी वही सिद्धात अपनाये जाते है जो एकाकी व्यवसाय के अतिम खाते बनाते समय अपनाये जाते है। लेकिन साझेदारी फर्म मे एक से अधिक व्यक्ति व्यवसाय के मालिक या साझेदार होते है, अत प्रत्येक साझेदार की पूजी व आहरण पर ब्याज, उनको दिये जाने वाले वेतन तथा कमीशन इत्यादि को फर्म के लाभ हानि खाते मे अलग से दिखाया जाता है तथा लाभ या हानि को एक निश्चित अनुपात मे उनमे वितरण किया जाता है। फर्म के चिट्ठे मे भी साझेदारो की पूजी सम्बन्धी विवरण दायित्व पक्ष की ओर अलग-अलग दिखाये जाते है।

एकाकी व्यवसाय का मालिक एक व्यक्ति होता है, अत व्यवसाय काल मे किसी नये साझी के प्रवेश अथवा वर्तमान मालिक के निष्कासन का प्रश्न ही नही उठता। यदि एकाकी व्यवसायी की मृत्यु हो जावे तथा उसके उत्तराधिकारी द्वारा उक्त व्यवसाय को चालू न रखा जावे तो वह व्यवसाय समाप्त हो जाता है। ऐसी परिस्थिति मे व्यवसाय की सम्पत्तियो को बेचकर लेनदारो को भुगतान कर दिया जाता है। व्यवसायी के स्वेच्छा से व्यवसाय को बद करने या दिवालिया घोषित होने पर भी यही विधि अपनाई जाती है। किन्तु एकाकी व्यवसायी के विपरीत साझेदारी फर्म के जीवन काल मे इस प्रकार की विशेष परिस्थितिया उत्पन्न होती ही रहती है। नये साझियो के प्रवेश, किसी वर्तमान साझी के निष्कासन तथा मृत्यु सम्बन्धी घटनाये घटित होने पर फर्म के लेखो मे विशेष प्रकार के समायोजन करने पड़ते है। इसी प्रकार साझेदारी फर्म के विघटित या समाप्त होने पर उसके लेखो को बद करने के लिए एक विशेष विधि अपनाई जाती है। प्रस्तुत अध्याय मे साझेदारी फर्म के लेखो सम्बन्धी इन्ही विशेष परिस्थितियो का तथा उनमे किये जाने वाले विशेष प्रकार के लेखो का अध्ययन किया गया है।

लाभ वितरण एव साझियों के पूंजी खाते
(Distribution of Profits and Partners' Capital Accounts)

लाभ वितरण (Distribution of Profits)—साझियो मे फर्म के शुद्ध लाभ को एक निश्चित अनुपात मे बाटने के पूर्व लाभ-हानि खाते मे, साझेदारी सलेख की शर्तों के अनुसार, निम्नलिखित समायोजन किये जाते हैं—

(1) पूंजी पर ब्याज—यदि साझियो ने व्यापार मे असमान मात्रा मे पूजी लगाई है तथा साझेदारी सलेख मे उन्हे एक निश्चित दर पर ब्याज दिये जाने की शर्त का समावेश है तो साझियो की पूजी पर ब्याज लाभ हानि खाते के डेबिट पक्ष मे दिखाया जावेगा।

(2) आहरण पर ब्याज—जब साझी पूँजी पर ब्याज देना तय करते है तो वे प्राय आहरण पर ब्याज वसूल करना भी तय करते हैं। ब्याज की दर साझेदारी सलेख मे लिख दी जाती है और ब्याज आहरण के दिन से वर्ष के अन्त तक का वसूल किया जाता है। आहरण पर ब्याज लाभ हानि खाते के क्रेडिट पक्ष मे दिखाया जाता है।

(3) वेतन (Salary)—जब फर्म में कुछ साझी अन्य साझियों से अधिक कार्य करते हैं तो साझेदारी सलेख के अनुसार उन्हें एक निश्चित राशि, वेतन या कमीशन के रूप में दिये जाने की शर्त तय की जा सकती है और इस प्रकार का वेतन या कमीशन लाभ हानि खाते के डेबिट पक्ष में दिखाया जाता है।

उपरोक्त समायोजन करने के पश्चात् शुद्ध लाभ साझियों के मध्य उस अनुपात में बाँट दिया जाता है जो साझेदारी सलेख में लिखा होता है।

साझियों के पूँजी खाते (Partners' Capital Accounts)—'एकाकी व्यापारी एवं साझेदारी फर्म के लेखों में भिन्नता' शीर्षक के अन्तर्गत यह बतलाया जा चुका है कि फर्म में प्रत्येक मालिक या साझेदार के लिए अलग-अलग पूँजी खाते खोले जाते हैं। ये पूँजी खाते स्तम्भाकार (In Columnar form) बनाये जा सकते हैं। फर्म में ये पूजी खाते दो विधियों में से किसी भी एक विधि द्वारा रखे जा सकते हैं, जो निम्नलिखित हैं —

(1) परिवर्तनशील अथवा चल पूँजी खाते (Fluctuating Capital Accounts)—यदि प्रत्येक साझी के पूँजी खाते में पूँजी की रकम, आहरण, पूँजी और आहरण पर ब्याज, वेतन और लाभ व हानि में उसका हिस्सा आदि सब व्यवहारों का लेखा किया जाता है तो पूजी खाते का शेष प्रतिवर्ष बदलता रहेगा। ऐसा पूँजी खाता परिवर्तनशील पूँजी खाता कहलाता है। इस विधि के अनुसार प्रत्येक साझी के लिए पुस्तकों में केवल एक पूँजी खाता (Capital Account) ही खोला जाता है।

(2) अपरिवर्तनशील अथवा अचल पूँजी खाते (Fixed Capital Accounts)—प्रायः साझियों में यह समझौता हो जाता है कि उनके द्वारा लगाई गयी पूँजी स्थिर रहेगी और उसमें कोई घट-बढ़ नहीं होगी। ऐसी दशा में पूँजी खाते में पूँजी के अलावा अन्य कोई राशि नहीं लिखी जाती। ऐसा पूँजी खाता 'स्थायी पूँजी खाता' (Fixed Capital Account) कहलाता है। जब यह विधि अपनाई जाती है तो प्रत्येक साझी के लिये एक 'चालू खाता' (Current Account) और खोला जाता है जिसमें पूँजी के अतिरिक्त अन्य समस्त व्यवहारों (यथा, पूँजी व आहरण पर ब्याज, वेतन, आहरण, लाभ अथवा हानि, आदि) का लेखा किया जाता है।

Illustration 1

Rahim and Karim entered into partnership on 1st January, 1967 with a capital of Rs 10,000 and Rs 2,000 respectively, their profit sharing ratio being 3 2.

Each partner was to be credited with interest on his capital at 5% p a. In addition, Karim was to be credited with Rs 200 p m for management The drawings were to be charged with interest at 5% p a The drawings were as follows —

Date	Rahim	Karim
	Rs	Rs
31st March	600	800
30th June	400	800
30th Sept	400	600

Profits of the business for 1967 after charging all the expenses but before adjusting interest on Capital and Drawings and Karim's salary were Rs. 6,000

Make the necessary calculations of interest, show the distribution of profits and prepare the Partners' Capital Accounts according to (i) Fixed Capital Account System and (ii) Fluctuating Capital Account System

रहीम और करीम क्रमश. 10,000 रु० और 2,000 रु० की पूंजी लगाकर 1 जनवरी, 1967 को साझी बने । उनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 2 है।

प्रत्येक साझी को पूँजी पर 5% वार्षिक दर से ब्याज क्रेडिट किया जाना था । इसके अतिरिक्त करीम को प्रबन्ध के लिए 200 रु० मासिक क्रेडिट किया जाना था । आहरण पर 5% वार्षिक दर से ब्याज वसूल करना था । आहरण निम्नप्रकार थे —

तारीख	रहीम	करीम
	रु०	रु०
31 मार्च	600	800
30 जून	400	800
30 सितम्बर	400	600

समस्त खर्चे डेबिट करने के पश्चात् लेकिन पूँजी और आहरण पर ब्याज तथा करीम के वेतन का समायोजन करने से पूर्व व्यवसाय के 1967 के लाभ 6,000 रु० थे।

ब्याज की गणना करिये, लाभ का वितरण दिखाइये तथा साझियों के खाते (i) अपरिवर्तनशील पूँजी विधि एवं (ii) परिवर्तनशील पूँजी विधि से बनाइये।

Solution

Calculation of Interest on Drawings on 31st Dec, 1967

Rahim	Amount Rs.	Period	Rate	Interest
	600	9 months	5%p a	Rs. $600\times\frac{5}{100}\times\frac{3}{4}=$ Rs 22 50
	400	6 months	5%p a	Rs. $400\times\frac{5}{100}\times\frac{1}{2}=$ Rs 10
	400	3 months	5%p a	Rs $400\times\frac{5}{100}\times\frac{1}{4}=$ Rs. 5
			Total Interest=Rs	$(22{\cdot}50+10+5)=$ Rs. 37 50
Karim	800	9 months	5%p. a	Rs $800\times\frac{5}{100}\times\frac{3}{4}=$ Rs 30
	800	6 months	5%p a	Rs $800\times\frac{5}{100}\times\frac{1}{2}=$ Rs 20
	600	3 months	5%p a	Rs $600\times\frac{5}{100}\times\frac{1}{4}=$ Rs 7 50
			Total Interest = Rs	$(30+20+7{\cdot}50)=$ Rs 57 50

Profit and Loss Account
for the year ending 31st Dec., 1967

	Rs.	P.		Rs.	P.
To Interest on capital a/c Rahim Rs. 500 (On Rs. 10,000 @ 5%) Karim Rs. 100 (On Rs 2,000 @ 5%)	600	—	By Balance b/d	6,000	—
To Karim's Salary a/c	2,400	—	,, Interest on Drawings a/c. Rahim Rs 37·50 Karim Rs. 57·50	95	
To Partners' Capital a/cs (net profit) Rahim Rs 1,857 Karim Rs 1.238	3,095	—			
	6,095	—		6,095	—

(1) Fixed Capital Account System

Capital Accounts

		Rahim Rs.	Karim Rs			Rahim Rs.	Karim Rs.
1967 Dec 31	To Balance c/d	10,000	2,000	1967 Jan 1	By Cash a/c	10,000	2,000

Current Accounts

		Rahim Rs	Karim Rs			Rahim Rs.	Karim Rs
1967 Dec 31	To Drawings a/c	1,400·00	2,200 00	1967 Dec. 31	By Interest on Capital a/c	500	100
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	37·50	57·50	,, ,,	,, Salary a/c	—	2,400
,, ,,	,, Balance c/d	919·50	1,480 50	,, ,,	,, P & L. a/c	1,857	1,238
		2,357 00	3,738 00			2,357	3,738

Drawings Accounts

		Rahim Rs.	Karim Rs.			Rahim Rs.	Karim Rs.
1967 March 31	To Cash a/c	600	800	1967 Dec. 31	By Current a/c	1,400	2,200
June 30	,, Cash a/c	400	800				
Sept. 30	,, Cash a/c	400	600				
		1,400	2,200			1,400	2,200

(ii) Fluctuating Capital Account System

Capital Accounts

1967		Rahim Rs.	Karim Rs.	1967		Rahim Rs	Karim Rs
Dec 31	To Drawings a/c	1,400·00	2,200 00	Jan. 1	By Cash a/c	10,000	2,000
				Dec. 31	By Interest on Capital a/c	500	100
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	37.50	57·50	,, ,,	By Salary a/c	—	2,400
,, ,,	,, Balance c/d	10,919.50	3,480 50	,, ,,	By P.&L. a/c	1,857	1,238
		12,357.00	5,738.00			12,357	5,738

Drawings Accounts

1967		Rahim Rs	Karim Rs	1967		Rahim Rs.	Karim Rs
March 31	To Cash a/c	600	800	Dec 31	By Capital Accounts	1,400	2,200
June 30	To Cash a/c	400	800				
Sept. 30	To Cash a/c	400	600				
		1,400	2,200			1,400	2,200

नोट—साझियो के पूँजी खाते, चालू खाते अथवा आहरण खाते पृथक-पृथक भी बनाये जा सकते है, लेकिन स्तम्भाकार बनाना सुविधानुकूल होगा।

बन्द हुये साझेदारी खातो में समायोजन (Adjustment of Closed Partnership Accounts)—कभी-कभी किसी विशेष अवधि के लिये फर्म के खाते बन्द होने के पश्चात् ज्ञात होता है कि पूँजी अथवा आहरण पर व्याज नही लगा अथवा किसी साझी को वेतन नही मिला और इस प्रकार लाभ-हानि का विभाजन गलत होगया, अथवा कभी-कभी साझी, खाते बन्द होने के पश्चात्, किसी साझी को पिछली तारीख से वेतन देना तय कर लेते है या पूँजी पर व्याज देना आदि तय कर लेते है, ऐसी स्थिति मे जर्नल प्रविष्टियो द्वारा भूल को सुधारा जा सकता है अथवा नये समझौते को प्रभावी किया जा सकता है।

Illustration 2

Deepak, Ravi and Bhawani are equal partners Their Capital Accounts on Ist January, 1967 were —

Deepak Rs 30,000, Ravi Rs 60,000, Bhawani Rs 60,000

After the accounts for the year 1967 have been prepared, it is discovered that interest at 5% p a, as provided in the partnership agreement, has not been credited to the Partners' Capital Accounts before distributing profits.

It is also agreed that Bhawani be credited with a salary of Rs. 200 p. m. with effect from 1st Jan., 1967.

Instead of altering the signed Balance Sheet, the partners decide to make adjusting journal entry at the beginning of the next year.

Give the necessary journal entry.

दीपक, रवि और भवानी बराबर के साझी हैं। 1 जनवरी 1967 को उनके पूँजी खाते इस प्रकार थे —

दीपक 30,000 रु०; रवि 60,000 रु०, भवानी 60,000 रु०

1967 के खाते तैयार होने के पश्चात् ज्ञात होता है कि साझेदारी सलेख की शर्त के अनुसार लाभ बाँटने से पहले साझियो के पूँजी खातो को 5% वार्षिक ब्याज दर से क्रेडिट नही किया गया।

यह भी तय किया जाता है कि भवानी को 1 जनवरी 1967 से 200 रुपये मासिक वेतन से क्रेडिट किया जाय।

हस्ताक्षरित चिट्ठे मे परिवर्तन करने के बजाय साझी यह तय करते है कि अगले वर्ष के प्रारम्भ मे एक जर्नल प्रविष्टि द्वारा समायोजन कर लिया जाय।

आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

Solution

ब्याज जो पुस्तको में न लिखा गया :—

दीपक —	30,000 रु० पर 5%से	=1,500 रु०
रवि —	60,000 रु० पर 5%से	=3,000 रु०
भवानी—	60,000 रु० पर 5%से	=3,000 रु०
	कुल ब्याज	=7,500 रु०

भवानी को कुल वेतन क्रेडिट किया जाना है=(200 × 12) रु०=2,400 रु०; अत कुल समायोजन करना है=(7,500 + 2,400) रु० का=9,900 रु० का

यदि पुस्तको मे ब्याज और वेतन पहले ही लिख दिया जाता तो प्रत्येक साझी का लाभ 3,300 रु० से कम हो जाता। अत अब समायोजन करने के लिए प्रत्येक साझी के खाते को 3,300 रु० से डेबिट किया जाय तथा प्रत्येक साझी के ब्याज की रकम से उसके खाते को क्रेडिट किया जाय। भवानी के खाते को उसको मिलने वाले वेतन से भी क्रेडिट किया जाय। इन सब डेबिट और क्रेडिट का जो शुद्ध प्रभाव (Net effect) हो, उसकी अगले वर्ष के प्रारम्भ मे जर्नल प्रविष्टि कर दी जायेगी। अग्रलिखित समायोजन तालिका साझियो को डेबिट व क्रेडिट की जाने वाली रकमे तथा शुद्ध प्रभाव बतलाती है :—

समायोजन तालिका (Adjustment Table)

साझी (Partner)	समायोजन (Adjustment)		शुद्ध प्रभाव (Net effect)	
	Dr.	Cr.	Dr	Cr
	रु०	रु०	रु०	रु०
दीपक	3,300	1,500	1,800	—
रवि	3,300	3,000	300	—
भवानी	3,300	5,400 (3,000+2,400)	—	2,100
योग	9,900	9,900	2,100	2,100

समायोजन प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी:—

Journal

			Rs	Rs
1968 Jan. 1	Deepak's Capital a/c	Dr	1,800	
	Ravi's Capital a/c	Dr	300	
	To Bhawani's Capital a/c			2,100
	(Adjustment in respect of interest on capital and salary of Bhawani)			
			2,100	2,100

नोट—यदि पूँजी खाते अपरिवर्तनशील विधि (Fixed Method) से रखे गये है तो साझियो के चालू खाते (Current Accounts) डेबिट या क्रेडिट किये जावेंगे।

Illustration 3

Anup and Bihari had been in partnership for many years as valuers, sharing profits equally. It had been their custom to ignore fees etc earned on uncompleted matters when preparing annual accounts On January 1, 1966 they entered into a new partnership agreement under which the profits (after taking into account the above fees) earned in any year were to be distributed as follows .

Upto Rs. 8,000	equally
Excess over Rs 8,000	one-third to Anup and two-thirds to Bihari

Although they shared profits in accordance with new agreement, they continued to prepare their accounts upon the old basis, i e ignoring fees earned on uncompleted work At the end of 1968 it was pointed out to them that they were not following the terms of their agreement, and it was agreed that such correcting entries, as might be necessary, should be put through as on December 31, 1968.

The profits already dealt with were as follows —

1966, Rs. 7,500, 1967, Rs 8,210, 1968, Rs. 9,350

The outstanding fees on uncompleted work not brought into accounts were —

	Rs.		Rs.
On 31st December, 1965	960	On 31st December, 1966	1,280
On 31st December, 1967	1,550	On 31st December, 1968	920

Assuming that the books were duly closed at the end of each year, give the journal entry necessary to correct the partners' accounts

अनूप और बिहारी मूल्याकनकर्ता के रूप मे कई वर्षो से साझीदार थे तथा बराबर-बराबर लाभ विभाजन करते थे। यह उनका नियम था कि वार्षिक खाते तैयार करते समय अपूर्ण कार्यो पर कमाया गया शुल्क आदि ध्यान मे न रखे। 1 जनवरी, 1966 को उन्होने नया साझेदारी समझौता किया जिसके अन्तर्गत किसी भी वर्ष मे कमाया गया लाभ (उपरोक्त शुल्क को ध्यान मे रखने के बाद) निम्न प्रकार वितरित किया जाना था —

8,000 रु० तक	बराबर-बराबर
8,000 रु० मे अधिक	अनूप को एक तिहाई और बिहारी को दो तिहाई

यद्यपि वे लाभो को नये समझौते के अनुसार बाटते थे तथापि उन्होने अपने खातो को पुराने आधार पर ही तैयार करना चालू रखा अर्थात् अपूर्ण कार्यो पर कमाये गये शुल्क को ध्यान मे नही रखा। 1968 के अन्त मे उनका ध्यान इस ओर आकृष्ट किया गया कि वे अपने समझौते की शर्तो का पालन नही कर रहे हैं और यह तय हुआ कि जो भी समायोजन प्रविष्टि आवश्यक हो, वह 31 दिसम्बर, 1968 को कर दी जाय।

वे लाभ, जो पहले बाटे गये, निम्न प्रकार थे.—

1966—7,500 रु०, 1967—8,210 रु०; तथा 1968—9 350 रु०

अपूर्ण कार्यो पर बकाया शुल्क जो खातो मे नही लाया गया इस प्रकार था —

31 दिसम्बर, 1965 को— 960 रु० 31 दिसम्बर, 1966 को—1,280 रु०

31 दिसम्बर, 1967 को—1,550 रु० 31 दिसम्बर, 1968 को— 920 रु०

यह मानते हुए कि प्रत्येक वर्ष के अन्त मे पुस्तके बन्द करदी गई है, साझियो के खातो को सही करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

Solution .

फर्म का 1965 से 1968 तक का शुद्ध लाभ, जो पुस्तको द्वारा दिखाया गया है,गलत है क्योकि इस शुद्ध लाभ मे वर्ष के अन्तिम दिन पर शुल्क की बकाया राशि सम्मिलित नही की गई है। बकाया शुल्क की राशि को सम्मिलित करने के पश्चात् विभिन्न वर्षो के शुद्ध लाभ की स्थिति इस प्रकार से होगी।

वर्ष	कुल लाभ जो विभाजित हुआ था	वर्ष के अन्तिम दिन पर शुल्क की बकाया राशि (लाभ में जोड़ी गई)	वर्ष के प्रारम्भिक दिन पर शुल्क की बकाया राशि (लाभ में से घटायी गई)	वास्तविक लाभ
	रु०	रु०	रु०	रु०
1965	—	960	—	960
1966	7,500	1,280	960	7,820
1967	8,210	1,550	1,280	8,480
1968	9,350	920	1 550	8 720

विभिन्न वर्षों में साझेदारों के जो लाभ विभाजित किये गये हैं और जो करने चाहिए थे, उनकी स्थिति निम्न प्रकार से है :—

	लाभ जो विभाजित कर दिया गया है (समायोजन से पूर्व)			लाभ जो विभाजित करना चाहिए था (समायोजन के पश्चात्)		
	कुल लाभ	अनूप	बिहारी	कुल लाभ	अनूप	बिहारी
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
1965	—	—	—	960	480	480
1966	7,500	3 750	3,750	7,820	3,910	3,910
1967	8,210	4,070	4,140	8,480	4,160	4,320
1968	9,350	4,450	4,900	8,720	4,240	4,480
योग	25,060	12,270	12,790	25,980	12,790	13 190

चार वर्ष के अन्त में कुल लाभ 25,980 रु० क्रेडिट किया जाना था जबकि केवल 25,060 रु० ही क्रेडिट किया गया है अर्थात् साझेदारों के पूँजी खातों में 920 रु० कम क्रेडिट हुए हैं। अनूप का पूंजी खाता 12,790 रु० से क्रेडिट किया जाना था, जबकि केवल 12,270 रु० से ही क्रेडिट किया गया है अर्थात् अनूप के खाते को 520 रु० से और क्रेडिट करना है। बिहारी का खाता 13 190 रु० से क्रेडिट किया जाना था, परन्तु केवल 12,790 रु० से ही क्रेडिट किया गया है, अर्थात 400 रु० से और क्रेडिट किया जाना है।

31 दिसम्बर 1968 को बकाया शुल्क 920 रु० के समायोजन की निम्नलिखित प्रविष्टि होगी :—

Journal

1968			Rs.	Rs.
Dec. 31	Outstanding Fees a/c Dr		920	
	To Anup's Capital a/c			520
	To Bihari's Capital a/c			400
	(Adjustment in respect of outstanding fees made)			

ख्याति (Goodwill)

"ख्याति एक ऐसी वस्तु है जिसका वर्णन करना आसान है लेकिन परिभाषा देना कठिन। यह व्यवसाय के अच्छे नाम, प्रतिष्ठा और सम्बन्धों से मिलने वाला लाभ है। यह वह आकर्षण-शक्ति है जो ग्राहक को लाती है। यह उन वस्तुओ मे से एक है जो एक जमे हुये पुराने व्यवसाय को प्रथम बार प्रारम्भ हुये नये व्यवसाय से पृथक करती है। ....ख्याति विभिन्न प्रकार के तत्वो के सम्मिश्रण से बनती है। विभिन्न व्यवसायो मे और एक ही व्यवसाय के विभिन्न व्यापारो मे इसका मिश्रण पृथक-पृथक होता है।[1]

एक लेखापाल के लिए ख्याति का तब तक कोई महत्व नही है जब तक कि इसका मूल्यांकन न किया जा सके। अत एक लेखापाल के लिए ख्याति व्यवसाय की प्रतिष्ठा (Reputation) से उत्पन्न होने वाला वह तत्व (Element) है जो कि उस व्यवसाय को इस योग्य बनाता है कि इसमे लगी पूंजी से सामान्य आय की अपेक्षा अधिक आय प्राप्त हो सके।

अधि-लाभ (Super Profits) कमाने की क्षमता को भी ख्याति कहा जाता है। अधि-लाभ से आशय उस शुद्ध लाभ से लिया जाता है जो पूजी पर ब्याज एव प्रबन्ध करने और जोखिम उठाने के प्रतिफल के अलावा प्राप्त होता है।

ख्याति की उत्पत्ति (Origin of Goodwill)

किसी फर्म मे ख्याति निम्नलिखित कारणो से उत्पन्न हो सकती है —

(1) व्यापार गृह की स्थिति,

(2) फर्म द्वारा निर्मित वस्तुओ का स्वभाव अथवा फर्म द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाओ की प्रतिष्ठा,

(3) एकाधिकार (Monopoly) का होना,

(4) साझियो की व्यक्तिगत प्रतिष्ठा,

(5) व्यवसाय मे सन्तुष्ट कर्मचारियो का होना,

(6) व्यापार चिन्ह (Trade Mark), एकस्व (Patent) अथवा किसी प्रसिद्ध व्यापारिक नाम का होना,

(7) वैधानिक नियन्त्रणो का न होना।

---

1 "Goodwill is a thing very easy to describe, very difficult to define It is the benefit and advantage of the good name, reputation and connection of a business It is the attractive force which brings in customers. It is the one thing which distinguishes an old established business from a new business at its first start · ·· ···Goodwill is composed of a variety of elements It differs in its composition in different trades and in different businesses in the same trade" [Lord Macnaughten in Commissioners of Inland Revenue V. Muller (1901), (A. C. 217). Quoted by Spicer and Pegler.]

ख्याति के प्रकार (Kinds of Goodwill)

ख्याति को विभिन्न जानवरो के स्वभाव के आधार पर कई प्रकार का बताया गया है जिसका वर्णन नीचे किया जाता है —

(1) बिल्ली के स्वभाव की ख्याति (Cat Goodwill) —बिल्ली घर को बहुत महत्व देती है। चाहे घर का स्वामी बदल जाय लेकिन वह घर को नही छोडेगी। इसी प्रकार कुछ ग्राहको की पुरानी दुकान मे ही माल खरीदने की आदत पड जाती है चाहे इसके स्वामित्व मे परिवर्तन हो जावे। इस प्रकार की ख्याति का मूल्य सबसे अधिक होता है क्योकि प्रत्येक क्रेता ऐसे व्यापार को खरीदना चाहेगा जिसकी ख्याति स्थायी हो और जिस पर मालिक और कर्मचारियो मे परिवर्तन का प्रभाव न पडे।

(2) कुत्ते के स्वभाव की ख्याति (Dog Goodwill) —कुत्ता हमेशा अपने मालिक के साथ रहता है। इसी प्रकार किसी दुकान मे ग्राहक उसके स्वामी के कारण आकर्षित होते है। स्वामित्व मे परिवर्तन के साथ-साथ ग्राहक भी दुकान को छोड देंगे। यदि ख्याति का स्वभाव इस प्रकार का है तो इसका मूल्य भी कम होगा।

(3) चूहे के स्वभाव की ख्याति (Rat Goodwill) —चूहे का लगाव घर अथवा स्वामी, किसी मे नही होता। इसी प्रकार कुछ व्यवसायो की ख्याति स्थिर नही रहती। ऐसी ख्याति का मूल्य प्राय बहुत कम होता है।

ख्याति का मूल्यांकन (Valuation of Goodwill)

मूल्यांकन की परिस्थितिया—ख्याति एक ऐसी अदृश्य आकर्षण शक्ति है जो ग्राहको को व्यवसाय की ओर आकर्षित करती है। साझेदारी फर्म के व्यवसाय काल मे कुछ परिस्थितिया ऐसी उत्पन्न हो सकती है जिनमे व्यवसाय की ख्याति का मुद्रा मे मूल्याकन करना आवश्यक हो जाता है। ये परिस्थतिया निम्नलिखित हो सकती है —

(1) जब साझियो के लाभ-विभाजन के अनुपात मे परिवर्तन होता है,
(2) जब नया साझी प्रवेश करता है,
(3) जब कोई साझी अवकाश ग्रहण करता है,
(4) जब किसी साझी की मृत्यु हो जाती है,
(5) जब व्यापार बेच दिया जाता है।

मूल्यांकन की विधिया—ख्याति के मूल्याकन की कई विधिया प्रचलित है। किस समय कौन सी विधि काम मे लाई जावे, यह बात परिस्थितियो पर निर्भर करती है। इनमे से प्रमुख विधिया निम्नलिखित है—

(1) औसत लाभ विधि (Average Profit Method) —पिछले कुछ वर्षों (प्राय तीन से पाच) के औसत लाभ का कुछ गुना ख्याति का मूल्य मान लिया जाता है।

उदाहरण —माना कि ख्याति का मूल्याकन पिछले पाच वर्ष के औसत लाभ के तीन गुने मूल्य पर किया जाता है तथा लाभ इस प्रकार है —

2000 रु०, 4000 रु०, 1000 रु० (हानि), 5000 रु० और 6000 रु० क्रमश
ख्याति की राशि ज्ञात कीजिए।

5 वर्ष के लाभो का योग $=(2,000+4,000-1,000+5,000+6,000)$ रु०
$=16,000$ रु०

औसत लाभ $=\frac{16,000}{5}=3,200$ रु०

लाभो का तीन गुना $=3,200\times3=9,600$ रु० ख्याति की राशि होगी।

(2) अधि-लाभ विधि (Super Profit Method) .—इस विधि के अनुसार औसत लाभों मे से साझियो की सेवाओ के लिए पुरस्कार एव फर्म मे लगी हुई वास्तविक पूँजी पर उस प्रकार के व्यापार को लागू होने वाली दर से ब्याज घटाकर 'अधि-लाभ' ज्ञात किये जाते है। इनका कुछ गुना ख्याति का मूल्य समझा जाता है। उदाहरणार्थ, यदि फर्म के औसत लाभ किसी निश्चित समय के लिए 20,000 रु० है और फर्म मे वास्तविक पूँजी 1,00,000 रु० लगी है जिस पर 10% ब्याज अपेक्षित है तथा साझियो का प्रबन्ध के लिए अनुमानित पारिश्रमिक 6,000 रु० वार्षिक है तो फर्म के अधि-लाभ (20,000–10,000 (ब्याज)–6000) रु० = 4000 रु० होंगे। यदि इनका 3 गुना ख्याति का मूल्य रखा गया है तो ख्याति (4000 × 3) रु० = 12,000 रु० होगी।

(3) अधि-लाभ की पूँजीकरण विधि Capitalisation of Super Profit Method) — इस विधि के अनुसार अधिलाभ की रकम का अपेक्षित ब्याज दर पर पूँजीकरण किया जाता है। इस पूँजीकृत मूल्य को ख्याति माना जाता है। जैसे, उपरोक्त (2 मे दिये गये) उदाहरण मे अधिलाभ 4 000 रु० है और अपेक्षित ब्याज दर 10% है, अत अधिलाभ का पूँजीकृत मूल्य 40,000 रु० होगा, यही ख्याति का मूल्य होगा। पूँजीकृत मूल्य से तात्पर्य है कि अपेक्षित ब्याज दर पर अधिलाभ के बराबर ब्याज कितनी धन-राशि पर कमाया जा सकता है।

नया साझी (Incoming Partner)

जब किसी व्यवसाय मे अधिक पूँजी की आवश्यकता होती है अथवा उसके सचालन के लिए सहायता की आवश्यकता होती है तो इसकी पूर्ति उस व्यवसाय मे किसी नये साझी को शामिल करके की जा सकती है। जब कोई व्यक्ति नये साझी के रूप मे किसी व्यवसाय मे प्रवेश करता है तो उसे दो अधिकार प्राप्त होते है —

(क) व्यवसाय की सम्पत्ति मे हिस्सा, तथा
(ख) व्यवसाय के लाभ मे हिस्सा।

प्रथम अधिकार को प्राप्त करने के लिए नये साझी को जो रकम देनी पडती है वह उसकी 'पूँजी' कहलाती है और दूसरे अधिकार को प्राप्त करने के लिए वह जो राशि देता है, वह 'ख्याति' अथवा 'प्रीमियम' कहलाती है। नया साझी यदि पहले से स्वय का कोई व्यवसाय नही कर रहा है तो प्राय वह फर्म मे अपनी पूँजी का हिस्सा रोकडी या बैंक द्वारा चुका देता है जिसकी फर्म की पुस्तको मे प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी .—

Cash a/c Dr
    To New Partner's Capital a/c
(Capital brought in by······)

कभी-कभी नया साझी अपने स्वय के व्यवसाय की सम्पत्तियो एव दायित्वो को एक निर्धारित मूल्य पर फर्म को हस्तान्तरित कर देता है तथा सम्पत्तियो का दायित्वो पर आधिक्य ही उसके हिस्से की पूँजी मान ली जाती है। यदि उसके हिस्से की पूँजी अधिक निश्चित की जाये तो शेष रकम रोकड मे या चैक द्वारा चुका दी जाती है। उदाहरण के लिए किसी फर्म मे एक्स नये साझी के रूप मे प्रविष्ट हुआ। उसने अपने स्वय के व्यवसाय की ये सम्पत्तिया एव दायित्व फर्म को हस्तान्तरित किए—भवन 10,000 रु०: देनदार 7,000 रु० जिनमे से 10% सन्देहात्मक है, स्टॉक 8,000 रु०, लेनदार 5,000 रु०, तथा देय बिल 800 रु०। फर्म मे नये साझी की पूँजी 30,000 रु० निर्धारित की गई जिसका अन्तर एक्स ने रोकड मे चुका दिया। इस परिस्थिति मे फर्म की पुस्तको मे प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी —

Buildings a/c Dr.	10,000	
Debtors a/c Dr.	7,000	
Stock a/c Dr.	8,000	
Cash a/c Dr.	11,500	
To Creditors a/c		5,000
„ Bills Payable a/c		800
„ Provision for Doubtful Debts a/c		700
„ X's Capital a/c		30,000

(Various assets and liabilities brought in by X to contribute his share of capital)

ख्याति सम्बन्धी लेखा (Treatment of Goodwill in Accounts)

त्याग का अनुपात ज्ञात करना—जब किसी व्यवसाय मे नया साझी प्रवेश करता है तो भविष्य मे उस व्यवसाय का लाभ अधिक साझियो मे बँटेगा, अर्थात् पुराने साझियो को नये साझी के पक्ष मे कुछ त्याग करना पडेगा। इस त्याग के बदले मे वे नये साझी से 'ख्याति' के नाम मे एक राशि प्राप्त करेंगे जिसे वे त्याग के अनुपात मे बाँट लेंगे। निम्न उदाहरण द्वारा त्याग का अनुपात निकालना समझाया गया है जिसमे कि नये साझी से प्राप्त ख्याति की रकम पुराने साझियो मे बाटी जावेगी।

उदाहरण—व्यवसाय की ख्याति 6,000 रु० है, पुराने साझी रवि और देव 3 2 के अनुपात मे लाभ विभाजन करते रहे हैं। नया साझी चन्द्र शामिल किया जाता है। तीनो लाभ विभाजन बराबर अनुपात मे करने लगते है।

चूँकि चन्द्र को लाभ मे से $\frac{1}{3}$ भाग मिलता है, अत उसके हिस्से की ख्याति का मूल्य $(6,000 \times \frac{1}{3})$ रु० = 2.000 रु० होगा जो रवि और देव मे उनके त्याग के अनुपात मे बँटेगा।

रवि और देव के त्याग का अनुपात इस प्रकार निकाला जावेगा —

रवि को पहले लाभ मिलता था $= \frac{3}{5}$

और अब लाभ मिलेगा $= \frac{1}{3}$

$\therefore$ रवि का त्याग $= \frac{3}{5} - \frac{1}{3} = \frac{9-5}{15} = \frac{4}{15}$

∴ देव को पहले लाभ मिलता था $=\frac{2}{5}$
और अब लाभ मिलेगा $=\frac{1}{3}$

$$\therefore \text{ देव का त्याग } = \frac{2}{5} - \frac{1}{3} = \frac{6-5}{15} = \frac{1}{15}$$

∴ रवि और देव मे त्याग का अनुपात $=\frac{4}{15} : \frac{1}{15} = 4 : 1$

∴ 2,000 रु० ख्याति रवि और देव मे 4 : 1 के अनुपात मे वँटेगी अर्थात् रवि को 1,600 रु० और देव को 400 रु० ख्याति के मिलेंगे। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि चन्द्र को लाभ में जो $\frac{1}{3}$ हिस्सा दिया गया है वह $\frac{4}{15}$ रवि ने और $\frac{1}{15}$ देव ने दिया है।

ख्याति का मूल्यांकन करना:—त्याग का अनुपात ज्ञात कर लेने के पश्चात् नये साझी के प्रवेश के दिन फर्म की ख्याति का मूल्यांकन किया जायेगा। मूल्यांकन की विधियो के बारे मे पूर्व वर्णन किया जा चुका है। उनमे से किसी भी विधि द्वारा फर्म की ख्याति का मूल्यांकन कर लिया जायेगा।

ख्याति सम्बन्धी प्रविष्टियां—त्याग का अनुपात ज्ञात कर लेने एव ख्याति का मूल्यांकन करने के पश्चात् प्रश्न यह उठता है कि नये साझी के प्रवेश करने पर ख्याति के सम्बन्ध मे फर्म की पुस्तकों मे क्या प्रविष्टिया की जावें। इस सम्बन्ध मे दो मे से एक परिस्थिति हो सकती है—(क) जबकि फर्म की पुस्तको मे पहले से कोई ख्याति खाता न खुला होवे, अथवा (ख) जबकि फर्म की पुस्तकों मे पहले से ख्याति खाता खुला होवे। इन दोनो परिस्थितियो मे प्रविष्टिया निम्न प्रकार होगी :—

(क) जबकि फर्म की पुस्तकों में ख्याति खाता न खुला हुआ हो—यदि फर्म की पुस्तकों मे पहले से ख्याति खाता नही खुला हुआ है तो पुराने साझियो के पूंजी खातो मे ख्याति का लाभ क्रेडिट नही किया हुआ होगा तथा अब नये साझी के प्रवेश पर फर्म की ख्याति का लाभ उनके पूंजी खातो में अवश्य ही क्रेडिट किया जाना चाहिये। इस सम्बन्ध मे ख्याति का निपटारा तीन प्रकार मे से किसी भी एक प्रकार से हो सकता है :—

(i) नये साझी द्वारा पुराने साझियो को निजी रूप में ख्याति की रकम देकर :—कभी-कभी नया साझी ख्याति मे अपने हिस्से की रकम पुराने साझियो को निजी रूप मे दे देता है और वह रकम फर्म के व्यवसाय मे नही लाई जाती। ऐसी दशा मे फर्म की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नही की जाती। यह तरीका ठीक नही है क्योंकि भविष्य में यदि प्रश्न उठे कि फर्म मे ख्याति की रकम लाई गई थी या नही तो लेखा पुस्तको मे इस सम्बन्ध मे कोई प्रमाण नही मिलेगा।

(ii) नये साझी द्वारा फर्म में ख्याति की रकम नकद जमा करा कर :—यदि नया साझी ख्याति मे अपने हिस्से की रकम फर्म मे नकद जमा कराता है तो निम्न प्रविष्टि होगी :—

Cash a/c Dr.
To Goodwill a/c
(Amount of goodwill brought in by new partner.)

ख्याति की यह रकम पुराने साझियो मे उनके त्याग के अनुपात मे उनके पूंजी खातो मे क्रेडिट कर दी जायेगी जिसकी प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी :—

Goodwill a/c Dr.
To Old Partners' Capital accounts
(Amount of goodwill credited to old partners in sacrifice ratio.)

[illegible]

Old Partners' Capital a/cs Dr.

To Cash a/c

(Amount of goodwill withdrawn)

(iii) नये साझी द्वारा ख्याति की रकम नकद न देने पर — [illegible] प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी —

Goodwill a/c Dr

To Old Partners' Capital Accounts

(Goodwill account raised on admission of new partner and credited to old partners in old profit sharing ratio)

यदि सब साझी (नये साझी को शामिल करके) ख्याति खाते को पुस्तकों मे नही रखना चाहते तो सब साझियो के पूंजी खातो को नये लाभ विभाजन के अनुपात मे डेबिट करके ख्याति खाते को अपलिखित कर दिया जायेगा। प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी —

All Partners' Capital Accounts Dr.

To Goodwill a/c

(Goodwill written off in new profit sharing ratio)

इन दोनो प्रविष्टिया का शुद्ध प्रभाव यह पडेगा कि पुराने साझियो के पूजी खाते उतनी रकम से क्रेडिट हो जायेंगे जितनी रकम फर्म की ख्याति मे नये साझी के हिस्से के बराबर है अर्थात् नये साझी के प्रवेश पर उसके हिस्से की ख्याति का लाभ पुराने साझियो के पूजी खातो को मिल जायेगा।

(ख) जबकि फर्म की पुस्तको में ख्याति खाता पहले से ही खुला हुआ हो —ऐसी परिस्थिति मे साझियो को यह निर्णय लेना पडेगा कि नया साझी ख्याति मे अपने हिस्से की रकम नकद लाये या नही। यदि नया साझी ख्याति मे अपने हिस्से की रकम नकद लाता है तो पुराने साझियो की पुस्तको मे खुला हुआ ख्याति खाता बंद करना होगा। प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी—

Old Partners' Capital Accounts Dr

To Goodwill a/c

(Existing goodwill written off in old profit sharing ratio)

नये साझी द्वारा ख्याति की रकम नकद लाने पर प्रविष्टिया पूर्व बतलाये गये नियमो के आधार पर होगी।

यदि नया साझी अपने हिस्से की ख्याति की रकम नकद लाने मे असमर्थ रहता है तो पुराने साझी यह देखेगे कि उसके प्रवेश पर मूल्याकित ख्याति की रकम का उनके पूजी खातो को लाभ मिला हुआ है अथवा नही। यदि कुछ अन्तर है तो ख्याति खाते मे समायोजन करके अपने पूजी खातो मे उसका प्रभाव दर्ज कर लेंगे। इस सम्बन्ध मे अग्रलिखित तीन परिस्थितियो मे से कोई भी एक परिस्थिति हो सकती है —

(i) पुस्तकों में ख्याति खाता सही मूल्य दिखाता हो अर्थात् पुस्तकों में पहले से खुले हुए ख्याति खाते की रकम तथा नये साझी के प्रवेश पर मूल्यांकित ख्याति की रकम एक समान हो। ऐसी स्थिति में ख्याति के समायोजन के लिए कोई प्रविष्टि नहीं की जायेगी क्योंकि पुराने साझियों ने अपने पूंजी खातों में ख्याति का सही लाभ पहले से ही क्रेडिट कर रखा है।

(ii) पुस्तकों में ख्याति खाता कम मूल्य दिखाता हो अर्थात् पुस्तकों में पहले से खुले हुए ख्याति खाते की रकम नये साझी के प्रवेश पर मूल्यांकित ख्याति से कम हो। ऐसी स्थिति में पुराने साझी ख्याति खाते को सही मूल्य पर ले आयेंगे तथा अन्तर का लाभ अपने पूंजी खातों में क्रेडिट कर लेंगे। प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी —

Goodwill a/c Dr

To Old Partners' Capital Accounts

(Goodwill raised at correct figures and benefit credited to old partners in old profit sharing ratio.)

(iii) पुस्तकों में ख्याति खाता अधिक मूल्य दिखाता हो अर्थात् पुस्तकों में पहले से खुले हुए ख्याति खाते की रकम नये साझी के प्रवेश पर मूल्यांकित ख्याति से अधिक हो। ऐसी स्थिति में पुराने साझियों को ख्याति खाते की रकम सही मूल्य पर लाने के लिए अपने पूंजी खातों को डेबिट करना होगा क्योंकि उन्होंने पहले से ख्याति का अधिक लाभ अपने पूंजी खातों में क्रेडिट कर रखा है। प्रविष्टि निम्न प्रकार होगी —

Old Partners' Capital Accounts Dr

To Goodwill a/c

(Goodwill brought at correct figure by debiting old partners' capital accounts in old profit sharing ratio)

Illustration 4

Give journal entries to record the following arrangements in the books of the firm —

(i) Ram and Rahim are partners sharing profits in the ratio of 3 2. Hari enters paying a premium of Rs 2,000 for $\frac{1}{4}$ share in the profits, the relative shares of Ram and Rahim remaining as before. No goodwill account appears in the books

राम और रहीम साझी है जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 2 है। हरी लाभों के $\frac{1}{4}$ हिस्से के बदले में 2,000 रु० प्रीमियम देकर फर्म में प्रवेश करता है। राम और रहीम का लाभ विभाजन का अनुपात परस्पर पूर्व जैसा ही रहता है। ख्याति खाता पुस्तकों में विद्यमान नहीं है।

(ii) Ram and Rahim are partners sharing profits in the ratio of 3 2. Hari enters paying a premium of Rs 2,000 for $\frac{1}{4}$ share in the profits, Ram and Rahim as between themselves sharing future profits and losses equally No goodwill account appears in the books.

राम और रहीम साझी है जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 2 है। हरी लाभो के $\frac{1}{4}$ हिस्से के बदले मे 2,000 रु० प्रीमियम देकर फर्म मे प्रवेश करता है। राम और रहीम आपस मे तय करते है कि वे भविष्य मे लाभ हानि को परस्पर बराबर बाटेंगे। ख्याति खाता पुस्तको मे विद्यमान नही है।

(iii) Ram and Rahim are partners sharing profits in the ratio of 3 2 Hari enters paying a premium of Rs 3,000 for his share of profits in the firm. All the partners decide to share future profits equally No goodwill account appears in the books

राम और रहीम साझी है जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 2 है। हरी लाभ मे अपने हिस्से के बदले 3,000 रु० प्रीमियम देकर फर्म मे प्रवेश करता है। सभी साझी तय करते है कि वे भविष्य मे लाभो को बराबर-बराबर बाटेंगे। ख्याति खाता पुस्तको मे विद्यमान नही है।

(iv) Ram and Rahim are partners sharing profits in the ratio of 3.2 Goodwill appears in the books at Rs 6,000 Hari enters paying a premium of Rs 2,000 for $\frac{1}{4}$ share in the profits, the relative shares of Ram and Rahim remaining as before.

राम और रहीम साझी है जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 2 है। ख्याति पुस्तको मे 6,000 रु० पर विद्यमान है। हरी लाभो के $\frac{1}{4}$ हिस्से के बदले 2,000 रु० प्रीमियम देकर फर्म मे प्रवेश करता है। राम और रहीम का लाभ-विभाजन का अनुपात परस्पर पूर्व जैसा ही रहता है।

(v) Ram and Rahim are partners sharing profits in the ratio of 3 2 Goodwill appears in the books at Rs 6,000 Hari enters paying a premium of Rs 2,000 for $\frac{1}{4}$ share of profits, Ram and Rahim as between themselves sharing future profits and losses equally

राम और रहीम साझी है जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3·2 है। ख्याति पुस्तको मे 6,000 रु० पर विद्यमान है। हरी लाभो के $\frac{1}{4}$ हिस्से के बदले 2,000 रु० प्रीमियम देकर फर्म मे प्रवेश करता है। राम और रहीम भविष्य मे लाभ-हानि को परस्पर बराबर-बराबर बाटने का निश्चय करते है।

(vi) Ram and Rahim are partners sharing profits in the ratio of 3 2. Hari enters Goodwill, valued at Rs 8,000, is to be introduced in the books and Hari is required to provide a capital equal in amount to that of Rahim after the latter has been credited with his share of the goodwill Hari is given $\frac{1}{4}$ share in the profits The capitals of Ram and Rahim before Hari's admission were Rs. 12,000 and Rs 8,000 respectively.

राम और रहीम साझी है जिनका लाभ विभाजन का अनुपात 3 2 है। हरी प्रवेश करता है। ख्याति, जिसका मूल्य 8,000 रु० है, फर्म की पुस्तको मे लाई जाती है। रहीम के पूजी खाते मे उसके हिस्से की ख्याति की राशि क्रेडिट करने के पश्चात् जो शेष बनेगा उसके बराबर रकम हरी अपनी पूजी के रूप मे लावेगा। हरी को लाभों मे से $\frac{1}{4}$ हिस्सा दिया गया है। हरी के प्रवेश के पूर्व राम और रहीम की पूजी क्रमश: 12,000 रु० और 8,000 रु० है।

(vii) Ram, Rahim and Hari are partners sharing profits in the ratio of 3 · 2 1 Goodwill does not appear in the books but is agreed to be worth Rs 12,000 Partners decide to share future profits equally.
राम, रहीम और हरि साझी है जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 : 2 · 1 है। ख्याति पुस्तको मे विद्यमान नही है लेकिन इसका मूल्य 12,000 रु० स्वीकार कर लिया गया है। साझी यह तय करते है कि वे भावी लाभो को बराबर-बराबर बाँटेंगे।

Solution

(i) चूँकि राम और रहीम का लाभ विभाजन का अनुपात हरि के प्रवेश के पूर्व और पश्चात् 3 2 रहता है, अत इनका त्याग का अनुपात भी 3 2 है। इसी अनुपात मे हरि द्वारा लाई गई ख्याति की 2,000 रु० की राशि राम और रहीम के खातो को क्रेडिट की आवेगी।

Journal Entries

			Rs	Rs
	Cash a/c Dr		2,000	
	To Goodwill a/c			2,000
	(Amount of goodwill brought in by Hari)			
	Goodwill a/c Dr		2,000	
	To Ram's Capital a/c			1,200
	To Rahim's Capital a/c			800
	(Goodwill credited to Ram and Rahim in the ratio of their sacrifice)			

(ii) ∵ हरि को $\frac{1}{4}$ हिस्सा लाभ दिया जाता है
और शेष लाभ $\frac{3}{4}$ को राम और रहीम बराबर-बराबर बाँटते है
∴ राम का लाभ मे नया हिस्सा $= \frac{3}{4} \times \frac{1}{2} = \frac{3}{8}$
और रहीम का भी लाभ मे नया हिस्सा $= \frac{3}{4} \times \frac{1}{2} = \frac{3}{8}$ होगा
राम को हरि के प्रवेश के पूर्व लाभ मिलता था $= \frac{3}{5}$
और उसे हरि के प्रवेश के पश्चात् लाभ मिलता है $= \frac{3}{8}$
∴ राम द्वारा किया गया त्याग $= \frac{3}{5} - \frac{3}{8} = \frac{9}{40}$
फिर ∵ रहीम को हरि के प्रवेश के पूर्व लाभ मिलता था $= \frac{2}{5}$
और उसे हरि के प्रवेश के पश्चात् लाभ मिलता है $= \frac{3}{8}$
∴ रहीम द्वारा किया गया त्याग $= \frac{2}{5} - \frac{3}{8} = \frac{1}{40}$

अत हरि द्वारा लाई गई 2,000 रु० ख्याति की राशि राम और रहीम मे 9 और 1 के अनुपात मे बाटी जावेगी।

Journal Entries

			Rs	Rs
	Cash a/c Dr.		2,000	
	To Goodwill a/c			2,000
	(Amount of goodwill brought in by Hari)			
	Goodwill a/c Dr		2,000	
	To Ram's Capital a/c			1,800
	To Rahim's Capital a/c			200
	(Goodwill credited to Ram and Rahim in the ratio of their sacrifice)			

(iii) ∵ राम को हरि के प्रवेश के पूर्व लाभ मिलता था $= \frac{3}{5}$

ग्रौर उसे हरि के प्रवेश के पश्चात् लाभ मिलता है $= \frac{1}{3}$

∴ राम द्वारा किया गया त्याग $= \frac{3}{5} - \frac{1}{3} = \frac{4}{15}$

फिर रहीम को हरि के प्रवेश के पूर्व लाभ मिलता था $= \frac{2}{5}$

और उसे हरि के प्रवेश के पश्चात् लाभ मिलता है $= \frac{1}{3}$

∴ रहीम द्वारा किया गया त्याग $= \frac{2}{5} - \frac{1}{3} = \frac{1}{15}$

अत हरि द्वारा लाई गई 3,000 रु० ख्याति की राशि राम और रहीम मे 4 और 1 के अनुपात मे बाटी जावेगी।

Journal Entries

			Rs	Rs.
	Cash a/c Dr		3,000	
	To Goodwill a/c			3,000
	(Amount of goodwill brought in by Hari.)			
	Goodwill a/c Dr		3,000	
	To Ram's Capital a/c			2,400
	To Rahim's Capital a/c			600
	(Goodwill credited to Ram and Rahim in the ratio of their sacrifice.)			

(iv) **Journal Entries**

			Rs	Rs.
	Ram's Capital a/c Dr		3,600	
	Rahim's Capital a/c Dr		2,400	
	To Goodwill a/c			6,000
	(Existing goodwill written off)			

अन्य प्रविष्टियाँ वही होंगी जो (i) मे की गई है।

नोट —यह मान लिया गया है कि साझी भविष्य मे ख्याति खाता पुस्तको मे नही रखते हैं।

(v) प्रथम प्रविष्टि (iv) मे की गई प्रथम प्रविष्टि होगी और शेष प्रविष्टियाँ वही होगी जो (ii) मे की गई हैं।

(vi) **Journal Entries**

			Rs	Rs.
Goodwill a/c	Dr.		8,000	
To Ram's Capital a/c				4,800
To Rahim's Capital a/c				3,200
(Goodwill raised in books.)				
Cash a/c	Dr.		11,200	
To Hari's Capital a/c				11,200
(Capital brought in by Hari.)				

(vii) प्रथम विधि :

∵ राम का पहले लाभ मे हिस्सा था $= \frac{3}{6}$

और उसका अब लाभ मे हिस्सा है $= \frac{1}{3}$

∴ राम द्वारा किया गया त्याग $= \frac{3}{6} - \frac{1}{3} = \frac{1}{6}$

फिर ∵ रहीम को लाभ मे पहले हिस्सा मिलता था $= \frac{2}{6}$

और उसे लाभ मे अब हिस्सा मिलता है $= \frac{1}{3}$

अत रहीम ने कोई त्याग नही किया और उसे अधिक लाभ भी नही मिला

फिर ∵ हरि को लाभ मे अब हिस्सा मिलता है $= \frac{1}{3}$

और उसे लाभ मे पहले हिस्सा मिलता था $= \frac{1}{6}$

∴ हरि को अधिक लाभ मिलता है $= \frac{1}{3} - \frac{1}{6} = \frac{1}{6}$

अत हरि को $\frac{1}{6}$ लाभ राम के हिस्से मे से मिला है। इसके बराबर ख्याति का मूल्य है $= \frac{12000}{6}$ रु० =2,000 रु०। इसके समायोजन के लिए निम्नलिखित प्रविष्टि करनी होगी —

Journal Entry

			Rs	Rs.
Hari's Capital a/c	Dr.		2,000	
To Ram's Capital a/c				2,000
(Amount of goodwill adjusted on change of profit sharing ratio)				

द्वितीय विधि—इस विधि के अनुसार ख्याति पूरी राशि से साझियो के खाते मे लाभ विभाजन के पुराने अनुपात में क्रेडिट कर दी जाती है और नये अनुपात मे अपलिखित कर दी जाती है।

Journal Entries

Particulars		L.F.	Rs	Rs.
Goodwill a/c	Dr.		12,000	
To Ram's Capital a/c				6,000
To Rahim's Capital a/c				4,000
To Hari's Capital a/c				2,000
(Goodwill account raised according to old profit sharing ratio.)				
Ram's Capital a/c	Dr		4,000	
Rahim's Capital a/c	Dr		4,000	
Hari's Capital a/c	Dr.		4,000	
To Goodwill a/c				12,000
(Goodwill account eliminated according to the new profit sharing ratio.)				

नोट—दोनों विधियों का वास्तविक प्रभाव समान होगा।

सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन (Revaluation of Assets and Liabilities)—यदि फर्म की पुस्तकों में दिखाई गई सम्पत्तियों का बाजार-मूल्य किसी साझी के प्रवेश के समय पुस्तक मूल्य से बढ़ गया है अथवा दायित्वों का मूल्य कम हो गया है तो पुराने साझी नये साझी को इसका लाभ नहीं देना चाहेंगे और इसी प्रकार यदि सम्पत्तियों का बाजार-मूल्य नये साझी के प्रवेश के समय पुस्तक मूल्य से कम हो गया हो अथवा दायित्वों का मूल्य अधिक हो गया हो तो नया साझी इस हानि को नहीं उठाना चाहेगा। इसलिए नये साझी के प्रवेश पर सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन कर लिया जाता है और इससे होने वाले हानि या लाभ को पुराने साझियों में लाभ-विभाजन के पुराने अनुपात में बाँट दिया जाता है। इस सम्बन्ध में दो सम्भावनाएं हो सकती हैं—(i) सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुस्तक-मूल्यों में परिवर्तन कर दिया जाय, (ii) सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुस्तक मूल्यों में कोई परिवर्तन न किये जाय।

(i) **सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुस्तक-मूल्यों में परिवर्तन**—सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुस्तक मूल्यों में परिवर्तन करने के लिए जिस खाते के जरिये समायोजन किया जाता है उसे पुनर्मूल्यांकन खाता (Revaluation Account) अथवा लाभ-हानि समायोजन खाता (Profit and Loss Adjustment Account) कहते हैं। सम्पत्तियों के मूल्य बढ़ने पर लाभ होता है। सम्पत्तियों के मूल्य घटने पर हानि होती है। दायित्वों के मूल्य बढ़ने पर हानि होती है और दायित्वों के मूल्य घटने पर लाभ होता है। लाभ हानि समायोजन खाता अथवा पुनर्मूल्यांकन खाता लाभ होने पर क्रेडिट किया जाता है तथा हानि होने पर डेबिट किया जाता है।

इस सम्बन्ध में निम्न प्रकार से प्रविष्टियाँ की जावेंगी —

1 सम्पत्ति के मूल्य में वृद्धि के लिए (Particular) Asset a/c Dr (वृद्धि की राशि से)
To Revaluation a/c
(Increase in the value of asset brought into books.)

सम्पत्ति के मूल्यो में कमी के लिए	Revaluation a/c Dr. To (Particular) Asset a/c (Decrease in the value of asset on revaluation.)	(कमी की राशि से)
दायित्वो के मूल्यो में वृद्धि के लिए	Revaluation a/c Dr. To (Particular) Liability a/c (Increase in the value of liability on revaluation.)	(वृद्धि की राशि से)
दायित्वो के मूल्य में कमी के लिए	(Particular) Liability a/c Dr. To Revaluation a/c (Decrease in the value of liability on revaluation.)	(कमी की राशि से)
प्रायोजन की राशि बढ़ाने पर	Revaluation a/c Dr. To (Particular) Provision a/c (Particular provision raised to Rs .. on revaluation.)	(वृद्धि की राशि से)
प्रायोजन की राशि कम करने पर	(Particular) Provision a/c Dr To Revaluation a/c (Particular provision decreased to Rs. ..on revaluation.)	(कमी की राशि से)

यदि व्यवसाय में कोई कृत्रिम सम्पत्ति (Fictitious Asset) है तो उसे भी समाप्त कर दिया जावेगा। प्रविष्टि इस प्रकार होगी —

	Revaluation a/c Dr. To (Particular) Asset a/c (Asset written off.)	(सम्पत्ति की राशि से)
पुनर्मूल्यांकन खाते का शेष यदि लाभ बताता है।	Revaluation a/c Dr. To Old Partners' Capital Accounts (Revaluation profit credited in old profit sharing ratio)	(लाभ की राशि से) (लाभ-विभाजन के पुराने अनुपात में)
पुनर्मूल्यांकन खाते का शेष यदि हानि बताता है।	Old Partners' Capital a/c Dr. To Revaluation a/c (Revaluation Loss debited in old profit sharing ratio.)	(लाभ-विभाजन के पुराने अनुपात में) (हानि की राशि से).

Illustration 5

Soor and Tulsi share profits in the ratio of 3 : 1 The Balance sheet of the firm on Dec 31, 1967 was as under. (सूर और तुलसी 3 : 1 के अनुपात मे लाभो का विभाजन करते है। 31 दिसम्बर, 1967 को फर्म का चिट्ठा निम्न प्रकार था) —

	Rs.		Rs
Sundry Creditors	4,150	Cash at Bank	2,250
Capital Accounts		B/R	300
Soor	3,000	Book Debts	1,600
Tulsi	1,600	Stock	2,000
		Furniture	100
		Buildings	2,500
	8,750		8,750

On 1st Jan., 1968 Keshav was admitted into partnership on the following terms—(1 जनवरी, 1968 को केशव साझेदारी मे निम्न शर्तों के आधार पर प्रवेश करता है)

(1) Keshav pays Rs 1,000 as Capital and Rs. 500 as goodwill for $\frac{1}{5}$ share. Half the amount of goodwill is to be withdrawn by Soor and Tulsi (केशव 1,000 रु० पूँजी के और 500 रु० लाभ के $\frac{1}{5}$ हिस्से के लिए ख्याति के देता है। ख्याति की आधी रकम सूर और तुलसी द्वारा निकाल ली जाती है।)

(2) Stock and Furniture be reduced by 10%. and 5% Provision for Doubtful Debts be created on Book Debts and B/R (स्टॉक और फर्नीचर का मूल्य 10% कम कर दिया जाय और पुस्तक ऋण तथा प्राप्य बिल का 5% संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन किया जाय।)

(3) Value of Buildings be increased by 20% (भवन का मूल्य 20% से बढा दिया जाय।)

(4) A liability to the extent of Rs. 100 be created in respect of a claim for damages against the firm (फर्म के विरुद्ध हर्जाने के लिए दावे के सम्बन्ध मे एक 100 रु० के दायित्व का निर्माण किया जाय।)

(5) An item of Rs. 65 included in sundry creditors is not likely to be claimed. (विविध लेनदारो मे एक 65 रु० की ऐसी मद शामिल है जिसके मांगे जाने की सम्भावना नही है।)

Record the transactions in the books of the firm assuming that the profit sharing ratio as between Soor and Tulsi remains unchanged. Also prepare the Balance Sheet of the new firm. (यह मानते हुए कि सूर और तुलसी मे लाभ विभाजन का अनुपात अपरिवर्तित रहता है, व्यवहारो का फर्म की पुस्तको मे लेखा करो। नये फर्म का चिट्ठा भी बनाओ।)

Solution :

Journal

			Rs.	Rs.
1968 Jan 1	Bank a/c To Keshav's Capital a/c (Capital brought in by Keshav.)	Dr.	1,000	1,000
"	Revaluation a/c To Furniture a/c To Stock a/c To Provision for Doubtful Debts a/c (Decrease in the value of assets on revaluation)	Dr	305	10 200 95
"	Revaluation a/c To Provision for Contingent Liability a/c (Provision made for the expected liability in respect of claim for damages against the firm)	Dr.	100	100
"	Buildings a/c To Revaluation a/c (Increase in the value of buildings on revaluation)	Dr.	500	500
"	Sundry Creditors a/c To Revaluation a/c (An item worth Rs 65 not likely to be claimed)	Dr.	65	65
"	Revaluation a/c To Soor's Capital a/c To Tulsi's Capital a/c (Profit on revaluation transferred to Soor's and Tulsi's Capital accounts in the ratio of 3 1)	Dr.	160	120 40
"	Bank a/c To Goodwill a/c (Being receipt of goodwill amount from Keshav.)	Dr.	500	500
"	Goodwill a/c To Soor's Capital a/c To Tulsi's Capital a/c (Goodwill credited to Soor and Tulsi.)	Dr	500	375 125
"	Soor's Capital a/c Tulsi's Capital a/c To Bank a/c (Half of the amount of goodwill withdrawn by partners.)	Dr. Dr.	187 50 62 50	250

Main Ledger Accounts

Revaluation Account

1968		Rs	1968		Rs
Jan 1	To Furniture a/c	10	Jan 1	By Buildings a/c	500
,, ,,	,, Stock a/c	200	,, ,,	,, Sundry Creditors a/c	65
,, ,,	,, Provision for Doubtful Debts a/c	95			
,, ,,	,, Provision for Contingent Liability a/c	100			
,, ,,	,, Profit transferred Soor 3/4 Rs 120 Tulsi 1/4 Rs 40	160			
		565			565

Capital Accounts

1968		Soor Rs	Tulsi Rs	Keshav Rs	1968		Soor Rs	Tulsi Rs	Keshav Rs.
					Jan 1	By Balance b/d	3,000	1,600	–
Jan. 1	To Bank a/c	187 50	62 50	—	,, ,,	,, Revaluation a/c	120	40	–
,, ,,	,, Balance c/d	3,307 50	1,702 50	1,000	,, ,,	,, Bank a/c	–	–	1,000
					,, ,,	,, Goodwill a/c	375	125	–
		3,495 00	1,765 00	1,000			3,495	1,765	1,000

Balance Sheet of M/s Soor, Tulsi and Keshav
as on January 1, 1968

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Sundry Creditors Rs 4,150 Less written back Rs 65	4,085	Cash at Bank	3,500
Provision for Contingent Liability	100	B/R Rs. 300 Less Provision Rs. 15	285
Capital Accounts— Soor Rs. 3,307 50 Tulsi Rs 1 702 50 Keshav Rs 1,000	6,010	Book Debts Rs 1,600 Less Provision Rs 80	1,520
		Stock Rs 2 000 Less written off Rs 200	1,800
		Furniture Rs 100 Less written off Rs. 10	90
		Buildings Rs 2,500 Add appreciation Rs 500	3,000
	10,195		10,195

(ii) यदि सम्पत्तियो एवं दायित्वो के पुस्तक मूल्यो में परिवर्तन न किया जाय :—यदि फर्म के साझी सम्पत्तियो एव दायित्वो के मूल्यो मे वृद्धि और कमी के सम्बन्ध मे समायोजन तो करना चाहते है लेकिन इस परिवर्तन को फर्म की पुस्तको मे नही दिखाना चाहते और पुस्तको मे सम्पत्तियो एव दायित्वो का मूल्य पहले जितना ही दिखाना चाहते हैं, ऐसी स्थिति मे स्मरणार्थ पुनर्मूल्याकन खाता (Memorandum Revaluation Account) बनाकर समायोजन की राशि ज्ञात की जावेगी ।

यदि यह राशि 'हानि' (Loss) आती है तो इस सम्बन्ध मे निम्नलिखित प्रविष्टि की जावेगी—

Old Partners' Capital Accounts Dr (लाभ-विभाजन के पुराने अनुपात मे)
To New & Old Partners' Capital Accounts (लाभ-विभाजन के नये अनुपात मे)
(Revaluation Loss adjusted on the admission of the new partner)

यदि यह राशि 'लाभ' (Profit) आती है तो इस सम्बन्ध मे निम्नलिखित प्रविष्टि की जावेगी—

New & Old Partners' Capital Accounts Dr (लाभ-विभाजन के नये अनुपात मे)
To Old Partners' Capital Accounts (लाभ-विभाजन के पुराने अनुपात मे)
(Revaluation Profit adjusted on the admission of the new partner.)

Illustration 6

Solve the illustration no. 5 above, assuming that the values of assets and liabilities are not to be altered in the books of the new firm

उदाहरण न 5 को यह मानते हुये हल करो कि नये फर्म की पुस्तको मे सम्पत्तिया एव दायित्वो के मूल्यो मे परिवर्तन नही किया जा रहा है ।

Solution

समायोजन की राशि ज्ञात करने के लिए स्मरणार्थ पुनर्मूल्याकन खाता (Memorandum Revaluation Account) बनाना होगा जो निम्न प्रकार है — .

Memorandum Revaluation Account

1968			Rs.	1968		Rs
Jan. 1	To Decrease in value of Assets :	Rs		Jan. 1	By Increase in value of Buildings	500
	Furniture	10		,, ,,	,, Decrease in Liabilities	65
	Stock	200				
	Book Debts	80				
	B/R	15	305			
,, ,,	To Contingent Liabilities		100			
,, ,,	To Profit		160			
			565			565

160 रु० का लाभ पुराने साझियों (सूर और तुलसी) में लाभ-विभाजन के पुराने अनुपात (3 . 1) में क्रेडिट किया जावेगा और नये तथा पुराने साझियों में लाभ-विभाजन के नये अनुपात (3 : 1 : 1) में डेबिट किया जावेगा। इस सम्बन्ध में प्रविष्टियां निम्न प्रकार होंगी—

Journal

1968			Rs.	Rs.
Jan. 1	Soor's Capital a/c Dr.		96	
	Tulsi's Capital a/c Dr.		32	
	Keshav's Capital a/c Dr.		32	
	To Soor's Capital a/c			120
	To Tulsi's Capital a/c			40
	(Profit on Revaluation adjusted on the admission of Keshav.)			
,, ,,	Goodwill a/c Dr.		500	
	To Soor's Capital a/c			375
	To Tulsi's Capital a/c			125
	(Goodwill credited to Soor and Tulsi.)			

Capital Accounts

1968		Soor Rs.	Tulsi Rs	Keshav Rs.	1968		Soor Rs	Tulsi Rs	Keshav Rs.
Jan. 1	To Bank a/c	187 50	62 50	—	Jan. 1	By Balance b/d	3,000	1,600	—
,, ,,	To Sundries as per Journal	96.00	32 00	32	,, ,,	,, Sundries as per Journal	120	40	—
,, ,,	To Balance c/d	3,211.50	1,670.50	968	,, ,,	,, Bank a/c	—	—	1,000
					,, ,,	,, Goodwill a/c	375	125	—
		3,495.00	1,765.00	1,000			3,495	1,765	1,000

Balance Sheet of M/s Soor, Tulsi and Keshav on Ist January, 1968

Liabilities		Rs.	Assets	Rs.
Sundry Creditors		4,150	Cash at Bank	3,500
Capital Accounts			B/R	300
Soor— Rs	3 211·50		Book Debts	1,600
Tulsi Rs	1,670·50		Stock	2 000
Keshav Rs	968 00	5,850	Furniture	100
			Buildings	2 500
		10 000		10 000

Illustration 7

The following was the Balance Sheet of Hemu, Pemu and Khemu who share profits in the ratio of 6 : 5 : 3 respectively. (हेमू, पेमू और खेमू, जो 6 : 5 . 3 के अनुपात मे लाभ बाटते है, का चिट्ठा निम्न प्रकार था) :—

		Rs.		Rs
Sundry Creditors		2.090	Goodwill	200
B/P		630	Buildings	5,040
General Reserve		700	Furniture	735
Capital Accounts:			Stock	2,940
Hemu	Rs. 3,990		Debtors	2,646
Pemu	Rs. 3.360		Cash at Bank	889
Khemu	Rs. 1.680	9,030		
		12,450		12.450

Nemu enters the firm and is given $\frac{1}{8}$ share of profits on the following terms (नेमू फर्म मे प्रवेश करता है और उसे लाभ का $\frac{1}{8}$ हिस्सा निम्नलिखित शर्तों के आधार पर दिया जाता है) :—

(1) Nemu brings in Rs. 1,600 as his capital (नेमू 1,600 रु० पूँजी के लाता है);

(2) Furniture be written down by Rs. 92 and stock be depreciated by 10% (फर्नीचर 92 रु० से अपलिखित किया जाय और रहतिये का मूल्य 10%कम किया जाय),

(3) Provision of Rs. 132 be made for outstanding repairs bills. (मरम्मत सम्बन्धी अदत्त बिलो के लिए 132 रु० का आयोजन किया जाय);

(4) Value of Buildings be raised to Rs 6,510 (भवन का मूल्य 6,510 रु० तक बढाया जाय);

(5) Goodwill be fixed at Rs. 1,082 (ख्याति 1,082 रु० निर्धारित की जाय);

(6) Capital of Hemu, Pemu and Khemu be adjusted on the basis of Nemu's Capital by opening the necessary current accounts. (हेमू, पेमू और खेमू की पूँजी नेमू की पूँजी के आधार पर समायोजित की जाय। इसके लिए आवश्यक चालू खाते खोले जाय)।

Give the necessary journal entries, the Revaluation Account, Capital Accounts, Current Accounts. Goodwill Account and also the Balance Sheet of the new firm (आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। पुनर्मूल्यांकन खाता, पूँजी खाते, चालू खाते, ख्याति खाता और नये फर्म का चिट्ठा बनाइये।)

Solution;

Journal

	Particulars		Rs.	Rs.
?	Bank a/c Dr.		1600	
	To Nemu's Capital a/c			1,600
	(Capital brought in by Nemu.)			
	Goodwill a/c Dr.		882	
	To Hemu's Capital a/c			378
	To Pemu's Capital a/c			315
	To Khemu's Capital a/c			189
	(Increase in the value of goodwill credited to the old partners in the ratio of 6 5 . 3.)			
	Revaluation a/c Dr.		518	
	To Furniture a/c			92
	To Stock a/c			294
	To Provision for Repairs a/c			132
	(Decrease in the value of assets and creation of liability in respect of repairs)			
	Buildings a/c Dr.		1,470	
	To Revaluation a/c			1,470
	(Increase in the value of asset.)			
	Revaluation a/c Dr.		952	
	To Hemu's Capital a/c			408
	To Pemu's Capital a/c			340
	To Khemu's Capital a/c			204
	(Profit on revaluation transferred to old partners in the old profit sharing ratio.)			
	General Reserve a/c Dr		700	
	To Hemu's Capital a/c			300
	To Pemu's Capital a/c			250
	To Khemu's Capital a/c			150
	(General Reserve transferred to old partners in the old profit sharing ratio.)			
	Hemu's Capital a/c Dr.		276	
	Pemu's Capital a/c Dr.		265	
	To Hemu's Current a/c			276
	To Pemu's Current a/c			265
	(Transfer of respective surplus to current accounts.)			
	Khemu's Current a/c Dr.		177	
	To Khemu's capital a/c			177
	(Deficiency of Khemu's capital as against the required amount transferred to his current account)			

Ledger Accounts

Revaluation Account

Dr. Cr.

		Rs.			Rs.
?	To Furniture a/c	92	?	By Buildings a/c	1,470
	" Stock a/c	294			
	" Provision for Repairs a/c	132			
	" Capital Accounts Rs.				
	Hemu 6/14 408				
	Pemu 5/14 340				
	Khemu 3/14 204	952			
		1,470			1,470

Hemu's Capital Account

		Rs.			Rs
?	To Transfer to Hemu's Current a/c	276	?	By Balance b/d	3,990
	" Balance c/d	4,800		" Goodwill a/c	378
				" Revaluation a/c	408
				" General Reserve a/c	300
		5,076			5,076

Hemu's Current Account

		Rs.			Rs.
?	To Balance c/d	276	?	By Hemu's Capital a/c	276

Pemu's Capital Account

		Rs.			Rs:
?	To Transfer to Pemu's Current a/c	265	?	By Balance b/d	3,360
	" Balance c/d	4,000		" Goodwill a/c	315
				" Revaluation a/c	340
				" General Reserve a/c	250
		4,265			4,265

Pemu's Current Account

		Rs.			Rs.
?	To Balance c/d	265	?	By Pemu's Capital a/c	265

Khemu's Capital Account

		Rs.			Rs.
?	To Balance c/d	2,400	?	By Balance b/d	1,680
				" Goodwill a/c	189
				" Revaluation a/c	204
				" General Reserve a/c	150
				" Transfer to Khemu's Current a/c	177
		2,400			2,400

Khemu's Current Account

		Rs.			Rs.
?	To Transfer from Khemu's Cap a/c	177	?	By Balance c/d	177

Nemu s Capital Account

		Rs.			Rs.
?	To Balance c/d	1,600	?	By Bank a/c	1,600

Goodwill Account

		Rs			Rs.
?	To Balance b/d	200	?	By Balance c/d	1082
	" Hemu's Capital a/c	378			
	" Pemu's Capital a/c	315			
	" Khemu's Capital a/c	189			
		1082			1082

Balance Sheet of the New Firm as on ...

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	2,090	Goodwill	1,082
Bills Payble	630	Buildings	6,510
Provision for Repairs	132	Furniture	643
Capital Accounts—		Stock	2,646
Hemu Rs. 4,800		Debtors	2,646
Pemu Rs 4,000		Cash at Bank	2,489
Khemu Rs 2,400		Khemu's Current a/c	177
Nemu Rs. 1,600			
	12,800		
Current Accounts—			
Hemu Rs 276			
Pemu Rs 265	541		
	16,193		16,193

नोट—

1. साझियो का लाभ-विभाजन का अनुपात निम्न प्रकार निकाला गया है:—

$\therefore$ नेमू को कुल लाभ का $\frac{1}{8}$ भाग मिलता है

$\therefore$ शेष लाभ बचता है $= 1 - \frac{1}{8} = \frac{7}{8}$

$\therefore$ हेमू का हिस्सा $= \frac{7}{8} \times \frac{6}{14} = \frac{3}{8}$

$\therefore$ पेमू का हिस्सा $= \frac{7}{8} \times \frac{5}{14} = \frac{5}{16}$

$\therefore$ खेमू का हिस्सा $= \frac{7}{8} \times \frac{3}{14} = \frac{3}{16}$

अत हेमू, पेमू, खेमू, व नेमू मे लाभ विभाजन का अनुपात

$= \frac{3}{8} : \frac{5}{16} : \frac{3}{16} : \frac{1}{8}$

$= 6 : 5 : 3 : 2$

2 साझियो की पूजी निम्न प्रकार निकाली गई है:—

नेमू की पूजी के आधार पर फर्म की कुल पूजी = (1600 × 8) रु० = 12,800 रु०

$\therefore$ हेमू की पूजी = $12,800 \times \frac{6}{16}$ रु० = 4,800 रु०

$\therefore$ पेमू की पूजी = $12,800 \times \frac{5}{16}$ रु० = 4,000 रु०

खेमू की पूजी = $12,800 \times \frac{3}{16}$ रु० = 2,400 रु०

3 नये साझी के प्रवेश पर सामान्य सचय पुराने साझियो मे पुराने लाभ-विभाजन के अनुपात मे बांट दिया जावेगा।

Illustration 8

Hari and Ravi were equal partners. On 1st January 1967, Suraj was admitted into partnership on the following terms:—

Suraj to have a one sixth share which he purchased entirely from Hari paying him Rs. 40,000 for that share of goodwill (through the books of the firm). Of this amount Hari is to withdraw Rs. 30,000 and Suraj to bring in proportionate capital. It was further agreed that investments should be reduced to Rs. 18,000 and that plant should be reduced to Rs 29,000 A sum of Rs. 3,000 included in creditors was to be written back as there was no liability to pay the amount. The

Balance Sheet as on 31st December 1966 was as below :—

	Rs.		Rs.
Creditors	1,05,000	Cash at Bank	40,000
Capitals—		Book Debts	60,000
Hari Rs. 60,000		Stock	50,000
Ravi Rs. 60,000	1,20,000	Investments	30,000
		Furniture	10,000
		Plant	35.000
	2 25,000		2,25,000

The profits for 1967 were Rs 60,000 and the drawings were .—
Hari Rs. 15,000 : Ravi Rs. 22,500 , Suraj Rs. 7,500.

Journalise the entries on Suraj's admission and give the Capital Accounts and Balance Sheet on 31st December, 1967.

हरि और रवि बराबर के साझी थे । 1 जनवरी, 1967 को सूरज को साझेदारी में निम्न शर्तों के साथ शामिल किया जाता है—

सूरज को छटवा हिस्सा दिया जाय जो वह पूर्ण रूप से हरि से इसके बदले 40,000 रु० ख्याति (फर्म के जरिये) देकर प्राप्त करता है। इस राशि मे से 30,000 रु० हरि निकाल लेता है । सूरज अनुपातिक पूजी लाता है । यह तय किया जाता है कि विनियोगो को 18,000 रु० तक घटा दिया जाय और प्लान्ट को 29,000 रु० तक घटा दिया जाय । लेनदारो मे शामिल 3,000 रु० की रकम को वापस लिखना है क्योंकि इस राशि को चुकाने का कोई दायित्व नही है । 31 दिसम्बर, 1966 को चिट्ठा इस प्रकार था—

	रु०		रु०
लेनदार	1,05,000	बैंक शेष	40,000
पूजी—		पुस्तक ऋण	60,000
हरि— 60,000 रु०		स्टॉक	50,000
रवि— 60,000 रु०	1,20,000	विनियोग	30,000
		फर्नीचर	10,000
		प्लान्ट	35,000
	2,25,000		2,25,000

1967 के लाभ 60,000 रु० थे और आहरण इस प्रकार थे—
हरि—15,000 रु० ; रवि—22,500 रु० , सूरज—7,500 रु०

सूरज के प्रवेश पर जर्नल मे प्रविष्टियाँ कीजिए । पूँजी खाते तथा 31 दिसम्बर, 1967 को फर्म का चिट्ठा बनाइये ।

Solution—

Journal

			Rs	Rs.
1967 Jan 1	Revaluation a/c Dr.		18,000	
	To Provision for fall in value of Investments a/c			12,000
	To Plant a/c			6,000
	(Decrease in the value of these assets.)			
" "	Sundry Creditors a/c Dr.		3,000	
	To Revaluation a/c			3,000
	(An item being no longer a liability written back)			
" "	Hari's Capital a/c Dr		7,500	
	Ravi's Capital a/c Dr.		7,500	
	To Revaluation a/c			15,000
	(Revaluation Loss transferred)			
" "	Bank a/c Dr		63,000	
	To Suraj's Capital a/c			23,000
	To Goodwill a/c			40,000
	(Amount of goodwill and capital brought in by Suraj)			
" "	Goodwill a/c Dr		40,000	
	To Hari's Capital a/c			40,000
	(Goodwill credited to Hari)			
" "	Hari's Capital a/c Dr		30,000	
	To Bank a/c			30,000
	(Amount withdrawn by Hari.)			

Capital Accounts

		Hari	Ravi	Suraj			Hari	Ravi	Suraj
1967		Rs.	Rs	Rs	1967		Rs	Rs.	Rs
Jan, 1	To Bank a/c	30,000	—	—	Jan 1	By Balance b/d	60,000	60,000	—
" "	" Revaluation a/c	7,500	7,500	—	" "	" Goodwill a/c	40,000	—	—
Dec 31	" Drawings a/c	15,000	22,500	7,500	" "	" Bank a/c	—	—	23,000
" "	" Balance c/d	67,500	60,000	25,500	Dec 31	" P &L a/c (2 3.1)	20,000	30,000	10,000
		1,20 000	90 000	33,000			1,20,000	90,000	33,000

Balance Sheet of Hari, Ravi and Suraj as on 31st Dec., 1967

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
[illegible]		[illegible]	[illegible]		[illegible]
[illegible]			[illegible]		[illegible]
Hari	[illegible]		[illegible]		[illegible]
Ravi	[illegible]		[illegible]	[illegible]	
Suraj	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
		[illegible]	[illegible]		[illegible]
			[illegible]		[illegible]
		[illegible]			[illegible]

[illegible] रु

[illegible] 1,20,000

[illegible] 40,000

1,60,000

[illegible] 15,000 रु

[illegible] 30,000 रु 45,000

1 जनवरी 1967 को हरि [illegible] 1,15,000

[illegible]

[illegible] 1,15,000 रु

[illegible] 1,15000 × $\frac{6}{5}$ रु = 1,38,000 रु

[illegible] = (1,38,000 − 1,15,000) रु = 23,000 रु

(2) लाभ विभाजन का अनुपात इस प्रकार निकाला गया है —

हरि का लाभ = $\frac{1}{2} - \frac{1}{6} = \frac{1}{3}$

रवि का लाभ = $\frac{1}{2}$ पूर्ववत्, सूरज का लाभ = $\frac{1}{6}$

हरि, रवि व सूरज का लाभ-विभाजन का अनुपात = $\frac{1}{3} : \frac{1}{2} : \frac{1}{6}$ = 2 : 3 : 1

(3) 31 दिसम्बर, 1967 का चिट्ठा बनाते समय यह मान लिया गया है कि वर्ष के लाभ ने बैंक शेष में वृद्धि की है और अन्य सम्पत्तियाँ तथा दायित्व पूर्ववत् रहे हैं।

एक साझी द्वारा दूसरे साझी के हिस्से का कुछ भाग वहन करना (Proportion of a partner's share borne by another) —कभी-कभी नये साझी के लाभ का एक हिस्सा किसी पुराने साझी द्वारा वहन कर लिया जाता है। ऐसा प्रायः तब होता है जबकि फर्म के किसी कार्यकर्ता को उस फर्म में साझी बना लिया जाता है।

Illustration 9

Indra and Varuna are partners sharing profits in the ratio of 4 : 3. On 1st January, 1967, Kuber, their manager, is admitted into partnership giving him one-eighth share of the profits.

Kuber, as manager, was receiving a salary of Rs. 500 p. m. and a commission of 5% upon the net profits after charging such salary and commission. It is agreed that any excess over his former remuneration to which Kuber becomes entitled as a partner is to be borne by Indra.

The profit of the firm for 1967 amounted to Rs. 90,000. You are required to show the division of the profit among the partners.

इन्द्र और वरुण साझी हैं जिनका लाभ विभाजन का अनुपात 4 . 3 है। 1 जनवरी, 1967 को उनका मैनेजर कुबेर साझेदारी मे प्रवेश करता है और उसे लाभ का $\frac{1}{8}$–भाग दिया जाता है।

मैनेजर के रूप मे कुबेर 500 रु० प्रति माह वेतन और शुद्ध लाभ का 5% कमीशन (वेतन और कमीशन घटाने के पश्चात्) प्राप्त कर रहा था। यह तय होता है कि कुबेर के साझी बन जाने के कारण उसके पूर्व के पारिश्रमिक से जो अधिक राशि मिलती है वह इन्द्र द्वारा वहन की जावेगी।

फर्म के 1967 के लाभ 90,000 रु० होते है। लाभ का साझियो मे विभाजन दिखाइये।

Solution

Profit and Loss Account

for the year ending 31st Dec, 1967

	Rs	P		Rs.	P.
To Indra (See the note)	44,464	29	By Balance b/d	90,000	—
To Varun	34,285	71			
To Kuber	11,250	—			
	90,000	—		90,000	—

नोट : यदि कुबेर साझी न होता तो इन्द्र और वरुण मे लाभ विभाजन इस प्रकार होता —

		रु० पै०
1967 का लाभ		90,000 00
घटाओ—कुबेर का वेतन	6,000 रु०	
कुबेर का कमीशन (90,000–6,000 का $\frac{5}{105}$)	4,000 रु०	10,000 00
		80,000 00
इन्द्र का हिस्सा $\frac{4}{7}$		45,714 29
वरुण काहि स्सा $\frac{3}{7}$		34,285 71

नये फर्म मे कुबेर का हिस्सा 90,000 रु० का $\frac{1}{8}$=11,250 रु० होता है

∵ कुबेर का पुराना पारिश्रमिक (6,000+4,000) रु०=10,000 रु० है

∴ उसमे (11,250–10,000) रु०=1,250 रु० इन्द्र को वहन करना होगा

और इन्द्र का हिस्सा होगा=(45,714 29–1,250) रु०

=44,464 रु० 29 पैसे

साझी के हिस्से की गारन्टी (Guarantee of a Partner's Share)—कभी-कभी किसी व्यक्ति को (जो प्राय. फर्म का कर्मचारी होता है) फर्म मे जूनियर साझी के रूप मे शामिल कर लिया

जाता है और इसमें यह समझौता हो जाता है कि उसको एक न्यूनतम राशि लाभ में उसके हिस्से के रूप में अवश्य मिलेगी, चाहे फर्म को लाभ हुआ हो या न हो। यह गारन्टी फर्म की तरफ से दी जा सकती है अथवा किसी साझी की ओर से दी जा सकती है। यदि किसी वर्ष फर्म को इतने लाभ न हो कि जूनियर साझी के हिस्से में न्यूनतम राशि आ सके तो जूनियर साझी को न्यूनतम लाभ मिलने में जो हानि होगी उसे गारन्टी देने वाले (फर्म अथवा साझी) को वहन करना होगा।

जब किसी साझी को गारन्टी के अन्तर्गत कोई राशि दी जाती है तो इस सम्बन्ध में यह समझौता भी हो सकता है कि जब उसके हिस्से का लाभ गारन्टी की रकम से अधिक होगा तो गारन्टी देने वाले साझियों को गारन्टी के अन्तर्गत पिछले वर्षों में हुई हानि की रकम इस आधिक्य में से वसूल करने का अधिकार होगा।

Illustration 10

Sharma and Gupta are partners sharing profits in the ratio of 3 : 2. From 1st Jan., 1967 they admit Verma into partnership giving him $\frac{1}{5}$ share of the profits with a guarantee of Rs 2,000 minimum. Sharma and Gupta as between themselves continued to share profits as before. Profits of the firm for 1967 were Rs. 8,000.

Show the division of profits among the partners.

शर्मा और गुप्ता साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 : 2 है। 1 जनवरी, 1967 को वे वर्मा को लाभो में $\frac{1}{5}$ हिस्सा, लेकिन न्यूनतम 2,000 रु० की गारन्टी देते हुए, शामिल करते हैं। शर्मा और गुप्ता परस्पर पूर्वानुसार लाभ-विभाजन करते हैं। फर्म का 1967 का लाभ 8,000 रु० था।

साझियों में लाभ का बटवारा दिखाइये।

Solution

Profit and Loss Account
for the year ending 31st Dec., 1967

	Rs		Rs.
To Sharma		By Balance b/d	8,000
$\frac{3}{5}$ of Rs. (8000–2000)	3,600		
To Gupta			
$\frac{2}{5}$ of Rs (8000–2000)	2,400		
To Verma (Guaranteed amount)	2,000		
	8,000		8,000

बाहर जाने वाला साझी (Outgoing Partner)

जो व्यक्ति किसी फर्म को छोड देता है, वह बाहर जाने वाला साझी कहलाता है। ऐसा तब होता है जबकि या तो वह स्वय स्वेच्छा से अवकाश ग्रहण कर ले, अथवा अन्य साझियो द्वारा उसे निकाल दिया जावे, अथवा उसकी मृत्यु हो जावे। ऐसी दशा मे साझेदारी (Partnership) का विघटन (dissolution) हो जाता है लेकिन फर्म का नही।

जब कोई साझी फर्म छोड़ता है तो यह आवश्यक है कि फर्म द्वारा उसको अथवा उसके कानूनी प्रतिनिधि को देय राशि का निर्धारण किया जाय। इस राशि का निर्धारण निम्नलिखित तरीके से किया जाता है —

(1) बाहर जाने वाले साझी को पूजी पर ब्याज, वेतन आदि, जो साझेदारी सलेख के अनुसार उसको मिलना चाहिए, उसके पूजी खाते मे क्रेडिट कर दिया जावेगा।

(2) यदि साझेदारी सलेख के अनुसार आहरण पर ब्याज वसूल होना है तो इस ब्याज की राशि से पूजी खाता डेबिट कर दिया जावेगा।

(3) आहरण खाते की राशि पूजी खाते को हस्तान्तरित कर दी जावेगी।

(4) यदि कोई साझी लेखा वर्ष के बीच मे अवकाश ग्रहण करता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती है तो लेखा वर्ष के प्रारम्भ से उस तारीख तक का उसके हिस्से का लाभ ज्ञात किया जावेगा और इस लाभ से उसका पूजी खाता क्रेडिट कर दिया जावेगा। लाभ ज्ञात करने के लिए अन्तरिम लाभ-हानि खाता (Interim Profit and Loss Account) बनाया जा सकता है अथवा पिछले वर्ष के लाभ के आधार पर इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

(5) साझेदारी सलेख मे यदि कोई व्यवस्था है तो किसी साझी द्वारा फर्म छोड़ने पर फर्म की सम्पत्तियो एव दायित्वो का पुनर्मूल्याकन किया जावेगा और इस पर होने वाले लाभ या हानि को उसके पूजी खाते मे हस्तान्तरित कर दिया जावेगा।

(6) ख्याति मूल्याकन एव उसका समायोजन भी साझेदारी सलेख की शर्तों के अनुसार कर दिया जावेगा।

देय-राशि का भुगतान—उपरोक्त समायोजन कर लेने के पश्चात् बाहर जाने वाले साझी का पूजी खाता उसको देय रकम बतावेगा जिसके भुगतान की व्यवस्था करनी होगी। इसका भुगतान और इस सम्बन्ध मे लेखा निम्न प्रकार से किया जा सकता है —

(1) बाहर जाने वाले साझी को देय रकम इक-मुश्त दी जा सकती है। ऐसी दशा मे उसका पूजी खाता डेबिट कर दिया जावेगा और रोकड़ खाता क्रेडिट कर दिया जावेगा।

(2) बाहर जाने वाले साझी को किस्तो मे भुगतान किया जा सकता है। ऐसी दशा मे उसके पूजी खाते का शेष उसके ऋण खाते (Loan Account) मे हस्तान्तरित कर दिया जावेगा जिसमे समय-समय पर एक निश्चित दर से ब्याज क्रेडिट किया जाता रहेगा और समय-समय पर चुकाई गई रकम को उस खाते मे डेबिट कर दिया जावेगा।

(3) बाहर जाने वाले साझी को अथवा उसकी मृत्यु पर उसके उत्तराधिकारी को यह राशि वार्षिक वृत्ति के रूप मे भी दी जा सकती है। ऐसी स्थिति मे बाहर जाने वाले साझी के पूजी खाते का शेष 'वार्षिक वृत्ति उचन्त खाते' (Annuity Suspense Account) अथवा 'पूजी उचन्त खाते' (Capital Suspense Account) मे हस्तान्तरित कर दिया जावेगा। इस खाते मे प्रति वर्ष एक निश्चित दर से ब्याज क्रेडिट किया जाता रहेगा और वार्षिक वृत्ति चुकाने पर यह खाता डेबिट कर दिया जावेगा। यदि वार्षिक वृत्ति पाने वाला व्यक्ति इस खाते की पूरी रकम प्राप्त करने से पूर्व ही मर जाता है तो इस खाते का शेष फर्म के अन्य साझियो के पूजी खातो मे लाभ-विभाजन के अनुपात मे क्रेडिट कर दिया जावेगा। लेकिन यदि वार्षिक वृत्ति पाने वाला इस खाते की रकम समाप्त हो जाने के पश्चात् भी जीवित रहता है तो भविष्य मे जो राशि उसे दी जाती है उसे लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर दी जानी चाहिए।

Illustration 11

Pandu, Zandu and Tandu are equal partners. Their Balance Sheet as at 30th June, 1968 was as under (पण्डू, झण्डू और टण्डू बराबर के साथी है। 30 जून, 1968 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था) —

		Rs.		Rs
Sundry Creditors		2,00,000	Buildings	2,00,000
General Reserve		60,000	Furniture	10,000
Capitals–Pandu	Rs 90,000		Stock	1,00,000
Zandu	Rs 90,000		Debtors	1,50,000
Tandu	Rs 70,000	2,50,000	Cash at Bank	50,000
		5,10,000		5,10,000

Tandu retired on 30th June, 1968 and the assets were revalued as under (30 जून, 1968 को टण्डू अवकाश ग्रहण करता है और सम्पत्तियो का निम्न प्रकार से पुनर्मूल्याकन किया जाता है) —

Buildings Rs. 2,51,000, Furniture Rs 5,000, Stock Rs 90,000, Goodwill Rs. 60,000. (भवन 2,51,000 रु०, फर्नीचर 5,000 रु०, रहतिया 90,000 रु०, ख्याति 60,000 रु०)

A provision is to be made for bad and doubtful debts at 10% of the Sundry Debtors. (डूबत और सदिग्ध ऋण के लिए देनदारो पर 10% आयोजन करना है।)

Pass the necessary journal entries and prepare the Revaluation Account, the Capital Accounts, Tandu's Loan Account and Balance Sheet of the new firm (आवश्यक जर्नल प्रविष्टिया कीजिए। पुनर्मूल्याकन खाता, पूँजी खाते, टण्डू का ऋण खाता तथा नये फर्म का चिट्ठा बनाइये।)

Solution

Journal

			Rs	Rs
1968 June 30	Buildings a/c Dr To Revaluation a/c (Increase in the value of asset)		51,000	51,000
" "	Revaluation a/c Dr To Furniture a/c " Stock a/c " Provision for Bad & Doubtful Debts a/c (Decrease in the value of assets and Provision for Bad & Doubtful Debts)		30,000	5,000 10,000 15,000
" "	Revaluation a/c Dr. To Pandu's Capital a/c To Zandu's Capital a/c To Tandu's Capital a/c (Revaluation profit transferred)		21,000	7,000 7,000 7,000

Journal Contd.

1968			Rs.	Rs.
June 30	Goodwill a/c	Dr.	60,000	
	To Pandu's Capital a/c			20,000
	To Zandu's Capital a/c			20,000
	To Tandu's Capital a/c			20,000
	(Goodwill credited)			
" "	General Reserve a/c	Dr.	60,000	
	To Pandu's Capital a/c			20,000
	To Zandu's Capital a/c			20,000
	To Tandu's Capital a/c			20,000
	(General Reserve transferred to Capital Accounts.)			
" "	Tandu's Capital a/c	Dr.	1,17,000	
	To Tandu's Loan a/c			1,17,000
	(Tandu's Capital Account transferred to his loan account)			

Revaluation Account

1968			Rs	1968		Rs
June 30	To Furniture a/c		5,000	June 30	By Buildings a/c	51,000
" "	" Stock a/c		10,000			
" "	" Provision for Bad and Doubtful Debts a/c		15,000			
" "	" Capital a/cs	Rs				
	Pandu	7,000				
	Zandu	7,000				
	Tandu	7,000	21,000			
			51,000			51,000

Capital Accounts

1968		Pandu Rs	Zandu Rs	Tandu Rs	1968		Pandu Rs	Znadu Rs	Tandu Rs
June 30	To Tandu's Loan a/c			1,17,000	June 30	By Balance b/d	90,000	90,000	70,000
" "	" Balance c/d	1,37,000	1,37,000		" "	" Revaluation a/c	7,000	7,000	7,000
					" "	" Goodwill a/c	20,000	20,000	20,000
					" "	" General Reserve a/c	20,000	20,000	20,000
		1,37,000	1,37,000	1,17,000			1,37,000	1,37,000	1,17,000

Tandu's Loan Account

1968		Rs.	1968		Rs.
June 30	To Balance c/d	1,17,000	June 30	By Tandu's Capital a/c	1,17,000

Balance Sheet of the New Firm
as on 30th June, 1968

	Rs			Rs
Sundry Creditors	2,00,000	Goodwill		60,000
Tandu's Loan	1,17,000	Buildings		2,51,000
Capitals—		Furniture		5,000
Pandu Rs. 1,37,000		Stock		90,000
Zandu Rs. 1,37,000		Debtors	Rs 1,50,000	
	2,74,000	Less Provision	Rs. 15,000	1,35,000
		Cash at Bank		50,000
	5,91,000			5,91,000

Illustration 12

In the above illustration, the amount of Rs. 1,17,000 due to Tandu is paid as follows —

Rs 17,000 on lst July, 1968 cash.

Rs. 25,000 and interest at 8% on yearly balance on 30th June each year to redeem the loan by 30th June, 1972.

Give Tandu's Loan a/c as it would appear upto 30th June, 1972.

उपरोक्त उदाहरण मे टण्डू को देय 1,17,000 रु० का भुगतान निम्न प्रकार किया जाता है—

1 जुलाई, 1968 को नकद, 17,000 रु०

25,000 रु० और वार्षिक शेष पर 8% से ब्याज प्रति वर्ष 30 जून को ताकि 30 जून, 1972 तक ऋण का भुगतान हो जाय ।

टण्डू का ऋण खाता बनाइये जैसा कि वह 30 जून, 1972 तक प्रकट होगा ।

Tandu's Loan Account

1968		Rs.	1968		Rs
July 1	To Bank a/c	17,000	July 1	By Balance b/d	1,17,000
1969			1969		
June 30	To Bank a/c (Rs. 25,000+Rs. 8,000)	33,000	June 30	,, Interest a/c (8% on Rs.1,00,000)	8,000
,, ,,	To Balance c/d	75,000			
		1,25,000			1,25,000

Tandu's Loan A/c Contd ..

		Rs			Rs.
1970			1969		
June, 30	To Bank a/c (Rs 25,000+Rs 6,000)	31,000	July 1	By Balance b/d	75,000
" "	To Balance c/d	50,000	1970 June 30	" Interest a/c	6,000
		81,000			81,000
1971			1970		
June 30	To Bank a/c (Rs 25 000+Rs. 4,000)	29,000	July 1	By Balance b/d	50,000
" "	To Balance c/d	25,000	1971 June 30	" Interest a/c	4,000
		54,000			54,000
1972			1971		
June 30	To Bank a/c	27,000	July 1	By Balance b/d	25,000
			1972 June 30	" Interest a/c	2,000
		27,000			27,000

Illustration 13

Black and Blue were equal partners. Blue retires on 31st Dec., 1967 and his son Green joins Black from 1st January, 1968 with one-third share in the profits of the firm The Balance Sheet of the firm on 31st Dec.. 1967 was as follows (ब्लैक और ब्लू बराबर के साझी थे। 31 दिसम्बर, 1967 को ब्लू अवकाश ग्रहण करता है और उसका पुत्र ग्रीन 1 जनवरी, 1968 से फर्म के लाभ मे एक-तिहाई हिस्सा लेते हुये ब्लैक के साथ मिलता है। फर्म का 31 दिसम्बर, 1967 को चिट्ठा इस प्रकार था) —

		Rs.		Rs.
Creditors		1,00,000	Cash at Bank	10,000
Capital—			Debtors	1,50,000
Black Rs.	4,00,000		Stock in trade	1,20,000
Blue Rs	2,30,000	6,30,000	Furniture	50,000
			Buildings	3,00,000
			Goodwill	1,00,000
		7,30,000		7,30,000

On 31st Dec, 1967, Goodwill was valued at Rs 2,00,000 and Buildings at Rs 5,00,000

It was agreed that enough money should be introduced to enable Blue to be paid out and leave Rs. 10,000 cash by way of working capital. Black and

Green were to provide such sums as would make their capitals proportionate to their share of profits. Blue agreed to make a loan to his son Green by transfer from his Capital Account of half the amount which Green had to provide.

Black and Green paid in cash due from them on 5th January, 1968 and the amount due to Blue was paid out on that day. They also decide to write off goodwill completely.

Give Journal entries to record the aforesaid transactions.

(31 दिसम्बर, 1967 को ख्याति का मूल्याकन 2,00,000 रु० और भवन का मूल्याकन 5.00,000 रु० किया गया।

यह तय होता है कि पर्याप्त धन लगाया जाय ताकि ब्लू को भुगतान किया जा सके तथा 10,000 रु० नकद कार्यशील पूँजी के रूप मे रह सके। ब्लैक और ग्रीन इतनी रकम देंगे कि उनकी पूँजी उनके लाभ विभाजन के अनुपात मे हो जाय। ब्लू अपने पूँजी खाते से ग्रीन द्वारा फर्म को देय रकम का आधा हिस्सा उनको ऋण के रूप मे देने के लिए राजी हो जाता है।

ब्लैक और ग्रीन ने उनके द्वारा देय राशि 5 जनवरी, 1968 को दी और उसी दिन ब्लू का भुगतान कर दिया गया। वे ख्याति को पूर्ण रूप मे अपलिखित करने का भी निर्णय करते हैं।

उपरोक्त व्यवहारो का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए।)

Solution

पहले यह ज्ञात करना होगा कि ग्रीन की पूँजी नये फर्म मे कितनी होगी। इसके लिए नये फर्म की कुल पूजी ज्ञात करनी होगी, जो इस प्रकार होगी—

नये फर्म की सम्पत्तियाँ—

	रु०
बैंक शेष	10,000
देनदार	1,50,000
स्टॉक	1,20,000
फर्नीचर	50,000
भवन	5,00,000
ख्याति	2,00,000
	10,30,000
नये फर्म के दायित्व—	
लेनदार	1,00,000
नये फर्म की कुल पूँजी	9,30,000

ब्लैक की पूँजी = 9,30,000 × $\frac{2}{3}$ रु० = 6,20,000 रु०

ग्रीन की पूँजी = 9,30,000 × $\frac{1}{3}$ रु० = 3,10,000 रु०

Journal

Date	Particulars		L.F.	Rs	Rs.
1967 Dec, 31	Goodwill a/c	Dr.		1,00,000	
	Buildings a/c	Dr.		2,00,000	
	To Revaluation a/c				3,00,000
	(Increase in the value of assets.)				
" "	Revaluation a/c	Dr.		3,00,000	
	To Black's Capital a/c				1,50,000
	To Blue's Capital a/c				1,50,000
	(Revaluation profit transferred.)				
" "	Blue's Capital a/c	Dr.		3.80.000	
	To Green's Capital a/c				1,55,000
	To Blue's Loan a/c				2,25,000
	(Loan granted by Blue to Green and the balance of Blue s Capital a/c transferred to his Loan a/c)				
1968 Jan 5	Bank a/c	Dr.		2,25.000	
	To Black's Capital a/c				70.000
	To Green's Capital a/c				1,55,000
	(Amount brought in by Black & Green.)				
" "	Blue's Loan a/c	Dr.		2,25,000	
	To Bank a/c				2,25.000
	(Amount due to Blue paid off.)				
" "	Black's Capital a/c	Dr		1,33,333	
	Green's Capital a/c	Dr.		66,667	
	To Goodwill a/c				2,00.000
	(Goodwill written off)				

नोट —(i) चिट्ठे मे ब्लेक की पूँजी खाते का शेष 4,00,000 रु० है, पुनर्मूल्यांकन खाते का लाभ 1,50,000 रु० उसके पूँजी खाते मे क्रेडिट करने के पश्चात् योग 5,50,000 रु० हो जाता है। फर्म मे उसकी पूँजी चाहिए 6,20,000 रु०, अत वह 70,000 रु० नकद लायेगा।

(ii) फर्म मे ग्रीन की पूँजी 3,10,000 रु० होती है जिसमे से आधी रकम उसके पिता ब्लू के खाते मे से हस्तान्तरित की जायेगी तथा आधी रकम वह नकद में लायेगा।

Illustration 14

Brown and Smith are partners. The partnership deed provides inter alia (ब्राउन और स्मिथ साझी हैं। साझेदारी सलेख मे अन्य बातो के साथ-साथ निम्नलिखित प्रावधान है) —

(1) That the Accounts be balanced on 31st December in each year (खातो का प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को शेष निकाला जायेगा);

(2) That the profits be divided as . Brown One-half, Smith One-third, and carried to a Reserve Account One-sixth (लाभ–विभाजन इस प्रकार होगा : ब्राउन $\frac{1}{2}$, स्मिथ $\frac{1}{3}$ और $\frac{1}{6}$ सचय खाते मे ले जाया जायेगा)

(3) That in the event of the death of a partner, his executors be entitled to be paid out (किसी साझी की मृत्यु के समय उसके निष्पादक को निम्नलिखित प्राप्त करने का अधिकार होगा).—

(a) The capital to his credit at date of death (मृत्यु के दिन उसके पूजी खाते का क्रेडिट शेष -)

(b) His proportion of reserve at date of last Balance Sheet (पिछले चिट्ठे के दिन सचय मे उसका हिस्सा)

(c) His proportion of profits to date of death based on the average profits of the last three completed years (मृत्यु के दिन तक के लाभ मे उसका हिस्सा जो कि पिछले तीन पूर्ण वर्षो के औसत लाभ पर आधारित होगा)

(d) By way of goodwill his proportion of the total profits for the three preceding years (ख्याति के रूप मे पिछले तीन वर्षो के लाभ मे उसका हिस्सा)

On 31st December, 1965, the Ledger Balances were (31 दिसम्बर 1965 को खाता बही के शेष इस प्रकार थे) .—

		Rs.	Rs.
Brown's Capital	...		90,000
Smith's Capital	...		60,000
Reserve	...		30,000
Creditors	...		30,000
B/R	...	20,000	
Investments	...	50,000	
Cash	...	1,40,000	
		2,10,000	2,10,000

The profits for three years were : 1963, Rs. 42,000, 1964, Rs. 39,000 and 1965, Rs 45,000 (तीन वर्षो के लाभ इस प्रकार थे. 1963–42,000 रु०; 1964–39,000 रु०, और 1965 – 45,000 रु०)

Smith dies on Ist May, 1966 (स्मिथ की 1 मई 1966 को मृत्यु होगई ।)

Show the accounts as between the firm and Smith's executors as on May 1, 1966 (1 मई, 1966 को फर्म और स्मिथ के निष्पादको के बीच खाते दिखलाइये ।)

Solution

Account to be rendered to the Executors of Smith

	Rs		Rs
To Balance c/d	1,28,000	By Capital at date of death	60.000
		„ Reserve–2/5ths	12 000
		„ Proportion of profits (4 Months)	5,600
		„ Goodwill	50,400
	1.28 000		1,28,000

average profits of the two preceding years. Goodwill was to be valued on the basis of the profits of the last three financial years.

Babu died on 30th April, 1963. His Capital on 31st December, 1962, when last balance sheet was prepared, stood at Rs 1,50,000 and he had drawn Rs 5,000 during the last four months. The profits for the years 1960, 1961 and 1962 were Rs. 70,000, Rs 1,05,000 and Rs. 1,40,000 respectively.

Prepare Babu's Capital Account showing the amount payable by the firm to his widow

राम, बाबू और हरी साझी हैं जिनका लाभ विभाजन का अनुपात क्रमश 4 2 1 है। मृत साझी के हिस्से के एक भाग को चुकाने के लिए तुरन्त नकद की व्यवस्था करने हेतु, 70,000 रु० की संयुक्त जीवन बीमा पालिसी ली गई थी और उसके लिए चुकाई गई 2,500 रु० वार्षिक प्रीमियम प्रति वर्ष खर्च मानकर अपलिखित की जाती रही।

यह तय हुआ कि किसी साझी की मृत्यु पर मृत्यु की तारीख तक का उसका लाभ में हिस्सा पिछले दो वर्षों के औसत लाभ के आधार पर निकाला जावेगा। ख्याति का मूल्यांकन पिछले 3 वर्षों के लाभ के आधार पर किया जावेगा।

बाबू की 30 अप्रैल 1963 को मृत्यु हो जाती है। 31 दिसम्बर, 1962 को जब अन्तिम चिट्ठा तैयार किया गया था, उसकी पूँजी 1,50,000 रु० थी और उसने पिछले चार महीनों में 5,000 रु० निकाल लिये थे। 1960, 1961 और 1962 के लाभ क्रमश 70,000 रु० 1,05,000 रु० और 1,40,000 रु० थे।

फर्म द्वारा बाबू की विधवा को देय राशि बताते हुये बाबू का पूँजी खाता बनाइये।

Solution

Babu's Capital Account

	Rs		Rs
To Drawings	5,000	By Balance b/d	1,50,000
„ Amount due	2,66,667	„ Profit to date of death	11 667
		„ Goodwill	90,000
		„ Joint Life Policy (2/7 of Rs 70,000)	20,000
	2,71 667		2,71,667

नोट.—(1) लाभ की गणना इस प्रकार की गई है—

∴ पिछले दो वर्षों का कुल लाभ = (1,05,000 + 1,40,000) रु० = 2,45,000 रु०

∴ „ „ औसत लाभ $= \frac{2,45,000}{2}$ रु० = 1,22,500 रु०

∴ चार माह का लाभ $= 1,22,500 \times \frac{1}{3}$ रु० = 40,833 रु०

∴ बाबू का हिस्सा $= \frac{40,833 \times 2}{7}$ रु० = 11,667 रु०

(ii) ख्याति की गणना इस प्रकार की गई है—

पिछले 3 वर्षों का कुल लाभ = (70,000 + 1,05,000 + 1,40,000) रु०
= 3,15,000 रु० (ख्याति)

बाबू का हिस्सा = 3,15,000 × $\frac{2}{7}$ रु० = 90,000 रु०

(iii) गणना निकटतम रुपये तक की गई है।

Illustration 16

In the above illustration, it is agreed that Rs. 66,667 be paid to the widow of Babu immediately and for the balance, she is to be paid an annuity of Rs. 25,000 per year throughout the period of her life. Partners decide to credit for interest $\frac{1}{10}$th of the balance in the annuity account. The first instalment is payable on 31st Dec. 1963 and then every year on 31st December.

The widow dies on 30th April, 1967. Prepare the necessary account.

उपरोक्त उदाहरण में यह तय होता है कि 66,667 रु० बाबू की विधवा को तुरन्त चुका दिये जाय और शेष के लिए उसे जीवन पर्यन्त 25,000 रु० वार्षिक वृत्ति दी जाय। साझी वार्षिक वृत्ति खाते के शेष का $\frac{1}{10}$ ब्याज के लिए क्रेडिट करना तय करते हैं। प्रथम किस्त 31 दिसम्बर, 1963 को और उसके बाद प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को देय है।

30 अप्रैल, 1967 को विधवा की मृत्यु हो जाती है। आवश्यक खाता बनाइये।

Solution

Annuity Suspense Account

Date	Particulars	Rs.	p.	Date	Particulars	Rs.	p.
1963				1963			
April 30	To Bank a/c	66,667	—	April 30	By Babu's Cap a/c	2,66,667	—
Dec. 31	To Bank a/c	25,000	—	Dec. 31	By Interest a/c ($\frac{1}{10}$ of Rs 200,000)	20,000	—
" "	To Balance c/d	1,95,000	—				
		2,86,667	—			2,86,667	—
1964				1964			
Dec 31	To Bank a/c	25,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	1,95,000	—
" "	" Balance c/d	1,89,500	—	Dec 31	" Interest a/c	19,500	—
		2,14,500	—			2,14,500	—
1965				1965			
Dec 31	To Bank a/c	25,000	—	Jan 1	By Balance b/d	1,89,500	—
" "	" Balance c/d	1,83,450	—	Dec. 31	" Interest a/c	18,950	—
		2,08,450	—			2,08,450	—
1966				1966			
Dec 31	To Bank a/c	25,000	—	Jan 1	By Balance b/d	1,83,450	—
" "	" Balance c/d	1,76,795	—	Dec 31	" Interest a/c	18,345	—
		2,01,795	—			2,01,795	—
1967				1967			
Dec. 31	To P.&L a/c	1,76,795	—	Jan. 1	By Balance b/d	1,76,795	—

जीवन-बीमा (Life Policy)

किसी साझी की मृत्यु होने पर, जीवित साझियो द्वारा उसका हिसाब तैयार करके उसको देय रकम का भुगतान उसके उत्तराधिकारियो को करना होता है। यह सम्भव नही है कि इतनी रकम फर्म मे उस समय नकद के रूप मे विद्यमान हो और यदि फर्म के साधनो से इतनी रकम निकाल ली जावे तो फर्म के व्यापार को गहरा धक्का लगना सम्भव है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए यह उचित है कि फर्म के साझी सबके जीवन का फर्म की ओर से संयुक्त बीमा करालें अथवा अलग-अलग बीमा करालें ताकि किसी भी साझी की मृत्यु पर एक पर्याप्त राशि बीमा कम्पनी से प्राप्त हो जावे जिसकी सहायता से मृत साझी के हिस्से का पूरा या आंशिक भुगतान किया जा सके। इस सम्बन्ध मे समय-समय पर प्रीमियम देने तथा पालिसी की रकम प्राप्त होने पर लेखा निम्नलिखित प्रकार से किया जावेगा —

(i) प्रति वर्ष दी गई प्रीमियम को व्यापारिक खर्च मानकर लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर दी जाय और पालिसी की रकम प्राप्त होने पर समस्त साझियो के खाते मे लाभ-विभाजन के अनुपात मे क्रेडिट कर दी जावे, अथवा

(ii) प्रति वर्ष दी गई प्रीमियम की राशि जीवन-पालिसी खाते (Life Policy Account) मे डेबिट कर दी जाय। इस खाते को पॉलिसी के समर्पण मूल्य (Surrender Value) तक लाने के लिए आवश्यक समायोजन कर दिया जाय। साझी की मृत्यु पर प्राप्त रकम पॉलिसी खाते मे क्रेडिट कर दी जाय और इस खाते का शेष समस्त साझियो के पूंजी खाते मे उनके लाभ विभाजन के अनुपात मे क्रेडिट कर दिया जाय।

यदि फर्म द्वारा समस्त साझियो के संयुक्त जीवन पर बीमा नही लिया गया है बल्कि प्रत्येक साझी का अलग बीमा लिया गया है तो किसी साझी की मृत्यु होने पर उसके प्रतिनिधि को उसकी पॉलिसी से प्राप्त राशि तथा अन्य साझियो की पॉलिसियो के समर्पण मूल्य मे लाभ-विभाजन के आधार पर हिस्सा मिलेगा।

Illustration 17

The firm of Jim, Tim and Sim took out a Joint Life Policy on 5th January, 1961 for Rs 20,000 in order to provide a fund for the repayment of a deceased partner's share The last annual premium of Rs. 600 was paid on 5th January, 1964 and Jim died on 30th April, 1964. Surrender value of the policy as shown in the B/S was as follows—in 1961 nil, in 1962 Rs. 480, in 1963 Rs 720. The amount of policy was realised in full on 15th May, 1964 Pass the Journal entries, open the necessary accounts and show the relevant items in the B/S with regard to the policy for the years 1961 to 1964. Books are closed on 31st December each year

जिम, टिम और सिम के फर्म ने मृत साझी के हिस्से का भुगतान करने के लिए एक कोष की व्यवस्था करने हेतु 5 जनवरी, 1961 को 20,000 रु० की एक संयुक्त जीवन बीमा पॉलिसी ली। अन्तिम वार्षिक प्रीमियम, 600 रु० की, 5 जनवरी, 1964 को चुकाई गई थी और 30 अप्रैल, 1964 को जिम की मृत्यु हो गई। पालिसी का समर्पण मूल्य, जो चिट्ठे मे दिखाया गया था इस प्रकार था—1961 मे कुछ नहीं, 1962 मे 480 रु०, 1963 मे 720 रु०। पॉलिसी की समस्त राशि 15 मई, 1964 को वसूल की गई। 1961 से 1964 के वर्षों के लिए जर्नल प्रविष्टिया कीजिए, आवश्यक खाते खोलिए, और चिट्ठे मे पॉलिसी से सम्बद्ध मदो को दिखाइये। पुस्तकें प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द होती है।

Solution

Journal Entries

1961

			Rs	Rs.
Jan. 5	Joint Life Policy a/c Dr To Bank a/c (Premium paid)		600	600
Dec 31	Profit and Loss a/c Dr To Provision for Joint Life Policy a/c (Provision for premium made)		600	600
" "	Provision for Joint Life Policy a/c Dr. To Joint Life Policy a/c (Joint Life Policy Account brought down to its surrender value)		600	600

1962

			Rs.	Rs.
Jan. 5	Joint Life Policy a/c Dr. To Bank a/c (Premium paid)		600	600
Dec 31	Profit and Loss a/c Dr To Provision for Joint Life Policy a/c (Provision for premium made)		600	600
" "	Provision for Joint Life Policy a/c Dr To Joint Life Policy a/c (Joint Life Policy Account brought down to its surrender value)		120	120

1963

			Rs.	Rs
Jan. 5	Joint Life Policy a/c Dr To Bank a/c (Premium paid)		600	600
Dec 31	Profit and Loss a/c Dr. To Provision for Joint Life Policy a/c (Provision for premium made)		600	600
" "	Provision for Joint Life Policy a/c Dr. To Joint Life Policy a/c (Joint Life Policy Account brought down to its surrender value.)		360	360

Journal Contd... **1964**

			Rs	Rs.
Jan. 5	Joint Life Policy a/c Dr. To Bank a/c (Premium paid)		600	600
April 30	Life Insurance Co.'s a/c Dr. To Joint Life Policy a/c (Amount of claim receivable)		20,000	20,000
" "	Provision for Joint Life Policy a/c Dr. To Joint Life Policy a/c (Amount of provision transferred)		720	720
" "	Joint Life Policy a/c Dr. To Jim's Capital a/c To Tim's Capital a/c To Sim's Capital a/c (Balance of Joint Life Policy a/c transferred to the capital accounts of the partners in their profit sharing ratio)		19,400	 6,467 6,467 6,466
May 15	Bank a/c Dr. To Life Insurance Co's. a/c (Amount of claim received from the Life Insurance Co.)		20,000	20,000

Ledger Accounts **Joint Life Policy Account**

		Rs			Rs
1961 Jan 5	To Bank a/c	600	1961 Dec 31	By Provision for Joint Life Policy a/c	600
1962 Jan. 5	To Bank a/c	600	1962 Dec. 31	By Provision for Joint Life Policy a/c	120
			" "	" Balance c/d	480
		600			600
1963 Jan. 1	To Balance b/d	480	1963 Dec. 31	By Provision for Joint Life Policy a/c	360
" 5	To Bank a/c	600	" "	" Balance c/d	720
		1,080			1,080
1964 Jan. 1	To Balance b/d	720	1964 April 30	By Life Insurance Co a/c	20,000
" 5	" Bank a/c	600	" "	" Provision for Joint Life Policy a/c	720
April 30	" Jim's Capital a/c	6,467			
	" Tim's Capital a/c	6,467			
	" Sim's Capital a/c	6,466			
		20,720			20 720

Provision for Joint Life Policy Account

		Rs.			Rs.
1961 Dec. 31	To Joint Life Policy a/c	600	1961 Dec. 31	By P.&L. a/c	600
1962 Dec. 31	To Joint Life Policy a/c	120	1962 Dec. 31	By P.&L. a/c	600
" "	" Balance c/d	480			
		600			600
1963 Dec. 31	To Joint Life Policy a/c	360	1963 Jan. 1	By Balance b/d	480
" "	" Balance c/d	720	Dec. 31	" P.&L. a/c	600
		1,080			1,080
1964 April 30	To Joint Life Policy a/c	720	1964 Jan. 1	By Balance b/d	720

Balance Sheet as on 31st Dec..

	Rs.		Rs.
1961		1961	
Provision for Joint Life Policy	Nil	Joint Life Policy	Nil
1962		1962	
Provision for Joint Life Policy	480	Joint Life Policy	480
1963		1963	
Provision for Joint Life Policy	720	Joint Life Policy	720

Illustration 18.

Tipu, Dipu and Sipu were partners sharing profits in the ratio of 3 2:1. Their capitals on 31st Dec., 1967 were Rs. 26,000, Rs. 12.500 and Rs. 7,500 respectively.

Tipu died on 31st March, 1968 and you are required to prepare an account for presentation to his legal representative taking the following facts into account —

(i) The firm had insured the partners' lives separately : Tipu's for Rs. 22,500, Dipu's for Rs. 12,000 and Sipu's for Rs. 6.000. The premiums were charged to P. & L. a/c as a business expense. The surrender value of the policies on 31st March, 1968 amounted in each case to one-fourth of the sum assured.

(ii) Capital Accounts are credited at 5% for interest.

(iii) Tipu had withdrawn Rs. 3,000 from 1st Jan., 1968 to the date of his death.

(iv) Tipu's share of profits for the portion of the current financial year for which he lived was to be based on the average of the last three completed years.

(v) Goodwill was to be raised at 2 years' purchase of the average profits of the last three completed years.

The annual profits of the last three completed years were Rs. 23,000, Rs. 18,500 and Rs. 21,500 respectively.

टीपू, दीपू और सीपू साझी थे जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 3 : 2 : 1 था। 31 दिसम्बर, 1967 को उनकी पूंजी क्रमश: 26,000 रु०, 12,500 रु० और 7,500 रु० थी।

31 मार्च, 1968 को टीपू की मृत्यु हो गई और उसके वैधानिक प्रतिनिधि के सम्मुख पेश करने हेतु निम्नलिखित बातों का ध्यान रखते हुये आपको एक खाता बनाना है.—

(i) फर्म ने साझियों के जीवन पर पृथक-पृथक बीमा ले रखा था टीपू के जीवन पर 22,500 रु० का, दीपू के जीवन पर 12,000 रु० का और सीपू के जीवन पर 6,000 रु० का। प्रीमियम को व्यापारिक खर्च के रूप में लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर दिया जाता था। पॉलिसियों का, 31 मार्च, 1968 को, प्रत्येक के बीमा-मूल्य का चौथा हिस्सा समर्पण-मूल्य बन गया था।

(ii) पूंजी खातों को ब्याज के लिए 5% से क्रेडिट किया जाता है।

(iii) 1 जनवरी, 1968 से मृत्यु के दिन तक टीपू ने 3,000 रु० निकाल लिये थे।

(iv) चालू वित्तीय वर्ष में टीपू जितने समय जीवित रहा उस समय का उसके हिस्से का लाभ पिछले तीन सम्पूर्ण वर्षों के लाभ के औसत पर आधारित था।

(v) ख्याति पिछले सम्पूर्ण तीन वर्षों के औसत लाभ की दो गुनी राशि पर लानी थी।

पिछले तीन सम्पूर्ण वर्षों के लाभ क्रमश: 23,000 रु०, 18,500 रु० और 21,500 रु० थे।

Solution : **Tipu's Account (On 31st March, 1968)**

	Rs		Rs.
To Drawings-transferred	3,000	By Capital transferred	26,000
,, Balance due to him	60,450	,, Interest on Capital-for 3 months @ 5%	325
		,, Life Policies $\frac{1}{2}$ of Rs.(22,500+3,000+1,500)	13,500
		,, Share of Profit to death	2,625
		,, Share of Goodwill	21,000
	63,450		63,450

Notes—(1) टीपू का 1 जनवरी, 1968 से 31 मार्च 1968 तक का लाभ इस प्रकार ज्ञात किया गया है:—

∵ पिछले तीन वर्षों के कुल लाभ=(23,000+18,500+21,500) रु०= 63,000 रु०

∴ पिछले तीन वर्षों का औसत लाभ=21,000 रु०

∴ तीन माह का लाभ $= \frac{21,000}{4}$ रु० = 5,250 रु०

∴ टीपू का हिस्सा $= \frac{5,250}{2}$ रु० = 2,625 रु०

(ii) ख्याति मे टीपू का हिस्सा इस प्रकार निकाला गया है:—

∵ पिछले तीन वर्षो का औसत लाभ = 21,000 रु०

∴ ख्याति की राशि $= (21,000 \times 2)$ रु० = 42,000 रु०

∴ टीपू का हिस्सा $= \frac{42,000}{2}$ रु० = 21,000 रु०

Illustration 19

Vasant and Madhav entered into partnership on 1st January, 1960. The former introducing a capital of Rs. 60,000 and the latter of Rs. 20,000. They effected a policy of insurance for Rs. 25,000 upon their joint lives in order to enable the survivor in case of the death of one, to pay out in cash, part of the other's interest. The net profits, before charging interest on capital as at the beginning of each year at 5% per annum and on drawings (averaged at 2% per annum) were as follows.

Year	Net profit Rs. P.	Vasant's drawings Rs P.	Madhav's drawings Rs. P.
1960	25,000–00	6,000–00	3,000–00
1961	26,100–00	6,600–00	3,300–00
1962	26,547–50	7,000–00	3,500–00

Profits to Vasant two-thirds and to Madhav one-third. The premium of insurance, Rs. 2,000, is charged as a business expense.

On 31st March, 1963, Vasant died. According to the terms of the Partnership Deed, his executors are entitled to receive his share of the capital as it stood on 31st December, 1962, plus his three months share of profit calculated upon the previous year's rate of profits and share of goodwill which is reckoned at two-thirds of the previous three year's profits after adjusting interest on capital and drawings but without deducting the premium paid on the insurance policy.

Make up Vasant's account including these adjustments and showing the amount for which Madhav shall have to account to his executors.

वसन्त और माधव 1 जनवरी, 1960 को साझेदारी मे प्रवेश हुये। प्रथम ने 60,000 रु० की और दूसरे ने 20,000 रु० की पूंजी लगाई। उन्होने दोनो के संयुक्त जीवन पर 25,000 रु० की एक पालिसी ली ताकि किसी की मृत्यु होने पर, जीवित रहने वाला साझी उसके हित के एक भाग का भुगतान नकद कर सके। शुद्ध लाभ, प्रत्येक वर्ष के प्रारम्भ मे पूंजी पर 5% वार्षिक ब्याज चार्ज करने से पूर्व, और आहरण पर औसतन 2% सालाना ब्याज चार्ज करने से पूर्व, इस प्रकार थे:—

वर्ष	शुद्ध लाभ	वसन्त के आहरण	माधव के आहरण
	रु० पै०	रु० पै०	रु० पै०
1960	25,000–00	6,000–00	3,000–00
1961	26,100–00	6,600–00	3,300–00
1962	26,547–50	7,000–00	3,500–00

लाभ वसन्त को $\frac{2}{3}$ और माधव को $\frac{1}{3}$ । बीमे की प्रीमियम, जो कि 2,000 रु० है, व्यापारिक खर्च के रूप मे चार्ज की जाती है ।

31 मार्च, 1963 को वसन्त की मृत्यु हो जाती है । साझेदारी सलेख की शर्तो के अनुसार उसके निष्पादक उसकी 31 दिसम्बर, 1962 की पूंजी के अधिकारी है, और उसके तीन माह के लाभ मे हिस्से के अधिकारी हे जिसकी गणना पिछले वर्ष के लाभ की दर पर की जावेगी, तथा ख्याति मे हिस्से के अधिकारी है जो कि पूजी और आहरण पर ब्याज का समायोजन करने के पश्चात् लेकिन बीमा की प्रीमियम घटाने से पूर्व के पिछले तीन वर्षो के लाभ के $\frac{2}{3}$ के बराबर होगी ।

इन समायोजनो को शामिल करते हुये और वह रकम दिखाते हुए जिसके लिए माधव को वसन्त के निष्पादक को हिसाब देना होगा, वसन्त का खाता बनाइये ।

Solution .

Vasant's Capital Account

		Rs.	P.			Rs	P.
1960				1960			
Dec 31	To Drawings a/c	6,000	—	Jan 1	By Bank a/c	60,000	—
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	120	—	Dec 31	,, Interest on Capital a/c	3,000	—
,, ,,	,, Balance c/d	71,000	—	,, ,,	,, Profit and Loss a/c	14,120	—
		77,120	—			77,120	—
1961				1961			
Dec 31	To Drawings a/c	6,600	—	Jan 1	By Balance b/d	71,000	—
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	132	—	Dec. 31	,, Interest on Capital a/c	3,550	—
,, ,,	,, Balance c/d	82,150	—	,, ,,	,, Profit and Loss a/c	14,332	—
		88,882	—			88,882	—
1962				1962			
Dec. 31	To Drawings a/c	7,000	—	Jan 1	By Balance b/d	82 150	—
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	140	—	Dec 31	,, Interest on Capital a/c	4,107	50
,, ,,	,, Balance c/d	93,215	83	,, ,,	,, Profit and Loss a/c	14,098	33
		1,00,355	83			1,00,355	83
1963				1963			
March 31	To Executors of Vasant	93,215	83	Jan. 1	By Balance b/d	93,215	83

Executors of Vasant (Deceased) Account

Date	Particulars	Rs	P.	Date	Particulars	Rs	P.
1963 Mar. 31	To Balance c/d	1,45,340	64	1963 Mar 31	By Capital a/c	93,215	83
				,, ,,	,, Profit and Loss a/c	4,424	59
				,, ,,	,, Life Policy a/c	16,666	67
				,, ,,	,, Goodwill a/c	31,033	55
		1,45,340	64			1,45,340	64
				1963 April 1	By Balance b/d	1,45,340	64

उपरोक्त खातों को तैयार करने के लिए माधव का पूँजी खाता और लाभ-हानि खाता भी टिप्पणी के रूप में तैयार करना होगा।

Madhav's Capital Account

Date	Particulars	Rs	P.	Date	Particulars	Rs.	P
1960 Dec. 31	To Drawings a/c	3,000	—	1960 Jan 1	By Bank a/c	20,000	—
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	60	—	Dec 31	,, Interest on Capital a/c	1,000	—
,, ,,	,, Balance c/d	25,000	—	,, ,,	,, Profit and Loss a/c	7,060	—
		28,060	—			28,060	—
1961 Dec 31	To Drawings a/c	3,300	—	1961 Jan 1	By Balance b/d	25,000	—
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	66	—	Dec. 31	,, Interest on Capital a/c	1,250	—
,, ,,	,, Balance c/d	30,050	—	,, ,,	,, Profit and Loss a/c	7,166	—
		33,416	—			33,416	—
1962 Dec 31	To Drawings a/c	3,500	—	1962 Jan. 1	By Balance b/d	30,050	—
,, ,,	,, Interest on Drawings a/c	70	—	Dec. 31	,, Interest on Capital a/c	1,502	50
,, ,,	,, Balance c/d	35,031	67	,, ,,	,, Profit and Loss a/c	7,049	17
		38,601	67			38,601	67
				1963 Jan. 1	By Balance b/d	35,031	67

Profit and Loss Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs	P.
1960				1960			
Dec. 31	To Interest on Capital a/c			Dec. 31	By Balance b/d	25,000	—
	Vasant Rs. 3,000			,, ,,	,, Interest on		
	Madhav Rs. 1,000	4,000	—		Drawings a/c	180	—
,, ,,	,, Share of Profit :						
	Vasant $\frac{2}{3}$ Rs. 14,120						
	Madhav $\frac{1}{3}$ Rs. 7,060	21,180	—				
		25,180	—			25,180	—
1961				1961			
Dec. 31	To Interest on Capital a/c			Dec. 31	By Balance b/d	26,100	—
	Vasant Rs. 3,550			,, ,,	,, Interest on		
	Madhav Rs 1,250	4,800	—		Drawingsa/c	198	—
,, ,,	,, Share of Profit ·						
	Vasant $\frac{2}{3}$ Rs. 14,332						
	Madhav $\frac{1}{3}$ Rs. 7,166	21,498	—				
		26,298	—			26,298	—
1962							
Dec. 31	To Interest on Capital a/c.			Dec 31	By Balance b/d	26,547	50
	Vasant Rs. 4,107=50						
	Madhav Rs. 1,502=50	5,610	—	,, ,,	,, Interest on		
					Drawings a/c	210	—
,, ,,	To Share of Profit .						
	Vasant $\frac{2}{3}$ Rs. 14,098 33						
	Madhav $\frac{1}{3}$ Rs 7,049.17	21,147	50				
		26,757	50			26,757	50

स्पष्टीकरण : (1) 1 जनवरी, 1963 से 31 मार्च, 1963 तक के तीन माह के लाभ मे वसन्त का हिस्सा इस प्रकार निकाला गया है—

∵ पिछले वर्ष (1962) के लाभ=26,547 रु० 50 पै०

∴ तीन माह के लाभ $= \frac{26,547 \text{ रु० } 50 \text{ पै०}}{4}$

=6,636 रु० 88 पै०

∴ वसन्त का हिस्सा ($\frac{2}{3}$) =6,636 रु० 88 पै० × $\frac{2}{3}$

=4,424 रु० 59 पै०

इस लाभ की गणना करते समय इस तीन माह के समय के लिए पूंजी पर ब्याज को ध्यान मे नहीं रखा गया है।

(ii) ख्याति मे वसन्त के हिस्से की गणना इस प्रकार की गई है—

वर्ष	1960	1961	1962
	रु० पै०	रु० पै०	रु० पै०
लाभ	25,000–00	2,6,100–00	26,547–50
प्रीमियम	2,000–00	2,000–00	2,000–00
	27,000–00	28,100–00	28.547–50
आहरण पर ब्याज	180–00	198–00	210–00
	27,180–00	28,298–00	28,757–50
पूंजी पर ब्याज	4,000–00	4,800–00	5,610–00
	23,180–00	23,498–00	23,147–50

∴ कुल तीन वर्षों के समायोजित लाभ=69,825 रु० 50 पै०

∵ ख्याति=69,825 रु० 50 पै० × $\frac{2}{3}$=46,550 रु०·33 पै०

∴ वसन्त का हिस्सा=46,550 रु० 33 पै० × $\frac{2}{3}$=31,033 रु० 55 पै०

साझेदारी का विघटन
(Dissolution of Partnership)

भारतीय साझेदारी अधिनियम के अनुसार साझेदारी का निम्नलिखित परिस्थितियो मे अन्त हो सकता है —

(1) सब साझियो की सहमति से अथवा साझेदारी सलेख के अनुसार कभी भी फर्म का अन्त किया जा सकता है।

(2) यदि एक को छोडकर समस्त साझी दिवालिया घोषित हो जाय, अथवा ऐसी घटना घट जाय कि व्यापार को चलाना अवैध हो जाय तो फर्म अनिवार्य रूप से भङ्ग हो जावेगी।

(3) साझियो मे हुये किसी समझौते के अनुसार निम्न परिस्थितियो मे फर्म को भङ्ग किया जा सकता है —

(i) यदि फर्म कोई निश्चित अवधि के लिए बनाया गया है तो उस अवधि की समाप्ति पर,

(ii) यदि फर्म एक या अधिक उपक्रम पूरे करने के लिए बनाया गया है तो उसके या उनके पूरा हो जाने पर;

(iii) किसी साझी की मृत्यु पर; अथवा

(iv) किसी साझी के दिवालिया घोषित हो जाने पर।

(4) अगर साझेदारी इच्छा पर भङ्ग हो सकती है तो कोई भी साझी अन्य साझियो को फर्म भङ्ग करने की लिखित मे सूचना देकर फर्म को भङ्ग कर सकता है।

(5) किसी साझी के अभियोग चलाने पर न्यायालय द्वारा निम्नलिखित किसी भी आधार पर फर्म को भङ्ग किया जा सकता है —

(i) जब कोई साझी पागल हो जाय,

(ii) जब अभियोग चलाने वाले साझी के अलावा अन्य कोई साझी स्थायी रूप से साझी के रूप में अपना कर्तव्य पूरा करने के अयोग्य हो जाय,

(iii) जब अभियोग चलाने वाले साझी के अलावा अन्य कोई साझी ऐसे आचरण का दोषी हो जो व्यवसाय को क्षति पहुंचाने वाला हो,

(iv) जब अभियोग चलाने वाले साझी के अलावा अन्य कोई साझी जानबूझ कर या लगातार फर्म के प्रबन्ध सम्बन्धी ठहराव को तोड़े;

(v) जब अभियोग चलाने वाले साझी के अलावा अन्य किसी साझी ने फर्म मे अपना हित किसी तीसरे पक्ष को हस्तान्तरित कर दिया है अथवा न्यायालय द्वारा अपने हिस्से को बेचे जाने की अनुमति दे दी है,

(vi) जब फर्म का व्यवसाय केवल क्षति उठाकर ही चालू रखा जा सकता हो, तथा

(vii) अन्य किसी आधार पर जिस पर फर्म को न्यायपूर्वक भङ्ग किया जा सके।

फर्म के विघटन पर हिसाब का निपटारा (Settlement of accounts on dissolution of firm)

साझियो मे हुये समझौते को ध्यान मे रखते हुये फर्म के विघटन पर हिसाब निम्नलिखित नियमो के आधार पर निपटाया जावेगा —

(अ) हानिया, पू जी के घाटे (Deficiency) सहित, पहले लाभो में से चुकाई जावेंगी, फिर पू जी में से और अन्त मे यदि आवश्यक हुआ तो साझियो द्वारा लाभ-विभाजन के अनुपात मे।

(ब) फर्म की सम्पत्तिया, उस राशि को शामिल करते हुये जो साझी पू जी के घाटे को पूरा करने के लिए लावे, निम्नलिखित रीति और क्रम से प्रयुक्त होगी —

(i) तीसरे पक्षो को फर्म के ऋण चुकाने मे,

(ii) प्रत्येक साझी को आनुपातिक हिसाब (Rateably) से उस राशि के अदा करने मे जो उसने फर्म को पूजी के अतिरिक्त ऋण के रूप मे दी हो,

(iii) प्रत्येक साझी को आनुपातिक हिसाब से उसकी पूजी चुकाने मे,

(iv) शेष राशि, यदि कोई हो तो यह साझियो मे लाभ विभाजन के अनुपात मे बाट दी जावेगी।

विघटन सम्बन्धी खाते (Dissolution Accounts)

'वसूली खाता' (Realisation Account)—फर्म के विघटन पर सर्व-प्रथम कार्य फर्म की सम्पत्तियो को बेचना और दायित्वो का भुगतान करना होता है। इसके लिए पुस्तको मे एक नया खाता खोला जाता है जिसे 'वसूली खाता' (Realisation Account) कहते है। विघटन की तिथि को फर्म की सब सम्पत्तियो के खातो को (रोकड़ और बैंक शेष के अतिरिक्त) वसूली खाते के डेबिट पक्ष मे लेजाकर बद कर दिया जाता है। फर्म के बाह्य दायित्वो (यथा, लेनदार, देय बिल, बाहर के किसी व्यक्ति का ऋण, बैंक अधिविकर्ष या अन्य इसी प्रकार के दायित्व) के खातो को भी वसूली खाते के क्रेडिट पक्ष मे हस्तान्तरित करके बद कर दिया जाता है। बाद मे जैसे-जैसे सम्पत्तियो से वसूली होती जाती है, वसूली खाते को क्रेडिट किया जाता रहता है। इसी प्रकार दायित्वो के भुगतान करने पर वसूली खाते को डेबिट किया जाता रहता है। वसूली के खर्चो को भी वसूली खाते के डेबिट पक्ष मे लिख दिया जाता है। जब समस्त सम्पत्तियो की वसूली एव दायित्वो के भुगतान पूर्ण हो जाते है तो वसूली खाता वसूली पर लाभ या हानि प्रकट करता है। इस लाभ या हानि को समस्त साझियो मे लाभ-हानि विभाजन के अनुपात

मे बाट दिया जाता है, और वसूली खाता बंद हो जाता है। यह ध्यान रखना चाहिये कि फर्म के आन्तरिक दायित्वो (यथा, किसी साझी का ऋण, सामान्य संचय, लाभ, हानि खाते का शेष, साझियो की पूंजी या चालू खाते) के खातो को वसूली खाते मे हस्तान्तरित करके बंद नही किया जाता बल्कि इन खातो को सीधे ही साझियो के पूंजी खातो मे हस्तान्तरण करके या भुगतान करके बंद कर दिया जाता है।

साझेदारी के विघटन के सम्बन्ध मे जो जर्नल प्रविष्टिया की जाती है, वे निम्नलिखित हैं:—

(1) फर्म की समस्त सम्पत्तियो (नकद तथा बैंक शेष के अतिरिक्त) को पुस्तक मूल्य पर वसूली खाते मे हस्तान्तरण करने पर—

Realisation a/c Dr.
To Assets (each asset) a/c
(Book value of the assets transferred.)

(2) फर्म के समस्त बाह्य दायित्वो को पुस्तक मूल्य पर वसूली खाते मे ले जाने पर—

Sundry Liabilities a/c Dr.
To Realisation a/c
(Book value of liabilities transferred.)

(3) सम्पत्तियो को नकद प्रतिफल के बदले बेचे जाने पर—

Bank a/c Dr.
To Realisation a/c
(Amount realised on sale of assets.)

(4) किसी साझी द्वारा कोई सम्पत्ति को तय मूल्य मे खरीद लेने पर—

(Such) Partner's Capital a/c Dr.
To Realisation a/c
(Asset taken over by the partner.)

(5) दायित्वो का नकद मे भुगतान करने पर—

Realisation a/c Dr.
To Bank a/c
(Liabilities paid off.)

(6) यदि फर्म के विघटन के सम्बन्ध मे या सम्पत्तियो की वसूली के सम्बन्ध मे कोई खर्चा हुआ है तो चुकाने पर—

Realisation a/c Dr.
To Bank a/c
(Realisation expenses paid.)

(7) अब वसूली खाते का शेष वसूली पर लाभ अथवा हानि प्रकट करेगा। इस लाभ अथवा हानि को साझियो के पूंजी खाते मे लाभ-विभाजन के अनुपात मे हस्तान्तरित कर दिया जावेगा।

लाभ होने पर—

Realisation a/c Dr.
To Partners' Capital a/cs
(Profit on Realisation transferred.)

हानि होने पर—

Partners' Capital Accounts Dr.
To Realisation a/c
(Loss on Realisation transferred.)

(8) यदि किसी साझी द्वारा फर्म को कोई ऋण दिया हुआ है तो उसका भुगतान नकद मे किये जाने पर—

Partner's Loan a/c Dr.
To Bank a/c
(Partner's Loan paid off.)

(9) अब यदि किसी साझी का पूँजी खाता डेबिट शेष बतलाता है तो उस साझी को अपने घाटे (Deficiency) की पूर्ति करने के लिए रकम लानी होगी। उसके रकम लाने पर—

Bank a/c Dr.
To Partner's Capital a/c
(Amount of deficiency brought in by the partner.)

(10) इसके पश्चात् अब बैंक खाते मे ठीक उतनी ही राशि शेष रह जावेगी जितना साझियो के पूँजी खातो मे क्रेडिट शेष है। इस राशि से साझियो की पूँजी का भुगतान कर दिया जावेगा, अत. पूँजी का भुगतान करने पर—

Partners' Capital Accounts Dr.
To Bank a/c
(Partners paid off.)

इस प्रकार फर्म के समस्त खाते बन्द हो जावेंगे।

Illustration 20

Om and Chand agree to dissolve their firm on 31st December, 1967 on which date their Balance Sheet stood as under. (ओम और चाद 31 दिसम्बर, 1967 को फर्म का विघटन करना तय करते हैं। इस दिन उनका चिट्ठा इस प्रकार था)—

			Rs		Rs.
Creditors			60,000	Cash at Bank	10,000
Om's Loan a/c			80,000	Book Debts	50,000
Capitals :				Stock	2,00,000
Om	Rs.	2,00,000		Plant	1,40,000
Chand	Rs.	1,00,000	3,00,000	Goodwill	40,000
			4,40,000		4,40,000

The partners share profits in proportion to their capitals, The assets realise as under:—

Book Debts Rs. 42 000; Stock Rs. 1.80.000, Plant 20% less. Goodwill Rs. 60 000. The creditors were redeemed at a discount of 5% and realisation expenses amounted to Rs. 6,000.

Pass the necessary journal entries to show the process of realisation and open necessary accounts in the books of the firm.

साझी अपनी पूंजी के अनुपात में लाभ विभाजन करते हैं। सम्पत्तियाँ इस प्रकार वसूल होती हैं—

पुस्तक ऋण—42,000 रु०, स्टॉक 1,80,000 रु०; प्लान्ट 20% कम; ख्याति—60,000 रु०। लेनदारों को 5% बट्टे पर चुकाया गया और 6,000 रु० वसूली के खर्चे चुकाये गए।

वसूली की प्रक्रिया बताने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये और फर्म की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

Solution

Journal Entries

Date	Particulars		L.F.	Rs.	Rs.
1967 Dec 31	Realisation a/c	Dr.		4,30,000	
	To Book Debts a/c				50,000
	To Stock a/c				2,00,000
	To Plant a/c				1,40,000
	To Goodwill a/c				40,000
	(Assets transferred to Realisation Account.)				
	Creditors a/c	Dr.		60,000	
	To Realisation a/c				60,000
	(Creditors transferred to Realisation Account.)				
	Bank a/c	Dr.		3,94,000	
	To Realisation a/c				3,94,000
	(Assets realised as under—	Rs.			
	Book Debts	42,000			
	Stock	1,80,000			
	Plant	1,12,000			
	Goodwill	60,000			
		3,94,000			
	Realisation a/c	Dr.		6,000	
	To Bank a/c				6,000
	(Realisation expenses paid.)				
	Realisation a/c	Dr.		57,000	
	To Bank a/c				57,000
	(Creditors paid off at a discount of 5%.)				
	Om's Capital a/c	Dr.		26,000	
	Chand's Capital a/c	Dr.		13,000	
	To Realisation a/c				39,000
	(Realisation loss transferred.)				
	Om's Loan a/c	Dr.		80,000	
	To Bank a/c				80,000
	(Om's loan paid off.)				
	Om's Capital a/c	Dr.		1,74,000	
	Chand's Capital a/c	Dr.		87,000	
	To Bank a/c				2,61,000
	(Partners' capitals withdrawn.)				

Ledger Accounts

Book Debts Account

1967		Rs	1967		Rs
Dec. 31	To Balance b/d	50,000	Dec 31	By Realisation a/c	50,000

Stock Account

1967		Rs	1967		Rs
Dec. 31	To Balance b/d	2,00,000	Dec 31	By Realisation a/c	2,00 000

Plant Account

1967		Rs.	1967		Rs
Dec. 31	To Balance b/d	1,40,000	Dec 31	By Realisation a/c	1,40,000

Goodwill Account

1967		Rs.	1967		Rs
Dec. 31	To Balance b/d	40,000	Dec 31	By Realisation a/c	40,000

Creditors Account

1967		Rs	1967		Rs.
Dec 31	To Realisation a/c	60,000	Dec 31	By Balance b/d	60,000

Bank Account

1967		Rs	1967		Rs.
Dec 31	To Balance b/d	10,000	Dec. 31	By Realisation a/c (Realisation Expenses)	6,000
,, ,,	,, Realisation a/c (Sundry Assets realised)	3,94,000	,, ,,	,, Realisation a/c (Payment to creditors)	57,000
			,, ,,	,, Om's Loan a/c	80,000
			,, ,,	,, Om's Capital a/c	1,74,000
			,, ,,	,, Chand's Capital a/c	87,000
		4,04,000			4,04,000

Realisation Account

1967			Rs.	1967			Rs.
Dec 31	To Sundry Assets	Rs		Dec. 31	By Creditors (Transfer)		60,000
	Book Debts	50,000		" "	" Bank a/c (Assets realised)		3,94,000
	Stock	2,00,000		" "	" Capital Accounts— (Loss transferred)		
	Plant	1,40,000			Om 2/3	Rs. 26,000	
	Goodwill	40,000	4,30,000		Chand 1/3	Rs. 13,000	39,000
" "	" Bank (Realisation Exp.)		6,000				
" "	" Bank (Creditors paid off)		57,000				
			4,93,000				4,93,000

Om's Loan Account

1967		Rs.	1967		Rs
Dec 31	To Bank a/c	80 000	Dec 31	By Balance b/d	80,000

Capital Accounts

1967		Om Rs	Chand Rs	1967		Om Rs.	Chand Rs
Dec 31	To Realisation a/c (Loss)	26,000	13,000	Dec 31	By Balance b/d	2,00,000	1,00,000
Dec 31	" Bank a/c	1 74,000	87,000				
		2 00,000	1,00,000			2,00 000	1,00,000

Illustration 21

Ramesh and Mahesh were in partnership sharing profits 3 : 1. They agreed to dissolve the firm. The assets realised Rs 1,50,000. The liabilities of the firm were as follows —

Creditors Rs. 90,000, Loan from Ramesh Rs. 40,000, Ramesh's Capital Rs 20,000 and Mahesh's Capital Rs. 30,000.

Show by means of accounts the distribution of the cash realised.

रमेश और महेश साझी थे और लाभ-विभाजन का अनुपात 3 : 1 था। वे फर्म का विघटन करने का निर्णय करते हैं। सम्पत्तियों से 1,50,000 रु० वसूल हुआ। फर्म के दायित्व इस प्रकार थे—

लेनदार 90 000 रु०, रमेश से ऋण 40,000 रु०, रमेश की पूँजी 20,000 रु० और महेश की पूँजी 30,000 रु०।

वसूल किये गये धन का खातों के माध्यम से वितरण दिखाइये।

Solution :

Realisation Account

?		Rs	?		Rs
	To Sundry Assets	1,80,000		By Sundry Creditors	90,000
	„ Bank (Creditors paid off)	90,000		„ Bank (Assets realised)	1,50,000
				„ Capital Accounts (Loss)	
				Ramesh 3/4 Rs. 22,500	
				Mahesh 1/4 Rs 7,500	30,000
		2,70,000			2,70,000

Bank Account

?		Rs	?		Rs
	To Realisation a/c (Assets realised)	1,50,000		By Realisation a/c (Creditors paid off)	90,000
	„ Ramesh's Capital a/c	2,500		„ Ramesh's Loan a/c	40,000
				„ Mahesh's Capital a/c	22,500
		1,52,500			1,52,500

Capital Accounts

?		Ramesh Rs.	Mahesh Rs.	?		Ramesh Rs	Mahesh Rs
	To Realisation a/c (Loss)	22,500	7,500		By Balance b/d	20,000	30,000
	„ Bank a/c	–	22,500		„ Bank a/c	2,500	–
		22,500	30,000			22,500	30,000

Ramesh's Loan Account

?		Rs	?		Rs
	To Bank a/c	40,000		By Balance b/d	40,000

नोट —इस सवाल को हल करने से पूर्व यह आवश्यक है कि विघटन की तारीख को सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य ज्ञात किया जावे क्योंकि वसूली खाते मे सम्पत्तियो का पुस्तक मूल्य ही ले जाया जाता है। चिट्ठे मे सम्पत्तियो एव दायित्वो का योग बराबर होता है और दायित्वो का योग 1,80,000 रु० (लेनदार 90,000 रु०+रमेश से ऋण 40,000 रु०+रमेश की पूँजी 20,000 रु०+महेश की पूँजी 30,000 रु०) था, अत सम्पत्तियो का योग भी 1,80,000 रु० होगा।

Illustration 22

On 30th June 1968, Gopal and Hari sharing profits and losses in the ratio of 2:1, decide to dissolve their partnership and trade separately Their

Balance Sheet on that date showed the following position (30 जून, 1968 को गोपाल और हरी जो कि लाभ-हानि को 2 . 1 के अनुपात में बाटते हैं, साझेदारी का विघटन करने और पृथक-पृथक व्यापार करने का निश्चय करते है । उस दिन उनका चिट्ठा निम्न स्थिति बताता था):—

		Rs.			Rs.
Creditors		26,000	Bank		4,000
Reserve		6,000	Debtors	Rs 25.000	
Current Accounts—	Rs.		Less Provision	Rs 1,000	24,000
Gopal	3,000				
Hari	3,000	6.000	Investments		10,000
Capital Accounts—	Rs		Stock		58,000
Gopal	40,000		Furniture		2,000
Hari	20,000	60,000			
		98,000			98,000

Gopal agrees to take over the creditors and the bank balance. He also takes over the debtors at Rs. 20,000. Hari takes over the stock at Rs. 60,000, furniture at Rs 1,800 and the investments at Rs. 17.000. Hari pays Rs. 18,000 for goodwill in consideration of carrying on business in the name of the firm.

Pass the necessary journal entries, show the Realisation Account, Current Accounts and the Capital Accounts Also prepare the Balance Sheet showing the final position of the partners. (गोपाल लेनदार और बैंक शेष लेने के लिए राजी हो जाता है। वह देनदार भी 20,000 रु० मे ले लेता है। हरी स्टॉक 60,000 रु० मे, फर्नीचर 1,800 रु० में और विनियोग 17,000 रु० मे ले लेता है। फर्म के नाम मे व्यापार करते रहने के प्रतिफल के रूप मे हरी 18,000 रु० ख्याति के भी देता है।—

आवश्यक जर्नल प्रविष्टिया करो, वसूली खाता, चालू खाते और पूजी खाते बनाइये। साझियों की अन्तिम स्थिति दिखाते हुये चिट्ठा भी बनाइये।)

Solution

Journal Entries

1968			Rs	Rs.
June 30	Realisation a/c	Dr.	95,000	
	To Debtors a/c			25,000
	To Investments a/c			10,000
	To Stock a/c			58,000
	To Furniture a/c			2,000
	(Assets transferred to Realisation Account)			
	Creditors a/c	Dr	26,000	
	Provision for Doubtful Debts a/c	Dr	1,000	
	To Realisation a/c			27,000
	(Creditors and Provision transferred to Realisation a/c)			

Journal Entries (Contd.)

			Rs	Rs.
1968 June 30	Gopal's Current a/c Dr. To Realisation a/c (Debtors at Rs. 20,000 taken over by Gopal)		20,000	20,000
" "	Gopal's Current a/c Dr. To Bank a/c (Bank balance taken over by Gopal.)		4,000	4,000
" "	Realisation a/c Dr. To Gopal's Current a/c (Creditors taken over by Gopal.)		26,000	26,000
" "	Hari's Current a/c Dr. To Realisation a/c (Stock Rs. 60,000, Furniture Rs. 1,800, Investments Rs. 17,000 and Goodwill Rs. 18,000 taken over by Hari)		96,800	96,800
" "	Realisation a/c Dr. To Gopal's Current a/c To Hari's Current a/c (Realisation profit transferred.)		22,800	15,200 7,600
" "	Reserve a/c Dr. To Gopal's Current a/c To Hari's Current a/c (Reserve transferred to Partners' Current Accounts.)		6,000	4,000 2,000
" "	Gopal's Current a/c Dr. To Gopal's Capital a/c (Balance of Current Account transferred to Capital Account.)		24,200	24,200
" "	Hari's Capital a/c Dr. To Hari's Current a/c (Balance of Current Account transferred to Capital Account)		84,200	84,200

Ledger Accounts

Realisation Account

1968		Rs.	1968		Rs.
June 30	To Sundry Assets- Debtors Rs. 25,000 Investments Rs. 10,000 Stock Rs 58,000 Furniture Rs. 2,000	95,000	June 30	By Sundry Liabilities- (Creditors)	26.000
" "	To Gopal's Current a/c (Creditors taken over)	26,000	" "	" Provision for Doubtful Debts a/c	1,000
" "	To Current Accounts— (Profit transferred) Gopal 2/3 Rs. 15,200 Hari 1/3 Rs 7,600	22,800	" "	" Gopal's Current a/c (Assets taken over)	20,000
			" "	" Hari's Current a/c (Assets taken over)	96,800
		1 43,800			1,43,800

Bank Account

1968		Rs.	1968		Rs.
June 30	To Balance b/d	4,000	June 30	By Gopal's Current a/c	4,000

Current Accounts

1968		Gopal Rs.	Hari Rs.	1968		Gopal Rs.	Hari Rs
June 30	To Realisation a/c	20,000	96,800	June 30	By Balance b/d	3,000	3,000
" "	To Bank a/c	4,000		" "	" Realisation a/c (Creditors)	26,000	—
" "	To Gopal's Capital a/c	24,200		" "	" Realisation a/c (Profit)	15,200	7,600
				" "	" Reserve a/c	4,000	2,000
				" "	" Hari's Capital a/c		84,200
		48,200	96 800			48,200	96,800

Capital Accounts

1968		Gopal Rs.	Hari Rs.	1968		Gopal Rs	Hari Rs.
June 30	To Hari's Current a/c		84,200	June 30	By Balance b/d	40 000	20,000
" "	" Balance c/d	64,200		" "	" Gopal's Current a/c	24,200	
				" "	" Balance c/d		64,200
		64,200	84,200			64,200	84,200

Balance Sheet

(Showing the final position of Gopal and Hari)

	Rs.		Rs.
Gopal's Capital a/c	64,200	Hari's Capital a/c	64,200

Illustration 23

On 1st January, 1967 Slow, Fast and Medium started business sharing profits and losses in the ratio of 3 2.1 respectively They contributed Rs. 40,000, Rs. 30,000 and Rs. 10,000 respectively as their capital which was deposited into Bank. Each partner withdrew Rs 4,000 during the year. The partnership was dissolved on 31st Dec., 1967. Slow took up the stock at an agreed value of Rs. 14,000; Fast took up furniture at Rs. 2,000; and Medium took up debtors at Rs. 10,000. Creditors were paid off and then remained a balance of Rs. 6,000 in the Bank Account.

Prepare the necessary accounts to show the distribution of Cash at Bank and of the further cash brought in by any of the partners

1 जनवरी, 1967 को स्लो, फास्ट और मीडियम ने क्रमश 3 2 1 के अनुपात मे लाभ-हानि का विभाजन करते हुये व्यापार प्रारम्भ किया। उन्होने क्रमश. 40,000 रु०, 30,000 रु०, और 10,000 रु० की पूँजी लगाई जो बैंक मे जमा करा दी गई। प्रत्येक साझी ने वर्ष मे 4,000 रु० निकाल लिये। 31 दिसम्बर, 1967 को साझेदारी भङ्ग कर दी गई। स्लो ने 14,000 रु० के तय हुये मूल्य पर स्टॉक लिया, फास्ट ने 2,000 रु० के मूल्य पर फर्नीचर लिया और मीडियम ने 10,000 रु० के मूल्य पर देनदारो को लिया। लेनदारो को भुगतान कर दिया गया और तब बैंक खाते मे 6,000 रु० शेष रहा।

बैंक शेष का वितरण और साझियो मे से किसी के द्वारा और नकद धन लाये जाने के सम्बन्ध मे आवश्यक खाते तैयार कीजिए।

Solution

पहले हमे विघटन की तारीख को शुद्ध सम्पत्तियो (Net Assets) की राशि ज्ञात करनी होगी।

कुल सम्पत्तियो और दायित्वो का अन्तर पूजी के बराबर होता है। अत विघटन के दिन पूँजी की राशि ज्ञात करने पर शुद्ध सम्पत्तियो की राशि ज्ञात हो जावेगी।

		रु०
प्रारम्भ की कुल पूँजी		80,000
घटाओ कुल आहरण	(4,000 × 3) रु०	12,000
विघटन के दिन पूँजी		68,000

अर्थात् शुद्ध सम्पत्तियो का मूल्य=68,000 रु०

Realisation Account

1967		Rs.	1967			Rs.
Dec. 31	To Sundry Net Assets	68,000	Dec 31	By Capital Accounts:	Rs.	
				Slow (Stock)	14,000	
				Fast (Furniture)	2,000	
				Medium (Drs.)	10,000	26,000
			" "	" Bank a/c		6,000
			" "	" Capital Accounts : (Loss on Realisation)		
				Slow 1/2 Rs.	18,000	
				Fast 1/3 Rs.	12,000	
				Medium 1/6 Rs.	6,000	36,000
		68,000				68,000

Bank Account

1967		Rs.	1967		Rs.
Dec. 31	To Realisation a/c	6,000	Dec. 31	By Slow's Capital a/c	4,000
" "	" Medium's Capital a/c	10,000	" "	" Fast's Capital a/c	12,000
		16,000			16 000

Slow's Capital Account

1967		Rs.	1967		Rs
Dec. 31	To Drawings a/c (Transfer)	4,000	Dec. 31	By Balance b/d	40,000
	" Realisation a/c (Stock)	14,000			
	" Realisation a/c (Loss)	18 000			
	" Bank a/c	4,000			
		40,000			40,000

Fast's Capital Account

1967		Rs.	1967		Rs.
Dec 31	To Drawings a/c (Transfer)	4,000	Dce 31	By Balance b/d	30 000
" "	" Realisation a/c (Furniture)	2,000			
" "	" Realisation a/c (Loss)	12,000			
" "	" Bank a/c	12.000			
		30,000			30,000

Medium's Capital Account

1967		Rs.	1967		Rs.
Dec. 31	To Drawings a/c (Transfer)	4,000	Dec 31	By Balance b/d	10,000
" "	" Realisation a/c (Debtors)	10,000	Dec. 31	" Bank a/c	10,000
" "	" Realisation a/c (Loss)	6,000			
		20,000			20 000

Illustration 24

The following was the Balance Sheet of a firm upon dissolution of partnership, Rakesh retiring and Bihari continuing the business. The partners' shares as to capital and profits were Rakesh three-fourths and Bihari one-fourth (साझेदारी के विघटन पर एक फर्म का निम्नलिखित चिट्ठा था, राकेश अवकाश ग्रहण कर रहा है और बिहारी व्यवसाय को चालू रख रहा है। साझियों का पूंजी और लाभ मे हिस्सा राकेश का तीन चौथाई और बिहारी का एक चौथाई है)—

	Rs.		Rs
Capitals-Rakesh	90 000	Freehold	1,20,000
Bihari	30,000	Debtors	30,000
Loan from Rakesh	20,000	Stock	10,000
Creditors	18,000	Cash	10,000
Reserve	12,000		
	1,70,000		1,70,000

Rakesh agreed to buy the Freehold for Rs. 1,00,000 (राकेश स्वकीय को 1,00,000 रु० में खरीदना स्वीकार करता है),

The Stock was taken over by Bihari at 10% discount (रहतिया बिहारी द्वारा 10% बट्टे पर ले लिया जाता है),

The Debtors realised 86% of their value (देनदारों ने उनके मूल्य का 86% वसूल हुआ है), तथा

The costs of liquidation exclusive of the above deficiencies were Rs. 4,700. (उपरोक्त हानियों के अलावा समापन का खर्चा 4,700 रु० आता है।)

What did each partner receive ? Show Cash Account, Liquidation Account and the Partners' Accounts (प्रत्येक साझी ने क्या प्राप्त किया ? रोकड़ खाता, समापन खाता और साझियों के खाते बनाइये।)

Solution :

Cash Account

		Rs.			Rs.
?	To Balance b/d	10.000	?	By Creditors a/c	18,000
	„ Liquidation a/c (Debtors)	25.800		„ Liquidation a/c	4,700
	„ Rakesh's Capital a/c	3,425		„ Behari's Capital a/c	16,525
		39.225			39.225

Liquidation Account

	Rs.		Rs.
To Freehold a/c	1.20.000	By Rakesh's Capital a/c (Freehold)	1.00,000
„ Debtors a/c	30,000	„ Bihari's Capital a/c (Stock)	9.000
„ Stock a/c	10,000	„ Cash a/c (Debtors)	25,800
„ Cash a/c—Cost of Liquidation	4,700	„ Capital Accounts (Loss)—	
		Rakesh 3/4	22,425
		Bihari 1/4	7.475
	1.64,700		1 64,700

Capital Accounts

	Rakesh	Bihari		Rakesh	Bihari
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Liquidation a/c (Freehold & Stock)	1.00,000	9.000	By Balance b/d	90,000	30,000
To Liquidation a/c (Loss)	22 425	7,475	By Reserve a/c	9,000	3,000
To Cash a/c	—	16,525	By Loan a/c (transfer)	20 000	
			By Cash a/c	3,425	
	1 22 425	33,000		1,22,425	33,000

Rakesh's Loan Account

	Rs.		Rs.
To Rakesh's Capital a/c	20 000	By Balance b/d	20,000

साझी का दिवालिया होना (Insolvency of a Partner)—साझेदारी मलेख में किसी बात के अभाव में किसी साझी के दिवालिया हो जाने पर, भारतीय साझेदारी अधिनियम की धारा 42 के अनुसार, उस फर्म का विघटन हो जाता है। फर्म के विघटन पर फर्म की सम्पत्तियों को बेच दिया जाता है और दायित्वों का भुगतान कर दिया जाता है। जैसा कि बताया जा चुका है, यह सब कार्य एक वसूली खाते (Realisation Account) के जरिये होता है। यदि वसूली पर हानि हुई है तो उसे लाभ-विभाजन

के अनुपात मे साझियो के पूंजी खाते मे हस्तान्तरित कर दिया जाता है। ऐसी स्थिति मे हो सकता है कि किसी साझी का पूंजी खाता डेबिट शेष बताने लगे। यदि वह साझी साहूकार (solvent) है तो अपने पूंजी खाते के डेबिट शेष के बराबर राशि वह फर्म मे ले आवेगा और अपना हिसाब चुकता कर देगा। लेकिन यदि ऐसे साझी को दिवालिया घोषित किया जा चुका है तो वह फर्म के प्रति अपने सम्पूर्ण दायित्व का भुगतान नही कर सकेगा। इस घाटे की पूर्ति शेष साहूकार (solvent) साझियो को करनी पडेगी। अब एक महत्वपूर्ण प्रश्न यह उठता है कि इस घाटे को शेष साझी अपने लाभ विभाजन के अनुपात मे वहन करे अथवा अपनी पूंजी के अनुपात मे वहन करे।

सन् 1903 से पूर्व किसी दिवालिया साझी की पूंजी का घाटा शेष साझी अपने लाभ-विभाजन के अनुपात मे बाँटते थे लेकिन इस वर्ष इगलैण्ड के न्यायालय ने गार्नर बनाम मरे (Garner v. Murray) के मुकदमे मे एक महत्वपूर्ण निर्णय देकर इस सम्बन्ध मे एक नये सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। इस सिद्धान्त के अनुसार दिवालिया साझी की पूंजी की कमी को शेष साझी अपने पूंजी के अनुपात मे वहन करेगे। इस मुकदमे एव सिद्धान्त का नीचे वर्णन किया जाता है —

गार्नर बनाम मरे (Garner v. Murray) मुकदमे के तथ्य—गार्नर, मरे और विल्किन्स साझी थे जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात बराबर-बराबर था। 30 जून, 1900 को फर्म का विघटन हुआ और फर्म की सम्पत्तियो को बेच दिया गया तथा लेनदारो को भुगतान कर दिया गया। यह सब हो जाने के बाद फर्म की स्थिति इस प्रकार थी—

	पौण्ड		पौण्ड
गार्नर की पूंजी	2,500	नकद	1,916
मरे की पूंजी	314	विल्किन्स की पूंजी का घाटा	263
		वसूली की हानि	635
	2,814		2,814

विल्किन्स को दिवालिया घोषित कर दिया गया और उससे कुछ भी वसूल न हो सका। फर्म के प्रति विल्किन्स का कुल दायित्व 263 पौण्ड+(635 पौण्ड का $\frac{1}{3}$)=475 पौण्ड बना। न्यायालय के सामने प्रश्न आया कि विल्किन्स की 475 पौण्ड की पूंजी की हानि गार्नर और मरे किस अनुपात मे बाटे।

मुकदमे मे दिया गया निर्णय—इस मुकदमे मे फैसला दिया गया कि दिवालिया साझी की पूंजी की कमी को शेष साझी अपनी उस पूंजी के अनुपात मे बाटेंगे जो फर्म के विघटन से पूर्व बने अन्तिम आर्थिक चिट्ठे मे दी हुई थी।

यह फैसला इस आधार पर दिया गया कि साझी के दिवालिया होने से जो हानि होती है वह व्यापारिक हानि से भिन्न होती है।

निर्णय का स्पष्टीकरण—मुकदमे मे दिये गये निर्णय के आधार पर दो बाते प्रकट होती है.

(1) दिवालिया साझी की पूंजी की कमी को शेष साझी अपने पूंजी के अनुपात मे वहन करेंगे।

(2) पूंजी का अनुपात उस पूंजी के आधार पर निकाला जावेगा जो फर्म के विघटन से पूर्व बने नियमित चिट्ठे मे दी हुई है। उदाहरणार्थ, यदि फर्मका चिट्ठा प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बनता है तो अनुपात ज्ञात करने के लिए उस चिट्ठे मे दी गई पूंजी ली जावेगी जो फर्म के विघटन से पूर्व के 31

दिसम्बर को बना था। यह ध्यान रहे कि यह पूँजी अनुपात का आधार तभी बनेगी जबकि साझियों का पूँजी खाता स्थिर (Fixed) है। यदि साझियो का पूँजी खाता अस्थिर (Floating) है तो साझियो के पूँजी खातो मे चिट्ठे मे दिये गये सचय (Reserve), लाभ-हानि खाते का शेप आदि मदो का समायोजन किया जावेगा। इनके बाद समायोजित पूँजी (Adjusted Capitals) का जो अनुपात आवेगा उसमे दिवालिया साझी की पूँजी का घाटा बाटा जावेगा।*

Illustration 25

The Balance Sheet of Ravi, Som and Mangal stood as under, when they decide to dissolve their business (रवि, सोम और मगल का चिट्ठा निम्न प्रकार था जबकि वे अपने व्यवसाय के विघटन का निर्णय लेते है) —

		Rs		Rs
Creditors		66,000	Cash at Bank	1,000
Capitals •	Rs		Book-Debts	45,000
Ravi	1,20 000		Stock	1,60,000
Som	90,000		Plant and Machinery	1,00,000
Mangal	30,000	2,40,000		
		3,06,000		3,06,000

Assets realise 50% of the book-value and Realisation Expenses amounted to Rs. 500. Mangal is insolvent and unable to bring in any thing. Show the final adjustment of accounts (a) if the decision in Garner v. Murray is not applicable and (b) if the decisión in Garner v. Murray is applicable.

(सम्पत्तियो से पुस्तक मूल्य का 50% वसूल होता है और वसूली के खर्चे 500 रु० होते है। मगल दिवालिया है और कुछ भी लाने के योग्य नही है। खातो का अन्तिम समायोजन दिखाइये (अ) यदि गार्नर बनाम मरे का निर्णय लागू नही होता है, और (ब) यदि गार्नर बनाम मरे का नियम लागू होता है)।

Solution •

(अ) यदि गार्नर बनाम मरे का निर्णय लागू नहीं होता—

Realisation Account

	Rs.			Rs.
To Sundry Assets	3.05,000	By Sundry Creditors		66,000
,, Bank (Realisation Expenses)	500	,, Bank (Sundry Assets realised)		1,52,500
,, Bank (Creditors)	66,000	.. Capital Accounts— (Loss transferred)		
		Ravi	Rs. 51,000	
		Som	Rs 51 000	
		Mangal	Rs 51,000	1,53,000
	3,71,500			3,71,500

*यदि प्रश्न मे 'गार्नर बनाम मरे' नियम के लागू होने अथवा न होने के सम्बन्ध मे कुछ नही दिया गया है तो छात्रो को चाहिए कि वे 'गार्नर बनाम मरे' नियम के अनुसार प्रश्न को हल करें और यह टिप्पणी लिख दें—"हमने यह मान लिया है कि साझियों मे गार्नर बनाम मरे नियम लागू होने का समझौता है।"

Bank Account

	Rs.		Rs
To Balance b/d	1,000	By Realisation a/c (Realisation Exp.)	500
,, Realisation a/c (Assets realised)	1,52,500	,, Realisation a/c (Creditors)	66,000
		,, Ravi's Capital a/c	58,500
		,, Som's Capital a/c	28,500
	1,53.500		1,53,500

Ravi's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	51.000	By Balance b/d	1,20,000
,, Mangal's Capital a/c (½ share of deficiency)	10,500		
,, Bank a/c	58,500		
	1,20 000		1,20,000

Som's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	51,000	By Balance b/d	90,000
,, Mangal's Capital a/c (½ share of deficiency)	10,500		
,, Bank a/c	28,500		
	90,000		90,000

Mangal's Capital Account

	Rs.		Rs
To Realisation a/c (Loss)	51,000	By Balance b/d	30,000
		,, Ravi's Capital a/c (½ of Deficiency)	10,500
		,, Som's Capital a/c (½ of Deficiency)	10,500
	51,000		51,000

नोट—चूंकि रवि और सोम का लाभ-हानि विभाजन का अनुपात बराबर है, अत मंगल की पूंजी का घाटा दोनो मे बराबर-बराबर बांटा जावेगा ।

(ब) यदि गार्नर बनाम मरे का नियम लागू होता है—

वसूली खाता (Realisation Account) (अ) के अनुसार ही बनेगा।

Bank Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	1,000	By Realisation a/c (Realisation Exp.)	500
„ Realisation a/c (Assets realised)	1,52,500	„ Realisation a/c (Creditors)	66,000
		„ Ravi's Capital a/c	57,000
		„ Som's Capital a/c	30,000
	1,53,500		1,53,500

Ravi's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	51,000	By Balance b/d	1,20.0 00
To Mangal's Capital a/c ($\frac{4}{7}$ of Deficiency)	12,000		
To Bank a/c	57,000		
	1,20,000		1,20,000

Som's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	51,000	By Balance b/d	90,000
„ Mangal's Capital a/c ($\frac{3}{7}$ of Deficiency)	9,000		
„ Bank a/c	30.000		
	90,000		90,000

Mangal's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	51,000	By Balance b/d	30,000
		„ Ravi's Capital a/c ($\frac{4}{7}$ of Deficiency)	12,000
		„ Som's Capital a/c ($\frac{3}{7}$ of Deficiency)	9,000
	51,000		51,000

Illustration 26

Sadhu, Mahatma & Sanyasi were equal partners. Their Balance Sheet on the date of dissolution stood as under (साधु, महात्मा और सन्यासी बराबर के साझी

थे । विघटन के दिन उनका चिट्ठा इस प्रकार था) —

Balance Sheet

		Rs.		Rs.
Creditors		3,90,000	Cash at Bank	40,000
Building Fund		60,000	Investments	60,000
Capitals—	Rs.		Debtors	2,00,000
Sadhu	1,00,000		Stock	1,00,000
Mahatma	80,000		Machinery	1,00,000
Sanyasi	20,000	2,00,000	P. & L. a/c	1,50,000
		6,50,000		6,50,000

Sanyasi becomes insolvent and nothing has been received from his estate. Assets realised : Investments Rs. 30,000, Debtors Rs. 1,40,000, Stock Rs. 70,000; Machinery Rs. 70,000. Creditors were paid off at a discount of 5%. Realisation Expenses are Rs. 3,000.

Prepare the necessary accounts on the dissolution of the firm (i) when the Capitals are fixed and (ii) when the Capitals are fluctuating, according to the ruling given in Garner v. Murray.

(सन्यासी दिवालिया हो जाता है और उसकी जायदाद से कुछ भी वसूल नही होता है। सम्पत्तियो से इस प्रकार वसूली होती है . विनियोग 30,000 रु०, देनदार 1,40,000 रु०; स्टॉक 70,000 रु०, मशीन 70,000 रु० । लेनदारो का 5% बट्टे पर भुगतान कर दिया जाता है। 3,000 रु० वसूली पर खर्चा होता है।)

गार्नर बनाम मरे के नियम के आधार पर फर्म के विघटन पर आवश्यक खाते बनाइये (i) जबकि पूँजी स्थिर हो, और (ii) जबकि पूँजी अस्थिर हो।)

Solution ·

(i) जबकि पूँजी स्थिर (Fixed) हो—

Realisation Account

		Rs.			Rs.
To Sundry Assets—			By Creditors		3,90,000
Investments	Rs. 60,000		,, Bank—		
Debtors	Rs. 2,00,000		Investments	Rs. 30,000	
Stock	Rs. 1,00,000		Debtors	Rs. 1,40,000	
Machinery	Rs. 1,00,000	4,60,000	Stock	Rs. 70,000	
,, Bank (Creditors)		3,70,500	Machinery	Rs. 70,000	3,10,000
,, Bank (Realisation Exp.)		3,000	,, Capital Accounts		
			Sadhu	Rs. 44,500	
			Mahatma	Rs. 44,500	
			Sanyasi	Rs. 44,500	1,33.500
		8,33,500			8,33,500

Bank Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	40,000	By Realisation a/c (Creditors)	3,70,500
To Realisation a/c (Assets realised)	3,10,000	By Realisation a/c (Realisation Exp.)	3,000
To Sadhu's Capital a/c	4,778		
To Mahatma's Capital a/c	18,722		
	3,73,500		3,73,500

Sadhu's Current Account

	Rs.		Rs.
To P &L. a/c (Loss)	50,000	By Building Fund	20,000
To Realisation a/c (Loss)	44.500	By Sadhu's Capital a/c	74,500
	94.500		94,500

Mahatma's Current Account

	Rs		Rs
To P & L. a/c (Loss)	50,000	By Building Fund	20,000
To Realisation a/c (Loss)	44,500	By Mahatma's Capital a/c	74,500
	94,500		94,500

Sanyasi's Current Account

	Rs.		Rs
To P. & L a/c (Loss)	50,000	By Building Fund	20,000
To Realisation a/c (Loss)	44.500	By Sanyasi's Capital a/c	74,500
	94,500		94,500

Sadhu's Capital Account

	Rs.		Rs
To Sadhu's Current a/c	74,500	By Balance b/d	1,00,000
.. Sanyasi's Capital a/c (5/9 of Deficiency)	30.278	,, Bank a/c	4 778
	1.04 778		1,04,778

Mahatma's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Mahatma's Current a/c	74,500	By Balance b/d	80,000
,, Sanyasi's Capital a/c (4/9 of Deficiency)	24,222	,, Bank a/c	18,722
	98.722		98 722

Sanyasi's Capital Account

	Rs.		Rs
To Sanyasi's Current a/c	74,500	By Balance b/d	20,000
		,, Sadhu's Capital a/c (5/9 of Deficiency)	30,278
		,, Mahatma's Capital a/c (4/9 of Deficiency)	24,222
	74,500		74,500

(ii) जबकि पूंजी अस्थिर हो—

वसूली खाता (i) के अनुसार ही बनेगा।

Bank Account

	Rs		Rs
To Balance b/d	40,000	By Realisation a/c (Creditors)	3,70,500
,, Realisation a/c (Assets realised)	3,10,000	,, Realisation a/c (Realisation Exp.)	3,000
,, Sadhu's Capital a/c	6,292		
,, Mahatma's Capital a/c	17,208		
	3,73,500		3,73,500

Sadhu's Capital Account

	Rs		Rs
To P. & L. a/c (Loss)	50,000	By Balance b/d	1,00,000
,, Realisation a/c (Loss)	44,500	,, Building Fund	20,000
,, Sanyasi's Capital a/c (7/12 of Deficiency)	31,792	,, Bank a/c	6,292
	1,26,292		1,26,292

Mahatma's Capital Account

	Rs		Rs
To P. & L. a/c (Loss)	50,000	By Balance b/d	80,000
,, Realisation a/c (Loss)	44,500	,, Building Fund	20,000
,, Sanyasi's Capital a/c (5/12 of Deficiency)	22,708	,, Bank a/c	17,208
	1,17,208		1,17,208

खुशीके थिरक रहे थे। तबियतमें ऐसी मौज समा गई कि जिसकी मस्तीमें यह असार संसार मुझे परिस्तान मालूम देने लगा।

खुशी और रञ्ज दबानेसे नहीं दबते। किसी-न-किसी तरह बिना जाहिर हुए नहीं रहते। तो मैं अपनी खुशी कैसे रोक सकता था। मारे झेंपके अहमदसे मैंने उस वक्त एक बात भी न की। नहाकर सीधा मकानमें घुस गया और फिर निकला ही नहीं। मेरे कालेजके दोस्तोंके कई खत आये थे, मगर किसीका जवाब नहीं दिया था। मैंने सोचा, अच्छा हुआ, आज मैं इस खुशीमें सबोंसे बातें करूंगा। इस तरहसे दिलके उत्साह बहुत कुछ निकल जायेंगे। बस, मैं खत लिखने बैठ गया और दर्जनों खत लिख डाले। जब लिफाफेमें रखते समय उनको मैं पढ़ने लगा, तब मैं खुद ही अचरजमें पड़ गया कि ऐसे खत तो मैंने जिन्दगीभर नहीं लिखे थे। हरएक खत एक अच्छा खासा निबन्ध था। वह सुन्दरता, मधुरता, चुलबुलापन और शोखी जो उस लड़कीमें थी वह मेरे खतोंमें झलक रही थी। इस बातकी ताईद भी कुछ दिनों बाद हुई जब मेरे हर दोस्तने जवाबमें यही लिखा कि "भाई, तुम्हारा खत तो अखबारमें छपा देनेके काबिल है। हम और यहांके

हमारे दोस्तोंने कई बार उसको पढ़ा और मज़ा लिया। ईश्वरके लिये तुम हमें बराबर लिखा करो। हमलोग बेचैनी-से तुम्हारे खतकी राह देख रहे हैं।" तभीसे साहित्यके पौधेने मेरे दिलमें अच्छी तरहसे जड़ पकड़ ली। अब मुझे उसके सूखनेका अन्देशा न रहा। मगर इसको किस फुलवारीमें लगाऊं? और अपनी लेखनीके लिये कौनसा विषय चूनूं? इसके लिये मैं अबतक अन्धकारमें पड़ा हुआ था। मगर उस लड़कीके कमलकी तरह खिले हुए हंसते चेहरेने वह अन्धकार भी मिटा दिया। उसकी जगमगाती हुई रोशनीमें हरदम मुझे वही हंसमुख सूरत, वही चंचल मूरत, वही शोख़ और शर्मीली निगाहें, वही बांकी अदायें दिखाई देने लगीं और वही मेरी लेखनीका विषय हो गई।

खैर, साहित्य-सेवाकी मांग तो यों पूरी हुई। मगर अब दिलकी मांगने परेशान करना शुरू कर दिया। यह कमबख्त क्या चाहता है? समझमें नहीं आया। मैं समझता था कि एक दफा यह अच्छी तरहसे देखनेको मिल जाती और दो-दो बातें हो जातीं; तो मेरा हौसला पूरा हो जाता। मगर अब मिलने और बातें करनेके बाद तो प्रेमकी आग और भी भड़क उठी।

लेखककी प्रकृति विचारमय होती है। जिन मामूली-

से-मामूली, ओछी-से-ओछी बातोंको दुनिया नहीं देख सकती और न देखनेकी परवाह करती है, अगर उनको सुनती भी है तो समझ नहीं सकती, वह बातें लेखककी नज़रसे किसी तरह नहीं बच सकतीं। वह बेचारा उनको देखता है और उनके हजारों मतलब निकालता है। फिर प्रेमिकाकी और अपनी प्रेमिकाकी ज़रा-ज़रासी बातें लेखककी नजरसे क्योंकर छिप सकती हैं? और प्रेम तो आदमी क्या गदहेको भी विचारमय बना देता है। फिर वही आदमी जो कभी विचार करना जानता था, इस दिमागी रोगमें पड़कर लोगोंसे दूर भागता है और एकान्त-में बैठकर दिन-रात सोचा ही करता है। और अपने ही ख्यालातसे परेशान होने लगता है। फिर लेखकका तो स्वभाव ही विचारमय ठहरा; उसपर प्रेमका असर कैसा पड़ सकता है और प्रेममें पड़कर उसके ख्यालात उसे कितना परेशान कर सकते हैं, न लिखा जा सकता है न बताया जा सकता है। शराब तो अच्छे खासे आदमीको पागल बना देती है; और अगर पागलको शराब पिला दी जाय तो क्या दशा हो? वही जाने, देखनेवाले क्या समझें। वही हालत लेखक या किसी विचारमय आदमीकी प्रेममें होती है।

Karim's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	3,900	By Balance b/d	20,000
„ Rahman's Capital a/c (10/27 of Deficiency)	1,000		
„ Salim's Capital a/c (2/5 of Deficiency)	40		
„ Bank a/c	15,060		
	20,000		20,000

Salim's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	3,900	By Balance b/d	4,000
„ Rahman's Capital a/c (2/27 of Deficiency)	200	„ Rahim's Capital a/c (3/5 of Deficiency)	60
		„ Karim's Capital a/c (2/5 of Deficiency)	40
	4,100		4,100

Rahman's Capital Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c (Loss)	3,900	By Balance b/d	1,200
		„ Rahim's Capital a/c-15/27	1,500
		„ Karim's Capital a/c-10/27	1,000
		„ Salim's Capital a/c- 2/27	200
	3,900		3,900

नोट—रहमान की पूँजी का घाटा (3,900—1,200) रु०=2,700 रु० रहीम, करीम और सलीम में उनके पूँजी के अनुपात (15 : 10 : 2 क्रमशः) में बाँटा जावेगा। तब सलीम के पूँजी खाते में 100 रु० का घाटा हो जायेगा जिसे रहीम और करीम के मध्य उनके पूँजी के अनुपात (3 : 2 क्रमशः) में बाँटा जावेगा।

सम्पत्तियों का शनैः शनैः बेचा जाना और रकम का वितरण किया जाना
(Gradual Realisation of Assets and Distribution of the Proceeds)

यदि फर्म की समस्त सम्पत्तियाँ विघटन के समय बेच दी जाती हैं और लेनदारों आदि दायित्वों का भुगतान कर दिया जाता है तो वसूली पर लाभ अथवा हानि तुरन्त ज्ञात हो जाती है और फर्म के खाते बन्द करके साझियों की पूंजी का भुगतान किया जा सकता है। लेकिन व्यवहार में सभी सम्पत्तियों का एक

साथ विकना कठिन है और यदि प्रयास करके बेचा भी जाय तो यह अलाभ-प्रद हो सकता है। ऐसी स्थिति में फर्म की सम्पत्तियों को धीरे-धीरे वेचा जाता है। सम्पत्तियों की विक्री से प्राप्त राशि को समस्त सम्पत्तियों के बिक जाने तक इकट्ठा नहीं किया जाता बल्कि यह राशि जैसे-जैसे प्राप्त होती जाती है वैसे-वैसे इसका वितरण कर दिया जाता है। इस राशि का वितरण विभिन्न पक्षों में उनके अधिकारों के हिसाब से होता है। यह तभी सम्भव है जबकि इस राशि का वितरण निम्न क्रम में किया जावे :

(i) **दायित्वों का भुगतान**—सर्व प्रथम फर्म के दायित्वों का भुगतान किया जावेगा, जैसे, वसूली सम्बन्धी खर्च, लेनदार आदि।

(ii) **साझियों के ऋण**—दायित्वों के भुगतान के पश्चात् उस ऋण का भुगतान किया जावेगा जो किसी साझी ने फर्म को दे रखा है। यदि फर्म को कई साझियों ने ऋण दे रखा है और वितरण की राशि सबको चुकाने के लिए पर्याप्त नहीं है तो भुगतान ऋणों के अनुपात में किया जावेगा।

(iii) **साझियों की पूंजी**—उपरोक्त दायित्वों को चुकाने के पश्चात् यदि धन-राशि वचती है अथवा वसूल होती है तो उसका उपयोग साझियों की पूँजी का भुगतान करने में किया जायेगा। यह भुगतान इस आधार पर किया जावेगा कि किसी भी साझी को दी गई राशि कैसी भी परिस्थिति में उससे वापस न मंगानी पड़े। यह भुगतान निम्न प्रकार किया जावेगा:—

(अ) यदि साझियों की पूँजी लाभ-विभाजन के अनुपात में है तो प्राप्त राशि भी लाभ-विभाजन (अर्थात् पूँजी) के अनुपात में बांट दी जावेगी।

(ब) यदि साझियों की पूँजी लाभ-विभाजन के अनुपात में नहीं है तो जब तक पूँजी लाभ-विभाजन के अनुपात में न आ जावे तब तक प्राप्त राशि का भुगतान यह मानते हुये किया जावेगा कि शेष सम्पत्तियों से कुछ भी वसूल नही हो सकेगा और कोई भी साझी अपने निजी साधन से कुछ भी नहीं ला सकेगा। यदि समझौते अथवा साझेदारी संलेख के अनुसार गार्नर बनाम मरे नियम लागू होता है तो यह मानते हुये कि शेष सम्पत्तियों से कुछ भी वसूल नहीं होगा, इस नियम को भी लागू किया जावेगा।

उदाहरण—

चिट्ठा

	रु०		रु०
पूंजी—			
मनु	3,500	सम्पत्तियां	9,000
माधव	3,000		
महेश	2,500		
	9,000		9,000

(अ) यदि मनु, माधव और महेश का लाभ-विभाजन का अनुपात क्रमशः 7 : 6 : 5 है तो किसी भी सम्पत्ति के बेचने से जो राशि प्राप्त होगी उसे 7 : 6 : 5 के अनुपात में बांट दिया जावेगा क्योंकि पूंजी और लाभ-विभाजन का अनुपात एक ही है। जैसे, यदि किसी सम्पत्ति को 1,110 रु० में बेचा गया तो इस राशि में मनु, माधव और महेश को क्रमशः 432 रु०, 370 रु० और 308 रु० मिलेगा। (गणना निकटतम रुपये तक की गई है।)

(ब) यदि साझी लाभों को बराबर-बराबर बांटते हैं अर्थात् लाभ-विभाजन का अनुपात पूंजी के अनुपात से भिन्न है और गार्नर बनाम मरे नियम लागू नहीं होता है तो 1,110 रु० की सम्पत्ति बिकने पर यह मान लिया जावेगा कि शेष (9,000–1,110) रु०=7,890 रु० की सम्पत्तियां बेकार हैं और इस घाटे को साझियों में बराबर-बराबर (अर्थात् प्रत्येक को 2,630 रु०) बांट दिया जावेगा। तब मनु के पूंजी खाते में 870 रु० और माधव के पूंजी खाते में 370 रु० शेष बचेगा, लेकिन महेश के पूंजी खाते में 130 रु० का घाटा उत्पन्न हो जावेगा। इस घाटे को मनु और माधव अपने लाभ-विभाजन के अनुपात में अर्थात् बराबर-बराबर (प्रत्येक 65 रु०) बांटेंगे। तब मनु का खाता 805 रु० और माधव का खाता 305 रु० शेष दिखलावेगा जो प्राप्त राशि 1,110 रु० के बराबर है, अतः इस राशि (1,110 रु०) में 805 रु० मनु को और 305 रु० माधव को दिया जावेगा।

यदि गार्नर बनाम मरे नियम लागू होता है तो महेश का 130 रु० का घाटा मनु और माधव में उनकी पूंजी के अनुपात (7 : 6) में बांटा जावेगा अर्थात इसमें से 70 रु० मनु को और 60 रु० माधव को वहन करना पड़ेगा। तब मनु के खाते में 800 रु० और माधव के खाते में 310 रु० शेष बचेंगे जो कि प्राप्त राशि (1,110 रु०) के बराबर होंगे। अतः मनु को 800 रु० और माधव को 310 रु० प्राप्त होगा।

Illustration 29

Mukut, Manohar and Bihari are equal partners. On the date of dissolution, their Balance Sheet stood as under, (मुकुट, मनोहर और बिहारी बराबर के साझी हैं। विघटन की तारीख को उनका चिट्ठा इस प्रकार था):—

Balance Sheet

	Rs.		Rs.
Creditors	20,000	Sundry Assets	95,000
Mukut's Loan	10,000		
Manohar's Loan	5,000		
Mukut's Capital	20,000		
Manohar's Capital	20,000		
Bihari's Capital	20,000		
	95,000		95,000

The assets realised Rs. 60,000 in four equal instalments. Show the distribution of the proceeds as and when received (सम्पत्तियों से चार बराबर की किस्तों में 60,000रु० वसूल हुए। धन राशि जैसे-जैसे प्राप्त हुई उसका वैसे-वैसे वितरण दिखाइये।)

Solution : **Statement showing distribution of Cash**

	Creditors Rs.	Mukut's Loan Rs.	Manohar's Loan Rs.	Mukut's Capital Rs.	Manohar's Capital Rs.	Bihari's Capital Rs.
Amount Due	20,000	10,000	5,000	20,000	20,000	20,000
I Instalment Rs. 15,000						
Paid to creditors	15,000					
Balance Due	5,000	10,000	5,000	20,000	20,000	20,000
II Instalment Rs. 15,000						
(i) Rs. 5,000 paid to creditors						
(ii) Balance Rs. 10,000 distributed between Mukut's Loan and Manohar's Loan in the Ratio of 2 : 1	5,000	6,667	3,333	...	...	...
Balance Due	...	3,333	1,667	20,000	20,000	20,000
III Instalment Rs.15,000						
(i) Rs. 5,000 paid to Mukut and Manohar for their loans.						
(ii) Balance Rs. 10,000 distributed among partners equally	...	3,333	1,667	3,333	3,333	3,334
Balance Due	...	...	...	16,667	16,667	16,666
IV Instalment Rs.15,000						
distributed equally	...	...	...	5,000	5,000	5,000
Loss on Realisation	...	...	...	11,667	11,667	11,666

नोट—(i) 95,000 रु० की सम्पत्ति से 60,000 रु० वसूल हुए, अतः 35,000 रु० का वसूली पर नुकसान हुआ जो साझियों में बराबर-बराबर बांटा जावेगा। 60,000 रु० के वितरण के पश्चात् साझियों के खाते में जो शेष बचा है, वह यही नुकसान है।

(ii) गणना निकटतम रुपये तक की गई है।

Illustration 30

Kumar, Manoj, Pradeep and Puran are partners sharing profits in the ratio of 4 : 3 : 2 : 1 respectively. Their capitals are Rs. 3,000, Rs. 9,000, Rs. 10,000 and Rs. 2,000 respectively.

The firm is dissolved and the assets realised in three instalments of Rs. 12,000, Rs. 6,000 and Rs. 2,000 respectively.

Prepare a statement showing the distribution of cash among the partners as and when it realised, assuming that any deficiency on a partner's capital account at any stage will not be recoverable from him.

कुमार, मनोज, प्रवीण और पुरुष साझी हैं
विभाजित करते हैं। उनकी पूँजी क्रमश: 3,000 रु०,
फर्म का विघटन हो जाता है और सम्पत्ति
रु० की तीन किस्तों में वसूल होती है।
यह मानते हुए कि किसी भी साझी के पूँजी
नहीं हो सकेगा, नकद राशि जैसे-जैसे प्राप्त हुई वैसे-
विवरण-पत्र बनाइये।

Solution :

चूँकि सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य समस्त
का पुस्तक मूल्य = (3,000 + 9,000 + 10,000 +
यह मान लिया गया है कि दायित्वों का
(i) गार्नर बनाम मरे नियम लागू न हों

Statement showing distri

Amount Due (C

I Instalment—Rs. 12,000

Book value of assets Rs.
Less I Instalment Rs.
Loss if no further realisations are m
Rs.
Balance on capital accounts
Kumar's deficiency shared in profit
sharing ratio (3 : 2 : 1)

Division of Rs. 12,000

Amou

II Instalment—Rs. 6,000

Book value of assets Rs.
Less I and II Instalments,
Rs. (12,000 + 6,000) realised Rs.
Loss if no further realisations are
made Rs.

Division of Rs. 6,000

Amou

III Instalment—Rs. 2,000

Book value of assets Rs.
Less I, II & III Instalments
Rs. (12,000 + 6,000 + 2,000) Rs.
Loss on realisation Rs.

Division of Rs. 2,000

profits in the ratio of 4 : 3 : 3. They
Sheet on 31st Dec. 1967, the date of
और स्मूल क्रमश: 4 : 3 : 3 के अनुपात में लाभ
ते हैं। विघटन के दिन 31 दिसम्बर, 1967 को

Sheet

	Rs.
Plant and Machinery	70,000
Stock	31,000
Debtors	30,000
Cash	2,000
	13,3,000

म्पत्तियों से वसूली इस प्रकार हुई :

	Jan.	Feb.	March
	Rs.	Rs.	Rs.
...	26,000	20,000	16,000
...	14,000	6,000	10,000
...	18,000	6,000	4,000
...	400	200	200

he distribution of cash as and when
accounts. (नकद का जैसे-जैसे प्राप्त हुआ, वैसे-
श्यक खाते भी बनाइये।)

(ii) गार्नर बनाम मरे नियम लागू होने पर

Statement showing distribution among Partners

		Kumar	Manoj	Pradeep	Puran
		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Amount Due (Capitals)		3,000	9,000	10,000	2,000
I Instalment—Rs. 12,000					
Book value of assets	...Rs. 24,000				
Less I Instalment	...Rs. 12,000				
Loss if on further realisations are made	...Rs. 12,000	–4,800	–3,600	–2,400	–1,200
Balance on Capital accounts		–1,800	5,400	7,600	800
Kumar's deficiency shared in capital ratio i. e. 9 : 10 : 2 respectively		+1,800	–772	–857	–171
Division of Rs. 12,000 ...	...	–	4,628	6,743	629
Amount Due		3,000	4,372	3,257	1,371
II Instalment—Rs. 6,000					
Book value of assets	...Rs. 24,000				
Less I & II Instalments Rs. (12,000+6,000) realised	...Rs. 18,000				
Loss if no further realisations are made	...Rs. 6,000	–2,400	–1,800	–1,200	–600
Division of Rs. 6,000 ...	...	600	2,572	2,057	771
Amount Due—		2,400	1,800	1,200	600
III Instalment—Rs. 2,000					
Book value of assets	...Rs. 24,000				
Less I, II & III Instalments Rs. (12,000+6,000+2,000)	...Rs. 20,000				
Loss on realisation	...Rs. 4,000	–1,600	–1,200	–800	–400
Division of Rs. 2,000 ...	...	800	600	400	200

Illustration 31

Rafiq, Rahman and Rasul share profits in the ratio of 4 : 3: 3. They decide to dissolve the firm. Their Balance Sheet on 31st Dec. 1967, the date of dissolution, stood as under. (रफीक, रहमान और रसूल क्रमश: 4 : 3 : 3 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हैं। वे फर्म का विघटन करना तय करते हैं। विघटन के दिन 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था):—

Balance Sheet

	Rs.		Rs.
Creditors	37,000	Plant and Machinery	70,000
Rafiq's Capital	40,000	Stock	31,000
Rahman's Capital	36,000	Debtors	30,000
Rasul's Capital	20,000	Cash	2,000
	1,33,000		13,3,000

The assets realised as follows : सम्पत्तियों से वसूली इस प्रकार हुई :

	Jan. Rs.	Feb. Rs.	March Rs.
Plant and Machinery	26,000	20,000	16,000
Stock	14,000	6,000	10,000
Debtors	18,000	6,000	4,000
Expenses on Realisation	400	200	200

Prepare the statement showing the distribution of cash as and when received and prepare the necessary ledger accounts. (नकद का जैसे-जैसे प्राप्त हुआ, वैसे-वैसे वितरण दिखाते हुए विवरण पत्र बनाइये और आवश्यक खाते भी बनाइये।)

Solution : **Statement showing distribution of cash**

		Creditors	Rafiq	Rahman	Rasul
		Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Amount Due		37,000	40,000	36,000	20,000
Distribution of cash in hand		2,000	—	—	—
Amount Due		35,000	40,000	36,000	20,000
January Instalment—					
Rs. (26,000+14,000+18,000)	Rs. 58,000				
Less Realisation Expenses	Rs. 400				
Amount available for distribution	Rs. 57,600				
Less amount paid to creditors	Rs. 35,000	35,000			
Amount available for distribution among partners	Rs. 22,600				
Loss if no further realisations are made—(Partners' Capitals—Amount available), i. e. Rs.(40,000+36,000+20,000–22,600)	Rs. 73,400		-29,360	-22,020	-22,020
Balance on Capital Accounts		—	10,640	13,980	-2,020
Rasul's deficiency shared in capital ratio i. e. 10 : 9 by Rafiq & Rahman			-1,064	-956	+2,020
Division of Rs. 22,600			9,576	13,024	—
Amount Due			30,424	22,976	20,000
February Instalment—					
Rs. (20,000+6,000+6,000)	Rs. 32,000				
Less Realisation Expenses	Rs. 200				
Amount available for distribution	Rs. 31,800				
Loss if no further realisations are made—(Balance of partners' capitals—Amount available) i. e. Rs. (30,424+22,976+20,000—31,800)	Rs. 41,600		-16,640	-12,480	-12,480
Division of Rs. 31,800			13,784	10,496	7,520
Amount Due			16,640	12,480	12,480
March Instalment—					
Rs. (16,000+10,000+4,000)	Rs. 30,000				
Less Realisation Expenses	Rs. 200				
Amount available for distribution (in profit sharing ratio.)	Rs. 29,800		11,920	8,940	8,940
Loss on Realisation			-4,720	-3,540	-3,540

नोट—फरवरी की किस्त बांटने के पश्चात् साझियों की पूँजी लाभ-विभाजन के अनुपात में आजाती है अतः मार्च की किस्त लाभ-विभाजन के अनुपात में बांटी जावेगी।

Ledger Accounts

Realisation Account

		Rs.			Rs.
?	To Sundry Assets—		?	By Sundry Liabilities (Creditors)	37,000
	Plant and Machinery	70,000			
	Stock	31,000	Jan.	By Cash	58,000
	Debtors	30,000	Feb.	,, Cash	32,000
Jan.	,, Cash (Creditors)	2,000	Mar.	,, Cash	30,000
,,	,, Cash (Realisation Exp.)	400	,,	,, Loss on Realisation transferred to :	
Feb.	,, Cash (Creditors)	35,000			
,,	,, Cash (Realisation Exp.)	200		Rafiq's Capital a/c	4,720
				Rahman's Capital a/c	3,540
March	,, Cash (Realisation Exp.)	200		Rasul's Capital a/c	3,540
		1,68,800			1,68,800

Cash Account

		Rs.			Rs,
Jan.	To Balance b/d	2,000	Jan.	By Realisation a/c (Creditors)	2,000
,,	,, Realisation a/c	58,000	,,	,, Realisation a/c (Exp.)	400
Feb.	,, Realisation a/c	32,000	,,	,, Realisation a/c (Creditors)	35,000
Mar.	,, Realisation a/c	30,000	,,	,, Rafiq's Capital a/c	9,576
			,,	,, Rahman's Capital a/c	13,024
			Feb.	,, Realisation a/c (Exp.)	200
			,,	,, Rafiq's Capital a/c	13,784
			,,	,, Rahman's Capital a/c	10,496
			,,	,, Rasul's Capital a/c	7,520
			Mar.	,, Realisation a/c (Exp.)	200
			,,	,, Rafiq's Capital a/c	11,920
			,,	,, Rahman's Capital a/c	8,940
			,,	,, Rasul's Capital a/c	8,940
		1,22,000			1,22,000

Capital Accounts

		Rafiq	Rahman	Rasul			Rafiq	Rahman	Rasul
		Rs.	Rs.	Rs.			Rs.	Rs.	Rs.
Jan.	To Cash a/c	9,576	13,024	—	Jan.	By Balance b/d	40,000	36,000	20,000
Feb.	,, Cash a/c	13,784	10,496	7,520					
Mar.	,, Cash a/c	11,920	8,940	8,940					
,, ,,	,, Realisation a/c (loss)	4,720	3,540	3,540					
		40,000	36,000	20,000			40,000	36,000	20,000

एकीकरण (Amalgamation)

जब दो व्यवसायों को मिलाकर एक व्यवसाय स्थापित किया जाता है तो इसे 'एकीकरण' (Amalgamation) कहते हैं। यह एकीकरण कई रूप ले सकता है, जैसे—दो एकाकी व्यापारियों का एकीकरण, एक एकाकी व्यापारी और एक फर्म का एकीकरण, दो फर्मों का एकीकरण, आदि।

एकीकरण सम्बन्धी लेखा—जिन व्यवसायों को मिला दिया जाता है, उनकी पुस्तकें बन्द कर दी जावेंगी और नये व्यवसाय की पुस्तकें खुल जावेंगी। पुराने व्यवसायों की पुस्तकें बन्द करने के लिए निम्नलिखित कदम उठाने पड़ेंगे—

(1) प्रत्येक व्यवसाय में पुनर्मूल्यांकन खाता खोला जावेगा और इसके लाभ-हानि को व्यवसाय के स्वामी अथवा साझियों (जैसी भी परिस्थिति हो) के खातों में हस्तान्तरित कर दिया जावेगा।

(2) ख्याति के सम्बन्ध में लेखा किया जावेगा।

(3) जिन सम्पत्तियों एवं दायित्वों को नये फर्म में नहीं लिया गया है, उन्हें पुराने फर्म के साझियों में उनके पूँजी के अनुपात में विभाजित कर दिया जावेगा।

(4) जो सम्पत्तियां एवं दायित्व नये फर्म ने ले लिए हैं उनके लिए फर्म का खाता क्रमशः डेबिट और क्रेडिट कर दिया जावेगा।

(5) पुराने फर्म के पूँजी खातों को नये फर्म के खाते में हस्तान्तरित करके बन्द कर दिया जावेगा।

इस प्रकार पुराने फर्म की पुस्तकें बन्द हो जावेंगी। नये फर्म की पुस्तकें खोलने के लिए इस प्रकार प्रविष्टियां करनी होंगी :—

Assets a/c Dr. (जिस मूल्य पर लिया गया है)
    To Liabilities a/c
    To Partners' Capital a/cs
(Assets and Liabilities taken over.)

Illustration 32

Following were the Balance Sheets of two firms M/s Vimal and Vinod and M/s Kamal and Kishore as at 31st Dec. 1967 (दो फर्म मैं० विमल एण्ड विनोद तथा मैं० कमल एण्ड किशोर के 31 दिसम्बर, 1967 को चिट्ठे इस प्रकार थे) :—

Liabilities	Vimal & Vinod	Kamal & Kishore	Assets	Vimal & Vinod	Kamal & Kishore
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
Sundry Creditors	2,00,000	2,50,000	Cash at Bank	56,000	67,000
Mrs. Vimal's Loan	50,000	—	Stock in Trade	2,04,000	1,83,000
Capitals—			Sundry Debtors	1,50,000	2,00,000
Vimal	4,00,000		Furniture	40,000	50,000
Vinod	2,00,000		Buildings	4,00,000	—
Kamal		2,40,000	Investments	—	1,50,000
Kishore		1,60,000			
	8,50,000	6,50,000		8,50,000	6,50,000

Both the firms are amalgamated on 1st Jan. 1968. For this purpose it is agreed that Mrs. Vimal's loan should be repaid and that the investments of M/s Kamal and Kishore be not taken over by the new firm. Goodwill of M/s Vimal & Vinod be fixed at Rs. 80,000 and that of M/s Kamal and Kishore at Rs. 1,00,000. Buildings were revalued at Rs. 5,00,000. Stock in trade of M/s Vimal and Vinod be reduced by Rs. 40,000 and that of M/s Kamal and Kishore was increased by Rs. 20,000. Provision was made for bad and doubtful debts at 5% of the sundry debtors of both the firms. The total capital of the new firm is agreed to be Rs. 8,00,000 and the capital of each partner was to be in the profit-sharing ratio which was to be 3 : 2 : 3 : 2. Goodwill account in the new firm is not to remain.

Close the books of the old firms and pass the opening journal entries in the books of the new firm. Also give the opening Balance Sheet of the new firm.

(1 जनवरी, 1968 को दोनों फर्मों का एकीकरण हो जाता है। इसके लिए यह तय किया जाता है कि श्रीमती विमल का ऋण चुका दिया जाय और मै० कमल एण्ड किशोर के विनियोग नये फर्म द्वारा न लिये जांय। मै० विमल एण्ड विनोद की ख्याति 80,000 रु० और मै० कमल एण्ड किशोर की ख्याति 1,00,000 रु० स्थिर की जाय। भवन का 5,00,000 रु० पर पुनर्मूल्यांकन किया गया। मै० विमल एण्ड विनोद का स्टॉक 40,000 रु० से घटाया गया और मै० कमल एण्ड किशोर का स्टॉक 20,000 रु० से बढ़ाया गया। दोनों फर्मों के देनदारों पर 5% डूबत और संदिग्ध ऋण के लिये आयोजन किया गया। नये फर्म की कुल पूंजी 8,00,000 रु० तय की गई और प्रत्येक साझी की पूंजी उसके लाभ-विभाजन के अनुपात में होना तय हुआ है। लाभ विभाजन का अनुपात 3 : 2 : 3 : 2 है। नये फर्म में ख्याति खाता नहीं रहेगा।

पुराने फर्म की पुस्तकें बन्द करिये और नये फर्म की पुस्तकों में प्रारम्भिक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। नये फर्म का प्रारम्भिक चिट्ठा भी बनाइये।)

Journal of M/s Vimal and Vinod

				Rs.	Rs.
1968 Jan, 1	Goodwill a/c	Dr.		80,000	
	To Vimal's Capital a/c				40,000
	To Vinod's Capital a/c				40,000
	(Goodwill credited.)				
" "	Mrs. Vimal's Loan a/c	Dr.		50,000	
	To Bank a/c				50,000
	(Loan paid off.)				
" "	Revaluation a/c	Dr.		47,500	
	To Stock in trade a/c				40,000
	To Provision for Bad & Doubtful Debts a/c				7,500
	(Decrease in the value of assets.)				

Journal of M/s Vimal and Vinod Contd.

1968			Rs.	Rs.
Jan. 1	Buildings a/c Dr.		1,00,000	
	To Revaluation a/c			1,00,000
	(Increase in the value of buildings.)			
" "	Revaluation a/c Dr.		52,500	
	To Vimal's Capital a/c			26,250
	To Vinod's Capital a/c			26,250
	(Profit on revaluation transferred.)			
" "	M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore Dr.		9,40,000	
	To Cash at Bank a/c			6,000
	To Stock in Trade a/c			1,64,000
	To Sundry Debtors a/c			1,50,000
	To Furniture a/c			40,000
	To Buildings a/c			5,00,000
	To Goodwill a/c			80,000
	(Assets taken over by the new firm.)			
" "	Sundry Creditors a/c Dr.		2,00,000	
	Provision for Bad & Doubtful Debts a/c Dr.		7,500	
	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore			2,07,500
	(Liabilities taken over by the new firm.)			
" "	Vimal's Capital a/c Dr.		4,66,250	
	Vinod's Capital a/c Dr.		2,66,250	
	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore			7,32,500
	(Transfer of capitals of Vimal and Vinod to the new firm.)			

Ledger of M/s Vimal and Vinod

Revaluation Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Stock in Trade	40,000	Jan. 1	By Buildings a/c	1,00,000
" "	" Provision for Bad & Doubtful Debts	7,500			
" "	" Profit—				
	Vimal	26,250			
	Vinod	26,250			
		1,00,000			1,00,000

Goodwill Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Vimal's Capital a/c	40,000	Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	80,000
,, ,,	,, Vinod's Capital a/c	40,000			
		80,000			80,000

Mrs. Vimal's Loan Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Bank a/c	50,000	Jan. 1	By Balance b/d	50,000

Bank Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	56,000	Jan. 1	By Mrs. Vimal's Loan a/c	50,000
				,, M/s Vimal Vinod, Kamal & Kishore	6,000
		56,000			56,000

Stock-in-Trade Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	2,04,000	Jan. 1	By Revaluation a/c	40,000
				,, M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	1,64,000
		2,04,000			2,04,000

Sundry Debtors Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	1,50,000	Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	1,50,000

Furniture Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	40,000	Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	40,000

Buildings Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	4,00,000	Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	5,00,000
,, ,,	,, Revaluation a/c	1,00,000			
		5,00,000			5,00,000

Provision for Bad and Doubtful Debts Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	7,500	Jan. 1	By Revaluation a/c	7,500

Sundry Creditors Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	2,00,000	Jan. 1	By Balance b/d	2,00,000

Capital Accounts

1968		Vimal	Vinod	1968		Vimal	Vinod
		Rs.	Rs,			Rs.	Rs.
Jan. 1	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	4,66,250	2,66,250	Jan. 1	By Balance b/d	4,00,000	2,00,000
				,, ,,	,, Goodwill a/c	40,000	40,000
				,, ,,	,, Revaluation a/c	26,250	26,250
		4,66,250	2,66,250			4,66,250	2,66,250

M/s Vimal, Vinod, Kamal and Kishore

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Bank a/c	6,000	Jan. 1	By Sundry Creditors a/c	2,00,000
,, ,,	,, Stock a/c	1,64,000	,, ,,	,, Provision for Bad and Doubtful Debts a/c	7,500
,, ,,	,, Sundry Debtors a/c	1,50,000	,, ,,	,, Vimal's Capital a/c	4,66,250
,, ,,	,, Furniture a/c	40,000	,, ,,	,, Vinod's Capital a/c	2,66,250
,, ,,	,, Buildings a/c	5,00,000			
,, ,,	,, Goodwill a/c	80,000			
		9,40,000			9,40,000

Journal of M/s Kamal & Kishore

Date	Particulars		Rs.	Rs.
1968 Jan. 1	Goodwill a/c	Dr.	1,00,000	
	To Kamal's Capital a/c			50,000
	To Kishore's Capital a/c			50,000
	(Goodwill credited.)			
,, ,,	Kamal's Capital a/c	Dr.	90,000	
	Kishore's Capital a/c	Dr.	60,000	
	To Investments a/c			1,50,000
	(Investments distributed.)			
,, ,,	Stock a/c	Dr.	20,000	
	To Revaluation a/c			20,000
	(Increase in the value of stock.)			
,, ,,	Revaluation a/c	Dr.	10,000	
	To Provision for Bad & Doubtful Debts a/c			10,000
	(Provision for Bad & Doubtful Debts created at 5% on Sundry Debtors.)			
,, ,,	Revaluation a/c	Dr.	10,000	
	To Kamal's Capital a/c			5,000
	To Kishore's Capital a/c			5,000
	(Profit on revaluation transferred.)			
,, ,,	M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	Dr.	6,20,000	
	To Cash at Bank a/c			67,000
	To Stock in Trade a/c			2,03,000
	To Sundry Debtors a/c			2,00,000
	To Furniture a/c			50,000
	To Goodwill a/c			1,00,000
	(Assets taken over by the new firm.)			
,, ,,	Sundry Creditors a/c	Dr.	2,50,000	
	Provision for Bad & Doubtful Debts a/c	Dr.	10,000	
	To M/s Vimal, Vinod Kamal & Kishore			2,60,000
	(Liabilities taken over by the new firm.)			
	Kamal's Capital a/c	Dr.	2,05,000	
	Kishore's Capital a/c	Dr.	1,55,000	
	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore			3,60,000
	(Transfer of the capital accounts of Kamal and Kishore to the new firm.)			

Ledger of M/s Kamal and Kishore

Revaluation Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1968 Jan. 1	To Provision for Bad & Doubtful Debts a/c	10,000	1968 Jan. 1	By Stock in Trade a/c	20,000
" "	" Profit—				
	Kamal	5,000			
	Kishore	5,000			
		20,000			20,000

Goodwill Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1968 Jan. 1	To Kamal's Capital a/c	50,000	1968 Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	1,00,000
" "	" Kishore's Capital a/c	50,000			
		1,00,000			1,00,000

Bank Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1968 Jan. 1	To Balance b/d	67,000	1968 Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	67,000

Stock Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1968 Jan. 1	To Balance b/d	1,83,000	1968 Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	2,03,000
" "	" Revaluation a/c	20,000			
		2,03,000			2,03,000

Sundry Debtors Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1968 Jan. 1	To Balance b/d	2,00,000	1968 Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	2,00,000

Furniture Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1968 Jan. 1	To Balance b/d	50,000	1968 Jan. 1	By M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	50,000

Investments Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	1,50,000	Jan. 1	By Kamal's Capital a/c	90,000
			,, ,,	,, Kishore's Capital a/c	60,000
		1,50,000			1,50,000

Sundry Creditors Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	2,50,000	Jan. 1	By Balance b/d	2,50,000

Provision for Bad and Doubtful Debts Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To M/s Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	10,000	Jan. 1	By Revaluation a/c	10,000

Capital Accounts

		Kamal	Kishore			Kamal	Kishore
1968		Rs.	Rs.	1968		Rs.	Rs.
Jan. 1	To Investment a/c	90,000	60,000	Jan. 1	By Balance b/d	2,40,000	1,60,000
,, ,,	,, Vimal, Vinod, Kamal & Kishore	2,05,000	1,55,000	,, ,,	,, Goodwill a/c	50,000	50,000
				,, ,,	,, Revaluation a/c	5,000	5,000
		2,95,000	2,15,000			2,95,000	2,15,000

M/s Vimal, Vinod, Kamal and Kishore

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Bank a/c	67,000	Jan. 1	By Sundry Creditors a/c	2,50,000
,, ,,	,, Stock a/c	2,03,000	,, ,,	,, Provision for Bad & Doubtful Debts a/c	10,000
,, ,,	,, Sundry Debtors a/c	2,00,000			
,, ,,	,, Furniture a/c	50,000	,, ,,	,, Kamal's Capital a/c	2,05,000
,, ,,	,, Goodwill a/c	1,00,000	,, ,,	,, Kishore's Capital a/c	1,55,000
		6,20,000			6,20,000

Journal of M/s Vimal, Vinod, Kamal and Kishore

Date	Particulars		Rs.	Rs.
1968 Jan. 1	Cash at Bank a/c	Dr.	6,000	
	Stock-in-Trade a/c	Dr.	1,64,000	
	Sundry Debtors a/c	Dr.	1,50,000	
	Furniture a/c	Dr.	40,000	
	Buildings a/c	Dr.	5,00,000	
	Goodwill a/c	Dr.	80,000	
	To Sundry Creditors a/c			2,00,000
	To Provision for Bad and Doubtful Debts a/c			7,500
	To Vimal's Capital a/c			4,66,250
	To Vinod's Capital a/c			2,66,250
	(Assets and Liabilities taken over from M/s Vimal and Vinod.)			
,,	Cash at Bank a/c	Dr.	67,000	
	Stock-in-Trade a/c	Dr.	2,03,000	
	Sundry Debtors a/c	Dr.	2,00,000	
	Furniture a/c	Dr.	50,000	
	Goodwill a/c	Dr.	1,00,000	
	To Sundry Creditors a/c			2,50,000
	To Provision for Bad and Doubtful Debts a/c			10,000
	To Kamal's Capital a/c			2,05,000
	To Kishore's Capital a/c			1,55,000
	(Assets and Liabilities taken over from M/s Kamal and Kishore.)			
,,	Vimal's Capital a/c	Dr.	54,000	
	Vinod's Capital a/c	Dr.	36,000	
	Kamal's Capital a/c	Dr.	54,000	
	Kishore's Capital a/c	Dr.	36,000	
	To Goodwill a/c			1,80,000
	(Goodwill written off in the new profit sharing ratio i. e, 3 : 2 : 3 : 2.)			
,,	Bank a/c	Dr.	1,30,000	
	To Kamal's Capital a/c			89,000
	To Kishore's Capital a/c			41,000
	(Amount brought into make their capitals proportionate to the profit sharing ratio.)			
,,	Vimal's Capital a/c	Dr.	1,72,250	
	Vinod's Capital a/c	Dr.	70,250	
	To Bank a/c			2,42,500
	(Excess amount withdrawn.)			

Balance Sheet of M/s Vimal, Vinod, Kamal and Kishore as on 1st January, 1968

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Sundry Creditors		4,50,000	Stock-in-Trade		3,67,000
Bank Overdraft		39,500	Sundry Debtors	Rs. 3,50,000	
Capitals—	Rs.		Less Provision	Rs. 17,500	3,32,500
Vimal	2,40,000		Furniture		90,000
Vinod	1,60,000		Buildings		5,00,000
Kamal	2,40,000				
Kishore	1,60,000				
		8,00,000			
		12,89,500			12,89,500

नोट—(i) यह मान लिया गया है कि साझीगण अपनी पूंजी का समायोजन आवश्यकतानुसार नकद लाकर या नकद निकालकर करते हैं।

(ii) यह मान लिया गया है कि बैंक से अधिविकर्ष के लिए प्रबन्ध हो गया है तथा इसकी राशि इस प्रकार ज्ञात की गई है :—

	रु०
विमल, विनोद की फर्म से लिया गया बैंक शेष	6,000
कमल, किशोर की फर्म से लिया गया बैंक शेष	67,000
कमल द्वारा लाई गई पूंजी	89,000
किशोर द्वारा लाई गई पूंजी	41,000
कुल उपलब्ध बैंक शेष	2,03,000

	रु०	
विमल को लौटाई गई पूंजी	1,72,250	
विनोद को लौटाई गई पूंजी	70,250	
		2,42,500
बैंक अधिविकर्ष रु० (2,42,500–2,03,000)		39,500

नयी पुस्तकों का न खोला जाना (No opening of new books)—कभी-कभी ऐसा होता है कि एकीकरण पर नये फर्म में नये सिरे से पुस्तकें नहीं खोली जातीं बल्कि पुराने फर्म में से ही किसी एक फर्म की पुस्तकें चालू रख ली जाती हैं और दूसरे फर्म की अथवा फर्मों की (यदि कई फर्म हों) पुस्तकें ऊपर बताये गये तरीके से बन्द कर दी जाती हैं। जिस फर्म की पुस्तकें चालू रखी जावेंगी, उसमें लेखा निम्न प्रकार से किया जावेगा :—

(1) इस फर्म की जो सम्पत्तियाँ एवं दायित्व नये फर्म द्वारा न ली जा रही हों उनको इसके पुराने साझियों में उनके पूँजी के अनुपात में बांट दी जावें।

(2) इस फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों का यदि पुनर्मूल्यांकन किया गया है तो पुनर्मूल्यांकन खाता खोल लिया जावे और इसका लाभ-हानि पुराने साझियों के खातों में पुराने लाभ-विभाजन के अनुपात में हस्तान्तरित कर दिया जावे।

(3) ख्याति सम्बन्धी समायोजन किया जावे।

(4) दूसरे फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों के क्रय सम्बन्धी प्रविष्टि की जावे।

Illustration 33

Suppose in illustration No. 32 the books of M/s Kamal and Kishore are continued. Pass the necessary journal entries in the books of the new firm in respect of the amalgamation.

उदाहरण नं० 32 में मान लीजिए कि मे० कमल एण्ड किशोर की पुस्तकें चालू रखी जाती हैं। एकीकरण के सम्बन्ध में नये फर्म की पुस्तकों में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए।

Solution :

Journal of the new firm

1968			Rs.	Rs.
Jan. 1	Goodwill a/c To Kamal's Capital a/c To Kishore's Capital a/c (Goodwill credited.)	Dr.	1,00,000	50,000 50,000
,, ,,	Stock a/c To Revaluation a/c (Increase in the value of stock.)	Dr.	20,000	20,000
,, ,,	Revaluation a/c To Provision for Bad & Doubtful Debts a/c (Provision made at 5% of sundry debtors.)	Dr.	10,000	10,000
,, ,,	Revaluation a/c To Kamal's Capital a/c To Kishore's Capital a/c (Revaluation profit transferred.)	Dr.	10,000	5,000 5,000
,, ,,	Kamal's Capital a/c Kishore's Capital a/c To Investments a/c (Investments not taken over distributed between old partners in their capital ratio)	Dr. Dr.	90,000 60,000	1,50,000

Journal of the new firm contd.

1968			Rs.	Rs.
Jan. 1	Cash at Bank a/c Dr.		6,000	
	Stock a/c Dr.		1,64,000	
	Sundry Debtors a/c Dr.		1,50,000	
	Furniture a/c Dr.		40,000	
	Buildings a/c Dr.		5,00,000	
	Goodwill a/c Dr.		80,000	
	To Sundry Creditors a/c			2,00,000
	To Provision for Bad and Doubtful Debts a/c			7,500
	To Vimal's Capital a/c			4,66,250
	To Vinod's Capital a/c			2,66,250
	(Assets and liabilities taken over from M/s Vimal and Vinod.)			
	Vimal's Capital a/c Dr.		54,000	
	Vinod's Capital a/c Dr.		36,000	
	Kamal's Capital a/c Dr.		54,000	
	Kishore's Capital a/c Dr.		36,000	
	To Goodwill a/c			1,80,000
	(*Goodwill written off in the new* profit sharing ratio, i. e. 3 : 2 : 3 : 2.)			
,,	Bank a/c Dr.		1,30,000	
	To Kamal's Capital a/c			89,000
	To Kishore's Capital a/c			41,000
	(Amount brought in to make their capitals proportionate to the profit sharing ratio.)			
,,	Vimal's Capital a/c Dr.		1,72,250	
	Vinod's Capital a/c Dr.		70,250	
	To Bank a/c			2,42,500
	(Excess amount withdrawn.)			

नोट—(i) यह मान लिया गया है कि साझीगण अपनी पूँजी का समायोजन आवश्यकतानुसार नकद लाकर या नकद निकाल कर करते हैं।

(ii) यह मान लिया गया है कि बैंक से अधिविकर्ष के लिए प्रबन्ध हो गया है।

फर्म का सीमित दायित्व वाली कम्पनी में परिवर्तन

(Conversion of a firm into a limited company)

यदि कोई फर्म उन सुविधाओं को प्राप्त करना चाहती है जो भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत किसी कम्पनी को प्राप्त होती हैं तो उसका सीमित दायित्व वाली कम्पनी में परिवर्तन किया जा सकता है। इसके लिए आगे बताये गये अनुसार विधि अपनाई जाती है :—

(1) फर्म का विघटन हो जाता है।

(2) विशेष सूचनाओं के अभाव में फर्म की कुल सम्पत्तियों में से दायित्वों को घटाने पर शेष राशि क्रय-मूल्य (Purchase Consideration) माना जाता है।

(3) क्रय-मूल्य का भुगतान नई कम्पनी द्वारा अंशों, ऋणपत्रों अथवा नकद द्वारा किया जा सकता है।

(4) फर्म को कम्पनी से प्राप्त अंश या ऋण-पत्र साझियों में निम्नलिखित प्रकार से बाँट दिये जाते हैं :—

(i) इस सम्बन्ध में यदि साझियों में कोई समझौता हुआ है तो उसके अनुसार,

(ii) यदि साझियों में इस सम्बन्ध में कोई समझौता नहीं हुआ है तो साझियों के पूँजी खाते में सब प्रकार के समायोजन (जिसमें वसूली खाते का लाभ अथवा हानि भी शामिल है) करने के पश्चात् रहे शेष के अनुपात में;

(iii) यदि साझी चाहते हैं कि नई कम्पनी के उन्हें उसी अनुपात में लाभ मिले जिस अनुपात में वे फर्म में लाभ लेते रहे हैं तो क्रय मूल्य के बदले मिलने वाले अंशों अथवा ऋण-पत्रों का विभाजन उस अनुपात में किया जावेगा जिसमें वे लाभों का बँटवारा करते हैं।

इस सम्बन्ध में लेखा—फर्म की पुस्तकों में वसूली खाता खोलकर सम्पत्तियों एवं दायित्वों को कम्पनी को बेचे जाने की प्रविष्टियां की जाती हैं और फर्म की पुस्तकें बन्द कर दी जाती हैं।

Illustration 34

Madhur and Manohar are equal partners. On 30th June, 1967, the business of the firm is sold to a limited company for a consideration of Rs.30,000. Their Balance Sheet on that date was. (मधुर और मनोहर बराबर के साझी हैं। 30 जून, 1967 को फर्म का व्यवसाय एक सीमित दायित्व वाली कम्पनी को 30,000 रु० में बेच दिया जाता है। उस दिन उनका चिट्ठा इस प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Creditors	6,000	Buildings	20,000
Loan from Madhur	4,000	Furniture	500
Reserve	2,000	Stock	2,000
Capitals—Madhur	6,000	Debtors	1,500
Manohar	8,000	Cash	2,000
	26,000		26,000

All the assets and liabilities (except Madhur's Loan) are taken over by the company and the purchase price is discharged by alloting 2,560 equity shares of Rs. 10 each and the balance in cash. Realisation expenses amounted to Rs.400. Close the books of the firm. (समस्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों को (मधुर के ऋण को छोड़कर) कम्पनी द्वारा ले लिया जाता है और क्रय-मूल्य का भुगतान, 10 रु० वाले 2,560 ईक्विटी अंशों और शेष नकद देकर, किया जाता है। वसूली के खर्चे 400 रु० होते हैं। फर्म की पुस्तकें बंद कीजिए)।

Solution :

Realisation Account

	Rs.		Rs.
To Sundry Assets :		By Sundry Liabilities—	
Buildings Rs. 20,000		Creditors Rs.6,000	
Furniture Rs. 500		Madhur's Loan Rs.4,000	10,000
Stock Rs. 2,000		,, Limited Company	30,000
Debtors Rs. 1,500			
Cash Rs. 2,000	26,000		
,, Cash (Realisation Exp.)	400		
,, Cash (Madhur's Loan)	4,000		
,, Capital Accounts—			
Madhur	4,800		
Manohar	4,800		
	40,000		40,000

Cash Account

	Rs.		Rs.
To Balance b/d	2,000	By Realisation a/c (Transfer)	2,000
,, Limited Company	4,400	,, Realisation a/c (Exp.)	400
		,, Realisation a/c (Madhur's Loan)	4,000
	6,400		6,400

Limited Company's Account

	Rs.		Rs.
To Realisation a/c	30,000	By Equity Shares a/c	25,600
		,, Cash a/c	4,400
	30,000		30,000

Equity Shares Account

	Rs.		Rs.
To Limited Company	25,600	By Madhur's Capital a/c	11,800
		,, Manohar's Capital a/c	13,800
	25,600		25,600

Reserve Account

	Rs.		Rs.
To Madhur's Capital a/c	1,000	By Balance b/d	2,000
,, Manohar's Capital a/c	1,000		
	2,000		2,000

Capital Accounts

	Madhur	Manohar		Madhur	Manohar
	Rs.	Rs.		Rs.	Rs.
To Equity Shares a/c	11,800	13,800	By Balance b/d	6,000	8,000
			,, Reserve a/c	1,000	1,000
			,, Realisation a/c	4,800	4,800
	11,800	13,800		11,800	13,800

Questions

1. Write a short essay on 'Goodwill in partnership accounts.'
'साझेदारी खातों में ख्याति' पर एक संक्षिप्त लेख लिखिए।

2. How and when goodwill is valued in partnership accounts ?
साझेदारी खातों में ख्याति का मूल्यांकन कब और कैसे किया जाता है ?

3. When are the assets and liabilities revalued in a firm ? why is it necessary to revalue them ?

फर्म में सम्पत्तियों एवं दायित्वों का पुनर्मूल्यांकन कब किया जाता है ? उनका पुनर्मूल्यांकन किया जाना क्यों आवश्यक है ?

4. What is Revaluation Account ? How is it prepared ?
'पुनर्मूल्यांकन खाता' क्या होता है ? यह किस प्रकार तैयार किया जाता है ?

5. What is Realisation Account ? How is it prepared ? How does it differ from Revaluation Account ?

वसूली खाता किसे कहते हैं ? यह किस प्रकार तैयार किया जाता है। यह पुनर्मूल्यांकन खाते से किस प्रकार भिन्न है ?

6. How are the accounts of a firm settled on its dissolution ?
फर्म के खाते उसके विघटन पर किस प्रकार तय किए जाते हैं ?

7. If the assets are realised gradually, in what order the proceeds should be distributed ?

यदि सम्पत्तियों से शनैः शनैः वसूली की जाती है तो वसूली की रकम का वितरण किस प्रकार किया जाना चाहिए ?

8. P and Q are partners from 1st January, 1967. They havee ntered into partnership without any agreement. On that date P invested Rs. 6,000 and Q Rs. 4,000 in the business. On 1st July 1967, P advanced a loan of Rs. 10,000 to thefirm without any arrangement as to interest. The profit and loss account for that year showed a profit of Rs. 12,000 but the partners could not agree upon

the question of interest or upon the basis of division of profits. You are requested to divide the profits between them.

पी और क्यू 1 जनवरी, 1967 से साझेदार हैं। उन्होंने साझेदारी में बिना किसी समझौते के प्रवेश किया है। उस तिथि को पी ने व्यवसाय में 6,000 रु० और क्यू ने 4,000 रु० लगाये हैं 1 जुलाई, 1967 को पी ने फर्म को 10,000 रु० का ऋण दिया है परन्तु ब्याज की दर के विषय में कोई समझौता नहीं हुआ है। उस वर्ष के लाभ-हानि खाते ने 12,000 रु० का लाभ बतलाया है, परन्तु साझी ब्याज के प्रश्न पर अथवा आपस में लाभ विभाजन के आधार पर सहमत नहीं हो सके। आपको उनके मध्य में लाभ विभाजन करना है। [1]

Ans:—Rs. 5,850 profit to each partner.

9. M, N, O and P are partners sharing profits equally. Their capital accounts stand as follows:—

M Rs. 30,000, N Rs. 50,000, O Rs. 80,000 and P Rs. 1,00,000. After the accounts for the year have been prepared, it is discovered that interest at 5% p. a. as provided for in the partnership agreement has not been credited to the partners' capital accounts before distributing profits. Instead of altering the signed Balance Sheet, it is decided to make an adjusting entry at the beginning of the new year crediting or debiting the partners' accounts. Give the necessary Journal entry.

एम, एन, ओ और पी साझेदार हैं जो लाभों को बराबर-बराबर बांट रहे हैं। उनके पूँजी खातों की स्थिति इस प्रकार है:—एम–30,000 रु०, एन–50,000 रु०, ओ–80,000 रु० और पी–1,00,000 रु०। वर्ष के लेखे तैयार करने के पश्चात् यह ज्ञात हुआ कि लाभ विभाजन के पहले साझेदारों के पूँजी खातों को, साझेदारी की शर्तों के अनुसार, 5% प्रतिवर्ष के हिसाब से ब्याज के लिए जमा नहीं किया गया है। हस्ताक्षरित चिट्ठे में परिवर्तन करने की बजाय यह निश्चित किया गया कि नये वर्ष के प्रारम्भ में साझेदारों के खातों को नाम और जमा करके समायोजन प्रविष्टि कर दी जावे।

आवश्यक जर्नल प्रीवष्टि कीजिये। [2]

10. X, Y and Z are in partnership and on January 1, 1967 their respective capitals were Rs. 40,000, Rs. 27,800 and Rs. 15,900. Y is entitled to a salary of Rs. 2,500 and Z Rs. 2,000 per annum payable before division of profits. Interest is allowed on capital at 5% per annum and is not charged on drawings. Of the net divisible profits X is entitled to 40% of the first Rs. 10,000, Y to 35% and Z to 25%, over that amount profits are shared equally. The profit for the year ended December 31, 1967, after debiting partners' salaries but before charging interest on capital, was Rs. 23,170 and the partners had drawn Rs.8,000 each on account of salaries, interest and profits. Prepare the closing entries of the P. & L. account and the Partners' Accounts for the year.

एक्स, वाई और जैड साझेदार हैं और 1 जनवरी 1967 को उनकी पूंजी क्रमश: 40,000 रु० 27,800 रु० और 15,900 रु० है। लाभ वितरण के पहले प्रति वर्ष वाई को 2,500 रु० का वेतन और जैड को 2,000 रु० का वेतन लेने का अधिकार है, पूँजी पर 5% वार्षिक दर से ब्याज देना है परन्तु आहरण पर कोई ब्याज नहीं है। शुद्ध वितरण योग्य लाभ में से पहले 10,000 रु० का एक्स 40% का अधिकारी है, वाई 35% का और जैड 25% का उससे अधिक लाभ को आपस में बराबर-बराबर बांटना है। वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर 1967 को वेतन को डेबिट करने के पश्चात् परन्तु ब्याज को डेबिट करने से पहले फर्म का लाभ 23,170 रु० था और साझेदारों में से प्रत्येक ने 8,000 रु० वेतन, ब्याज, और लाभ का निकाल लिया। लाभ-हानि खाते की अन्तिम प्रविष्टियां दीजिये तथा वर्ष भर के साझेदारों के खातों को तैयार कीजिये। [3]

Answer : Balances of Capital Accounts on 31st Dec., 1967 :—

X	Rs.	40,995
Y	Rs.	30,185
Z	Rs.	16,190

11. On 31st Dec., 1963, three partners had the following amounts at the credit of their capital accounts : A Rs. 50,000, B Rs. 30,000 and C Rs. 20,000. On 1st January, 1963 they had to the credit of their Drawings Accounts, A Rs. 7,500, B Rs. 5,000 and C Rs. 4,000. Profits are divided in the same proportion as the capital upto Rs. 20,000. Above that amount. A gets 25% B 35% and C 40%. A, B and C drew during the year 1963, Rs. 5,000, Rs. 4,000 and Rs. 3,000 respectively. The profits for 1963 amounted to Rs. 30,000 before charging interest on capital (to which all are entitled) at 4%.

Give the Drawings Accounts of each partner on 31st Dec., 1963; Interest on drawings to be ignored.

31 दिसम्बर, 1963 को तीन साझियों के पूँजी खातों में निम्नलिखित प्रकार से क्रेडिट शेष थे:—

अ 50,000 रु०, ब 30,000रु० और स 20,000 रु०। 1 जनवरी, 1963 को उनके आहरण खातों का क्रेडिट शेष इस प्रकार था अ 7,500 रु०, ब 5,000 रु० और स 4,000 रु०। 20,000 रु० तक लाभ उसी अनुपात में बांटे जाते हैं जिस अनुपात में पूँजी है। उस राशि से ऊपर अ 25%, ब 35% और स 40% प्राप्त करता है। अ,ब और स ने वर्ष 1963 में क्रमश: 5,000 रु०, 4,000 और 3,000 रु० निकाले। पूँजी पर 4% ब्याज (जिसके लिए सभी अधिकृत हैं) देने से पूर्व 1963 में 30,000 रु० लाभ हुआ।

प्रत्येक साझी का 31 दिसम्बर, 1963 को आहरण खाता बनाइये। आहरण पर ब्याज ध्यान में नहीं रखना है। [4]

Answer : Balances of Drawings Accounts on 31st Dec., 1963 :—

A	Rs.	16,000
B	Rs.	10,300
C	Rs.	8,200

Hint : Drawings Accounts will be opened as Current Accounts.

12. B enters into partnership with A agreeing to pay the latter a salary of Rs. 500 per annum out of his share of profits.

On 31st December, 1963, the accounts showed the following results:

A's Capital Rs. 2,562

B's Capital Rs. 2,786

Net profits before charging interest on capital Rs. 1,567

A's Drawings Rs. 500

B's Drawings Rs. 700

Paid by B to A, in cash on account of salary Rs. 200. For the next two years, upon similar lines, the figures were as follows :

	31–12–1964	31–12–1965
	Rs.	Rs.
Net Profits	1,826	2,610
A's Drawings	550	480
B's Drawings	600	575
Paid by B to A	280	120

After charging 5% interest on capital and ignoring interest on drawings or salary, write up the Capital Accounts of the partners at the end of each of the above periods.

ब, अ के साथ, उसको अपने लाभ के हिस्से में से 500 रु० प्रति वर्ष वेतन देने का समझौता करते हुए, साझेदारी में प्रवेश करता है।

31 दिसम्बर, 1963 को खाते निम्नलिखित परिणाम बतलाते थे:—

अ की पूंजी 2,562 रु०

ब की पूंजी 2,786 रु०

पूंजी पर ब्याज वसूल करने से पूर्व शुद्ध लाभ 1,567 रु०

अ के आहरण 500 रु०

ब के आहरण 700 रु०

वेतन के कारण ब ने अ को चुकाया 200 रु०

अगले 2 वर्षों के लिए उसी आधार पर, निम्नलिखित राशियां थी :

	31–12–1964	31–12–1965
	रु०	रु०
शुद्ध लाभ	1,826	2,610
अ के आहरण	550	480
ब के आहरण	600	575
ब द्वारा अ को चुकाया गया	280	120

पूँजी पर 5% ब्याज लगाने के पश्चात् और आहरण तथा वेतन पर ब्याज को ध्यान में न रखते हुये साझियों के पूँजी खाते बनाइये जैसे कि वे उपरोक्त समय में प्रत्येक वर्ष के अन्त में प्रकट होंगे। [5]

Answer : Balances of Capital Accounts on 31st Dec., 1965 :—

A Rs. 4,969
B Rs. 2,977

13. Give the necessary journal entries to record the following arrangements in the books of the firm :—

निम्नलिखित व्यवस्थाओं का फर्म की पुस्तकों में लेखा करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए :—

(i) A and B are partners sharing profits in the ratio of 4 : 5. C enters paying a premium of Rs. 1,800 for $\frac{1}{4}$ share in the profits, the relative shares of A and B remaining as before. No goodwill account appears in the books.

अ और ब साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 4 : 5 है। स लाभों के $\frac{1}{4}$ हिस्से के वदले में 1,800 रु० प्रीमियम देकर फर्म में प्रवेश करता है। अ और व का लाभ-विभाजन का अनुपात परस्पर पूर्व जैसा ही रहता है। ख्याति खाता पुस्तकों में विद्यमान नहीं है।

(ii) A and B are partners sharing profits in the ratio of 4 : 5. C enters paying a premium of Rs. 1,800 for 1/4 share in the profits, A and B as between themselves sharing future profits and losses equally. No goodwill account appears in the books.

अ और व साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 4 : 5 है। स लाभों के $\frac{1}{4}$ हिस्से के वदले में 1,800 रु० प्रीमियम देकर फर्म में प्रवेश करता है। अ और व आपस में तय करते हैं कि वे भविष्य में लाभ-हानि को वरावर-वरावर वाँटेंगे। ख्याति खाता विद्यमान नहीं है।

(iii) A and B are partners sharing profits in the ratio of 4 : 5. C enters paying a premium of Rs. 2,400 for his share of profits in the firm. All the partners decide to share future profits equally. No goodwill account appears in the books.

अ और व साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 4:5 है। स लाभ में अपने हिस्से के वदले 2,400 रु० प्रीमियम देकर फर्म में प्रवेश करता है। सभी साझी तय करते हैं कि वे भविष्य में लाभों को वरावर-वरावर वाँटेंगे। ख्याति खाता पुस्तकों में विद्यमान नहीं है।

(iv) A and B are partners sharing profits in the ratio of 4:5. Goodwill appears in the books at Rs. 4,500. C enters paying a premium of Rs. 1,800 for 1/4 share in the profits, the relative shares of A and B remaining as before.

(iv) अ और व साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 4:5 है। पुस्तकों में ख्याति 4,500 रु० पर विद्यमान है। स लाभों के $\frac{1}{4}$ हिस्से के वदले 1,800 रु० प्रीमियम देकर फर्म में प्रवेश करता है। अ और व का लाभ-विभाजन का अनुपात परस्पर पूर्व जैसा ही रहता है।

(v) A and B are partners sharing profits in the ratio of 4 : 5. Goodwill appears in the books at Rs. 4,500. C enters paying a premium of Rs. 1,800 for

1/4 share of profits, A and B as between themselves sharing future profits and losses equally.

अ और ब साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 4 : 5 है । पुस्तकों में ख्याति, 4,500 रु० पर विद्यमान है । स लाभों के ¼ हिस्से के बदले 1,800 रु० प्रीमियम देकर फर्म में प्रवेश करना है । अ और ब आपस में तय करते हैं कि भविष्य में लाभ-हानि को परस्पर बराबर बांटेंगे ।

(vi) A and B are partners sharing profits in the ratio of 4:5. C enters. Goodwill valued at Rs. 9,000 is to be introduced in the books and C is required to provide a capital equal in amount to that of B after the latter has been credited with his share of goodwill. C is given 1/4 share in the profits. The capitals of A and B before C's admission were Rs. 12,000 and Rs. 8,000 respectively.

अ और ब साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 4 : 5 है । स प्रवेश करना है । ख्याति, जिसका मूल्य 9,000 रु० है, फर्म की पुस्तकों में लाई जाती है । ब के पूँजी खाते में उसके हिस्से की ख्याति क्रेडिट करने के पश्चात् जो शेष बनेगा उनके बराबर रकम स अपनी पूँजी के रूप में लावेगा । स को लाभों में से ¼ हिस्सा दिया गया है । स के प्रवेश के पूर्व अ और ब की पूँजी क्रमशः 12,000 रु० और 8,000 रु० थी ।

A, B and C are partners sharing profits in the ratio of 4 : 5 : 6. Goodwill does not appear in the books but is agreed to be worth Rs. 15,000. Partners decide to share future profits equally.

अ, ब और स साझी हैं जिनका लाभ-विभाजन का अनुपात 4 : 5 : 6 है । ख्याति पुस्तकों में विद्यमान नहीं है लेकिन इसका मूल्य 15,000 रु० स्वीकार कर लिया गया है । साझी यह तय करते हैं कि वे भावी लाभों को बराबर-बराबर बांटेंगे । [6]

14. The following is the Balance Sheet of A as on 31st Dec., 1963 prepared for his own use (31 दिसम्बर, 1963 को अ का अपने निजी प्रयोग के लिए बनाया गया चिट्ठा निम्न प्रकार था) :—

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Creditors	30,000	Cash	5,000
A's Capital	1,35,000	Debtors	40,000
		Stock	50,000
		Fixtures and Fittings	7,500
		Freehold Premises	60,000
		Investments	2,500
	1,65,000		1,65,000

He decides to admit a partner and it is arranged that the partner shall join on the basis of the above Balance Sheet, subject to the following modifications:—

5% to come off the Debtors.

Stock to be taken at Rs. 45,000.

Fixtures and Fittings to be taken at Rs. 5,000.

Freehold Premises to be taken at Rs. 70,000.

Cash and Investments not to be taken over by the partnership. Make the necessary journal entries, and show the Balance Sheet giving effect to the above modifications. (वह एक साझी को शामिल करने का निश्चय करता है और यह व्यवस्था की जाती है कि साझी उपरोक्त चिट्ठे के आधार पर और निम्नलिखित परिवर्तनों के साथ प्रवेश करेगा):—

देनदारों में 5% कटौती की जावेगी।

स्टॉक का मूल्यांकन 45,000 रु० पर किया जावेगा।

फिक्सचर्स और फिटिंग्स का मूल्यांकन 5,000 रु० पर किया जावेगा।

स्वकीय भवन 70,000 रु० पर लिया जावेगा।

रोकड़ और विनियोग साझेदारी द्वारा नहीं लिए जावेंगे। जर्नल में आवश्यक प्रविष्टियाँ कीजिए और उपरोक्त परिवर्तनों को शामिल करने के पश्चात् चिट्ठा बनाइये। [7]

Answer : A's Capital Rs. 1,28,000
Balance Sheet-Total Rs. 1,58,000

15. A, with a Capital of Rs. 1,00,000, commenced business as a manufacturer on 1st January, 1961 and upto 31st December, 1965 made the following profits :

1961 Rs. 50,000; 1962 Rs. 53,000; 1963 Rs. 67,500;
1964 Rs. 85,000; 1965 Rs. 1,06,000;

of which he drew during the period Rs. 1,62,500. He arranged a partnership with B on the following terms from 1st January 1966 :—

To sell B one-half share of the business, B to invest cash equal to A's capital at 31st December, 1965 and in addition to pay for one-half share of the goodwill of the business on the basis of three times the average profits for the last five years. Prepare a statement showing what sum of money B must invest, and make the necessary Journal entries in the books of the new firm.

अ ने एक निर्माता के रूप में 1,00,000 रु० की पूँजी से 1 जनवरी, 1961 को व्यापार प्रारम्भ किया और 31 दिसम्बर, 1965 तक निम्नलिखित लाभ कमाये :—

1961–50,000 रु०; 1962–53,000 रु०; 1963–67,500 रु०; 1964–85,000 रु०;
1965–1,06,000 रु०।

जिसमें से उसने इस समय के बीच 1,62,500 रु० निकाल लिए। 1 जनवरी, 1966 से उसने ब से निम्नलिखित शर्तों के आधार पर साझेदारी की व्यवस्था की :—

ब को व्यापार का आधा हिस्सा बेचा जावे, ब 31 दिसम्बर 1965 को अ की पूँजी के बराबर रकम विनियोग करे और इसके अलावा व्यापार की ख्याति की आधी रकम का भुगतान करे। व्यापार की

ख्याति पिछले 5 वर्षों के औसत लाभ का तीन गुना मानी जावे। ब द्वारा विनियोग की जाने वाली रकम ज्ञात करने के लिए एक विवरण तैयार कीजिए और नये फर्म की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए। [8]

Ans. : B will bring Rs. 1,08,450 for Goodwill and Rs. 2,99,000 as Capital.

16. A and B are equal partners and on 30th June, 1963 their Balance Sheet stood as follows (अ और ब बराबर के साझी हैं और 30 जून, 1963 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था) :—

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Sundry Creditors	50,000	Cash in hand	500
Bank Overdraft	15,000	Investments	3,000
A's Capital	21,000	Sundry Debtors	61,000
B's Capital	16,000	Stock	35,000
		Furniture	2,500
	1,02,000		1,02,000

It is arranged that C shall be taken into partnership, and as a result of negotiations, it is agreed (as between A and B only) to make the following adjustments in the above Balance sheet :—

(a) To write off bad debts amounting to Rs. 15,000.

(b) To write down the furniture to Rs. 1,000.

(c) To depreciate stock by 15%.

(d) To write off loss upon investments by 25%.

(e) To create a goodwill of Rs. 10,000.

C then introduces Rs. 10,000 as his one-third share of the capital. to which amount it has been agreed that, that of the other partners shall be adjusted. State what journal entries will be necessary to carry out these transactions and prepare an amended Balance Sheet of the firm immediately after C has become a partner.

(स को साझेदारी में शामिल करने का प्रवन्ध किया जाता है और वार्तालाप के फलस्वरूप (अ और ब के मध्य) उपरोक्त चिट्ठे में निम्नलिखित समायोजन करना तय हो जाता है):—

(i) 15,000 रु० डूबत ऋण अपलिखित करना;

(ii) फर्नीचर को 1,000 रु० तक अपलिखित करना;

(iii) स्टॉक को 15% से ह्रासित करना;

(iv) विनियोग पर हानि को 25% से अपलिखित करना;

(v) 10,000 रु० की ख्याति का निर्माण करना;

स, तब, पूंजी में अपने तीसरे हिस्से के रूप में 10,000 रु० लाता है जिसके अनुसार अन्य साझियों का पूँजी खाता समायोजित करने का समझौता हो जाता है। इन व्यवहारों का लेखा करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए और स के साझी बनने के तुरन्त बाद का फर्म का संशोधित चिट्ठा बनाइये। [9]

Ans. : Balance Sheet Total Rs. 95,000.

17. The following is the Balance Sheet of Messrs A and B on 31st December. 1966 (मेसर्स अ और ब का 31 दिसम्बर, 1966 को चिट्ठा निम्नलिखित था) :—

Liabilities	Rs.	Assets	Rs.
Trade Creditors	28,750	Cash	120
Reserve Fund	20,000	Freehold Land and Buildings	80,000
A's Loan Account	25,000	Plant and Machinery	60,000
Rajasthan Bank	13,870	Stock	54,000
A's Capital Account	1,43,000	Book Debts	1,10,500
B's Capital Account	71,000	Investments on account of Reserve Fund	15,000
Profit and Loss Account	18,000		
	3,19,620		3,19,620

They made a profit of Rs. 38,000 for the year ending 31st December, 1967 before charging interest on capital at 5%, net profits being divisible as to A 7/10 and B 3/10. At the latter date it is decided to admit C into partnership upon the conditions that he pays Rs. 20,000 for $\frac{1}{6}$ share of goodwill (which he acquires in equal proportions, from the partners who withdraw cash for the same) and contributes Rs. 50,000 as his share of capital. In 1968, the profits were Rs.42,000. Prepare the Capital Account of each partner and a Goodwill Account. 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उन्होंने पूँजी पर 5% ब्याज वसूल करने से पूर्व 38,000 रु० लाभ कमाया; शुद्ध लाभ अ और ब में क्रमशः 7/10 और 3/10 बाँटने योग्य हैं। बाद वाली तारीख को स को इस शर्त पर साझेदारी में शामिल करना तय किया जाता है कि वह ख्याति के $\frac{1}{6}$ हिस्से के लिये 20,000 रु० (जिसे वह पुराने साझियों से बराबर अनुपात में प्राप्त करता है और वे इस रकम को व्यवसाय से निकाल लेते हैं) तथा अपने हिस्से की पूँजी के लिए 50,000 रु० भुगतान करेगा। वर्ष 1968 के लाभ 42,000 रु० थे। प्रत्येक साझी का पूँजी खाता और ख्याति खाता बनाइये। (10)

Ans. Balances on 31st December, 1968—

A's Capital Rs. 2,20,653

B's Capital Rs. 1,03,847

C's Capital Rs. 57,500

(Hint:—Balance of P. & L. a/c shown in the Balance sheet on 31st Dec. 1966 will be credited to partners' capital accounts on 1st Jan., 1967)

18. A and B are partners. They commenced business on 1st January 1959 with capitals of Rs. 15,000 and Rs. 10,000 respectively. The capitals remain fixed and carry interest at 5%. Profits are shared in proportion to their capitals.

C, their manager, joined them on 1st January, 1959 at a salary of Rs. 600 per annum plus a bonus of 5% of the profit (excluding bonus) which, subject to this charge and interest on capital, would be divisible between A and B. On his appointment, C deposited as security Rs. 5,000 carrying interest at 6%.

At the end of 1961, it was agreed that C should be treated as a partner from 1st January 1959, his deposit entitling him to $\frac{1}{6}$ of the profits and carrying 5% interest instead of the 6% he had received. It was also agreed that the new arrangement should not result in C's share for any year being less than he had received under the original terms.

The profits before providing for C's bonus and interest on capital or giving effect to the new arrangements were :

1959, Rs. 4000; 1960 Rs. 7,000; 1961 Rs. 10,000.

Show by journal entry, with explanatory computation, the adjustments necessary to give effect to the new arrangement.

अ और ब साझी हैं। उन्होंने 1 जनवरी, 1959 को क्रमश: 15,000 रु० और 10,000 रु० की पूँजी से व्यापार प्रारम्भ किया। पूंजी स्थिर रहती है और उस पर 5% व्याज दिया जाता हैं। लाभ पूँजी के अनुपात में वांटे जाते हैं।

स 1 जनवरी, 1959 से 600 रु० वार्षिक वेतन पर उनकी फर्म में मैनेजर के पद पर सम्मिलित होता है। उसे लाभों का (वोनस को छोड़कर) 5% वोनस भी मिलेगा और लाभों में से इस वोनस की रक़म तथा पूँजी पर व्याज घटाने के वाद शेप लाभ अ व ब में विभाजन योग्य होगा। स अपनी नियुक्ति पर 5,000 रु० जमानत के जमा कराता है जिस पर 6% व्याज दिया जाता है।

1961 के अन्त में यह समझौता होता है कि स को 1 जनवरी 1959 से साझी माना जावे, उसकी जमा राशि उसे लाभ के $\frac{1}{6}$ भाग का अधिकारी वनाये और उस पर उसके द्वारा प्राप्त किये गये 6% के बजाय 5% व्याज दिया जावे। यह भी तय हुआ कि नई व्यवस्था के फलस्वरूप स का किसी भी वर्ष का हिस्सा उस राशि से कम नहीं होगा जो उसे मूल शर्तों के आधार पर प्राप्त होती।

स के वोनस और पूँजी पर व्याज की व्यवस्था से पूर्व अथवा नई व्यवस्था को लागू करने से पूर्व के लाभ इस प्रकार थे:—

1959 4,000 रु०; 1960 7,000 रु०; 1961, 10,000 रु०

नई व्यवस्था को लागू करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिए और अपनी गणना को समझाने के लिए स्पष्टीकरण भी दीजिए। (11)

Ans.	:	A's Current Account Dr.	Rs. 365—00
		B's Current Account Dr.	Rs. 243—33
		C's Current Account Cr.	Rs. 608—33

19. The Balance Sheet of A and B as at 30th June, 1968 is (30 जून, 1968 को अ और ब का चिट्ठा इस प्रकार है):—

Liabilites		Rs.	Assets	Rs.
Creditors		6,700	Buildings	6,000
General Reserve		1,300	Machinery	3,000
Capital			Furniture	400
A	Rs. 8,400		Stock	4,100
B	Rs. 4,250	12,650	Debtors	6,200
			Cash at Bank	900
			Cash in hand	50
		20,650		20,650

The profits are divisible 2/3 to A and 1/3 to B. A new partner C is admitted on payment of Rs. 3,500 for capital and Rs. 2,000 for goodwill for $\frac{1}{4}$th share in profits which is to remain in the business. The stock, on being revalued, shows an increase of Rs. 900 at which figure the new partnership takes over the same. It is agreed that buildings shall be depreciated by 5%. machinery by 10% and a provision of Rs. 200 made for doubtul debts, otherwise the figures in the above Balance Sheet remain unchanged.

Pass Journal entries showing the necessary adjustments and prepare Revaluation Account and draw up a Balance Sheet of the new partnership as at 1st July, 1968.

लाभ अ को $\frac{2}{3}$ और ब को $\frac{1}{3}$ बाँटे जाते हैं। एक नये साझी स को 3,500 रु० पूंजी और 2,000 रु० ख्याति के (लाभ के $\frac{1}{4}$ हिस्से के बदले) भुगतान करने पर (जो कि व्यवसाय में रहती हैं) शामिल किया जाता है। पुनर्मूल्यांकन करने पर स्टॉक 900 रु० से बढ़ जाता है जिस अंक पर नई साझेदारी में स्टॉक को ले लिया जाता है। यह समझौता होता है कि भवन पर 5% ह्रास काटा जावे, मशीन पर 10% और संदिग्ध ऋण के लिए 200 रु० का आयोजन किया जावे, अन्य राशियां अपरिवर्तित रहती हैं।

आवश्यक समायोजनों को दिखाते हुये जर्नल में प्रविष्टियाँ कीजिये और पुनर्मूल्यांकन खाता बनाइये तथा 1 जुलाई 1968 को नये साझेदारी का चिट्ठा बनाइये। [12]

Ans. : Profit on Revaluation Rs. 100.
Balance Sheet Total Rs. 26,250.

(Hint : It is assumed that A and B, as between themselves, share future profits and losses in the same proportion as before.

20. On 1st January, 1965 A and B, who were trading in partnership sharing profits 7/12 and 5/12 respectively, take in C givingh im 1/6 share. Over and above his capital, C brings in Rs. 9,600 as his goodwill for the 1/6 share which he

has acquired 1/24 from A and 1/8 from B. The cash brought in by C as his capital as well as for his share of goodwill is credited in one separate account in his personal name. On 31st December, 1965 their Trial Balance stood as follows:—

(अ और व ने, जो क्रमश: 7/12 और 5/12 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साभेदारी में व्यापार कर रहे थे, 1 जनवरी 1965 को स को $\frac{1}{6}$ हिस्सा देते हुये फर्म में शामिल किया। अपनी पूंजी के अलावा स 9,600 रु० अपने $\frac{1}{6}$ हिस्से के बदले, जिसमें $\frac{1}{24}$ उसने अ से और $\frac{1}{8}$ व से लिया, ख्याति के रूप में लाता है। स द्वारा पूंजी और ख्याति के लिए लाई गई रकम उसके नाम का एक अलग खाता खोलकर उसमें जमा कर दी जाती है। 31 दिसम्बर, 1965 को उनकी तलपट इस प्रकार थी) :—

	Rs.		Rs.
Machinery	60,000	A's Capital	33,600
Furniture	4,000	B's Capital	24,000
Stock	12,000	C's Account	22,400
Desbtors	20,000	Creditors	4,800
A's Drawings	3,200	Current Year's profit	23,200
B's Drawings	5,200		
C's Drawings	800		
Cash in hand	2,800		
	1,08,000		1,08,000

Interest on drawings is to be ignored but interest on Capital Accounts is to be allowed at 5% after necessary adjustments therein as regards the goodwill cash brought by C. Prepare the Balance Sheet of the firm as on 31st December, 1965, showing full details in the Capital Accounts of the three partners.

(आहरण पर व्याज नहीं लगाना है लेकिन स द्वारा ख्याति के लिए लाई गई रकम का आवश्यक समायोजन करने के पश्चात् पूंजी पर 5% व्याज लगाना है। तीनों साभियों के पूंजी खातों के पूर्ण विवरण दिखाते हुए 31 दिसम्बर, 1965 को फर्म का चिट्ठा वनाइये।) [13]

Ans : Balance Sheet Total Rs. 98,800.

21. A, B and C were in partnership sharing profits as to A one-half, B one-third and C one-sixth. As from 1st January, 1967, they admitted D into partnership on the following terms.

D to have a one-sixth share, which he purchased entirely from A, paying Rs. 4,000 for the share of goodwill. Of this amount A retained Rs. 3,000 and put the balance in the firm as additional capital. D also brought Rs. 2,500 as capital into the firm. It was further agreed that investments should be revalued at Rs. 1,800 and plant at Rs. 2,900. (अ, व और स साभी थे जिनके लाभ विभाजन का हिस्सा अ का आधा, व का तिहाई और स का छटा था। 1 जनवरी, 1967 से निम्न शर्तों के

आधार पर उन्होंने द को साझेदारी में शामिल किया। द को छठा हिस्सा दिया जाय जो उसको पूरा अ से मिले और जिसकी ख्याति के बदले वह अ को 4,000 रु० दे। इसमें से अ ने 3,000 रु० निकाल लिए और शेष को फर्म में अतिरिक्त पूँजी के रूप में छोड़ दिया। द फर्म में 2,500 रु० पूँजी के भी लाया। आगे यह समझौता हुआ कि विनियोग 1,800 रु० पर और प्लान्ट 2,900 रु० पर पुनर्मूल्यांकित किए जावें)।

The Balance Sheet of the old firm at 31st December, 1966 was as follows. (पुराने फर्म का 31 दिसम्बर, 1966 का चिट्ठा निम्न प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Creditors	10,500	Cash at Bank	4,000
Capital—		Debtors	6,000
A	6,000	Stock	5,000
B	4,000	Investments	3,000
C	2,000	Furniture	1,000
		Plant	3,500
	22,500		22,500

It is also agreed not to alter the values of the assets in the books of the new firm. Prepare Memorandum Revaluation Account and journalise the opening adjustments. (यह भी समझौता होता है कि नये फर्म की पुस्तकों में सम्पत्तियों के मूल्यों को न बदला जाये। स्मरणार्थ पुनर्मूल्यांकन खाता बनाइये और प्रारम्भिक समायोजनों के सम्बन्ध में जर्नल में लेखा कीजिये) [14]

Ans. : Revaluation Loss Rs. 1,800.

22. A was in practice as a certified accountant, and on 31st December, 1965, his position was as follows (अ एक प्रमाणित लेखापाल के रूप में कार्य करता था और 31 दिसम्बर, 1965 को उसकी स्थिति इस प्रकार थी)—

	Rs.
Cash at Bank	590
Sundry Debtors	1,420
Furniture	380
Estimated Value of Uncompleted Work	410
Sundry Creditors	100

For the past three years C has been his managing clerk, and as from 1st January, 1966 A agreed to take him into partnership on the following terms :

C is to introduce capital equal to one-third of the amount shown as being A's capital at 31st Dec. 1965; he is to pay A a premium equal to three

years purchase of a quarter share of the net profits based on the average for the last three years. The net profits for the three years were :

1963 Rs. 1,800; 1964 Rs. 1,400; 1965 Rs. 1,600

Further A guaranteed that C's share of the profits should not be less than such quarter based on the average of the years in question. The partners are to receive 5% interest on capital before distributing profits.

(a) Set the opening Balance Sheet of the firm.

(b) Set out an account showing the distribution of profits at 31st December, 1966, these amounting to Rs. 1,580, before charging interest on capital.

(पिछले तीन वर्षों से स उसका प्रबन्धकारी क्लर्क था और 1 जनवरी, 1966 में अ उसे निम्नलिखित शर्तों के आधार पर साझेदारी में शामिल करने को राजी हो गया:—

31 दिसम्बर, 1965 को अ की पूँजी के $\frac{1}{3}$ हिस्सा के बराबर स पूँजी लावेगा; स पिछले तीन वर्ष के औसत लाभ के तीन गुने के चौथाई हिस्से के बराबर प्रीमियम अ को देगा। तीन वर्षों के शुद्ध लाभ इस प्रकार थे :—

1963, 1,800 रु०; 1964, 1,400 रु०; 1965, 1,600 रु०

आगे अ ने गारन्टी दी कि स का हिस्सा इन तीन वर्षों के औसत लाभ के चौथाये से कम नहीं होगा। लाभ वितरण के पूर्व साझियों को पूँजी पर 5% ब्याज दिया जावेगा।

(अ) नये फर्म का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइये।

(ब) 31 दिसम्बर, 1966 के लाभ वितरण को दिखाते हुए एक खाता बनाइये। यह लाभ पूँजी पर ब्याज लगाने के पूर्व 1,580 रु० था।) [15]

Answer : (a) Balance Sheet Total Rs. 4,900.

(b) A's Profit Rs. 940; C's Profit Rs. 400.

23. A and B are in partnership with capitals of Rs. 4,000 and Rs. 2,000 respectively; profits and losses are shared in proportion to their capitals, after charging interest on capital at 5 per cent per annum and a partnership salary of Rs. 400 to B. A desires to retire from full active work in the partnership as from 1st January, 1967. It is accordingly agreed that—

(a) B shall in future be entitled to a partnership salary of Rs. 500 per annum.

(b) Interest is to be allowed on capital at 5%.

(c) C, a departmental manager, shall be introduced as a partner, without capital as from 1st January, 1967 with a salary of Rs. 750 per annum, the excess

over Rs. 400 (his former salary as manager) being chargeable against A and not against the firm's profits before division.

(d) C shall also be entitled to one-tenth of the profits after charging interest on capital and partnership salaries.

(e) The balance of profits is to be divided as to three-fifth to A, and two-fifth to B.

The profits for the year ended 31st December, 1967 were Rs. 3,200 before charging interest on capital or partnership salaries.

You are required to show the division among the partners.

अ और व क्रमश: 4,000 रु० और 2,000 रु० की पूँजी के साथ साझी हैं। पूँजी पर 5% वार्षिक ब्याज और व को 400 रु० वेतन देने के पश्चात् लाभ-हानि पूँजी के अनुपात में बाँटे जाते हैं। अ 1 जनवरी, 1967 से साझेदारी के सक्रिय कार्य से अवकाश लेना चाहता है। अतः यह समझौता होता है कि—

(अ) भविष्य में व को 500 रु० साझेदारी वेतन मिलेगा।

(व) पूँजी पर 5% ब्याज दिया जावेगा।

(स) स, एक विभागीय प्रवन्धक, 1 जनवरी, 1967 से विना पूँजी के 750 रु० वार्षिक वेतन पर साझी के रूप में शामिल किया जावेगा। उसे प्रबन्धक के रूप में दिये जाने वाली 400 रु० वेतन की राशि से ऊपर की राशि अ से वसूल की जावेगी न कि फर्म के वितरण योग्य लाभों से।

(द) पूँजी पर ब्याज और साझेदारी वेतन वसूल करने के पश्चात् लाभ का $\frac{1}{10}$ भाग स को और मिलेगा।

(ई) शेष लाभ में से अ को $\frac{3}{5}$ और व को $\frac{2}{5}$ मिलेगा।

पूँजी पर ब्याज अथवा साझेदारी वेतन वसूल करने से पूर्व 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त हुए वर्ष के लिये लाभ 3,200 रु० था।

आपको इस राशि का साझियों में वितरण करना है। [16]

Answer : Balance of profits divided as to A Rs. 730,
B Rs. 720 and C Rs. 200 in addition to salary of Rs. 750.

(Hint : It is assumed that C's 1/10 share in profits is based upon the firm's profits after charging interest on capitals and his former salary of Rs. 400.)

24. The partners of Lock and Co. share profits equally and the following is their Balance Sheet at 31st December, 1967 (लॉक एण्ड कम्पनी के साझी लाभों को बराबर-बराबर बांटते हैं और 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा इस प्रकार है) :—

	Rs.		Rs.
Creditors	5,000	Freehold Buildings	2,000
Capitals:—		Furniture	500
A. Lock	3,000	Stock	3,500
B. Lock	2,000	Debtors	2,700
		Bank & Cash Balances	1,300
	10,000		10,000

They agree to admit C. Lock into equal partnership on payment of Rs. 2,000 for goodwill and to credit him with the following assets brought in : Goodwill Rs. 500; Furniture Rs. 100; Stock Rs. 1,500; Debtors Rs. 400. It is further agreed that the Freehold Buildings shall be revalued at Rs. 3,000 and that A. Lock and B. Lock shall withdraw cash so as to leave all the capitals equal.

Pass journal entries for the necessary adjustments in the books and draw up Balance Sheet of the new firm at 1st January, 1968, assumingt hat all transactions have been completed.

(वे सी. लॉक को 2,000 रु० ख्याति का भुगतान करने पर फर्म में बराबर के साझी के रूप में शामिल करने के लिए राजी हो जाते हैं और उसके द्वारा लाई गई निम्नलिखित सम्पत्तियों से उसके खाते को क्रेडिट करने को तैयार हो जाते हैं—

ख्याति 500 रु०, फर्नीचर 100 रु०, स्टॉक 1,500 रु०, देनदार 400 रु० ।

आगे यह समझौता होता है कि स्वकीय भवन को 3,000 रु० पर पुनर्मूल्यांकित किया जाय और ए. लॉक तथा बी. लॉक इतनी नकद राशि वापस निकाल लें कि सब की पूँजी बराबर हो जाय ।

पुस्तकों में आवश्यक समायोजनों के लिए जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और 1 जनवरी 1968 को यह मानते हुए कि समस्त व्यवहार पूर्ण हो गये, नये फर्म का चिट्ठा बनाइये ।) [17]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 12,500
Capital of partners Rs. 2,500 each.

25. On 1st January, 1964 A took B into partnership. A's books were kept by single entry, and the following statement as on the above date showed his position as follows. (1 जनवरी, 1964 को अ ने ब को साझेदारी में लिया । अ की पुस्तकें इकहरा लेखा प्रणाली के आधार पर रखी गई थी और उक्त तिथि को निम्नलिखित विवरण उसकी स्थिति को इस प्रकार प्रकट करता था):—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	1,600	Sundry Debtors	2,500
A's Capital	2,600	Stock	1,000
		Furniture	500
		Cash at Bank and in hand	200
	4,200		4,200

It was agreed that B should not draw on account of profits more than Rs. 250 per annum until he had paid to A a premium of Rs. 400 out of his share of profits in excess of Rs. 250. A's capital was to be Rs. 2,600 as shown above, the new firm taking over the assets and discharging the liabilities. B was to bring in Rs. 500 which he did on 1st January, 1964. The partners were to

receive 5 per cent interest on their capitals and the profits or losses were to be divided, A two-third and B one-third. A's drawings were : 1964, Rs. 600; 1965 Rs, 540; 1966, Rs. 580. B drew Rs. 250 each year.

The position (apart from capital) on 31st December, 1964, 1965 and 1966 was as follows :

	1964	1965	1966
	Rs.	Rs.	Rs.
Assets	5,000	4,950	5,700
Liabilities	1,750	1,500	1,600

Amounts due from B to A in respect of premium were to be transferred from his capital to A's capital Account.

Make out a statement showing the profit or loss for each year and write up the Partners' Capital Accounts.

Also show the position between A and B as regards premium.

यह तय हुआ कि व लाभों के कारण 250 रु० वार्षिक से अधिक नहीं निकालेगा जब तक कि वह अपने हिस्से के 250 रु० से अधिक लाभों में से अ को 400 रु० प्रीमियम के नहीं चुका देता। अ की पूँजी ऊपर दिखाये गये अनुसार 2,600 रु० रहनी थी और नये फर्म ने सम्पत्तियों को लें लिया तथा दायित्वों का भुगतान करना स्वीकार किया। ब को 500 रु० लाना था जो वह 1. जनवरी, 1964 को ले आया। साझियों को पूँजी पर 5% व्याज देय है और लाभ-हानि अ को दो-तिहाई तथा ब को एक-तिहाई दिये जाने को है। अ के आहरण इस प्रकार थे : 1964, 600 रु०; 1965, 540 रु०; 1966, 580 रु०। ब ने प्रति वर्ष 250 रु० निकाले।

पूँजी के अलावा 31 दिसम्बर 1964, 1965 और 1966 को स्थिति इस प्रकार थी—

	1964	1965	1966
	रु०	रु०	रु०
सम्पत्तियां	5,000	4,950	5,700
दायित्व	1,750	1,500	1,600

ब द्वारा अ को प्रीमियम के कारण देय राशि उसके पूंजी खाते से अ के पूंजी खाते को हस्तान्तरित करनी है।

प्रत्येक वर्ष के लाभ अथवा हानि को दिखलाते हुए एक विवरण-पत्र बनाइये और साझियों के पूँजी खाते तैयार कीजिये।

अ और ब के बीच प्रीमियम के सम्बन्ध में भी स्थिति स्पष्ट कीजिये। [18]

Answer : Net Profits before charging interest on capitals:—
1964 Rs. 1,000; 1965 Rs. 990; 1966 Rs. 1,480

Balance of premium payable out of future profits on 31st Dec., 1966, Rs. 81.

(Hint:—Approximations have been made to the nearest rupee.)

26. A, B and C carry on business in partnership. C wishes to retire from the firm. A and B agree to carry on the business, taking over the assets at a valuation as agreed by the three partners and discharging the liabilities of the firm. The following is the position of the firm as on 30th Sept., 1963, the date of dissolution (अ, ब और स साझेदारी में व्यापार करते हैं। स फर्म से अवकाश ग्रहण करना चाहता है और अ व ब फर्म की सम्पत्तियों को तीनों साझियों द्वारा तय मूल्य पर लेना और दायित्वों का भुगतान करना स्वीकार करते हुए व्यापार को चालू रखने का समझौता करते हैं। विघटन की तारीख 30 सितम्बर 1963 को फर्म की स्थिति निम्न प्रकार थी):—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	18,900	Plant	4,000
Loans	7,000	Furniture	750
Capitals:—		Stock	10,000
A	3,000	Debtors	18,000
B	4,000	B/R	4,000
C	1,000	Cash in hand	50
Profit and Loss Account	3,000	Cash at Bank	100
	36,900		36,900

The agreed values of the assets are as follows:—

Plant Rs. 3,050; Furniture Rs. 500; Stock less 20%; Debtors (Less Discount and Bad Debts) Rs. 15,000; Provision for Doubtful Bills Rs. 1,000.

(a) Prepare Balance Sheet showing the position of the new firm of A and B on taking over the business.

(b) Prepare also the Capital Accounts and Balance Sheet of A, B and C after the above valuation and dissolution adjustments have been made. The profits and losses are divisible on the basis of capital originally contributed.

(सम्पत्तियों का मूल्य निम्नलिखित तय हुआ):—

प्लान्ट 3,050 रु०, फर्नीचर 500 रु०, स्टॉक 20% कम, देनदार (बट्टा और डूबत ऋण कम करके) 15,000 रु०, संदिग्ध बिलो के लिए आयोजन 1,000 रु०।

[अ] व्यापार लेने पर अ और ब की नई फर्म की स्थिति दिखाते हुए चिट्ठा बनाइये।

[ब] उपरोक्त मूल्यांकन एवं विघटन सम्बन्धी समायोजनों के पश्चात् अ, ब, स के पूंजी खाते और चिट्ठा भी बनाइये। लाभ-हानि मूल रूप में लगाई गई पूंजी के अनुपात में वितरण योग्य है। [19]

Answer : Balance Sheet of A and B Total Rs. 29,700; Capital Accounts: A Rs. 1,425; B Rs. 1,900; and C Rs. 475 transferred to his personal account. Balance Sheet of A, B and C Total Rs. 29,700. Loss on Revaluation (before deducting the profit of Rs. 3,000) will be Rs. 7,200.

27. A and B carried on business in partnership. On 31st December, 1963, they dissolved the partnership and A retired. The Balance Sheet as at that date was as follows. (अ और ब साझेदारी में व्यापार करते थे। 31 दिसम्बर, 1963 को उन्होंने साझेदारी का विघटन किया तथा अ ने अवकाश ग्रहण किया। उस तिथि को चिट्ठा निम्न प्रकार था:—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	10,000	Freehold Land and Buildings	5,000
Bills Payable	5,000	Plant and Machine	12,000
Loan on Mortgage of Freehold Property	3,000	Loose Tools	4,000
A's Capital	21,000	Patterns and Models	2,000
B's Capital	14,000	Stock	15,000
		Sundry Debtors	11,000
		Bills Receivable	2,500
		Cash at Bank	1,200
		Cash in hand	300
	53,000		53,000

Profits and Losses were shared in the proportion of A two-third and B one-third.

B agreed to take over the business on the following terms:—

Freehold Land and Buildings were to be taken over by A at the amount stated in the Balance Sheet, subject to the mortgage, and B was to rent the premises on a repairing lease at Rs. 250 per annum.

Revaluations were to be made which resulted as follows :

Plant and Machine Rs. 10,000; Loose Tools Rs. 4,400; Patterns and Models Rs. 1,800 and Stock Rs. 12,000.

A agreed to allow the amount due to him (less Rs. 300 which was to be paid to him in cash) to remain as a loan to B at 5% interest.

Prepare Profit and Loss Adjustment Account and B's Balance Sheet after the transactions have been completed.

(लाभ-हानि का विभाजन अ को $\frac{2}{3}$ और ब को $\frac{1}{3}$ किया जाता है।

ब निम्नलिखित शर्तों के आधार पर व्यापार को लेने के लिए राजी हो जाता है:—

स्वकीय भूमि और भवन बन्धक-ऋण सहित चिट्ठे में दिखाये गये मूल्य पर अ द्वारा ली जायेंगी और ब भवन को 250 रु० वार्षिक किराये और मरम्मत के पट्टे पर लेगा।

पुनर्मूल्यांकन का परिणाम निम्नलिखित निकला:—

प्लान्ट और मशीन 10,000 रु०; फुटकर औजार 4,400 रु०; प्रारूप और मॉडल्स 1,800 रु०; और स्टॉक 12,000 रु०।

अ को जो रकम देय होगी उसे (300 रु० को छोड़कर जो उसे रोकड़ी दी जावेगी) वह ब को 5% ब्याज पर ऋण के रूप में छोड़ने को राजी हो गया।

लाभ–हानि समायोजन खाता बनाइये और इन व्यवहारों के पूर्ण हो जाने के पश्चात् ब का चिट्ठा बनाइये। [20]

Ans. Revaluation Loss Rs. 4,800. Balance Sheet Total Rs. 42,900. A's Loan shown in B's Balance Sheet Rs. 15,500.

28. The partners in the firm of A and B agree to dissolve the partnership on 31st December, 1963, and the Balance Sheet at that date was as under (अ और ब की फर्म के साझी 31 दिसम्बर, 1963 को फर्म का विघटन करने का समझौता करते हैं। उस दिन का चिट्ठा इस प्रकार था) :—

	Rs.		Rs.
Trade Creditors	10,000	Stock-in-trade	11,500
Union Bank	500	Furniture and Fixtures	400
Bills Payable	2,300	Book-Debts	17,100
A—Capital	10,700	Goodwill	1,000
B—Capital	3,500	B/R Rs. 2,800 under Discount	
Profit for 1963	3,000		
	30,000		30,000

Profits are divisible in the proportions of A 4/7 and B 3/7; 5 per cent interest being allowed on capital and no interest charged on Drawings, which were upon the basis of Rs. 500 per annum each. A is to retain the Furniture and Fixtures, and he undertakes to discharge all liabilities and to take over assets with liberty to B to carry on business elsewhere; B is to take 1/4th of the stock in part-payment of his capital, and to leave in the business for one year a sum of Rs. 500 as a guarantee against any bad debts or liabilities on bills under discount, and to receive or pay any balance in cash.

Prepare A's Balance Sheet showing position after the dissolution and the completion of these transactions.

(लाभ अ को 4/7 और ब को 3/7 के अनुपात में बाँटे जाते हैं; पूँजी पर 5% ब्याज दिया जाता है और आहरण पर कोई ब्याज वसूल नहीं किया जाता जो कि प्रत्येक साझी के लिए 500 रु० वार्षिक थे। अ फर्नीचर और फिक्सचर्स रखेगा और समस्त दायित्वों का भुगतान करेगा तथा सम्पत्तियों को लेगा और ब को अन्यत्र व्यापार करने की छूट होगी; ब अपनी पूँजी के आंशिक भुगतान के रूप में स्टॉक का चौथाया भाग लेगा और भुनाये गये बिल तथा डूबत ऋण के लिए गारन्टी के रूप में 500 रु० एक वर्ष तक व्यवसाय में छोड़ देगा और शेष रकम नकद में लेगा अथवा देगा।

विघटन के पश्चात् और इन व्यवहारों के पूर्ण होने के पश्चात् की स्थिति दिखाते हुए अ का चिट्ठा बनाइये।) [21]

Ans. : Balance Sheet Total Rs. 27,125.

(Hint : There is a contingent liability for bills discounted amounting to Rs. 2,800.)

व अवकाश ग्रहण करता है और फर्म द्वारा ब को देय राशि का निर्धारण करने से पूर्व निम्नलिखित समायोजन किये जाने तय होते हैं :—

(i) स्टॉक 6% से ह्रासित किया जाय।

(ii) देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन को 5% तक लाया जाय।

(iii) कारखाना भूमि और भवन का 20% से अधिमूल्यन किया जाय।

(iv) अदत्त कानूनी खर्चों के लिए 770 रु० का आयोजन किया जाय।

(v) पूरे फर्म की ख्याति 10,800 रु० निश्चित की जाय और उसमें ब के हिस्से को अ और स के खातों में समायोजित किया जाय जो भविष्य में क्रमशः 5/8 और 3/8 के अनुपात में हिस्सा बँटायेंगे (ख्याति खाता नहीं खोलना है)।

(vi) नये फर्म की कुल पूँजी 28,000 रु० स्थिर की जाय जो अ और स के खातों में ख्याति का समायोजन करने के पश्चात् अ की 5/8 और स की 3/8 होगी (अर्थात् परिस्थिति अनुसार चालू रहने वाले साझियों द्वारा वास्तव में नकद लाया जावेगा अथवा निकाला जावेगा)।

उपरोक्त व्यवस्थाओं को प्रभावी करने के लिए जर्नल में प्रविष्टियाँ कीजिए तथा अ और स का चिट्ठा बनाइये। ब के पूँजी और ख्याति के हिस्से की रकम उसके नाम के अलग ऋण खाते में हस्तान्तरित करनी है। [23]

Ans. Balance Sheet Total Rs. 55,470
B's Loan Account Rs. 19,800

31. The Balance Sheet of A, B and C who are sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2 : 1 respectively, was as follows on 31st Dec., 1963 (अ, ब और स का चिट्ठा जो कि लाभ और हानि को क्रमशः 3 : 2 : 1 के अनुपात में बांटते हैं, 31 दिसम्बर, 1963 को इस प्रकार था) :—

	Rs.		Rs.
Creditors	1,250	Cash in hand and at Bank	2,565
Bills Payable	640	Bills Receivable	540
Capitals : A	4,000	Debtors	1,780
B	2,500	Stock	2,230
C	2,000	Furniture	350
Profit and Loss Account	450	Plant and Machine	975
		Buildings	2,400
	10,840		10,840

A retires from the business from 1st January, 1964 and his share in the business is to be ascertained on a revaluation of the assets as follows :—

Stock Rs. 2,000; Furniture Rs. 300; Plant and Machine Rs. 900; Buildings Rs. 2,000; Provision for Doubtful Debts is to be made at Rs. 85.

The Goodwill of the firm is fixed at Rs. 600.

A is to be paid Rs. 1,105 in cash on retirement and the balance in three equal yearly instalments with interest at 5% per annum.

Show the necessary accounts to give effect to the above arrangement, the Balance Sheet of B and C and A's Account till it is finally closed.

(1 जनवरी, 1964 से अ व्यापार से अवकाश ग्रहण कर लेता है और उसका व्यापार में हिस्सा निम्नलिखित प्रकार से सम्पत्तियों के पुनर्मूल्यांकन के आधार पर निर्धारित होता है :—

स्टॉक 2,000 रु०; फर्नीचर 300 रु०; प्लान्ट और मशीन 900 रु०; भवन 2,000 रु०; संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन 85 रु० करना है।

फर्म की ख्याति 600 रु० स्थिर होती है।

अवकाश ग्रहण करने पर अ को 1,105 रु० नकद दिया जावेगा और शेष तीन बराबर वार्षिक किस्तों में मय 5% ब्याज के दिया जावेगा।

उपरोक्त व्यवस्था को प्रभावशील बनाने के लिए आवश्यक खाते खोलिये; ब और स का चिट्ठा बनाइये और अ का खाता बनाइये जब तक कि वह पूर्ण रूप से बन्द नहीं हो जाता। [24]

Ans : Loss on revaluation Rs. 840. Balance Sheet Total Rs. 10,000.

32. A and B carried on business as equal partners. It was agreed that A should retire on 31st December, 1967 and that his son C should join B in partnership on 1st January, 1968 and should be entitled to one-third of the profits of the firm. (अ और ब बराबर के साझी के रूप में व्यापार करते थे। यह तय हुआ कि 31 दिसम्बर, 1967 को अ अवकाश ग्रहण कर ले और 1 जनवरी, 1968 को उसका पुत्र स साझेदारी में शामिल हो जाय और उसे फर्म के लाभ में $\frac{1}{3}$ भाग पर अधिकार मिले)।

The balances in the firm's books on 31st December, 1967 were as follows (31 दिसम्बर 1967 को फर्म की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष थे) :—

	Rs.		Rs.
Creditors	980	Goodwill	1,000
Capitals :		Freehold Premises	2,070
A	3,400	Furniture	1,420
B	2,820	Debtors	1,610
		Balance at Bank	1,100
	7,200		7,200

For the purposes of A's retirement and C's admission, Goodwill was valued at Rs. 2,200 and Freehold Premises at Rs. 2,400. The book value of these assets is not to be altered. Other terms agreed were that enough money should be introduced to enable A to be paid out and leave Rs. 1,000 cash for working capital, and that B and C should respectively provide such sums as would make

of profits to date of death, such to be calculated according to the profits of the preceding year. Further, they are to be paid his share of the goodwill, this to be calculated at two years' purchase of his average net profits of the last three years before charging the insurance premium.

The accounts of the partnership were regularly made upto 31st December in each year, and the partners shared profits and losses as to A 5/8 and B 3/8. B died on 30th April, 1968. After charging the insurance premiums, the net profits for the last three years were Rs. 2,800, Rs. 3,200 and Rs. 2,712. The last Balance Sheet showed B's capital to be Rs. 3,600; his drawings to date of death amounted to Rs. 570. You are required to make the necessary adjustments and prepare B's account, showing the amount due to his personal representatives.

दो साझी, अ और ब ने मृत्यु की दशा में उनके हिस्से की पूँजी और ख्याति का भुगतान करने के लिए रकम की व्यवस्था करने हेतु अपने जीवन पर 10,000 रु० का संयुक्त बीमा लिया जिसकी प्रीमियम प्रत्येक दिसम्बर में फर्म के लाभ-हानि खाते को हस्तान्तरित कर दी जाती थी। साझेदारी संलेख के अन्तर्गत मृत साझी के उत्तराधिकारियों को पिछले चिट्ठे द्वारा दिखाई गई उसकी पूँजी, मृत्यु की तारीख तक उस पर 5% वार्षिक दर से ब्याज और मृत्यु की तारीख तक उसका लाभों में हिस्सा चुकाया जाना था। लाभ के हिस्से की गणना पिछले वर्ष के लाभ के आधार पर की जानी थी। आगे उन्हें ख्याति में उसका हिस्सा दिया जाना था जो बीमे की प्रीमियम चार्ज करने से पहले पिछले तीन वर्षों के उसके औसत शुद्ध लाभ का दो गुणा गिनी जानी थी।

साझेदारी के खाते प्रति वर्ष नियमानुसार 31 दिसम्बर को तैयार किये जाते थे और साझी लाभ विभाजन अ 5/8 और ब 3/8 करते थे। 30 अप्रैल, 1968 को ब की मृत्यु हो गई। बीमा की प्रीमियम चार्ज करने के पश्चात् पिछले तीन वर्षों के शुद्ध लाभ 2,800 रु०, 3,200 रु० और 2,712 रु० थे। पिछले चिट्ठे के अनुसार ब की पूँजी 3,600 रु० थी; मृत्यु की तारीख तक उसके आहरण 570 रु० थे। आपको आवश्यक समायोजन करना है और ब का खाता उसके व्यक्तिगत उत्तराधिकारियों को देय रकम को दिखाते हुए तैयार करना है। [27]

Ans : Amount due to representatives of B Rs. 5907.

नोट:—क्योंकि प्रश्न में मृत साझी के खाते को पॉलिसी की रकम में उनके हिस्से को क्रेडिट करने के लिए आदेश नहीं किया गया है, अतः उक्त प्रश्न के हल में पॉलिसी से प्राप्त राशि को मृत साझी के खाते में क्रेडिट नहीं किया गया है। लेकिन उचित यही होगा कि पॉलिसी के 10,000 रु० का $\frac{3}{8}$ हिस्सा भी मृत साझी के खाते में क्रेडिट किया जाय। ऐसा करने पर उसके उत्तराधिकारियों को 5,907 रु० के स्थान पर 9,657 रु० प्राप्त होंगे।

35. A, B and C were partners sharing profits in the ratio of 3:2:1. Their capitals on 31st December, 1966 stood at Rs. 20,800, Rs. 10,000 and Rs. 6,000 respectively. A died on 28th Feb., 1967. From the following particulars prepare an account for presentation to the representatives of A.

(i) The lives of all the partners were severally insured by the firm—A for Rs. 18,000; B for Rs. 9,600 and C for Rs. 4,800. The premiums were charged as business expense to the firm's profit and loss account. The surrender value of the policies on 28th Feb. 1967 was 1/4 of the sum assured.

(ii) Interest is to be paid on capital @ 5%

(iii) A's drawings from 1st January, 1967 to the date of death were Rs. 2,400.

(iv) A's share of profits to the date of his death during the current year was to be based on the average profits of the previous three completed years and goodwill was to be raised on the basis of two year's purchase of the average profits of these three years.

The profits of the past three completed years were Rs. 18,400, Rs. 14,800 and Rs. 17,200 respectively.

Calculations are to be made to the nearest rupee.

अ, ब और स क्रमश: 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभों का विभाजन करते हुये साझी थे। 31 दिसम्बर 1966 को उनकी पूँजी क्रमश: 20,800 रु०, 10,000 रु० और 6,000 रु० थी। 28 फरवरी, 1967 को अ की मृत्यु हो गई। निम्नलिखित विवरण के आधार पर अ के उत्तराधिकारियों को पेश करने के लिए एक खाता बनाइये:—

(i) सभी साझियों के जीवन का फर्म द्वारा अलग-अलग बीमा कराया गया था—अ का 18,000 रु०, ब का 9,600 रु० और स का 4,800 रु० के लिए। प्रीमियम फर्म के लाभ-हानि खाते को एक व्यापारिक खर्च के रूप में चार्ज की जाती थी। 28, फरवरी 1967 को बीमा पालिसियों का समर्पण मूल्य बीमित मूल्य के $\frac{1}{4}$ के बराबर था।

(ii) पूँजी पर 5% ब्याज देय था।

(iii) 1 जनवरी, 1967 से अ की मृत्यु तक उसके आहरण 2,400 रु० थे।

(iv) चालू वर्ष में अ की मृत्यु की तारीख तक के लाभों में उसका हिस्सा पिछले तीन पूरे वर्षों के औसत लाभों के आधार पर गिना जाना था और ख्याति इन तीन वर्षों के औसत लाभ के दो गुने के आधार पर आँकी जानी थी।

पिछले तीन पूरे वर्षों का लाभ क्रमश- 18,400 रु० 14,800 रु० और 17,200 रु० था। गणना निकटतम रुपये तक करनी है। [28]

Ans. : Amount due to A's representatives Rs. 47,573.

36. The following Balance Sheet states the position of Messrs A and B on 31st December, 1967, on which date they decide to give up the business and

wind up their affairs. (निम्नलिखित चिट्ठा मै० अ और ब की 31 दिसम्बर, 1967 की स्थिति बताता है जिस दिन वे अपने व्यापार को छोड़ने और समापन करने का निश्चय करते हैं):—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	3,800	Stock	7,200
Reserve	2,000	Book-Debts	12,000
A's Capital	11,000	Furniture	400
B's Capital	8,000	Machinery & Plant	1,800
		Profit and Loss Account	3,400
	24,800		24,800

The Book Debts were collected at a cost of $7\frac{1}{2}\%$; Stock sold for Rs. 6,000; Machinery and Plant for Rs. 1,400 and Furniture for Rs. 500. Open the necessary ledger accounts on the basis of the above Balance Sheet and show the final closing of the books, including the withdrawal by partners of any ultimate balances due to them. The partners share equally.

(पुस्तक ऋण $7\frac{1}{2}\%$ की लागत पर वसूल किये गये; स्टॉक 6,000 रु० में बेचा गया; मशीन और प्लांट 1,400 रु० में और फर्नीचर 500 रु० में बेचा गया। उपरोक्त चिट्ठे के आधार पर आवश्यक खाते खोलिए और साझियों को अंतिम देय रकम का आहरण दिखाते हुए पुस्तकों को बंद कीजिए। साझी बराबर-बराबर हिस्सा बंटाते हैं।) [29]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 2,400.
A was paid Rs. 9,100 and B Rs. 6,100.

37. The Balance Sheet of A and B stood at 31st December, 1967 as follows (अ और ब का चिट्ठा 31 दिसम्बर, 1967 को इस प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Creditors	2,300	Debtors	2,200
Loan by A	3,000	Plant and Machinery	5,000
Capital—A	1,000	Buildings	3,100
Capital—B	4,000		
	10,300		10,300

The partners share profits and losses equally. They decide to wind up the business as at 31st December, 1967. The realisation of the assets yields 75% of the debtors, 60% of the Plant and Machinery and 70% of the Buildings. Make out necessary accounts and final Balance Sheet.

साझी लाभ-हानि बराबर-बराबर बांटते हैं। वे 31 दिसम्बर, 1967 को व्यापार को समाप्त करने का निश्चय करते हैं। सम्पत्तियों की वसूली पर देनदारों से 75%, प्लान्ट और मशीन से 60% और भवन से 70% मिलता है। आवश्यक खाते और अंतिम चिट्ठा बनाइये। [30]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 3,480.
Final Balance Sheet Total Rs. 4,520.
(Hint—The deficit of A's capital Rs.740 will be transferred to his loan a/c.)

38. The Balance Sheet of a firm on 31st December, 1967 was as follows. (31 दिसम्बर, 1967 को एक फर्म का चिट्ठा इस प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Capitals :		Freehold Property	8,000
A	5,000	Investments	2,000
B	4,000	Debtors	1,000
C	3,000	Cash at Bank	3,000
Trade Creditors	2,000		
	14,000		14,000

Partnership profits and losses were divided equally. The partnership was dissolved as on 31st December, 1967. The Trade Creditors were paid at 5% discount. A agreed to take over the Freehold Property at Rs. 9,000, B the Investments at Rs. 500 and C the Debtors at Rs. 600.

Show the final partnership accounts.

(साझेदारी में लाभ-हानि बराबर-बराबर बांटे जाते हैं। 31 दिसम्बर, 1967 को साझेदारी का विघटन कर दिया जाता है। व्यापारिक लेनदारों को 5% बट्टे पर भुगतान किया गया। अ स्वकीय सम्पत्ति को 9,000 रु० में व विनियोग को 500 रु० में और स देनदारों को 600 रु० में लेने को राजी हो गया।

अन्तिम साझेदारी खाते बनाइये। [31]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 800.

39. A, B and C were partners in a business sharing profits in the ratio of 2 : 2 : 1 respectively. The partnership is dissolved as on 31st December, 1967, upon which date the position of the firm was as follows. (अ, ब और स क्रमशः 2:2:1 के अनुपात में लाभों को वांटते हुये एक व्यापार में साझी थे। 31 दिसम्बर, 1967 को साझेदारी का विघटन कर दिया जाता है, जिस दिन फर्म की स्थिति निम्न प्रकार थी):—

	Rs.			Rs.
Capitals :				
A	3,000	Sundry Assets		10,620
B	2,100	Debtors :		
Loans :		C	Rs. 500	
A	500	Sundry	Rs. 2,000	2,500
D	800	Cash at Bank		120
Sundry Creditors	5,840			
Bank Overdraft	1,000			
	13,240			13,240

The expenses of the dissolution were Rs. 120. A took over the business, paying Rs. 7,850 for the Sundry Assets and Rs. 2,500 for Goodwill.

Prepare Realisation Account and final Balance Sheet.

विघटन के खर्चे 120 रु० थे। अ ने 7,850 रु० विविध सम्पत्तियों के लिए और 2,500 रु० ख्याति के लिए देकर व्यापार ले लिया।

वसूली खाता और अन्तिम चिट्ठा बनाइये। [32]

Answer :—Loss on Realisation Rs. 390.

Final Balance Sheet Total Rs. 4,788.

(Hint :—As it has not been stated as to what had been realised from sundry debtors, it is assumed that the amount of Rs. 2,000 will be shown in the Final Balance Sheet.)

40. On 1st January, 1965, A, B and C were partners carrying on business with capitals of Rs. 30,000, Rs. 20,000 and Rs. 10,000 respectively. Each partner was to receive 5% interest on capital and to share profits in the ratio of 7 : 3 : 2 respectively.

At 30th June, 1966, it was agreed to dissolve the partnership and to realise all the assets. In the result after all liabilities and claims had been paid with the exception of law and accountancy charges agreed at Rs. 500, there remained a balance in cash of Rs. 38,750.

31st December, 1966 was an agreed date between the parties for a settlement.

Prepare Realisation Account and the final Balance Sheet of the firm.

1 जनवरी, 1965 को अ, ब और स क्रमशः 30,000 रु० 20,000 रु० और 10,000 रु० की पूंजी के साथ साझी थे। प्रत्येक साझी को पूंजी पर 5% ब्याज मिलना था और लाभों को क्रमशः 7: 3: 2 के अनुपात में बांटना था।

30 जून, 1966 को साझेदारी का विघटन करना और सम्पत्तियों को बेचना तय हुआ। फलस्वरूप कानून और लेखा के सम्बन्ध में 500 रु० के खर्चे को छोड़ समस्त दायित्वों एवं दावों का भुगतान करने के पश्चात् 38,750 रु० नकद शेष रहा।

पक्षों में 31 दिसम्बर, 1966 निपटारे की तिथि तय की हुई थी।

वसूली खाता और फर्म का अन्तिम चिट्ठा बनाइये। [33]

Answer : Loss on Realisation Rs. 27,750, after debiting interest on capital.

Final Balance Sheet Total Rs. 38,750.

41. A, B and C carried on business in partnership and on 31st December, 1967, their Balance Sheet was as follows. (अ, ब और स साझेदारी में व्यापार करते हैं और 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा इस प्रकार है) :—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	4,500	Land and Buildings	4,000
A—Loan	6,000	Plant and Machinery	8,000
Capital Accounts—		Loose Tools	1,500
A	12,000	Stock	10,000
B	10,000	Sundry Debtors	14,000
C	7,500	Cash at Bank and in hand	2,500
	40,000		40,000

They decide to dissolve the partnership as at 31st December, 1967. A retires and B and C continue the business and agree to purchase A's share in the business in the proportions in which they share profits and losses. Profits and losses are shared : A two-fifths, B two-fifths and C one-fifth. A agrees to allow his loan to remain in the business.

For the purpose of the dissolution, Goodwill is valued at Rs. 5,000, and the assets are to be taken as follows:—

Land and Buildings Rs. 4,500.

Plant and Machinery as in the Balance Sheet, subject to 10 per cent depreciation.

Loose Tools as in the Balance Sheet.

Stock at Rs. 9,000.

Sundry Debtors as in the Balance Sheet, subject to Rs. 1,100 Provision for Bad Debts, and an allowance of 5 per cent discounts and costs of collection.

The liability to Sundry Creditors is taken over by B and C subject to an allowance of Rs. 200 for discounts.

B and C continue to share profits and losses in the same proportions as heretofore. They also agree to continue the same books of accounts.

Open the necessary accounts and the Balance Sheet of B and C as on 1st January, 1968.

(वे 31 दिसम्बर, 1967 को फर्म का विघटन करने का निश्चय करते हैं। अ अवकाश ग्रहण कर लेता है और ब तथा स व्यापार को चालू रखते हैं और व्यापार में अ का हिस्सा अपने लाभ विभाजन के अनुपात में खरीदने के लिए राजी होते हैं। लाभ-हानि अ में $\frac{2}{5}$, ब में $\frac{2}{5}$ और स में $\frac{1}{5}$ के अनुपात में बांटे जाते हैं। अ अपना ऋण व्यापार में छोड़ने के लिए सहमत हो जाता है।

विघटन के लिए ख्याति का मूल्य 5,000 रु० तय होता है और सम्पत्तियां इस प्रकार से ली जाती हैं :—

भूमि और भवन 4,500 रु० ।

प्लान्ट और मशीन चिट्ठे के अनुसार, 10% ह्रास काट कर ।

फुटकर औजार चिट्ठे, के अनुसार ।

स्टॉक 9,000 रु० ।

विविध देनदार, डूबत ऋण के लिए 1,100 रु० का आयोजन और उगाई-खर्च तथा बट्टे के लिए 5% की व्यवस्था के पश्चात् चिट्ठे के अनुसार ।

विविध लेनदारों सम्बन्धी दायित्व ब और स के द्वारा 200 रु० बट्टे के छोड़ते हुए लिया गया।

ब और स लाभ-हानि पहले के अनुपात में ही बांटना चालू रखते हैं। वे यह भी तय करते हैं कि उन्हीं पुस्तकों को चालू रखेंगे ।

आवश्यक खाते खोलिए और व तथा स का 1 जनवरी, 1968 का चिट्ठा बनाइये । [34]

Ans. : Profit on revaluation of assets and liabilities Rs. 2,155

Balance Sheet Total Rs. 41,955.

(Hint:—It has been assumed that for the purpose of paying off A's balance of capital, B and C contributed cash in proportions to their profit sharing ratio.)

42. Two partners, A and B, agree to dissolve their partnership. The assets of the firm realise Rs. 1,50,000 and the liabilities were: Creditors Rs. 90,000; A's Loan Rs. 40,000; A's Capital Rs. 20,000 and B's Capital Rs. 30,000. They share profits in the ratio of 3 : 1 respectively.

Open the necessary accounts to show the distribution of the cash realised.

दो साझी, अ और ब, अपनी साझेदारी का विघटन करने का निश्चय करते हैं। फर्म की सम्पत्तियों से 1,50,000 रु० मिलता है और दायित्व इस प्रकार हैं; लेनदार 90,000 रु०; अ का ऋण 40,000 रु०; अ की पूंजी 20,000 रु० और व की पूंजी 30,000 रु० । वे लाभों को क्रमशः 3:1 के अनुपात में वांटते हैं।

प्राप्त रकम का वितरण दिखाते हुए आवश्यक खाते खोलिए । [35]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 30,000.

A brought in cash Rs. 2,500 and B was paid cash Rs. 22,500.

43. A, B and C are equal partners, who decide to dissolve the partnership. After realisation on their estate, the Balance Sheet stands thus (अ, ब और स बरावर के साझी हैं जो साझेदारी के विघटन करने का निश्चय करते हैं। अपनी सम्पत्तियों की वसूली करने के पश्चात् उनका चिट्ठा इस प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Capitals :			
A	2,710	Cash at Bank	2,500
B	1,902	C - overdrawn	600
		Deficiency	1,512
	4,612		4,612

C being insolvent, determine the final adjustment between A and B according to the decision in Garner V. Murray.

(स दिवालिया है। गार्नर बनाम मरे निर्णय के अनुसार अ और ब में अंतिम समायोजन कीजिए।) [36]

Ans. : C's deficiency Rs. 1,104 borne by A Rs. 648-71 and B Rs. 455-29.

44. The following is the Balance Sheet of A, B and C on 31st December, 1967 (31 दिसम्बर, 1967 को अ, ब और स का चिट्ठा निम्न प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Creditors	2,000	Cash at Bank	500
Bank Loan	500	Stock	2,000
Bills Payable	500	Plant and Tools	2,000
A's Capital	2,500	Debtors	1,000
B's Capital	1,500	Bills Receivable	1,000
		C–Capital overdrawn	500
	7,000		7,000

C is insolvent, but his partners recover from his private estate Rs. 250. It is decided to wind up the partnership, and the assets realise : Stock Rs. 1600, Plant and Tools Rs. 1,500, Debtors Rs. 750 and B/R Rs. 700. Profits and losses are divided equally. Costs of realisation amounted to Rs. 250. Close the books of the firm, if according to partnership deed, the decision in Garner v. Murray is not applicable.

(स दिवालिया है, लेकिन उसके साझी उसकी निजी जायदाद से 250 रु० प्राप्त कर लेते हैं। साझेदारी का समापन करने का निश्चय किया जाता है और सम्पत्तियों से इस प्रकार वसूली होती है: स्टॉक 1,600 रु०; प्लान्ट और औजार 1,500 रु०; देनदार 750 रु० और प्राप्य बिल 700 रु०। लाभ हानि बराबर-बराबर बांटे जाते हैं। वसूली के खर्चे 250 रु० होते हैं। फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिये यदि साझेदारी संलेख के अनुसार गार्नर बनाम मरे का निर्णय लागू नहीं होता है।) [37]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 1,700

C's deficiency shared by A Rs. 408=33 and B Rs. 408=33

45. A, B and C are partners in a business dividing profits equally. Their Balance Sheet at 31st December, 1967 was as under. (अ, ब और स बराबर-बराबर लाभ बांटते हुए एक व्यापार में साझी हैं। 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था):—

		Rs.		Rs.
Sundry Creditors		3,800	Sundry Debtors	9,700
Bills Payable		900	Stock	2,400
Capital Accounts :			Furniture	380
	A	6,000	Cash at Bank	620
	B	3,000	C's Drawings Account	3,000
	C	1,000		
Drawings Accounts :				
	A	700		
	B	700		
		16,100		16,100

C is insolvent and unable to contribute anything; the partnership is consequently dissolved, and the Sundry Debtors, Stock and Furniture realise Rs. 10,380. Draw up the final Balance Sheet showing the position of each partner's Capital Account in accordance with the decision in Garner v. Murray.

(स दिवालिया है और कुछ भी दे सकने में असमर्थ है। फलस्वरूप साझेदारी का विघटन कर दिया जाता है और विविध देनदारों, स्टॉक और फर्नीचर से 10,380 रु० वसूल होता है। गार्नर बनाम मरे के निर्णय के अनुसार प्रत्येक साझी के पूँजी खाते की स्थिति दिखाते हुये अंतिम चिट्ठा बनाइये। [38]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 2,100

Balance Sheet Total Rs. 6,300; C's deficiency borne by A Rs. 1,800 and B Rs. 900.

46. A, B and C are partners in a firm sharing profits and losses 48%, 35% and 17% respectively, decide to dissolve the partnership and appoint B to realise the assets and distribute the proceeds. B is to receive 5% of the amounts coming to A and C as his remuneration and is to bear all the expenses of realisation. (अ, ब और स क्रमश: 48%, 35% और 17% लाभ-हानि का विभाजन करते हुए साझी हैं। वे साझेदारी का विघटन करने का निश्चय करते हैं और ब को सम्पत्तियों से वसूली करने और वसूली की रकम बांटने के लिए नियुक्त करते हैं। अ और स को मिलने वाली रकम का 5% ब को पारिश्रमिक दिया जाना है और उसे वसूली के सब खर्चे वहन करने हैं।)

The following is the Balance Sheet as on the date of dissolution. (विघटन की तारीख को चिट्ठा इस प्रकार था):—

C's deficiency borne by A Rs. 326=91 and B Rs. 242=04.

B's remuneration Rs. 139=10.

47. The following was the Balance Sheet of A, B and C on 31st March, 1968 (31 मार्च, 1968 को अ, ब, स, का चिट्ठा निम्न प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	30,000	Cash	2,500
Loan on Mortgage of Freehold Property	4,000	Debtors	30,000
		Stock	23,100
A's Capital	25,000	Furniture	5,000
C's Capital	15,000	Freehold Property	10,000
A's Current Account	1,000	B's Current Account	4,900
C's Current Account	500		
	75,500		75,500

They shared profits and losses in the proportion of 6 : 4 : 6. It was decided to dissolve the partnership as on the date of the Balance Sheet. The assets realised as under :—

Freehold Property Rs. 5,000, Furniture Rs. 1,000, Stock Rs. 10,000, and Debtors Rs. 10,000.

The expenses of realisation amounted to Rs. 2,000. The Sundry Creditors agreed to take 75 paise in the rupee in full satisfaction. It was ascertained that B had incurred a heavy loss in speculation business and he had become insolvent. A dividend of 50% in the rupee was received from his estate.

Write up the Realisation Account, Capital and Current accounts of the partners. Also give journal entries for closing the books of the firm.

(वे 6:4:6 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करते थे। चिट्ठे की तारीख को साझेदारी का विघटन करने का निर्णय किया गया। सम्पत्तियों से निम्नलिखित वसूली हुई :—

स्वकीय सम्पत्ति 5,000 रु०; फर्नीचर 1,000 रु०; स्टॉक 10,000 रु०; तथा देनदार 10,000 रु०।

वसूली के खर्चे 2,000 रु० थे। विविध लेनदार रुपये में 75 पैसे के लिए राजी हो गये। यह ज्ञात हुआ कि ब को सट्टे में भारी नुकसान हुआ है और वह दिवालिया हो गया है। उसकी जायदाद से रुपये में 50% प्राप्त हुआ है।

वसूली खाता और साझियों के पूंजी खाते तथा चालू खाते बनाइये। फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ भी दीजिये। [40]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 36,600; C pays Rs. 859;
A receives Rs. 7,884.

48. A and B were in equal partnership. Their Balance Sheet stood as under on 31st December, 1967 (अ और ब बराबर की साझेदारी में हैं। 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था) :—

	Rs.		Rs.
Creditors	3,200	Machinery and Plant	1,200
A's Capital	400	Furniture	300
		Debtors	500
		Stock	400
		Cash	180
		B's Drawings	1,020
	3,600		3,600

The assets realised as under :

Machinery Rs. 600; Debtors Rs. 400; Furniture Rs. 100; and Stock

The expenses of realisation amounted to Rs. 140. A's private estate is not sufficient even to pay his private debts, whereas in B's private estate there is a surplus of Rs. 140 only.

Give accounts to close the books of the firm.

(सम्पत्तियों से निम्न प्रकार से वसूली हुई :—

मशीन 600 रु०; देनदार 400 रु०; फर्नीचर 100 रु० और स्टॉक 300 रु० ।

वसूली के खर्चे 140 रु० थे । अ की निजी सम्पत्ति उसके व्यक्तिगत ऋणों को चुकाने के लिए भी पर्याप्त नहीं है जबकि ब की निजी सम्पत्ति से केवल 140 रु० का आधिक्य बनता है ।

फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए आवश्यक खाते दीजिए । [41]

Ans. : Loss on Realisation Rs. 1,140; Sundry Creditors receive Rs. 1,580.

49. A, B and C are in partnership. The following is their Balance Sheet as at 31st December, 1967, on which date they dissolve partnership. They share profits in the ratio of 5 : 3 : 2 (अ, ब और स साझी हैं । 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार है जिस दिन वे साझेदारी का विघटन करते हैं । वे लाभ 5 : 3 : 2 के अनुपात में बांटते हैं) :—

	Rs.		Rs.
Creditors	40,000	Premises	40,000
Loan—A	10,000	Plant and Machinery	30,000
Capitals :		Stock	30,000
A	50,000	Debtors	60,000
B	15,000		
C	45,000		
	1,60,000		1,60,000

It was agreed to repay the amounts due to the partners as and when the assets realised, viz. :—

February	1, 1968	Rs. 30,000
April	1, 1968	Rs. 73 000
June	1, 1968	Rs. 47,000

Prepare a statement showing how the distribution should be made and write up the Cash Account and partners' Capital Accounts.

यह तय हुआ कि साझियों को देय रकम का भुगतान, जैसे-जैसे सम्पत्तियों से रकम वसूल हो, कर दिया जावे । वसूली इस प्रकार हुई :—

		रु०
फरवरी	1, 1968	30,000
अप्रैल	1, 1968	73,000
जून	1, 1968	47,000

यह दिखाते हुये कि वितरण किस प्रकार किया जावे, एक विवरण-पत्र बनाइये और रोकड़ खाता तथा साझियों के पूँजी खाते भी बनाइये।) [42]

Ans. : A gets Rs. 20,395 on April 1 and Rs. 24,605 on June 1 on account of return of capital; B gets Rs. 12,000 on June 1 and C gets Rs. 32,605 on April 1 and Rs. 10,395 on June 1.

50. A, B and C share profits and losses in the ratio of 4 : 2 : 1. They decide to dissolve the partnership, their Balance Sheet on the date of dissolution being as follows. (अ, ब और स 4 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ-हानि का विभाजन करते हैं। वे साझेदारी का विघटन करने का निश्चय करते हैं। विघटन की तारीख को उनका चिट्ठा इस प्रकार था) :–

	Rs.		Rs.
Creditors	5,700	Land and Buildings	95,720
Bank Overdraft	16,250	Plant and Machinery	16,300
General Reserve	9,450	Furniture	2,460
Capitals :		Investments	15,000
A	40,000	Stock	64,150
B	80,000	Debtors	22,700
C	65,000	Cash	70
	2,16,400		2,16,400

The partners also decide that after the creditors have all been paid and providing a sum of Rs. 1,200 to meet probable expenses of realisation, all cash realised should be divided immediately among them. The assets are realised thus:—

	Rs.		Rs.
First Realisation :		Third Realisation :	
Plant and Machinery	14,000	Land and Buildings	80,000
Investments (Part)	1,360	Debtors (Part)	2,399
Second Realisation		Investments (balance)	14,000
Stock (Part)	7,200	Fourth and Final Realisation :	
Debtors (Part)	8,300	Stock	45,100
Furniture	2,900	Debtors	11,200

Expenses of realisation amount to Rs. 1,132. Prepare a statement showing in detail how cash should be distributed to the partners.

साझेदार यह भी तय करते हैं कि लेनदारों का भुगतान करने के पश्चात् और वसूली के सम्भाव्य खर्चों के लिए 1,200 रु० की व्यवस्था करने के पश्चात्, वसूल की गई समस्त नकद राशि साझियों में फौरन बांट दी जावेगी। सम्पत्तियों से वसूली इस प्रकार होती है:—

	रु०		रु०
प्रथम वसूली :		तृतीय वसूली :	
प्लाण्ट और मशीन	14,000	भूमि और भवन	80,000
विनियोग (आंशिक)	1,360	देनदार (आंशिक)	2,399
		विनियोग (शेष)	14,000
द्वितीय वसूली :		चतुर्थ और अन्तिम वसूली :	
स्टॉक (आंशिक)	7,200	स्टॉक	45,100
देनदार (आंशिक)	8,300	देनदार	11,200
फर्नीचर	2,900		

वसूली के खर्चे 1,132 रु० होते हैं। एक विवरण पत्र बनाइये जिसमें दिखाइये कि नकद का वितरण साझियों में किस प्रकार किया जाना चाहिए। [43]

Ans. Out of the second realisation Rs. 10,680, is paid to C; Out of the third realisation Rs. 55,240 is paid to B and Rs. 41,159 is paid to C; and out of the final realisation Rs. 27,684 is paid to A. Rs. 18,602 is paid to B and Rs. 10,082 is paid to C.

(Hint :—It has been assumed that the partners' capitals are fixed and Garner v. Murray rule is applicable.)

51. Mr. A and Mr. B carry on separate businesses of similar nature, and agree to terms of partnership on the basis of amalgamation. The following is a statement of their respective positions. (मि० अ और मि० ब एक ही स्वभाव का अलग-अलग व्यापार करते हैं और एकीकरण के आधार पर साझेदारी की शर्तों के लिए समझौता करते हैं। निम्नलिखित विवरण-पत्र उनकी स्थिति को प्रकट करते हैं) :—

A

	Rs.		Rs.
Creditors	1,180	Stock	4,200
Mrs. A's Loan at 4%	2,000	Debtors	8,050
A's Capital	9,820	Furniture	150
		Cash at Bank	580
		Cash in hand	20
	13,000		13,000

B

	Rs.		Rs.
Creditors	800	Stock	1,800
Union Bank	1,500	Debtors	6,400
Mortgage on Leasehold	1,000	Furniture	200
B's Capital	7,280	Life Policy Premium paid	180
		Leasehold of Premises	2,000
	10,580		10,580

It is agreed that each partner shall bring into the partnership Rs. 10,000 in cash or its equivalent, business being carried on in B's premises, of which it is agreed that the lease shall be treated in account as worth Rs. 3,500. Furniture of Mr. A is sold out and produce Rs. 70, the loss being borne by the partnership, and it is agreed that all private liabilities and assets are to disappear from the partnership books. After necessary adjustments, prepare the partnership Balance Sheet. Cash at Bank and Cash in hand appearing in A's balance-sheet have not been taken over by the partnership.

(यह समझौता होता है कि प्रत्येक साझी व्यापार में 10,000 रु० रोकड़ी याइ सके बराबर की सम्पत्ति लावेगा; व्यापार ब के भवन में चलाया जायेगा जिसके लिए यह तय होता है कि पट्टे को खाते में 3,500 रु० के तुल्य समझा जावेगा। अ का फर्नीचर बेच दिया जाता है और उससे 70 रु० मिलते हैं, हानि साझेदारी द्वारा वहन की जाती है और यह समझौता होता है कि समस्त निजी दायित्वों एवं सम्पत्तियों को साझेदारी की पुस्तकों में नहीं दिखाना है। आवश्यक समायोजनों के पश्चात् साझेदारी का चिट्ठा बनाइये। अ के चिट्ठे में प्रकट होने वाली बैंक में रोकड़ और हाथ में रोकड़ साझेदारी फर्म द्वारा नहीं लिये गये हैं। [44]

Ans. Balance Sheet Total Rs. 24,220.

(Hint:—Mrs. A's Loan and Life insurance premium paid by B have been treated as private liability and private asset.)

52. A and B are partners, sharing profits equally, in a business similar to that of C. In order to avoid competition, they decided to amalgamate the two businesses by taking over the assets and liabilities of C and admitting him into partnership with them as from 31st December, 1967. The Balance Sheet at that date of each business was as follows. (अ और ब बराबर-बराबर लाभ बांटते हुए एक व्यापार साझी हैं जो कि स के व्यापार के समान ही है। प्रतिस्पर्धा को दूर करने के लिए वे स की सम्पत्तियों और दायित्वों को लेते हुए, तथा 31 दिसम्बर, 1967 को स को साझेदारी में शामिल करते हुए, दोनों व्यापारों के एकीकरण करने का निश्चय करते हैं। प्रत्येक व्यापार का चिट्ठा उस दिन निम्न प्रकार था):—

A and B

	Rs.		Rs.
A's Capital	6,000	Cash at Bank	2,500
B's Capital	4,500	Debtors	8,600
Creditors	3,700	Stock	3,100
	14,200		14,200

C

	Rs.		Rs.
Creditors	7,500	Cash at Bank	1,350
Bills Payable	2,650	Debtors	5,500
		Stock	2,000
		C's Capital overdrawn	1,300
	10,150		10,150

The new partnership was to be carried on as A, B and C, and it was agreed between all the parties that the Book Debts and Stock of the business of A and B were to be reduced by 10% to cover bad debts and old stock for the purposes of the amalgamation and that C was to be credited with such a sum for goodwill as would make his capital in the new business equal to one-third of the joint capital of A and B therein. Pass the necessary journal entries in the books of the new firm assuming that the books of A and B are continued. Also prepare the Balance Sheet of the new firm.

(नई साझेदारी अ, ब और स के नाम से चलाई जानी थी, और सभी पक्षों में यह समझौता हो गया था कि अ और ब के व्यापार के देनदार और स्टॉक, डूबत ऋण और पुराने स्टॉक को पूरा करने के लिए (एकीकरण के कार्य हेतु), 10% से कम कर दिये जायें और स को ख्याति के कारण इतनी रकम से क्रेडिट किया जाये कि नये व्यापार में उसकी पूँजी अ और ब की सम्मिलित पूँजी का एक तिहाई हो जाय। यह मानते हुए कि अ और ब की पुस्तकें चालू रखी जाती हैं, नई फर्म की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिये। नई फर्म का चिट्ठा भी बनाइये। [45]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 26,290.

53. *A and B traded in partnership sharing profits and losses 2/3rd and 1/3rd respectively*, and on 31st December, 1967, their Balance Sheet was as follows. (अ और ब क्रमशः 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजित करते हुए साझेदारी में व्यापार करते थे। 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था) :—

	Rs.			Rs.
Sundry Creditors	20,000	Cash in hand		150
Bills Payable	5,000	Bills Receivable		2,500
Bank Overdraft	11,150	Sundry Debtors	Rs. 30,000	
Capitals :		Less Provision for		
A	20,000	Bad Debts Rs.	1,500	28,500
B	10,000	Stock		25,000
		Plant and Machinery		10,000
	66,150			66,150

On that date they agreed to sell the business to a limited company, the company to take over at the following valuations :—

Sundry Debtors Rs. 27,000; Stock Rs. 22,000; Plant and Machinery Rs. 12,100; the other assets and liabilities at the book values, and the company agreed to pay Rs. 17,400 for Goodwill. The firm received Rs. 30,000 of the purchase price in Rs. 10 fully paid equity shares in the limited company and Rs. 15,000 in cash and these assets were distributed among the partners in proportion to their capitals. Show in the books of the partnership :—

(a) Realisation Account; (b) Company's Purchase Account; (c) Partners' Capital Accounts; (d) Bank Account, and (e) The Shares Account.

उस तारीख को उन्होंने व्यापार को एक सीमित कम्पनी को बेचने का निर्णय किया, कम्पनी को निम्नलिखित मूल्यांकन के आधार पर व्यापार को लेना है :—

विविध देनदार 27,000 रु०, स्टॉक 22,000 रु०, प्लान्ट और मशीन 12,100 रु०, अन्य सम्पत्तियां और दायित्व पुस्तक मूल्य पर, और कम्पनी 17,400 रु० ख्याति के देने को राजी हो गई। फर्म ने क्रय मूल्य का 30,000 रु० कम्पनी के 10 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त ईक्विटी अंशों में प्राप्त किया और 15,000 रु० नकद प्राप्त किया। इन सम्पत्तियों को साझेदारों में उनकी पूंजी के अनुपात में बांट दिया गया। साझेदारी की पुस्तकों में दिखाइये :

(अ) वसूली खाता, (ब) कम्पनी का क्रय खाता, (स) साझियों के पूंजी खाते, (द) बैंक खाता, और (ई) अंश खाता। [46]

Ans. : Profit on Realisation Rs. 15,000.

(Hint— As all the assets and liabilities have been taken over by the purchasing co., the balance of cash in hand and the bank overdraft would be transferred to Realisation Account.

54. A and B were partners and shared profits in the ratio of 2 : 1. They sold the Goodwill of their business, the Plant and Stock to a limited company for Rs. 10,000 cash and Rs. 10,000 in Re. 1/– shares in the company, the market price of such shares being Re. 1.25 per share. The partners undertook to collect their own book debis and to discharge their own liabilities. The following Balance Sheet represented the state of affairs at the date of the sale. (अ और ब साझी थे और 2 : 1 के अनुपात में लाभ विभाजित करते थे। उन्होंने अपने फर्म की ख्याति, प्लान्ट और स्टॉक को एक सीमित कम्पनी को 10,000 रु० नकद और 10,000 रु० के कम्पनी के 1 रु० वाले अंशों में बेच दिया, इन अंशों का बाजार मूल्य 1.25 रु० प्रति अंश था। साझियों ने अपने देनदारों से वसूल करना व दायित्वों का भुगतान करना स्वीकार किया। निम्नलिखित चिट्ठा बिक्री की तारीख को स्थिति इस प्रकार प्रकट करता था) :

	Rs.		Rs.
Creditors	6,000	Debtors	12,000
A's Loan	2,000	Cash	25
A's Capital	13,525	Bank	500
B's Capital	10,000	Plant	5,000
		Stock	14,000
	31,525		31,525

A debtor for Rs. 500 became bankrupt and from his estate 25 paise in a rupee, were realised the creditors were paid in full. A and B agreed that A should receive the whole of the company's shares as part of his share in the settlement. Prepare necessary accounts to close the books of the firm.

500 रु० का एक ऋणी दिवालिया हो गया और उसकी जायदाद से रुपये में 25 पैसा मिला। लेनदारों का पूर्ण भुगतान कर दिया गया। अ और ब में समझौता हुआ कि कम्पनी के समस्त अंशों को अ अपने भुगतान के एक भाग के रूप में प्राप्त करेगा। फर्म की पुस्तकों को बन्द करने के लिए आवश्यक खाते खोलिए। [47]

Answer : Profit on Realisation Rs. 3,125.

Revisional Problems

55. A, B and C started business in partnership on 1st January, 1967 and their Profit and Loss Account, prepared on 31st December, 1967, showed a profit of Rs, 25,200 for the year. This was credited to the capital accounts of the partners in the agreed proportions of 3 : 2 : 1. The capital accounts then showed the following balances:—

A—Rs. 37,600, B—Rs. 27,900, C— Rs. 15,200.

Later it was realised that the deed of partnership required interest on capital and drawings to be calculated at 5% per annum, which was not done.

The drawings for the year were : A—Rs. 10,000; B—Rs. 8,000 and C—Rs. 4,000 The interest on drawings, which should have been charged, amounted to Rs. 240, Rs. 190 and Rs. 120 respectively.

Give a journal entry to rectify the above omission. Show in a tabular form, the calculations you make to arrive at the amounts of the journal entry.

अ, ब और स ने 1 जनवरी, 1967 को साझेदारी में व्यापार प्रारम्भ किया और 31 दिसम्बर 1967 को तैयार किये गए उनके लाभ-हानि खाते ने वर्ष भर के लिए 25,200 रु० का लाभ प्रदर्शित किया। यह लाभ निर्धारित अनुपात 3 : 2 : 1 में साझियों के पूँजी खाते में जमा कर दिया गया। तब उनके पूँजी खातों के निम्न शेष थे:—

अ—37,600 रु०, ब—27,900 रु०, स—15,200 रु०।

बाद में यह पता चला कि साझेदारी संलेख में यह शर्त थी कि पूंजी व आहरण पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज लगाया जाना चाहिए जो कि नहीं किया गया था।

वर्ष भर के आहरण थे : अ—10,000 रु०; ब—8,000 रु०; स—4,000 रु०। आहरण पर ब्याज जो चार्ज होना चाहिए था, क्रमशः 240 रु०, 190 रु० तथा 120 रु० होता है।

उपरोक्त भूल को सुधारने के लिए जर्नल प्रविष्टि दीजिए। उक्त जर्नल प्रविष्टि की रकमों पर आप किस प्रकार पहुंचे हैं, इसकी गणना दिखाते हुए तालिका रूप में एक विवरण तैयार कीजिए। [48]

Answer : A's Capital a/c will be debited by Rs. 152.50, while B and C's Capital a/cs will be credited by Rs. 76.67 and Rs. 75.83 respectively.

56. A, B and C are partners with capitals, at 1st April, 1966, of Rs. 5,000, Rs. 4,000 and Rs. 1,000 respectively. The partnership agreement provides—

(a) C shall be credited with a salary of Rs. 500.

(b) After providing for C's salary, 5% interest on capital and extra remuneration as provided in this paragraph (b), C shall be entitled to 10 percent of all the profits in excess of Rs. 2,000 per annum.

(c) B is to have one-third of the profits, after charging all amounts under (a), (b) and (c)

(d) The balance to be divided between A and C in the ratios of 4 : 1.

The profits for the year to 31st March, 1967 (before making any provision for the above) were Rs. 4,320.

you are required to prepare Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 31st March, 1967.

अ, व ग्रौर स साझी हैं जिनकी 1 अप्रैल, 1966 को पूँजी के शेष क्रमशः 5,000 रु०, 4,000 रु०, ग्रौर 1,000 रु० थे। साझेदारी संलेख में यह व्यवस्था है—

(क) स को 500 रु० के वेतन से क्रेडिट किया जायेगा।

(ख) स को वेतन, पूँजी पर 5 प्रतिशत व्याज तथा इस पैराग्राफ (ख) में वर्णित अतिरिक्त पारिश्रमिक का प्रावधान करने के वाद स 2,000 रु० से अधिक समस्त लाभ पर 10 प्रतिशत का अधिकारी होगा।

(ग) (क), (ख) ग्रौर (ग) में वर्णित समस्त राशियों को चार्ज करने के वाद बचे हुए लाभ का $\frac{1}{3}$ भाग व को मिलेगा।

(घ) शेष लाभ अ ग्रौर स में 4 : 1 के अनुपात में वांटा जायेगा।

31 मार्च, 1967 को समाप्त हुए वर्ष के लिये लाभ (उपरोक्त शर्तों का प्रावधान करने से पूर्व) 4,320 रु० था।

31 मार्च, 1967 को समाप्त हुए वर्ष के लिए लाभ-हानि समायोजन खाता वनाइये। [49]

Answer : Share of Profit A Rs. 1,920, B Rs. 800, C Rs. 480 in addition to his salary and extra remuneration.

57. A, B and C are partners sharing profits and losses in the ratio of 3 : 2 : 1 and their balance–sheet as on 31st December, 1966 stood as under (अ व ग्रौर स 3 : 2 : 1 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करने वाले साझेदार हैं ग्रौर

31 दिसम्बर, 1966 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था):—

		Rs.			Rs.
Creditors		17,300	Cash at Bank		2,700
Bills Payable		3,400	Stock		8,400
Reserve Fund		6,300	Debtors	Rs. 7,000	
Capitals			Less Provision		
	A	8,000	for bad debts	Rs. 350	6,650
	B	5,000	Bills Receivable		2,400
	C	3,000	Motor Car		6,250
A's loan		5,000	Land Buildings		17,300
			patents		4,300
		48,000			48,000

It was decided to admit D as a partner for one-sixth share in the future profits on condition that he brings in Rs. 6,000 by way of his capital and Rs. 10,000 by way of loan at 6% interest for a period of five years. Before his admission, the following adjustment are to be made:—

(a) Goodwill to be credited to the old partners on the basis of their share of profits by raising a goodwill account equal to the average of the profits of the last three years, which were Rs. 10,200; Rs. 12,400 and Rs. 14,300 respectively.

(b) Value of motor car and stock to be reduced by 20% and that of land and buildings to be raised to Rs. 20,300.

(c) The amount of bad debts provision to be made equal to $7\frac{1}{2}$% of the amount of debtors.

(d) Patents to be written off by Rs. 2,295.

(e) The amount of reserve fund to be credited to old partners according to their share of profits.

After all the above adjustments were made, all the three partners were required to maintain their capitals in proportion to their revised share of profits taking D's capital of Rs. 6,000 as the basis by bringing in the additional amount or by withdrawing the amount in excess.

You are required to open the Profit and Loss Adjustment Account and the Partners' Capital Accounts and to prepare the Balance Sheet of the firm after admission of D. State the new proportion of profits of the partners. Fractions to be ignored.

भविष्य के लाभों में $\frac{1}{6}$ हिस्सा देते हुए द को इस शर्त पर साझेदारी में प्रवेश दिया जाता है कि वह अपनी पूँजी के 6,000 रु० और पांच वर्ष की अवधि के लिए 6% व्याज पर 10,000 रु० ऋण के रूप में लावे। उसके प्रवेश के पूर्व निम्नलिखित समायोजन करने हैं:—

(अ) पुराने साझियों को उनके लाभ विभाजन के अनुपात में ख्याति खाता खोलकर ख्याति की रकम जमा की जाये। ख्याति का मूल्यांकन पिछले तीन वर्षों के लाभ क्रमशः 10,200 रु०, 12,400 रु०, व 14,300 रु० की औसत के बराबर लगाया गया।

(ब) मोटर कार और रहतिये के मूल्य को 20% से घटाया जाय तथा भूमि व भवन का मूल्य 20,300 रु० तक बढ़ाया जाय।

(स) देनदारों पर बट्टे खाते के लिए प्रावधान $7\frac{1}{2}$% के बराबर रखा जाय।

(द) एकस्व को 2,295 रु० से अपलिखित किया जाय।

(इ) संचय कोष का शेष पुराने साझियों को उनके लाभ विभाजन के अनुपात में क्रेडिट कर दिया जाय।

उपरोक्त समायोजन करने के बाद, तीनों साझी अपने नये लाभ विभाजन के अनुपात में पूँजी के शेष बनाये रखेंगे और इस काम के लिए द की 6,000 रु० की पूँजी को आधार मानते हुए अतिरिक्त रकम लायेंगे या निकाल कर ले जायेंगे।

आप लाभ-हानि समायोजन खाता और साझियों के पूँजी खाते बनाइये तथा द के प्रवेश के बाद फर्म का चिट्ठा भी तैयार कीजिए। साझियों के लाभ विभाजन के नये अनुपात भी बताइये। रुपये के अंशों को ध्यान में नहीं रखना है। [50]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 71,700.

58. X and Y were partners in a manufacturing concern sharing profits and losses equally and on 31st March, 1968 the firm's balance-sheet disclosed the following position. (एक्स और वाई एक निर्माण व्यवसाय में लाभ-हानि को बराबर-बराबर बांटने वाले साझेदार हैं और 31 मार्च, 1968 को फर्म का चिट्ठा निम्नलिखित स्थिति बताता था) :—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	15,000	Cash in hand	240
Bills Payable	4,000	Cash at Bank	4,900
Capital Accounts :		Bills Receivable	1,800
X	20,000	Sundry Debtors	21,000
Y	16,000	Stock	4,800
		Plant & Machinery	7,000
		Fixtures & Fittings	1,700
		Freehold Premises	13,560
	55,000		55,000

On 1st April, 1968 Z was admitted into partnership on these terms :—

(i) That he should bring into the business sundry debtors amounting to Rs. 2,400 (less a provision of 10 per cent for bad debts), sundry creditors amounting to Rs. 500 and also goodwill of his business at a valuation of Rs. 1,500.

(ii) That his capital in the new business to be Rs. 5,000, the balance of which he pays in cash and in consideration thereof receives one-fifth share of the profits of the firm.

It was mutually agreed that the following adjustments should be made as regards the business of X and Y: Stock to be reduced by Rs. 800, Plant & Machinery to be increased by Rs. 300 and Fixtures and Fittings to be completely written off.

It was further agreed that, after the above adjustments have been effected Y should introduce sufficient cash to make his capital equal to that of X.

Show the opening balance, sheet of the new firm as at 1st April, 1968 and state in what proportion the profits and losses will be shared.

(1 अप्रैल, 1968 को जेड को निम्नलिखित शर्तों पर प्रवेश दिया जाता है:—

(i) कि वह व्यापार में 2,400 रु० के देनदार (बट्टे खाते के लिए 10% प्रावधान घटाना है), 500 रु० के लेनदार तथा अपने स्वयं के व्यवसाय की 1,500 रु० की ख्याति लाये।

(ii) कि उसकी नये व्यापार में पूँजी 5,000 रु० होगी और शेष रकम वह रोकड़ में चुकायेगा और उसके प्रतिफल के बदले में उसे फर्म के लाभों में $\frac{1}{5}$ हिस्सा बंटाने का अधिकार मिलेगा।

परस्पर यह भी तय हुआ कि एक्स और वाई के व्यापार के सम्बन्ध में निम्नलिखित समायोजन किये जायें—स्टॉक को 800 रु० से घटाया जाय; प्लांट व मशीनरी को 300 रु० से बढ़ाया जाय और फिक्सचर्स व फिटिंग्स को पूर्ण रूप से अपलिखित कर दिया जाय।

आगे यह भी समझौता हुआ कि उपरोक्त समायोजनों को प्रभावी बनाने के बाद वाई अपनी पूँजी एक्स की पूँजी के बराबर करने के लिए पर्याप्त रोकड़ लायेगा।

1 अप्रैल, 1968 को नई फर्म का प्रारम्भिक चिट्ठा बनाइये और बताइये कि लाभ-हानि किस अनुपात में बाँटे जायेंगे। [51]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 62,300.

Profit Sharing Ratio 2: 2 : 1

59. A, B and C were in partnership sharing profits and losses in the ratio of 2 : 1 : 1. Their balance-sheet on December 31, 1964 was as follows (अ, ब और स 2 : 1 : 1 के अनुपात में लाभ-हानि विभाजित करने वाले साझेदार हैं। 31 दिसम्बर, 1964 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था) :—

Liabilities		Rs.	Assets	Rs.
Creditors		3,400	Cash	1,400
General Reserve		5,000	Stock	5,200
Profit & Loss a/c		1,800	Debtors	8,000
Capital :	Rs.		Development Expenses	2,500
A	13,000		Investments	2,100
B	7,000		Advertising Outlays	3,600
C	6,000	26,000	Goodwill	2,800
Drawings :			Plant	12,000
A	1,300		Drawings—C	600
B	700	2,000		
		38,200		38,200

C decided to retire. His claim was to be determined on the basis of the following readjustments :—

(a) Stock was to be depreciated by 10 per cent and a provision made for bad debts at 3 per cent on debtors.

(b) Half the value of advertising outlays was to be written off.

(c) Goodwill was to be written off.

(d) C was to return to the firm excess salary of Rs. 400 drawn by him.

(e) C was to let the final amount due to him remain in the business as a loan.

In order to expand the business A and B decided, after C left, to admit D as a partner with a capital of Rs. 10,000, of which half was brought in cash and the balance in stock. D insisted on writing off the development expenses completely. A and B agreed to goodwill being re-entered in the books at Rs. 2,800.

When D brought in cash, half the amount of C's loan was paid off. The Drawings Accounts of A and B were to be closed by transfer to their Capital accounts.

Show the Capital and Drawings Accounts of the partners, Profit and Loss Adjustment Account and Balance Sheet of the firm of A, B and D after giving effect to these transactions.

(स ने रिटायर होने का निश्चय किया। उसके दावे की रकम निम्नलिखित समायोजनों के आधार पर तय होनी थी:—

(अ) स्टॉक को 10 प्रतिशत से घटाया जाये और देनदारों पर वट्टे खाते के लिए 3 प्रतिशत प्रावधान रखा जाय।

(ब) विज्ञापन व्ययों का आधा मूल्य अपलिखित किया जाय।

(स) ख्याति को पूर्ण रूप से अपलिखित किया जाय।

(द) स द्वारा लिया गया 400 रु० अग्रिम वेतन फर्म को वापस लौटाया जाय।

(इ) न को फर्म द्वारा देय रकम व्यापार में ऋण के रूप में छोड़ी जाय।

न के जाने के बाद अ और ब ने व्यापार का विस्तार करने के लिए द को 10,000 रु० की पूँजी से साझेदार बनाने का निश्चय किया जिसमें से आधी रकम रोकड़ में तथा आधी रकम स्टॉक के रूप में लाई गई। द ने विफल व्ययों को पूर्ण रूप से अपलिखित करने पर जोर दिया। अ और ब अपनी पुस्तकों में ख्याति को 2,800 रु० पर पुनः प्रविष्ट करने को राजी हो गये।

जब द रोकड़ ले आया तो स के ऋण का आधा भाग चुका दिया गया। अ और ब के आहरण खाते उनके पूँजी खातों में हस्तान्तरित करके बन्द करते थे।

उपरोक्त व्यवहारों को प्रभावी बनाने के पश्चात् साझियों के पूँजी और आहरण खाते, लाभ-हानि समायोजन खाता तथा अ, ब और द की फर्म का चिट्ठा बनाइये। [52]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 40,010.

60. The following is the balance-sheet at 31st December, 1962 of Chinu, Dinu and Manu, who are in partnership for a fixed term and share profit and losses in the proportion of one-half, one-third and one-sixth respectively (31 दिसम्बर, 1962 को चीनू, दीनू, और मनू का निम्नलिखित चिट्ठा है। ये एक निश्चित अवधि के लिए साझेदारी में प्रवेश करते हैं तथा लाभ-हानि को क्रमशः आधा, एक-तिहाई व एक-छटे अनुपात में विभाजित करते हैं) :—

	Rs.		Rs.
Capital A/cs :—		Goodwill	8,000
Chinu	14,000	Plant, Machinery etc.	14,000
Dinu	11,000	Stock	6,125
Manu	5,000	Debtors	9,815
Creditors	8,690	Cash at Bank	750
	38,690		38,690

Dinu retired on 1st January, 1963. Chinu and Manu continued the business, retaining all the assets at the values shown in the balance-sheet except that the Goodwill was agreed to be valued at Rs. 6,000 only and Plant, Machinery etc. at Rs. 11,500. Under the partnership agreement, any partner retiring otherwise than by death binds himself to pay to the remaining partners a compensation equal to half his share of the goodwill (the remaining partners to divide this in their profit sharing proportion) and to leave the balance of his Capital Account as a loan to the firm to be paid off at the firm's option at any time upto three years.

Set out the necessary Ledger Accounts showing the above transactions and a balance-sheet showing the position immediately after Dinu's retirement from

business, assuming that Manu has brought in an additional capital of Rs. 10,000 of which Rs. 5,000 has been paid over to Dinu.

(1 जनवरी, 1963 को दीनू ने अवकाश ग्रहण किया। चीनू और मनू ने सम्पत्तियों को चिट्ठे में दिखाये गये मूल्यों पर रखते हुए व्यापार चालू रखा किन्तु ख्याति का मूल्य 6,000 रु० तथा प्लांट, मशीनरी इत्यादि का मूल्य 11,500 रु० तय किया गया। यदि कोई साझी मृत्यु के अलावा अन्य कारणों से अवकाश प्राप्त करेगा तो साझेदारी संलेख के अनुसार वह बाकी बचे हुए साझियों को ख्याति में अपने हिस्से के आधे के बराबर रकम क्षतिपूर्ति के रूप में देगा (इसे बचे हुए साझी अपने लाभ-विभाजन के अनुपात में बाँटेंगे) तथा अपनी पूँजी खाते के शेष को फर्म में ऋण के रूप में छोड़ेगा जिसे फर्म की इच्छा पर तीन वर्ष में कभी भी भुगतान किया जावेगा।

उपरोक्त व्यवहारों को दिखाते हुए आवश्यक खाते खोलिए और व्यापार से दीनू के हटने के तुरन्त बाद स्थिति दिखाते हुए चिट्ठा बनाइये। यह मान लीजिए कि मनू 10,000 रु० की अतिरिक्त पूँजी लाया है जिसमें से 5,000 रु० का दीनू को भुगतान कर दिया गया है। [53]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 39,190.

61. A, B and C are partners. There balance-sheet on 31st December, 1966 disclosed capitals of Rs. 15,000, Rs. 25,000 and Rs. 20,000 respectively. The partnership agreement provides that after providing interest at 5 per cent per annum on partners' capitals and salaries of Rs. 3,000, Rs. 3,000 and Rs. 2,500 respectively, the balance of the profits is to be distributed equally. In the event of death of any partner the amount payable to his estate is to be the aggregate of

(a) the amount at his credit at the end of the previous calendar year;

(b) salary, interest on capital and share of profits to the date of death;

(c) share of goodwill based on three years' purchase of the average of the preceding five years' profits (after partners' interest and salaries but before charging life insurance premium); and

(d) share of life insurance.

From which aggregate sum is to be deducted his drawings of the current year to date of death.

One-half of the amount so calculated is to be paid to his estate within two months and the balance within 12 months from the date of death with interest in each case, at 5% per annum from date of death.

Life insurance for Rs. 40,000 was placed in 1960 on the life of each partner, the premiums of which amounting to Rs. 3,600 per annum were charged against Profit and Loss a/c. No amount appears in the books for the cash surrender value of life insurance, but however to settle the accounts of the deceased partner,

the surrender value on the policies of surviving partners may be taken as one-tenth of assured amounts. B died on 31st July, 1967.

Profits (after partners' interest and salaries) for the five years preceding 1967 were Rs.6,000, Rs.9,000, Rs.11,000, Rs. 9,500 and Rs. 12,500 respectively.

The books of the partnership were closed on 31st July, 1967 and the net profit for seven months ended on that date before charging partners' interest and salaries was found to be Rs. 13,650. B's drawings for this period were Rs. 3,000.

Prepare a statement of the amount payable to the executor of B's estate on 30th September, 1967. How should the amount due to the executors of B's estate be treated in the books of the partnership pending its payment ?

अ, ब और स साझेदार हैं। 31 दिसम्बर, 1966 को चिट्ठे में उनकी पूँजी क्रमश: 15,000 रु०, 25,000 रु०, तथा 20,000 रु० दिखाई गई थी। साझेदारी संलेख में व्यवस्था थी कि साझियों को क्रमशः 3,000 रु०, 3,000 रु० व 2,500 रु० वेतन तथा पूँजी पर 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज देने के बाद लाभ को बराबर-बराबर बांटा जायेगा। किसी साझेदार की मृत्यु की स्थिति में उसके उत्तराधिकारियों को जो रकम दी जायेगी, वह निम्नलिखित का योग होगी :—

(अ) पूर्व कलेंडर वर्ष के अंत तक उसकी जमा रकम;

(ब) मृत्यु की तिथि तक वेतन, पूँजी पर ब्याज और लाभ में हिस्सा;

(स) ख्याति में हिस्सा जो पूर्व पांच वर्षों के औसत लाभों के तीन गुने के आधार पर मूल्यांकित की जायेगी (ये लाभ साझियों के वेतन व ब्याज घटाने के बाद किन्तु जीवन बीमा प्रीमियम घटाने से पूर्व होंगे); तथा

(द) जीवन बीमा में हिस्सा।

इस योग में से उसकी मृत्यु की तिथि तक के आहरणों को घटा दिया जायेगा।

इस प्रकार गणना की गई राशि में से आधी रकम उसके उत्तराधिकारियों को मृत्यु की तिथि से दो माह भीतर और शेष रकम 12 माह भीतर चुकाई जायेगी। प्रत्येक परिस्थिति में मृत्यु की तिथि से 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज मिलेगा।

प्रत्येक साझेदार के जीवन पर 1960 में 40,000 रु० का जीवन बीमा कराया गया था। जिसका 3,600 रु० वार्षिक प्रीमियम प्रति वर्ष लाभ-हानि खाते से चार्ज किया जाता था। जीवन बीमा के समर्पण मूल्य के लिए पुस्तकों में कोई राशि नहीं है किन्तु मृतक साझेदार के हिसाब तय करने के लिए, जीवित साझेदारों के जीवन बीमा के बीमित मूल्य का दसवां भाग समर्पण मूल्य माना जा सकता है। ब, की 31 जुलाई, 1967 को मृत्यु हो गई।

साझियों का वेतन व ब्याज घटाने के बाद 1967 से पूर्व पाँच वर्षों के लाभ क्रमश: इस प्रकार थे—6,000 रु०, 9,000 रु०, 11,000 रु०, 9,500 रु०, तथा 12,500 रु०।

साझेदारी की पुस्तकें 31 जुलाई, 1967 को बन्द की गईं और उस तिथि को अंत होने वाले सात महिनों का लाभ (साझियों के वेतन व ब्याज घटाने से पूर्व) 13,650 रु० पाया गया। इस अवधि में ब के आहरण 3,000 रु० थे।

30 सितम्बर, 1967 को व के उत्तराधिकारियों को देय रकम का एक विवरण तैया कीजिए। व के उत्तराधिकारियों को शेष देय रकम को साझेदारी की पुस्तकों में भुगतान होने तक किस प्रकार दिखाया जायेगा ?

[54

Answer : Total Amount payable on the date of death Rs. 55,993.

62. Ram, Krishna and Gopal carried on business in partnership, sharing profits and losses in the ratio of 5:3:2 respectively. Their balance-sheet on 31st December, 1967 stood as follows. (राम, कृष्ण और गोपाल क्रमशः 5:3:2 के अनुपात में लाभ विभाजन करते हुए साझेदारी में व्यापार करते थे। 31 दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था) :—

	Rs.			Rs.
Trade Creditors	1,17,000	Goodwill		1,00,000
Ram for rent of business premises	8,000	Furniture		12,000
Capital Accounts :		Stock		1,67,000
Ram	2,37,500	Debtors	Rs. 2,80,000	
Krishna	1,72,500	Less Provision		
Gopal	1,30,000	for bad debts Rs.	7,000	2,73,000
		Bank		1,12,000
		Cash		1,000
	6,65,000			6,65,000

Ram retired from business with effect from 1st January, 1968. Krishna and Gopal decided to carry on the business. The following adjustments were made:—

(i) Ram's Capital Account was credited with Rs. 30,000 as an adjustment of the value of goodwill.

(ii) Ram owned the business premises and these were sold to the firm for Rs. 1,16,000. This sum was credited to Ram's Capital Account. He cancelled half of the amount due to him for rent.

(iii) The provision for bad debts was increased to 5% before Ram's retirement.

(iv) Ram allowed the amount due to him to remain on loan at 5% per annum until 29th February, 1968 when he was paid off.

On 29th February, 1968 Krishana and Gopal introduced in the firm further capitals of Rs. 2,00,000 each. They agreed to write off goodwill, to share profits and losses equally and to make their respective capitals in the firm equal, without changing the total amount of Capital, Current Accounts were opened on 29th February, 1968, to deal with the necessary adjustments to capitals.

You are required to show : (a) by means of ledger accounts how these transactions would be recorded in the books of the firm, assuming that all the receipts and payments were made through the bank, and (b) the Balance Sheet of Krishna and Gopal as on 29th February, 1968, assuming that the assets and liabilities, uneffected by the above transactions remain unchanged.

1 जनवरी, 1968 से राम ने व्यापार से अवकाश ग्रहण कर लिया। कृष्णा और गोपाल ने व्यापार चालू रखने का निर्णय किया। निम्नलिखित समायोजन किये गये :—

(i) ख्याति के समायोजन के कारण राम का पूंजी खाता 30,000 रु० से क्रेडिट किया गया।

(ii) राम व्यापारिक भवन का स्वामी था और यह भवन फर्म को 1,16,000 रु० में बेच दिया गया। यह रकम राम के पूंजी खाते में जमा कर दी गई। उसने बकाया किराये की आधी रकम छोड़ दी।

(iii) राम के अवकाश ग्रहण करने से पूर्व बट्टे खाते के लिए प्रावधान 5 प्रतिशत तक बढ़ाया गया।

(iv) राम को देय रकम व्यापार में 5% वार्षिक पर ऋण के रूप में 29 फरवरी, 1968 तक छोड़ दी गई जिस दिन उसका भुगतान हो गया।

29 फरवरी, 1968 को कृष्णा और गोपाल में से प्रत्येक ने 2,00,000 रु० की अतिरिक्त पूंजी लगाई। उन्होंने ख्याति को अपलिखित करने का और लाभ-हानि को बराबर-बराबर बांटने का निर्णय लिया तथा यह भी तय किया कि फर्म की कुल पूँजी को परिवर्तन किये बिना अब उनकी फर्म में पूंजी बराबर-बराबर होगी। पूँजी में आवश्यक समायोजन करने के लिए 29 फरवरी, 1968 को चालू खाते खोले गये।

(अ) आपको खातों के जरिये यह दिखाना है कि उपरोक्त व्यवहार फर्म की पुस्तकों में किस प्रकार दर्ज किये जावेंगे। यह मान लीजिए कि समस्त प्राप्तियां एवं भुगतान बैंक के जरिये हुए हैं।

(ब) यह मानते हुए कि उपरोक्त व्यवहारों से प्रभावित न होने वाली समस्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, 29 फरवरी, 1968 को कृष्णा और गोपाल का चिट्ठा तैयार कीजिए। [55]

Answer:—Balance of Krishna's Current a/c Rs. 24,300 (Cr.) and Gopal's Current a/c Rs. 24,300 (Dr.) to equalise capital; B/S Total Rs. 7,14,300.

63. A, B and C are in partnership sharing profits and losses equally on 31st December. They decide to dissolve the partnership whose position on that date is given below. (अ,ब और स लाभ-हानि को बराबर बांटने वाले साझेदार हैं। 31 दिसम्बर

को उन्होंने साझेदारी का विघटन करने का निर्णय लिया जिस दिन कि उनकी स्थिति इस प्रकार थी):—

	Rs.		Rs.
A's Capital a/c	10,000	Plant & Machinery	21,000
B's Capital a/c	10,000	Book Debts	15,000
C's Capital a/c	15,000	Stock in Trade	18,000
A's Current a/c	5,000	Investments at Cost	9,000
Provision for Bad Debts	2,000		
Investment Reserve	1,000		
Reserve Fund	9,000		
P. & L. Account	6,000		
Sundry Creditors	5,000		
	63,000		63,000

A took over investments at Rs. 8,000 and B took over book debts at Rs. 14,000. Stock in trade was taken over by Messrs Mehta & Sons for Rs. 15,000, which amount they paid in cash. The Plant & Machinery realised Rs. 14,750. The expenses of realisation amounted to Rs. 750. The Creditors were paid off at 6% discount by C.

Make Journal entries and draw up partners' Capital Accounts.

(अ ने 8,000 रु० में विनियोग लिये तथा ब ने 14,000 रु० में देनदारों को ले लिया। स्टॉक को मे० मेहता एण्ड सन्स ने 15,000 रु० में खरीदा जिसका भुगतान नकद में कर दिया गया। प्लान्ट व मशीनरी से 14,750 रु० वसूल हुए। वसूली के खर्चे 750 रु० हुए। लेनदारों को स द्वारा 6 प्रतिशत छूट पर भुगतान कर दिया गया।

जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा साझियों के पूंजी खाते बनाइये। [56]

Answer : Realisation loss Rs. 8,700.

64. A, B and C are in partnership sharing $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{2}$ and $\frac{1}{4}$ respectively. On 31st March, 1963 they agree to dissolve the partnership and their capitals on that date stood at Rs. 2,000, Rs. 10,000 and Rs. 6,000 respectively. Cash balance at the bank is Rs. 60, Furniture is taken by C at its book value, i. e. Rs. 250. Other assets were sold for cash and realised Rs. 10,718. Sundry creditors amounted to Rs. 1,540 and the amount was paid in full.

A is insolvent and a first and final dividend of $37\frac{1}{2}$ paisa in the rupee is received from his private estate after paying of his private creditors.

Close the books of the firm, showing the relevant ledger accounts as they would appear (a) before the decision in Garner v. Murray case and (b) after

अ, ब और स क्रमशः $\frac{1}{4}$, $\frac{1}{2}$, व $\frac{1}{4}$ अनुपात में लाभ विभाजित करने वाले साझेदार हैं। 31 मार्च, 1963 को उन्होंने साझेदारी को विघटन करने का निश्चय किया जिस दिन उनकी पूंजी क्रमशः 2,000 रु०, 10,000 रु० और 6,000 रु० थी। बैंक में रोकड़ी शेष 60 रु० हैं। फर्नीचर पुस्तक मूल्य अर्थात् 250 रु० पर स द्वारा ले लिया गया। दूसरी सम्पत्तियों को बेचा गया और उनसे 10,718 रु० नकद प्राप्त हुए। विविध लेनदार 1,540 रु० के थे और यह रकम पूर्ण भुगतान करदी गई।

अ दिवालिया है और उसके निजी लेनदारों को भुगतान करने के बाद उसकी निजी सम्पत्ति से रुपये में $37\frac{1}{2}$ पैसे का प्रथम व अंतिम लाभांश प्राप्त हुआ।

सम्बन्धित खातों को दिखाते हुए आप फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए जैसे कि वे (अ) गार्नर बनाम मरे निर्णय लागू होने से पूर्व, तथा (ब) बाद में प्रकट होंगे। [57]

Answer:—Realisation Loss Rs. 8,512.

(Hint : First, find out the book value of other assets by preparing balance-sheet on the date of dissolution.)

65. P, Q and R were in partnership, sharing profits and losses equally. They decided to dissolve the partnership on December 31, 1967, whent he balance-sheet was as follows. (पी, क्यू और आर लाभ हानि को बराबर-बराबर बांटने वाले साझेदार हैं। उन्होंने 31 दिसम्बर, 1967 को साझेदारी को विघटन करने का निर्णय किया जबकि उनका चिट्ठा निम्न प्रकार था) :—

	Rs.		Rs.
Creditors	4,300	Cash	7,800
Profit & loss Account	3,900	Plant	28,900
Reserve	2,400	Debtors	5,400
Q's Loan	4,000	Investments	3,600
Capitals :		Goodwill	3.000
P	18,000	Land & Buildings	14.500
Q	15,500	Expenses Prepaid	1,200
R	16,300		
	64,400		64,400

Plant realised 20 percent less and debtors 5 percent less. Investments were valued at 5 percent more and taken by P in part fulfilment of his claim. Goodwill was sold at Rs. 1,000 to T who desired to adopt the firm's name and product design. Nothing was realised from expenses prepaid. Land and Buildings were valued at Rs. 18,000 and taken over by R. The creditors' claims were settled for Rs. 4,200. A year's interest at 8% was due to Q on his loan. The loan and interest were paid off. The expenses of dissolution amounted to Rs. 500.

Show the Realisation Account, Cash Account and Partners' Capital Accounts, giving effect to these transactions.

(प्लान्ट से 20 प्रतिशत और देनदारों से 5 प्रतिशत कम वसूली हुई। विनियोगों को 5 प्रतिशत अधिक पर मूल्यांकित करके पी द्वारा अपने दावे के आंशिक भुगतान के रूप में ले लिया गया। ख्याति को 1,000 रु० में टी को बेचा गया जिसने फर्म के नाम व उत्पादित वस्तु के नमूने को अपनाने की इच्छा प्रकट की। अग्रिम व्ययों से कुछ राशि वसूल नहीं हुई, भूमि व भवन को 18,000 रु० के मूल्य पर आर द्वारा ले लिया गया। लेनदारों के दावे 4,200 रु० में तय कर दिये गये। क्यू के ऋण पर 8 प्रतिशत की दर से एक वर्ष का ब्याज बकाया था। ऋण व ब्याज की राशि चुका दी गई। विघटन के खर्चे 500 रु० हुए।

इन व्यवहारों को प्रभाव देते हुए वसूली खाता, रोकड़ खाता तथा साझियों के पूंजी खाते बनाइये।) [58]

Answer: Realisation Loss Rs. 6,290.

66. A, B and C have been in partnership since 1st July, 1962. C received a fixed and guaranteed share of profits of Rs. 5,000 per annum and the balance of profits and losses was divisible between A and B in proportion of three-fifth and two-fifth respectively.

On 1st July, 1967 A and B mutually agreed with C that he should be entitled to a one-tenth share in the partnership and C paid the sum of Rs. 1,000 into the partnership funds on that date for his share of goodwill. The profit sharing agreement remained unchanged.

The partners decided to dissolve the partnership on 30th June, 1968, as B had disclosed (prior to that date) that he had been responsible for the following irregularities :—

(a) The value of stock in hand on 30th June, 1967 had been increased by B by Rs. 5,000 to cover goods (at their cost price) removed and sold by him personally for Rs. 4,000. All the partners agreed that the stock should have realised Rs. 6,000. The stock in hand on 30th June, 1968 was valued correctly at Rs. 35,750.

(b) Cheques received from debtors in June, 1968 amounting to Rs. 2,850 had been omitted from the books of account and appropriated by B to his own use.

The Balance Sheet on 30th June, 1968, as approved by the partners before making the adjustments necessary on the disclosure of B's irregularities, was as follows :—

	Rs.		Rs.
Trade Creditors	39,000	Fixed Assets	5,000
Bank Overdraft	2,000	Stock	35,750
Capital Accounts :		Trade Debtors	74,100
A	70,200	Cash in hand	1,550
B	4,500		
C	700		
	1,16,400		1,16,400

Answer : Realisation Profit Rs. 8,000; Cash brought in by A Rs. 42,180, Cash payment to B Rs. 730 and to C Rs. 2,000 on final settlement.

67. A, B and C were partners entitled respectively to $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$ and $\frac{1}{6}$ of the profits. A summary of their balance-sheet was as follows. (अ, ब और स साझेदार हैं जो क्रमशः लाभों के $\frac{1}{2}$, $\frac{1}{3}$ व $\frac{1}{6}$ भाग के अधिकारी हैं। उनके चिट्ठे का सारांश निम्न प्रकार है):—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	1,500	Goodwill	5,000
Capitals :		Assets	6,000
A	7,000	Cash	5,500
B	5,000		
C	3,000		
	16,500		16,500

The following steps were taken consecutively, but all as on the date of the balance-sheet referred to :—

(i) C retired and his interest in the firms valued at Rs. 4,000 was purchased by A and B from their private resources in the proportion in which they share profits.

(ii) D was admitted to the partnership and became entitled to $\frac{1}{6}$th share of profits, on the term that for goodwill a further sum of Rs. 3,000 should be credited to A and B proportionately, and that D should bring in capital equal to one quarter of the combined capital of A and B after adjustments.

(iii) The firm was then converted into a limited company, Hind Ltd., the company taking over the whole of the assets except cash but not the liabilities for a consideration of Rs. 17,000 payable in equity shares. After payment to the creditors, the cash balance and the shares were distributed among the vendor partners rateably to the nearest rupee.

Write up and close the Capital Accounts of A, B, C and D.

(निम्नलिखित कदम एक के वाद एक उठाये गये किन्तु सभी कदम उपरोक्त चिट्ठे की तिथि को ही लिये गये :—

(i) स ने अवकाश ग्रहण किया और फर्म में उसका हित 4,000 रु० पर मूल्यांकित करके अ और ब द्वारा अपने निजी स्रोतों से उस अनुपात में खरीदा गया जिस अनुपात में वे लाभों का विभाजन करते थे।

(ii) द को साझेदारी में प्रवेश किया गया और वह लाभों के $\frac{1}{6}$ भाग का इस शर्त पर अधिकारी हुआ कि ख्याति के लिए 3,000 रु० की रकम अ और ब को आनुपातिक रूप में क्रेडिट की

जावें तथा इन समायोजनों के बाद अ और ब की संयुक्त पूंजी के एक चौथाई के बराबर रकम द पूंजी के रूप में लावे।

(iii) फर्म को तब एक सीमित कम्पनी 'हिन्द लिमिटेड' में परिवर्तित किया गया। कम्पनी ने दायित्वों एवं रोकड़ को छोड़कर समस्त सम्पत्तियों को 17,000 रु० के प्रतिफल के बदले में खरीद लिया, इस प्रतिफल का भुगतान ईक्विटी अंशों में किया है। लेनदारों को चुकाने के बाद रोकड़ी रुपया तथा अंश साझियों में आनुपातिक रूप से (निकटतम रुपये तक) बांट दिया गया।

अ, ब, स और द के पूंजी खाते तैयार कीजिए व बंद कीजिए। [60]

Answer : Realisation Profit Rs. 3,000.
Payment in cash to A Rs. 4,033; B Rs. 2,800; D Rs. 1,667 on final settlement.

2

संयुक्त साहस खाते
(Joint Venture Accounts)

जब दो या दो से अधिक व्यक्ति किसी व्यापारिक कार्य विशेष को करने के लिए मिल जाते हैं तो उसे संयुक्त साहस (Joint Venture) कहते हैं। एक संयुक्त साहस अल्पकालीन साझा (Temporary Partnership) है। जिस कार्य विशेष के लिये संयुक्त साहस की स्थापना की जाती है, उसके समाप्त होने पर संयुक्त साहस भी अपने आप समाप्त हो जाता है। संयुक्त साहस में साहसी अपने-अपने हिस्से की पूँजी लाते हैं और एक निश्चित अनुपात में लाभ और हानि का विभाजन करते हैं।

संयुक्त साहस सम्बन्धी लेखा

अलग पुस्तकें खोलना—जब सभी संयुक्त साहसी एक स्थान पर रहते हों और कार्य विशेष काफी बड़ा हो तो संयुक्त साहस के लिए अलग पुस्तकें खोली जाती हैं। एक संयुक्त बैंक खाता (Joint Banking Account) खोल लिया जाता है और साहसियों द्वारा लाई गई पूँजी इसमें जमा कर दी जाती है। समस्त खर्चे बैंक के द्वारा भुगतान किये जाते हैं। पुस्तकों में प्रत्येक साहसी के लिए अलग खाता खोला जाता है। पुस्तकों में व्यापार एवं लाभ-हानि खाते (Trading and Profit & Loss Account) के स्थान पर संयुक्त साहस खाता (Joint Venture Account) खोला जाता है जिससे लाभ अथवा हानि ज्ञात होती है। जब संयुक्त कार्य समाप्त हो जाता है तो पुस्तकें बन्द कर दी जाती हैं और संयुक्त साहस समाप्त कर दिया जाता है।

जर्नल प्रविष्टियां—इस विधि के अनुसार निम्नलिखित प्रमुख प्रविष्टियां की जाती हैं:—

(1) साहसी द्वारा पूँजी लाने पर—

Joint Banking a/c Dr.
To Personal Accounts of Co-adventurers
(Amount of capital contributed.)

(2) संयुक्त साहस के लिए माल खरीदने पर और अन्य खर्चे करने पर—

Joint Venture a/c Dr.
To Joint Banking a/c
(Payment made for goods purchased.)
or
(Payment made for expenses incurred.)

यदि माल उधार खरीदा गया है तो संयुक्त बैंक खाते के स्थान पर विक्रेता का खाता क्रेडिट किया जावेगा।

(3) माल बिकने पर—

Joint Banking a/c Dr.
To Joint Venture a/c
(Goods sold.)

यदि माल उधार बेचा गया है तो संयुक्त बैंक खाते के स्थान पर क्रेता का खाता डेबिट किया जावेगा।

(4) संयुक्त साहस समाप्त होने पर संयुक्त साहस खाते का शेष लाभ अथवा हानि बतावेगा जिसे संयुक्त साहसियों के खातों में हस्तान्तरित कर दिया जावेगा। प्रविष्टि इस प्रकार होगी—

लाभ की दशा में— Joint Venture a/c Dr.
To Personal Accounts of Co-adventurers
(Profit on Joint venture transferred.)

हानि की दशा में— Personal Accounts of Co-adventurers Dr.
To Joint Venture a/c
(Loss on joint venture transferred.)

यदि समस्त माल बिकने से पूर्व ही लाभ अथवा हानि ज्ञात की जाती है तो बिना बिके माल का मूल्यांकन कर उसको अंतिम स्टॉक के रूप में संयुक्त साहस खाते के क्रेडिट में लिख दिया जावेगा और उसकी प्रविष्टि निम्न प्रकार से होगी :-

Closing Stock a/c Dr.
To Joint Venture a/c
(Adjustment in respect of closing stock.)

(5) संयुक्त साहसियों की पूँजी लौटाने पर—

Personal Accounts of Co-adventurers Dr.
To Bank a/c
(Co-adventurers' capital paid off.)

Illustration 35

Pradeep and Praveen of Jaipur agree to enter into a joint venture for the import of timber from Burma. On 1st Jan., 1968, they opened a joint bankign account by contributing Rs. 12,000 and Rs. 8,000 respectively. They agreed to share profits and losses in proportion to their capitals.

They remitted Rs. 17,680 to their agent in Burma to pay for the timber purchased. Freight, insurance and other charges amounting to Rs. 3,120 were paid in Jaipur.

On 30th June, 1968 sales amounted to Rs. 22,992 which enabled them to pay themselves the cash respectively brought by them as capital. They, then, decided to close the venture and Praveen agreed to take over the unsold timber for Rs. 1,008.

Journalise the above transactions and post them into ledger.

जयपुर के प्रदीप और प्रवीण वर्मा से लकड़ी का आयात करने के लिए संयुक्त रूप से कार्य करने को राजी होते हैं। 1 जनवरी, 1968 को वे क्रमशः 12,000 रु० और 8,000 रु० जमा करते हुये एक संयुक्त बैंक खाता खोलते हैं। वे लाभ-हानि का विभाजन पूँजी के अनुपात में करने के लिए राजी होते हैं।

उन्होंने अपने एजेन्ट को वर्मा में खरीदी हुई लकड़ी का भुगतान करने के लिए 17,680 रु० भेजे। भाड़ा, बीमा व अन्य खर्चों के 3,120 रु० जयपुर में चुकाये गये।

30 जून, 1968 को बिक्री की रकम 22,992 रु० हो गई थी जिसकी सहायता से नकद के रूप में उनके द्वारा लाई गई पूँजी को वापस चुका दिया गया। तब उन्होंने कार्य को बन्द कर देने का निश्चय किया और बिना बिकी हुई लकड़ी को प्रवीण 1,008 रु० में लेने को राजी हो गया।

उपरोक्त व्यवहारों की जर्नल में प्रविष्टियां कीजिए और उनकी खाता बही में खतौनी कीजिए।

Solution : **Journal**

				Rs.	Rs.
1968 Jan. 1	Bank a/c	Dr.		20,000	
	To Pradeep				12,000
	To Praveen				8,000
	(Cash contributed towards capital.)				
	Joint Venture a/c	Dr.		17,680	
	To Bank a/c				17,680
	(Payment made for timber purchased.)				
	Joint Venture a/c	Dr.		3,120	
	To Bank a/c				3,120
	(Freight etc. paid for timber imported.)				
June 30	Bank a/c	Dr.		22,992	
	To Joint Venture a/c				22,992
	(Timber sold.)				
	Pradeep	Dr.		12,000	
	Praveen	Dr.		8,000	
	To Bank a/c				20,000
	(Capital withdrawn.)				
	Praveen	Dr.		1,008	
	To Joint Venture a/c				1,008
	(Unsold timber taken by him.)				
	Joint Venture a/c	Dr.		3,200	
	To Pradeep				1,920
	To Praveen				1,280
	(Profit on joint venture transferred.)				
	Pradeep	Dr.		1,920	
	Praveen	Dr.		272	
	To Bank a/c				2,192
	(Balance paid off.)				

Ledger **Joint Venture Account**

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Bank a/c (Timber)	17,680	June 30	By Bank a/c (Sales)	22,992
	,, Bank a/c (Expenses)	3,120	,, ,,	,, Praveen (Timber)	1,008
June 30	,, Personal Accounts : Pradeep Rs. 1,920 Praveen Rs. 1,280	3,200			
		24,000			24,000

Bank Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Pradeep	12,000	Jan. 1	By Joint Venture a/c	17,680
,, ,,	,, Praveen	8,000	,, ,,	,, Joint Venture a/c	3,120
June 30	,, Joint Venture a/c	22,992	June 30	,, Pradeep	12,000
			,, ,,	,, Praveen	8,000
			,, ,,	,, Pradeep	1,920
			,, ,,	,, Praveen	272
		42,992			42,992

Pradeep

1968		Rs.	1968		Rs.
June 30	To Bank a/c	12,000	Jan. 1	By Bank a/c	12,000
,, ,,	,, Bank a/c	1,920	June 30	,, Joint Venture a/c (Profit)	1,920
		13,920			13,920

Praveen

1968		Rs.	1968		Rs.
June 30	To Bank a/c	8,000	Jan. 1	By Bank a/c	8,000
,, ,,	,, Joint Venture a/c (Timber)	1,008	June 30	,, Joint Venture a/c (Profit)	1,280
,, ,,	,, Bank a/c	272			
		9,280			9,280

अलग पुस्तकें न खोलना:—कभी-कभी संयुक्त साहस के लिए पृथक पुस्तकें खोलना सम्भव अथवा वांछनीय नहीं होता है। ऐसी दशा में प्रत्येक साहसी अपने व्यापार की पुस्तकों में ही संयुक्त साहस के सम्बन्ध में लेखा कर लेते हैं। यह लेखा दो विधियों के अनुसार किया जा सकता है, जिनका वर्णन आगे किया गया है।

प्रथम विधि—(1) दोनों साहसी अपनी-अपनी पुस्तकों में एक खाता खोलते हैं जिसे "Joint Venture with......Account" कहते हैं। यह खाता व्यक्तिगत खाता है तथा इसका शेष दूसरे साहसी से लेना अथवा उसको देना बतलाता है। साहसी संयुक्त कार्य के लिये यदि कोई भुगतान करता है, क्रय करता है अथवा कोई खर्चा करता है तो इससे वह इस खाते को डेबिट कर देता है। यदि दूसरे साहसी के पास रकम भेजता है तो भी यह खाता डेबिट कर दिया जाता है। माल की बिक्री द्वारा संयुक्त साहस के लिये रकम प्राप्त करने पर अथवा दूसरे साहसी से रकम प्राप्त करने पर यह खाता क्रेडिट कर दिया जाता है।

(2) जब कार्य समाप्त हो जाता है तो प्रत्येक साहसी अपनी-अपनी पुस्तक में खोले गये उपरोक्त खाते (Joint Venture with..... Account) की नकल दूसरे साहसी को भेज देता है। इसके प्राप्त होने पर प्रत्येक साहसी को संयुक्त कार्य के सम्बन्ध में किये गये समस्त व्यवहारों का ब्यौरा मिल जाता है जिसकी सहायता से वह "Memorandum Joint Venture Account" अथवा "Joint Venture Statement" बनाता है। यह खाता व्यापार व लाभ-हानि खाते (Trading and Profit & Loss Account) की तरह होता है। इसमें कुल माल की लागत तथा खर्चे डेबिट पक्ष की ओर तथा बिक्री क्रेडिट पक्ष की ओर दिखाते हैं। इस खाते का शेष लाभ अथवा हानि को प्रकट करेगा जिसे साहसियों में लाभ-हानि विभाजन के अनुपात में बांट दिया जावेगा। यह खाता बही खाते का अंग नहीं है और इसमें की गई प्रविष्टियां दूसरे खाते में नहीं की जातीं। यह खाता केवल लाभ अथवा हानि को ज्ञात करने के लिए बनाया जाता है।

(3) यदि Memorandum Joint Venture Account लाभ बताता है तो साहसी अपना लाभ-हानि खाता इस राशि से क्रेडिट करेगा और Joint Venture with...Account को डेबिट करेगा तथा हानि की स्थिति में इसके विपरीत लेखा किया जावेगा। अब Joint Venture with...Account का शेष यदि डेबिट है तो इतनी राशि दूसरे साहसी से लेनी है और यह शेष यदि क्रेडिट है तो इतनी राशि दूसरे साहसी को देनी है।

Illustration 36

Bholu and Bodu enter into joint venture for the purchase and sale of rice. They agree to divide the profits or losses equally. Bholu purchased rice for Rs. 10,000 and paid Rs. 100 for storage, Rs. 50 for insurance and Rs. 100 for carriage. Bodu purchased rice for Rs. 15,000 and paid Rs. 100 for carriage and Rs. 100 for sundry expenses.

Bholu disposed of a portion of the rice for Rs. 15,000 and the remainder was sold by Bodu for Rs. 20,000.

Enter the above transactions in the journal and ledger of both the parties and prepare the Memorandum Joint Venture Account as it would appear in the books of both the parties.

भोलू और बोदू चावल के क्रय-विक्रय के लिए संयुक्त साहस में प्रवेश करते हैं। वे लाभ-हानि को बराबर बांटने के लिए राजी होते हैं। भोलू ने 10,000 रु० के चावल खरीदे और 100 रु० ...

50 रु० बीमा तथा 100 रु० भाड़े के चुकाए। बोडू ने 15,000 रु० के चावल खरीदे और 100 रु० भाड़ा तथा 100 रु० विविध व्ययों के चुकाए।

भोलू ने कुछ चावल 15,000 रु० में और बोडू ने शेष चावल 20,000 रु० में बेच दिए।

दोनों पक्षों की जर्नल और खाता बही में उपरोक्त व्यवहारों का लेखा करो और स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता, जैसा कि दोनों की पुस्तकों में बनेगा, भी तैयार करो।

Solution :

Journal of Bholu

		Rs.	Rs.
Joint Venture with Bodu a/c Dr. To Bank a/c (Rice purchased.)		10,000	10,000
Joint Venture with Bodu a/c Dr. To Bank a/c (Rs. 100 for storage, Rs. 50 for insurance and Rs. 100 for carriage paid.)		250	250
Bank a/c Dr. To Joint Venture with Bodu a/c (Rice disposed of.)		15,000	15,000
Joint Venture with Bodu a/c Dr. To P.& L. a/c (Profit on joint venture transferred.)		4,775	4,775
		30,025	30,025

Ledger of Bholu

Joint Venture with Bodu Account

		Rs.			Rs.
	To Bank a/c (Rice)	10,000		By Bank a/c (sales)	15,000
	,, Bank a/c (Expenses)	250		,, Balance due from Bodu	25
	,, P. & L. a/c	4,775			
		15,025			15,025

Journal of Bodu

		Rs.	Rs.
Joint Venture with Bholu a/c Dr.		15,000	
To Bank a/c			15,000
(Rice purchased.)			
Joint Venture with Bholu a/c Dr.		200	
To Bank a/c			200
(Carriage Rs. 100 and sundry expenses Rs. 100 paid.)			
Bank a/c Dr.		20,000	
To Joint Venture with Bholu a/c			20,000
(Rice disposed of.)			
Joint Venture with Bholu a/c Dr.		4,775	
To P. & L. a/c			4,775
(Profit on joint venture transferred.)			
		39,975	39,975

Ledger of Bodu

Joint Venture with Bholu Account

	Rs.		Rs.
To Bank a/c (Rice)	15,000	By Bank a/c (sales)	20,000
,, Bank a/c (Expenses)	200		
,, P. & L. a/c	4,775		
,, Balance due to Bholu	25		
	20,000		20,000

Memorandum Joint Venture Account
(In the books of both Bholu and Bodu)

	Rs.		Rs.
To Purchases Rs. (10,000+15,000)	25,000	By Sales Rs. (15,000+20,000)	35,000
,, Expenses Rs. (250+200)	450		
,, Profit— Bholu Rs. 4,775; Bodu Rs. 4,775	9,550		
	35,000		35,000

Illustration 37.

Kalu of Calcutta and Dalu of Delhi entered into a joint venture for the purpose of purchase and sale of second hand cars. Kalu was to make the purchases

and Dalu was to effect the sales. They decide to share the profits in the ratio of 2 : 3 respectively. Dalu remitted a sum of Rs. 1,00,000 to Kalu towards the venture.

Kalu purchased 10 cars for Rs. 80,000, paid Rs. 43,500 for their reconditioning and sent them to Dalu. His other expenses were : Buying commission $2\frac{1}{2}\%$ and sundry expenses Rs. 3,500. Dalu took delivery by paying Rs. 7,500 for freight and Rs. 3,750 for octroi. He sold four cars at Rs. 16,000 each, two at Rs. 18,000 each and three at Rs. 22,500 each. He retained the remaining car for himself at an agreed value of Rs. 21,000. His expenses were : Insurance Rs. 1,500, Garage Rent Rs. 2,500, Brokerage Rs. 6,850 and Sundries Rs. 4,500.

Each party's ledger contains a record of his own transactions. Prepare a statement showing the result of the venture and account of the venture in the ledger of each party as it will finally appear, assuming that the matter was finally settled between the parties.

कलकत्ता के कालू और दिल्ली के डालू ने पुरानी कारों के क्रय-विक्रय के लिए संयुक्त साहस में प्रवेश किया। कालू कार खरीदेगा और डालू बेचेगा। वे क्रमशः 2 : 3 के अनुपात में लाभों को बांटना तय करते हैं। डालू ने कालू को इस कार्य के लिए 1,00,000 रु० की राशि भेजी।

कालू ने 10 कार 80,000 रु० में खरीदी और 43,500 रु० उनके ठीक कराने पर खर्च किये और उन्हें डालू को भेज दिया। उसके अन्य खर्चे इस प्रकार थे : क्रय कमीशन $2\frac{1}{2}\%$ और विविध खर्चे 3,500 रु०। डालू ने कारों की सुपुर्दगी ली और 7,500 रु० भाड़ा तथा 3,750 रु० चुंगी के चुकाए। उसने चार कारें 16,000 रु० प्रति कार की दर से, दो कारें 18,000 रु० प्रति कार की दर से तथा तीन कारें 22,500 रु० प्रति कार की दर से बेचीं। बची हुई कार उसने अपने लिए 21,000 रु० में रख ली। उसके खर्चे इस प्रकार थे : बीमा 1,500 रु०, गैरेज का किराया 2,500 रु०, दलाली 6,850 रु० और विविध खर्चे 4,500 रु०।

प्रत्येक पक्ष की खाता वही में उसके स्वयं के व्यवहारों का लेखा होता है। साहस के परिणाम को दिखाते हुए एक विवरण बनाइये और प्रत्येक पक्ष की खाता वही में साहस का खाता यह मानते हुये बनाइये कि दोनों पक्षों का हिसाब आपस में तय हो चुका है।

Solution :

Joint Venture Statement.
(in the books of both Kalu and Dalu)

	Rs.		Rs.
To Cost of Cars	80,000	By Sales Rs.(64,000 + 36,000 + 67,500 + 21,000)	1,88,500
,, Reconditioning	43,500		
,, Buying Commission	2,000		
,, Freight	7,500		
,, Octroi	3,750		
,, Insurance	1,500		
,, Garage Rent	2,500		
,, Brokerage	6,850		
,, Sundry Expenses Rs. (3,500 + 4,500)	8,000		
,, Profit : Kalu Rs. 13,160; Dalu Rs. 19,740	32,900		
	1,88,500		1,88,500

Ledger of Kalu **Joint Venture with Dalu Account**

	Rs.		Rs.
To Cash a/c (Cost of Cars)	80,000	By Cash a/c (From Dalu)	1,00,000
,, Cash a/c (Reconditioning)	43,500	,, Cash a/c (From Dalu)	42,160
,, Cash a/c (Commission)	2,000		
,, Cash a/c (Sundry Exp.)	3,500		
,, P. & L. a/c	13,160		
	1,42,160		1,42,160

Ledger of Dalu **Joint Venture with Kalu Account**

	Rs.		Rs.
To Cash a/c (To Kalu)	1,00,000	By Cash a/c (Sales)	1,67,500
,, Cash a/c (Freight)	7,500	,, Car a/c	21,000
,, Cash a/c (Octroi)	3,750		
,, Cash a/c (Insurance)	1,500		
,, Cash a/c (Garage Rent)	2,500		
,, Cash a/c (Brokerage)	6,850		
,, Cash a/c (Sundry Exp.)	4,500		
,, P. & L. a/c	19,740		
,, Cash a/c (To Kalu)	42,160		
	1,88,500		1,88,500

द्वितीय विधिः—इस विधि के अन्तर्गत प्रत्येक साहसी अपनी पुस्तकों में संयुक्त साहस के सम्बन्ध में स्वयं द्वारा किये गये एवं अन्य साहसियों द्वारा किये गये समस्त व्यवहारों का लेखा करता है। इसके अनुसार प्रत्येक साहसी की पुस्तकों में एक तो संयुक्त साहस खाता (Joint Venture Account) खोला जाता है और दूसरे, प्रत्येक साहसी का व्यक्तिगत खाता खोला जाता है। संयुक्त साहस खाता, व्यापार व लाभ-हानि खाता (Trading and Profit & Loss Account) की तरह होता है और यह संयुक्त साहस पर लाभ अथवा हानि को प्रकट करता है। प्रत्येक साहसी संयुक्त साहस के सम्बन्ध में जब कोई व्यवहार करता है तो वह इसे अपनी पुस्तकों में लिखने के साथ-साथ अन्य साहसियों को भी इसकी सूचना देता है ताकि वे भी इस व्यवहार को अपनी पुस्तकों में लिख लें। इस विधि के अनुसार निम्नलिखित प्रकार से लेखा किया जाता है:—

(1) माल खरीदने पर अथवा खर्चा करने पर

Joint Venture a/c Dr.
To Cash a/c
(Goods purchased or expenses paid.)

यदि माल उधार खरीदा गया है तो व्यक्तिगत खाता क्रेडिट किया जावेगा।

(2) दूसरे साहसी द्वारा संयुक्त साहस के लिए माल खरीदने अथवा खर्चा करने की सूचना प्राप्त होने पर

Joint Venture a/c Dr.
To Co-adventurer's a/c
(Goods purchased by...)
or
(Expenses incurred by...)

(3) माल बेचने पर

Cash a/c Dr.
To Joint Venture a/c
(Goods sold.)

यदि माल उधार बेचा गया है तो व्यक्तिगत खाता डेबिट किया जावेगा।

(4) दूसरे साहसी द्वारा संयुक्त साहस के लिए माल बेचने की सूचना प्राप्त होने पर

Co-adventurer's a/c Dr.
To Joint Venture a/c
(Goods sold by...)

(5) संयुक्त साहस से ब्याज लेय होने पर

Joint Venture a/c Dr.
To Interest a/c
(Interest charged.)

(6) संयुक्त साहस द्वारा अन्य साहसी को ब्याज देय होने पर

Joint Venture a/c Dr.
To Co-adventurer's a/c
(Interest payable to...)

(7) संयुक्त साहस खाते द्वारा लाभ बतलाने पर

Joint Venture a/c Dr.		(कुल लाभ की राशि से)
To P. & L. a/c		(स्वयं के हिस्से की राशि से)
To Co-adventurer's a/c		(संयुक्त साहसी के हिस्से की राशि से)

(Profit on joint venture transferred.)

(8) संयुक्त साहस खाते द्वारा हानि बतलाने पर

P. & L. a/c	Dr.	(स्वयं के हिस्से की हानि से)
Co-adventurer's a/c	Dr.	(संयुक्त साहसी के हिस्से की (हानि से)
To Joint Venture a/c		(कुल हानि की राशि से)

(Loss on joint venture transferred)

(9) यदि किसी दूसरे साहसी को बिल अथवा नकद रुपया भेजा जाता है

Co-adventurer's a/c Dr.
To B/P a/c or
To Cash a/c
(B/P accepted or cash remitted.)

(10) यदि किसी साहसी से बिल अथवा नकद प्राप्त होता है

B/R a/c Dr. or
Cash a/c Dr.
To Co-adventurer's a/c
(Acceptance or cash received.)

साहसियों द्वारा एक दूसरे को माल भेजने की कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है। साहसियों के व्यक्तिगत खातों का शेष रुपया लेना अथवा देना बतावेगा।

Illustration 38

Balu of Bombay and Lalu of Loharu enter into a joint venture for the purchase and sale of gram. They share profits equally.

Balu accepted a bill of Lalu for Rs. 10,000. Lalu discounts it for Rs.9,800 and purchases gram worth Rs.9,000. He sends gram to Balu and incurs the following expenses : Freight Rs. 100, Insurance Rs. 50, Sundries Rs. 50. Balu takes the delivery and incurs the following expenses : Cartage Rs. 20, Storage Rs. 80, Sundries Rs. 50. The whole lot is disposed of for Rs. 12,000 at a commission of 5%. The account is settled by the co-adventurers through bank draft.

Give journal entries to record these transactions and prepare Joint Venture Account and the personal account of the co-adventurer in the books of both the parties.

बम्बई के बालू और लुहारू के लालू चने के क्रय-विक्रय के लिए संयुक्त साहस में प्रवेश करते हैं। वे बराबर-बराबर लाभ-विभाजन करने का निश्चय करते हैं।

बालू 10,000 रु० का लालू का बिल स्वीकार करता है। लालू इसे 9,800 रु० में भुना लेता है और 9,000 रु० का चना खरीदता है। वह चना बालू को भेज देता है और निम्नलिखित खर्चा

करता है : भाड़ा 100 रु०, वीमा 50 रु०, विभिन्न खर्चे 50 रु० । बालू सुपुर्दगी लेता है और निम्न खर्चे करता है : गाड़ी-भाड़ा 20 रु०, भण्डारन 80 रु०, विभिन्न खर्चे 50 रु० । समस्त माल 5% कमीशन पर 12,000 रु० में बेच दिया जाता है। संयुक्त साहसियों द्वारा बैंक ड्राफ्ट के जरिये हिसाब तय कर लिया जाता है।

दोनों पक्षों की पुस्तकों में इन व्यवहारों का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां कीजिए, संयुक्त साहस खाता और सह-साहसी का व्यक्तिगत खाता बनाइये ।

Solution :

Journal of Balu

			Rs.	Rs.
	Lalu Dr. To B/P a/c (Acceptance given.)		10,000	10,000
	Joint Venture a/c Dr. To Lalu (Discount on bill paid by Lalu.)		200	200
	Joint Venture a/c Dr. To Lalu (Gram purchased by Lalu.)		9,000	9,000
	Joint Venture a/c Dr. To Lalu (Freight Rs. 100, Insurance Rs. 50 and Sundry Expenses Rs. 50 paid by Lalu.)		200	200
	Joint Venture a/c Dr. To Cash a/c (Cartage Rs. 20, Storage Rs. 80 and Sundry Expenses Rs. 50 paid.)		150	150
	Cash a/c Dr. To Joint Venture a/c (Gram disposed of.)		12,000	12,000
	Joint Venture a/c Dr. To Cash a/c (5% Commission on sale of gram paid.)		600	600
	Joint Venture a/c Dr. To P. & L. a/c To Lalu (Profit on joint venture transferred.)		1,850	925 925
	Lalu Dr. To Bank a/c (Account settled through bank draft.)		325	325

Ledger of Balu

Joint Venture Account

	Rs.		Rs.
To Lalu (Discount on Bill)	200	By Cash a/c	12,000
,, Lalu (Gram purchased)	9,000		
,, Lalu (Expenses)	200		
,, Cash a/c (Expenses)	150		
,, Cash a/c (Commission)	600		
,, P. & L. a/c	925		
,, Lalu (Profit)	925		
	12,000		12,000

Lalu's Account

	Rs.		Rs.
To B/P a/c	10,000	By Joint Venture a/c(Discount on Bill)	200
,, Bank a/c	325	,, Joint Venture a/c (Gram)	9,000
		,, Joint Venture a/c (Expenses)	200
		,, Joint Venture a/c (Profit)	925
	10,325		10,325

Journal of Lalu

			Rs.	Rs.
B/R a/c	Dr.		10,000	
To Balu				10,000
(Acceptance received.)				
Cash a/c	Dr.		9,800	
Joint Venture a/c (for discount)	Dr.		200	
To B/R a/c				10,000
(Bill discounted.)				
Joint Venture a/c	Dr.		9,000	
To Cash a/c				9,000
(Gram purchased.)				
Joint Venture a/c	Dr.		200	
To Cash a/c				200
(Freight Rs. 100, Insurance Rs. 50 and Sundry Expenses Rs. 50 paid.)				
Joint Venture a/c	Dr.		150	
To Balu				150
(Cartage Rs. 20, Storage Rs. 80 and Sundry Expenses Rs. 50 paid by Balu.)				
Balu	Dr.		12,000	
To Joint Venture a/c				12,000
(Gram sold by Balu.)				

Journal Contd...

		Rs.	Rs.
Joint Venture a/c Dr.		600	
To Balu			600
(Commission on sale of gram paid by Balu.)			
Joint Venture a/c Dr.		1,850	
To P. & L. a/c			925
To Balu			925
(Profit on joint venture transferred.)			
Bank a/c Dr.		325	
To Balu			325
(Bank draft received on settlement of account.)			

Ledger of Lalu **Joint Venture Account**

	Rs.		Rs.
To B/R a/c (Discount)	200	By Balu (Sales)	12,000
,, Cash a/c (Gram)	9,000		
,, Cash a/c (Expenses)	200		
,, Balu (Expenses)	150		
,, Balu (Commission)	600		
,, P. & L. a/c	925		
,, Balu (Profit)	925		
	12,000		12,000

Balu

	Rs.		Rs.
To Joint Venture a/c (Sales)	12,000	By B/R a/c	10,000
		,, Joint Venture a/c (Expenses)	150
		,, JointVenturea/c(Commission)	600
		,, Joint Venture a/c (Profit)	925
		,, Bank a/c	325
	12,000		12,000

Illustration 39

Jugal and Ved of Jaipur agree to send a consignment of wheat to Prakash of Bombay to be sold at their risk which is 3/4 and 1/4 respectively.

Jugal sent wheat worth Rs. 82,500 and paid Rs. 5,400 in respect thereof. Ved sent wheat worth Rs. 1,20,000 and incurred Rs. 8,000 as expenses thereon.

All the wheat was sold by Prakash for Rs. 3,00,000 from which he deducted Rs. 15,000 for his commission and Rs. 5,000 for the expenses incurred by him. Prakash remitted the whole amount to Jugal who settled his account with Ved by sending him a cheque for the amount due.

Each party's ledger contains the record of all the transactions relating to the venture. Show by means of ledger accounts how these transactions would be recorded in the books of Jugal and Ved.

जयपुर के जुगल और वेद क्रमश: 3:1 के अनुपात में जोखिम लेते हुये बम्बई के प्रकाश को, वेचने के लिए, गेहूँ भेजने का समझौता करते हैं।

जुगल ने 82,500 रु० के गेहूँ भेजे और उन पर 5,400 रु० खर्चे के चुकाये। वेद ने 1,20,000 रु० के गेहूँ भेजे और उन पर 8,000 रु० खर्चा किया।

प्रकाश ने समस्त गेहूं 3,00,000 रु० में बेच दिया जिसमें से 15,000 रु० कमीशन और 5,000 रु० खर्चे के काट लिए। प्रकाश ने समस्त राशि जुगल को भेज दी जिसने चैक द्वारा वेद का हिसाब चुकता कर दिया।

प्रत्येक पक्ष की खाता वही में संयुक्त साहस के सम्बन्ध में सभी व्यवहारों का लेखा किया गया है। जुगल और वेद की खाता वही में उपरोक्त व्यवहारों का लेखा कीजिए।

Solution

Ledger of Jugal

Joint Venture Account

	Rs.		Rs.
To Cash a/c (Wheat)	82,500	By Prakash (Sales)	3,00,000
,, Cash a/c (Expenses)	5,400		
,, Ved (Wheat)	1,20,000		
,, Ved (Expenses)	8,000		
,, Prakash (Commission)	15,000		
,, Prakash (Expenses)	5,000		
,, Ved (Profit)	16,025		
,, P.& L. a/c	48,075		
	3,00,000		3,00,000

Ved

	Rs.		Rs.
To Bank a/c	1,44,025	By Joint Venture a/c (Wheat)	1,20,000
		,, Joint Venture a/c (Expenses)	8,000
		,, Joint Venture a/c (Profit)	16,025
	1,44,025		1,44,025

Prakash

	Rs.		Rs.
To Joint Venture a/c (Sales)	3,00,000	By Joint Venture a/c (Commission)	15,000
		,, Joint Venture a/c (Expenses)	5,000
		,, Cash a/c	2,80,000
	3,00,000		3,00,000

Ledger of Ved

Joint Venture Account

	Rs.		Rs.
To Jugal (Wheat)	82,500	By Jugal (Sales through Prakash)	3,00,000
,, Jugal (Expenses)	5,400		
,, Cash a/c (Wheat)	1,20,000		
,, Cash a/c (Expenses)	8,000		
,, Jugal (Commission)	15,000		
,, Jugal (Expenses)	5,000		
,, Jugal (Profit)	48,075		
,, P. & L. a/c	16,025		
	3,00,000		3,00,000

Jugal

	Rs.		Rs.
To Joint Venture a/c (Sales)	3,00,000	By Joint Venture a/c (Wheat)	82,500
		,, Joint Venture a/c (Expenses)	5,400
		,, Joint Venture a/c (Com.)	15,000
		,, Joint Venture a/c (Sale Exp.)	5,000
		,, Joint Venture a/c (Profit)	48,075
		,, Cash a/c	1,44,025
	3,00,000		3,00,000

Questions

1. A and B undertake jointly to construct a building at a price of Rs. 1,00,000 for a company. The price is payable as to Rs.80,000 by instalments in cash and Rs. 20,000 in fully paid shares of the company. A banking account is opened in their joint names, A paying in Rs. 25,000 and B Rs. 15,000. They share profits in the ratio of 2:1. Their transactions were as follows :—

Wages paid Rs. 30,000; Materials purchased Rs. 70,000;

Materials supplied by A from his stock Rs. 5,000;

Materials supplied by B from his stock Rs. 4,000;

Engineer's fee paid by A Rs. 2,000.

The contract was completed and price duly received.

The joint venture was closed, A taking up all the shares of the company at an agreed value of Rs. 16,000 and B taking up the stock of materials at an agreed value of Rs. 3,000.

Prepare the necessary joint venture accounts showing the final distribution of cash.

अ और ब संयुक्त रूप से एक कम्पनी के लिए 1,00,000 रु० के भवन निर्माण का कार्य लेते हैं। कीमत का भुगतान 80,000 रु० नकद किस्तों द्वारा और 20,000 रु० कम्पनी के पूर्ण दत्त अंशों द्वारा किया जाना है। संयुक्त नाम में एक बैंक खाता खोला जाता है, अ 25,000 रु० देता है और ब 15,000 रु०। वे लाभ 2:1 के अनुपात में बांटते हैं। उनके व्यवहार इस प्रकार हुये:—

मजदूरी चुकाई 30,000 रु०; सामग्री खरीदी 70,000 रु०;

अ ने अपने स्टॉक से सामग्री दी 5,000 रु०;

ब ने अपने स्टॉक से सामग्री दी 4,000 रु०;

इन्जीनियर की फी अ द्वारा चुकाई गई 2,000 रु०।

ठेका पूर्ण हुआ और कीमत का भुगतान प्राप्त हो गया।

अ द्वारा 16,000 रु० के तय मूल्य पर कम्पनी के अंश लेकर और ब द्वारा 3,000 रु० के तय मूल्य पर सामग्री का स्टॉक लेकर संयुक्त साहस समाप्त कर दिया गया।

नकद का अंतिम वितरण दिखाते हुये संयुक्त साहस सम्बन्धी आवश्यक खाते खोलिए। [61]

Ans. : Joint Venture Loss—Rs. 12,000.

2. A of Ajmer and B of Bikaner entered into a joint-venture to purchase and sell timber, and the following transactions took place :—

1967

June 1 B bought timber for cash Rs. 20,000.
,, 1 B paid freight and other charges thereon Rs. 1,300.
,, 1 B drew upon A for Rs. 16,000 at two months after date.
,, 1 B discounted the above bill, receiving therefor Rs. 15,850.
,, 15 The timber arrived in Ajmer and A incurred Rs. 250 thereon.
,, 20 A sold one-third of the timber for Rs. 8,500.
,, 30 A sold another third of the timber for Rs. 9,000.
July 15 A sold remaining third of the timber Rs. 8,000. Payment in each case was made by a bill at one month.
Aug. 4 A met B's Bill for Rs. 16,000.
,, 20 The three bills received by A having been duly met, A remits to B a cheque in settlement.

Prepare Joint Venture Account and other parter's account in the books of each party.

अजमेर का अ और बीकानेर का ब टिम्बर के क्रय एवं विक्रय हेतु संयुक्त साहस में प्रवेश करते हैं और उनके बीच निम्नलिखित व्यवहार होते हैं :—

1967	
जून 1	ब ने 20,000 रु० की टिम्बर नकद खरीदी ।
,, 1	ब ने उस पर भाड़ा और अन्य खर्चे के 1,300 रु० चुकाये ।
,, 1	ब ने अ पर 16,000 रु० का 2 माह का बिल लिखा ।
,, 1	ब ने उक्त बिल 15,850 रु० में भुनाया ।
,, 15	टिम्बर अजमेर में पहुंच गई और अ ने 250 रु० उस पर खर्चा किया ।
,, 20	अ ने एक-तिहाई टिम्बर 8,500 रु० में बेची ।
,, 30	अ ने एक-तिहाई और टिम्बर 9,000 रु० में बेची ।
जुलाई 15	अ ने शेष तिहाई टिम्बर 8,000 रु० में बेची । प्रत्येक अवस्था में भुगतान एक माह पर देय बिल द्वारा किया गया ।
अगस्त 4	अ ने ब के 16,000 रु० के बिल का भुगतान कर दिया ।
,, 20	अ द्वारा प्राप्त तीनों बिलों का भुगतान हो जाने पर, अ ने ब को हिसाब चुकता करके चैक भेज दिया ।

संयुक्त साहस खाता और दूसरे साझी का खाता प्रत्येक पक्ष की पुस्तकों में खोलिए । [62]

Ans : Joint Venture Profit Rs. 3,800.

3. A in Liverpool ships goods to B of Bombay invoiced on 1st October, 1967 at Rs. 10,000, which includes freight and insurance Rs. 2,000. Their arrangements are :

(a) B is to sell goods at the best possibe price and to get 5% commission on the sale price.

(b) Remittances to be made by T.T.

(c) A is to be allowed 6% interest from the date of invoice until date of remittance.

(d) Profits or losses as disclosed by liverpool books are to be divided equally between the two parties.

The goods arrive on 25th November, 1967 and B pays Duty, Landing, Clearing and Godown charges Rs. 1409·37. The goods were sold on 29th February, 1968 for Rs. 13,062·50 and remittance made on 14th March, 1968 by T.T. Show the Ledger Accounts in Liverpool and Bombay books.

लिवरपूल का अ बम्बई के ब को 1 अक्टूबर, 1967 को 10,000 रु० बीजक मूल्य का माल भेजता है जिसमें 2,000 रु० भाड़े और बीमा के शामिल हैं । उनकी व्यवस्था इस प्रकार है :—

(अ) ब अच्छी से अच्छी कीमत पर माल बेचेगा और विक्रय मूल्य पर 5% कमीशन लेगा ।

(ब) रकम टी. टी. द्वारा भेजी जावेगी ।

(स) बीजक की तारीख से भुगतान भेजने की तारीख तक अ को 6% ब्याज दिया जावेगा।
(द) लिवरपूल पुस्तकों द्वारा बताये गये लाभ-हानि दोनों पक्षों के बीच बराबर-बराबर बांटे जावेंगे।

25 नवम्बर, 1967 को माल पहुँचता है और व तटकर, उतराई, निकराई और गोदाम खर्च के 1409 रु० 37 पै० देता है। माल 29 फरवरी, 1968 को 13,062 रु० 50 पैसे में बेचा जाता है और रकम टी०टी० द्वारा 14 मार्च, 1968 को भेजी जाती है।

लिवरपूल और बम्बई की पुस्तकों में खाते खोलिए। [63]

Ans. Profit on Joint Venture Rs. 725.

4. A of Ahmedabad and B of Bombay enter into a joint venture to consign 100 bales of cloth to C of Calcutta to be sold on their joint risk which is 3 : 2. A sends 60 bales at Rs. 1,300 each and pays Rs. 900 as expenses. B sends 40 bales at Rs. 1,250 each and pays Rs. 800 as expenses. All the bales are sold for Rs. 1,50,000 by C who incurs Rs. 1,600 as expenses. He is entitled to a commission of 3%. He sends Rs. 70,000 to A and the balance to B by bank drafts.

Prepare the Joint Venture a/c and the Co-adventurer's a/c in the ledger of each of the parties.

अहमदाबाद का अ और बम्बई का ब कलकत्ता के स को 100 गाँठ कपड़े की 3:2 के अनुपात में संयुक्त जोखिम पर भेजने के लिए संयुक्त साहस में प्रवेश करते हैं।

अ 60 गाँठे 1,300 रु० प्रति गाँठ के हिसाब से भेजता है और 900 रु० खर्च के चुकाता है। ब 40 गाँठें 1,250 रु० प्रति गाँठ के हिसाब से भेजता है और 800 रु० खर्चे के चुकाता है। स सभी गाँठों को 1,50,000 रु० में बेच देता है और 1,600 रु० खर्चे के चुकाता है। वह 3% कमीशन का अधिकारी है। वह 70,000 रु० अ को तथा शेष रकम ब को ड्राफ्ट द्वारा भेज देता है।

संयुक्त साहस खाता और संयुक्त साहसी का खाता, जिस प्रकार प्रत्येक पक्ष की खाता बही में लिखे जावेंगे, तैयार कीजिए। [64]

Ans. : Profit Rs. 14,200.

5. A of Ajmer and B of Bombay entered into a joint venture for sale of goods.

A purchased goods for Rs. 10,000 and sent it to B. He paid Rs. 400 freight, Rs. 350 brokerage and Rs. 100 as other expenses.

B received these goods and paid Rs. 600 for octroi, Rs. 200 for godown rent and Rs. 90 for insurance.

The whole consignment was sold for Rs. 16,000.

Prepare the Memorandum Joint Venture Account as it will appear in the books of both the parties and also prepare the other necessary account in the books of each party.

अजमेर के अ और बम्बई के ब ने माल बेचने के लिए संयुक्त साहस में प्रवेश किया।

अ ने 10,000 रु० का माल खरीदा और ब को भेज दिया। उसने 400 रु० भाड़ा, 350 रु० दलाली और 100 रु० अन्य खर्चे के चुकाये।

ब ने माल प्राप्त किया और 600 रु० चुंगी, 200 रु० गोदाम-किराया और 90 रु० बीमा के चुकाये।

समस्त माल 16,000 रु० में बेच दिया गया।

स्मरणार्थ संयुक्त साहस खाता, जिस प्रकार दोनों पक्षों की पुस्तकों में बनाया जावेगा, तैयार कीजिए और प्रत्येक पक्ष की पुस्तकों में दूसरा आवश्यक खाता भी खोलिए। [65]

Ans. : Profit Rs. 4,260.

Revisional Problems

6. Mohan and Sohan agreed to enter into a joint venture for the purpose of importing cycles and selling them. On 1st January, 1967, they opened a Joint Banking Account with Rs. 50,000, towards which both of them contributed equally. They also agreed to share the profits and losses equally.

On 10th January, 1967 they sent to the manufacturers a draft for Rs. 40,875 as the price of the cycles purchased. On arrival of the goods on 8th Feb., 1967 they paid freight Rs. 3,000, dock charges Rs. 200, carriage Rs. 100 and customs duty Rs. 12,500.

By the 15th March, 1967 the entire consignment except one cycle, which was shop-soiled, was disposed of for cash Rs. 85,025. The shop-soiled cycle was taken over by Sohan at an agreed value of Rs. 150. They then decided to close the venture.

Journalise the above transactions and prepare the necessary accounts in the books of the co-adventurers.

मोहन और सोहन साइकिलों का आयात करने एवं उनको बेचने के लिए संयुक्त साहस में प्रविष्ट होते हैं। 1 जनवरी, 1967 को उन्होंने 50,000 रु० से एक संयुक्त बैंकिंग खाता खोला जिसमें दोनों ने बराबर का अनुदान किया। उन्होंने यह भी निश्चय किया कि वे लाभ व हानि को बराबर-बराबर बाँटेंगे।

10 जनवरी, 1967 को उन्होंने साइकिल निर्माताओं को साइकिलों के मूल्य के रूप में 40,875 रु० का एक ड्राफ्ट भेजा। 8 फरवरी, 1967 को माल के पहुंचने पर उन्होंने भाड़ा 3,000 रु० डाक खर्चा 200 रु०, गाड़ी भाड़ा 100 रु० व तटकर के 12,500 रु० चुकाए।

15 मार्च, 1967 तक एक साइकिल (जो दुकान में खराब हो ग थी) को छोड़कर बाकी समस्त माल 85,025 रु० में बेच दिया गया। खराब हुई साइकिल को सोहन ने 150 रु० के तयशुदा मूल्य पर ले लिया। तब उन्होंने संयुक्त साहस बन्द करने का निश्चय किया।

उपरोक्त व्यवहारों को जर्नल में दर्ज कीजिए तथा दोनों साहसियों की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिए। [66]

Ans. : Profit on Joint Venture Rs. 28,500

7. A and B entered into a speculative venture of underwriting th subscription at par of the entire share capital of the Rajasthan Mines Ltd consisting of 10,000 equity shares of Rs. 10 each and to pay all expenses upt allotment. The profits were to be shared by them in proportion of $\frac{3}{5}$th and $\frac{2}{5}$th. Th consideration in return for this guarantee was 1,200 other equity shares of Rs. 1(each fully paid to be issued to them.

A provided funds for Registration fees Rs. 1,200, Advertising Rs. 1,100 printing and distributing prospectus Rs. 750, and other printing and stationery Rs. 200. B contributed towards payment of office rent Rs. 300, legal charges Rs. 1,375, clerical staff Rs. 900, and other petty disbursements Rs. 175. The prospectus was issued and the application from the public fell short of the full issue by 1,500 shares. A purchased these shares on joint account and paid for the same in full. They received the 1,200 fully paid equity shares as underwriting commission. A and B sold their entire holding at Rs. 12·50 less Rs. 0·50 per share for brokerage. The net proceeds were received by A for 1,500 shares and by B for 1,200 shares.

Write up the necessary accounts in the books of both the parties,s howing the final adjustment.

ए और बी ने संयुक्त साहस के रूप में राजस्थान माइन्स लिमिटेड की समस्त पूँजी (जो 10 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित थी) के निर्गमन के अभिगोपन तथा बंटन तक के समस्त खर्चे चुकाने का समझौता किया। उनको लाभ $\frac{3}{5}$ व $\frac{2}{5}$ के अनुपात में बांटना था। इस समझौते के प्रतिफल के रूप में उनको 10 रु० वाले अन्य 12,00 पूर्णदत्त ईक्विटी अंश निर्गमित किये जायेंगे।

ए ने रजिस्ट्रेशन फीस 1,200 रु०, विज्ञापन 1,100 रु०; प्रविवरण की छपाई व वितरण व्यय 750 रु०; तथा अन्य छपाई व स्टेशनरी व्यय के 200 रु० भुगतान करने की व्यवस्था की। बी ने कार्यालय किराया 300 रु०; कानूनी खर्चे 1,375 रु०; क्लर्कों का वेतन 900 रु०; तथा अन्य फुटकर भुगतानों के 175 रु० की व्यवस्था की। प्रविवरण निर्गमित किया गया तथा जनता से 1,500 अंशों के लिए कम आवेदन पत्र आये। इन अंशों को ए ने संयुक्त खाते पर खरीद लिया और पूर्ण भुगतान कर दिया। उनको अभिगोपन कमीशन के रूप में 1,200 पूर्ण प्रदत्त अंश प्राप्त हो गये। ए और बी ने अपने समस्त अंशों को 12·50 रु० प्रति अंश (इसमें से 0·50 रु० दलाली के घटाने हैं) के हिसाब से बेच दिया। 1,500 अंशों की शुद्ध राशि ए को तथा 1,200 अंशों की शुद्ध राशि बी को प्राप्त हुई।

अन्तिम समायोजन दिखाते हुए दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिए। [67]

Ans. : Profit on Joint venture Rs. 11,400

8. B and C of Calcutta undertake a joint venture for purchase and sale of timber. On 1st July, 1968 they opened a Joint Banking Account with Rs. 25,000 towards which B contributed Rs. 15,000 and C Rs. 10,000. They agree to

share profits and losses in proportion to three-fourth and one-fourth respectively. On 5th July, 1968 they remitted to their agents in Assam Rs. 20,000 to pay for timber purchased and later Rs. 2,100 on 10th August, 1968 in settlement of his account. Freight, insurance and other charges amounting to Rs. 3,900 were paid in Calcutta on 12th July, 1968.

Upto 31st July, 1968 the sales amounted to Rs. 28,740 which enabled them to repay themselves the cash advanced by them. Interest was charged by B and C @ 6% per annum on the cash contributed by them. On 10th August, 1968 they decided to close the venture and C agreed to take over the balance of timber unsold for Rs. 1,260 which is to be deducted from his share of profit.

Prepare accounts showing distribution of cash between B and C.

कलकत्ता के बी व सी ने लकड़ी के क्रय एवं विक्रय करने का संयुक्त साहस किया। 1 जुलाई, 1968 को उन्होंने 25,000 रु० से एक संयुक्त बैंकिंग खाता खोला जिसमें बी ने 15,000 रु० तथा सी ने 10,000 रु० अनुदान किए। वे लाभ-हानि को क्रमशः $\frac{3}{4}$ व $\frac{1}{4}$ के अनुपात में बांटते हैं। 5 जुलाई,1968 को उन्होंने आसाम में अपने एजेन्ट को खरीदी हुई लकड़ी का भुगतान करने के लिए 20,000 रु० भेजे और बाद मे 10 अगस्त, 1968 को उनके खाते के पूर्ण भुगतान मे 2,100 रु० और भेज दिये। भाड़ा, बीमा एवं अन्य व्ययों के 3,900 रु० कलकत्ता में दिनांक 12 जुलाई, 1968 को भुगतान किये गये।

31 जुलाई, 1968 तक 28,740 रु० की बिक्री हुई जिसमें से उनके द्वारा पूँजी के रूप में दी गई रकम का भुगतान कर दिया गया। बी व सी ने अपनी पूँजी पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज वसूल किया। 10 अगस्त, 1968 को उन्होंने साहस कार्य को बन्द किया और सी बची हुई लकड़ी को 1,260 रु० में लेने को तैयार हो गया जो कि उसके हिस्से की राशि में से काटे जावेंगे।

बी व सी में रकम का वितरण दिखाते हुए आवश्यक खाते तैयार कीजिए। [68]

Ans. : Profit on joint venture Rs. 3,875.

9. X and Y enter into a joint venture as dealers in land with effect from 1st January, 1968. On the same day X advanced Rs. 1,08,000 and agricultural plot of land measuring 18,000 sq. yds. @ Rs. 6 per sq. yd. was purchased about 3 miles from Jaipur station. It was decided to convert this land into urban land to sell it in smaller plots. A plan was got prepared at the cost of Rs. 2,000 paid by Y. According to the plan, $\frac{1}{3}$rd of the total area was reserved for public roads and the remaining land was divided into 24 plots of equal size. The conversion charges amounted to Rs. 72,000 and were paid by X on 1st March, 1968. The construction of public roads and development expenditure amounted to Rs.80,000 which was also paid by X on 1st April, 1968.

On 1st May, 1968, 8 plots were sold at Rs. 30 per sq. yd. The remaining plots were auctioned at an average price of Rs. 32 per sq. yd. on

1st July, 1968. The sale proceeds of all the plots were received by X. After charging interest at 6% per annum on the investments of X (after allowing for money received by him) and allowing 1 per cent on the sale proceeds of the plots as commission to Y, the net profit on the joint venture is to be divided in proportion of $\frac{3}{4}$ to X and $\frac{1}{4}$ to Y.

Draw up the Joint Venture Revenue Account and personal accounts of X and Y in each party's books showing the final payment made by one to the other.

1 जनवरी 1968 से एक्स और वाई भू व्यवसाय हेतु संयुक्त साहस में प्रविष्ट हुये। उसी दिन एक्स ने 1,08,000 रु० दिये और जयपुर के स्टेशन से 3 मील दूर 18,000 वर्ग गज का एक कृषि फार्म 6 रु० प्रति वर्ग गज की दर से खरीदा। यह निश्चय किया गया कि इस फार्म को शहरी जमीन में परिवर्तन कराके छोटे-छोटे भू-खण्डों में वेचा जाये। 2,000 रु० का व्यय करके एक नक्शा तैयार किया गया जिसका वाई ने भुगतान किया। नक्शे के अनुसार कुल क्षेत्रफल का $\frac{1}{3}$ भाग सार्वजनिक सड़कों के लिए रिजर्व किया गया और वाकी जमीन को वरावर के 24 भूखण्डों में वांट दिया गया। परिवर्तन कराने का खर्चा 72,000 रु० लगा जिसे एक्स ने 1 मार्च, 1968 को भुगतान किया। सार्वजनिक सड़कें वनाने एवं विकास करने में 80,000 रु० व्यय हुये जिनका भी एक्स ने 1 अप्रैल, 1968 को भुगतान किया।

1 मई, 1968 को 8 भूखण्ड 30 रु० प्रति वर्ग गज की दर से वेचे गये। वाकी भूखण्ड 1 जुलाई, 1968 को औसतन 32 रु० प्रति वर्ग गज की दर से नीलामी पर वेचे गये। सब भूखण्डों की विक्री की रकम एक्स द्वारा प्राप्त की गई। एक्स के विनियोगों पर (उसके द्वारा प्राप्त रकम को छोड़ते हुए) 6 प्रतिशत वार्षिक व्याज तथा भूखण्डों की विक्रय राशि पर 1 प्रतिशत वाई को कमीशन देने के वाद संयुक्त साहस का शुद्ध लाभ एक्स को $\frac{3}{4}$ व वाई को $\frac{1}{4}$ वितरित किया जाता हैं।

संयुक्त साहस रेवेन्यु खाता वनाइये तथा आपस में अन्तिम भुगतान दिखाते हुए एक्स और वाई में से प्रत्येक की पुस्तकों में दूसरे का व्यक्तिगत खाता खोलिए। (69)

Ans. : Profit on joint venture Rs. 1,05,560.
Interest on X's advances Rs. 4,680.

10. Jhamat Mal and Hari Chand enter into a joint venture as from 1st January, 1966 as property dealers and agreed to share profits and losses as to three-fifth to Jhamat Mal and two-fifth to Hari Chand. Their property transactions were as follows:—

(a) Purchased office buildings for Rs. 3,20,000 on 1st January, 1966. Jamat Mal pays the deposit of Rs. 32,000 and on completion of purchase (28th February, 1966), brings in Rs. 1,60,000 cash of which he borrows Rs. 60,000 from his bankers. Hari Chand brings in Rs. 40,000 cash. Jhamat Mal and Hari Chand borrow jointly from the bank Rs. 88,000. The registration

charges and stamp duty amounting to Rs. 14,300 were paid by the sellers of office buildings according to the terms of purchase.

The above property was sold on 30th June, 1966 for Rs. 3,82,000 from which Rs. 16,000 were deducted on account of registration charges and stamp duty paid by the purchasers. The joint bank loan was repaid on this date together with interest @ 9% per annum. Jhamat Mal withdraws Rs. 70,000 and repays his bankers. While held by Jhamat Mal and Hari Chand, the property has yielded a surplus rent over outgoings amounting to Rs. 17,200.

(b) Purchase of partly completed building for Rs. 1,40,000 on 30th June, 1966. The purchase price is financed by Jhamat Mal as to Rs. 80,000 and by Hari Chand as to Rs. 60,000. The registration charges and stamp duty were paid by Jhamat Mal amounting to Rs. 6,000. Jhamat Mal and Hari Chand arrange for completion of the building at a contract cost of Rs. 1,68,000. At 30th November, 1966 they have paid Rs. 1,30,000 under this contract. On 30th November, 1966 they sell the building to Krishna Brothers, as it stands, the purchasers taking over all liabilities under the building contract and paying registration fees, stamp duty etc. The sale price is Rs. 3,06,000 of which 10% is paid on 30th November, 1966 and the balance on 15th December, 1966 at the time of registration.

Final settlement was made on 15th Dec. 1966 and the venture was closed.

Prepare necessary accounts to record the above transactions assuming that separate books of account are kept for joint venture.

1 जनवरी, 1966 से झम्मट मल और हरी चन्द सम्पत्ति व्यवसायी के रूप में संयुक्त साहस में प्रविष्ट हुए तथा उन्होंने लाभ-हानि को क्रमशः $\frac{3}{5}$ व $\frac{2}{5}$ भाग में बाँटने का समझौता किया। उनके सम्पत्ति सम्बन्धी व्यवहार निम्न प्रकार थे:—

(अ) 1 जनवरी, 1966 को 3,20,000 रु० में कार्यालय भवन का क्रय किया। झम्मट मल ने 32,000 रु० डिपोजिट के रूप में दिए। क्रय सम्पूर्ण होने पर (28 फरवरी, 1966 को) वह 1,60,000 रु० रोकड़ी लाया जिसमें से 60,000 रु० उसने बैंक से उधार लिये थे। हरी चन्द 40,000 रु० रोकड़ी लाता है। झम्मटमल और हरी चन्द संयुक्त नाम में बैंक से 88,000 रु० उधार लेते हैं। रजिस्ट्रेशन तथा स्टाम्प ड्यूटी का खर्चा 14,300 रु० हुआ जो कि क्रय समझौते की शर्तों के अनुसार कार्यालय भवन के विक्रेताओं द्वारा भुगतान किया गया।

उपरोक्त सम्पत्ति 30 जून, 1966 को 3,82,000 रु० में बेची गई जिसमें से रजिस्ट्रेशन व स्टाम्प ड्यूटी के खर्चे के 16,000 रु० क्रेताओं द्वारा काट लिए गए जो उन्होंने चुकाये थे। उक्त तिथि को 9 प्रतिशत वार्षिक ब्याज के हिसाब से संयुक्त बैंक ऋण चुका दिया गया। झम्मट मल ने

70,000 रु० निकाले और अपने बैंक को भुगतान कर दिए। जितने दिन सम्पत्ति झम्मट मल और हरी चन्द के पास रही, उतने दिनों में व्ययों का समायोजन करने के बाद किराये का 17,200 रु० का आधिक्य प्राप्त हुआ।

(ब) 30 जून, 1966 को 1,40,000 रु० में अपूर्ण भवन खरीदा गया। क्रय मूल्य के भुगतान के लिए झम्मट मल ने 80,000 रु० तथा हरी चन्द ने 60,000 रु० दिए। रजिस्ट्रेशन व स्टाम्प ड्यूटी के खर्चे के 6,000 रु० झम्मट मल ने दिए। झम्मट मल और हरी चन्द ने भवन को पूर्ण करने के लिए 1,68,000 रु० पर ठेका देने का प्रबन्ध किया। 30 नवम्बर, 1966 को उन्होंने, इस अनुबन्ध के अन्तर्गत, 1,30,000 रु० का भुगतान किया। उसी दिन उन्होंने उस भवन को (जैसी भी स्थिति में है) कृष्णा ब्रदर्स को बेच दिया और क्रेतागण ठेके अनुबन्ध के शेष दायित्वों तथा रजिस्ट्रेशन व स्टाम्प ड्यूटी इत्यादि के खर्चों को वहन करने के लिए तैयार हो गये। विक्रय मूल्य 3,06,000 रु० तय हुआ जिसमें से 10 प्रतिशत 30 नवम्बर 1966 को तथा बाकी रकम 15 दिसम्बर, 1966 को रजिस्ट्रेशन के समय भुगतान की जाती है।

15 दिसम्बर, 1966 को अन्तिम हिसाब करके संयुक्त साहस बन्द कर दिया गया।

यह मानते हुए कि संयुक्त साहस के लिये अलग पुस्तकें रखी गई हैं, उपरोक्त व्यवहारों को दर्ज करने के लिए आवश्यक खाते खोलिए। [70]

Ans. : Profit on joint venture Rs. 90,560.

3

मूल्य ह्रास एवं संचय
(Depreciation and Reserves)

मूल्य ह्रास का अर्थ एवं परिभाषा
(Meaning and Definition of Depreciation)

स्थायी सम्पत्तियां जैसे-जैसे व्यवसाय में काम आती हैं, उनकी आयु एवं मूल्य कम होते जाते हैं और प्रत्येक सम्पत्ति के लगातार प्रयोग होने पर एक ऐसी स्थिति आती है कि वह सम्पत्ति बिल्कुल बेकार हो जाती है और उसे प्रतिस्थापित (Replace) करना पड़ता है। सम्पत्ति के बेकार होने का यह क्रम ही 'मूल्य ह्रास' (Depreciation) कहलाता है। विभिन्न विद्वानों ने मूल्य ह्रास को कई प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है। इनमें से कुछ परिभाषाएं नीचे दी जा रही हैं :—

"प्रयोग में आने से मूल्य में जो क्रमिक गिरावट आती है, उसे मूल्य ह्रास कहते हैं।"[1]

आर० जी० विलियम्स

"मूल्य ह्रास व्यापार में सम्पत्तियों के प्रयोग से घिसावट व क्षय (Wear and Tear) के कारण होने वाली सम्पत्तियों के मूल्य में स्थायी कमी को बतलाता है।"[2] बाटली बॉय

मूल्य ह्रास, अप्रचलन, घट-बढ़ और रिक्तता
(Depreciation, Obsolescence, Fluctuation and Depletion)

सम्पत्ति का कुछ समय तक प्रयोग करने के पश्चात् अथवा सम्पत्ति को कुछ समय बेकार पड़ा रखने के पश्चात् उसमें वह कार्यक्षमता नहीं रह जाती जो कि उस समय थी जब उसे नई खरीदा गया था। सम्पत्ति की कार्यक्षमता प्रयोग के कारण निरन्तर घटती रहती है और एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब कि मशीन आगे प्रयोग में नहीं आ सकती और उसे उत्पादन से हटा देना पड़ता है। सम्पत्ति की कार्यक्षमता के इस घटाव को ही 'मूल्य ह्रास' की संज्ञा दी जाती है।

कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई सम्पत्ति पूर्ण रूप से बेकार नहीं होती है, लेकिन उससे उत्तम मशीन बाजार में आ जाती है। अतः व्यवसायी को अपने प्रतिद्वन्द्वियों के मुकाबले टिकने के लिए व्यवसाय में अपनी पुरानी सम्पत्ति के स्थान पर नई सम्पत्ति (जैसे मशीन) लगानी पड़ती है। पुरानी सम्पत्ति को प्रयोग से इस प्रकार हटा देना मूल्य ह्रास नहीं है बल्कि **अप्रचलन** (Obsolescence) है।

---

1. "Depreciation may be defined as a gradual deterioration in value due to use." —R. G. Williams.

2. "Depreciation is the permanent diminution in value of assets on account of wear and tear by their use in the business.' —Batlibuoy.

सम्पत्ति के बाजार-मूल्य में जो उतार-चढ़ाव होता रहता है उसे कहते हैं। स्थायी सम्पत्ति बाजार में पुनर्विक्री के लिए नहीं रखी जाती बल्कि उ जाती है, अतः इसके बाजार-मूल्य में घट बढ़ का कोई ध्यान नहीं रखा जाता।

कुछ सम्पत्तियाँ ऐसी होती हैं जो किसी वस्तु के निर्माण में सहायक नहीं हो, उस वस्तु का भण्डार होती हैं, जैसे खानें, तेल के कुएँ आदि। ऐसी सम्पत्तियों से निकाली जाती है, भण्डार खाली होता जाता है। भण्डार के खाली होने के इस (Depletion) कहते हैं।

सम्पत्ति का मूल्य ह्रास क्यों होता है (Why asset depreciates)

सम्पत्ति में ह्रास निम्न कारणों से होता है :—

(1) प्रयोग (Use)—भवन, मशीनें, फर्नीचर, मोटर आदि सम्पत्तियाँ प्रयोग में आने धीरे-धीरे नष्ट होती रहती हैं। मरम्मत द्वारा इनकी आयु को बढ़ाया जा सकता है लेकिन इनको अमर नहीं बनाया जा सकता।

(2) समाप्ति (Exhaustion)—कुछ सम्पत्तियाँ (जैसे पशुधन) उम्र के अनुसार बेकार होती जाती हैं। हो सकता है कि शुरू में उनका मूल्य बढ़े लेकिन बाद में जैसे-जैसे युवाकाल समाप्त होता जाता है, इनकी समाप्ति का समय भी नजदीक आने लगता है और मूल्य भी गिरने लगता है।

(3) समय की समाप्ति (Effluxion of Time)—पट्टे पर ली गई सम्पत्तियाँ और पेटेन्ट आदि का जीवन काल निश्चित होता है और समय गुजरने के साथ-साथ इनका मूल्य ह्रास होता रहता है।

मूल्य ह्रास अपलिखित करने की आवश्यकता (Necessity of providing for depreciation)

एक स्थायी सम्पत्ति का मूल्य ह्रास अपलिखित करना निम्न कारणों से आवश्यक है :—

(1) **सम्पत्ति की लागत को अपलिखित करने का विभिन्न वर्षों के लाभ-हानि खाते पर भार**—सम्पत्ति को प्रयोग में लेने के कारण जिन वर्षों के लाभ-हानि खातों में आय दिखाई गई है, उन्हीं वर्षों के लाभ-हानि खातों में से सम्पत्ति के लागत मूल्य को अपलिखित किया जाना चाहिए। सम्पत्ति का लागत-मूल्य एक प्रकार से स्थगित रेवेन्यूगत खर्चा (Deferred Revenue Expenditure) माना जाता है। अतः इस खर्चे को एक निश्चित अनुपात में सम्पत्ति के जीवन-काल में बनाये गये समस्त लाभ-हानि खातों में विभक्त किया जाना आवश्यक है। जिस वर्ष सम्पत्ति बेकार होती है, उस वर्ष के लाभ-हानि खाते को सम्पत्ति के पूर्ण मूल्य से बोझिल करना न्यायोचित नहीं होगा।

(2) **सम्पत्ति का प्रतिस्थापन**—यदि सम्पत्ति के ह्रास को अपलिखित किये बिना सम्पूर्ण लाभ को व्यवसाय से निकाल लिया जाता है तो व्यवसाय में वह रकम इकट्ठा नहीं हो सकेगी जिसकी सहायता से उस सम्पत्ति का जीवन काल समाप्त होने पर उसके स्थान पर नई सम्पत्ति प्रतिस्थापित की जा सके।

(3) **लाभ-हानि खाते का सही रूप**—सम्पत्ति का ह्रास अपलिखित न करने पर संस्था का लाभ-हानि खाता भी वास्तविक लाभ को न बताकर अधिक लाभ अथवा वास्तविक हानि को न बताकर उससे कम हानि को बतावेगा।

का सही रूप—यदि सम्पत्ति पर ह्रास अपलिखित न किया जायेगा तो संस्था का एवं उचित (True and fair) आर्थिक स्थिति को प्रकट नहीं करेगा। संस्था की स्थिति चिट्ठे द्वारा प्रकट स्थिति से कमजोर होगी।

ऋणदाताओं पर प्रभाव—व्यवसाय की सम्पत्तियां ऋणदाताओं की रकम के लिए म करती हैं। यदि ह्रास अपलिखित न किया गया तो यह जमानत की रकम कम हो

(6) लाभांश का पूँजी में से वितरण—यदि ह्रास अपलिखित किये बिना समस्त लाभ का ण कर दिया जाता है तो लाभांश का वितरण पूंजी में से होगा।

मूल्य ह्रास की रकम निर्धारित करते समय ध्यान देने योग्य बातें

किसी भी सम्पत्ति का मूल्य ह्रास निर्धारित करते समय निम्नलिखित तीन मुख्य बातों का ध्यान रखना अनिवार्य है :—

(1) **सम्पत्ति का लागत मूल्य**—सम्पत्ति के लागत मूल्य से तात्पर्य उस मूल्य से है जिस पर सम्पत्ति को क्रय किया गया है। सम्पत्ति के स्थापना व्यय भी लागत मूल्य के अंग माने जाते हैं। पुरानी मशीनरी खरीदने पर उसके लिये तुरंत किये गये मरम्मत खर्चे व स्थापना व्यय उस मशीनरी के लागत मूल्य के भाग माने जायेंगे।

(2) **सम्पत्ति की आयु**—सम्पत्ति व्यवसाय में कितने वर्ष काम में आती रहेगी तथा इसका अनुमानित जीवन काल क्या होगा।

(3) **सम्पत्ति का अवशिष्ट मूल्य (Scrap Value)**—यह भी अनुमान लगाया जायेगा कि सम्पत्ति के अनुमानित जीवन काल के अंत में उसका अवशिष्ट मूल्य कितना होगा अर्थात् उस समय सम्पत्ति की जैसी स्थिति होगी, उस स्थिति में सम्पत्ति से कितनी राशि वसूल हो जावेगी।

उदाहरण—माना कि किसी मशीन को 5,400 रु० में खरीदा गया है और 100 रु० उसके लगाने में खर्च हुये हैं। विशेषज्ञ के अनुमान के आधार पर मशीन 10 वर्ष चलेगी और तब इसका अवशिष्ट मूल्य 500 रु० रहेगा। इसका अर्थ यह हुआ कि उस मशीन का 10 वर्ष में (5,400+100—500) रु० =5,000 रु० मूल्य ह्रास अपलिखित किया जावेगा।

किसी भी सम्पत्ति के लिए मूल्य ह्रास की रकम को निर्धारित करते समय उपरोक्त तीन मुख्य बातों का ध्यान रखने के अलावा निम्न बातों पर भी विचार कर लेना चाहिए:—

मरम्मत का प्रबन्ध :—यदि सम्पत्ति की मरम्मत का उत्तम प्रबन्ध है तो सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल बढ़ जावेगा और मूल्य ह्रास की वार्षिक रकम कम हो जावेगी।

नये आविष्कार की सम्भावना—यदि नई और उत्तम सम्पत्ति का जल्दी ही आविष्कार होने की सम्भावना है तो पुरानी सम्पत्ति को उसके उपयोगी जीवन की समाप्ति के पूर्व ही प्रयोग से हटाना पड़ेगा; अर्थात् उसका उपयोगी जीवन काल कम हो जावेगा।

सम्पत्ति का विस्तार—यदि सम्पत्ति के विस्तार पर कोई पूँजीगत व्यय हुये हैं तो ह्रास की रकम का निर्धारण करते समय इनका भी ध्यान रखना चाहिए।

वैधानिक नियम—यदि सम्पत्ति के ह्रास के सम्बन्ध में कोई कानून बना हुआ है तो मूल्य ह्रास की रकम का निर्धारण करते समय उस कानून का भी पालन किया जाना चाहिए। जैसे, कम्पनी विधान में कम्पनियों के लिए स्थायी सम्पत्तियों का मूल्य ह्रास काटने के सम्बन्ध में कुछ कानून बने हुए हैं। एक कम्पनी को इनका पालन करना चाहिए।

मूल्य ह्रास आयोजन में प्रबन्धकों का कर्तव्य

व्यवसाय के प्रवन्धकों का यह कर्तव्य है कि वे प्रत्येक सम्पत्ति का प्रति वर्ष उचित मूल्य ह्रास अपलिखित करें। ह्रास की उचित रकम का निर्धारण करते समय उन्हें ऊपर बताई गई सभी बातों का ध्यान रखना चाहिए। यदि वे आवश्यक समझें तो इस सम्बन्ध में किसी विशेषज्ञ से सलाह भी ले सकते हैं।

प्रबन्धकों को हमेशा ध्यान रखना चाहिए कि मूल्य ह्रास का आवश्यकता से अधिक अपलिखित करना अथवा आवश्यकता से कम अपलिखित करना, दोनों ही परिस्थितियां ठीक नहीं हैं क्योंकि प्रथम परिस्थिति में गुप्त कोष का निर्माण होगा और द्वितीय परिस्थिति में पूँजी में से लाभांश चुकाये जाने (एक कम्पनी की स्थिति में) का भय रहेगा। दोनों ही परिस्थितियां कुछ पक्षों के हितों पर अनुकूल प्रभाव डालेंगी और कुछ के हितों पर प्रतिकूल प्रभाव डालेंगी। अतः दोनों ही ठीक नहीं हैं।

यदि किसी सम्पत्ति के सम्बन्ध में मूल्य ह्रास की वार्षिक राशि निर्धारित कर लेने के कुछ वर्षों पश्चात् प्रबन्धकों को यह ज्ञात होता है कि उनका अनुमान सही नहीं है तो वे मूल्य ह्रास की रकम में परिवर्तन भी कर सकते हैं। इस परिवर्तन को पूर्व तारीख से भी प्रभाव दिया जा सकता है अथवा केवल भविष्य के लिए लागू किया जा सकता है।

मूल्य ह्रास प्रावधान की विधियां (Methods of Providing Depreciation)

सम्पत्तियों के वर्तन ह्रास-प्रावधान के सम्बन्ध में कई विधियां प्रचलित हैं। कहाँ कौनसी विधि काम में लाई जावे, यह सम्पत्ति के स्वभाव, व्यवसाय की नीति तथा व्यवसाय को प्रभावित करने वाले अधिनियमों पर निर्भर करता है। इनमें से कुछ महत्वपूर्ण विधियों का वर्णन नीचे किया जाता है:—

स्थायी किस्त विधि (Fixed Instalment Method)

इस विधि के अन्तर्गत सम्पत्ति के मूल लागत मूल्य (Original Cost Price) पर एक निश्चित प्रतिशत के हिसाब से प्रति वर्ष मूल्य ह्रास अपलिखित किया जाता है। मूल्य ह्रास की इस निश्चित प्रतिशत को तय करते समय यह ध्यान में रखा जाता है कि मूल्य ह्रास अपलिखित करते-करते सम्पत्ति के उपयोगी जीवन के समाप्त होने पर सम्पत्ति के खाते में उसके अवशिष्ट मूल्य (Scrap Value) के बराबर राशि शेष रह जाय। अतः मूल्य ह्रास के निश्चित प्रतिशत को तय करने के लिए उस सम्पत्ति के सम्बन्ध में तीन बातें ज्ञात होनी चाहिए:—

(i) सम्पत्ति का लागत मूल्य जिसमें सम्पत्ति को स्थापित कर उसे चालू करने तक खर्चे भी शामिल होने चाहिए;

(ii) सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल अर्थात् सम्पत्ति कितने वर्ष तक काम में आती रहेगी; और

(iii) सम्पत्ति का अवशिष्ट मूल्य (Scrap Value) अर्थात सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल समाप्त होने पर सम्पत्ति उस हालत में कितने में बिक जावेगी।

उदाहरण—माना कि कोई मशीन 10,000 रु० में खरीदी है और इसका अनुमानित उपयोगी जीवन काल 9 वर्ष है। इसके पश्चात् इस मशीन का अवशिष्ट मूल्य 1,000 रु० होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि इस मशीन के सम्बन्ध में (10,000—1,000) रु० = 9,000 रु० मूल्य ह्रास 9 वर्ष में अपलिखित कर देना है, अर्थात् प्रतिवर्ष (9,000 ÷ 9) रु० = 1,000 रु० मूल्य ह्रास अपलिखित करना है।

इसकी सहायता से प्रत्येक वर्ष के लिए मूल्य ह्रास की प्रतिशत भी ज्ञात की जा सकती है:—

∵ 10,000 रु० पर मूल्य ह्रास अपलिखित करना है = 1,000 रु०

∴ 1 ,, ,, ,, ,, = $\frac{1,000}{10,000}$ रु०

∴ 100 ,, ,, ,, ,, = $\left(\frac{1,000}{10,000} \times 100\right)$ रु०

,, = 10%

अर्थात् इस मशीन के सम्बन्ध में प्रति वर्ष इसकी लागत मूल्य का 10% मूल्य ह्रास के रूप में अपलिखित करना है। ऐसा करते रहने से इसके उपयोगी जीवन काल (9 वर्ष) की समाप्ति पर मशीन खाते में केवल 1,000 रु० शेष रह जायेगा जो इसके अवशिष्ट मूल्य के बराबर होगा।

इस विधि को मूल लागत विधि (Original Cost Method), सरल रेखा विधि (Straight Line Method) तथा सम किस्त विधि (Equal Instalment Method) भी कहते हैं।

प्राय: इसका उपयोग पेटेन्ट आदि सम्पत्ति के लिये किया जाता है लेकिन प्लान्ट व मशीन के लिए भी इसका उपयोग किया जा सकता है।

स्थायी किस्त विधि के लाभ—यह विधि अत्यन्त सरल है और इसकी सहायता से सम्पत्ति को पूर्ण रूप से अपलिखित किया जा सकता है।

स्थायी किस्त विधि से हानियाँ—सम्पत्ति के उपयोग के साथ-साथ इसकी कार्यक्षमता घटती जाती है जब कि ह्रास की रकम हमेशा एक समान ही अपलिखित की जाती है। अत: वस्तु की लागत पर इसका प्रभाव समान रूप से नहीं पड़ता। जैसे, यदि ऊपर वाले उदाहरण में मशीन पहले वर्ष 10,000 वस्तुएँ बनाती है, लेकिन 4 वर्ष बाद, इसकी कार्यक्षमता में कमी आ जाने के कारण, यह केवल 8,000 वस्तुएँ ही बना पाती है। तो पहले वर्ष वस्तुओं की लागत पर मूल्य ह्रास का भार $\frac{1000}{10000}$ रु० = 10 पैसे प्रति वस्तु पड़ेगा और 4 वर्ष बाद यह भार $\frac{1000}{8000}$ रु० = 12·5 पैसा प्रति वस्तु पड़ेगा।

अत: जैसे-जैसे मशीन पुरानी होगी, वस्तु की लागत पर भार बढ़ता जावेगा। यह भार एक कारण से और भी बढ़ता जावेगा। मशीन के पुरानी होने के कारण उस पर होने वाला मरम्मत खर्च (Repairs) बढ़ता जावेगा और इसका प्रभाव वस्तु की लागत पर उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ पड़ेगा।

Illustration 40

A sole trader purchases on 1st Jan., 1965, plant and machinery costing Rs. 5,00,000. It is estimated that this asset will last for ten years and that its scrap value at the end of this life will be nil. Give the (i) Plant & Machinery Account and Depreciation Account for the first four years, if depreciation is provided for by the fixed instalment method. The accounting year of the trader ends with the calendar year.

एक एकाकी व्यापारी 1 जनवरी, 1965 को 5,00,000 रु० की प्लान्ट और मशीन खरीदता है। अनुमान है कि सम्पत्ति 10 वर्ष चलेगी और इसके जीवन-काल की समाप्ति पर इसका अवशिष्ट मूल्य कुछ नहीं बचेगा। प्रथम चार वर्षों के लिए (i) प्लान्ट व मशीन खाता और (ii) मूल्य ह्रास खाता बनाइये, यदि मूल्य ह्रास स्थायी किस्त विधि से अपलिखित किया जाता है। व्यापारी का लेखा वर्ष कलेन्डर-वर्ष के साथ समाप्त होता है।

Solution :

ह्रास की दर की गणना

प्लान्ट और मशीन की लागत	5,00,000 रु०
घटाओ अवशिष्ट मूल्य	—
ह्रास जो कि 10 वर्षों में अपलिखित किया जाना है	5,00,000 रु०
ह्रास जो प्रति वर्ष अपलिखित करना हैं = (5,00,000 ÷ 10) रु०	= 50,000 रु०

ह्रास की वार्षिक दर $= \frac{50,000}{5,00,000} \times 100 = 10\%$

Plant and Machinery Account

		Rs.			Rs.
1965 Jan. 1	To Bank a/c	5,00,000	1965 Dec. 31	By Depreciation a/c	50,000
			,, ,,	,, Balance c/d	4,50,000
		5,00,000			5,00,000
1966 Jan. 1	To Balance b/d	4,50,000	1966 Dec. 31	By Depreciation a/c	50,000
			,, ,,	,, Balance c/d	4,00,000
		4,50,000			4,50,000
1967 Jan. 1	To Balance b/d	4,00,000	1967 Dec. 31	By Depreciation a/c	50,000
			,, ,,	,, Balance c/d	3,50,000
		4,00,000			4,00,000
1968 Jan. 1	To Balance b/d	3,50,000	1968 Dec. 31	By Depreciation a/c	50,000
			,, ,,	,, Balance c/d	3,00,000
		3,50,000			3,50,000

Depreciation Account

		Rs.			Rs.
1965 Dec.31	To Plant & Machinery a/c	50,000	1965 Dec.31	By P. & L. a/c	50,000
1966 Dec.31	To Plant & Machinery a/c	50,000	1966 Dec.31	By P. & L. a/c	50,000
1967 Dec.31	To Plant & Machinery a/c	50,000	1967 Dec.31	By P. & L. a/c	50,000
1968 Dec.31	To Plant & Machinery a/c	50,000	1968 Dec.31	By P. & L. a/c	50,000

Illustration 41.

X & Sons. started a manufacturing business on 1st Jan. 1966. They purchased plant as follows:—

1966	Rs.
Jan. 1	40,000
July 1	20,000
1968	
April 1	30,000

Depreciation is provided for on the "Straight line" method @ 10% per annum.

On 30th June, 1967, the plant which had been purchased on 1st July 1966 was sold for Rs. 12,000.

Write up the Plant Account for the three years. The accounts of the business are closed on 31st Dec. every year.

एक्स एण्ड सन्स 1 जनवरी, 1966 को एक उत्पादन व्यवसाय प्रारम्भ करते हैं। उन्होंने निम्नलिखित प्रकार से प्लान्ट का क्रय किया :—

1966	रु०
जनवरी 1	40,000
जुलाई 1	20,000
1968	
अप्रैल 1	30,000

स्थाई किस्त विधि के आधार पर 10% वार्षिक दर से मूल्य ह्रास अपलिखित किया जाता है। 1 जुलाई, 1966 को खरीदी गई प्लान्ट 30 जून, 1967 को 12,000 रु० में बेच दी गई। 3 वर्ष के लिए प्लान्ट खाता बनाइये। व्यवसाय के खाते प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द कर दिये जाते हैं।

Solution. **Plant Account**

		Rs.			Rs.
1966			1966		
Jan. 1	To Bank a/c	40,000	Dec. 31	By Depreciation a/c (4,000+1,000)	5,000
July 1	To Bank a/c	20,000		,, Balance c/d	55,000
		60,000			60,000
1967			1967		
Jan. 1	To Balance b/d	55,000	June 30	By Bank a/c	12,000
			,, ,,	,, Depreciation a/c (For 6 months on Rs. 20,000)	1,000
			,, ,,	,, Loss on sale of Plant a/c	6,000
			Dec. 31	,, Depreciation a/c	4,000
			,, ,,	,, By Balance c/d	32,000
		55,000			55,000
1968			1968		
Jan. 1	To Balance b/d	32,000	Dec. 31	By Depreciation a/c (4,000+2,250)	6,250
April 1	To Bank a/c	30,000	,, ,,	,, Balance c/d	55,750
		62,000			62,000

Illustration 42.

The Rajasthan Goods Transport Company purchased a motor truck for Rs. 30,000, on January 1, 1963. on April 1, 1963 another truck was purchased for Rs. 32,000. On July 1, 1965 the truck purchased on January 1, 1963 was sold for Rs. 12,000 and a new truck was purchased for Rs. 26,000 on the same date.

On May 1, 1966 the company exchanged the latest purchased truck for a new truck with the same vendors. The exchange agreement included the adjustment of Rs. 20,000 for the truck returned and payment of Rs. 10,000 in cash. The payment was made on 3rd May, 1966.

The company further purchased a new truck for Rs. 31,500 on July 1, 1967. This truck met with an accident on Sept. 1, 1968 and was completely wrecked. The company received Rs. 20,000 from the insurance company in full satisfaction of the claim on December 20, 1968.

You are required to prepare the Motor Trucks Account in the books of Rajasthan Goods Transport Company for the years 1963 to 1968. The company

charges depreciation @ 20% per annum according to the Fixed Instalment Method. The books are closed on 31st December each year.

राजस्थान गुड्स ट्रान्सपोर्ट कम्पनी ने 1 जनवरी, 1963 को एक मोटर ट्रक 30,000 रु० में खरीदा। 1 अप्रैल 1963 को दूसरा ट्रक 32,000 रु० में खरीदा गया। 1 जुलाई, 1965 को वह ट्रक जो 1 जनवरी, 1963 को खरीदा गया था, 12,000 रु० में बेच दिया गया तथा उसी दिन एक नया ट्रक 26,000 रु० में खरीदा गया। 1 मई, 1966 को कम्पनी ने सबसे अंत में खरीदे गये ट्रक का उन्हीं विक्रेताओं के पास एक नये ट्रक से बदला कर लिया। विनिमय समझौते के अनुसार लौटाये गये ट्रक के लिए 20,000 रु० का समायोजन करना था तथा 10,000 रु० का नकद भुगतान करना था। नकद भुगतान 3 मई, 1966 को किया गया।

कम्पनी ने 1 जुलाई, 1967 को और एक नया ट्रक 31,500 रु० में खरीदा। यह ट्रक सितम्बर 1, 1968 को दुर्घटना ग्रस्त हो गया तथा पूर्णतया नष्ट हो गया। 20 दिसम्बर, 1968 को कम्पनी ने अपने दावे की पूर्ण संतुष्टि में बीमा कम्पनी से 20,000 रु० प्राप्त किये।

आपको राजस्थान गुड्स ट्रांसपोर्ट कम्पनी की पुस्तकों में 1963 से 1968 तक के लिये मोटर ट्रक खाता बनाना है। कम्पनी स्थायी किस्त विधि के अनुसार 20 प्रतिशत वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित करती है। पुस्तकें प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बंद की जाती हैं।

Solution :

Motor Truck Account

		Rs.			Rs.
1963			1363		
Jan. 1	To Bank a/c	30,000	Dec. 31	By Depreciation a/c	10,800
April 1	,, Bank a/c	32,000	,, ,,	,, Balance c/d	51,200
		62,000			62,000
1964			1964		
Jan. 1	To Balance b/d	51,200	Dec. 31	By Depreciation a/c	12,400
			,, ,,	,, Balance c/d	38,800
		51,200			51,200
1965			1965		
Jan. 1	To Balance b/d	38,800	July 1	By Bank a/c	12,000
July 1	,, Bank a/c	26,000	Dec. 31	,, Depreciation a/c	12,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Loss)	3,000
			,, ,,	,, Balance c/d	37,800
		64,800			64,800
1966			1966		
Jan. 1	To Balance b/d	37,800	May 1	By Vendors' a/c	20,000
May 1	,, Vendors' a/c	30,000	Dec. 31	,, Depreciation a/c	12,133
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Loss)	1,667
			,, ,,	,, Balance c/d	34,000
		67,800			67,800

Motor Truck Account Contd...

		Rs.			Rs.
1967			1967		
Jan. 1	To Balance b/d	34,000	Dec. 31	By Depreciation a/c	15,550
July 1	,, Bank a/c	31,500	,, ,,	,, Balance c/d	49,950
		65,500			65,500
1968			1968		
Jan. 1	To Balance b/d	49,950	Dec. 20	By Bank a/c	20,000
			,, 31	,, Depreciation a/c	11,800
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Loss)	4,150
			,, ,,	,, Balance c/d	14,000
		49,950			49,950

नोट :—1965, 1966 व 1968 में विभिन्न तिथियों पर बिक्री व दुर्घटना के कारण जो नुकसान हुआ है, उसको उन तिथियों पर 'Loss on sale of Motor Truck Account' में नहीं ले जाया गया है। इसी प्रकार विभिन्न तिथियों पर मूल्यह्रास के विवरण भी नहीं दिखाये गये हैं। वर्ष के अन्त में ही ह्रास की रकम दिखाई गई है तथा वर्ष के अन्त में ही नुकसान को लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित किया गया है।

(2) क्रमागत ह्रास विधि (Written down Value Method)

इस विधि के अंतर्गत मूल्य ह्रास की एक दर निश्चित कर दी जाती है और उस दर से सम्पत्ति के घटे हुये पुस्तक मूल्य पर ह्रास निकाला जाता है। जैसे, 10,000 रु० लागत मूल्य की सम्पत्ति का इस विधि से 10% वार्षिक ह्रास काटना है तो प्रथम वर्ष में 1,000 रु० ह्रास काटा जावेगा और तब सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य 9,000 रु० रह जायेगा। दूसरे वर्ष में इस 9,000 रु० का 10% अर्थात् 900 रु० ह्रास काटा जावेगा। इसी प्रकार प्रति वर्ष बचे हुए पुस्तक मूल्य के 10% के बराबर ह्रास काटा जाता रहेगा। यह क्रम तब तक चलता रहेगा जब तक सम्पत्ति का उपयोगी जीवन समाप्त नहीं हो जाता। इस विधि को 'घटते हुए शेष विधि' (Diminishing Balance Method) तथा 'घटती हुई किस्त विधि' (Reducing Instalment Method) भी कहते हैं।

क्रमागत ह्रास विधि के लाभ—

(i) प्रारम्भ के वर्षों में सम्पत्ति पर अपलिखित किये जाने वाले ह्रास की रकम बहुत अधिक होती है और यह उचित भी जान पड़ता है क्योंकि नई सम्पत्ति के प्रयोग के शुरू के वर्षों में घिसावट तेजी से होती है।

(ii) सम्पत्ति कभी भी पूर्ण रूप से अपलिखित नहीं हो सकती, अतः हमेशा लाभ-हानि खाते में ह्रास के रूप में कुछ रकम अवश्य ले जानी होगी। 'स्थायी किस्त विधि' में सम्पत्ति का ह्रास काटते काटते पुस्तकों में उसका मूल्य शून्य हो सकता है जबकि उसका उपयोग अभी जारी हो।

(iii) सम्पत्ति जैसे-जैसे पुरानी हो जाती है, इसकी कार्यक्षमता कम होती जाती है, अतः ह्रास की रकम भी कम होनी चाहिए। यह इस विधि में सम्भव हो जाता है।

(iv) यह विधि अपनाने में आसान है।

(v) सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्रमुख खर्चे दो होते हैं—ह्रास एवं मरम्मत। इस विधि में दोनों का योग प्रति वर्ष अधिक समान रहता है क्योंकि प्रारम्भ के वर्षों में जब मशीन नई होगी तो ह्रास की रकम अधिक होगी लेकिन मरम्मत की रकम कम होगी और बाद के वर्षों में जब ह्रास की रकम कम होती जावेगी तो मरम्मत की रकम बढ़ती जावेगी।

क्रमागत ह्रास विधि से हानियां—

(i) ह्रास की दर प्रायः बहुत कम रखी जाती है और इस कारण पर्याप्त ह्रास की व्यवस्था नहीं हो पाती।

(ii) इस विधि की सरलता के कारण सम्पत्तियों को इस प्रकार एक साथ मिला दिया जाता है कि किसी सम्पत्ति की अलग से पुस्तकों में पहचान (Identify) करना कठिन हो जाता है और कभी-कभी सम्पत्ति के नष्ट हो जाने के बाद भी पुस्तकों में उसका शेष अन्य सम्पत्तियों के साथ खड़ा रहता है।

क्रमागत ह्रास विधि का उपयोग—इस विधि की हानियां वास्तव में ठोस नहीं हैं। सम्पत्तियों के सम्बन्ध में प्लान्ट रजिस्टर जैसी व्यवस्था का उपयोग किया जाता है तो यह विधि बहुत अच्छी है। यही कारण है कि इस विधि का उपयोग सर्वाधिक होता है। भारतीय आयकर विधान में भी इसी विधि को मान्यता दी गई है। इस विधि की सबसे बड़ी कमी यह है कि यह ऐसी सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्रयुक्त नहीं की जा सकती जिसका अवशिष्ट मूल्य शून्य हो जावेगा, जैसे पेटेन्ट। पेटेन्ट की वैधानिक आयु 16 वर्ष होती है और इसके बाद इसका मूल्य शून्य हो जाता है। अतः ऐसी सम्पत्ति के ह्रास के सम्बन्ध में क्रमागत ह्रास विधि नहीं अपनाई जा सकती। सामान्यतया इस विधि का उपयोग प्लान्ट, मशीन, फर्नीचर आदि का ह्रास अपलिखित करने में किया जाता है।

स्थायी किस्त विधि से भिन्नता:—स्थायी किस्त विधि में प्रतिवर्ष एक समान राशि ह्रास के रूप में अपलिखित की जाती है जबकि क्रमागत ह्रास विधि में प्रतिवर्ष अलग-अलग राशि ह्रास के रूप में अपलिखित की जावेगी। यह राशि हर वर्ष कम होती जावेगी। इन दोनों विधियों में एक बड़ा अन्तर यह भी है कि स्थायी किस्त विधि में एक समय ऐसा आयेगा जबकि ह्रास घटते-घटते सम्पत्ति का पुस्तक मूल्य शून्य हो जावेगा, लेकिन क्रमागत ह्रास विधि में पुस्तक मूल्य शून्य कभी नहीं होगा चाहे सम्पत्ति का ह्रास किसी भी दर पर कितनी ही लम्बी अवधि तक काटा जाता रहे।

Illustration 43

A machine was purchased on 1st Jan., 1966 at a price of Rs. 1,00,000. Rate of depreciation is 10% per annum. Prepare the Machine Account by (a) straight line method and (b) diminishing balance method in a columnar form for the first three years ending on 31st Dec., each year.

एक मशीन 1 जनवरी, 1966 को 1,00,000 रु० की कीमत पर खरीदी गई। ह्रास की दर 10% वार्षिक है। 31 दिसम्बर को समाप्त होने वाले प्रथम 3 वर्षों के लिए (अ) स्थायी किस्त विधि से, तथा (ब) क्रमागत ह्रास विधि से ह्रास अपलिखित करते हुए स्तम्भाकार मशीन खाता बनाइये।

Solution :

Machinery Account

		(a) Rs.	(b) Rs.			(a) Rs.	(b) Rs.
1966 Jan. 1	To Bank a/c	1,00,000	1,00,000	1966 Dec. 31	By Depreciation a/c	10,000	10,000
				,, ,,	,, Balance c/d	90,000	90,000
		1,00,000	1,00,000			1,00,000	1,00,000
1967 Jan. 1	To Balance b/d	90,000	90,000	1967 Dec. 31	By Depreciation a/c	10,000	9,000
				,, ,,	,, Balance c/d	80,000	81,000
		90,000	90,000			90,000	90,000
1968 Jan. 1	To Balance b/d	80,000	81,000	1968 Dec. 31	By Depreciation a/c	10,000	8,100
				,, ,,	,, Balance c/d	70,000	72,900
		80,000	81,000			80,000	81,000

(a)—स्थायी किस्त विधि से

(b)—क्रमागत ह्रास विधि से

स्थायी किस्त विधि और क्रमागत ह्रास विधि के सम्बन्ध में विशेष बातें—

सम्पत्ति के सम्बन्ध में ह्रास अपलिखित करने की उपरोक्त दो विधियाँ ही सबसे अधिक प्रचलित हैं। इसलिए इनका व्यावहारिक महत्व अधिक है। अन्य विधियों का व्यावहारिक महत्व कम है और शैक्षणिक (Academic) महत्व अधिक है। उपरोक्त दो विधियों के अनुसार ह्रास अपलिखित करते समय निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिये :—

(i) यदि ह्रास की दर वार्षिक दी गई है—

(क) सम्पत्ति पर ह्रास की गणना समय के अनुसार की जावेगी;

(ख) यदि सम्पत्ति में वर्ष के बीच किसी तारीख को वृद्धि की गई है तो प्रथम वर्ष के ह्रास की गणना उसी तारीख से वर्ष के अन्त तक के समय के हिसाब से की जावेगी;

(ग) यदि सम्पत्ति में वृद्धि के सम्बन्ध में तारीख न दी गई हो तो निम्न में कोई भी परिस्थिति मानी जा सकती है—

(अ) वृद्धि वर्ष के मध्य में हुई थी;

(ब) वृद्धि वर्ष के प्रारम्भ में हुई थी; अथवा

(स) वृद्धि वर्ष के अन्त में हुई थी।

जैसी भी परिस्थिति की कल्पना की जावे, टिप्पणी (Note) लिख देनी चाहिए।

(ii) यदि ह्रास की दर वार्षिक न हो तो वर्ष के अन्त में सम्पत्ति खाते में जितना शेष होगा उस पूरी रकम पर ह्रास अपलिखित किया जावेगा और इस बात का ध्यान नहीं रखा जावेगा कि सम्पत्ति में वृद्धि कब हुई थी।

Illustration 44.

A Machine was purchased on 1st January, 1965 for Rs. 10,000. Additions were made Rs. 2,000 in 1966 and Rs. 5,000 on July 1, 1967.

Prepare the Machinery Account for the first three years ending on 31st Dec., each year and depreciating it at 10% per annum on the reducing balance.

1 जनवरी, 1965 को 10,000 रु० में मशीन खरीदी गई। इसमें 1966 में 2,000 रु० की तथा 1 जुलाई, 1967 को 5,000 रु० की वृद्धि की गई।

क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार 10% वार्षिक दर पर ह्रास काटते हुये 31 दिसम्बर को समाप्त होने वाले प्रथम 3 वर्षों के लिए मशीनरी खाता बनाइये।

Solution :

Machinery Account

1965		Rs.	1965		Rs.
Jan. 1	To Bank a/c	10,000	Dec. 31	By Depreciation a/c	1,000
			,, ,,	,, Balance c/d	9,000
		10,000			10,000
1966			1966		
Jan. 1	To Balance b/d	9,000	Dec. 31	By Depreciation a/c	
July 1	,, Bank a/c	2,000		Rs. (900 + 100)	1,000
			,, ,,	,, Balance c/d	10,000
		11,000			11,000
1967			1967		
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	Dec. 31	By Depreciation a/c	
July 1	,, Bank a/c	5,000		Rs. (1,000 + 250)	1,250
			,, ,,	,, Balance c/d	13,750
		15,000			15,000

नोट : यह माना गया है कि सन् 1966 में वृद्धि 1 जुलाई को की गई थी।

Illustration 45.

Solve the above illustration if the rate of depreciation is 10%. उपरोक्त उदाहरण को हल कीजिए यदि ह्रास की दर 10% हो।

Solution : **Machinery Account**

		Rs.			Rs.
1965 Jan. 1	To Bank a/c	10,000	1965 Dec. 31	By Depreciation a/c	1,000
			,, ,,	,, Balance c/d	9,000
		10,000			10,000
1966 Jan. 1	To Balance b/d	9,000	1966 Dec. 31	By Depreciation a/c	1,100
July 1	,, Bank a/c	2,000	,, ,,	,, Balance c/d	9,900
		11,000			11,000
1967 Jan. 1	To Balance b/d	9,900	1967 Dec. 31	By Depreciation a/c	1,490
July 1	,, Bank a/c	5,000	,, ,,	,, Balance c/d	13,410
		14,900			14,900

Illustration 46.

Machinery was purchased for Rs. 1,00,000 including a boiler worth Rs. 10,000. For the first four years, the Machinery Account had been credited at 10% per annum with the amount of depreciation on the written down value method. During the fifth year (the current year), the boiler is damaged and sold for Rs. 2,500.

Prepare the Machinery Account for the current year.

1,00,000 रु० की मशीन खरीदी गई जिसमें 10,000 रु० का एक बायलर भी शामिल था। प्रथम चार वर्षों में मशीन खाते को क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार 10% वार्षिक दर पर ह्रास की रकम से क्रेडिट किया गया। पांचवें वर्ष में, जो कि चालू वर्ष है, बायलर क्षतिग्रस्त हो जाता है और 2,500 रु० में बेच दिया जाता है।

चालू वर्ष के लिए मशीन खाता बनाइये।

Solution :

Machinery Account

		Rs.			Rs.
5th year (Commencement)	To Balance b/d	65,610	5th year Time of Sale	By Cash a/c	2,500
				,, Loss on Sale of Machinery a/c	4,061
			end	,, Depreciation a/c	5,905
			,,	,, Balance c/d	53,144
		65,610			65,610

Working Note :—(i) मशीन खाते का चालू वर्ष में प्रारम्भिक शेष निम्न प्रकार ज्ञात किया गया है :—

	Rs.
Cost price of the machine	1,00,000
Less Depreciation for the first year @ 10% p.a.	10,000
W.D.V.	90,000
Less Depreciation for the second year @ 10% p.a.	9,000
W.D.V.	81,000
Less Depreciation for the third year @ 10% p.a.	8,100
W.D.V.	72,900
Less Depreciation for the fourth @ 10 % p.a.	7,290
W.D.V. i.e. Opening Balance	65,610

(ii) चूंकि वायलर की कीमत 10,000 रु० थी अत: पांचवें वर्ष में उसका प्रारम्भिक शेष 6,561 रु० होगा।

(iii) वर्ष के अन्त में 'वायलर की विक्री पर हानि खाता' लाभ-हानि खाते को हस्तान्तरित कर दिया जावेगा।

Illustration 47

A machine was purchased on 1st January, 1964 for Rs. 19,400 and Rs. 600 were spent on its erection. On 1st July in the same year additional machinery costing Rs. 10,000 was acquired. On 1st July, 1966, the machinery purchased on 1st January 1964, having become obsolete, was auctioned for Rs. 8,000 and on the same date fresh machinery was purchased at a cost of Rs. 15,000.

Depreciation was provided annually on 31st Dec. at the rate of 10% per annum on the original cost of the asset. In 1967, however, the method was changed to one of writing off 15% annually on the written down value.

Give the Machinery Account as it would stand at the end of each year from 1964 to 1967. Make your calculations to the nearest rupee.

1 जनवरी, 1964 को 19,400 रु० में एक मशीन खरीदी गई और 600 रु० उसकी स्थापना पर खर्च हुये। उसी वर्ष 1 जुलाई को 10,000 रु० की अतिरिक्त मशीन खरीदी गई। 1 जुलाई 1966 को 1 जनवरी, 1964 को खरीदी गई मशीन अप्रचलन के कारण 8,000 रु० में नीलाम कर दी गई और उसी दिन 15,000 रु० की लागत पर नई मशीन खरीदी गई।

सम्पत्ति की मूल लागत पर 10% वार्षिक दर से प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को ह्रास की व्यवस्था की जाती रही। 1967 में यह विधि 15% वार्षिक दर पर क्रमागत ह्रास विधि में परिवर्तित कर दी गई।

मशीन खाता बनाइये जैसा कि यह 1964 से 1967 तक के प्रत्येक वर्ष के अन्त में खुला होगा। गणना निकटतम रुपये तक करिये।

Solution :

Machinery Account

		Rs.			Rs.
1964			1964		
Jan. 1	To Bank a/c	19,400	Dec. 31	By Depreciation a/c Rs. (2,000+500)	2,500
,, ,,	,, Bank a/c (Erection)	600	,, ,,	,, Balance c/d	27,500
July 1	,, Bank a/c	10,000			
		30,000			30,000
1965			1965		
Jan. 1	To Balance b/d	27,500	Dec. 31	By Depreciation a/c (10% on Rs. 30,000)	3,000
			,, ,,	,, Balance c/d	24,500
		27,500			27,500
1966			1966		
Jan. 1	To Balance b/d	24,500	July 1	By Bank a/c	8,000
July 1	,, Bank a/c	15,000	,, ,,	By Depreciation a/c	1,000
			,, ,,	By Loss on Sale of Machinery a/c	7,000
			Dec. 31	,, Depreciation a/c Rs. (1,000+750)	1,750
			,, ,,	,, Balance c/d	21,750
		39,500			39,500
1967			1967		
Jan. 1	To Balance b/d	21,750	Dec. 31	By Depreciation a/c (15% of Rs. 21,750)	3,263
			,, ,,	,, Balance c/d	18,487
		21,750			21,750

नोट :—31 दिसम्बर, 1966 को Loss on Sale of Machinery Account का शेष लाभ-हानि खाते को हस्तान्तरित कर दिया जावेगा।

Illustration 48.

Hari & Sons, who depreciate their machinery at 10% per annum on reducing instalment system, had Rs. 97,200 (Dr.) balance in the Machinery Account on 1st January, 1968.

During 1968, part of machinery purchased on 1st January, 1966 for Rs. 8,000 was sold for Rs. 4,500 on 1st July, 1968 and a new machinery was

installed on the same day at a cost of Rs.15,000. Rs.800 were paid as installation charges.

It was decided to change the method of depreciation from Reducing Instalment Method to Straight Line Method with effect from 1st January, 1966 and adjust the difference on 31st Dec., 1968. The rate of depreciation remains unchanged.

Show the Machinery Account and also ascertain the amount chargeable to P. & L. Account as depreciation and obsolescence loss in 1968.

हरी एण्ड सन्स, जो कि अपनी मशीन पर 10% वार्षिक दर से क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार ह्रास अपलिखित करते हैं, 1 जनवरी, 1968 को मशीन खाते में 97,200 रु० डेबिट शेष रखते थे।

1968 में, मशीन का एक अंश, जो कि 1 जनवरी, 1966 को 8,000 रु० में खरीदा गया था, 1 जुलाई, 1968 को 4,500 रु० में बेच दिया गया और उसी दिन 15,000 रु० की लागत पर एक नई मशीन की स्थापना की गई। स्थापना व्यय 800 रु० हुआ।

यह निश्चय किया गया कि ह्रास अपलिखित करने की क्रमागत ह्रास विधि को 1 जनवरी, 1966 से स्थायी किस्त विधि में बदल दिया जाये और 31 दिसम्बर, 1968 को अन्तर का समायोजन कर दिया जाये। ह्रास की दर अपरिवर्तित रहती है।

मशीन खाता बनाइये और उस राशि का निर्धारण कीजिए जो ह्रास तथा अप्रचलन से हानि के कारण लाभ-हानि खाते को 1968 में ले जाई जावेगी।

Solution :

Machinery Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	97,200	July 1	By Cash a/c	4,500
July 1	To Cash a/c (Cost of new machine)	15,000	,, ,,	,, Depreciation a/c	324
			,, ,,	,, Loss on Sale of Machinery a/c	1,656
,, ,,	,, Cash a/c (Installation Charges)	800	Dec.31	By Depreciation a/c	13,110
			,, ,,	,, Balance c/d	93,410
		1,13,000			1,13,000

Working Notes:—

(i) अप्रचलन से हुई हानि का निर्धारण :

		रु०
1 जनवरी 1968 को (बेची गई) मशीन की लागत	=	8,000
1966 का 10% वार्षिक दर से क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार ह्रास	=	800
1 जनवरी 1967 को उक्त मशीन का पुस्तक मूल्य	=	7,200
1967 का 10% वार्षिक दर से क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार ह्रास	=	720

		रु०
1 जनवरी, 1968 को उक्त मशीन का पुस्तक मूल्य	=	6,480
1968 के प्रथम छः महीने का ह्रास		324
1 जुलाई, 1968 को उक्त मशीन का पुस्तक मूल्य	=	6,156
मशीन का विक्रय मूल्य प्राप्त हुआ	=	4,500
अप्रचलन से हुआ नुकसान	=	1,656

(ii) ह्रास की गणना निम्न प्रकार की गई है:—

क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार 10 प्रतिशत ह्रास काटने के बाद 1 जनवरी, 1968 को मशीनरी का पुस्तक मूल्य 97,200 रु० है। चूंकि परिवर्तित ह्रास विधि 1 जनवरी, 1966 से प्रभावी मानी गई है, अतः हमें उक्त मशीनरी का 1 जनवरी, 1966 को पुस्तक मूल्य ज्ञात करना होगा जो निम्न प्रकार है :—

माना कि 1 जनवरी, 1966 को पुस्तक मूल्य 100 रु० है

उक्त मशीनरी का दो वर्ष तक क्रमागत ह्रास विधि से ह्रास अपलिखित करने के बाद 1 जनवरी, 1968 को अपलिखित मूल्य 81 रु० होगा।

∵ 1 जनवरी, 1968 को 81 रु० मशीनरी का अपलिखित मल्य है तो 1 जनवरी 1966 को पुस्तक मूल्य है 100 रु०

∴ 1 जनवरी 1968 को 1 रु० ,, ,, ,, $\frac{100}{81}$ रु०

∴ 1 जनवरी, 1968 को 97,200 रु० ,, ,, ,, $=\frac{100}{81}\times 97{,}200$ रु०

$=1{,}20{,}000$ रु० है।

इसमें से 8,000 रु० वाली मशीनरी बेच दी गई है, अतः 1,12,000 रु० की मशीनरी के सम्बन्ध में ही गत दो वर्ष (1966 व 1967) के ह्रास का समायोजन करना है।

दो वर्ष का स्थायी किस्त विधि के अनुसार ह्रास

$=(11{,}200+11{,}200)$ रु० $=22{,}400$ रु०

दो वर्ष का क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार ह्रास

$=(11{,}200+10{,}080)$ रु० $=21{,}280$ रु०

शेष ह्रास जो अब अपलिखित करना है $=1{,}120$ रु०

ह्रास की कुल राशि :

(i)	ह्रास विधि परिवर्तन के कारण समायोजित राशि	= 1,120 रु०
(ii)	1,12,000 रु० की मशीनरी पर स्थायी किस्त विधि के अनुसार 10 प्रतिशत वार्षिक दर पर ह्रास	= 11,200 रु०
(iii)	15,800 रु० की मशीनरी पर 6 माह का ह्रास	= 790 रु०
	कुल ह्रास	= 13,110 रु०

ह्रास की दर ज्ञात करना—

क्रमागत ह्रास विधि के अन्तर्गत सम्पत्ति का ह्रास प्रति वर्ष उस दर पर अपलिखित करना चाहिए जिससे कि सम्पत्ति के जीवन काल के अन्त में उसका पुस्तक मूल्य उतना रह जाय जितना उसका अवशिष्ट मूल्य (Scrap value) होगा। यदि सम्पत्ति का लागत मूल्य, उसका जीवन काल और उसका अवशिष्ट मूल्य दिया हुआ हो तो क्रमागत ह्रास विधि के अन्तर्गत अपनाई जाने वाली ह्रास की दर निम्न सूत्र से निकाली जावेगी:—

$$\text{C. P.} \times \left(\frac{100-R}{100}\right)^n = \text{Scrap Value} \text{ अवशिष्ट मूल्य}$$

C. P. का अर्थ है Cost Price अर्थात् लागत मूल्य,

R का अर्थ है Rate of Depreciation अर्थात् ह्रास की दर, और

n का अर्थ है सम्पत्ति का उपयोगी जीवन काल।

उदाहरण—एक मशीन 10,000 रु० में खरीदी गई। अनुमान है कि यह 4 वर्ष चलेगी और तब इसका अवशिष्ट मूल्य 625 रु० रह जावेगा। क्रमागत ह्रास विधि के लिए इसकी ह्रास की दर का निर्धारण कीजिये।

सूत्र के अनुसार—

$$\text{C. P.} \times \left(\frac{100-R}{100}\right)^n = \text{Scrap Value}$$

अर्थात् $10.000 \times \left(\frac{100-R}{100}\right)^4 = 625$

अर्थात् $\left(\frac{100-R}{100}\right)^4 = \frac{625}{10,000}$

अर्थात् $\frac{100-R}{100} = 4\sqrt{\frac{625}{10,000}}$

अर्थात् $\frac{100-R}{100} = \frac{5}{10}$

अर्थात् $\frac{100-R}{100} = \frac{1}{2}$

अर्थात् $200—2R = 100$

अर्थात् $—2R = 100—200$

अर्थात् $—2R = —100$

अर्थात् $R = 50$

अतः क्रमागत ह्रास विधि के लिए ह्रास की दर 50% वार्षिक होगी।

Illustration 49.

Machine costs Rs. 10,000. Expected life is 3 years. Residual value is expected at Rs. 1250. Show the Machine Account for 3 years, if depreciation is charged on written down value basis.

मशीन की लागत 10,000 रु० है। अनुमानित जीवन 3 वर्ष है। अवशिष्ट मूल्य 1,250 रु० अनुमानित है। 3 वर्षों के लिए मशीन खाता बनाइये यदि क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार ह्रास अपलिखित किया जाता है।

Solution :

ह्रास की दर की गणना

फार्मुला के अनुसार—$C.P. \times \left(\frac{100 - \text{Rate of Dep.}}{100}\right)^n = \text{Scrap Value}$

मूल्य रखने पर—$10{,}000 \times \left(\frac{100 - \text{Rate of Dep.}}{100}\right)^3 = 1{,}250$

इसका हल Logarithmic Table की सहायता से किया जा सकता है।

हल करने पर—ह्रास की दर=50% वार्षिक

Machine Account

		Rs.			Rs.
Year 1	To Bank a/c	10,000	Year 1	By Depreciation a/c	5,000
			,,	,, Balance c/d	5,000
		10,000			10,000
Year 2	To Balance b/d	5,000	Year 2	By Depreciation a/c	2,500
			,,	,, Balance c/d	2,500
		5,000			5,000
Year 3	To Balance b/d	2,500	Year 3	By Depreciation a/c	1,250
			,,	,, Balance c/d	1,250
		2,500			2,500

नोट :—3 वर्ष के अंत में मशीन खाते का शेष अवशिष्ट मूल्य के बराबर है।

(3) **वार्षिक वृत्ति प्रणाली (Annuity Method)**—

मूल्य ह्रास अपलिखित करने के सम्बन्ध में जो दो विधियां ऊपर बताई गई हैं, उनके अनुसार सम्पत्ति के लागत-मूल्य अथवा उसके किसी भाग को ही अपलिखित किया जाता है। कुछ व्यवसायियों की मान्यता है कि यदि सम्पत्ति के लागत-मूल्य के बराबर राशि व्यवसाय के बाहर विनियोग की जाती तो उस पर व्याज के रूप में आमदनी भी होती। अतः सम्पत्ति के जीवन काल में केवल उसके लागत-मूल्य को ही अपलिखित नहीं किया जाना चाहिए वल्कि उस पर एक निश्चित दर से लगाया गया व्याज भी अपलिखित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, 1 जनवरी 1962 को एक जमीन का टुकड़ा 5 वर्ष के पट्टे पर 10,000 रु० में लिया गया। यदि उक्त 10,000 रु० को बाजार में व्याज प्रतिभूतियों (Interest Securities) में लगाया जाय तो 5% व्याज की दर पर विनियोग किया जा सकता है। 'वार्षिक वृत्ति प्रणाली' पर ह्रास काटने वाले व्यवसायियों की मान्यता है कि 5 वर्ष में पट्टे का लागत-मूल्य अर्थात् 10,000 रु० ही अपलिखित न किया जावे वल्कि पट्टे खाते के प्रारम्भिक शेष पर प्रति वर्ष 5% दर से लगाई गई व्याज की राशि भी अपलिखित की जावे। इसके लिए कितनी राशि प्रति वर्ष ह्रास के रूप में

काटी जावे, यह 'ह्रास वार्षिकी तालिका' (Depreciation Annuity Table) की सहायता से ज्ञात करना होगा। इस तालिका का एक अंश नीचे दिया जाता है :—

ह्रास वार्षिकी तालिका का एक अंश

(Extract from Depreciation Annuity Table)

यदि किसी सम्पत्ति की लागत 1 रु० है और वार्षिक वृत्ति प्रणाली द्वारा ह्रास अपलिखित करना है तो अमुक वर्षों के लिए अमुक ब्याज दर पर प्रतिवर्ष निम्नलिखित राशि ह्रास के रूप में अपलिखित करनी होगी :—

वर्ष	ब्याज की दर			
	3%	4%	5%	6%
3	·353530	·360349	·367208	·374110
4	·269027	·275490	·282012	·288591
5	·218355	·224628	·230975	·237396
10	·117231	·123291	·129504	·135868
15	·083767	·089941	·096342	·102963
20	·067216	·073582	·080243	·087185

तालिका का स्पष्टीकरण—

माना कि किसी सम्पत्ति का मूल्य 10,000 रु० है और उसे 10 वर्ष में वार्षिक वृत्ति प्रणाली द्वारा अपलिखित करना है तथा ब्याज की दर 5% है तो उपरोक्त तालिका की सहायता से वार्षिक ह्रास की राशि इस प्रकार निकाली जावेगी :—

∵ 1 रु० की 10 वर्ष में 5% ब्याज सहित व्यवस्था करने के लिए प्रतिवर्ष ह्रास काटना पड़ेगा = ·129504 रु०

∴ 10,000 रु० की ब्याज सहित व्यवस्था करने के लिए ह्रास काटना पड़ेगा = ·129504 × 10,000 रु०
= 1295·04 रु०

अर्थात् प्रतिवर्ष 1295·04 रु० ह्रास अपलिखित किया जावेगा। इस प्रकार 10 वर्ष में 1295·04 रु० × 10 = 12,950 रु० 40 पै० ह्रास चार्ज किया जावेगा जिससे 10,000 रु० सम्पत्ति का लागत मूल्य और 2,950·40 रु० ब्याज अपलिखित हो जावेगा।

जैसा कि स्पष्ट है ह्रास की रकम प्रतिवर्ष एक समान (1295·04 रु०) होगी।

लेखा सम्बन्धी प्रविष्टियां Accounting entries)—

सम्पत्ति खरीदने पर	Asset a/c Dr. To Cash or Bank a/c (Asset purchased.)	(लागत–मूल्य से)
प्रत्येक वर्ष के अन्त में	Asset a/c Dr. To Interest a/c (Interest charged.)	(सम्पत्ति खाते के प्ररम्भिक शेष पर ब्याज की रकम से)
	Depreciation a/c Dr. To Asset a/c (Depreciation charged.)	(वार्षिक ह्रास की राशी से)

P. & L. a/c Dr.
To Depreciation a/c
(Balance transferred.)

Interest a/c Dr.
To P. & L. a/c
(Balance transferred.)

Illustration 50

A company acquires a lease costing Rs. 15,000 for a term of 5 years. You find from the Annuity Tables that in order to write off Re. 1 in 5 years on annuity method at 5% interest per annum, the amount to be written off annually as depreciation amounts to Rs. 0·230975. Prepare the Lease Account for all the five years, and show the annual net charge on Profit and Loss Account during each of these five years.

एक कम्पनी 15,000 रु० की लागत पर 5 वर्ष के लिए पट्टा लेती है। वार्षिक वृत्ति तालिकाओं से आप ज्ञान करते हैं कि 5% वार्षिक ब्याज पर वार्षिक वृत्ति प्रणाली से 1 रु० को पांच वर्ष में अपलिखित करने के लिए 0·230975 रु० वार्षिक ह्रास अपलिखित करना होगा। पांचों वर्षों के लिए पट्टा खाता खोलिए और बताइये कि प्रत्येक वर्ष में लाभ–हानि खाते पर शुद्ध भार कितना पड़ेगा।

Solution :

∵ 1 रु० को अपलिखित करने के लिए वार्षिक ह्रास = 0·230975 रु०
∴ 15,000 रु० को ,, ,, ,, = (·230975 × 15,000) रु०
= 3,464·62 रु०

Lease Account

		Rs.			Rs.
1st Year	To Bank a/c	15,000.00	1st Year	By Depreciation a/c	3,464.62
	,, Interest a/c	750.00		,, Balance c/d	12,285.38
		15,750.00			15,750.00
2nd Year	To Balance b/d	12,285.38	2nd Year	By Depreciation a/c	3,464.62
	,, Interest a/c	614.27		,, Balance c/d	9,435.03
		12,899.65			12,899.65
3rd Year	To Balance b/d	9,435.03	3rd Year	By Depreciation a/c	3,464.62
	,, Interest a/c	471.75		,, Balance c/d	6,442.16
		9,906.78			9,906.78
4th Year	To Balance b/d	6,442.16	4th Year	By Depreciation a/c	3,464.62
	,, Interest a/c	322.11		,, Balance c/d	3,299.65
		6,764.27			6,764.27
5th Year	To Balance b/d	3,299.65	5th Year	By Depreciation a/c	3,464.63
	,, Interest a/c	164.98			
		3,464.63			3,464.63

Statement showing the net charge on P. & L. Account

Year	Depreciation (Dr.)	Interest (Cr.)	Net Charge (Dr.)
	Rs.	Rs.	Rs.
1st	3,464.62	750.00	2,714.62
2nd	3,464.62	614.27	2,850.35
3rd	3,464.62	471.75	2,992.87
4th	3,464.62	322.11	3,142.51
5th	3,464.63	164.98	3,299.65
Total	17,323.11	2,323.11	15,000.00

नोट—इस विवरण से ज्ञात होगा कि पाँच वर्ष का जो शुद्ध भार लाभ-हानि खातों पर पड़ेगा, वह सम्पत्ति के लागत मूल्य (15,000 रु०) के बराबर होगा जैसा कि स्थायी किस्त विधि या क्रमागत ह्रास विधि के अंतर्गत होता है। इस विधि की यह विशेषता है कि लाभ-हानि खाते पर शुद्ध भार प्रारम्भिक वर्ष में कम होगा तथा समय गुजरने के साथ-साथ बढ़ता जावेगा।

वार्षिक वृत्ति प्रणाली का उपयोग—

यह विधि लम्बे पट्टों (Long-term leases) के सम्बन्ध में, जिनमें काफी रकम विनियोग की जाती है, उपयोग में लाई जाती है। प्लान्ट और मशीन के सम्बन्ध में ह्रास अपलिखित करने के लिए यह विधि उपयुक्त नहीं है क्योंकि इनमें वृद्धि (Addition) तथा अप्रचलन (Obsolescence) के समय प्रत्येक वार नई गणना करनी होगी।

वार्षिक वृत्ति प्रणाली से लाभ—

इस विधि से यह लाभ है कि सम्पत्ति की मूल लागत ही लाभ-हानि खाते से अपलिखित नहीं हो जाती है बल्कि उस पर मिल सकने वाले ब्याज की राशि भी अपलिखित हो जाती है। इसलिए यह विधि ऐसी सम्पत्तियों के लिए उपयुक्त रहती है जिनमें अधिक पूंजी लगानी पड़े, जैसे, पट्टे पर ली गई जमीन।

वार्षिक वृत्ति प्रणाली से हानियां—

यह प्रणाली ऐसी सम्पत्तियों के लिए उपयुक्त नहीं है जिनमें बार-बार परिवर्तन होते हों अथवा जो अल्प समय के लिए ली गई हों, जैसे प्लान्ट, मशीन और अल्प समय वाले पट्टे आदि। यह विधि लेखा के दृष्टि से कुछ कठिन भी है। इस विधि के अनुसार लाभ-हानि खाते पर भी प्रति वर्ष एक सा भार नहीं पड़ेगा तथा यह भार बढ़ता जायेगा क्योंकि ह्रास की रकम प्रतिवर्ष एक समान रहेगी जबकि ब्याज की रकम प्रतिवर्ष कम होती जावेगी।

(4) ह्रास कोष विधि (Depreciation Fund Method or Sinking Fund Method)—

इस विधि में प्रति वर्ष एक निश्चित रकम सम्पत्ति के ह्रास के रूप में लाभ-हानि खाते से ह्रास कोष खाते (Depreciation Fund Account) में क्रेडिट कर दी जाती है। इस राशि का व्यवसाय के बाहर विनियोग कर दिया जाता है। विनियोग से होने वाला ब्याज भी ह्रास कोष में जमा (Credit) कर दिया जाता है और इसका भी विनियोग कर दिया जाता है। इस प्रकार ब्याज पर भी ब्याज प्राप्त होने

लगाता है। सम्पत्ति की आयु समाप्त होने पर विनियोगों को बेचकर रकम प्राप्त कर ली जाती है और इस रकम से नई सम्पत्ति खरीद ली जाती है।

इस विधि में सम्पत्ति खाते में से ह्रास की रकम प्रति वर्ष घटाकर नहीं दिखाई जाती बल्कि सम्पत्ति खाता लागत मूल्य ही दिखाता रहता है और जब सम्पत्ति की आयु समाप्त हो जाती है तो ह्रास कोष खाते का शेष इस सम्पत्ति खाते में हस्तान्तरित करके दोनों खातों को बन्द कर दिया जाता है।

इस विधि को अपनाने से प्रमुख लाभ यह होता है कि सम्पत्ति को प्रतिस्थापित करते समय धन की व्यवस्था हो जाती है और व्यवसाय पर आर्थिक भार नहीं पड़ता। लेकिन इस विधि को अपनाने में कुछ जोखिम भी है। विनियोगों का यदि बेचने के समय बाजार-मूल्य गिर जावे तो उससे हानि होगी और वह लक्ष्य अधूरा रह जाता है जिसके लिए 'ह्रास कोष' की स्थापना की गई थी।

इस विधि का उपयोग—यह विधि ऐसी सम्पत्ति के सम्बन्ध में अपनाई जावेगी जो कीमती है और जिसे एक निश्चित अवधि के पश्चात् प्रतिस्थापित करना है, जैसे पट्टे पर ली गई खान।

ह्रास कोष के लिए मान्यताएं (Assumptions for Depreciation Fund)—ह्रास कोष की स्थापना चाहे किसी भी उद्देश्य से की गई हो लेकिन इसके लिए निम्न बातें मान ली जाती हैं:—

(1) व्यापार में प्रतिवर्ष इतना पर्याप्त लाभ हुआ करेगा कि ह्रास कोष में वार्षिक राशि क्रेडिट की जा सके;

(2) व्यापार में प्रति वर्ष इतनी नकद राशि फालतू (Spare) होगी कि ह्रास की रकम को व्यापार के बाहर विनियोग किया जा सके;

(3) प्रत्येक वर्ष, अनुमानित ब्याज दर पर, विनियोग प्राप्त हो सकेंगे; और

(4) सम्पत्ति को प्रतिस्थापित करते समय विनियोगों को बेचकर समस्त अनुमानित राशि प्राप्त की जा सकेगी।

वार्षिक ह्रास की रकम का निर्धारण—इस विधि के अनुसार ह्रास की व्यवस्था 'ह्रास कोष' के द्वारा की जाती है जिसमें हस्तान्तरित रकम ब्याज दर ब्याज से बढ़ती रहती है। अतः वार्षिक ह्रास की रकम का निर्धारण तालिकाओं की सहायता से किया जाता है। ये तालिकाएं दो प्रकार की हो सकती हैं। दोनों के कुछ अंश नीचे दिये जाते हैं और उनका उपयोग करना भी समझाया गया है।

(क) 1 रु० की व्यवस्था करने के लिए ह्रास कोष में क्रेडिट की जाने वाली वार्षिक किस्तें निम्न हैं:—

वर्ष	ब्याज की दर			
	3%	4%	5%	6%
3	·323530	·320348	·317209	·314110
4	·239027	·235490	·232012	·228591
5	·188355	·184627	·180975	·177396
10	·087231	·083291	·079505	·075868
15	·053767	·049941	·046342	·042963
20	·037216	·033582	·030243	·027185

स्पष्टीकरण—यदि विनियोग पर 5% ब्याज मिलता है और हमें 5 वर्ष के पश्चात् एक रुपया चाहिए तो प्रति वर्ष ·180975 रु० बचाकर विनियोग करना होगा।

(ख) यदि प्रति वर्ष 1 रु० बचाकर विनियोग किया जावे तो वह विभिन्न वर्षों में विभिन्न ब्याज की दरों पर निम्न राशि बन जावेगा:—

वर्ष	ब्याज की दर			
	3%	4%	$4\frac{1}{2}$%	5%
3	3·09000	3·12160	3·13702	3·15250
4	4·18362	4·24646	4·27819	4·31012
5	5·30913	5·41632	5·47071	5·52563
10	11·46387	12·00610	12·28820	12·57789
15	18·59891	23·02358	20·78405	21·57856
20	26·87037	29·77807	21·37142	33·65950

स्पष्टीकरण—यदि प्रति वर्ष 1 रु० विनियोग किया जावे तो यह 5% ब्याज पर 5 वर्ष पश्चात् 5·52563 रु० बन जावेगा।

लेखा सम्बन्धी प्रविष्टियाँ (Accounting Entries)—

सम्पत्ति खरीदने पर

Asset a/c   Dr.   (सम्पत्ति के लागत मूल्य से)
    To Cash or Bank a/c
(Asset purchased.)

प्रथम वर्ष के अन्त में

(i) P. & L. a/c   Dr.   (वार्षिक मूल्य ह्रास की रकम से)
    To Depreciation Fund a/c
    (Amount transferred.)

(ii) Depreciation Fund Investments a/c   Dr. (विनियोग की गई राशि से)
    To Bank a/c
    (Investments purchased.)

आगामी वर्षों के अन्त में

(i) Bank a/c   Dr.   (विनियोगों पर प्राप्त ब्याज की राशि से)
    To Interest on Depreciation Fund Investments a/c
    (Interest received.)

(ii) Interest on Depreciation Fund Investments a/c   Dr.
    To Depreciation Fund a/c
    (Interest transferred.)

(iii) P. & L. a/c Dr. (वार्षिक मूल्य ह्रास की रकम से)
To Depreciation Fund a/c
(Amount transferred.)

(iv) Depreciation Fund Investments a/c Dr. (ब्याज व मूल्य ह्रास की रकम से)
To Bank a/c
(Investments purchased.)

अन्तिम वर्ष के अन्त में लेखे—

(i) Bank a/c Dr. (विनियोगों पर प्राप्त ब्याज की राशि से)
To Interest on Depreciation Fund Investments a/c
(Interest received.)

(ii) Interest on Depreciation Fund Investments a/c Dr. (विनियोगों पर प्राप्त ब्याज की राशि से)
To Depreciation Fund a/c
(Interest transferred.)

(iii) P. & L. a/c Dr. (वार्षिक मूल्य ह्रास की रकम से)
To Depreciation Fund a/c
(Amount transferred.)

अन्तिम वर्ष में सम्पत्ति बेकार हो जाती है और उसे प्रतिस्थापित करने के लिए विनियोगों (Depreciation Fund Investments) को बेच दिया जाता है। अतः अन्तिम वर्ष की मूल्य ह्रास की रकम व उस वर्ष मिलने वाले ब्याज की राशि को व्यापार के बाहर ब्याज प्रतिभूतियों में विनियोग नहीं किया जाता बल्कि उसे व्यापार में ही कार्यशील पूंजी (Working capital) के रूप में रख लिया जाता है। अंतिम वर्ष व विनियोगों की विक्री पर जो लाभ या हानि हो उसे लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। विनियोगों की विक्री एवं उस पर होने वाले लाभ के सम्बन्ध में निम्न प्रविष्टियाँ और करनी होती हैं:—

(iv) Cash or Bank a/c Dr. (विनियोग को बेचने पर प्राप्त हुई रकम से)
To Depreciation Fund Investments a/c
(Depreciation Fund Investments sold.)

[1] (v) Depreciation Fund Investments a/c Dr. (विनियोगों की विक्री से हुए लाभ की रकम से)
To P. & L. a/c
(Profit on sale of investments transferred.)

उपरोक्त प्रविष्टियाँ करने के पश्चात् ह्रास कोष खाते (Depreciation Fund Account) का शेष सम्पत्ति खाते (Asset Account) में हस्तान्तरित करके दोनों खातों को बन्द कर दिया जाता है। प्रविष्टि इस प्रकार होगी :—

1. यदि हानि हो तो प्रविष्टि उलट दी जायेगी।

(vi) Depreciation Fund a/c Dr.
To Asset a/c
(Balance of Depreciation Fund Account transferred to the Asset a/c.)

विनियोगों की विक्री से प्राप्त रकम व व्यापार में से कुछ रकम मिलाकर नई सम्पत्ति क्रय करने पर निम्न प्रविष्टि की जावेगी:—

(New) Asset a/c Dr.
To Cash or Bank a/c
(Asset purchased.)

चिट्ठे में निरूपण—

जिन वर्षों में ह्रास कोष (Depreciation Fund) का निर्माण किया जावेगा उन वर्षों के चिट्ठे में 'ह्रास कोष' को दायित्व पक्ष (Liability side) की ओर तथा विनियोगों (Depreciation Fund Investments) को लागत-मूल्य पर सम्पत्ति पक्ष (Asset side) की ओर दिखाया जाता रहेगा।

Illustration 51.

A property is taken on lease for Rs. 10,000 for 5 years. Show the working of a Depreciation Fund Method on a 5% interest basis in the books of the business, having regard to the fact that 0·180975 of a rupee annually invested at compound interest will amount to Re. 1 at the end of 5 years. The money is invested at the end of each year. Investments realised Rs. 7,900 at the end of the 5th year. The final instalment of depreciation and interest received during that year are not invested.

एक सम्पत्ति 10,000 रु० में 5 वर्ष के लिए पट्टे पर ली जाती है। व्यवसाय की पुस्तकों में 5% ब्याज के आधार पर ह्रास कोष विधि की कार्य-प्रणाली दिखाइये। यदि 0·180975 रु० प्रति वर्ष विनियोग किया जावे तो चक्रवृद्धि ब्याज के आधार पर उक्त रकम 5 वर्ष के अन्त में 1 रु० बन जावेगी। वन राशि का विनियोग प्रत्येक वर्ष के अन्त में किया जाता है। पांचवें वर्ष के अंत में विनियोगों के बेचने पर 7,900 रु० मिले। ह्रास की अंतिम किस्त व उस वर्ष में प्राप्त हुए ब्याज की राशि का विनियोग नहीं किया गया है।

Solution :

∵ 1 रु० की व्यवस्था के लिए ह्रास कोष की राशि होगी = ·180975 रु०

∴ 10,000 रु० की ,, ,, ,, ,, = (·180975 × 10,000) रु०

= 1809·75 रु०

Journal of···

			Rs.	P.	Rs.	P.
1st year (Commen-) cement)	Leasehold Property a/c Dr. To Bank a/c (Property taken on Lease for 5 years.)		10,000	—	10,000	—
1st year (end)	Profit and Loss a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Amount transferred to Depreciation Fund a/c.)		1,809	75	1,809	75
,,	Depreciation Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments purchased.)		1,809	75	1,809	75
2nd year (end)	Bank a/c Dr. To Interest on Depreciation Fund Investments a/c (Interest received.)		90	49	90	49
,,	Interest on Depreciation Fund Investments a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Amount transferred.)		90	49	90	49
,,	Profit and Loss a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Amount transferred.)		1,809	75	1,809	75
	Depreciation Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments purchased.)		1,900	24	1,900	24
3rd year (end)	Bank a/c Dr. To Interest on Depreciation Fund Investments a/c (Interest received.)		185	50	185	50
,,	Interest on Depreciation Fund Invesments a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Interest transferred.)		185	50	185	50
,,	Profit and Loss a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Amount transferred.)		1,809	75	1,809	75

Journal Contd.

			Rs.	P.	Rs.	P.
3rd year (end)	Depreciation Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments purchased.)		1,995	25	1,995	25
4th year (end)	Bank a/c Dr. To Interest on Depreciation Fund Investments a/c (Interest received.)		285	26	285	26
,,	Interest on Depreciation Fund Investments a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Interest transferred.)		285	26	285	26
,,	Profit and Loss a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Amount transferred.)		1,809	75	1,809	75
	Depreciation Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments purchased.)		2,095	01	2,095	01
5th year (end)	Bank a/c Dr. To Interest on Depreciation Fund Investments a/c (Interest received)		390	01	390	01
,,	Interest on Depreciation Fund Investments a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Interest transferred.)		390	01	390	01
,,	Profit and Loss a/c Dr. To Depreciation Fund a/c (Amount transferred.)		1,809	74	1,809	74
,,	Bank a/c Dr. To Depreciation Fund Investments a/c (Investments sold.)		7,900	00	7,900	00
,,	Depreciation Fund Investments a/c Dr. To P. & L. a/c (Profit on sale of Investments transferred)		99	75	99	75
,,	Depreciation Fund a/c Dr. To Leasehold Property a/c (Leasehold Property written off.)		10,000	00	10,000	00

Ledger

Depreciation Fund Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1st year (end)	To Balance c/d	1,809	75	1st year (end)	By Profit & Loss a/c	1,809	75
2nd year (end)	To Balance c/d	3,709	99	2nd year (beginning)	By Balance b/d	1,809	75
				(end)	,, Interest a/c	90	49
				,,	,, P. & L. a/c	1,809	75
		3,709	99			3,709	99
3rd year (end)	To Balance c/d	5,705	24	3rd year (beginning)	By Balance b/d	3,709	99
				(end)	,, Interest a/c	185	50
				,,	,, P. & L. a/c	1,809	75
		5,705	24			5,705	24
4th year (end)	To Balance c/d	7,800	25	4th year (beginning)	By Balance b/d	5,705	24
				(end)	,, Interest a/c	285	26
				,,	,, P. & L. a/c	1,809	75
		7,800	25			7,800	25
5th year (end)	To Leasehold Property a/c	10,000	00	5th year (beginning)	By Balance b/d	7,800	25
				(end)	,, Interest a/c	390	01
				,,	,, P. & L. a/c	1,809	74*
		10,000	00			10,000	00

* 10,000 रु० पूरा करने के लिए अंतिम वर्ष में 1 पैसा कम लाया गया है।

Depreciation Fund Investments Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1st year (end)	To Bank a/c	1,809	75	1st year (end)	By Balance c/d	1,809	75
2nd year (beginning)	To Balance b/d	1,809	75	2nd year (end)	By Balance c/d	3,709	99
(end)	" Bank a/c	1,900	24				
		3,709	99			3,709	99
3rd year (beginning)	To Balance b/d	3,709	99	3rd year (end)	By Balance c/d	5,705	24
(end)	" Bank a/c	1,995	25				
		5,705	24			5,705	24
4th year (beginning)	To Balance b/d	5,705	24	4th year (end)	By Balance c/d	7,800	25
(end)	" Bank a/c	2,095	01				
		7,800	25			7,800	25
5th year (beginning)	To Balance b/d	7,800	25	5th year (end)	By Cash a/c	7,900	00
(end)	" P. & L. a/c	99	75				
		7,900	00			7,900	00

Leasehold Property Account

		Rs.			Rs.
1st year (beginning)	To Bank a/c	10,000	1st year (end)	By Balance c/d	10,000
2nd year (beginning)	To Balance b/d	10,000	2nd year (end)	By Balance c/d	10,000
3rd year (beginning)	To Balance b/d	10,000	3rd year (end)	By Balance c/d	10,000
4th year (beginning)	To Balance b/d	10,000	4th year (end)	By Balance c/d	10,000
5th year (beginning)	To Balance b/d	10,000	5th year (end)	By Depreciation Fund a/c	10,000

Profit and Loss Account
(for the year ending......)

		Rs.	P.			Rs.	P.
1st year	To Depreciation Fund a/c	1,809	75				
2nd year	To Depreciation Fund a/c	1,809	75				
3rd year	To Depreciation Fund a/c	1,809	75				
4th year	To Depreciation Fund a/c	1,809	75				
5th year	To Depreciation Fund a/c	1,809	74	5th year	By Depreciation Fund Investments a/c	99	75

Balance Sheet
(as at the end of......)

	Rs.	P.		Rs.	P.
1st year			1st year		
Depreciation Fund	1,809	75	Leasehold Property	10,000	—
			Depreciation Fund Investments	1,809	75
2nd year			2nd year		
Depreciation Fund	3,709	99	Leasehold Property	10,000	—
			Depreciation Fund Investments	3,709	99
3rd year			3rd year		
Depreciation Fund	5,705	24	Leasehold Property	10,000	—
			Depreciation Fund Investments	5,705	24
4th year			4th year		
Depreciation Fund	7,800	25	Leasehold Property	10,000	—
			Depreciation Fund Investments	7,800	25

Illustration 52

A firm purchased on 1st January, 1965, a 3 'years' lease of a building for Rs. 50,000 and decided to make a provision for its replacement by means of a sinking fund, the investments yielding 5% per annum interest.

Write up the necessary ledger accounts. You ascertain from the annuity tables that an annuity of Re. 1 p. a. at 5% amounts to Rs. 3·15250 in three years.

1 जनवरी, 1965 को एक फर्म ने 3 वर्ष के पट्टे पर एक भवन 50,000 रु० में खरीदा और इसके प्रतिस्थापन के लिए ह्रास कोष के द्वारा व्यवस्था करने का निर्णय किया। विनियोगों पर 5% वार्षिक ब्याज मिलता है।

आवश्यक खाते खोलिए। वार्षिक वृत्ति तालिकाओं से आपको ज्ञात होता है कि 5% की दर से 1 रु० की वार्षिक वृत्ति 3 वर्ष के अन्त में 3.15250 रु० हो जावेगी।

Solution.

∵ 3·15250 रु० की व्यवस्था के लिए प्रति वर्ष लगाना होगा = 1 रु०

∴ 1 „ „ „ $= \frac{1}{3 \cdot 15250}$ रु०

∴ 50,000 रु० „ „ „ $= \frac{1}{3 \cdot 15250} \times \frac{50,000}{1}$ रु०

= 15,860 रु० 43 पैं०

Sinking Fund Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Dec. 31	To Balance c/d	15,860	43	1965 Dec. 31	By P. & L. a/c	15,860	43
1966 Jan. 1	To Balance c/d	32,513	88	1966 Jan. 1	By Balance b/d	15,860	43
				Dec. 31	„ Interest a/c	793	02
				„ „	„ P.& L. a/c	15,860	43
		32,513	88			32,513	88
1967 Dec. 31	To Leasehold Buildings a/c	50,000	—	1967 Jan. 1	By Balance b/d	32,513	88
				Dec. 31	„ Interest a/c	1,625	69
				„ „	„ P. & L. a/c	15,860	43
		50,000				50,000	00

Leasehold Buildings Account

		Rs.			Rs.
1965 Jan. 1	To Bank a/c	50,000	1965 Dec. 31	By Balance c/d	50,000
1966 Jan. 1	To Balance b/d	50,000	1966 Dec. 31	By Balance c/d	50,000
1967 Jan. 1	To Balance b/d	50,000	1967 Dec. 31	„ Depreciation Fund a/c	50,000

Sinking Fund Investments Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Dec. 31	To Bank a/c	15,860	43	1965 Dec. 31	By Balance c/d	15,860	43
1966 Jan. 1	To Balance b/d	15,860	43	1966 Dec. 31	By Balance c/d	32,513	88
Dec. 31	„ Bank a/c	16,653	45				
		32,513	88			32,513	88
1967 Jan. 1	To Balance b/d	32,513	88	1967 Dec. 31	By Balance c/d	32,513	88

P. & L. Account

		Rs.	P.		Rs.	P.
1965 Dec. 31	To Depreciation Fund a/c	15,860	43			
1966 Dec. 31	To Depreciation Fund a/c	15,860	43			
1967 Dec. 31	To Depreciation Fund a/c	15,860	43			

नोटः—यह माना गया है कि 1967 वें वर्ष के अन्त में प्राप्त ब्याज की राशि तथा ह्रास कोष की अन्तिम किस्त का विनियोग नहीं किया गया है। चूंकि प्रश्न में यह नहीं दिया हुआ है कि 1967 वें वर्ष के अन्त में विनियोगों को कितने रुपयों में बेचा है, अतः यह भी माना गया है कि इन विनियोगों को नहीं बेचा गया है। परिणामस्वरूप 'ह्रास कोष विनियोग खाते' का शेष निकाला गया है। विनियोगों की बिक्री करने पर आवश्यक प्रविष्टियां की जायेंगी।

Illustration 53.

X & Co. provides depreciation on plant and machinery through depreciation fund method. On the 20th Dec. 1968, the machine broke down by accident. On that date, there were Rs. 8,000 in the machinery account, Rs. 6,280 in the Depreciation Fund Account and Rs. 6,200 in the Depreciation Fund Investments Account. The broken machine was sold out for Rs. 1,500 and the investments for Rs. 6,500.

You are required to prepare the following:—

(i) Machinery Account;
(ii) Depreciation Fund Account; and
(iii) Depreciation Fund Investments Account.

एक्स एण्ड कम्पनी, प्लान्ट और मशीन पर ह्रास कोष विधि द्वारा ह्रास अपलिखित करते हैं। 20 दिसम्बर 1968 को मशीन दुर्घटना में टूट गई। इस दिन मशीन खाते में 8,000 रु०, ह्रास कोष खाते में 6,280 रु० और ह्रास कोष विनियोग खाते में 6,200 रु० का शेष है। टूटी हुई मशीन 1,500 रु० में बेची गई और विनियोग 6,500 रु० में बेचे गये।

निम्नलिखित खाते बनाइये :

(i) मशीन खाते;
(ii) ह्रास कोष खाता; तथा
(iii) ह्रास कोष विनियोग खाता।

Solution :

Machinery Account

		Rs.			Rs.
1968 Jan. 1	To Balance b/d	8,000	1968 Dec. 20	By Cash a/c	1,500
			,, ,,	,, Depreciation Fund a/c	6,280
			,, 31	,, P. & L. a/c (Loss)	220
		8,000			8,000

Depreciation Fund Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Dec. 20	To Machinery a/c	6,280	Jan. 1	By Balance b/d	6,280

Depreciation Fund Investments Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	6,200	Dec. 20	By Cash a/c	6,500
Dec. 31	„ P. & L. a/c	300			
		6,500			6,500

नोट:—यह माना गया है कि खाते 31 दिसम्बर को बन्द होते हैं।

ह्रास कोष विधि से लाभ—

इस विधि के अन्तर्गत ह्रास कोष की राशि व्यापार के बाहर विनियोग कर दी जाती है और सम्पत्ति को प्रतिस्थापित करते समय इन विनियोगों को बेचकर नकद राशि प्राप्त कर ली जाती है। अतः नई सम्पत्ति खरीदते समय व्यवसाय के तरल साधनों (Liquid Resources) पर भार नहीं पड़ता है। इसके अतिरिक्त, चूंकि विनियोगों से मिलने वाला ब्याज भी प्रति वर्ष पुनर्विनियोजित कर दिया जाता है, अतः ब्याज पर ब्याज मिलने का लाभ भी प्राप्त हो जाता है।

ह्रास कोष विधि से हानियां—

जैसा कि बताया जा चुका है, यह विधि कुछ मान्यताओं पर आधारित है और यदि मान्यताएं सही नहीं उतरती तो यह विधि असफल रहती है। लेखा के दृष्टिकोण से भी यह विधि कुछ कठिन है।

(5) बीमा पालिसी विधि (Insurance Policy Method)—

इस विधि के अन्तर्गत ह्रास की एक निश्चित राशि प्रत्येक वर्ष के अन्त में लाभ-हानि खाते से 'ह्रास कोष खाते' में हस्तान्तरित की जाती है तथा सम्पत्ति की आयु का जितने वर्ष का अनुमान लगाया जाता है, उतने वर्षों की एक 'बन्दोबस्त बीमा पॉलिसी' (Endowment Policy) खरीद ली जाती है और ह्रास की वार्षिक राशि का उपयोग उक्त पॉलिसी के प्रीमियम चुकाने में किया जाता है। अतः ह्रास की राशि उतनी ही होती है जितनी प्रीमियम की राशि होती है।

बीमा पॉलिसी विधि और ह्रास कोष विधि, दोनों में, ह्रास कोष खाता खोला जाता है, लेकिन फिर भी दोनों विधियों में निम्नलिखित महत्वपूर्ण अन्तर हैं:—

(i) ह्रास कोष विधि में ह्रास कोष के बराबर रकम व्यवसाय के बाहर प्रतिभूतियों में विनियोजित की जाती है और सम्पत्ति के बेकार होने पर प्रतिभूतियों को बेचकर नई सम्पत्ति खरीद ली जाती है; जबकि बीमा पॉलिसी विधि में सम्पत्ति के मूल्य के बराबर एक बन्दोबस्त बीमा लेना पड़ता है और ह्रास कोष के बराबर रकम प्रतिभूतियों में न लगाई जाकर उस बीमे की प्रीमियम के रूप में चुका दी जाती है। बीमा जब परिपक्व (Mature) होता है तो उसकी राशि से नई सम्पत्ति खरीद ली जाती है।

(ii) ह्रास कोष विधि में विनियोगों पर ब्याज मिलता है जबकि बीमा पालिसी विधि में ब्याज के नाम से कोई रकम प्राप्त नहीं होती, लेकिन पॉलिसी की राशि प्रीमियम की कुल राशि से अधिक होती है, अतः पुस्तकों में लेखा करते समय इस आधिक्य को ब्याज के नाम से भी दिखाया जा सकता है।

(iii) ह्रास कोष विधि में धन-राशि का विनियोग वर्ष के अन्त में करना पड़ता है जबकि बीमा पॉलिसी विधि में प्रीमियम की राशि वर्ष के प्रारम्भ में दी जाती है।

Illustration 54.

On 1st January, 1965, a business purchases a three years' lease of premises for Rs. 10,00,000 and it is decided to make provision for the replacement of the lease by means of an insurance policy purchased. The rate of premium is Rs. 3,20,000 per year for a 'With Profits Endowment Insurance policy' of Rs. 10,00,000.

Show the ledger accounts for the 3 years ending on 31st Dec. each year. The amount of the policy is received on 31st December, 1967.

1 जनवरी, 1965 को एक व्यवसाय ने एक भवन का 10,00,000 रु० में 3 वर्ष के लिए पट्टा खरीदा और बीमा पॉलिसी द्वारा पट्टे के प्रतिस्थापन के लिए व्यवस्था करने का निर्णय लिया। 10,00,000 रु० की 'लाभ सहित बन्दोबस्त बीमा पालिसी' के प्रीमियम की दर 3,20,000 रु० वार्षिक है।

31 दिसम्बर को समाप्त होने वाले 3 वर्षों के लिए खाते बनाइये। पॉलिसी की रकम 31 दिसम्बर, 1967 को प्राप्त हो जाती है।

Solution :

Leasehold Premises Account

		Rs.			Rs.
1965 Jan. 1	To Bank a/c	10,00,000	1965 Dec. 31	By Balance c/d	10,00,000
1966 Jan. 1	To Balance b/d	10,00,000	1966 Dec. 31	By Balance c/d	10,00,000
1967 Jan. 1	To Balance b/d	10,00,000	1967 Dec. 31	By Depreciation Fund a/c	10,00,000

Depreciation Fund Account

		Rs.			Rs.
1965 Dec. 31	To Balance c/d	3,20,000	1965 Dec. 31	By P. & L. a/c	3,20,000
1966 Dec. 31	To Balance c/d	6,40,000	1966 Jan. 1	By Balance b/d	3,20,000
			Dec. 31	,, P. & L. a/c	3,20,000
		6,40,000			6,40,000
1967 Dec. 31	To Leasehold Premises a/c	10,00,000	1967 Jan. 1	By Balance b/d	6,40,000
			Dec. 31	,, P. & L. a/c	3,20,000
			,, ,,	,, Policy a/c (Interest)	40,000
		10,00,000			10,00,000

Policy Account

1965		Rs.	1965		Rs.
Jan.1	To Bank a/c	3,20,000	Dec.31	By Balance c/d	3,20,000
1966			1966		
Jan.1	To Balance b/d	3,20,000	Dec.31	By Balance c/d	6,40,000
	,, Bank a/c	3,20,000			
		6,40,000			6,40,000
1967			1967		
Jan.1	To Balance b/d	6,40,000	Dec.31	By Bank a/c	10,00,000
,,	,, Bank a/c	3,20,000			
Dec. 31	,, Depreciation Fund a/c(Int.)	40,000			
		10,00,000			10,00,000

नोट:—(1) प्रीमियम की रकम अग्रिम दी जाती है, अतः 1965, 1966 और 1967 की प्रीमियम हर वार 1 जनवरी को दी जायेगी।

(2) कुल प्रीमियम 9,60,000 रु० दी गई है और पॉलिसी की रकम 10,00,000 रु० मिली है, अतः 40,000 रु० का लाभ हुआ जिसे ब्याज कहा जा सकता है। इसे ह्रास कोप खाते में ले जाया जावेगा।

Illustration 55

Messrs Ram and Sons purchase a machine for Rs. 10,000 which is expected to last for 3 years only. They are informed that its scrap will realise Rs. 1,250. They decide to purchase an endowment policy for three years for a sum of Rs. 8,750. The annual premium is Rs. 2,750 (approximately) and the rate of interest works out at 3% compound interest. Show Depreciation Fund Account and Depreciation Policy Account for all the three years. Calculations may be made correct to the nearest rupee only.

मै० राम एण्ड सन्स 10,000 रु० में एक मशीन खरीदते हैं जिसके केवल 3 वर्ष चलने की उम्मीद है। उन्हें सूचित किया जाता है कि इसके अवशिष्ट अंश से 1,250 रु० मिलेंगे। वे 8,750 रु० का 3 वर्ष के लिए एक बन्दोबस्त बीमा खरीदने का निश्चय करते हैं। वार्षिक प्रीमियम करीब 2,750 रु० है और ब्याज की दर 3% चक्रवृद्धि बैठती है। तीनों वर्षों के लिए ह्रास कोष खाता और ह्रास पॉलिसी खाता दिखाइये। गणना निकटतम रुपये तक की जा सकती है।

Solution :

Depreciation Fund Account

		Rs.			Rs.
1st Year (end)	To Balance c/d	2,833	1st Year (end)	By P. & L. a/c	2,750
				,, Depreciation Policy a/c (Int.)	83
		2,833			2,833
2nd Year (end)	To Balance c/d	5,750	2nd Year (beginning)	By Balance b/d	2,833
			(end)	,, P. & L. a/c	2,750
				,, Depreciation Policy a/c (Int.)	167
		5,750			5,750
3rd Year (end)	To Machinery a/c	8,750	3rd Year (beginning)	By Balance b/d	5,750
			(end)	,, P. & L. a/c	2,750
			,,	,, Depreciation Policy a/c	250
		8,750			8,750

Depreciation Policy Account

		Rs.			Rs.
1st Year (beginning)	To Bank a/c	2,750	1st Year (end)	By Balance c/d	2,833
(end)	,, Depreciation Fund a/c (Interest)	83			
		2,833			2,833
2nd Year (beginning)	To Balance b/d	2,833	2nd Year (end)	By Balance c/d	5,750
(end)	,, Bank a/c	2,750			
,,	,, Depreciation Fund a/c (Interest)	167			
		5,750			5,750
3rd Year (beginning)	To Balance b/d	5,750	3rd Year (end)	By Bank a/c	8,750
(end)	,, Bank a/c	2,750			
,,	,, Depreciation Fund a/c (Interest)	250			
		8,750			8,750

नोट:—अन्तिम ब्याज की राशि में 5 रु० का समायोजन किया गया है।

(6) पुनर्मूल्यांकन विधि (Revaluation Method)—

इस विधि के अन्तर्गत चिट्ठे के दिन सम्पत्ति का पुनर्मूल्यांकन किया जाता है और सम्पत्ति का पुनर्मूल्यांकित मूल्य पुस्तक मूल्य से जितना कम होता है, उतना उस सम्पत्ति का मूल्य ह्रास अपलिखित कर दिया जाता है। जैसे, यदि चिट्ठे के दिन फुटकर औजार (Loose Tools) का पुस्तक मूल्य 2,000 रु० है और उनका पुनर्मूल्यांकन मूल्य 1,800 रु० है तो शेष राशि (2,000 रु०–1,800 रु०) = 200 रु० ह्रास के रूप में अपलिखित कर दी जावेगी। फुटकर औजार, पशुधन आदि के लिए यह विधि उपयुक्त है।

Illustration 56

On 1st January, 1969, the stock of loose tools was Rs. 2,000. Purchases during the year amounted to Rs. 1,000. The closing stock on 31st Dec. 1969 was valued at Rs. 1,800.

Show the Asset Account and the Depreciation Account.

1 जनवरी, 1969 को फुटकर औजारों का स्टॉक 2,000 रु० था। वर्ष के बीच में 1,000 रु० का क्रय हुआ। 31 दिसम्बर, 1969 को अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन 1,800 रु० किया गया।

सम्पत्ति खाता और ह्रास खाता दिखाइये।

Solution.

Loose Tools Account

1969		Rs.	1969		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	2,000	Dec. 31	By Depreciation a/c	1,200
Dec. 31	,, Bank a/c (Purchases)	1,000	,, ,,	,, Balance c/d	1,800
		3,000			3,000

Depreciation Account

1969		Rs.	1969		Rs.
Dec. 31	To Loose Tools a/c	1,200	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,200

(7) रिक्त इकाई विधि (Depletion Unit Method)—

इस विधि का प्रयोग क्षयी सम्पत्तियों (Wasting Assets) का ह्रास अपलिखित करने में किया जाता है, जैसे, खान, तैल के कुएं आदि। सम्पत्ति में से जितनी सामग्री निकाली जा चुकती है उसी अनुपात में उसका मूल्य ह्रास अपलिखित कर दिया जाता है।

मूल्य ह्रास की दर निकालना—

क्षयी सम्पत्ति की कुल लागत में उसके अनुमानित भण्डार का भाग देने पर प्रति इकाई ह्रास की दर आ जाती है। जैसे, यदि किसी कोयले की खान में 20,000 टन कोयले के भण्डार का अनुमान है और उस खान को 5,000 रु० में खरीदा गया है तो मूल्य ह्रास की दर 5,000 रु० ÷ 20,000 = 25 पैसे प्रति टन कोयला होगा।

यदि उपरोक्त उदाहरण में किसी वर्ष 2,000 टन कोयला निकाला जाता है तो उस वर्ष का मूल्य ह्रास $=\left(\frac{2,000 \times 25}{100}\right)$ रु० $=500$ रु० होगा।

(8) मशीन घण्टा-दर विधि (Machine Hour Rate Method)—

इस विधि के अन्तर्गत यह अनुमान लगाया जाता है कि मशीन अपनी पूरी आयु में कुल कितने घण्टे चलेगी। मशीन की लागत में उन घण्टों की संख्या का भाग दिया जाता है। इस पर उस मशीन के मूल्य ह्रास की प्रति घण्टा दर आ जावेगी। मशीन एक वर्ष में जितने घण्टे चलेगी, उन घण्टों को यदि प्रति घण्टा दर से गुणा कर दिया जाय तो मशीन का वार्षिक मूल्य ह्रास आ जावेगा। यह विधि मशीनों का ह्रास अपलिखित करने के लिए उचित है।

उदाहरण—यदि मशीन की लागत 20,000 रु० हो और उसकी अनुमानित आयु 10,000 घण्टे है तो ह्रास की दर 2 रु० प्रति घण्टा होगी। यदि वह मशीन किसी वर्ष 2,000 घण्टे कार्य करती है तो उस मशीन का उस वर्ष के लिए $2,000 \times 2$ रु० $=4,000$ रु० ह्रास अपलिखित किया जावेगा।

(9) प्रयोग विधि (The Use Method or The Mileage Method)—

बस, ट्रक, कार आदि ऐसी सम्पत्तियाँ हैं कि ये जितनी किलोमीटर चलती हैं उतना ही इनका ह्रास होता है। प्रयोग विधि ऐसी सम्पत्तियों का ह्रास अपलिखित करने के लिए ही काम में लाई जाती है। इस विधि के अनुसार यह अनुमान लगाया जाता है कि ऐसी सम्पत्ति अपने जीवन काल में कुल कितने किलोमीटर चल सकेगी; सम्पत्ति की लागत में इस दूरी का भाग देने पर उस सम्पत्ति की प्रति किलोमीटर मूल्य ह्रास की दर आ जाती है। जैसे, यदि एक कार 20,000 रु० में खरीदी गई है और अनुमान है कि यह 10,00,000 किलोमीटर चलने के पश्चात् बेकार हो जावेगी तो इस कार के लिए मूल्य ह्रास की दर$=20,000$ रु० $\div 10\,00,000=2$ पैसा प्रति किलोमीटर होगी। यदि यह कार किसी वर्ष 30,000 किलोमीटर चलती है तो कार का उस वर्ष का ह्रास$=30,000 \times 2$ पैसा$=600$ रु० होगा।

ह्रास और बढ़ते हुये मूल्य (Depreciation and Rising Prices)

द्वितीय महायुद्ध के पश्चात् मँहगाई (मुद्रा स्फीति) का जो दौर चला है उसने ह्रास प्रावधान के सम्बन्ध में एक नई विचार धारा उत्पन्न कर दी है। इस विचार धारा के अनुसार मूल्य ह्रास प्रावधान का सम्बन्ध सम्पत्ति के मूल लागत–मूल्य (Original Cost Price) से न होकर उसके प्रतिस्थापित मूल्य (Replacement Value) से होना चाहिए। उदाहरणार्थ, एक मशीन सन् 1968 के प्रारम्भ में 50,000 रु० में खरीदी गई तथा उसका अनुमानित जीवन-काल 10 वर्ष का आँका गया तो मूल्य वृद्धि को देखते हुये सन् 1978 के प्रारम्भ में उसी किस्म की नई मशीन प्रतिस्थापित करने में 50,000 रु० से कहीं अधिक धन की आवश्यकता होगी। इस विचार धारा के समर्थकों की मान्यता है कि 10 वर्षों में मूल्य ह्रास प्रावधान द्वारा 50,000 रु०(सम्पत्ति का मूल लागत-मूल्य) की व्यवस्था नहीं होनी चाहिए बल्कि उस राशि की व्यवस्था होनी चाहिए जितने में इस सम्पत्ति को 1978 के प्रारम्भ में प्रतिस्थापित किया जावेगा।

पश्चिमी देशों में इस विचार धारा ने काफी जोर पकड़ा है तथा कुछ व्यापारिक संस्थाओं ने इसे अपनाया भी है। भारत में व्यवसायियों एवं सरकार की अभी तक यही मान्यता है कि मूल्य ह्रास प्रावधान का सम्बन्ध सम्पत्ति के मूल लागत मूल्य से ही होना चाहिए तथा उसके प्रतिस्थापन-मूल्य को ध्यान में नहीं

रखा जाना चाहिए। यदि सम्पत्ति को प्रतिस्थापित करते समय अतिरिक्त धन की आवश्यकता हो तो व्यापारिक संस्थान के सामान्य संचय (General Reserve) में से व्यवस्था की जावे क्योंकि पहले से ही सम्पत्ति के प्रतिस्थापन मूल्य को आंकना बड़ा मुश्किल कार्य है। यदि कुछ व्यवसायी मूल्य निर्देशांकों (Price Index numbers) के आधार पर प्रतिस्थापन मूल्य का अनुमान लगा भी लेते हैं तो वे ह्रास प्रावधान का सम्बन्ध मूल लागत मूल्य से ही रखते हैं किन्तु प्रतिस्थापन मूल्य व लागत मूल्य के अंतर के लिए विभिन्न लाभ-हानि खातों में से रकम निकालकर 'प्रतिस्थापन संचय' (Replacement Reserve) का निर्माण कर लेते हैं। पुरानी सम्पत्ति के बेकार होने पर उसको नई सम्पत्ति द्वारा प्रतिस्थापित कर लेने के बाद 'प्रतिस्थापन संचय' खाते का शेष सामान्य संचय (General Reserve) खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

उदाहरण—माना कि एक मशीन 1 जनवरी, 1965 को 20,000 रु० में खरीदी गई। इस सम्पत्ति पर स्थाई क़िस्त विधि के अनुसार 20% वार्षिक दर से मूल्य ह्रास अपलिखित किया जाता है। 3 वर्ष तक मूल्य ह्रास चार्ज कर लेने के बाद व्यापारी ने अनुमान लगाया कि 5वें वर्ष के अंत में मूल्य वृद्धि के कारण इस सम्पत्ति का प्रतिस्थापन मूल्य (Replacement Value) 25,000 रु० होगा। अब वह चाहता है कि 5 वर्ष के उसके लाभों में से प्रतिस्थापन मूल्य के बराबर रकम की व्यवस्था हो जाये तो आप लेखापाल की हैसियत से उसे क्या राय देंगे?

चूंकि व्यापारी ने 3 वर्ष तक मूल लागत मूल्य के आधार पर मूल्य ह्रास अपलिखित किया है, अतः उसने 12,000 रु० मूल्य ह्रास के रूप में चार्ज कर लिए हैं। आगामी 2 वर्षों के लिए भी उसे मूल लागत मूल्य का 20% वार्षिक दर से मूल्य ह्रास चार्ज करना चाहिए जिससे 8,000 रु० मूल्य ह्रास के रूप में और चार्ज हो जायेंगे। इस प्रकार उसके पाँच वर्ष के लाभों में से मूल लागत मूल्य अर्थात् 20,000 रु० की व्यवस्था हो जावेगी। तीसरे वर्ष के अंत में उसने अनुमान लगाया है कि सम्पत्ति के प्रतिस्थापित करने पर उसे मूल लागत मूल्य से 5,000 रु० अधिक चाहियें जिसकी व्यवस्था उसे केवल दो वर्षों में ही करनी है। व्यापारी को चाहिए कि चौथे व पांचवें वर्ष के लाभ-हानि खातों में से प्रत्येक वर्ष वह 2,500 रु० 'मशीन प्रतिस्थापन संचय' (Machine Replacement Reserve) खाते में हस्तान्तरित कर दे। प्रत्येक वर्ष प्रविष्टि निम्न प्रकार से होगी :—

		Rs.	Rs.
Profit and Loss a/c	Dr.	2,500	
To Machine Replacement Reserve a/c			2,500
(Amount transferred.)			

'मशीन प्रतिस्थापन' संचय खाते का शेष चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जाता रहेगा तथा सम्पत्ति के प्रतिस्थापित हो जाने पर 'सामान्य संचय' खाते में हस्तान्तरित कर दिया जावेगा।

भारत में इस सम्बन्ध में नया विचार :—जैसा कि पूर्व बताया जा चुका है, भारत में व्यवसायियों एवं सरकार ने ह्रास प्रावधान का आधार अभी तक मूल लागत मूल्य को ही माना है, किन्तु भूतलिंगम समिति (जो कि कर प्रणाली को सरल बनाने के बारे में सुझाव देने के लिए बनाई गई थी) ने अभी हाल में ही सरकार को सुझाव दिया है कि बढ़ती हुई मूल्य वृद्धि को देखते हुए मूल्यह्रास का आधार केवल मूल लागत मूल्य ही नहीं होना चाहिए बल्कि इस मूल लागत मूल्य को 20% से बढ़ा लेना चाहिए

तथा उस वढ़े हुए मूल्य के आधार पर मूल्य ह्रास का प्रावधान किया जाना चाहिए। सरकार इस सुभा पर विचार कर रही है। आशा है कि सरकार इस सुझाव को मान लेगी तथा आयकर विधान में आवश्य संशोधन कर दिया जावेगा।

आयोजन और संचय (Provisions and Reserves)

आयोजन (Provision) का अर्थ—

भारतीय कम्पनी विधान के अनुसार आयोजन का आशय उस राशि से है जो (i) स्थायी या चल सम्पत्तियों के मूल्यों में कमी आने के कारण या उनके नवीनीकरण के लिए या मूल्य ह्रास का आयोजन करने के लिए रख ली गई हो या अपलिखित कर दी गई हो, अथवा (ii) किसी ऐसे ज्ञात दायित्व (Known liability) का आयोजन करने के लिए रख ली गई हो जिसकी राशि पर्याप्त शुद्धता के साथ निर्धारित नहीं की जा सकती।

कम्पनी विधान ने आयोजन का अर्थ बहुत सीमित कर दिया है। यह विधान यद्यपि कम्पनियों पर ही लागू होता है लेकिन सुविधा की दृष्टि से उचित यही है कि अन्य व्यवसायों में भी आयोजन का यही अर्थ लगाया जावे।

साधारणतया आयोजन का आशय भावी हानि तथा दायित्व के लिए की गई व्यवस्था से लिया जाता है लेकिन कम्पनी विधान द्वारा दी गई परिभाषा का अध्ययन करने पर आयोजन का अर्थ केवल निम्न सीमाओं में सिमट जाता है :—

(i) सम्पत्तियों के मूल्य में कमी अथवा ह्रास; तथा

(ii) ऐसे ज्ञात दायित्व के लिए प्रावधान जिसकी राशि पर्याप्त शुद्धता के साथ ज्ञात न की जा सके। यदि किसी ज्ञात दायित्व की राशि का उचित शुद्धता (With reasonable accuracy) से अनुमान लगाया जा सकता है तो इसे आयोजन नहीं कहेंगे वल्कि दायित्व (Liability) कहेंगे।

आयोजन के कुछ उदाहरण (Some examples of provisions)—

(1) डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन (Provision for Bad and Doubtful Debts)—

यदि चिट्ठे के दिन देनदारों (Debtors) की सूची में कुछ ऐसी मदें हैं जिनके वसूल होने की सम्भावना नहीं है अथवा जिनकी वसूली संदिग्ध है तो ऐसी हानि के लिए जिस आयोजन का निर्माण किया जाता है उसे 'डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन' (Provision for Bad and Doubtful Debts) कहते हैं।

उदाहरण—चिट्ठे के दिन देनदार (Debtors) 10,000 रु० के हैं और इनमें से 5% संदिग्ध हैं जिनके लिए आयोजन करना है।

इस उदाहरण में डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन 500 रु० किया जावेगा। यह राशि लाभ-हानि खाते को डेबिट की जावेगी और चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर देनदारों की राशि (10,000 रु०) में से घटाकर दिखाई जावेगी।

अगले वर्ष जब किसी देनदार में कोई रकम डूब जावेगी तो उस हानि को लाभ-हानि खाते से अपलिखित नहीं किया जावेगा बल्कि इसी आयोजन (500 रु०) में से अपलिखित किया जावेगा। यदि हानि की राशि 500 रु० से अधिक हुई तो उस आधिक्य को लाभ-हानि खाते में ले जाया जावेगा।

(2) देनदारों पर छूट के लिए आयोजन (Provision for Discount on Debtors)—

यदि व्यवसाय की प्रथा के अनुसार देनदारों को भुगतान प्राप्त करते समय छूट (Discount) दी जाती है तो चिट्ठे के दिन इस सम्बन्ध में भी आयोजन कर लिया जाता है क्योंकि चिट्ठे में देनदारों के सम्बन्ध में वही राशि सम्पत्ति के रूप में दिखाई जानी चाहिए जो हमें प्राप्त होने की आशा है। उदाहरणार्थ, यदि चिट्ठे के दिन 10,000 रु० के देनदार हैं और व्यवसाय में देनदारों को भुगतान के समय 2% छूट देने की प्रथा है तो इन देनदारों से 9,800 रु० ही प्राप्त हो सकेंगे और 200 रु० व्यवसाय के लिए हानि है जिसके लिए आयोजन किया जाना चाहिए।

यह ध्यान रखना चाहिए कि यदि देनदारों में कुछ राशि डूबने की सम्भावना है तो छूट के लिए आयोजन केवल उसी राशि पर किया जावेगा जो प्राप्त होने की आशा है। यदि ऊपर के उदाहरण में 5% राशि डूबने की सम्भावना है तो 10,000 रु० पर पहले 5% डूबत ऋण के लिए आयोजन करना है; फिर शेष 9,500 रु० पर 2% से छूट के लिए आयोजन करना है। अर्थात् छूट के लिए आयोजन 190 रु० का ही होगा न कि 200 रु० का।[1]

(3) मरम्मत तथा नवीनीकरण के लिए आयोजन (Provision for Repairs and Renewals)—

जब कोई सम्पत्ति नई खरीदी जाती है तो कुछ प्रारम्भिक वर्षों में उस पर मरम्मत एवं नवीनीकरण सम्बन्धी खर्चे कम होते हैं। लेकिन सम्पत्ति जैसे-जैसे पुरानी होती जाती है, उस पर ये खर्चे बढ़ते जाते हैं। अतः यदि मरम्मत एवं नवीनीकरण सम्बन्धी वास्तविक खर्चे लाभ-हानि खाते को ले जाये जाते हैं तो विभिन्न वर्षों के लाभ-हानि खातों पर इनका समान प्रभाव नहीं पड़ेगा। यदि हम चाहते हैं कि सम्पत्ति के जीवन-काल में जितने भी लाभ-हानि खाते बनें उन पर सम्पत्ति के मरम्मत एवं नवीनीकरण के सम्बन्ध में बराबर प्रभाव पड़े तो इसके लिए हमें 'मरम्मत एवं नवीनीकरण के लिए आयोजन' (Provision for Repairs and Renewals) बनाना होगा। इस आयोजन की कार्य प्रणाली निम्न प्रकार होगी:—

विशेषज्ञों की सहायता से अनुमान लगाया जायेगा कि सम्पत्ति के जीवन काल में कुल कितने वर्ष होंगे और उस सम्पत्ति पर उन वर्षों में मरम्मत एवं नवीनीकरण पर कुल कितना खर्चा होगा। इस राशि में वर्षों का भाग देने पर मरम्मत एवं नवीनीकरण का वार्षिक खर्चा आ जावेगा, जिसे प्रति वर्ष लाभ-हानि खाते में डेबिट करके 'मरम्मत तथा नवीनीकरण आयोजन खाते' में क्रेडिट कर दिया जावेगा। प्रति वर्ष मरम्मत आदि पर खर्च की गई वास्तविक रकम को इस आयोजन खाते में डेबिट कर दिया जावेगा।

---

1. डूबत ऋण के लिए आयोजन तथा छूट के लिए आयोजन सम्बन्धी लेखों का छात्र पूर्व कक्षाओं में विस्तार से अध्ययन कर चुके हैं, इसलिए प्रस्तुत पुस्तक में उस विस्तार को अनावश्यक समझा गया है।

Illustration 57

A machine is purcha<ed recently which is expected to last for 4 years. It is likely to consume Rs. 2,000 on repairs during its life time. It is decided to load the Profit and Loss Accounts fo all the 4 years equally in respect of this expenditure. The actual expenditure of repairs comes to Rs. 200 in the 1st year, Rs. 400 in the 2nd year, Rs. 600 in the 3rd year and Rs. 800 in the 4th year.

Show the working of the Account that will be opened for the purpose.

अभी हाल ही में एक मशीन खरीदी गई है जिसके 4 वर्ष चलने की सम्भावना है। अनुमान है कि इसकी मरम्मत पर इसके जीवन काल में कुल 2,000 रु० खर्च होगा। यह निर्णय किया जाता है कि चारों वर्षों के लाभ-हानि खाते पर इसका बराबर प्रभाव पड़े। मरम्मत का वास्तविक खर्चा प्रथम वर्ष में 200 रु०, द्वितीय वर्ष में 400 रु०, तृतीय वर्ष में 600 रु० और चतुर्थ वर्ष में 800 रु० होता है।

उस खाते की कार्य-प्रणाली दिखाइये जो इस कार्य के लिए खोला जावेगा।

Solution :

इस कार्य के लिए Provision for Repairs and Renewals Account खोला जायेगा और इसमें इस प्रकार लेखा किया जावेगा :—

Provision for Repairs and Renewals Account

		Rs.			Rs.
1st year (end)	To Repairs a/c	200	1st year (end)	By P. & L. a/c	500
,,	,, Balance c/d	300			
		500			500
2nd year (end)	To Repairs a/c	400	2nd year (beginning)	By Balance b/d	300
,,	,, Balance c/d	400	(end)	,, P. & L. a/c	500
		800			800
3rd year (end)	To Repairs a/c	600	3rd year (beginning)	By Balance b/d	400
,,	,, Balance c/d	300	(end)	,, P. & L. a/c	500
		900			900
4th year (end)	To Repairs a/c	800	4th year (beginning)	By Balance b/d	300
			(end)	,, P. & L. a/c	500
		800			800

नोट:—यदि वास्तविक खर्च अनुमानित खर्च (2,000 रु०) से कम या अधिक आता है तो जो राशि अन्तिम वर्ष में लाभ-हानि खाते से 'मरम्मत एवं नवीनीकरण आयोजन खाते' में हस्तान्तरित की जावेगी उसी के अनुसार कम या अधिक कर दी जावेगी।

(4) विनियोगों का मूल्य गिरने पर आयोजन (Provision for fall in market price of investments)—यदि व्यवसाय की प्रतिभूतियों का बाजार-मूल्य पुस्तक मूल्य से नीचे चला गया है और व्यवसाय में प्रतिभूतियां चल सम्पत्ति के रूप में हैं तो इस आयोजन का निर्माण करना होगा और लाभ-हानि खाते को हानि की रकम से डेबिट कर इस आयोजन खाते को क्रेडिट किया जावेगा। यदि ये प्रतिभूतियां व्यवसाय में स्थायी सम्पत्ति के रूप में हैं तो इस आयोजन का निर्माण उसी अवस्था में किया जावेगा जबकि प्रतिभूतियों के बाजार-मूल्य में यह गिरावट स्थायी हो। विनियोगों को बेचने पर जब हानि होगी तो उसे इस आयोजन खाते में डेबिट कर दिया जावेगा। इस आयोजन को 'विनियोग उतार-चढ़ाव कोष' (Investment Fluctuation Fund) भी कहते हैं।

संचय (Reserves)

संचय का अर्थ—कम्पनी विधान ने संचय (Reserve) की कोई स्पष्ट परिभाषा नहीं दी है। इस विधान के अनुसार संचय के अन्तर्गत वह राशि आती है जो सम्पत्ति के ह्रास, नवीनीकरण या किसी ज्ञात दायित्व के लिए आयोजन न हो।[1]

पिकिल्स के अनुसार 'संचय' से तात्पर्य ऐसी राशि से है जो लाभ अथवा अन्य बचतों से निकाल कर अलग रख दी जाती है और जिसका उद्देश्य चिट्ठे के दिन किसी ज्ञात दायित्व या सम्पत्ति के मूल्य में कमी के लिए व्यवस्था करना नहीं है।[2]

आयोजन एवं संचय में अन्तर (Difference between Provision and Reserve)—

(1) आयोजन किसी विशेष हानि के लिए लाभ में से बनाये जाते हैं, जैसे, सम्पत्ति के ह्रास के लिए, सम्पत्ति के नवीनीकरण के लिए अथवा किसी ज्ञात दायित्व के प्रबन्ध के लिए, आदि। संचय किसी विशेष हानि के लिए नहीं बनाये जाते हैं।

(2) आयोजन का उपयोग उसी हानि को अपलिखित करने में किया जा सकता है जिसके लिए उस आयोजन का निर्माण किया गया है, जबकि संचय (पूँजी संचय और विशेष संचय के अलावा) किसी भी प्रयोग के लिए मुक्त रहते हैं।

(3) आयोजन का निर्माण अनिवार्य रूप से किया जाता है, चाहे लाभ हों अथवा नहीं, जब कि संचय का निर्माण लाभ में से ही किया जा सकता है क्योंकि इसका निर्माण अनिवार्य नहीं है।

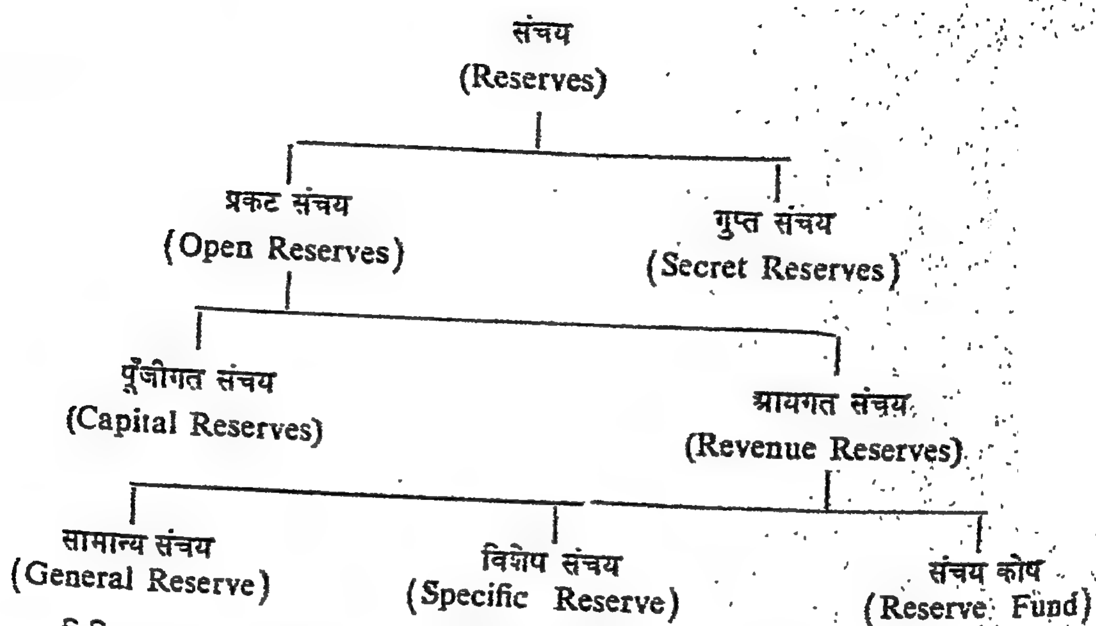
(4) आयोजन का उद्देश्य किसी ज्ञात हानि के लिए व्यवस्था करना है जबकि संचय का उद्देश्य संस्था की आर्थिक स्थिति दृढ़ करना अथवा संस्था की कार्यशील पूँजी को बढ़ाना है।

---

1. "The expression 'reserve' shall not......include any amount written of or retained by way of providing for depreciation, renewals or diminution in value of assets or retained by way of providing for known liability."—(Schedule VI Part III Para 7 (1) (b)—The Indian Companies Act, 1956)
2. "........amounts set aside out of profits and other surpluses which are not designed to meet any liability, contingency, commitment or diminution in value of assets known to exist at the date of the Balance Sheet."—Pickles.

(5) आयोजन का निर्माण लाभ में से किया जाता है और विशिष्ट उद्देश्य हेतु निर्माण किये जाने के कारण इन्हें लाभांश के रूप में नहीं बाँटा जा सकता, जबकि संचय लाभों का ही दूसरा रूप है और उन्हें संस्था के उपनियमों का पालन करते हुये लाभांश के रूप में बाँटा जा सकता है।

संचय के प्रकार (Kinds of Reserves)—संचय के प्रकार एक चार्ट द्वारा निम्न प्रकार से प्रकट किये जा सकते हैं :—



विभिन्न प्रकार के संचयों का आगे विस्तृत वर्णन किया जा रहा है :—

प्रकट संचय (Open Reserves)—प्रकट संचय से तात्पर्य ऐसे संचयों से होता है जो निश्चित शीर्षकों के अन्तर्गत चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर दिखाये जाते हैं। ये गुप्त संचय की तरह सम्पत्तियों या दायित्वों की ओट में छिपे नहीं रहते हैं। ये संचय दो प्रकार के होते हैं—पूँजीगत संचय और आयगत संचय।

पूँजीगत संचय (Capital Reserves)—भारतीय कम्पनी विधान ने 'पूँजीगत संचय' की परिभाषा देते हुये केवल इतना कहा है कि इसमें ऐसी कोई राशि शामिल नहीं होगी जिसका लाभ-हानि के जरिये वितरण किया जा सके।[1] अतः पूँजीगत संचय ऐसे संचय को कहेंगे जिनका लाभांश (Dividend) के रूप में वितरण न किया जा सके।

पूँजीगत संचय का निर्माण—पूँजीगत संचय (Capital Reserve) का निर्माण निम्न मदों[2] के हस्तान्तरण द्वारा किया जाता है—

(1) समामेलन के पूर्व का लाभ (Profit prior to Incorporation);

(2) पूँजी कटौती खाते (Capital Reduction Account) का क्रेडिट शेष;

1. The expression 'Capital Reserve' shall not include any amount regarded as free for distribution through the Profit and Loss Account.—(Schedule VI Part III Para 7(1) (c)–The Indian Companies Act, 1956).
2. इन मदों का विस्तृत वर्णन कम्पनी लेखे वाले अध्याय में किया गया है।

(3) स्थायी सम्पत्ति की बिक्री से लाभ;

(4) अंशों अथवा ऋण-पत्रों के निर्गमन पर प्राप्त प्रब्याजि (Premium),

(5) ऋण-पत्रों के शोधन (Redemption) पर लाभ;

(6) अंशों के हरण (Forfeiture) पर लाभ;

(7) सम्पत्तियों एवं दायित्वों के पुनर्मूल्यांकन से लाभ;

(8) पूँजी शोधन संचय खाते का शेष (Balance of Capital Redemption Reserve Account);

(9) पूँजीगत प्राप्तियाँ, जैसे पूँजीगत व्ययों के लिए केन्द्रीय सरकार से अनुदान (Contribution) की राशि प्राप्त होना;

(10) किसी चालू व्यवसाय को खरीदने पर यदि उसकी शुद्ध सम्पत्तियों (Net assets) का मूल्य व्यवसाय के क्रय मूल्य से अधिक है तो आधिक्य की रकम; तथा

(11) अंश आवेदनकर्त्ता को अंश वंटन न होने पर भी उसके द्वारा वापस न मांगी गई तथा कम्पनी के पास ही छोड़ी गई अंश आवेदन राशि।

पूँजी संचय का उपयोग—जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है, पूँजीगत संचय का उपयोग लाभांश वांटने में नहीं किया जा सकता। इसका उपयोग पूँजीगत हानियों को अपलिखित करने, वोनस अंश निर्गमित करने, आदि में किया जा सकता है।

पूँजीगत संचय और पूँजीगत लाभ (Capital Reserve and Capital Profit)—पूँजीगत लाभों की सहायता से पूँजीगत संचय का निर्माण किया जाता है लेकिन फिर भी दोनों में महत्वपूर्ण अन्तर है। पूँजीगत लाभों में से वहुत से लाभ ऐसे होते हैं जिन्हें लाभांश के रूप में वाँटा जा सकता है, जैसे, ऋण-पत्रों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम, स्थायी सम्पत्ति को वेचने से प्राप्त नकद लाभ, आदि। लेकिन यदि एक वार इन्हें पूँजीगत संचय में हस्तान्तरित कर दिया गया है तो फिर ये लाभांश के लिए उपलब्ध न होंगे।

आयगत संचय (Revenue Reserves)—कम्पनी विधान के अनुसार आयगत संचय वह संचय है जो पूँजीगत् संचय नहीं है।[1] अतः आयगत संचय ऐसे संचय को कहेंगे जिन्हें लाभांश वितरण के काम में लिया जा सकता है। इन्हें तीन श्रेणियों में वाँटा जा सकता है—

(i) सामान्य संचय (General Reserve);

(ii) विशेष संचय (Specific Reserve); और

(iii) संचय कोष (Reserve Fund)

(i) **सामान्य संचय (General Reserve)**—जिस प्रकार एक व्यक्ति के लिए अपनी समस्त आय को खर्च कर देना उचित नहीं है और यह आवश्यक माना जाता है कि वह अपनी आय का कुछ हिस्सा भविष्य के लिए वचाकर रखे, उसी प्रकार एक व्यवसाय के लिए भी यह आवश्यक माना जाता है कि

---

1. "And the expression 'revenue reserve' shall mean any reserve other than a capital reserve."—Schedule VI Part III 7 (1) (c)–The Indian Companies Act, 1956.

उसके लाभों में से एक हिस्सा भावी संकटों से रक्षार्थ बचाकर रख दिया जावे। एक व्यक्ति के लिए यह 'बचत' (Saving) कहलाती है जबकि एक व्यवसाय के लिए इसे 'सामान्य संचय' (General Reserve) कहते हैं। सामान्य संचय में से कभी भी लाभांश का वितरण किया जा सकता है, इसलिए इसे 'मुक्त संचय' (Free Reserve) भी कहा जाता है। सामान्य संचय का निर्माण प्रायः लाभ-हानि खाते को डेबिट करके तथा संचय खाते को क्रेडिट करके किया जाता है। ये संचय चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर दिखाये जाते हैं। चिट्ठे में इस प्रकार के संचय को दिखाया जाना मजबूत आर्थिक स्थिति को प्रकट करता है। सामान्य संचय का निर्माण ऐच्छिक होता है, लेकिन प्राय सभी अच्छी कम्पनियां इनका निर्माण करती हैं।

सामान्य संचय के उद्देश्य—सामान्य संचय का निर्माण निम्न उद्देश्यों के लिए किया जाता है :

(1) व्यापार की आर्थिक स्थिति को मजबूत करने के लिए;

(2) किसी अज्ञात भावी सङ्कट से व्यवसाय की रक्षा करने के लिए;

(3) व्यापार का विस्तार करने के लिए; और

(4) लाभांश की दर समान करने के लिए—यदि किसी वर्ष लाभ कम हों तो सामान्य संचय का उपयोग करके लाभांश की दर को कायम रखा जा सके।

(ii) विशेष संचय (Specific Reserve)—यदि लाभों में से एक हिस्सा किसी निश्चित कार्य के लिए बचाकर संचय में हस्तान्तरित किया जाता है तो संचय को **विशेष संचय (Specific Reserve)** कहते हैं। इस संचय का स्वभाव यद्यपि आयगत होता है लेकिन यह हर समय लाभांश वितरण के लिए उपलब्ध नहीं होता। उदाहरणार्थ, एक कम्पनी लाभ–हानि खाते से एक निश्चित रकम 'भवन-निर्माण-संचय' (Building Construction Reserve) में प्रति वर्ष हस्तान्तरित कर रही है ताकि कुछ समय में इतनी राशि इकट्ठी हो जावे कि उससे कम्पनी अपना स्वयं का भवन बना सके। यह विशेष संचय का उदाहरण है। जब भवन के लिए पर्याप्त रकम इस संचय में जमा हो जाये तो भवन बनवा लिया जावेगा और तब यह संचय मुक्त हो जावेगा और इसे किसी भी कार्य में लिया जा सकता है।

आयोजन और विशेष संचय में अन्तर (Difference between Provision and Specific Reserve)

आयोजन का निर्माण इसलिए किया जाता है कि भविष्य में होने वाली किसी हानि विशेष को उसमें से अपलिखित किया जा सके। इस हानि का चिट्ठे के दिन ज्ञान रहता है। जब यह हानि हो जाती है तब इस हानि से आयोजन की राशि कम कर दी जाती है और शेष आयोजन, यदि कोई हो तो, लाभ की तरह काम में लिया जा सकता है। जैसे, डूबत ऋण के लिए 500 रु० का आयोजन किया गया। यदि अगले वर्ष 400 रु० देनदारों में डूब जाता है तो आयोजन की राशि 100 रु० रह जावेगी। यदि अब और रुपया डूबने की सम्भावना नहीं है तो इसे लाभ की तरह काम में लिया जा सकता है।

आयोजन के विपरीत विशेष संचय का निर्माण किसी हानि के लिए नहीं किया जाता बल्कि किसी अन्य कार्य के लिए धन की व्यवस्था करने हेतु किया जाता है। जैसे, ऋणपत्रों का भुगतान करने के लिए अथवा किसी भवन का निर्माण करने के लिए, आदि। जिस उद्देश्य से विशेष संचय का निर्माण किया जाता है, उसकी पूर्ति हो जाने के पश्चात् यह सामान्य संचय बन जाता है और इसे किसी भी कार्य में

लिया जा सकता है। उदाहरणार्थ, लाभ में से 10,000 रु० प्रतिवर्ष भवन संचय (Building Reserve) में ले जाये जा रहे हैं ताकि 10 वर्ष बाद 1,00,000 रु० की लागत का भवन बनवाया जा सके। यह विशेष संचय है और जब भवन बन जायेगा तो इस संचय को किसी अन्य कार्य में लिया जा सकता है। प्राय: ऐसे संचय में से लाभांश बांटना सम्भव न हो सकेगा क्योंकि इसके लिए नकद रुपये की आवश्यकता पड़ेगी, लेकिन यह संचय किसी हानि को अपलिखित करने अथवा पूंजीगत बोनस[1] (Capital Bonus) देने के काम में लिया जा सकता है।

(iii) संचय कोष (Reserve Fund)–जब व्यवसाय में किसी सामान्य या विशेष संचय का निर्माण किया जाता है और उसके बराबर रकम का व्यवसाय के बाहर विनियोग कर दिया जाता है तो ऐसे सामान्य या विशेष संचय को 'संचय कोष' कहा जावेगा। जैसे, पिछले अनुच्छेद में दिये गये उदाहरण में यदि 10,000 रु० का प्रति वर्ष व्यवसाय के बाहर विनियोग कर दिया जावे ताकि 10 साल बाद विनियोगों को बेचकर प्राप्त रकम से भवन बनवाया जा सके तो इसे 'भवन संचय कोष' (Building Reserve Fund) कहेंगे।

शोधन कोष (Sinking Fund)

शोधन कोष लाभों में से बनाया गया ऐसा संचय अथवा आयोजन होता है जिसका विनियोग व्यवसाय के बाहर प्रतिभूतियों में कर दिया जाता है। शोधन कोष का उद्देश्य किसी दायित्व का रुपया लौटाने या किसी घिसने वाली सम्पत्ति के प्रतिस्थापन के लिए एक निश्चित तिथि को एक निश्चित धन-राशि की व्यवस्था करनी होती है। यदि इसका निर्माण किसी निश्चित दायित्व का भुगतान करने के लिए किया गया है तो यह संचय (Reserve) का रूप लेता है और यदि इसका निर्माण किसी घिसने वाली सम्पत्ति के प्रतिस्थापन के लिए किया गया है तो यह आयोजन (Provision) का रूप लेता है।

घिसने वाली सम्पत्ति के प्रतिस्थापन के लिए शोधन कोष (Sinking Fund) का निर्माण किस प्रकार किया जाता है और इस सम्बन्धी लेखे कैसे किये जाते हैं इसका वर्णन 'ह्रास कोष विधि' के अन्तर्गत किया जा चुका है। किसी दायित्व का भुगतान करने के लिए शोधन कोष का निर्माण किस प्रकार किया जावेगा और इससे सम्बन्धित लेखे किस प्रकार किये जावेंगे, इसका वर्णन कम्पनी लेखे वाले अध्याय में विस्तार से किया गया है। दोनों प्रकार के कोषों में अन्तर भी वहीं समझाया गया है।

गुप्त संचय
(Secret Reserve)

गुप्त संचय का अर्थ—गुप्त का अर्थ है छिपा हुआ, अर्थात् जो विद्यमान तो हो लेकिन नजर नहीं आवे। गुप्त का अर्थ अनुपस्थित नहीं होता बल्कि इसमें उपस्थिति सन्निहित है। गुप्त संचय का आशय ऐसे संचय से है जो विद्यमान तो है लेकिन चिट्ठे पर जिसका अस्तित्व प्रकट नहीं होता।[2] यह संचय चिट्ठे में दिखाई गई सम्पत्तियों एवं दायित्वों की ओट में छिपा रहता है। उदाहरणार्थ, 5,000 रु० की मशीन

1. पूंजीगत बोनस को कम्पनी लेखे वाले अध्याय में समझाया गया है।
2. "A secret reserve may be defined as a reserve, the existence and/or amount of which is not disclosed on the face of the Balance Sheet"—Spicer and Pegler.

ख़रीदी और लाभ-हानि खाते से उसी वर्ष पूर्ण रूप से अपलिखित कर दी गई। अतः चिट्ठे में सम्पत्ति एवं लाभ दोनों पाँच-पाँच हजार रुपये से कम दिखाये गये और इस प्रकार गुप्त संचय का निर्माण कर लिया गया। चिट्ठा देखने से इस संचय का पता नहीं लगता, इसलिए यह गुप्त संचय है। ध्यान रहे कि गुप्त संचय का निर्माण 5,000 रु० से नहीं हुआ है। यदि मशीन का मूल्य ह्रास 10% अपलिखित किया जाना चाहिए था तो मशीन चिट्ठे में 4,500 रु० की राशि पर दिखाई जानी चाहिए थी और लाभ-हानि खाते को 4,500 रु० से अधिक लाभ बताना चाहिए था, अतः गुप्त संचय 4,500 रु० है।

गुप्त संचय निर्माण के उद्देश्य—गुप्त संचय का निर्माण निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जा सकता है :—

(1) **व्यवसाय की आन्तरिक स्थिति को मजबूत बनाना**—गुप्त संचय का होना यह प्रकट करता है कि चिट्ठे से संस्था की स्थिति जैसी दृष्टिगत होती है, वास्तविक स्थिति उससे अच्छी है। अतः गुप्त संचय की स्थापना करके संस्था की आन्तरिक स्थिति को मजबूत किया जा सकता है।

(2) **संकट के समय रक्षा**—गुप्त संचय ऐसी भूमिगत सेना है जिसका निर्माताओं के अलावा किसी को पता नहीं होता। भविष्य में यदि व्यवसाय को किसी हानि रूपी संकट का मुकाबला करना पड़ जावे तो गुप्त संचय रूपी सेना की सहायता ली जा सकती है।

(3) **प्रबन्धकों द्वारा कमजोरी छिपाना**—यदि प्रबन्धकों की भूल के कारण संस्था को कोई हानि हो जावे तो गुप्त कोष से अपलिखित करके प्रबन्धकों की भूल को छिपाया जा सकता है।

(4) **लाभ को कम प्रकट करना**—प्रतिद्वन्द्वियों को धोखा देने के लिए अथवा आयकर की चोरी करने के लिए अथवा एक कम्पनी की परिस्थिति में उसके अंशों की बाजार में कीमत गिराने के लिए लाभ-हानि खाते के लाभ को कम दिखाना भी गुप्त संचय के निर्माण का उद्देश्य हो सकता है।

गुप्त संचय बनाने की विधियाँ—

(1) **पूंजीगत खर्चों को आयगत मानना**—जैसे, 1,000 रु० का फर्नीचर खरीदा और इसे फर्नीचर खाते के डेबिट पक्ष में न लिखकर कार्यालय खर्चों (Office expenses) के डेबिट में लिखकर लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर दिया। इससे लाभ एवं सम्पत्ति दोनों कम हो गई और इस प्रकार गुप्त संचय का निर्माण हो गया।

(2) **अदत्त सम्पत्तियों (Outstanding Assets) को चिट्ठे में न दिखाना**—जैसे, विनियोगों पर उपार्जित किन्तु अप्राप्त ब्याज का समायोजन न करना। इससे सम्पत्ति एवं लाभ दोनों कम हो जावेंगे और गुप्त कोष का निर्माण हो जावेगा।

(3) **पूर्वदत्त खर्चों (Prepaid expenses) का समायोजन न करना**—जैसे, 1,200 रु० बीमा-प्रीमियम चुकाई, जिसमें 800 रु० अगले वर्ष से सम्बन्धित हैं। ये 800 रु० पूर्वदत्त खर्च हैं। यदि लाभ-हानि खाते से 1,200 रु० अपलिखित कर दिये जाते हैं तो सम्पत्ति एवं लाभ दोनों आठ-आठ सौ रुपये से कम हो जावेंगे और गुप्त कोष का निर्माण हो जावेगा।

(4) **सम्पत्तियों को कम मूल्य पर दिखाना (Undervaluation of Assets)**—यह कई प्रकार से किया जा सकता है जिसके कुछ उदाहरण आगे दिये जाते हैं—

(i) आवश्यकता से अधिक मूल्य ह्रास काटना;

(ii) ख्याति को कम दिखाना;

(iii) अन्तिम स्टाक का मूल्य कम दिखाना अथवा कुछ माल को स्टॉक सूचियों में शामिल न करना।

(5) दायित्वों का अधिमूल्यन करना (Overvaluation of Liabilities)—जैसे संदिग्ध दायित्वों को वास्तविक दायित्व समझ लेना। इससे दायित्व बढ़ जावेंगे और लाभ कम हो जावेंगे। क्योंकि संदिग्ध दायित्व को वास्तविक दायित्व समझने से होने वाली हानि को लाभ-हानि खाते से अपलिखित करना पड़ेगा। दूसरा उदाहरण है, साधारण संचय को लेनदारों के साथ मिलाकर दिखाना। इसे इस प्रकार के शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जा सकता है—"Credit Balances including Creditors." इससे संचय छिप जावेंगे और गुप्त कोष का निर्माण हो जावेगा।

(6) आवश्यकता से अधिक आयोजन (Provision) बनाना—डूबत ऋण अथवा देनदारों पर छूट के लिए आवश्यकता से अधिक आयोजन करके भी गुप्त संचय का निर्माण किया जा सकता है।

गुप्त संचय के लाभ—

(1) आर्थिक स्थिति मजबूत होना—गुप्त कोष के निर्माण से संस्था की आर्थिक स्थिति मजबूत हो जाती है क्योंकि इससे लाभ को छिपाया जा सकता है और बाँटने से बचाया जा सकता है।

(2) ख्याति (Goodwill) को संकट के समय भी बनाये रखना—यदि किसी वर्ष व्यवसाय में अप्रत्याशित हानि हो जाय तो उसे गुप्त संचय से अपलिखित करके व्यवसाय की ख्याति को कायम रखा जा सकता है।

(3) प्रतिद्वन्द्वियों को धोखा देना—इसके द्वारा प्रतिद्वन्द्वियों से संस्था की सही आर्थिक स्थिति छिपाकर, उनको धोखे में रखा जा सकता है। इससे प्रतियोगिता की सम्भावना कम हो जाती है।

(4) कार्यशील पूंजी का बढ़ना—गुप्त संचय का व्यवसाय में विनियोग किया जाता है। इससे व्यवसाय में कार्य शील पूंजी बढ़ती है।

(5) जनता का विश्वास कायम रखना:—गुप्त संचय द्वारा प्रति वर्ष व्यवसाय के लाभों को स्थिर बनाये रखने में मदद मिलती है और इससे व्यवसाय में जनता का विश्वास बढ़ता है। यही कारण है कि बैंक और बीमा कम्पनी जैसी संस्थाओं के लिए इनका निर्माण बहुत उपयोगी है।

गुप्त संचय से हानियां—

(1) अन्तिम खातों का अशुद्ध होना—गुप्त संचय की उपस्थिति से संस्था का लाभ-हानि खाता एवं चिट्ठा संस्था की सही स्थिति को नहीं बतायेंगे।

(2) प्रबन्ध की कमजोरियों को छिपाना—यदि प्रबन्धकों की अयोग्यता के कारण संस्था को हानि होती है तो उस हानि को गुप्त संचय से अपलिखित करके अयोग्यता को छिपाया जा सकता है।

(3) अंशों का बाजार मूल्य कम होना—गुप्त संचय के कारण संस्था के लाभ छिप जाते हैं जिससे संस्था के अंशों का मूल्य बाजार में गिर जाता है। संचालक-गण इन अंशों को गिरे हुये मूल्य पर खरीद कर अनुचित लाभ कमा सकते हैं। ऐसी दशा में जो अंशधारी अपने अंशों को बेचते हैं, उन्हें हानि होगी।

(4) **बीमा कम्पनी से मिलने वाले हर्जाने में कमी**—गुप्त संचय द्वारा सम्पत्तियों का मूल्य गिरा दिया जाता है। अतः यदि सम्पत्तियों में आग लग जावे तो बीमा कम्पनी से हर्जाने की रकम कम मिलेगी।

(5) **व्यवसाय की ख्याति का सही ज्ञान न होना**—गुप्त संचय से व्यवसाय के लाभ छिपा दिए जाते हैं और ख्याति की गणना प्रायः लाभों के आधार पर की जाती है, अतः गुप्त संचय होने पर व्यवसाय की ख्याति का मूल्यांकन कम अंक (Figure) पर किया जावेगा।

(6) **सम्पत्ति का गबन**—यदि गुप्त संचय का निर्माण करने हेतु किसी सम्पत्ति को चिट्ठे में बिल्कुल ही न लिखा जावे तो उस सम्पत्ति का गबन हो जाने पर भी उसका पकड़ा जाना मुश्किल होगा।

गुप्त संचय एवं कम्पनी अधिनियम—

भारतीय कम्पनी अधिनियम 1956 के लागू होने से पूर्व कम्पनियां प्रायः गुप्त संचयों का निर्माण कर लेती थीं और उनके संचालक उनका दुरुपयोग किया करते थे तथा अंशधारियों के सामने कम्पनी की जो स्थिति प्रकट की जाती थी वह गलत होती थी। अब भारतीय कम्पनी विधान के अन्तर्गत गुप्त संचयों का निर्माण अवैध हो गया है, क्योंकि—

(i) अधिनियम के अन्तर्गत एक कम्पनी को आयोजनों एवं संचयों (Provisions and Reserves) के सम्बन्ध में लाभ-हानि खाते एवं चिट्ठे में पूर्ण सूचना देनी होती है।[1] गुप्त संचय एक ऐसा संचय है जिसकी सूचना कहीं भी प्रकट नहीं होती, अतः इसका निर्माण अवैधानिक है।

(ii) अधिनियम के अन्तर्गत यह आवश्यक है कि कम्पनी का लाभ-हानि खाता कम्पनी के सही एवं उचित (True and fair) लाभ या हानि को तथा कम्पनी का चिट्ठा कम्पनी की सही एवं उचित आर्थिक स्थिति को प्रकट करे। यह तभी सम्भव है जबकि कम्पनी की सम्पत्ति एवं दायित्वों को सही एवं उचित मूल्य पर चिट्ठे में दिखाया गया हो। गुप्त संचय का निर्माण होने पर सम्पत्तियों एवं दायित्वों का सही एवं उचित रूप नहीं रहेगा। अतः इनका निर्माण अवैधानिक है।

गुप्त संचय का वैधानिक होना—कम्पनी अधिनियम द्वारा बैंकों, बीमा कम्पनियों एवं बिजली कम्पनियों को गुप्त संचय के निर्माण की छूट दी गई है क्योंकि ये कम्पनियां जन-विश्वास पर चलती हैं।[2] भारत सरकार अन्य कम्पनियों को भी जन हित में ऐसी छूट दे सकती है।

इसी प्रकार यदि कोई कम्पनी ख्याति को अपलिखित करके गुप्त संचय बनाती है तो वह अवैधानिक नहीं होगा।

---

1. Schedule VI Part I, II, & III—The Indian Companies Act, 1956.
2. भारतीय कम्पनी विधान, 1956 की धारा 211 ने बैंकों, बीमा कम्पनियों तथा बिजली कम्पनियों को सारिणी VI की आवश्यकताओं से मुक्त कर दिया है।

Illustration 58.

Following is the Balance Sheet of a business before secret reserves. (गुप्त संचय के निर्माण के पूर्व एक व्यवसाय का चिट्ठा इस प्रकार है) :—

Balance Sheet

	Rs.		Rs.
Creditors	10,000	Goodwill	10,000
Capital	30,000	Plant and Machinery	5,000
P. and L. a/c	12,000	Stock in trade	20,000
		Debtors (all good)	15,000
		Cash at Bank and in hand	2,000
	52,000		52,000

It is decided to create secret reserves and the Balance Sheet thereafter appears as follows. (गुप्त संचय के निर्माण का निर्णय लिया जाता है। इसके बाद का चिट्ठा इस प्रकार है) :—

Balance Sheet

	Rs.		Rs.	Rs.
Creditors	10,000	Plant and Machinery		5,000
Capital	30,000	Stock in Trade		19,000
		Debtors	15,000	
		Less Provision for Bad Debts	1,000	14,000
		Cash at Bank and in hand		2,000
	40,000			40,000

Show the amount and the composition of the secret reserves.

(गुप्त संचय की राशि और उसके अङ्ग बताइये)।

Solution

Statement showing the amount and composition of secret reserve

	Rs.
Goodwill	10,000
Stock (Rs. 20,000—Rs. 19,000)	1,000
Debtors (Provision not required)	1,000
Assets reduced by and profits omitted	12,000

इस प्रकार हम देखते हैं कि सम्पत्ति पक्ष की ओर 12,000 रु० की सम्पत्तियाँ कम हो गईं और दायित्व पक्ष की ओर से लाभ-हानि खाते का 12,000 रु० का शेष गायब हो गया और इस प्रकार 12,000 रु० से गुप्त संचय का निर्माण हो गया।

Illustration 59.

In the above illustration, the business suffers a loss in speculation during subsequent years to the extent of Rs. 5,000. The manager wants to utilise the secret reserve for this purpose as follows :—

	Rs.
Stock	1,000
Provision for Bad Debts	1,000
Goodwill	3,000
	5,000

Pass the necessary journal entries to give effect to the above arrangement.

उपरोक्त उदाहरण में अगले वर्षों में व्यापार को 5,000 रु० का सट्टे में नुकसान होता है। मैनेजर इस हानि को छिपाना चाहता है और इस कार्य के लिए गुप्त संचय का निम्न प्रकार उपयोग करना चाहता है—

	रु०
स्टॉक	1,000
डूबत-ऋण आयोजन	1,000
ख्याति	3,000
	5,000

इसके लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टि दीजिए।

Solution :—

Journal Entry

		Rs.	Rs.
Goodwill a/c	Dr.	3,000	
Provision for Bad Debts a/c	Dr.	1,000	
Stock a/c	Dr.	1,000	
To Speculation Loss a/c			5,000
(Speculation Loss written off.)			

Illustration 60

After coming into force of the Indian Companies Act, 1956, the directors of a limited company, possessing secret reserves estimated at Rs. 80,000, decided to adjust the Balance Sheet so as to disclose the true position as on 31st December, 1956. The amount of Rs. 80,000 is made up of as follows :—

(i) Deduction of 10% from the value of stock—Rs. 8,500;

(ii) Profit on sale of investment appropriated to reduce the value of the remaining investments below cost—Rs. 10,000;

(iii) Excessive Provision for Income-tax—Rs. 5,000;

(iv) Undervaluation of machinery resulting from excessive provision for depreciation—Rs. 55,000; and

(v) Motor vehicles written off—Rs. 1,500.

That portion of the Rs. 80,000 representing the extent to which revenue has been penalised in the past is to be placed to a reserve for the equalisation of dividends. The remainder is to be placed to a Pension Fund, an equivalent amount to be specifically invested in gilt-edged securities so as to provide for the payment of pensions.

Pass the necessary journal entries to record the adjustments and other transactions in the books of the company.

भारतीय कम्पनी विधान, 1956 के लागू होने के पश्चात् एक लिमिटेड कम्पनी के संचालकों ने जो 80,000 रु० के अनुमानित गुप्त संचय रखते थे, चिट्ठे में समायोजन करने का निश्चय किया ताकि यह 31 दिसम्बर, 1956 को सही स्थिति प्रकट कर सके। 80,000 रु० की राशि निम्नलिखित प्रकार बनी है :—

(i) स्टॉक के मूल्य में 10% कटौती—8,500 रु०;

(ii) विनियोगों की बिक्री से लाभ को शेष विनियोगों के मूल्य को लागत कीमत से नीचे गिराने के काम में लिया गया–10,000 रु०;

(iii) आयकर के लिये अत्याधिक प्रावधान–5,000 रु०;

(iv) मूल्य ह्रास के अत्याधिक प्रावधान के फलस्वरूप मशीन का अवमूल्यन-55,000 रु०; तथा

(v) मोटर गाड़ी अपलिखित की गई–1,500 रु०।

80,000 रु० के उस हिस्से को जिसने पिछले समय में आय को दण्डित किया है, लाभांश को समान करने के लिए एक संचय में रखना है। शेष को पेंशन कोष में रखना है और इसके बराबर राशि का स्वर्ण प्रतिभूतियों में विनियोजन करना है ताकि पेंशन के भुगतान की व्यवस्था हो सके।

समायोजन तथा अन्य व्यवहारों का लेखा करने के लिए कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ कीजिए।

Solution

Journal

				Rs.	Rs.
	Stock a/c	Dr.		8,500	
	Provision for Income-tax a/c	Dr.		5,000	
	Machinery a/c	Dr.		55,000	
	Motor Vehicles a/c	Dr.		1,500	
	To Dividend Equalisation Reserve a/c				70,000
	(Secret Reserves utilised.)				
	Investments a/c	Dr.		10,000	
	To Pension Fund a/c				10,000
	(Secret Reserves utilised.)				
	Pension Fund Investments a/c	Dr.		10,000	
	To Bank a/c				10,000
	(Amount equal to Pension Fund invested.)				
				90,000	90,000

Questions

1. What is meant by "Depreciation" ? How does it differ from fluctuation and obsolescence ?

"मूल्य ह्रास" से क्या तात्पर्य है ? यह उतार-चढ़ाव और अप्रचलन से किस प्रकार भिन्न है ?

2. Why is it necessary to provide for depreciation on assets ? Is it advisable to write it even in a year of loss ?

सम्पत्तियों पर मूल्य ह्रास अपलिखित करना अनिवार्य क्यों है ? क्या यह उस वर्ष भी लिखा जाना उचित है जिस वर्ष नुकसान हो ?

3. What is "Written Down Value Method" of providing for depreciation ? How does it differ from the "Straight Line Method" ? Give their advantages and disadvantages.

मूल्य ह्रास अपलिखित करने की "क्रमागत ह्रास विधि" क्या है ? यह "स्थायी किस्त विधि" से किस प्रकार भिन्न है ? इनके लाभ और हानियाँ बताओ।

4. What is annuity method of providing for depreciation ? To what class of assets is it suitable ? Give its merits and demerits.

मूल्य ह्रास-व्यवस्था करने की वार्षिक वृत्ति प्रणाली क्या है ? यह किस प्रकार की सम्पत्तियों के लिए उपयुक्त है ? इसके गुण दोष बताइये।

5. What is the difference between Annuity Method and Depreciation Fund Method of providing for depreciation ? Give merits and demerits of the latter.

मूल्य ह्रास-व्यवस्था करने की वार्षिक वृत्ति प्रणाली और मूल्य ह्रास कोष विधि में क्या अन्तर है ? बाद वाली विधि के गुण-दोष बताइये।

6. What is the difference between the Insurance Policy Method and Depreciation Fund Method of providing for depreciation ? When would you like to follow the Insurance Policy Method and why ?

मूल्य ह्रास व्यवस्था करने की बीमा पॉलिसी विधि और मूल्य ह्रास कोष विधि में क्या अन्तर है ? बीमा पॉलिसी विधि का आप कब और क्यों उपयोग करना चाहेंगे ?

7. Describe the various methods of providing for depreciation of fixed assets. Which method would you consider suitable in case of the following assets :—

(i) Plant & Machinery; (ii) Furniture; (iii) A long-term lease; (iv) Live-Stock; and (v) Motor Vehicles ?

स्थायी सम्पत्ति के ह्रास की व्यवस्था करने के लिए विभिन्न विधियों का वर्णन करो। अग्रलिखित सम्पत्तियों के सम्बन्ध में आप कौनसी विधि उपयुक्त समझेंगे :—

(i) प्लाट और मशीन; (ii) फर्नीचर; (iii) दीर्घकालीन पट्टा; (iv) पशुधन; और (v) मोटर गाड़ी ?

*8. On 1st January, 1960, A purchased a plant for Rs. 10,000 ands pent Rs. 1,000 on its erection. It is decided to depreciate it at 10% p.a. on the straight line method. Write up the Plant Account for the first five years.

1 जनवरी, 1960 को अ ने 10,000 रु० में एक प्लान्ट खरीदा और 1,000 रु० इसकी स्थापना पर खर्च किये। यह तय किया गया कि इस पर स्थाई किस्त विधि के अनुसार 10% वार्षिक ह्रास प्रावधानित किया जाये। प्रथम पांच वर्ष के लिए प्लान्ट खाता बनाइये। [71]

Ans. : Balance of Plant Account Rs. 5,500.

*9. Attempt Q. No. 8 according to the written down value method.
प्रश्न न० 8 को क्रमागत ह्रास विधि से हल करो। [72]

Ans. : Balance of Plant Account Rs. 6,495=39.

*10. A firm purchased on 1st January, 1960 certain machinery for Rs. 10,000. On 1st July in the same year additional machinery costing Rs. 5,000 is purchased. On 1st July, 1962, the machinery acquired on 1st January, 1960 having become obsolete is sold off for Rs. 2,000. On the same date, fresh machinery is purchased at a cost of Rs. 12,000.

Depreciation is provided for annually on 31st December at the rate of 10% per annum on the original cost of the asset. In 1963, however, the firm changes this method and adopts the method of writing off 15% per annum on the diminishing value. Show the Machinery Account as it would appear at the end of each year from 1960 to 1963.

एक फर्म ने 1 जनवरी, 1960 को कोई मशीन 10,000 रु० में खरीदी। उसी वर्ष 1 जुलाई को 5,000 रु० की लागत की अतिरिक्त मशीन खरीदी गई। 1 जुलाई, 1962 को 1 जनवरी, 1960 को खरीदी गई मशीन अप्रचलन के कारण 2,000 रु० में बेच दी गई। उसी दिन, नई मशीन 12,000 रु० की लागत पर खरीदी गई।

ह्रास की व्यवस्था मूल लागत पर 10% वार्षिक की दर से 31 दिसम्बर को की जाती है। 1963 में फर्म इस विधि को बदल देता है और 15% वार्षिक की दर पर क्रमागत ह्रास विधि को अपना लेता है। मशीन खाता बनाइये, जैसा कि यह 1960 से 1963 तक प्रत्येक वर्ष के अन्त में प्रकट होगा।

Ans. : Balance of Machinery Account Rs. 12,877=50 [73]

*11. A company purchased a second-hand machinery on 1st January, 1961 for Rs. 37,000 and immediately spent Rs. 2,000 on its repairs and Rs. 1,000 on its erection. On 1st July, 1962 it purchased another machine for Rs. 10,000

and on 1st July, 1963, it sold off the first machine purchased in 1961 for Rs. 28,000. On the same date it purchased a machinery for Rs. 25,000. On 1st July, 1964, the second machinery purchased for Rs. 10,000 was also sold off for Rs. 2,000.

Depreciation was provided on machinery at the rate of 10% on the original cost annually on 31st December. In 1962, however, the company changed the method of providing depreciation and adopted the written-down-value method, the rate of depreciation being 15% per annum.

Give the Machinery Account for the four years commencing from 1st January, 1961.

एक कम्पनी ने एक पुरानी मशीन 1 जनवरी, 1961 को 37,000 रु० में खरीदी और तुरन्त 2,000 रु० उसकी मरम्मत तथा 1,000 रु० उसकी स्थापना पर खर्च किया। 1 जुलाई, 1962 को इसने 10,000 रु० की दूसरी मशीन खरीदी और 1 जुलाई 1963 को 1961 में खरीदी गई प्रथम मशीन को 28,000 रु० में बेच दिया। उसी दिन इसने एक मशीन 25,000 रु० में खरीदी। 1 जुलाई, 1964 को 10,000 रु० में खरीदी गई दूसरी मशीन 2,000 रु० में बेच दी गई।

ह्रास की व्यवस्था 31 दिसम्बर को प्रति वर्ष मशीन की मूल लागत पर 10% की दर से की जाती थी। 1962 में कम्पनी ने ह्रास की व्यवस्था करने की विधि को बदल दिया और क्रमागत ह्रास विधि को अपना लिया, ह्रास की दर 15% वार्षिक की गई। [74]

1 जनवरी, 1961 से चार वर्षों के लिए मशीन खाता बनाइये।

Ans. : Balance of Machinery Account Rs. 19,656.

12. The following information relates to the business of a manufacturer for the year ended 31st December, 1967:—

(a) The debit balance of the Plant and Machinery Account as on 1st January, 1967 was Rs. 26,840.

(b) During the year three machines standing in the books at Rs. 1,286 were sold for Rs. 600.

(c) On 1st April, 1967 new machine costing Rs. 5,880 were purchased and were installed by the manufacturer's own workmen at an expenditure of Rs. 216 (i. e. wages Rs. 174 and material Rs. 42.)

(d) It is the practice of the business to write off 15% depreciation on all additions to plant and 20% on all old plant.

Prepare the Plant and Machinery Account as it would appear on 31st December, 1967.

एक वस्तु निर्माता के व्यवसाय से सम्बन्धित 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित सूचनाएं प्राप्त होती हैं:—

(अ) 1 जनवरी, 1967 को प्लांट व मशीनरी खाते में 26,840 रु० का डेबिट शेष था।

(ब) उस वर्ष में तीन मशीनें, जिनका पुस्तकों में 1,286 रु० मूल्य था, 600 रु० में बेची गईं।

(स) 1 अप्रैल, 1967 को 5,880 रु० लागत की एक नई मशीन खरीदी गई तथा निर्माता के स्वयं के मजदूरों द्वारा 216 रु० (मजदूरी के 174 रु० व सामग्री के 42 रु०) के खर्चे पर स्थापित की गई।

(द) व्यवसाय की यह प्रथा है कि प्लांट में वृद्धि पर 15% तथा समस्त पुराने प्लांट पर 20% ह्रास अपलिखित किया जाता है।

प्लांट व मशीनरी खाता बनाइये, जैसा कि वह 31 दिसम्बर, 1967 को प्रकट होगा। [75]

Ans : Rs. 25,624. 80

(संकेत:—ह्रास की दर के साथ 'वार्षिक' शब्द नहीं दिया हुआ है।)

५13. On 1st January, 1965 plant and machinery of a merchant stood at Rs. 7;50,000 at cost and the depreciation written off to that date in respect thereof amounted to Rs. 2,50,000.

This item included Rs. 30,000 being the cost of a Motor Truck, the total depreciation provided thereon being Rs. 9,000.

On 21st August, 1965 this truck was badly damaged and was sold off as scrap for Rs. 3,000. It was, however, insured and a sum of Rs. 25,000 was received from the insurance company on 15th October, 1965.

On 31st December, 1965 Rs. 25,000 was provided for depreciation of plant and machinery.

Prepare Plant and Machinery Account and Depreciation Account for the year ended 31st December, 1965.

1 जनवरी, 1965 को एक व्यापारी की पुस्तकों में प्लांट व मशीनरी 7,50,000 रु० (लागत मूल्य) पर दिखाई गई थी और इसके सम्बन्ध में उस तिथि तक 2,50,000 रु० ह्रास के रूप में अपलिखित किये जा चुके थे।

उक्त मद में एक मोटर ट्रक शामिल है जिसका लागत मूल्य 30,000 रु० है तथा उस पर 9,000 रु० ह्रास अपलिखित किया जा चुका है।

21 अगस्त, 1965 को यह ट्रक बुरी तरह से नष्ट हो गया तथा इसके अवशिष्ट को 3,000 रु० में बेच दिया गया। इस ट्रक का बीमा भी कराया हुआ था और 15 अक्टूबर, 1965 को बीमा कम्पनी से 25,000 रु० प्राप्त हो गये।

31 दिसम्बर, 1965 को प्लांट व मशीनरी पर 25,000 रु० ह्रास के रूप में अपलिखित किये गये।

31 दिसम्बर, 1965 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्लांट व मशीनरी खाता और ह्रास खाता बनाइये। [76]

Ans. : Balance of Plant & Machinery a/c Rs. 7,20,000

" " Depreciation a/c Rs. 2,66,000

14. The following are the details of Machinery Account at 31st December 1966 :—

Machinery Account

Dr.

		Rs.
1966		
Jan. 1	To Balance (cost price)	19,500
Aug. 1	To Bank (additions at cost price)	4,000
		23,000

Cr.

		Rs.
1966		
Jan. 1	By Depreciation provided	13,600
June 30	By Bank (Sale proceeds)	7,000
		20,600

The machinery sold costs Rs. 10,666 on 1st July, 1963. The machinery has been written down at 25 per cent on written down values at the end of each year.

Prepare Machinery Account and show how the above will be shown in the Balance Sheet at 31st December, 1966.

31 दिसम्बर, 1966 को मशीनरी खाते में निम्नलिखित विवरण थे :—

मशीनरी खाता

डेबिट

		रु०
1966		
जनवरी 1	प्रारम्भिक शेष (लागत मूल्य)	19,500
अगस्त 1	बैंक द्वारा खरीद (लागतमूल्य पर वृद्धि)	4,000
		23,500

क्रेडिट

		रु०
1966		
जनवरी 1	ह्रास प्रावधान	13,600
जून 1	बिक्री	7,000
		20,600

जो मशीन बेची गई उसको 1 जुलाई, 1963 को 10,666 रु० के लागत मूल्य पर खरीदा गया था। प्रत्येक वर्ष के अंत में क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार 25 प्रतिशत के आधार पर मशीनरी को अपलिखित किया गया है।

प्लांट व मशीनरी खाता बनाइये तथा यह बतलाइये कि 31 दिसम्बर, 1966 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में उक्त मदों को किस प्रकार दिखायेंगे। [77]

Ans. : Balance of Machinery a/c Rs. 4,050
(संकेत:—ह्रास की दर के साथ 'वार्षिक' शब्द नहीं दिया हुआ है)

15. A manufacturing company provides depreciation on its plant and machinery by the "Straight line method" att he rate of 10%. Depreciation for the full year is provided at the end of each year on all plant and machinery not completely written off or sold, including any plant purchased during the year in question, notwithstanding that such may have been in use for less than a full year. Any profit or loss from sale of plant is transferred to Profit and Loss Account at the end of the year. The company closes its accounts on 31st December each year.

The Plant and Machinery Account showed a balance of Rs. 1,95,150 on 1st January, 1958 and the following further information is given to you regarding their cost from the original records:—

	Rs.
Plant & Machinery purchased in the year 1947 or earlier	58,000
Machinery purchased in the year 1948	31,000
Machinery purchased in the year 1949	17,000
Plant & Machinery purchased in the year 1950 or later	2,52,000
	3,58,000

During the year 1958 a new machine was purchased for Rs. 29,500 and the old one costing Rs. 5,500 in 1946 was sold at Rs. 350.

Similarly in the calendar year 1959, additions to plant and machinery were made amounting to Rs. 18,000 and a machine purchased in 1955 costing Rs. 7,000 realised Rs. 3,500.

Write up the Plant and Machinery Account for the years 1958 and 1959 giving proper details of your working separately.

एक वस्तु निर्माता कम्पनी अपनी प्लांट व मशीनरी पर स्थाई किस्त विधि के अनुसार 10 प्रतिशत की दर से ह्रास अपलिखित करती है। जो प्लांट व मशीनरी किसी भी वर्ष पूर्णतया अपलिखित नहीं हो गये हैं अथवा बेच नहीं दिये गये हैं, उन पर वर्ष के अंत में सम्पूर्ण वर्ष के लिए ह्रास अपलिखित किया जाता है। यदि कोई प्लांट किसी वर्ष खरीदा जाये तो उस पर उस वर्ष के अंत में सम्पूर्ण वर्ष के लिए ह्रास अपलिखित किया जायेगा चाहे वह प्लांट एक वर्ष से कम समय के लिए ही प्रयोग में लाया गया

हो। प्लांट की बिक्री पर लाभ या हानि वर्ष के अंत में लाभ-हानि खाते को हस्तान्तरित की जाती है। प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को कम्पनी के खाते बन्द किये जाते हैं।

1 जनवरी, 1958 को प्लांट व मशीनरी खाते का शेष 1,95,150 रु० था तथा मूल रिकार्ड से उनके लागत मूल्य के बारे में निम्नलिखित सूचना उपलब्ध है :—

	रु०
1947 में अथवा उससे पहले खरीदी गई प्लांट व मशीनरी	58,000
1948 में खरीदी गई मशीनरी	31,000
1949 में खरीदी गई मशीनरी	17,000
1950 में अथवा बाद में खरीदी गई प्लांट व मशीनरी	2,52,000
	3,58,000

1958 में एक नई मशीन 29,500 रु० में खरीदी गई और एक पुरानी मशीन, जो 1946 में 5,500 रु० में खरीदी गई थी, को 350 रु० में बेचा गया।

इसी प्रकार 1959 में प्लांट व मशीनरी में 18,000 रु० की वृद्धि की गई और एक मशीन जो 1955 में 7,000 रु० में खरीदी गई, 3,500 रु० में बेच दी गई।

1958 व 1959 वर्षों के लिये प्लांट व मशीनरी खाता बनाइये तथा अपनी गणनाओं के विवरण अलग से दिखाइये। [78]

Ans. : Balance 1958—Rs. 1,94,800
" 1959—Rs. 1,79,350

16. Chartered Engineering Co. Ltd. has plant and machinery which on 1st January, 1958 was entered in the ledger under two separate accounts, viz., Machinery Rs. 1,28,600 and Depreciation on machinery Rs. 72,520. The company maintains a machinery register showing full details. Depreciation is being charged at 10% per annum on cost.

On 30th June, 1958 it was decided to stop operation of a section of the plant immediately and sell its machinery. This had been purchased on 1st January, 1949 at a cost (including erection) of Rs. 12,000. It was sold on 15th December, 1958 to Ghelabhai Ltd. for Rs. 1,600 (Ex-factory). The cost of wages for dismantling was Rs. 100. New and more efficient machinery was purchased from Dayabhai Ltd. on 1st August, 1958 at a cost (including erection) of Rs. 20,000. This new machinery commenced operation on 1st October, 1958.

You are required :

(a) to write up journal entries and ledger accounts concerned to record the above transactions;

(b) to state (as on 31st Dec., 1958) how the figures relating to the plant and machinery should be set out in the balance-sheet; and

(c) to state the amount of depreciation to be provided in 1958.

चार्टर्ड इन्जीनियरिंग कम्पनी लिमिटेड के पास प्लांट व मशीनरी थी जिसे 1 जनवरी, 1958 को खाताबही में दो अलग-अलग खातों में दर्ज किया हुआ था, अर्थात् मशीनरी 1,28,600 रु० तथा मशीनरी पर ह्रास 72,520 रु० । कम्पनी एक मशीनरी रजिस्टर रखती है जिसमें पूर्ण विवरण दिखाये हुये हैं । ह्रास लागत मूल्य पर 10 प्रतिशत वार्षिक चार्ज किया जाता है ।

30 जून, 1958 को प्लांट के एक विभाग का कार्य तुरंत रोकने का तथा उसकी मशीनरी बेचने का निश्चय किया गया । यह मशीनरी 1 जनवरी, 1949 को 12,000 रु० के लागत मूल्य (स्थापना व्यय सहित) पर खरीदी गई । इसे 15 दिसम्बर, 1958 को घेलाभाई लिमिटेड को 1,600 रु० (ऐक्स फैक्टरी) कीमत पर बेचा गया । इसको हटाने का मजदूरी व्यय 100 रु० लगा । 1 अगस्त, 1958 को दयाभाई लिमिटेड से एक नई एवं अधिक कार्य कुशल मशीनरी 20,000 रु० के लागत मूल्य (स्थापना व्यय सहित) पर खरीदी गई । इस नई मशीनरी का 1 अक्टूबर, 1958 को प्रयोग में आना प्रारंभ हुआ ।

आप को बनाना है :

(i) उपरोक्त व्यवहारों को दर्ज करते हुए जर्नल व खाता बही;
(ii) प्लांट व मशीनरी से संबंधित मदों को दिखाते हुए 31 दिसम्बर, 1958 का चिट्ठा; तथा
(iii) 1958 में प्रावधान किये जाने वाले ह्रास का विवरण । [79]

Ans. : Balance of Plant & Machinery a/c Rs. 1,36,600
,, ,, Depreciation a/c Rs. 73,880
Depreciation provided in 1958 Rs. 12,160

17. Ashoka Brothers, who depreciate the machinery at 10% per annum on diminishing balance method, had on 1st January, 1967 Rs. 8,10,000 to the debit of Machinery Account. Part of the machinery purchased on 1st January, 1965 for Rs. 75,000 was sold for Rs. 42,000 on 1st July, 1967 and a new machinery at a cost of Rs. 1,50,000 was purchased and installed on the same date, installation charges being Rs. 8,000. It is decided to change the method of depreciation from diminishing balance method to fixed instalment method with effect from 1st January, 1965 and adjust the difference in the accounts for 1967. The rate of depreciation remains the same as before.

Show the Machinery Account and entries in the Profit and Loss Account as regards depreciation and obsolescence loss in the year 1967.

अशोका ब्रादर्स के पास, जो कि मशीनरी पर क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार 10% वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित करते हैं, 1 जनवरी, 1967 को मशीनरी खाते के डेबिट पक्ष में 8,10,000 रु० का

शेष था। 1 जुलाई, 1967 को मशीनरी का एक वह भाग जो कि 1 जनवरी, 1965 को 75,000 रु० में खरीदा गया था, 42,000 रु० में बेच दिया गया और एक नई मशीन 1,50,000 रु० के लागत मूल्य पर उसी दिन खरीदी व स्थापित की गई। स्थापना में 8,000 रु० खर्च हुए। यह निर्णय किया गया कि ह्रास प्रावधान की विधि क्रमागत ह्रास विधि से बदल कर स्थाई किस्त विधि अपनाई जाये और यह परिवर्तन 1 जनवरी, 1965 से लागू माना जाये। गत दो वर्षों के ह्रास का समायोजन 1967 के खातों में से कर लिया जाये। ह्रास की दर वही रखी गई जो पहले थी।

मशीनरी खाता बनाइये तथा 1967वें वर्ष में ह्रास एवं अप्रचलन से हुई हानि को प्रदर्शित करते हुए लाभ-हानि खाते में प्रविष्टियां दिखाइये। [80]

Ans. : Balance of Machinery Account	Rs.	7,97,600
Loss on sale of Machinery	Rs.	18,750
Total depreciation provided in 1967 including adjustment	Rs.	1,09,650

18. On 1st January, 1967, the Plant and Machinery Account of Z Ltd. showed a debit balance of Rs. 2,98,000 after writing off depreciation @ 10 per cent per annum on the diminishing balance method. It was discovered in the year 1967 that :—

(i) Heavy repairs amounting to Rs. 15,000 effected to a plant (completed on 30th June, 1965) were debited to the Plant and Machinery Account;

(ii) A machine costing Rs. 6,000 was entered in the Purchases Book on 1st July, 1964. The installation expenses Rs. 400 were debited to General Expenses Account.

Necessary corrections were made on 30th September, 1967.

A machine which had cost Rs. 15,000 on 1st January, 1965 was sold for Rs. 9,500 on 31st March, 1967 and a new machine costing Rs. 58,000 was installed on the same date.

Show the Plant and Machinery Account for the year ended 31st December, 1967.

क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार 10% वार्षिक ह्रास अपलिखित करने के बाद जैड लिमिटेड की प्लांट व मशीनरी खाते में 1 जनवरी, 1967 को 2,98,000 रु० का डेबिट शेष था। 1967वें वर्ष में निम्नलिखित दो अशुद्धियों का पता चला :—

(i) एक प्लांट की भारी मरम्मत पर (जो 30 जून, 1965 को पूर्ण हुई) 15,000 रु० व्यय हुये और यह रकम प्लांट व मशीनरी खाते में डेबिट कर दी गई; तथा

(ii) एक मशीन 6,000 रु० की लागत पर खरीदी गई और वह बही में 1 जुलाई, 1964 को दर्ज की गई। स्थापना व्यय के 400 रु० सामान्य खर्च खाते में डेबिट कर दिये गये।

आवश्यक सुधार 30 सितम्बर, 1967 को किये गये।

31 मार्च, 1967 को एक मशीन जोकि 1 जनवरी, 1965 को 15,000 रु० की लागत पर खरीदी गई थी, 9,500 रु० में बेच दी गई तथा उसी दिन एक नई मशीन 58,000 रु० की लागत पर स्थापित की गई।

31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए प्लांट व मशीनरी खाता बनाइये। [81]

Ans. : Balance of Plant and Machinery A/c Rs. 3,03,804.82.

19. A takes a lease for Rs. 14,000 on 1st January, 1966 for 10 years. You are required to open a Lease Account for the first two years, depreciating the assets on the annuity system and charging interest at the rate of 5%. You find from the annuity tables that the rate of depreciation on a 5% basis for a life of 10 years is Rs. 129.5 per thousand.

अ ने 1 जनवरी, 1966 को 10 वर्षों के लिए 14,000 रु० का एक पट्टा लिया है। आपको सम्पत्ति पर 5% ब्याज चार्ज करते हुए वार्षिक वृत्ति प्रणाली के अनुसार ह्रास अपलिखित करना है तथा प्रथम दो वर्ष का पट्टा खाता खोलना है। वार्षिक वृत्ति सारणियों से आपको ज्ञात होता है कि 5% के आधार पर 10 वर्ष के जीवन के लिए ह्रास की दर 129.5 रु० प्रति हजार है। [82]

Ans. : Balance of Lease a/c Rs. 11,718.35.

20. A lease is purchased for a period of five years for Rs. 2,50,000. It is proposed to write off depreciation by the annuity method charging 5% interest. The annuity to provide for Re. 1/—for 5 years at 5% is Re. ·230975. Show the lease account for the full period of the lease.

5 वर्ष के लिए 2,50,000 रु० में एक पट्टा खरीदा जाता है। यह प्रस्ताव है कि वार्षिक वृत्ति प्रणाली से 5% ब्याज चार्ज करते हुए ह्रास अपलिखित किया जावे। 1 रु० की व्यवस्था करने के लिये 5% पर 5 वर्ष के लिए वार्षिक वृत्ति ·230975 रु० है। पट्टे के पूरे समय के लिए पट्टा खाता दिखाइये। [83]

21. The value of lease which has five years to run is Rs. 50,000, Show the working of a Depreciation Fund on a 5% basis in the books of the business. If 0·180975 of a rupee is annually invested at compound interest, it will amount to Re. 1/—at the end of 5 years.

एक पट्टे का मूल्य जिसे कि 5 वर्ष चलना है, 50,000 रु० है। व्यवसाय की पुस्तकों में 5% के आधार पर ह्रास कोष की कार्य-प्रणाली दिखाइये। यदि 0·180975 रु० प्रति वर्ष विनियोग किया जावे तो चक्रवृद्धि ब्याज के आधार पर यह 5 वर्ष के अन्त में 1 रु० बन जावेगा। [84]

22. A seven years' lease costing Rs. 4,50,000 was acquired on 1st January, 1960 and it was decided to provide a Depreciation Fund for the replacement of the same at the end of the period. Assuming that the Depreciation Fund Investments realised interest at 4% per annum, the annual amount chargeable to depreciation is shown by the Annuity Table at Rs. 56,974=38. Open the Lease Account, Depreciation Fund Account and Depreciation Fund Investments Account.

1 जनवरी, 1960 को 4,50,000 रु० की लागत का एक 7 वर्ष का पट्टा लिया गया और इस समय के अन्त में इसके पुनर्स्थापन के लिए एक ह्रास-कोष की व्यवस्था करने का निश्चय किया गया। यह मानते हुये कि ह्रास-कोष-विनियोग से 4% ब्याज मिलेगा, वार्षिक तालिका द्वारा वार्षिक ह्रास 56,974 रु० 38 पैसे बताया गया है। पट्टा खाता, ह्रास-कोष खाता और ह्रास-कोष-विनियोग खाता खोलिए। [85]

23. The Directors of a company decide to replace their plant at a cost of Rs. 6,19,500. The old plant account showed a balance of Rs. 3,78,000. Accumulated credit balance in the Depreciation Fund was Rs. 73,500. The old plant was auctioned and realised Rs. 1,22,500.

Make the necessary journal entries to record the above transactions in the books of the company and state how you would deal with the balance of the old "Plant Account".

एक कम्पनी के संचालक 6,19,500 रु० की लागत पर प्लान्ट को पुनर्स्थापित करने का निश्चय करते हैं। पुरानी प्लान्ट पुस्तकों में 3,78,000 रु० का शेष दिखाती थी। ह्रास कोष में क्रेडिट शेष 73,500 रु० था। पुरानी प्लांट को नीलाम कर दिया गया और इससे 1,22,500 रु० वसूल हुआ।

उपरोक्त व्यवहारों का कम्पनी की पुस्तकों में लेखा करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए और पुरानी प्लान्ट खाते के शेष का आप क्या करेंगे? [86]

Ans. The balance of Rs. 1,82,000 of the old plant a/c will be transferred to P. & L. a/c.

24. A limited company purchased a special machine for Rs. 2,500, the cost of erection being Rs. 80. It was expected that the machine would last for ten years, and Depreciation Fund, invested outside the business, was created to replace the machine at the end of that time. At the expiry of nine years, however, the directors decided that as the machine could not work profitably, it should be scrapped and a more modern one purchased. At that date the balance of the Depreciation Fund Account was Rs. 2,375 and this was represented by an investment in 6% Govt. securities which were subsequently sold for Rs. 2,305. The cost of dismantling the machine was Rs. 30 and with the exception of parts,

estimated to be worth Rs. 20 retained to be used on the new machine, the old one was sold as scrap for Rs. 40.

Give the ledger accounts concerned and show how these matters would be dealt with in the books of the company.

एक लिमिटेड कम्पनी ने एक विशेष मशीन 2,500 रु० में खरीदी और उसकी स्थापना में 80 रु० व्यय किये। यह अनुमान लगाया गया कि मशीन दस वर्षों तक चलेगी तथा उस समय के अंत में मशीन को प्रतिस्थापित करने के लिए ह्रास कोष का निर्माण किया गया जिसकी राशि व्यापार के बाहर विनियोजित की जाती थी। नौ वर्ष गुजरने के बाद संचालकों ने निर्णय किया कि मशीन से लाभदायक रूप में कार्य नहीं हो सकता, अतः उसे हटा दिया जाये और एक अधिक आधुनिक मशीन खरीदी जाये। उस तिथि को 'ह्रास कोष खाते' का शेष 2,375 रु० था और इतनी रकम 6% सरकारी प्रतिभूतियों में विनियोजित थी। इन प्रतिभूतियों को 2,305 रु० में बेचा गया। मशीन को हटाने का व्यय 30 रु० हुआ। पुरानी मशीन के कुछ भाग, जिनका अनुमानित मूल्य 20 रु० है, नई मशीन के प्रयोग के लिए रख लिए गये तथा पुरानी बाकी मशीन 40 रु० में बेच दी गई।

सम्बन्धित लेजर खाते बनाइये तथा बताइये कि ये व्यवहार कम्पनी की पुस्तकों में किस प्रकार दिखाये जावेंगे ? [87]

Ans. : Loss on scrapping of old machinery Rs. 245.

25. The Adoni Mills Co. Ltd. decided to replace a part of its machinery, which was out of date. The company invited tenders for supply of new machinery and finally accepted the tender of Messrs Good Machines Ltd. amounting to Rs. 1,23,900.

The old machinery, which was out of date, was valued in the books of the company at Rs. 75,600. The company had created a Depreciation Fund and the same relating to the above machinery amounted to Rs. 14,700. Some parts of the old machinery were found to be in good condition and Messrs Good Machines Ltd. agreed to take over these parts at Rs. 7,700. The rest of the machinery was auctioned and realised Rs. 16,800 (net)

Pass the necessary journal entries in the books of the Adoni Mills Co. Ltd. to record the above transactions, draft the Machinery Accounts and state how you would deal with the balance of old machinery account.

अडोनी मिल्स कम्पनी लिमिटेड ने अपनी मशीनरी के उस भाग को प्रतिस्थापित करने का निश्चय किया जोकि आज की तिथि में पुराना पड़ गया था। कम्पनी ने नई मशीनरी खरीदने के लिए टेंडर आमन्त्रित किये और अंत में मैसर्स गुड मशीन्स लिमिटेड का 1,23,900 रु० का टेंडर स्वीकार कर लिया।

कम्पनी की पुस्तकों में पुरानी मशीनरी का मूल्य 75,600 रु० था। कम्पनी ने ह्रास कोष का निर्माण कर रखा है और उपरोक्त मशीनरी के सम्बन्ध में ह्रास कोष खाते में 14,700 रु० जमा थे।

पुरानी मशीनरी के कुछ पुर्जे अच्छी हालत में पाये गये और मैसर्स गुड़ मशीन्स लिमिटेड ने इन पुर्जों को 7,700 रु० के मूल्य पर लेना स्वीकार कर लिया। मशीनरी के शेष भाग को नीलाम किया गया और 16,800 रु० (शुद्ध) प्राप्त हुए।

उपरोक्त व्यवहारों को दर्ज करने के लिए अडोनी मिल्स कम्पनी लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए, मशीनरी खाते बनाइये तथा यह बताइये कि पुराने मशीनरी खाते के शेष के साथ आप क्या व्यवहार करेंगे ? [88]

Ans. : Loss on sale of old machinery Rs. 36,400.

26. A plant is purchased for Rs. 1,00,000 and is expected to last for three years, at the end which its scrap is expected to realise Rs. 12,500. An endowment policy for three years is taken for a sum of Rs. 87,500, the annual premium being Rs. 27,500 and the rate of interest works out at 3% compound interest.

Show the Depreciation Fund Account and Depreciation Policy Account for all the three years.

एक प्लांट 1,00,000 रु० में खरीदी जाती है और इसके तीन वर्ष चलने की सम्भावना है जिसके अंत में इसके अवशिष्ट अंश से 12,500 रु० मिलने की आशा है। 87,500 रु० का 3 वर्ष के लिए एक वन्दोबस्त वीमा लिया गया है जिसका वार्षिक प्रीमियम 27,500 रु० है और व्याज की दर 3% चक्रवृद्धि पड़ती है।

तीनों वर्षों के लिए ह्रास कोष खाता तथा ह्रास पालिसी खाता दिखाइये। [89]

27. Two merchants A and B buy an identical boiler each on 1st January, 1961, at a cost of Rs. 10,000. The boiler has an estimated life of 5 years and a residual value of Rs. 1,000. Each merchant's accounting year coincides with the calendar year.

Depreciation of the cost, less residual value, is provided by A on the straight line basis. B applies a fixed 30 per cent per annum to the original cost and thereafter the same percentage to the reducing book balance of the asset.

On 31st December, 1963. it is estimated that the replacement cost of a similar boiler on 1st January, 1966 will be Rs. 13,500.

You are required :

(a) To show how the cost of the boiler and the prescribed accumulated depreciation should be shown on the Balance Sheet of each merchant as on 31st December, 1963.

(b) To show how the depreciation should be shown in each merchant's Profit and Loss Accounts for the year 1964, assuming a decision by each of them during that year, to provide in 1964 and 1965 for the estimated cost of replacement on 1st January, 1966.

दो व्यापारियों अ और ब में से प्रत्येक ने 1 जनवरी, 1961 को 10,000 रु० के मूल्य वाले एक समान बॉयलर खरीदे। बॉयलर का अनुमानित जीवन काल 5 वर्ष तथा उनका अवशिष्ट मूल्य 1,000 रु० आंका गया। प्रत्येक व्यापारी का लेखा वर्ष कलेंडर वर्ष से मिलता है।

अ ने स्थायी किस्त विधि के आधार पर लागत का (अवशिष्ट मूल्य को छोड़कर) ह्रास अपलिखित करने का प्रावधान किया। ब ने प्रथम वर्ष में मूल लागत के 30 प्रतिशत के आधार पर ह्रास अपलिखित किया और बाद में सम्पत्ति के घटते हुये पुस्तक मूल्य पर उसी दर को चालू रखा।

31 दिसम्बर, 1963 को यह अनुमान लगाया गया कि उसी प्रकार के बॉयलर का 1 जनवरी, 1966 को प्रतिस्थापना मूल्य 13,500 रु० होगा।

बताइये :

(1) 31 दिसम्बर, 1963 को तैयार किये जाने वाले प्रत्येक व्यापारी के चिट्ठे में बॉयलर का लागत मूल्य और निर्धारित दर से संचित ह्रास किस प्रकार दिखाये जायेंगे ?

(2) 1964 वर्ष के प्रत्येक व्यापारी के लाभ-हानि खाते में ह्रास राशि किस प्रकार दिखाई जायेगी। आप यह मान लीजिए की इस वर्ष में प्रत्येक व्यापारी ने यह निश्चय किया कि 1964 व 1965 वर्ष में सम्पत्ति के अनुमानित प्रतिस्थापना मूल्य के लिए व्यवस्था करनी है। [90]

Ans. :—(i) Merchant B would apply 46% per annum rate of depreciation on diminishing balance method for the year 1964 and 1965.

(ii) Rs. 1,750 would be transferred to 'Replacement Reserve Account' by each merchant during each of the two years 1964, and 1965.

28. Differentiate between (अंतर बताइये) :—

(i) Provision and Reserve (आयोजन और संचय);

(ii) General Reserve and Capital Reserve (सामान्य संचय और पूंजी संचय);

(iii) Provision and Specific Reserve (आयोजन और विशिष्ट संचय); तथा

(iv) General Reserve and Reserve Fund (सामान्य संचय तथा संचय कोप)

29. (a) Is a Reserve Fund a liability in the real sense of the term ? if not, why is it shown on the liabilities side of the balance-sheet?

क्या संचय कोप वास्तव में दायित्व है ? यदि नहीं, तो इसे चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर क्यों दिखाया जाता है ?

(b) Ought the amounts set aside by directors out of profits to the credit of a 'Reserve Fund' to be necessarily invested in interest bearing securities? If they be so invested, to what account would you credit the interest received on the investments.

संचालकों द्वारा लाभों में से संचय कोप के क्रेडिट में रखी गई रकम का क्या 'ब्याज वाली प्रतिभूतियों' में विनियोग किया जाना अनिवार्य है ? यदि इनका इस प्रकार विनियोग किया जाता है तो इन विनियोगों से प्राप्त रकम को आप किस खाते में क्रेडिट करेंगे ?

30. It is the common practice of bank and other financial houses to create seecret reserves. How are such reserves created and operated ? Express your views as to the desirability of, and justification for, the creation of such reserves.

बैंक और अन्य वित्तीय संस्थायें प्रायः गुप्त संचयों का निर्माण करती हैं। इन संचयों का निर्माण और उपयोग किस प्रकार किया जाता है ? आपकी दृष्टि में इनका निर्माण किया जाना कहाँ तक वांछनीय और न्यायसंगत है ?

4

अधिकार-शुल्क खाते

(Royalty Accounts)

किसी सम्पत्ति के स्वामी को अपनी सम्पत्ति से सम्बन्धित कुछ अधिकार किसी अन्य व्यक्ति को देने के बदले में उससे जो प्रतिफल प्राप्त होता है, उसके दो रूप हो सकते हैं : (1) किराया (Rent) और (2) अधिकार-शुल्क (Royalty)। किराया समय के आधार पर तय किया जाता है तथा अधिकार-शुल्क का निर्धारण उत्पादन या बिक्री की मात्रा (Quantity) के आधार पर होता है। उदाहरणार्थ, यदि हरि अपने कोयले की खान 5,000 रु० में एक वर्ष के लिये मोहन को कोयला निकालने के लिये देता है, तो 5,000 रु० खान का एक वर्ष का 'किराया' कहलावेगा। यदि यही अधिकार उत्पादन पर 5 रु० प्रति टन के हिसाब से शुल्क निर्धारित करके दिया जाता है, तो मोहन द्वारा हरि को जो राशि दी जावेगी वह 'अधिकार-शुल्क' (Royalty) कहलावेगा। मान लीजिये, प्रथम वर्ष में मोहन 2,000 टन कोयला निकालता है तो उसे 10,000 रु० हरि को देने होंगे। यह 10,000 रु० प्रथम वर्ष का 'अधिकार शुल्क' होगा।

अधिकार-शुल्क (Royalty) की परिभाषाएं :—"अधिकार-शुल्क का आशय उस रकम से है जो एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को उसके द्वारा दिये गये कुछ विशेष अधिकारों के बदले में, देता है, जैसे, कोई पुस्तक प्रकाशित करने का अधिकार, कोई पेटेन्ट वस्तु निर्मित कर बेचने का अधिकार अथवा कोई खान खोदने का अधिकार।"[1]

—बाटलीवॉय

"अधिकार-शुल्क एक व्यक्ति को किसी सम्पत्ति, जो उससे खरीदी गई हो या किराये पर ली गई हो, के उपयोग के बदले में दिया गया पारिश्रमिक है जिसकी गणना उस सम्पत्ति के उपयोग के फलस्वरूप उत्पादित या विक्रित वस्तुओं की मात्रा के आधार पर की जाती है।"[2]

—विलियम पिकिल्स

न्यूनतम किराया (Minimum Rent)—यह स्पष्ट हो चुका है कि अधिकार-शुल्क की गणना का आधार वस्तु उत्पादन या बिक्री होता है। लेकिन किसी नई खान पर उत्पादन प्रारम्भ करने में अथवा

---

1. "The term Royalty expresses an amount payable by one person in return for some special right or privilege conceded to him by another person, such as the right to publish a book, or to manufacture and sell a patented article, or to work a mine."—

J. R. Batlibuoy.

2. "Royalty is the remuneration payable to a person in respect of the use of an asset, whether hired or purchased from such person, calculated with reference to and varying with quantities produced or sold as a result of the use of such asset."—

William Pickles.

किसी नई पेटेन्ट वस्तु का निर्माण करके बेचने में कुछ समय लगता है। अतः यदि सम्पत्ति के स्वामी को इस प्रारम्भिक समय में भी उत्पादन या बिक्री के आधार पर अधिकार-शुल्क दिया जावे तो उसे हानि होने की सम्भावना रहती है। इस हानि से बचने के लिये सम्पत्ति का स्वामी विशेष अधिकार पाने वाले से समझौता करते समय प्रायः एक शर्त यह भी तय कर लेता है कि कम उत्पादन या कम बिक्री की दशा में उसे एक न्यूनतम राशि का भुगतान अवश्य किया जावेगा। इस न्यूनतम राशि को **'न्यूनतम किराया' (Minimum Rent)** कहते हैं। न्यूनतम राशि का निर्धारण प्रायः समय के अनुसार होता है। सम्पत्ति के स्वामी को न्यूनतम राशि उन्हीं वर्षों में देय होती है जिनमें अधिकार-शुल्क न्यूनतम राशि से कम होता है। अधिकार-शुल्क के न्यूनतम राशि से अधिक होने पर सम्पत्ति के स्वामी को अधिकार-शुल्क की राशि देय होती है, न्यूनतम किराये (Minimum Rent) की राशि नहीं। उदाहरणार्थ, यदि अधिकार शुल्क की दर 1 रु० प्रति टन है और 1967, 1968 तथा 1969 के उत्पादन क्रमशः 100 टन, 5,000 टन और 6,000 टन है तो सम्पत्ति के स्वामी को 1967 में 100 रु०, 1968, में 5,000 रु० और 1969 में 6,000 रु० अधिकार-शुल्क मिलेगा। यह प्रकट करता है कि 1967 में उत्पादन कार्य काफी विलम्ब से शुरू हुआ इसलिए उत्पादन केवल 100 टन ही हो सका। ऐसी दशा में यदि सम्पत्ति के स्वामी को केवल अधिकार-शुल्क की राशि ही दी जाती है तो उसे 1967 में मात्र 100 रु० मिलेंगे और हानि उठानी पड़ेगी। सम्पत्ति के स्वामी को इस हानि से बचाने के लिये अधिकार-शुल्क देने वाला उसे 'न्यूनतम किराया' देने की गारन्टी देता है। यदि उपरोक्त उदाहरण में न्यूनतम किराया 4,000 रु० प्रति वर्ष निर्धारित होता है तो सम्पत्ति के स्वामी को 1967 में 100 रु० अधिकार-शुल्क न मिलकर 4,000 रु० न्यूनतम किराया मिलेगा। लेकिन 1968 और 1969 में अधिकार-शुल्क की रकम न्यूनतम किराये से अधिक है, अतः इन वर्षों में सम्पत्ति के स्वामी को वास्तविक अधिकार-शुल्क मिलेगा।

न्यूनतम किराये को 'स्थिर किराया' (Dead Rent or Fixed Rent) अथवा 'सम किराया' (Flat Rent) भी कहते हैं।

लघुकार्य राशि (Short Workings) एवं अधिकार्य राशि (Excess Workings) :—यदि सम्पत्ति के स्वामी और अधिकार-शुल्क का भुगतान करने वाले के बीच न्यूनतम किराया देने का समझौता होता है तो इस सम्बन्ध में व्यवहार में तीन परिस्थितियां पाई जा सकती हैं :—

(अ) जब अधिकार-शुल्क की राशि न्यूनतम किराये की राशि से कम हो;
(ब) जब अधिकार-शुल्क की राशि न्यूनतम किराये की राशि के बराबर हो; अथवा
(स) जब अधिकार-शुल्क की राशि न्यूनतम किराये की राशि से अधिक हो।

उदाहरण—

वर्ष—	1967	1968	1969
उत्पादन (टनों में)	2,000	5,000	7,000

अधिकार-शुल्क दर 1 रु० प्रति टन
न्यूनतम किराया 5,000 रु० वार्षिक

उपरोक्त उदाहरण में 1967, 1968 और 1969 का अधिकार-शुल्क क्रमशः 2,000 रु०; 5,000 रु० और 7,000 रु० होगा। चूंकि न्यूनतम किराया 5,000 रु० है, इसलिए :—

(अ) 1967 में अधिकार-शुल्क की राशि न्यूनतम किराये से 3,000 रु० कम होगी;
(ब) 1968 में अधिकार-शुल्क की राशि न्यूनतम किराये के बराबर होगी; तथा
(स) 1969 में अधिकार-शुल्क की राशि न्यूनतम किराये से 2,000 रु० अधिक होगी।

इस प्रकार हम देखते हैं कि 1967 में न्यूनतम किराये का अधिकार-शुल्क पर 3,000 रु० से आधिक्य है। यही आधिक्य 'लघुकार्य राशि' कहलाता है। अतः यह कहा जा सकता है कि न्यूनतम किराया (Minimum Rent) का अधिकार-शुल्क (Royalty) पर जो आधिक्य (excess) होता है, वही लघु-कार्यराशि (Shortworkings) कहलाती है।

लघुकार्य-राशि = न्यूनतम किराये का अधिकार-शुल्क पर आधिक्य
Shortworkings = Excess of Minimum Rent over Royalty

इसी उदाहरण में 1968 में कोई लघुकार्य राशि नहीं होगी क्योंकि अधिकार शुल्क न्यूनतम किराये के बराबर है लेकिन 1969 की स्थिति भिन्न है; इस वर्ष की परिस्थिति 1967 के बिल्कुल विपरीत है और अधिकार शुल्क का न्यूनतम किराये पर 2,000 रु० से आधिक्य है। इस आधिक्य को 'अधिकार्य राशि' (Excess workings or surplus) कहते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि अधिकार-शुल्क का न्यूनतम किराये पर जो आधिक्य होता है, वह 'अधिकार्य-राशि' (Excess workings or Surplus) कहलाती है।

अधिकार्य-राशि
Excess workings or Surplus = अधिकार शुल्क का न्यूनतम किराये पर आधिक्य
= Excess of Royalty over Minimum Rent.

लघुकार्य राशि की वसूली (Recoupment of Shortworkings)—कम उत्पादन अथवा कम विक्री वाले वर्षों में अधिकार-शुल्क न्यूनतम किराये से कम होता है और सम्पत्ति का स्वामी समझौते की शर्त के अनुसार अधिकार-शुल्क देने वाले से न्यूनतम किराया वसूल करता है। ऐसी स्थिति में सम्पत्ति का स्वामी तो हानि से बच जाता है लेकिन न्यूनतम किराया देने वाले को हानि होती है। अतः उसे इस हानि से बचाने के लिए प्रायः समझौते में एक शर्त और जोड़ दी जाती है जिसके अनुसार अधिकार-शुल्क देने वाले को आगामी वर्षों में लघुकार्य राशि (Short Workings) को अधिकार्य-राशि (Excess Workings or Surplus) में से वसूल करने का अधिकार दे दिया जाता है। इसे लघुकार्य-राशि की वसूली (Recoupment of Shortworkings) कहते हैं। मान लीजिये, उपरोक्त उदाहरण में लघुकार्य-राशि की वसूली की शर्त है। ऐसी स्थिति में 1967 में भुगतान की गई 3,000 रु० की लघुकार्य-राशि 1968 में तो वसूल नहीं की जा सकती क्योंकि 1968 में कोई अधिकार्य राशि नहीं है। परन्तु 1969 में अधिकार्य राशि 2,000 रु० है, अतः गत वर्षों की 2,000 रु० तक की लघुकार्य राशि इस अधिकार्य राशि से वसूल की जा सकती है। इस प्रकार 1967 की 3,000 रु० की लघुकार्य राशि में से 2,000 रु० 1969 में वसूल कर लिये जावेंगे, किन्तु शेष 1,000 रु० भविष्य में कब तक वसूल किये जावेंगे, यह समझौते की शर्तों पर निर्भर करता है। समझौते की शर्तों के कई रूप हो सकते हैं जिनमें से कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं ताकि लघुकार्य-राशि की वसूली सम्बन्धी सिद्धान्त सरलता से समझ में आ सकें :—

(1) "Shortworkings can be recouped out of surplus workings during the first five years only."

आशय—समझौते की तारीख से 5 वर्ष तक लघुकार्य-राशि की वसूली अधिकार्य-राशि में से की जा सकती है।

(2) "Shortworkings may be carried forward indefinitely."

or

"Shortworkings may be recouped out of subsequent excess workings throughout the term of the lease."

आशय—किसी भी वर्ष की लघुकार्य-राशि को तब तक आगे ले जाया जावेगा जब तक कि वह उस आधिक्य में से वसूल नहीं कर ली जाती जो अधिकार-शुल्क का न्यूनतम किराये पर है।

(3) "Short manufacture occuring during the first three years may be recouped at any time during the currency of the licence."

आशय—समझौते की तारीख से प्रथम तीन वर्ष की लघुकार्य-राशि को (इसके बाद की नहीं) अनिश्चित काल तक आगे ले जाकर अधिकार्य-राशि (excess workings) में से वसूल किया जा सकता है।

(4) "Shortworkings in any year can be recouped in the following year only."

आशय—जिस वर्ष लघुकार्य-राशि होती है उसे केवल उसके अगले वर्ष की अधिकार्य-राशि में से, यदि कोई हो, वसूल किया जा सकता है, इसके बाद नहीं।

(5) "The excess of minimum rent over the actual royalties is recoverable during the next five years succeeding the year in respect of which such excess was paid."

or

"Shortworkings can be recouped out of royalty in excess of the minimum rent of the next five years only."

or

"Shortworkings could be set off against an excess in any of the five years immediately following."

आशय—समझौते की अवधि में जब कभी भी लघुकार्य-राशि हो उसे उसके आगामी 5 वर्षों की अधिकार्य-राशि में से वसूल किया जा सकता है।

(6) "The right to recoup shortworkings extends to the payment due on 31st Dec., 1974."

आशय—लघुकार्य-राशि को 31 दिसम्बर, 1974 तक की अधिकार्य-राशि में से वसूल किया जा सकता है।

शोधनीय स्थिर किराया अथवा शोधनीय लघुकार्य-राशि (Redeemable Dead Rent or Redeemable Shortworkings)—यदि समझौते की शर्त के अनुसार अधिकार-शुल्क चुकाने वाले को लघुकार्य राशि (Shortworkings) आगामी वर्षों की अधिकार्य-राशि (Surplus) में से वसूल करने का अधिकार दिया गया है तो ऐसी लघुकार्य-राशि 'शोधनीय लघुकार्य राशि' अथवा 'शोधनीय स्थिर किराया' कहलावेगी, अर्थात् शोधनीय लघुकार्य-राशि (Redeemable Shortworkings or Redeemable Dead Rent) वह राशि है जिसे अधिकार-शुल्क देने वाले को आगामी वर्षों की अधिकार्य राशि (Surplus or Excess workings) में से वसूल (recoup) करने का अधिकार है।

शोधनीय स्थिर किराये को अधिकार-शुल्क देने वाले के चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखाया जाता है, क्योंकि यह संदिग्ध सम्पत्ति (Contingent Asset) है। यदि आगामी वर्षों में अधिकार्य-राशि होनी है तो इसे वसूल किया जा सकेगा अन्यथा तो यह हानि ही है।

जिस दिन अधिकार-शुल्क देने वाले का लघुकार्य-राशि वसूल करने का अधिकार समाप्त हो जाता है, उस दिन लघुकार्य-राशि का पुस्तक शेष (Book balance) 'अशोधनीय लघुकार्य-राशि'

(Unrecoupable Shortworkings or Irredeemable Dead Rent) कहलाती है और इसे लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर दिया जाता है।

Illustration 61.

A coal company takes a lease of a mine for a term of 4 years from 1st January, 1964, paying a minimum rent of Rs. 10,000 per annum, merging in a royalty of 50 paisa per ton of coal got. The lease contains a provise to the effect that if the minimum rent paid in any year exceeds the royalty for the year, the amount of the excess may be recouped by the coal company out of the royalty payable in the following year only. Coal is raised as follows :–

Year	1964	1965	1966	1967
Tons	2,000	12,000	24,000	30,000

Calculate the amount of shortworkings and excess workings.

एक कोयला कम्पनी ने 1 जनवरी, 1964 को 4 वर्ष के लिए एक खान का पट्टा लिया है जिसका न्यूनतम किराया 10,000 रु० वार्षिक है और अधिकार-शुल्क 50 पैसा प्रति टन प्राप्त कोयला है। पट्टे की एक शर्त के अनुसार कोयला कम्पनी को अधिकार है कि यदि किसी वर्ष न्यूनतम किराया अधिकार-शुल्क से अधिक होता है तो वह इस आधिक्य को केवल अगले वर्ष चुकाये जाने वाले अधिकार-शुल्क में से वसूल कर सकती है। कोयले का उत्पादन निम्न प्रकार रहा—

वर्ष	1964	1965	1966	1967
टन	2,000	12,000	24,000	30,000

लघुकार्य-राशि एवं अधिकार्य-राशि की गणना कीजिए।

Solution :

वर्ष 1964

∵ न्यूनतम किराया (Minimum Rent) = 10,000 रु० है
और अधिकार-शुल्क (2,000 × 50 पैसा) = 1,000 रु० है
∴ लघुकार्य-राशि (Shortworkings) = (10,000–1,000) रु०
= 9,000 रु० होगी

इस वर्ष की 9,000 रु० लघुकार्य-राशि को चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखलाया जायेगा क्योंकि इसे अगले वर्ष की अधिकार्य-राशि (यदि कोई हो) में से वसूल किया जा सकेगा।

वर्ष 1965

∵ न्यूनतम किराया (Minimum Rent) = 10,000 रु० है
और अधिकार-शुल्क (12,000 × 50 पैसा) = 6,000 रु० है
∴ लघुकार्य-राशि (Shortworkings) = (10,000-6,000) रु०
= 4,000 रु० होगी

(i) इस वर्ष की 4,000 रु० लघु-कार्य राशि को चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखाया जावेगा क्योंकि इसे अगले वर्ष की अधिकार्य-राशि (यदि कोई हो) से वसूल किया जा सकेगा।

(ii) 1964 की लघुकार्य-राशि 9,000 रु० केवल इसी वर्ष वसूल की जा सकती थी और इस वर्ष कोई अधिकार्य-राशि नहीं हुई, अतः यह अशोधनीय लघुकार्य-राशि है और इसे इस वर्ष (1965) में लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर दिया जावेगा।

वर्ष 1966

∵ न्यूनतम किराया (Minimum Rent) =10,000 रु० है
और अधिकार-शुल्क (24,000 × 50 पैसे) = 12,000 रु० है
∴ अधिकार्य-राशि (Surplus) = (12,000–10,000) रु०
=2,000 रु० है

1965 की 4,000 रु० लघुकार्य-राशि में से 2,000 रु० इस वर्ष वसूल कर लिया जावेगा और शेष 2,000 रु० लाभ-हानि खाते से अपलिखित कर दिया जावेगा।

वर्ष 1967

∵ न्यूनतम किराया (Minimum Rent) =10,000 रु०
और अधिकार-शुल्क (30,000 × 50 पैसे) = 15,000 रु०
∴ अधिकार्य-राशि (Surplus) = (15,000–10,000) रु०
=5,000 रु०

लघुकार्य-राशि एवं अधिकार्य-राशि को हम निम्न विश्लेषण तालिका द्वारा भी प्रकट कर सकते हैं—

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

Year	Minimum Rent	Actual Royalty	Shortworkings (—) or Surplus workings(+)	Shortworkings		Actual Pay-ment
				Recouped	Transferred to P.&L. a/c	
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1964	10,000	1,000	—9,000	Nil	Nil	10,000
1965	10,000	6,000	—4,000	Nil	9,000	10,000
1966	10,000	12,000	+2,000	2,000	2,000	10,000
1967	10,000	15,000	+5,000	Nil	Nil	15,000

हिसाब-किताब सम्बन्धी लेखा (Accounting Entries)

अधिकार-शुल्क कई प्रकार के होते हैं जिनमें प्रमुख निम्न हैं—

(1) खान सम्बन्धी अधिकार-शुल्क (Mining Royalties);

(2) एकस्व सम्बन्धी अधिकार-शुल्क (Patent Royalties); और

(3) कृत-स्वाम्य सम्बन्धी अधिकार-शुल्क (Copyright Royalties)।

खान सम्बन्धी अधिकार-शुल्क (Mining Royalties)

जब कोई खान का स्वामी अपनी खान किसी अन्य व्यक्ति को पट्टे (Lease) पर देता है तो वह अन्य व्यक्ति 'पट्टादार' (Lessee) कहलाता है और खान का स्वामी 'पट्टादाता' (Lessor) कहलाता है। पट्टा लेने वाला अर्थात् पट्टादार पट्टे की शर्त के अनुसार अधिकार शुल्क का भुगतान पट्टादाता अर्थात् पट्टा देने वाले को करता है। खानों के सम्बन्ध में अधिकार-शुल्क को 'खान-किराया' (Mineral Rent)[1] भी कहते हैं।

पट्टा लेने वाला जमीन के उपयोग के बदले खान के स्वामी को अधिकार-शुल्क के अतिरिक्त जो रकम देता है, उसे 'सतह किराया' (Surface Rent)[2] कहते हैं। इसमें खान खोदने के कारण जमीन को जो क्षति होती है, उसकी पूर्ति शामिल होती है।

पट्टा लेने वाला (Lessee) और खान के स्वामी (Landlord or Lessor) की पुस्तकों में निम्न प्रकार से प्रविष्टियां की जावेंगी :—

पट्टा लेने वाले (Lessee) की पुस्तकें—

यदि समझौते में न्यूनतम किराया दिया गया है और लघुकार्य-राशि को वसूल (recoup) करने का अधिकार हो—

(i) उन वर्षों में जब अधिकार-शुल्क न्यूनतम किराये से कम हो :—

अधिकार-शुल्क देय होने पर	Royalty a/c	Dr
	Shortworkings a/c	Dr.
	To Landlord	
	(Amount of royalty and short-workings payable to Landlord.)	
अधिकार-शुल्क के भुगतान करने पर	Landlord	Dr.
	To Cash or Bank a/c	
	(Payment made.)	
पुस्तकें बन्द करते समय	P. & L. a/c	Dr.
	To Royalty a/c	
	(Royalty transferred.)	

(ii) उन वर्षों में जब अधिकार-शुल्क न्यूनतम किराये के बराबर हो :—

अधिकार-शुल्क के देय होने पर	Royalty a/c	Dr.
	To Landlord	
	(Royalty payable.)	

1. "Mineral Rent is the royalty payable by the lessee of a mine to the lessor as the consideration wholly or in part for the right to extract minerals included in the property leased, calculated upon minerals extracted at an agreed figure." Pickles.

2. "Surface Rent is the sum payable by the lessee of a mine (in addition to mineral royalties) for the use of the land itself and includes the estimated damage resultant upon such use, e.g. subsidence of the land." Pickles.

अधिकार-शुल्क के भुगतान करने पर	Landlord To Cash or Bank a/c (Royalty paid.)	Dr.
पुस्तकें बन्द करते समय	P. & L. a/c To Royalty a/c (Royalty transferred.)	Dr.

(ii) उन वर्षों में जब अधिकार-शुल्क न्यूनतम किराये से अधिक हो तथा लघुकार्य-राशि वसूल करने का अधिकार हो :—

अधिकार-शुल्क के देय होने पर	Royalty a/c To Landlord (Royalty payable.)	Dr.
लघुकार्य-राशि वसूल करने पर	Landlord To Shortworkings a/c (Shortworking recouped.)	Dr.
सम्पत्ति के स्वामी को भुगतान करने पर	Landlord To Cash or Bank a/c (Payment made.)	Dr.

दोनों की एक प्रविष्टि भी की जा सकती है।

पुस्तकें बन्द करने पर:—

	P. & L. a/c To Royalty a/c (Royalty transferred.)	Dr.
यदि लघुकार्य-राशि का शेष है और उसे वसूल करने की अवधि समाप्त हो गई है:—	P. & L. a/c To Shortworkings a/c (Unrecoupable Shortworkings transferred.)	Dr.

दोनों प्रविष्टियों को मिलाया भी जा सकता है।

Illustration 62.

On 1st January, a coal company took a coal mine on lease for 10 years on the term of paying a minimum rent of Rs. 10,000 per year, merging into a royalty of 25 paise per ton. The output was as under :—

Year	1st	2nd	3rd	4th
Output (in tons)	32,000	36,000	40,000	44,000

The terms of the lease provided that the dead rent not merged in royalty could be deducted out of future royalty in excess of the minimum, provided this recovery was made in the three years following the year in which the shortworkings arose.

Record these transactions in the books of the Lessee.

एक कोयला कम्पनी ने 1 जनवरी को एक कोयले की खान 10 वर्ष के पट्टे पर ली जिसका न्यूनतम किराया 10,000 रु० वार्षिक था और अधिकार-शुल्क 25 पैसे प्रति टन था। उत्पादन निम्न प्रकार हुआ :—

वर्ष	1	2	3	4
उत्पादन (टनों में)	32,000	36,000	40,000	44,000

पट्टे की शर्त के अनुसार स्थिर किराये के अधिकार-शुल्क पर आधिक्य को आगामी न्यूनतम किराये पर अधिकार-शुल्क के आधिक्य में से घटाया जा सकता था, बशर्ते कि यह वसूली लघुकार्य-राशि उत्पन्न होने के अगले तीन वर्षों में कर ली जावे।

पट्टेदार की पुस्तकों में लेखा कीजिए।

Solution :

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

Year	Minimum Rent	Actual Royalty	Shortworkings (–) or Surplus Workings(+)	Shotworkings Recouped	Shotworkings Transferred to P.&L. a/c	Actual Payment
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1	10,000	8,000	—2,000	Nil	Nil	10,000
2	10,000	9,000	—1,000	Nil	Nil	10,000
3	10,000	10,000	Nil	Nil	Nil	10,000
4	10,000	11,000	+1,000	1,000	1,000	10,000

Books of Lessee

Journal of Coal Company

Date	Particulars		L.F.	Rs.	Rs.
1st Year Dec. 31	Royalty a/c	Dr.		8,000	
	Shortworkings a/c	Dr.		2,000	
	To Landlord				10,000
	(Royalty and Shortworkings payable.)				
Dec. 31	Landlord	Dr.		10,000	
	To Bank a/c				10,000
	(Payment made.)				
Dec. 31	P. & L. a/c	Dr.		8,000	
	To Royalty a/c				8,000
	(Royalty transferred.)				
2nd Year Dec. 31	Royalty a/c	Dr.		9,000	
	Shortworkings a/c	Dr.		1,000	
	To Landlord				10,000
	(Royalty and Shortworkings payable.)				

Journal Contd...

			Rs.	Rs.
2nd Year Dec. 31	Landlord	Dr.	10,000	
	To Bank a/c			10,000
	(Amount of royalty and shortworkings paid to landlord.)			
Dec. 31	P. & L. a/c	Dr.	9,000	
	To Royalty a/c			9,000
	(Amount of royalty transferred.)			
3rd Year Dec. 31	Royalty a/c	Dr.	10,000	
	To Landlord			10,000
	(Royalty payable to Landlord.)			
Dec. 31	Landlord	Dr.	10,000	
	To Bank a/c			10,000
	(Amount of royalty paid to landlord.)			
Dec. 31	P. & L. a/c	Dr.	10,000	
	To Royalty a/c			10,000
	(Amount of royalty transferred to P.& L. a/c.)			
4th Year Dec. 31	Royalty a/c	Dr.	11,000	
	To Landlord			11,000
	(Royalty payable to landlord.)			
Dec. 31	Landlord	Dr.	11,000	
	To Bank a/c			10,000
	To Shortworkings a/c			1,000
	(Amount of royalty paid and shortworkings recouped.)			
Dec. 31	P. & L. a/c	Dr.	12,000	
	To Royalty a/c			11,000
	To Shortworkings a/c			1,000
	(Amount of royalty and irrecoverable shortworkings transferred.)			

Ledger **Royalty Account**

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To Landlord	8,000	1st Year Dec. 31	By P. & L. a/c	8,000
2nd Year Dec. 31	To Landlord	9,000	2nd Year Dec. 31	By P. & L. a/c	9,000
3rd Year Dec. 31	To Landlord	10,000	3rd Year Dec. 31	By P. & L. a/c	10,000
4th Year Dec. 31	To Londlord	11,000	4th Year Dec. 31	By P. & L. a/c	11,000

Landlord's Account

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To Bank a/c	10,000	1st Year Dec. 31	By Royalty a/c	8,000
			,, ,,	By Short-workings a/c	2,000
		10,000			10,000
2nd Year Dec. 31	To Bank a/c	10,000	2nd Year Dec. 31	By Royalty a/c	9,000
			,, ,,	By Short-workings a/c	1,000
		10,000			10,000
3rd Year Dec. 31	To Bank a/c	10,000	3rd Year Dec. 31	By Royalty a/c	10,000
4th Year Dec. 31	To Bank a/c	10,000	4th Year Dec. 31	By Royalty a/c	11,000
,, ,,	To Short-workings a/c	1,000			
		11,000			1,1000

Shortworkings Account

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To Landlord	2,000	1st Year Dec. 31	By Balance c/d	2,000
2nd Year Jan. 1	To Balance b/d	2,000	2nd Year Dec. 31	By Balance c/d	3,000
Dec. 31	To Landlord	1,000			
		3,000			3,000
3rd Year Jan. 1	To Balance b/d	3,000	3rd Year Dec. 31	By Balance c/d	3,000
4th Year Jan. 1	To Balance b/d	3,000	4th Year Dec. 31	By landlord	1,000
			Dec. 31	By P & L. a/c	1,000
			Dec. 31	By Balance c/d	1,000
		3,000			3,000
5th Year Jan. 1	To Balance b/d	1,000			

P. and L. Account
(for the year ending......)

		Rs.		Rs.
1st year	To Royalty a/c	8,000		
2nd year	To Royalty a/c	9,000		
3rd year	To Royalty a/c	10,000		
4th year	To Royalty a/c	11,000		
	,, Shortworkings a/c	1,000		

Balance Sheet
(As at 31st Dec..........)

	Rs.		Rs.
		1st year Shortworkings	2,000
		2nd year Shortworkings	3,000
		3rd year Shortworkings	3,000
		4th year Shortworkings	1,000

पट्टेदाता (Lessor) अथवा सम्पत्ति के स्वामी की पुस्तकों में लेखा—

सम्पत्ति के स्वामी (Landlord) की पुस्तकों में किये जाने वाले लेखों को समझने से पूर्व अधिकार शुल्क संचय (Royalty Reserve) को समझना अनिवार्य है। यदि पट्टा लेने वाले (Lessee) को लघुकार्य-राशि वसूल करने का अधिकार दिया गया है तो जिस वर्ष लघुकार्य-राशि होती है, उस वर्ष सम्पत्ति के स्वामी को न्यूनतम किराये की राशि में से लघुकार्य-राशि के बराबर रकम अधिकार-शुल्क संचय (Royalty Reserve) में ले जानी चाहिए क्योंकि पूरा न्यूनतम किराया उस वर्ष की आय नहीं होती। अतः पट्टा लेने वाले के लिए जो 'लघुकार्य-राशि' है, सम्पत्ति के स्वामी के लिए वही रकम 'अधिकार-शुल्क संचय' है। जिस वर्ष पट्टा लेने वाला लघुकार्य-राशि वसूल करता है, उस वर्ष उतनी ही राशि से 'अधिकार-शुल्क संचय' कम हो जावेगा और जब उसका लघुकार्य-राशि वसूल करने का अधिकार समाप्त हो जावेगा तो 'अधिकार-शुल्क संचय' का शेष 'लाभ-हानि खाते' को हस्तान्तरित कर दिया जावेगा।

पुस्तकों का लेखा (Accounting Records)—

यदि समझौते में न्यूनतम किराया दिया गया हो और लघुकार्य-राशि को वसूल (Recoup) करने का अधिकार हो:—

(i) उन वर्षों में जब अधिकार-शुल्क न्यूनतम किराये से कम हो—

न्यूनतम किराया लेय होने पर	Lessee Dr. To Royalty Receivable a/c To Royalty Reserve a/c (Royalty earned and excess of minimum rent over royalty transferred to Royalty Reserve a/c).
भुगतान मिलने पर	Cash a/c Dr. To Lessee (Payment received.)
पुस्तकें बन्द करते समय	Royalty receivable a/c Dr. To P. & L. a/c (Royalty Receivable transferred.)

(ii) उन वर्षों में जब अधिकार-शुल्क न्यूनतम किराये के बराबर हो—

अधिकार-शुल्क लेय होने पर	Lessee Dr. To Royalty Receivable a/c (Royalty earned.)
भुगतान मिलने पर	Cash a/c Dr. To Lessee (Payment received.)
पुस्तकें बन्द करने पर	Royalty Receivable a/c Dr. To P. & L. a/c (Royalty Receivable transferred.)

(iii) उन वर्षों में जब अधिकार शुल्क न्यूनतम किराये से अधिक हो :—

अधिकार-शुल्क लेय होने पर	Lessee Dr. To Royalty Receivable a/c (Royalty earned.)
लघुकार्य-राशि वसूल होने पर	Royalty Reserve a/c Dr. To Lessee (Royalty reserve recovered by lessee.)
भुगतान प्राप्त होने पर	Cash a/c Dr. To Lessee (Payment received.)
पुस्तकें बन्द करने पर	Royalty Receivable a/c Dr. To P. & L. a/c (Royalty receivable transferred.)
यदि 'अधिकार-शुल्क संचय' में शेष है और पट्टा लेने वाले का इसे वसूल करने का अधिकार समाप्त हो गया है।	Royalty Reserve a/c Dr. To P. & L. a/c (Unallowable royalty reserve transferred.)

Illustration 63

Solve illustration No 62 in the books of the Landlord.

उदाहरण संख्या 62 को भू-स्वामी की पुस्तकों में हल कीजिए।

Solution :— विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

Year	Minimum Rent	Actual Royalty	Royalty Reserve (—) Or Surplus Workings (+)	Royalty Reserve Utilised	Royalty Reserve Transferred to P. & L.a/c	Actual Payment Received
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1	10,000	8,000	—2,000	Nil	Nil	10,000
2	10,000	9,000	—1,000	Nil	Nil	10,000
3	10,000	10,000	Nil	Nil	Nil	10,000
4	10,000	11,000	+1,000	1,000	1,000	10,000

Books of Landlord :— Journal of......

Date	Particulars	L.F.	Dr. Rs.	Cr. Rs.
1st year Dec. 31	Lessee Dr.		10,000	
	To Royalty Receivable a/c			8,000
	To Royalty Reserve a/c			2,000
	(Amount of royalty receivable earned and the excess of minimum rent transferred to Royalty Reserve a/c.)			
Dec. 31	Cash a/c Dr.		10,000	
	To Lessee			10,000
	(Amount received from the lessee.)			
Dec. 31	Royalty Receivable a/c Dr.		8,000	
	To P. & L. a/c			8,000
	(Balance of Royalty Receivable a/c transferred to P. & L. a/c.)			
2nd year Dec. 31	Lessee Dr.		10,000	
	To Royalty Receivable a/c			9,000
	To Royalty Reserve a/c			1,000
	(Amount of royalty receivable earned and the excess of minimum rent transferred to Royalty Reserve a/c.)			
Dec. 31	Cash a/c Dr.		10,000	
	To Lessee			10,000
	(Amount received from the Lessee.)			
Dec. 31	Royalty Receivable a/c Dr.		9,000	
	To P. & L. a/c			9,000
	(Balance of Royalty Receivable a/c transferred to P. & L. a/c.)			

Journal Contd...

			Rs.	Rs.
3rd year Dec. 31	Lessee	Dr.	10,000	
	To Royalty Receivable a/c			10,000
	(Royalty Receivable earned.)			
Dec. 31	Cash a/c	Dr.	10,000	
	To Lessee			10,000
	(Amount received from the Lessee.)			
Dec. 31	Royalty Receivable a/c	Dr.	10,000	
	To P. & L. a/c			10,000
	(Balance of Royalty Receivable a/c transferred to P. & L. a/c.)			
4th year Dec. 31	Lessee	Dr.	11,000	
	To Royalty Receivable a/c			11,000
	(Royalty Receivable earned.)			
Dec. 31	Cash a/c	Dr.	10,000	
	Royalty Reserve a/c	Dr.	1,000	
	To Lessee			11,000
	(Royalty Reserve written of to the extent of shortworkings recouped by lessee and the balance received in cash.)			
Dec. 31	Royalty Receivable a/c	Dr.	11,000	
	Royalty Reserve a/c	Dr.	1,000	
	To P. & L. a/c			12,000
	(Balance of Royalty Receivable a/c and the amount of Royalty Reserve a/c to the extent of irrecoverable shortworkings transferred to P. & L. a/c.)			

Ledger

Lessee

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	8,000	1st Year Dec. 31	By Cash a/c	10,000
	" Royalty Reserve a/c	2,000			
		10,000			10,000
2nd Year Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	9,000	2nd Year Dec. 31	By Cash a/c	10,000
	" Royalty Reserve a/c	1,000			
		10,000			10,000

Lessee's Account Contd...

		Rs.			Rs,
3rd Year Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	10,000	3rd Year Dec. 31	By Cash a/c	10,000
4th Year Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	11,000	4th Year Dec. 31	By Cash a/c	10,000
			,,	,, Royalty Reserve a/c	1,000
		11,000			11,000

Royalty Receivable Account

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To P. & L. a/c	8,000	1st Year Dec. 31	By Lessee	8,000
2nd year Dec. 31	To P. & L. a/c	9,000	2nd Year Dec. 31	By Lessee	9,000
3rd Year Dec. 31	To P. & L. a/c	10,000	3rd Year Dec. 31	By Lessee	10,000
4th Year Dec. 31	To P. & L. a/c	11,000	4th Year Dec. 31	By Lessee	11,000

Royalty Reserve Account

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To Balance c/d	2,000	1st Year Dec. 31	By Lessee	2,000
2nd Year Dec. 31	To Balance c/d	3,000	2nd Year Jan. 1	By Balance b/d	2,000
			Dec. 31	,, Lessee	1,000
		3,000			3,000
3rd Year Dec. 31	To Balance c/d	3,000	3rd Year Jan. 1	By Balance b/d	3,000
4th Year Dec. 31	To Lessee	1,000	4th Year Jan. 1	By Balance b/d	3,000
,, ,,	,, P. &. L. a/c	1,000			
,, ,,	,, Balance c/d	1,000			
		3,000			3,000
			5th Year Jan. 1	By Balance b/d	1,000

P. & L. Account

(for the year ending 31st Dec......

		Rs.			Rs.
			1st Year Dec. 31	By Royalty Receivable a/c	8,000
			2nd Year Dec. 31	By Royalty Receivable a/c	9,000
			3rd Year Dec. 31	By Royalty Receivable a/c	10,000
			4th Year Dec. 31	By Royalty Receivable a/c	11,000
			,,	,, Royalty Reserve a/c	1,000

Balance Sheet

(as at 31st Dec......)

		Rs.		Rs.
1st Year	Royalty Reserve	2,000		
2nd Year	Royalty Reserve	3,000		
3rd Year	Royalty Reserve	3,000		
4th Year	Royalty Reserve	1,000		

वर्धमान न्यूनतम किराया (Increasing Minimum Rent)

कभी-कभी पट्टेदार और पट्टेदाता के बीच समझौते के अनुसार यह तय होता है कि न्यूनतम किराया प्रथम वर्ष में कम होगा, दूसरे वर्ष में उससे अधिक होगा और तीसरे वर्ष में उससे अधिक होगा अर्थात् प्रत्येक वर्ष के लिए न्यूनतम किराये की एक निश्चित राशि नहीं होती है अपितु परिवर्तित होती रहती है। लघु कार्य राशि निकालने अथवा वसूल करने के लिए सम्बन्धित वर्ष के न्यूनतम किराये को ध्यान में रखना चाहिए। ऐसी दशा में लेखा इस प्रकार होगा।

Illustration 64.

On 1st January, 1945, the Bharat Collieries Ltd. leased a piece of land, agreeing to pay therefor a minimum rent of Rs. 2,000 in the first year, Rs. 4,000 in the second year, and thereafter Rs. 6,000 per annum, merging into a royalty of 37·5 paise per ton, with power to recoup shortworkings over the first three years of the lease only.

The figures of annual output for the four years to 31st Dec., 1948 were 1,000, 10,000, 18,000 and 20,000 tons respectively.

Record these transactions in the Ledger of the company.

भारत कुलियारी कम्पनी ने 1 जनवरी, 1945 को 2,000 रु० प्रथम वर्ष 4,000 रु० द्वितीय वर्ष और तत्पश्चात् 6,000 रु० प्रति वर्ष न्यूनतम किराया चुकाने की स्वीकृति देते हुए एक भूमि का टुकड़ा पट्टे पर लिया। अधिकार शुल्क की दर 37·5 पैसे प्रति टन निर्धारित हुई और लघु कार्य-राशि को पट्टे के प्रथम तीन वर्षों में वसूल करना तय हुआ।

31 दिसम्बर, 1948 को समाप्त होने वाले प्रथम चार वर्षों के उत्पादन के आँकड़े क्रमशः 1,000 टन, 10,000 टन, 18,000 टन और 20,000 टन थे।

कम्पनी की खाता बही में लेखा कीजिए।

Solution : **विश्लेषण तालिका (Analytical Table)**

Year	Minimum Rent	Actual Royalty	Short workings (—) or Surplus workings (+)	Shortworkings Recouped	Shortworkings Transferred to P.& L. a/c	Actual Payment
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1945	2,000	375	—1,625	Nil	Nil	2,000
1946	4,000	3,750	—250	Nil	Nil	4,000
1947	6,000	6,750	+750	750	1,125	6,000
1948	6,000	7,500	+1,500	Nil	Nil	7,500

Ledger of M/s Bharat Collieries Ltd.

Royalty Account

		Rs.			Rs.
1945			1945		
Dec. 31	To Landlord's a/c	375	Dec. 31	By P. & L. a/c	375
1946			1946		
Dec. 31	To Landlord's a/c	3,750	Dec. 31	By P. & L. a/c	3,750
1947			1947		
Dec. 31	To Landlord's a/c	6,750	Dec. 31	By P. & L. a/c	6,750
1948			1948		
Dec. 31	To Landlord's a/c	7,500	Dec. 31	By P. & L. a/c	7,500

Land Lord's Account

		Rs.			Rs.
1945			Rs.		
Dec. 31	To Bank a/c	2,000	Dec. 31	By Royalty a/c	375
				,, Shortworkings a/c	1,625
		2,000			2,000
1946			1946		
Dec. 31	To Bank a/c	4,000	Dec. 31	By Royalty a/c	3,750
				,, Shortworkings a/c	250
		4,000			4,000
1947			1947		
Dec. 31	To Shortworkings a/c	750	Dec. 31	By Royalty a/c	6,750
	,, Bank a/c	6,000			
		6,750			6,750
1948			1948		
Dec. 31	To Bank a/c	7,500	Dec. 31	By Royalty a/c	7,500

Shortworkings Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1945 Dec. 31	To Landlords a/c	1,625	1945 Dec. 31	By Balance c/d	1,625
1946 Dec. 31	To Balance b/d	1,625	1946 Dec. 31	By Balance c/d	1,875
	,, Landlord's a/c	250			
		1,875			1,875
1947 Jan. 1	To Balance b/d	1,875	1947 Jan. 1	By Landlord's a/c	750
			,, 31	,, P. & L. a/c (Unrecoupable)	1,125
		1,875			1,875

P. & L. Account
(For the year ending 31st Dec....)

Date	Particulars	Rs.			
1945 Dec. 31	To Royalty a/c	375			
1946 Dec. 31	To Royalty a/c	3,750			
1947 Dec. 31	To Royalty a/c	6,750			
	,, Shortworkings a/c	1,125			
1948 Dec. 31	To Royalty a/c	7,500			

अधिकार-शुल्क का त्रैमासिक या अर्धवार्षिक देय होना—

कभी-कभी पट्टेदार और पट्टेदाता के बीच यह समझौता होता है कि अधिकार-शुल्क वर्ष में 2 बार (अर्धवार्षिक) अथवा 4 बार (त्रैमासिक) देय होगा। ऐसी अवस्था में यदि लाभ-हानि खाता और चिट्ठा वार्षिक बनाये जाते हैं तो अधिकार-शुल्क खाते का शेष वर्ष के अन्त में ही लाभ-हानि खाते में ले जाया जावेगा।

Illustration 65.

A coal company took a coal mine on lease for a period of 10 years from 1st Jan., 1960 on a royalty of 50 paise per ton of the output payable half-yearly on 30th June and 31st December. The minimum rent was fixed at Rs. 8,000 per half-year with power to recoup shortworkings over the first three years of the lease.

The output was as follows—

Half-year ending 30th June, 1960
,, ,, ,, 31st Dec., 1960
,, ,, ,, 30th June, 1961
,, ,, ,, 31st Dec., 1961
,, ,, ,, 30th June, 1962
,, ,, ,, 31st Dec., 1962 12,00.

The coal company prepares its final accounts annually on 31st Dec every year and the royalty which was due on 31st Dec., 1961 was in fac tpaid on 5th Jan., 1962.

You are required to record the above transactions in the ledger of the company and also to show items in the Balance Sheet.

एक कोयला कम्पनी ने, एक कोयला खान 10 वर्ष के लिए 1 जनवरी, 1960 से 50 पैसे प्रति टन (प्रति वर्ष 30 जून और 31 दिसम्बर को देय) अधिकार शुल्क की दर से पट्टे पर ली। न्यूनतम किराया 8,000 रु० अर्ध वार्षिक तथा लघु कार्य राशि को पट्टे के प्रथम तीन वर्ष में वसूल करने का अधिकार तय हुआ।

उत्पादन इस प्रकार रहा—

30 जून, 1960 को समाप्त हुए 6 महीने में	6,000 टन
31 दिसम्बर, 1960 ,, ,, ,, ,,	8,000 ,,
30 जून, 1961 ,, ,, ,, ,,	16,000 ,,
31 दिसम्बर, 1961 ,, ,, ,, ,,	20,000 ,,
30 जून, 1962 ,, ,, ,, ,,	18,000 ,,
31 दिसम्बर, 1962 ,, ,, ,, ,,	12,000 ,,

कोयला कम्पनी अपने अंतिम खाते प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को तैयार करती है और 31 दिसम्बर, 1961 को देय रायल्टी वास्तव में 5 जनवरी, 1962 को चुकाई गई थी।

कम्पनी की खाता वही में आवश्यक लेखा कीजिए तथा मदों को चिट्ठे में भी दिखाइये।

Solution : विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

Half-year to	Minimun Rent	Actual Royalty	Shortworkings (–) Surplus workings (+)	Shortworkings Recouped	Shortworkings Transferred to P.& L. a/c	Actual Payment
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
30-6-1960	8,000	3,000	– 5,000	—	—	8,000
31-12-1960	8,000	4,000	– 4,000	—	—	8,000
30-6-1961	8,000	8,000	—	—	—	8,000
31-12-1961	8,000	10 000	+2,000	2,000	—	8,000
30-6-1962	8,000	9,000	+1,000	1,000	—	8,000
31-12-1962	8,000	6,000	– 2,000	—	8,000	8,000

..s of Coal Company:—

Royalty Account

		Rs.			Rs.
1960			1960		
June 30	To Landlord	3,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	7,000
Dec. 31	,, Landlord	4,000			
		7,000			7,000
1961			1961		
June 30	To Landlord	8,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	18,000
Dec. 31	,, Landlord	10,000			
		18,000			18,000
1962			1962		
June 30	To Landlord	9,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	15,000
Dec. 31	,, Landlord	6,000			
		15,000			15,000

Shortworkings Account

		Rs.			Rs.
1960			1960		
June 30	To Landlord	5,000	Dec. 31	By Balance c/d	9,000
Dec. 31	,, Landlord	4,000			
		9,000			9,000
1961			1961		
Jan. 1	To Balance b/d	9,000	Dec. 31	By Landlord	2,000
			Dec. 31	By Balance c/d	7,000
		9,000			9,000
1962			1962		
Jan. 31	To Balance b/d	7,000	June 30	By Landlord	1,000
Dec. 31	,, Landlord	2,000	Dec. 31	,, P.& L. a/c (Unrecoupable)	8,000
		9,000			9,000

Landlord's Account

		Rs.			Rs.
1960			1960		
June 30	To Bank a/c	8,000	June 30	By Royalty a/c	3,000
Dec. 31	,, Bank a/c	8,000	,, ,,	,, Shortworkings a/c	5,000
			Dec. 31	,, Royalty a/c	4,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	4,000
		16,000			16,000
1961			1961		
June 30	To Bank a/c	8,000	June 30	By Royalty a/c	8,000
Dec. 31	,, Shortworkings a/c	2,000	Dec. 31	,, Royalty a/c	10,000
,, ,,	,, Balance c/d	8,000			
		18,000			18,000

Landlord's Account Contd......

1962	Rs,		1962		Rs,
Jan. 5	To Bank a/c	8,000	Jan. 1	By Balance b/d	8,000
June 30	,, Shortworkings a/c	1,000	June 30	,, Royalty a/c	9,000
,, ,,	,, Bank a/c	8,000	Dec. 31	,, Royalty a/c	6,000
Dec. 31	,, Bank a/c	8,000	,, ,,	,, Shortworkings a/c	2,000
		25,000			25,000

P. &. L. Account

(for the year ending......)

		Rs.			Rs.
1960					
Dec. 31	To Royalty a/c	7,000			
1961					
Dec. 31	To Royalty a/c	18,000			
1962					
Dec. 31	To Royalty a/c	15,000			
	,, Shortworkings a/c	8,000			

Balance Sheet

(as on 31st Dec......)

	Rs.		Rs.
		1960	
		Shortworkings	9,000
1961		1961	
Landlord	8,000	Shortworkings	7,000

हड़ताल के कारण उत्पादन कार्य में बाधा—कभी-कभी पट्टेदार और पट्टेदाता के बीच समझौता होते समय एक शर्त यह भी तय की जा सकती है कि यदि हड़ताल या अन्य किसी दैवी प्रकोप के कारण उत्पादन किसी वर्ष प्रभावित हो तो देय अधिकार शुल्क निम्न में से किसी प्रकार तय किया जावेगा: —

(i) पट्टेदाता (Lessor) वास्तविक उत्पादन के आधार पर अधिकार-शुल्क स्वीकार कर लेगा; अथवा

(ii) जितने समय हड़ताल या उत्पादन कार्य बंद रहा, उस वर्ष का न्यूनतम किराया उसी अनुपात में कम कर दिया जावेगा; अथवा

(iii) न्यूनतम किराये की राशि को एक निश्चित प्रतिशत से कम कर दिया जावेगा।

Illustration 66.

A colliery company worked coal mine under a lease which provided for the payment of royalties @ 50 paise per ton with a minimum rent of Rs. 17,000 per annum. Each year's excess of minimum rent over the actual royalties was recoverable during the subsequent three years.

The lease, however, stipulated that, if in any year the normal rent was not attained due to strike or accident, the minimum rent was to be regarded as having been reduced proportionately having regard to the length of stoppage.

The output was as follows :—

Year	1944	1945	1946	1947	1948	1949
Output (in tons)	4,000	28,000	38,000	46,000	30,000	50,000

During the year ended 31st Dec., 1948, there was a stoppage (due to strike) lasting three months.

Write up the Landlord's a/c, Royalties a/c and the Shortworkings a/c for each of the above years.

एक कोयला कम्पनी ने पट्टे पर एक कोयले की खान में उत्पादन शुरू किया जिसमें 50 पैसे प्रति टन अधिकार शुल्क तथा 17,000 रु० वार्षिक न्यूनतम किराये की व्यवस्था थी। प्रत्येक वर्ष के न्यूनतम किराये के अधिकार-शुल्क पर आधिक्य को अगले तीन वर्ष तक वसूल किया जा सकता था।

पट्टे में यह भी शर्त थी कि यदि किसी वर्ष हड़ताल या दुर्घटना के कारण सामान्य किराया प्राप्त न हो सका तो न्यूनतम किराये की राशि को उसी अनुपात में कम कर दिया जावेगा जितने समय कार्य बन्द रहा।

उत्पादन इस प्रकार हुआ :—

वर्ष	1944	1945	1946	1947	1948	1949
उत्पादन (टनों में)	4,000	28,000	38,000	46,000	30,000	50,000

31 दिसम्बर, 1948 को समाप्त हुये वर्ष में हड़ताल के कारण तीन महीने उत्पादन बन्द रहा था।

उपरोक्त वर्षों के लिए स्वामी का खाता, अधिकार-शुल्क खाता तथा लघुकार्य-राशि खाता खोलिए।

Solution :

विश्लेषण तालिका (**Analytical Table**)

year	Minimum Rent	Actual Royalty	Shortworkings (—) or Surplus workings (+)	Shortwokings Recouped	Shortwokings Transferred to P.&L. a/c	Actual Paymen
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1944	17,000	2,000	— 15,000	—	—	17,000
1945	17,000	14,000	— 3,000	—	—	17,000
1946	17,000	19,000	+ 2,000	2,000	—	17,000
1947	17,000	23,000	+ 6,000	6,000	7,000	17,000
1948	12,750	15,000	+ 2,250	2,250	750	12,750
1949	17,000	25,000	+ 8,000	—	—	25,000

Landlord's Account

1944		Rs.	1944		प्रयुक्त हो
Dec. 31	To Bank a/c	17,000	Dec. 31	By Royalty a/c	2, [illegible]
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	15,00[illegible]
		17,000			17,000
1945			1945		
Dec. 31	To Bank a/c	17,000	Dec. 31	By Royalty a/c	14,000
			,, ,,	,, Shortworking a/c	3,000
		17,000			17,000
1946			1946		
Dec. 31	To Shortworkings a/c	2,000	Dec. 31	By Royalty a/c	19,000
,,	,, Bank a/c	17,000			
		19,000			19,000
1947			1947		
Dec. 31	To Shortworkings a/c	6,000	Dec. 31	By Royalty a/c	23,000
,,	,, Bank a/c	17,000			
		23,000			23,000
1948			1948		
Dec. 31	To Shortworkings a/c	2,250	Dec. 31	By Royalty a/c	15,000
,,	,, Bank a/c	12,750			
		15,000			15,000
1949			1949		
Dec. 31	To Bank a/c	25,000	Dec. 31	By Royalty a/c	25,000

Royalty Account

1944		Rs.	1944		Rs.
Dec. 31	To Landlord	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1945			1945		
Dec. 31	To Landlord	14,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	14,000
1946			1946		
Dec. 31	To Landlord	19,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	19,000
1947			1947		
Dec. 31	To Landlord	23,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	23,000
1948			1948		
Dec. 31	To Landlord	15,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	15,000
1949			1949		
Dec. 31	To Landlord	25,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	25,000

Shortworkings Account

		Rs.			Rs.
1944 Dec. 31	To Landlord	15,000	1944 Dec. 31	By Balance c/d	15,000
1945 Jan. 1	To Balance b/d	15,000	1945 Dec. 31	By Balance c/d	18,000
Dec. 31	To Landlord	3,000			
		18,000			18,000
1946 Jan. 1	To Balance b/d	18,000	1946 Dec. 31	By Landlord	2,000
			,, ,,	,, Balance c/d	16,000
		18,000			18,000
1947 Jan. 1	To Balance b/d	16,000	1947 Dec. 31	By landlord	6,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Unrecoupable)	7,000
			,, ,,	,, Balance c/d	3,000
		16,000			16,000
1948 Jan. 1	To Balance b/d	3,000	1948 Dec. 31	By Landlord	2,250
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Unrecoupable)	750
		3,000			3,000

अधिकार-शुल्क समझौते का वर्ष के बीच में होना—यह आवश्यक नहीं है कि अधिकार-शुल्क समझौता हमेशा वर्ष के प्रारम्भ में ही किया जावे। लेकिन यदि समझौता वर्ष के मध्य में किया जाता है तो न्यूनतम किराया प्रथम वर्ष में समय के गुजरने के अनुपात में कम कर दिया जावेगा। जैसे यदि वर्ष के 3 माह गुजरने के बाद समझौता होता है और वार्षिक न्यूनतम किराया 2,000 रु० तय हुआ है तो प्रथम वर्ष का न्यूनतम किराया 1,500 रु० ही होगा।

Illustration 67

A coal mine of 500 acres of land is leased to Mr. X on 1st Oct., 1962 subject to a royalty of Re. 1/—per ton on all coal despatched. Minimum rent was fixed at Rs. 4 per acre per annum up to the commencement of despatches and thereafter Rs. 10 per acre per annum. Shortworkings were recoupable upto 31st Dec., 1965 and no longer.

Despatches commenced on 1st July, 1963 and were as follows :—

Year	1963	1964	1965
Despatches (Tons)	2,000	4,000	7,000

Accounts are closed on 31st Dec. every year. Prepare the necessary accounts in the books of the lessee.

एक 500 एकड़ जमीन वाली कोयले की खान 1 अक्टूबर, 1962 को 1 रु० प्रति टन अधिकार शुल्क के आधार पर मि० एक्स को पट्टे पर दी गई। न्यूनतम किराया प्रेषण प्रारम्भ होने तक 4 रु० प्रति एकड़ वार्षिक और इसके पश्चात् 10 रु० प्रति एकड़ वार्षिक निर्धारित हुआ। लघुकार्य-राशि 31 दिसम्बर, 1965 तक वसूल की जा सकती थी, इसके पश्चात् नहीं।

पण 1 जुलाई, 1963 को प्रारम्भ हुये और इस प्रकार थे :—

वर्ष	1963	1964
प्रेषण (टनों में)	2,000	4,000

ाते प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को बन्द किये जाते हैं। पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में आर्श-राशि खाते तैयार कीजिए।

Solution :

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

Year	Minimum Rent	Actual Royalty	Shortworkings (–) or Surplus Workings(+)	Shortworkings Recouped	Shortworkings Transferred to P.& L. a/c	Actual Payment
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1962	500	Nil	–500	Nil	Nil	500
1963	3,500	2,000	–1,500	Nil	Nil	3,500
1964	5,000	4,000	–1,000	Nil	Nil	5,000
1965	5,000	7,000	+2,000	2,000	1,000	5,000

Books of Lessee :

Royalty Account

		Rs.			Rs.
1963 Dec. 31	To Landlord's a/c	2 000	1963 Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1964 Dec. 31	To Landlord's a/c	4,000	1964 Dec. 31	By P. & L. a/c	4,000
1965 Dec. 31	To Landlord's a/c	7,000	1965 Dec. 31	By P. & L. a/c	7,000

Shortworkings Account

		Rs.			Rs.
1962 Dec. 31	To Landlord's a/c	500	1962 Dec. 31	By Balance c/d	500
1963 Jan. 1	To Balance b/d	500	1963 Dec. 31	By Balance c/d	2,000
Dec. 31	,, Landlord's a/c	1,500			
		2,000			2,000
1964 Jan. 1	To Balance b/d	2,000	1964 Dec. 31	By Balance c/d	3,000
Dec. 31	,, Landlord's a/c	1,000			
		3,000			3,000
1965 Jan. 1	To Balance b/d	3,000	1965 Dec. 31	By Landlord's a/c	2,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Unrecoupable)	1,000
		3,000			3,000

Landlord's Account

		Rs.			Rs.
1962 Dec. 31	To Bank a/c	500	1962 Dec. 31	By Shortworkings a/c	500
1963 Dec. 31	To Bank a/c	3,500	1963 Dec. 31	By Royalty a/c	2,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	1,500
		3,500			3,500
1964 Dec. 31	To Bank a/c	5,000	1964 Dec. 31	By Royalty a/c	4,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	1,000
		5,000			5,000
1965 Dec. 31	To Shortworkings a/c	2,000	1965 Dec. 31	By Royalty a/c	7,000
,, ,,	,, Bank a/c	5,000	,,		
		7,000			7,000

Note—न्यूनतम किराये की गणना इस प्रकार होगी:—

1962 ∵ वार्षिक न्यूनतम किराया = (500 × 4) रु० = 2,000 रु०

∴ 1 अक्टूबर से 31 दिसम्बर तक का किराया = $(2,000 \times \frac{1}{4})$ रु० = 500 रु०

1963 1 जन० से 30 जून तक न्यूनतम किराया (उत्पादन प्रारम्भ होने के पूर्व) = $(2,000 \times \frac{1}{2})$ रु० = 1,000 रु०

और 1 जुन से 31 दि० तक (उत्पादन प्रारम्भ होने के बाद) न्यूनतम किराया = $(500 \times 10 \times \frac{1}{2})$ रु० = 2,500 रु०

∴ पूरे वर्ष का न्यूनतम किराया = (1,000 + 2,500) रु० = 3,500 रु०

Illustration: 68

X Ltd. acquires the lease of a mine from Y Ltd. on the following terms:—

(a) Minimum Rent of Rs. 10,000 per annum merging into a royalty of 50 paise per ton;

(b) Shortworkings are recoverable out of future earnings subject to :

(i) Only half of the excess earnings over dead rent may be used for *this purpose.*

(ii) No shortworkings may be recouped, if output falls below 10,000 tons in any year.

Output for the first four years was—8,000 Tons, 12,000 Tons, 16,000 Tons and 28,000 Tons respectively. Open the necessary accounts in the books of the Lessee.

एक्स लिमिटेड वाई लिमिटेड से निम्न शर्तों पर एक खान का पट्टा लेती है :—

(अ) न्यूनतम किराया 10,000 रु० वार्षिक और अधिकार-शुल्क 50 पैसा प्रति टन,

(ब) लघुकार्य-राशि आगामी आय में से निम्न शर्तों के आधार पर वसूल की जा सकती है:—

(i) स्थिर किराये पर आय के आधिक्य का केवल आधा भाग इस कार्य में प्रयुक्त हो सकता है।

(ii) यदि किसी वर्ष उत्पादन 10,000 टन से नीचे गिरता है तो कोई लघुकार्य-राशि वसूल नहीं की जा सकती।

प्रथम चार वर्षों का उत्पादन क्रमशः 8,000 टन, 12,000 टन, 16,000 टन और 28,000 टन था।

पट्टेदार की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिये।

Solution : **विश्लेषण तालिका (Analytical Table)**

Year	Minimum Rent	Actual Royalty	Shortworkings (—) or Surplus workings(+)	Shortworkings recouped	Shortworkings transferred to P.& L. a/c	Actual Payment
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1	10,000	4,000	—6,000	Nil	6,000	10,000
2	10,000	6,000	—4,000	Nil	Nil	10,000
3	10,000	8,000	—2,000	Nil	Nil	10,000
4	10,000	14,000	+4.000	2,000	Nil	12,000

Books of Lessee :— **Royalty Account**

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To Y Ltd.	4,000	1st Year Dec. 31	By P. & L. a/c	4,000
2nd Year Dec. 31	To Y Ltd.	6,000	2nd Year Dec. 31	By P. & L. a/c	6,000
3rd Year Dec. 31	To Y Ltd.	8,000	3rd Year Dec. 31	By P. & L. a/c	8,000
4th Year Dec. 31	To Y Ltd.	14,000	4th Year Dec. 31	By P. & L. a/c	14,000

Shortworkings Account

		Rs.			Rs.
1st Year Dec. 31	To Y Ltd.	6,000	1st Year Dec. 31	By P. & L. a/c	6,000
2nd Year Dec. 31	To Y Ltd.	4,000	2nd Year Dec. 31	By Balance c/d	4,000
3rd Year Jan. 1	To Balance b/d	4,000	3rd Year Dec. 31	By Balance c/d	6,000
Dec. 31	,, Y Ltd.	2,000			
		6,000			6,000
4th Year Jan. 1	To Balance b/d	6,000	4th Year Dec. 31	By Y Ltd.	2,000
			,, ,,	,, Balance c/d	4,000
		6,000			6,000

Y Ltd.

		Rs.			Rs.
1st year Dec. 31	To Bank a/c	10,000	1st year Dec. 31	By Royalty a/c	4,000
			„ „	„ Shortworkings a/c	6,000
		10,000			10,000
2nd year Dec. 31	To Bank a/c	10,000	2nd year Dec. 31	By Royalty a/c	6,000
			„ „	„ Shortworkings a/c	4,000
		10,000			10,000
3rd year Dec. 31	To Bank a/c	10,000	3rd year Dec. 31	By Royalty a/c	8,000
			„ „	„ Shortworkings a/c	2,000
		10,000			10,000
4th year Dec. 31	To Shortworkings a/c	2,000	4th year Dec. 31	By Royalty a/c	14,000
„ „	„ Bank a/c	12,000			
		14,000			14,000

नोट—यह मान लिया गया है कि अन्तिम खाते 31 दिसम्वर को वनाये जाते हैं।

लघुकार्य-संचय का निर्माण (Creation of Shortworkings Reserve)—समझौते की शर्तों के अन्तर्गत जव पट्टेदार को लघुकार्य राशि वसूल करने का अधिकार एक निश्चित समय के लिए दिया जाता है तो पट्टेदार उस समय तक लघुकार्य राशि को चिट्ठे में सम्पत्ति के रूप में दिखाता है जब तक कि उसे लघुकार्य राशि को वसूल करने का अधिकार रहता है। जिस वर्ष में लघुकार्य राशि को वसूल करने का अधिकार समाप्त हो जाता है, उस वर्ष में 'न वसूल की गई लघुकार्य राशि' को लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इस पद्धति का सवसे वड़ा दोष यह है कि 'न वसूल की गई लघुकार्य राशि' से उस वर्ष का लाभ-हानि खाता प्रभावित नहीं होता है जिस वर्ष में लघुकार्य राशि हुई है—अपितु उस वर्ष का लाभ-हानि खाता प्रभावित होता है जिस वर्ष में लघुकार्य राशि के वसूल करने का अधिकार समाप्त हो जाता है। इस दोष का निवारण लघुकार्य-संचय (Shortworkings Reserve) का निर्माण करके किया जा सकता है। संचय का निर्माण करने पर लघुकार्य राशि होने वाले वर्ष में, लघुकार्य राशि के वरावर एक रकम लाभ-हानि खाते से निकालकर लघुकार्य-संचय खाते (Shortworkings Reserve a/c) में हस्तान्तरित कर दी जाती है। आगामी वर्षों में लघुकार्य राशि के वसूल किये जाने पर लघुकार्य-संचय खाता (Shortworkings Reserve a/c) वसूल की गई राशि से डेबिट कर दिया जाता है तथा लाभ-हानि खाता क्रेडिट कर दिया जाता है। लघुकार्य राशि का वह भाग जो वसूल नहीं हो सका है, लघुकार्य संचय से अपलिखित कर दिया जाता है।

इस सम्बन्ध में लेखा इस प्रकार किया जावेगा:—

(i) जिस वर्ष लघुकार्य राशि की उत्पत्ति हो—

P. & L. a/c Dr.

To Shortworkings Reserve a/c

(Shortworkings Reserve created by transferring an amount equal to shortworkings recoverable.)

(ii) जिस वर्ष लघुकार्य-राशि वसूल की जावे—

Shortworkings Reserve a/c Dr.

To P. & L. a/c

(Amount equal to shortworkings recouped, transferred to P. & L. a/c from Shortworkings Reserve a/c as the same is no longer required.)

(iii) अशोधनीय (Unrecoupable) लघुकार्य-राशि को अपलिखित करने पर—

Shortworkings Reserve a/c Dr.

To Shortworkings a/c

(Unrecoupable shortworkings written off.)

lustration 69

A mine is taken on lease for a period of 10 years at a minimum rent of Rs. 10,000 per year merging into a royalty of Re. 1/—per ton of production with a right to recoup shortworkings over the first three years of the lease. It is decided to maintain a Reserve for an amount equal to that of shortworkings.

The production during the first four years of the lease was as under:—

Year	1	2	3	4
Production (in Tons)	4,000	8,000	15,000	16000

Open the necessary accounts in the books of the Lessee.

10 वर्ष के लिए एक खान पट्टे पर ली जाती है जिसका न्यूनतम किराया 10,000 रु० वार्षिक है और अधिकार-शुल्क की दर 1 रु० प्रति टन है। लघुकार्य राशि को प्रथम तीन वर्षों में वसूल (Recoup) करने का अधिकार है। यह तय किया जाता है कि लघुकार्य राशि के बराबर संचय बनाया जावे।

प्रथम चार वर्षों में निम्न उत्पादन रहा:—

वर्ष	1	2	3	4
उत्पादन टनों में	4,000	8,000	15,000	16,000

पट्टेदार की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिए।

Solution :

Books of Lessee:— Royalty Account

		Rs.			Rs.
1st year (end)	To Landlord	4,000	1st year (end)	By P. & L. a/c	4,000
2nd year (end)	To Landlord	8,000	2nd year (end)	By P. & L. a/c	8,000
3rd year (end)	To Landlord	15,000	3rd year (end)	By P. & L. a/c	15,000
4th year (end)	To Landlord	16,000	4th year (end)	By P. & L. a/c	16,000

Shortworkings Account

		Rs.			Rs.
1st year (end)	To Landlord	6,000	1st year (end)	By Balance c/d	6,000
2nd year Commencement	To Balance b/d	6,000	2nd year (end)	By Balance c/d	8,000
(end)	,, Landlord	2,000			
		8,000			8,000
3rd year Commencement	To Balance b/d	8,000	3rd year (end)	By Landlord	5,000
			,,	By Shortworkings Reserve a/c (Unrecoupable)	3,000
		8,000			8,000

Landlord's Account

		Rs.			Rs.
1st year (end)	To Bank a/c	10,000	1st year (end)	By Royalty a/c	4,000
			,,	,, Shortworkings a/c	6,000
		10,000			10,000
2nd year (end)	To Bank a/c	10,000	2nd year (end)	By Royalty a/c	8,000
			,,	,, Shortworkings a/c	2,000
		10,000			10,000
3rd year (end)	To Shortworkings a/c	5,000	3rd year (end)	By Royalty a/c	15,000
,,	,, Bank a/c	10,000			
		15,000			15,000
4th year (end)	To Bank a/c	16,000	4th year (end)	By Royalty a/c	16,000

P. & L. Account

(For the year ending......)

		Rs.			Rs.
1st year	To Royalty a/c	4,000			
,,	,, Shortworkings Reserve a/c	6,000			
2nd year	To Royalty a/c	8,000			
,,	,, Shortworkings Reserve a/c	2,000			
3rd year	To Royalty a/c	15,000	3rd year	By Shortworkings Reserve a/c	5,000
4th year	To Royalty a/c	16,000			

Shortworkings Reserve Account

		Rs.			Rs.
1st year (end)	To Balance c/d	6,000	1st year (end)	By P. & L. a/c	6,000
2nd year (end)	To Balance c/d	8,000	2nd year (Commencement)	By Balance b/d	6,000
			(end)	By P. & L. a/c	2,000
		8,000			8,000
3rd year (end)	To P. & L. a/c	5,000	3rd year (Commencement)	By Balance b/d	8,000
	,, Shortworkings a/c	3,000			
		8,000			8,000

नोट:—Shortworkings Reserve चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर दिखाया जावेगा।

न्यूनतम किराया खाता खोलना (Opening of Minimum Rent Account)—यह स्पष्ट हो चुका है कि यदि पट्टा लेने वाले (Lessee) और पट्टा देने वाले (Lessor) के बीच न्यूनतम किराया तय हुआ है और किसी वर्ष अधिकार-शुल्क की राशि न्यूनतम किराये से कम होती है तो पट्टा लेने वाले को न्यूनतम किराये की राशि भुगतान में देनी होगी। अतः ऐसे वर्षों में पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में लेखा 'न्यूनतम किराया खाता' खोलकर भी किया जा सकता है।

जैसा कि पहले बताया गया है, यदि अधिकार-शुल्क न्यूनतम किराये से कम है, तो न्यूनतम किराया देय होने पर पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में निम्न एक प्रविष्टि की जाती है:—

Royalty a/c Dr.
Shortworkings a/c Dr.
To Landlord
(Amount of royalty and shortworkings payable to Landlord.)

यदि 'न्यूनतम किराया खाता' (Minimum Rent Account) खोलना है तो उपरोक्त एक प्रविष्टि के स्थान पर पट्टा लेने वाले (Lessee) की पुस्तकों में निम्न दो प्रविष्टियां करनी होंगी:—

(i) Minimum Rent a/c ... Dr.
To Landlord
(Minimum Rent payable.)

(iii) Royalty a/c ... Dr.
Shortworkings a/c ... Dr.
To Minimum Rent a/c
(Minimum Rent transferred
to Royalty a/c and Shortworkings a/c.)

उपरोक्त प्रविष्टियों के अध्ययन से यह स्पष्ट है कि न्यूनतम किराया खाता एक मध्यस्थ का कार्य करता है। यह खाता न्यूनतम किराये की राशि से एक वार डेबिट कर दिया जाता है तथा उसी तारीख को दूसरी प्रविष्टि से क्रेडिट कर दिया जाता है। समान रकम से डेबिट तथा क्रेडिट किये जाने की प्रक्रिया से यह खाता प्रतिवर्ष वन्द हो जाता है तथा कोई शेष नहीं वतलाता है। यह खाता केवल उन्हीं वर्षों में खोला जाता है जिनमें अधिकार शुल्क राशि न्यूनतम किराये की राशि से कम हो अर्थात् लघुकार्य राशि वाले वर्षों में ही न्यूनतम किराया खाता खोला जाता है। यदि किसी वर्ष अधिकार शुल्क न्यूनतम किराये के वरावर है अथवा उससे अधिक है तो उन वर्ष में न्यूनतम किराया खाता नहीं खोला जाता है। ऐसी दशा में पुस्तकों में प्रविष्टियाँ ठीक उसी प्रकार की जावेंगी जैसा कि पिछले उदाहरणों में समझाया गया है।

पट्टा देने वाले (Lessor) की पुस्तकों में प्रविष्टियां उसी प्रकार से होंगी जैसे पहले समझाया जा चुका है।

Illustration 70

A colliery company took a lease of a coal-bearing area for a period of 20 years from 1st Jan., 1962, upon the terms of a royalty of 50 paise per ton on the output with a minimum rent of Rs. 8,000 per annum, with power to recoup shortworkings over the first four years of the lease.

You are required to show the Royalty, Shortworkings, Minimum Rent and Landlord's Accounts in the books of the colliery company, assuming the output for the first six years of the lease to be as follows :—

Year	1962	1963	1964	1965	1966	1967
Output (Tons)	6,000	8,000	16,000	20,000	18,000	15,000

एक कोयला कम्पनी ने 1 जनवरी, 1962 को एक कोयला-क्षेत्र का 20 वर्ष के लिए पट्टा लिया। अधिकार-शुल्क की दर 50 पैसा प्रति टन और न्यूनतम किराया 8,000 रु० वार्षिक था तथा लघुकार्य-राशि को पट्टे के प्रथम चार वर्षों में अपलिखित करने का अधिकार था।

पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में आप अधिकार-शुल्क खाता, लघुकार्य-राशि खाता, न्यूनतम किराया खाता और सम्पत्ति के स्वामी का खाता खोलिए, यह मानते हुये कि पट्टे के प्रथम 6 वर्षों में उत्पादन निम्न प्रकार रहा :—

वर्ष	1962	1963	1964	1965	1966	1967
उत्पादन (टनों में)	6,000	8,000	16,000	20,000	18,000	15,000

Solution : विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

Year	Minimum Rent	Actual Royalty	Shortworkings (—) or Surplus workings (+)	Shortworkings Recouped	Shortworkings Transferred to P.& L. a/c	Actual Payment
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
1962	8,000	3,000	—5,000	Nil	Nil	8,000
1963	8,000	4,000	—4,000	Nil	Nil	8,000
1964	8,000	8,000	Nil	Nil	Nil	8,000
1965	8,000	10,000	+2,000	2,000	7,000	8,000
1966	8,000	9,000	+1,000	Nil	Nil	9,000
1967	8,000	7,500	— 500	Nil	500	8,000

Books of Lessee :— Royalty Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1962 Dec. 31	To Minimum Rent a/c	3,000	1962 Dec. 31	By P. & L. a/c	3,000
1963 Dec. 31	To Minimum Rent a/c	4,000	1963 Dec. 31	By P. & L. a/c	4,000
1964 Dec. 31	To Landlord	8,000	1964 Dec. 31	By P. & L. a/c	8,000
1965 Dec. 31	To Landlord	10,000	1965 Dec. 31	By P. & L. a/c	10,000
1966 Dec. 31	To Landlord	9,000	1966 Dec. 31	By P. & L. a/c	9,000
1967 Dec. 31	To Minimum Rent a/c	7,500	1967 Dec. 31	By P. & L. a/c	7,500

Shortworkings Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1962 Dec. 31	To Minimum Rent a/c	5,000	1962 Dec. 31	By Balance c/d	5,000
1963 Jan. 1	To Balance b/d	5,000	1963 Dec. 31	By Balance c/d	9,000
Dec. 31	,, Minimum Rent a/c	4,000			
		9,000			9,000
1964 Jan. 1	To Balance b/d	9,000	1964 Dec. 31	By Balance e/d	9,000
1965 Jan. 1	To Balance b/d	9,000	1965 Dec. 31	By Landlord	2,000
			,,	,, P. & L. a/c	7,000
		9,000			9,000
1967 Dec. 31	To Minimum Rent a/c	500	1967 Dec. 31	By P. & L. a/c	500

Minimum Rent Account

		Rs.			Rs.
1962 Dec. 31	To Landlord	8,000	1962 Dec. 31	By Royalty a/c	3,000
			„ „	„ Shortworkings a/c	5,000
		8,000			8,000
1963 Dec. 31	To Landlord	8,000	1963 Dec. 31	By Royalty a/c	4,000
			„ „	„ Shortworkings a/c	4,000
		8,000			8,000
1967 Dec. 31	To Landlord	8,000	1967 Dec. 31	By Royalty a/c	7,500
			„ „	„ Shortworkings a/c	500
		8,000			8,000

Landlord's Account

		Rs.			Rs.
1962 Dec. 31	To Bank a/c	8,000	1962 Dec. 31	By Minimum Rent a/c	8,000
1963 Dec. 31	To Bank a/c	8,000	1963 Dec. 31	By Minimum Rent a/c	8,000
1964 Dec. 31	To Bank a/c	8,000	1964 Dec. 31	By Royalty a/c	8,000
1965 Dec. 31	To Shortworkings a/c	2,000	1965 Dec. 31	By Royalty a/c	10,000
„ „	„ Bank a/c	8,000			
		10,000			10,000
1966 Dec. 31	To Bank a/c	9,000	1966 Dec. 31	By Royalty a/c	9,000
1967 Dec. 31	To Bank a/c	8,000	1967 Dec. 31	By Minimum Rent a/c	8,000

समझौते में न्यूनतम किराये का होना लेकिन लघुकार्य-राशि को वसूल करने का अधिकार न होना—कभी-कभी पट्टे के समझौते में सम्पत्ति के स्वामी की सुरक्षा के लिए न्यूनतम किराया दिये जाने की शर्त तो लिख दी जाती है लेकिन पट्टा लेने वाले को लघुकार्य-राशि वसूल करने का अधिकार नहीं दिया जाता है। ऐसी दशा में जिस वर्ष लघुकार्य-राशि हो, उस वर्ष पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में इस प्रकार प्रविष्टियाँ की जा सकती हैं :—

प्रथम

Royalty a/c	Dr.	(न्यूनतम किराये की राशि से)
To Landlord		
(Minimum rent payable.)		

द्वितीय अथवा

Royalty a/c	Dr.	(अधिकार-शुल्क की राशि से)
Shortworkings a/c	Dr.	(लघुकार्य-राशि से)
To Landlord		(दोनों के योग अर्थात् न्यूनतम किराये की राशि से)
(Amount of royalty and unrecoupable shortworkings due.)		

तृतीय अथवा

Minimum Rent a/c	Dr.	(न्यूनतम किराये की राशि से)
To Landlord		
(Minimum Rent due.)		
Royalty a/c	Dr.	(अधिकार-शुल्क की राशि से)
Shortworkings a/c	Dr.	(लघुकार्य-राशि से)
To Minimum Rent a/c		(न्यूनतम किराये की राशि से)
(Minimum rent transferred to Royalty and Shortworkings a/cs.)		

यदि द्वितीय एवं तृतीय विधि अपनाई जाती है तो लघुकार्य-राशि खाते का शेप प्रति वर्ष लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जावेगा क्योंकि यह अशोधनीय (Irredeemable) है। अतः व्यवहार में प्रायः प्रथम विधि ही अपनाई जाती है।

पट्टा देने वाले की पुस्तकों में उस रकम से, जो पट्टादार (Lessee) से लेनी होती है, पट्टादार के खाते को डेबिट और रायल्टी प्राप्त खाते को क्रेडिट किया जावेगा। रायल्टी रिजर्व खाता नहीं खोला जावेगा।

Illustration 71.

A mine is taken on lease on 1st Jan., 1964 for a term of 10 years at a minimum rent of Rs. 5,000 p.a. merging into a royalty of Re. 1/– per ton. Payment to landlord in respect of the royalty due is made on the 7th day of the next year. The production for the first four years was as follows :—

Year	1964	1965	1966	1967
Output (Tons)	2,000	4,000	7,000	4,500

Open the Royalty Account and the Landlord's Account in the books of the Lessee.

एक जनवरी 1964 को एक खान 10 वर्ष के पट्टे पर ली जाती है जिसका न्यूनतम किराया 5,000 रु० वार्षिक है और अधिकार-शुल्क की दर 1 रु० प्रति टन है। खान के स्वामी को देय अधिकार-शुल्क का भुगतान अगले वर्ष के 7वें दिन किया जाता है।

प्रथम चार वर्षों का उत्पादन निम्न प्रकार रहा :—

वर्ष	1964	1965	1966	1967
उत्पादन (टनों में)	2,000	4,000	7,000	4,500

पट्टेदार की पुस्तकों में अधिकार-शुल्क खाता तथा स्वामी का खाता खोलिए।

Solution : Books of Lessee :—

Royalty Account

		Rs.			Rs.
1964 Dec. 31	To Landlord	5,000	1964 Dec. 31	By P. & L. a/c	5,000
1965 Dec. 31	To Landlord	5,000	1965 Dec. 31	By P. & L. a/c	5,000
1966 Dec. 31	To Landlord	7,000	1966 Dec. 31	By P. & L. a/c	7,000
1967 Dec. 31	To Landlord	5,000	1967 Dec. 31	By P. & L. a/c	5,000

Landlords' Account

		Rs.			Rs.
1964 Dec. 31	To Balance c/d	5,000	1964 Dec. 31	By Royalty a/c	5,000
1965 Jan. 7	To Bank a/c	5,000	1965 Jan. 1	By Balance b/d	5,000
Dec. 31	,, Balance c/d	5,000	Dec. 31	,, Royalty a/c	5,000
		10,000			10,000
1966 Jan. 7	To Bank a/c	5,000	1966 Jan. 1	By Balance b/d	5,000
Dec. 31	,, Balance c/d	7,000	Dec. 31	,, Royalty a/c	7,000
		12,000			12,000
1967 Jan. 7	To Bank a/c	7,000	1967 Jan. 1	By Balance b/d	7,000
Dec. 31	,, Balance c/d	5,000	Dec. 31	,, Royalty a/c	5,000
		12,000			12,000
1968 Jan. 7	To Bank a/c	5,000	1968 Jan. 1	By Balance b/d	5,000

नोट—चूँकि लघुकार्य-राशि को वसूल करने का अधिकार नहीं है, इसलिए विश्लेषण तालिका बनाना आवश्यक नहीं है।

उप-पट्टा (Sub-lease)

यदि पट्टेदार (Lessee) पट्टे की सम्पत्ति को पूर्ण रूप से या उसका एक हिस्सा किसी अन्य व्यक्ति को पट्टे पर देता है तो इसे 'उप-पट्टा' (Sub-lease or sub-letting) कहते हैं। उप-पट्टे पर सम्पत्ति को देने वाले के, ऐसी स्थिति में, दो रूप हो जाते हैं। वह मूल स्वामी के लिये पट्टेदार होगा लेकिन उप-पट्टेदार के लिए पट्टेदाता (Lessor) बन जावेगा। उसे सम्पत्ति के मूल स्वामी को पूरे उत्पादन पर अधिकार-शुल्क देना पड़ेगा जो उसने एवं उप-पट्टेदार (Sub-lessee) ने किया है। साथ ही वह उप-पट्टेदार से उसके द्वारा किये गये उत्पादन के सम्बन्ध में अधिकार-शुल्क भी प्राप्त करेगा।

उप-पट्टे सम्बन्धी व्यवहारों का लेखा—

प्रथम विधि—पट्टेदार सम्पत्ति के स्वामी को अधिकार-शुल्क देगा, उप-पट्टेदार (Sub-lessee) से अधिकार-शुल्क लेगा, अतः वह 'अधिकार-शुल्क देय खाता' (Royalty Payable a/c) और दूसरा 'अधिकार-शुल्क लेय खाता' (Royalty Receivable a/c) खोल सकता है। इन दोनों खातों का शेष 'लाभ-हानि खाते' में ले जाया जावेगा।

द्वितीय विधि—पट्टेदार (Lessee) अधिकार-शुल्क देने और लेने के सम्बन्ध में केवल एक ही 'अधिकार-शुल्क खाता' (Royalty a/c) खोल सकता है और इसके शेष को प्रति वर्ष लाभ-हानि खाते में ले जा सकता है।

अधिकार-शुल्क खातों के सम्बन्ध में उपरोक्त में से चाहे जो विधि अपनाई जावे लेकिन यह ध्यान रहे कि लघुकार्य राशि (Shortworkings) के सम्बन्ध में हमेशा दो खाते खोलने होंगे। एक खाता उस लघुकार्य राशि (Shortworkings) के लिए जो उसे सम्पत्ति के स्वामी से वसूल (recoup) करने का अधिकार है। इस खाते का नाम "Shortworkings Recoverable a/c" दिया जा सकता है। दूसरा खाता उस लघुकार्य-राशि के लिए खोलना पड़ेगा जो उसके उप-पट्टेदार (Sub-Lessee) द्वारा वसूल करने योग्य (Recoupable) है। इस खाते का नाम "Shortworkings with Sub-lessee" अथवा "Shortworkings Allowable" अथवा "Royalty Reserve" रखा जा सकता है।

सम्पत्ति के मूल स्वामी की पुस्तकों में और उप-पट्टेदार की पुस्तकों में लेखा ठीक उसी प्रकार किया जावेगा जैसा कि साधारणतया करते हैं।

Illustration 72.

Y Ltd. took a mine on lease from X Ltd. for a period of 20 years from 1st January, 1961, the terms being a royalty of 50 paise per ton of output subject to a minimum rent of Rs. 40,000 per year with the right to recoup shortworkings over the first 4 years of the lease.

Y Ltd. granted a sub-lease to Z Ltd. on 1st Jan., 1962 for a period of 10 years in respect of half of the mine at a royalty of Re. 1 per ton of output subject to a minimum rent of Rs. 20,000 p.a. with the right to recoup the short-workings during the first two years of the sub-lease.

The output was as under :—

Year	Y Ltd. (Tons)	Z Ltd. (Tons)
1961	20,000	—
1962	40,000	10,000
1963	60,000	26,000
1964	64,000	40,000

Give the necessary ledger accounts in the books of X Ltd., Y Ltd., and Z Ltd., presuming that their books are closed on 31st Dec. every year.

वाई लिमिटेड ने 1 जनवरी, 1961 से एक्स लिमिटेड से 20 वर्ष की अवधि के लिए एक खान पट्टे पर ली, जिसकी शर्तें यह थी कि 50 पैसे प्रति टन उत्पादन के हिसाब से अधिकार-शुल्क और 40,000 रु० वार्षिक न्यूनतम किराया तथा पट्टे के प्रथम चार वर्षों में लघुकार्य-राशि वसूल करने का अधिकार।

वाई लिमिटेड ने 1 जनवरी, 1962 को आधी खान का जेड लिमिटेड को 10 वर्ष के लिए उप-पट्टा दे दिया। अधिकार-शुल्क 1 रु० प्रति उत्पादित टन और न्यूनतम किराया 20,000 रु० वार्षिक तय हुआ तथा लघुकार्य-राशि को उप-पट्टे के प्रथम दो वर्षों में वसूल करने का अधिकार दिया गया।

उत्पादन निम्न प्रकार हुआ :—

वर्ष	वाई लिमिटेड (टनों में)	जेड लिमिटेड (टनों में)
1961	20,000	—
1962	40,000	10,000
1963	60,000	26,000
1964	64,000	40,000

यह मानते हुये कि पुस्तकें प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को वन्द होती हैं, एक्स लिमिटेड, वाई लिमिटेड और जेड लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिए।

Solution :

विश्लेषण तालिकाएं पूर्व वताई गई विधि से वनाई जा सकती हैं।

Ledger of X Ltd.

Royalty Receivable Account

		Rs.			Rs.
1961 Dec. 31	To P. & L. a/c	10,000	1961 Dec. 31	By Y Ltd.	10,000
1962 Dec. 31	To P. & L. a/c	25,000	1962 Dec. 31	By Y Ltd.	25,000
1963 Dec. 31	To P. & L. a/c	43,000	1963 Dec. 31	By Y Ltd.	43,000
1964 Dec. 31	To P. & L. a/c	52,000	1964 Dec. 31	By Y Ltd.	52,000

Y Ltd.

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	10,000	Dec. 31	By Cash a/c	40,000
" "	" Royalty Reserve a/c	30,000			
		40,000			40,000
1962			1962		
Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	25,000	Dec. 31	By Cash a/c	40,000
" "	" Royalty Reserve a/c	15,000			
		40,000			40,000
1963			1963		
Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	43,000	Dec. 31	By Royalty Reserve a/c	3,000
			" "	" Cash a/c	40,000
		43,000			43,000
1964			1964		
Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	52,000	Dec. 31	By Royalty Reserve a/c	12,000
			" "	" Cash a/c	40,000
		52,000			52,000

Royalty Reserve Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To Balance c/d	30,000	Dec. 31	By Y Ltd.	30,000
1962			1962		
Dec. 31	To Balance c/d	45,000	Jan. 1	By Balance b/d	30,000
			Dec. 31	" Y Ltd.	15,000
		45,000			45,000
1963			1963		
Dec. 31	To Y Ltd.	3,000	Jan. 1	By Balance b/d	45,000
" "	" Balance c/d	42,000			
		45,000			45,000
1964			1964		
Dec. 31	To Y Ltd.	12,000	Jan. 1	By Balance b/d	42,000
" "	P. & L. a/c	30,000			
		42,000			42,000

In the books of Y Ltd. (First Method)

Royalty Payable Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To X Ltd.	10,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	10,000
1962			1962		
Dec. 31	To X Ltd.	25,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	25,000
1963			1963		
Dec. 31	To X Ltd.	43,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	43,000
1964			1964		
Dec. 31	To X Ltd.	52,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	52,000

X Ltd.

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To Bank a/c	40,000	Dec. 31	By Royalty a/c	10,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	30,000
		40,000			40,000
1962			1962		
Dec. 31	To Bank a/c	40,000	Dec. 31	By Royalty a/c	25,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	15,000
		40,000			40,000
1963			1963		
Dec. 31	To Shortworkings a/c	3,000	Dec. 31	By Royalty a/c	43,000
,, ,,	,, Bank a/c	40,000			
		43,000			43,000
1964			1964		
Dec. 31	To Shortworkings a/c	12,000	Dec. 31	By Royalty a/c	52,000
,, ,,	,, Bank a/c	40,000			
		52,000			52,000

Shortworkings Account

(Recoverable)

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To X Ltd.	30,000	Dec. 31	By Balance c/d	30,000
1962			1962		
Jan. 1	To Balance b/d	30,000	Dec. 31	By Balance c/d	45,000
Dec. 31	To X Ltd.	15,000			
		45,000			45,000
1963			1963		
Jan. 1	To Balance b/d	45,000	Dec. 31	By X Ltd.	3,000
			,, ,,	By Balance c/d	42,000
		45,000			45,000
1964			1964		
Jan. 1	ToBa lance b/d	42,000	Dec. 31	By X Ltd.	12,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c	30,000
		42,000			42,000

Royalty Receivable Account

1962		Rs.	1962		Rs.
Dec. 31	To P. & L. a/c	10,000	Dec. 31	By Z Ltd.	10,000
1963			1963		
Dec. 31	To P. & L. a/c	26,000	Dec. 31	By Z Ltd.	26,000
1964			1964		
Dec. 31	To P. & L. a/c	40,000	Dec. 31	By Z Ltd.	40,000

Z Ltd.

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1962			1962		
Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	10,000	Dec. 31	By Cash a/c	20,000
,, ,,	,, Royalty Reserve a/c	10,000			
		20,000			20,000
1963			1963		
Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	26,000	Dec. 31	By Royalty Reserve a/c	6,000
			,, ,,	,, Cash a/c	20,000
		26,000			26,000
1964			1964		
Dec. 31	To Royalty Receivable a/c	40,000	Dec. 31	By Cash a/c	40,000
		40,000			40,000

Royalty Reserve Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1962			1962		
Dec. 31	To Balance c/d	10,000	Dec. 31	By Z Ltd.	10,000
1963			1963		
Dec. 31	To Z Ltd.	6,000	Jan. 1	By Balance b/d	10,000
,, ,,	,, P. & L. a/c	4,000			
		10,000			10,000

P. & L. Account
(for the year ending......)

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1961					
Dec. 31	To Royalty Payable a/c	10,000			
1962			1962		
Dec. 31	To Royalty Payable a/c	25,000	Dec. 31	By Royalty Receivable a/c	10,000
1963			1963		
Dec. 31	To Royalty Payable a/c	43,000	Dec. 31	By Royalty Receivable a/c	26,000
			,, ,,	,, Royalty Reserve a/c	4,000
1964			1964		
Dec. 31	To Royalty Payable a/c	52,000	Dec. 31	By Royalty Receivable a/c	
,, ,,	,, Shortworkings a/c	30,000			40,000

Second Method

दूसरी विधि में Royalty Receivable और Royalty Payable Accounts के स्थान पर केवल Royalty Account निम्न प्रकार से तैयार किया जावेगा—

Royalty Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To X Ltd.	10,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	10,000
1962			1962		
Dec. 31	To X Ltd.	25,000	Dec. 31	By Z Ltd.	10,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c	15,000
		25,000			25,000
1963			1963		
Dec. 31	To X Ltd.	43,000	Dec. 31	By Z Ltd.	26,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c	17,000
		43,000			43,000
1964			1964		
Dec. 31	To X Ltd.	52,000	Dec. 31	By Z Ltd.	40,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c	12,000
		52,000			52,000

दूसरी विधि में लाभ-हानि खाता इस प्रकार बनाया जावेगा ;—

P. & L. Account
(for the year ending......)

1961		Rs.			Rs.
Dec. 31	To Royalty a/c	10,000			
1962					
Dec. 31	To Royalty a/c	15,000			
1963			1963		
Dec. 31	To Royalty a/c	17,000	Dec. 31	By Royalty Reserve a/c	4,000
1964					
Dec. 31	To Royalty a/c	12,000			
,, ,,	To Shortworkings a/c	30,000			

नोट :—अन्य खातों में कोई परिवर्तन नहीं होगा।

Ledger of Z Ltd.

Royalty Account

1962		Rs.	1962		Rs.
Dec. 31	To Y Ltd.	10,000	Dec. 31	By P.& L. a/c	10,000
1963			1963		
Dec. 31	To Y Ltd.	26,000	Dec. 31	By P.& L. a/c	26,000
1964			1964		
Dec. 31	To Y Ltd.	40,000	Dec. 31	By P.& L. a/c	40,000

Y Ltd.

1962		Rs.	1962		Rs.
Dec. 31	To Bank a/c	20,000	Dec. 31	By Royalty a/c	10,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	10,000
		20,000			20,000
1963			1963		
Dec. 31	To Shortworkings a/c	6,000	Dec. 31	By Royalty a/c	26,000
,, ,,	,, Bank a/c	20,000			
		26,000			26,000
1964			1964		
Dec. 31	To Bank a/c	40,000	Dec. 31	By Royalty a/c	40,000

Shortworkings Account

1962		Rs.	1962		Rs.
Dec. 31	To Y Ltd.	10,000	Dec. 31	By Balance c/d	10,000
1963			1963		
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	Dec. 31	By Y Ltd.	6,000
			,, ,,	,, P.& L. a/c	4,000
		10,000			10,000

पेटेन्ट सम्बन्धी अधिकार–शुल्क (Patent Royalties)

जिस प्रकार खान का स्वामी अपनी सम्पत्ति को अधिकार शुल्क के वदले किसी दूसरे व्यक्ति को उत्पादन कार्य के लिए दे सकता है, उसी प्रकार पेटेन्ट का स्वामी भी पेटेन्ट को किसी दूसरे व्यक्ति को दे सकता है। इस पर यह अन्य व्यक्ति पेटेन्ट-वस्तु का निर्माण करके वेचने का अधिकारी हो जाता है। पेटेन्ट का स्वामी पेटेन्ट को वेच भी सकता है और एक निश्चित अवधि के लिए लाइसेंस पर भी दे सकता है। दूसरी परिस्थिति में वह पेटेन्ट-वस्तु के उत्पादन के आधार पर अधिकार-शुल्क (Royalty) प्राप्त करता है। पेटेन्ट के स्वामी को "Patentee" कहते हैं।

Illustration 73.

X, the owner of a patent for an improved plant, granted on 1st Jan., 1960 a licence for its use to Y Ltd. at a royalty of Re. one per plant manufactured subject to a dead rent of Rs. 4,000. Shortworkings were to be set off against excess workings during the following two years but no longer.

The number of plants manufactured in the first four years were 1,000, 2,000, 4,000 and 5,000 respectively.

Prepare the Royalty Account, Shortworkings Account and the Account of X in the books of Y Ltd.

एक्स, जो एक सुधरी हुई प्लान्ट के एकस्व का स्वामी है, ने 1 जनवरी, 1960 को 1 रु० प्रति उत्पादित प्लान्ट अधिकार शुल्क के आधार पर वाई लिमिटेड को इसके उपयोग का लाइसेंस दिया। स्थिर किराया 4,000 रु० तय हुआ। लघुकार्य-राशि को अगले दो वर्ष की अधिकार्य-राशि में से वसूल किया जा सकता है, लेकिन इसके बाद नहीं।

प्रथम चार वर्षों में उत्पादित प्लान्ट की संख्या क्रमशः 1,000, 2,000, 4,000 और 5,000 थी।

वाई लिमिटेड की पुस्तकों में अधिकार-शुल्क खाता, लघुकार्य-राशि खाता तथा एक्स का खाता खोलिए।

Solution :

Books of Y Ltd : **Royalty Account**

		Rs.			Rs.
1960			1960		
Dec. 31	To X	1,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,000
1961			1961		
Dec. 31	To X	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1962			1962		
Dec. 31	To X	4,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	4,000
1963			1963		
Dec. 31	To X	5,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	5,000

Shortworkings Account

		Rs.			Rs.
1960			1960		
Dec. 31	To X	3,000	Dec. 31	By Balance c/d	3,000
1961			1961		
Jan. 1	To Balance b/d	3,000	Dec. 31	By Balance c/d	5,000
Dec. 31	To X	2,000			
		5,000			5,000
1962			1962		
Jan. 1	To Balance b/d	5,000	Dec. 31	By P. & L. a/c (Unrecoupable)	3,000
			,, ,,	,, Balance c/d	2,000
		5,000			5,000
1963			1963		
Jan. 1	To Balance b/d	2,000	Dec. 31	By X	1,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Unrecoupable)	1,000
		2,000			2,000

X

		Rs.			Rs.
1960 Dec. 31	To Bank a/c	4,000	1960 Dec. 31	By Royalty a/c	1,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	3,000
		4,000			4,000
1961 Dec. 31	To Bank a/c	4,000	1961 Dec. 31	By Royalty a/c	2,000
			,, ,,	,, Shortworkings a/c	2,000
		4,000			4,000
1962 Dec. 31	To Bank a/c	4,000	1962 Dec. 31	By Royalty a/c	4,000
1963 Dec. 31	To Shortworkings a/c	1,000	1963 Dec. 31	By Royalty a/c	5,000
,, ,,	,, Bank a/c	4,000			
		5,000			5,000

Illustration 74.

B Ltd. is a manufacturing concern using a patented process under licence from A Ltd. The licence which was granted on 1st Jan., 1960, provided for a royalty to be payable to A Ltd. at 10 paise per article manufactured subject to a minimum annual payment of Rs. 2,000. Any amount by which the royalty calculated on the basis of articles manufactured might fall short of the minimum payment in any year was allowed to be carried forward and set off against royalties in excess of the minimum during the following two years but no longer.

Articles manufactured during the first 4 years :—

Year	1960	1961	1962	1963
Articles	4,000	8,000	20,000	30,000

When preparing its accounts for 1960, B Ltd. decided not to carry forward as an asset any royalties on shortworkings. In the accounts for 1961 Rs. 1,600 was carried forward and for 1962 Rs. 1,200.

Set out Royalty Account and Shortworkings Account in the books of B Ltd.

ब लिमिटेड एक निर्माता है जो अ लिमिटेड से प्राप्त लाइसेन्स के अन्तर्गत एक पेटेन्ट-प्रक्रिया को प्रयोग करते हैं। लाइसेन्स में, जोकि 1 जनवरी, 1960 को स्वीकार किया गया था, अ लिमिटेड को 10 पैसा प्रति निर्मित वस्तु के हिसाब से अधिकार-शुल्क देने की व्यवस्था थी और साथ में 2,000 रु० के न्यूनतम वार्षिक भुगतान की शर्त थी। निर्मित वस्तुओं के आधार पर निकाला गया किसी वर्ष का अधिकार-शुल्क जिस रकम से न्यूनतम भुगतान से कम पड़ती हो, उसे आगे ले जाकर केवल अगले दो वर्षों में न्यूनतम भुगतान पर अधिकार-शुल्क के आधिक्य में से वसूल करने की इजाजत थी, इसके बाद नहीं।

प्रथम चार वर्षों में निर्मित वस्तुएं निम्नलिखित थीं :—

वर्ष	1960	1961	....	....
वस्तुएं	4,000	8,000	20,000	30,000

1960 के लिए खाते तैयार करते समय ब लिमिटेड ने कोई भी लघुकार्य-राशि सम्पत्ति के रूप में न ले जाना तय किया और 1961 में 1,600 रु० तथा 1962 में 1,200 रु० ले जाना तय किया।

ब लिमिटेड की पुस्तकों में अधिकार-शुल्क खाता और लघुकार्य-राशि खाता दिखाइये।

Solution :

Books of B Ltd.

Royalty Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1960 Dec. 31	To A Ltd.	400	1960 Dec. 31	By P. & L. a/c	400
1961 Dec. 31	To A Ltd.	800	1961 Dec. 31	By P. & L. a/c	800
1962 Dec. 31	To A Ltd.	2,000	1962 Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1963 Dec. 31	To A Ltd.	3,000	1963 Dec. 31	By P. & L. a/c	3,000

Shortworkings Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1960 Dec. 31	To A Ltd.	1,600	1960 Dec. 31	By P. & L. a/c	1,600
1961 Dec. 31	To A Ltd.	1,200	1961 Dec. 31	By Balance c/d	1,600
,, ,,	,, P. & L. a/c	400			
		1,600			1,600
1962 Jan. 1	To Balance b/d	1,600	1962 Dec. 31	By P. & L. a/c	400
			,, ,,	,, Balance c/d	1,200
		1,600			1,600
1963 Jan. 1	To Balance b/d	1,200	1963 Dec. 31	By A Ltd.	1,000
			,, ,,	,, P. & L. a/c (Unrecoupable)	200
		1,200			1,200

कृत-स्वाम्य सम्बन्धी अधिकार-शुल्क (Copyright Royalties)

जब कोई लेखक पुस्तक या लेख आदि लिखता है तो उसे उसके सम्बन्ध में यह अधिकार प्राप्त होता है कि कोई अन्य व्यक्ति उस पुस्तक या लेख का कोई भी अंश अपने नाम से प्रकाशित नहीं करा सकेगा। लेखक के इस अधिकार को 'कृत-स्वाम्य' (Copyright) कहते हैं। लेखक अपने कृत स्वाम्य को किसी

प्रकाशक को बेच सकता है अथवा अधिकार शुल्क के बदले पुस्तक अथवा लेख आदि को प्रकाशित करने का अधिकार दे सकता है। दूसरी दशा में लेखक को प्रकाशक से पुस्तक अथवा लेख की बिकी हुई प्रतियों के आधार पर अधिकार-शुल्क मिलता है। कुल स्वाम्य के सम्बन्ध में लेखे उसी प्रकार किये जावेंगे जैसे खानों के सम्बन्ध में किये जाते हैं।

Illustration 75.

Professor Harikant wrote a book on 'Statistics' and gave the right of its publication to M/s Ramesh Book Depot, Jaipur at a royalty of 20% on the printed price of the books sold upto 31st March each year. The publishers submitted the account of the books sold as follows :—

	Books Printed	Specimen given	Waste	Closing Stock
31st March, 1965	1,250	80	25	345
,, ,, 1966	2,200	135	40	1,370
,, ,, 1967	—	45	10	115

The printed price of the book is Rs. 10. The amount of royalty is paid on 30th April following.

Open the necessary Ledger accounts in the books of M/s Ramesh Book Depot.

प्रोफेसर हरिकान्त ने 'सांख्यिकी' पर एक पुस्तक लिखी और इसके प्रकाशन का अधिकार सर्व श्री रमेश बुक डिपो, जयपुर को दे दिया। प्रत्येक वर्ष 31 मार्च तक बिकी हुई पुस्तकों के छपे-मूल्य का 20% अधिकार-शुल्क निर्धारित हुआ। प्रकाशक ने बिक्री का निम्न हिसाब प्रस्तुत किया :—

	पुस्तकें छपीं	नमूने बांटे गये	क्षतिग्रस्त हुई	अंतिम स्टॉक
31 मार्च, 1965	1,250	80	25	345
,, ,, 1966	2,200	135	40	1,370
,, ,, 1967	—	45	10	115

पुस्तक का मुद्रित मूल्य 10 रु० है। अधिकार-शुल्क की रकम प्रति वर्ष अगली 30 अप्रैल को चुकाई जाती है :

रमेश बुक डिपो की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिये।

Solution :

Statement showing the number of books sold

		31—3—1965	
Books printed during the year		1,250	
Less—			
Specimen	80		
Wastage	25		
Closing Stock	345	450	
Books sold		800	@ Rs. 10=Rs. 8,000 Sales

31—3—1966

Opening Stock		345
Add Books printed during the year		2,200
Less—		2,545
Specimen	135	
Wastage	40	
Closing Stock	1,370	1,545
Books sold		1,000 @ Rs. 10=Rs. 10,000 Sales

31—3—1967

Opening Stock		1,370
Add Books printed during the year		—
		1,370
Less—		
Specimen	45	
Wastage	10	
Closing Stock	115	170
Books sold		1,200 @ Rs. 10=Rs. 12,000 Sales

Books of M/s Ramesh Book Depot, Jaipur :

Royalty Account

		Rs.			Rs.
1965 Mar. 31	To Harikant	1,600	1965 Mar. 31	By P. & L. a/c	1,600
1966 Mar. 31	To Harikant	2,000	1966 Mar. 31	By P. & L. a/c	2,000
1967 Mar. 31	To Harikant	2,400	1967 Mar. 31	By P. & L. a/c	2,400

Harikant

		Rs.			Rs.
1965 Mar. 31	To Balance c/d	1,600	1965 Mar. 31	By Royalty a/c	1,600
1965 April 30	To Bank a/c	1,600	1965 April 1	By Balance b/d	1,600
1966 Mar. 31	To Balance c/d	2,000	1966 Mar. 31	,, Royalty a/c	2,000
		3,600			3,600
1966 April 30	To Bank a/c	2,000	1966 April 1	By Balance b/d	2,000
1967 Mar. 31	,, Balance c/d	2,400	1967 Mar. 31	,, Royalty a/c	2,400
		4,400			4,400
1967 April 30	To Bank a/c	2,400	1967 April 1	By Balance b/d	2,400

नोट—यह मान लिया गया है कि रमेश बुक डिपो की पुस्तकें 31 मार्च को बन्द होती हैं।

Illustration 76.

Swami Gyananand wrote a book or publication to Adarsh Prakashan Private Ltd 1961, on the following terms :—

A lump sum royalty of Rs. 5,000 was 1961 and in addition, a royalty of Rs. 2 per cop subject to a minimum of Rs. 3,000 for 1961, Rs for each subsequent year, the royalty being paid

The number of copies sold in 1961, 19 and 5,000 respectively.

Show the necessary Ledger Accounts recording the above transactions in the books of the publishers for the three years.

स्वामी ज्ञानानन्द ने 'योग' पर एक पुस्तक लिखी तथा इसके प्रकाशन का अधिकार 1 जनवरी, 1961 से आदर्श प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड को पाँच वर्षों के लिये निम्न शर्तों पर दे दिया :—

1 जनवरी, 1961 को लेखक को 5,000 रु० इक-मुश्त रायल्टी चुका दी गई तथा इसके अतिरिक्त हर वर्ष के लिये विक्रित प्रतियों पर 2 रु० प्रति पुस्तक की दर से रायल्टी चुकानी है, इस शर्त पर कि 1961 के लिये 3,000 रु०, 1962 के लिये 5,000 रु० तथा आगे वाले हर वर्ष के लिये 6,000 रु० न्यूनतम रायल्टी होगी, तथा इस रायल्टी का भुगतान आगे आने वाली 31 मार्च को करना होगा।

1961, 1962 तथा 1963 में विक्रित प्रतियों की संख्या क्रमशः 1,000, 2,000 और 5,000 थी।

उपर्युक्त व्यवहारों को लिखने के लिये प्रकाशक की पुस्तकों में तीन वर्षों के लिये आवश्यक खाते खोलिये।

Solution :

Books of Adarsh Prakashan Pvt. Ltd. :

Advance Royalty Account

		Rs.			Rs.
1961			1961		
Jan. 1	To Bank a/c	5,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,000
			,, ,,	,, Balance c/d	4,000
		5,000			5,000
1962			1962		
Jan. 1	To Balance b/d	4,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,000
			,,	,, Balance c/d	3,000
		4,000			4,000
1963			1963		
Jan. 1	To Balance b/d	3,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,000
			,, ,,	,, Balance c/d	2,000
		3,000			3,000

Royalty Account

		Rs.			Rs.
1961 Dec. 31	To Swami Gyananand	3,000	1961 Dec. 31	By P. & L. a/c	3,000
1962 Dec. 31	To Swami Gyananand	5,000	1962 Dec. 31	By P. & L. a/c	5,000
1963 Dec. 31	To Swami Gyananand	10,000	1963 Dec. 31	By P. & L. a/c	10,000

Swami Gyananand

		Rs.			Rs.
1961 Dec. 31	To Balance c/d	3,000	1961 Dec. 31	By Royalty a/c	3,000
1962 Mar. 31	To Bank a/c	3,000	1962 Jan. 1	By Balance b/d	3,000
Dec. 31	,, Balance c/d	5,000	Dec. 31	,, Royalty a/c	5,000
		8,000			8,000
1963 Mar. 31	To Bank a/c	5,000	1963 Jan. 1	By Balance b/d	5,000
Dec. 31	,, Balance c/d	10,000	Dec. 31	,, Royalty a/c	10,000
		15,000			15,000
1964 Mar. 31	To Bank a/c	10,000	1964 Jan. 1	By Balance b/d	10,000

नोट—रायल्टी के लिए 5,000 रु० की इक-मुश्त रकम समझौते के जीवन काल (5 वर्षों) में लाभ-हानि खाते को प्रति वर्ष बराबर-बराबर हस्तान्तरित की जावेगी।

QUESTIONS

1. Differentiate between :
   (a) Rent and Royalty;
   (b) Shortworkings and Royalty Reserve;
   (c) Mineral Rent and Minimum Rent.
   अन्तर बताइये :—
   (अ) किराया और अधिकार-शुल्क;
   (ब) लघुकार्य-राशि और अधिकार-शुल्क संचय;
   (स) खान किराया और न्यूनतम किराया;
2. Write short notes on :
   (a) Royalty; (b) Dead Rent; (c) Surface Rent; and
   (d) Recoupment of Shortworkings.
   संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखो :—
   (अ) अधिकार-शुल्क; (ब) स्थिर किराया; (स) सतह किराया; और
   (द) लघुकार्य-राशि की वसूली।

3. Give specimen journal entries in the books of the Landlord and the Lessee in connection with royalties.

अधिकार-शुल्क के सम्बन्ध में स्वामी और पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में की जाने वाली जर्नल प्रविष्टियों का नमूना दीजिए।

4. A mine was given on lease for a period of 7 years. The Output was as under :—

Year	1	2	3	4	5	6	7
Output (Tons)	400	500	560	800	1,020	1,300	1,360

The royalty was fixed at 25 paise per ton and the minimum rent was fixed at Rs. 200 per year. Shortworkings in any year can be recouped in the following year only.

Write up necessary ledger accounts in the books of landlord and the lessee.

एक खान सात वर्ष के लिए पट्टे पर दी गई थी। उत्पादन इस प्रकार हुआ :—

वर्ष	1	2	3	4	5	6	7
उत्पादन (टनों में)	400	500	560	800	1,020	1,300	1,360

अधिकार-शुल्क 25 पैसे प्रति टन और न्यूनतम किराया 200 रु० प्रति वर्ष तय हुआ। किसी वर्ष की लघुकार्य-राशि केवल उसके अगले वर्ष में ही वसूल की जा सकती है।

स्वामी और पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिए। [91]

Ans. : Unrecoupable shortworkings transferred to P. and L. a/c Rs. 100 in the 2nd year; Rs. 75 in the 3rd year; and Rs. 60 in the 4th year.

5. From January, 1, 1957, the Universal Colliery took a lease of a coal mine at a royalty of Re. 1/– per ton of coal raised, the dead rent being Rs. 6,000 per year with the right to recoup shortworkings out of subsequent surplus royalties within a period of five years. In the first five years the output of coal was as follows:—

Year	1957	1958	1959	1960	1961
Output (Tons)	2,800	5,500	7,500	8,500	9,500

All payments were made when due. Prepare Landlord's Account, Minimum Rent Account, Royalties Account and Shortworkings Account in the books of the Lessee.

1 जनवरी, 1957 से युनिवर्सल कोलीयरी ने कोयले की खान का 1 रु० प्रति टन कोयला अधिकार शुल्क पर पट्टा लिया। स्थिर किराया 6,000 रु० प्रति वर्ष था, साथ में लघुकार्य-राशि को 5

वर्ष के समय में अधिकार-शुल्क के आविक्य में से वसूल करने का अधिकार था। प्रथम पाँच वर्षों में कोयले का उत्पादन निम्नलिखित था :—

वर्ष	1957	1958	1959	1960	1961
उत्पादन (टनों में)	2,800	5,500	7,500	8,500	9,500

सब भुगतान देय होने पर कर दिये गये। पट्टा लेने वाले की पुस्तकों में स्वामी का खाता, न्यूनतम किराया खाता, अधिकार-शुल्क खाता और लघुकार्य-राशि खाता बनाइये। [92]

Ans. : Shortworkings recouped Rs. 1,500 in 1959 and Rs. 2,200 in 1960.

6. A company leased a colliery on 1st Jan., 1960, at a minimum rent of Rs. 18,000 merging into a royalty of 50 paise per ton with power to recoup shortworkings over the first three years of the lease. The output of the colliery for the first three years was 24,000, 38,000 and 42,000 tons respectively. You are required to open the Shortworkings Account, Royalty Account, Landlord's Account and Profit & Loss Account in the books of the company.

एक कम्पनी ने 1 जनवरी, 1960 को एक कोयले की खान पट्टे पर ली जिसका न्यूनतम किराया 18,000 रु० था और अधिकार-शुल्क 50 पैसे प्रति टन था, साथ में लघुकार्य-राशि को पट्टे के प्रथम तीन वर्षों में वसूल करने का अधिकार था। खान का उत्पादन प्रथम तीन वर्षों में क्रमशः 24,000 टन, 38,000 टन और 42,000 टन था। आपको कम्पनी की पुस्तकों में लघुकार्य-राशि खाता, अधिकार शुल्क खाता, स्वामी का खाता और लाभ-हानि खाता बनाना है। [93]

Ans. : Shortworkings not recouped Rs. 2,000.

7. A colliery company has taken a lease of a coal field on a minimum rent of Rs. 7,500, merging into a royalty of 25 paise per ton raised. Shortworkings of any year can be recouped out of the royalties of the next three years. The results of the working are :—

Year	1st	2nd	3rd	4th	5th
Output in tons	Nil	6,000	24,000	60,000	45,000

Show the Shortworkings a/c in the books of the company and the Royalty Reserve a/c in the books of the Landlord for the five years.

एक कोयला कम्पनी ने 7,500 रु० के न्यूनतम किराये पर एक कोयला भूमि का पट्टा लिया है जिसका अधिकार-शुल्क 25 पैसा प्रति उत्पादित टन है। किसी भी वर्ष की लघुकार्य-राशि अगले तीन वर्षों के अधिकार-शुल्क से वसूल की जा सकती है। उत्पादन कार्य का परिणाम इस प्रकार है :—

वर्ष	1	2	3	4	5
उत्पादन (टनों में)	शून्य	6,000	24,000	60,000	45,000

पाँच वर्षों के लिए कम्पनी की पुस्तकों में लघुकार्य-राशि खाता और स्वामी की पुस्तकों में अधिकार-शुल्क संचय खाता खोलिए। [94]

Ans. : Shortworkings recouped Rs. 7,500 in the 4th year and Rs. 3,750 in the 5th year. Unrecoupable shortworkings Rs. 2,250 transferred to P. & L. a/c in the 5th year.

8. X Ltd. held a lease of minerals from Y Ltd. for a period of 20 years from 1st January, 1963. Royalty was payable at 50 paise per ton merging in a minimum rent of Rs. 20,000 a year, payable half-yearly on 30th June and 31st December. They granted a sub-lease for 10 years from 1st July, 1963 to Z Ltd. of one-half of the area for a royalty of 75 paise per ton merging in a minimum rent of Rs. 15,000 a year, payable half-yearly on 30th June and 31st December. X Ltd. are entitled under the lease from Y Ltd. to recoup short-workings out of subsequent excess workings throughout the term of the lease, but the sub-lease only allows Z Ltd. to recoup shortworkings out of the surplus workings in any of the three half-years immediately following that in which the shortworkings accrued. Minerals were worked as under :—

	X Ltd.	Z Ltd.
Half-year ended 30th June, 1963	5,000 Tons	—
,, ,, ,, 31st Dec., 1963	5,000 ,,	5,000 Tons
,, ,, ,, 30th June, 1964	20,000 ,,	6,000 ,,
,, ,, ,, 31st Dec., 1964	30,000 ,,	6,000 ,,
,, ,, ,, 30th June, 1965	25,000 ,,	12,000 ,,

Show the Royalty Account and the Shortworkings Account under the lease from Y Ltd. and the sub-lease to Z Ltd. in the books of X Ltd. which are balanced yearly on 30th June.

एक्स लिमिटेड ने वाई लिमिटेड से 1 जनवरी, 1963 से 20 वर्ष के लिए खानों का पट्टा ले रखा है। अधिकार-शुल्क 50 पैसा प्रति टन देय है और न्यूनतम किराया 20,000 रु० सालाना है जो कि अर्ध-वार्षिक 30 जून और 31 दिसम्बर को देय है। उन्होंने 1 जुलाई, 1963 से जेड लिमिटेड को आधे क्षेत्र का उप-पट्टा स्वीकार किया जिसका अधिकार-शुल्क 75 पैसा प्रति टन और न्यूनतम किराया 15,000 रु० सालाना है और जो अर्ध वार्षिक, 30 जून और 31 दिसम्बर, को देय है। एक्स लिमिटेड को पट्टे की शर्तों के अनुसार वाई लिमिटेड से लघुकार्य-राशि को आगे की अधिकार्य-राशि से पट्टे की पूरी अवधि में वसूल करने का अधिकार है, लेकिन उप-पट्टा जेड लिमिटेड को, जिस छमाही में लघुकार्य-राशि होती है उसके केवल अगली तीन छमाही की अधिकार्य-राशि में से वसूल करने का अधिकार देता है। खानों का उत्पादन निम्नलिखित था :—

	एक्स लिमिटेड	जेड लिमिटेड
30 जून, 1963 को समाप्त छमाही	5,000 टन	—
31 दिसम्बर, 1963 ,, ,, ,,	5,000 ,,	5,000 टन
30 जून, 1964 ,, ,, ,,	20,000 ,,	6,000 ,,
31 दिसम्बर, 1964 ,, ,, ,,	30,000 ,,	6,000 ,,
30 जून, 1965 ,, ,, ,,	25,000 ,,	12,000 ,,

एक्स लिमिटेड की पुस्तकों में वाई लिमिटेड से लिए गए पट्टे के अन्तर्गत और जेड लिमिटेड को दिये गये उप-पट्टे के अन्तर्गत अधिकार-शुल्क खाता और लघुकार्य-राशि खाता दिखाइये। पुस्तकें प्रति वर्ष 30 जून को बन्द की जाती हैं। [95]

Ans. : Shortworkings recouped by X Ltd. Rs. 3,000 on 30th June 1964; Rs. 8,000 on 31st Dec., 1964; and Rs. 1,500 on 30th June, 1965.

Shortworkings recouped by Z Ltd. Rs. 1,500 on 30th June, 1965 and Rs. 2,250 unrecouped shortworkings transferred to P. & L. a/c.

9. The Bharat Mining Co. Ltd., commenced work on 1st January, 1960 upon land leased by them from the Industrial Development Ltd. The lease provided for the payment on 31st January, 1961 (and annually thereafter) of a royalty of one rupee per ton on mineral raised during the preceding calendar year.

The royalty was subject to a minimum rent of Rs. 2,000 per annum with the right to recoup shortworkings extending to the payment due on 31st Jan., 1964.

The tonnage raised has been as follows :—

1,000 tons in 1960; 1,750 tons in 1961; 2,300 tons in 1962; 2,800 tons in 1963; and 4,000 tons in 1964.

Show the relevant accounts in the books of the lessee in such a manner that the account for the lessor will contain full details of the amount paid to them.

भारत माइनिंग लिमिटेड ने इन्डस्ट्रियल डवलपमेंट लिमिटेड से पट्टे पर ली गई जमीन पर 1 जनवरी, 1960 से कार्य प्रारम्भ किया। पट्टे में यह व्यवस्था थी कि एक रुपया प्रति टन के हिसाब से अधिकार-शुल्क का भुगतान 31 जनवरी, 1961 को किया जावेगा और इसके पश्चात् प्रति वर्ष पिछले वर्ष निकाले गये माल पर अधिकार-शुल्क दिया जावेगा।

अधिकार-शुल्क 2,000 रु० वार्षिक न्यूनतम किराये की शर्त के साथ था और साथ ही लघुकार्य-राशि को 31 जनवरी, 1964 तक देय रकम में से वसूल करने का अधिकार था।

जितने टन माल निकाला गया, वह इस प्रकार था :—

1960 में 1,000 टन; 1961 में 1,750 टन; 1962 में 2,300 टन; 1963 में 2,800 टन; और 1964 में 4,000 टन।

पट्टा लेने वालों की पुस्तकों में सम्बन्धित खातों को इस प्रकार दिखाइये कि पट्टेदाता के खाते में उसको चुकाई गई रकम का पूरा विवरण हो। [96]

Ans. : Shortworkings recouped Rs. 300 in 1962 and Rs. 800 in 1963; Unrecoupable shortworkings transferred to P. & L. a/c in 1963 were Rs. 150.

10. Show your understanding of each of the following journal entries in the books of the Alpha Mining Co. Ltd. (whose mineral leases all provide for royalties at 25 paise per ton and half-yearly payments), by setting out suitable narrations :—

(एल्फा माइनिंग कम्पनी लिमिटेड की पुस्तकों में निम्नलिखित जर्नल प्रविष्टियों से आप क्या समझते है जिसके खान सम्बन्धी पट्टे में 25 पैसे प्रति टन और अर्ध-वार्षिक भुगतान की व्यवस्था है ? उपयुक्त विवरण भी दीजिए) :—

1961				Rs.	Rs.
(a)	December, 31	Shortworkings a/c	Dr.	500	
		Royalties a/c	Dr.	1,000	
		To A. Young			1,500
(b)	December, 31	Royalties a/c	Dr.	1,200	
		To C. Lal			1,200
(c)	December, 31	C. Lal	Dr.	600	
		To Shortworkings a/c			600
(d)	December, 31	Profit and Loss a/c	Dr.	3,900	
		To Shortworkings a/c			1,700
		To Royalties a/c			2,200

The company has two mines and there was a debit balance of Shortworkings Account on 1st January, 1961.

(कम्पनी के पास दो खानें थीं और 1 जनवरी, 1961 को लघुकार्य-राशि खाते में डेबिट शेष था।) [97]

11. A Ltd. work minerals under a lease from B. The lease is for a period of 20 years from 1st January, 1961, the terms being a royalty of 50 paise per ton of coal raised subject to a minimum rent of Rs. 40,000 per year with a right of recoupment of shortworkings over the first four years of the lease.

A Ltd. granted a sublease to C Ltd. for a period of 10 years on a royalty of 75 paise per ton subject to a minimum rent of Rs. 20,000 per annum with a right of recoupment of shortworkings during the two years following the shortworkings.

The minerals were worked for the first five years as follows :—

Year			by A Ltd.	by C Ltd.
1961	...	...	44,000 Tons	16,000 Tons
1962	...	...	46,400 „	21,600 „
1963	...	...	52,000 „	28,000 „
1964	...	...	56,000 „	36,000 „
1965	...	...	72,000 „	48,000 „

Give the necessary ledger accounts, under the lease and the sub lease, in the books of A Ltd. and C Ltd. to record these transactions, their books being closed on 31st December.

अ लिमिटेड व से पट्टे पर खान लेकर उन पर कार्य करती है। पट्टा 1 जनवरी, 1961 से 20 वर्ष के लिए है। शर्तों के अनुसार अधिकार शुल्क निकाले गये कोयले पर 50 पैसा प्रति टन है। न्यूनतम किराया 40,000 रु० प्रति वर्ष और साथ में लघुकार्य-राशि वसूल करने का अधिकार पट्टे के प्रथम चार वर्षों तक है।

अ लिमिटेड ने स लिमिटेड को 75 पैसा प्रति टन अधिकार शुल्क पर, 20,000 रु० वार्षिक न्यूनतम किराये की शर्त पर और साथ में लघुकार्य-राशि होने वाले वर्ष के अगले दो वर्षों में इसे वसूल करने के अधिकार पर 10 वर्ष के लिए उप-पट्टा दिया।

प्रथम पाँच वर्षों में खानों पर निम्नलिखित प्रकार से कार्य हुआ—

वर्ष		अ लिमिटेड द्वारा	स लिमिटेड द्वारा
1961	......	44,000 टन	16,000 टन
1962	......	46,400 ,,	21,600 ,,
1963	......	52,000 ,,	28,000 ,,
1964	......	56,000 ,,	36,000 ,,
1965	......	72,000 ,,	48,000 ,,

इन व्यवहारों का लेखा करने के लिये पट्टे और उप-पट्टे के अन्तर्गत अ लिमिटेड और स लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिये। उनकी पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द होती हैं। [98]

Answer :

Under the Lease:—Shortworkings recouped Rs. 6,000 in the year 1964 and unrecoupable shortworkings Rs. 10,000 transferred to P. & L. a/c in the year 1964.

Answer :

Under the sub-lease:—Shortworkings recouped in 1963 Rs. 1,000 and Rs. 3,800 in 1964; Unrecoupables hortworkings transferred to P. & L. a/c in 1963 were Rs. 7,000.

12. B leased a property from A at a royalty of 50 paise per ton subject to a dead rent of Rs. 2,000 per annum. Dead rent, paid in excess of actual royalties, is recoverable thereout during the next five years succeeding the year in respect of which such excess was paid. In the event of a strike, if the actual royalty was less than the dead rent, it was to discharge all rental obligations. The first year, in respect of which the dead rent was payable, expired on 31st December, 1960. The excess paid in respect of the first year was Rs. 2,000; of the second year, Rs. 1,450, and of the third year, Rs. 350. In the

fourth year, the actual royalties amounted to Rs. 2,750; in fifth year to Rs. 3,250; in the sixth year to Rs. 3,600; and in the seventh year (in consequence of strike) to Rs. 1,850 only. Pass the necessary Journal entries to record these transactions.

ब ने अ से 50 पैसे प्रति टन अधिकार शुल्क और 2,000 रु० वार्षिक स्थिर किराये की शर्त के साथ एक सम्पत्ति पट्टे पर ली। वास्तविक अधिकार शुल्क से अधिक चुकाया गया स्थिर किराया, जिस वर्ष यह अधिक चुकाया जावे उसके अगले पाँच वर्षों के अधिकार शुल्क में से वसूल करने योग्य था। हड़ताल की दशा में यदि वास्तविक अधिकार शुल्क स्थिर किराये से कम रहता है तो यह किराये सम्बन्धी समस्त दायित्व को पूरा कर देगा। प्रथम वर्ष जिसके सम्बन्ध में स्थिर किराया देय था, 31 दिसम्बर, 1960 को समाप्त हो गया। प्रथम वर्ष के लिए जो अधिक दिया गया वह 2,000 रु० था; दूसरे वर्ष के लिये 1,450 रु० और तीसरे वर्ष के लिए 350 रु० था। चौथे वर्ष में वास्तविक अधिकार शुल्क 2,750 रु०; पाँचवे वर्ष में 3,250 रु०; छटे वर्ष में 3,600 रु० और सातवें वर्ष (हड़ताल के फलस्वरूप) में केवल 1,850 रु० था।

इन व्यवहारों को लिखने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। [99]

Ans. : Shortworkings recouped Rs. 750 in 1963, Rs. 1,250 in 1964, Rs. 1,600 in 1965. Unrecoupable shortworkings transferred to P.&L. a/c in 1966, Rs. 200.

Hint : It has been assumed that the term of the lease has expired, and therefore, the balance of shortworkings a/c Rs. 200 on 31st December, 1966 has been transferred to P.&L. a/c as irrecoverable shortworkings.

13. A holds a lease of coal mines for 10 years, commencing from 1st Jan, 1961. According to the lease, he is to pay 75 paise per ton as royalty with a minimum rent of Rs. 15,000 per year. Shortworkings can, however, be recovered out of the royalty in excess of the minimum rent of the next two years only. In the year of a strike, the minimum rent is to be reduced to 60%. The output for the six years has been as under :—

Year	1	2	3	4	5	6
Output in Tons	10,000	12,000	28,000	25,000	50,000	15,000 (Strike)

Write up the necessary ledger accounts.

अ के पास 1 जनवरी, 1961 से प्रारम्भ होने वाला 10 वर्ष के लिये कोयले की खानों का पट्टा है। पट्टे के अनुसार उसे 75 पैसा प्रति टन अधिकार शुल्क 15,000 रु० वार्षिक न्यूनतम किराये के साथ देना है। लघुकार्य राशि को केवल अगले दो वर्ष के अधिकार शुल्क के न्यूनतम किराये पर आधिक्य से वसूल किया जा सकता है। हड़ताल के वर्ष में न्यूनतम किराया 60% तक कर दिया जावेगा। 6 वर्ष का उत्पादन इस प्रकार था—

वर्ष	1	2	3	4	5	6
उत्पादन (टनों में)	10,000	12,000	28,000	25,000	50,000	15,000 (हड़ताल)

आवश्यक खाते खोलिये

[100]

Ans. : Shortworkings recouped Rs. 6,000 in 3rd year and Rs. 3,750 in 4th year.

Unrecoupable shortworkings transferred to Profit and Loss Account Rs. 1,500 in 3rd year and Rs. 2,250 in 4th year.

14. A, the owner of a patent for an improved plough, granted on 1st Jan. 1960, a licence for its manufacture to B Ltd. at a royalty of one rupee per plough manufactured subject to a minimum rent of Rs. 5,000 per year for the first two years and Rs. 7,500 thereafter.

Any amount by which the royalty (calculated on the basis of ploughs manufactured) might fall short of the minimum rent in any year was allowed to be carried forward and set off against royalties in excess of the minimum rent during the next two years.

The number of ploughs manufactured during the first five years was 2,500; 6,000; 10,000; 12,500 and 9,000 respectively.

Prepare Royalties Account, Shortworkings Account and A's Account in the books of B Ltd.

उन्नत किस्म के हल के पेटेन्ट के स्वामी अ ने 1 जनवरी, 1960 को ब लिमिटेड को 1 रु० प्रति निर्मित हल के अधिकार शुल्क पर और प्रथम दो वर्षों में 5,000 रु० वार्षिक न्यूनतम किराया तथा उसके बाद 7,500 रु० न्यूनतम किराये की शर्त पर इसके निर्माण का लाइसेंस स्वीकार किया।

निर्मित हल के आधार पर निकाला गया अधिकार शुल्क यदि किसी वर्ष न्यूनतम किराये से कम रह जाता है तो कमी की रकम को आगे ले जाने की इजाजत थी और अगले दो वर्षों में अधिकार शुल्क के न्यूनतम किराये पर आधिक्य में से इसे वसूल किया जा सकता था।

प्रथम पाँच वर्षों में क्रमश: 2500, 6000, 10,000, 12,500, और 9,000 हलों का निर्माण हुआ। ब लिमिटेड की पुस्तकों में अधिकार–शुल्क खाता, लघुकार्य-राशि खाता और अ का खाता बनाइये।

[101]

Ans. : Shortworkings recouped Rs. 1,000 in 1961, Rs. 1,500 in 1962.

15. A Ltd. uses a patented process under licence from B Ltd., which provided for a royalty of 25 paise per article manufactured subject to a minimum annual payment of Rs. 2,000 for the first year, increasing by Rs. 1,000 every year till Rs. 10,000 per annum is reached. Shortworkings in any year was allowed to be carried forward and set off against royalties in excess of the minimum during the following two years but not longer.

The number of articles manufactured during the first five years was :

Year	1	2	3	4	5
Articles	4,000	8,500	18,500	22,000	31,500

When preparing the accounts for the first year A Ltd. decided not to carry forward as an asset any royalties on shortworkings. In the second year Rs. 1,000 were carried forward and in third year Rs. 875.

Set out the necessary accounts in the books of A Ltd.

अ लिमिटेड ब लिमिटेड से लाइसेन्स के अन्तर्गत एक पेटेन्ट वाली प्रक्रिया को प्रयोग करती है जिसमें 25 पैसा प्रति निर्मित वस्तु अधिकार शुल्क की व्यवस्था है और साथ में यह शर्त है कि प्रथम वर्ष 2,000 रु० वार्षिक न्यूनतम किराया चुकाया जावेगा जो प्रति वर्ष 1,000 रु० से बढ़ता जावेगा जब तक कि वह 10,000 रु० वार्षिक तक नहीं पहुंच जावे। किसी भी वर्ष की लघुकार्य राशि को आगे ले जाने की इजाजत थी और इसे अगले दो वर्ष के अधिकार शुल्क के न्यूनतम किराये पर आधिक्य में से वसूल किया जा सकता था।

प्रथम पाँच वर्षों में निर्मित वस्तुओं की संख्या इस प्रकार थी :—

वर्ष	1	2	3	4	5
वस्तुएं	4,000	8,500	18,500	22,000	31,500

प्रथम वर्ष के खाते तैयार करते समय अ लिमिटेड ने सम्पत्ति के रूप में कोई लघुकार्य राशि न ले जाना तय किया, दूसरे वर्ष 1,000 रु० और तीसरे वर्ष 875 रु० ले जाना तय किया।

अ लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिए। [102]

Ans. : Unrecoupable shortworkings transferred to P. & L. a/c Rs. 375 in the 4th year.

16. A Ltd. has sole right to publish the Academic Encylopaedia. They granted B Ltd. permission to publish it on a royalty of Re. 1/– per book published subject to a minimum payment of Rs. 4,000 p.a. The contract of permission also contained a proviso to the effect that excess of any royalties paid could be recouped out of the surplus during first five years only. The outturn of the book by B Ltd. was as follows :—

Year	1	2	3	4	5
No. of copies published	1,000	3,000	4,000	5,000	8,000

Prepare the necessary ledger accounts to record the above transactions in the books of A Ltd. and B Ltd.

अ लिमिटेड को शैक्षिक विश्वकोष प्रकाशित करने का एकाधिकार था। उन्होंने ब लिमिटेड को 1 रु० प्रति पुस्तक 4,000 रु० वार्षिक न्यूनतम भुगतान की शर्त के साथ इसे प्रकाशित करने की अनुमति दे दी। अनुमति के प्रसंविदे में यह भी व्यवस्था थी कि अधिकार शुल्क से अधिक चुकाई गई रकम को केवल प्रथम पाँच वर्ष तक आधिक्य में से वसूल किया जा सकता है।

व लिमिटेड द्वारा पुस्तक का उत्पादन इस प्रकार था :—

वर्ष	1	2	3	4	5
प्रकाशित पुस्तकों की संख्या	1,000	3,000	4,000	5,000	8,000

अ लिमिटेड और व लिमिटेड की पुस्तकों में उपरोक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिए आवश्यक खाते तैयार कीजिए। [103]

Ans. : Shortworkings recouped Rs. 1,000 in the fourth year and Rs. 3,000 in the fifth year.

17. From the following analysis, prepare Shortworkings Account and Lanlord's Account in respect of Madan Raj Coal Corporation holding a lease of coal mine at the rate of 75 P. as royalty per ton with dead rent of Rs. 1,500 per year, shortworkings recoupable in the next two years in each case. In strike year dead rent is to be reduced to two-third of the normal yearly figure.

(निम्नलिखित विश्लेषण से मदन राज कोल निगम की पुस्तकों में लघुकार्य राशि खाता एवं भूस्वामी का खाता तैयार कीजिए। उक्त निगम ने एक कोयला खान को 75 पैसे प्रति टन रायल्टी के हिसाब से पट्टे पर ले रखा है। न्यूनतम किराया 1,500 रु० वार्षिक तथा लघुकार्य राशियों को प्रत्येक परिस्थिति में आगामी दो वर्षों में वसूल करना तय हुआ। हड़ताल वाले वर्ष में न्यूनतम किराये को सामान्य वार्षिक अंक का दो-तिहाई तक घटा दिया जायेगा।)

Analysis of Results

Particulars	1961	1962	1963	1964	1965	1966
1. Coal output (in tons)	1,000	1,200	2,800	2,500	5,000	1,800
2. Royalty (in Rs.)	750	900	2,100	1,875	3,750	1,350
3. Shortworkings (in Rs.)	750	600	—	—	—	—
4. Shortworkings unrecoupable (in Rs.)	—	—	150	225	—	—
5. Payment to the Landlord (in Rs.)	1,500	1,500	1,500	1,500	3,750	1,350

[104]

18. On 1st January, 1963, Surrendar, patentee of a new type of razor, issued a licence to Co-operative Ltd. for the manufacture and sale of razors. On the same date Co-operative Ltd. issued to Associate Ltd. a sub-licence for the same purpose.

The licence issued by Surrendar provided for a royalty of Re. 1.00 per razor sold, subject to a minimum sum of Rs. 7,500 per annum, and the sub-licence issued by Co-operative Ltd. provided for a royalty of Rs. 1.50 per finished

razor manufactured, subject to a minimum of Rs. 3,000 per annum. Both the licence and the sub-licence provided that, should the royalty for any calendar year be less than the specified minimum, the deficiency could be recouped out of royalties, in excess of the minimum, for the two immediately following calendar years.

You are given the following information :—

Year	Sale by Co-operative Ltd.	Sale by Associate Ltd.	Stock held by Associate Ltd.
1963	4,520 Razors	1 220 Razors	340 Razors
1964	6,180 ,,	2,790 ,,	60 ,,
1965	5,675 ,,	1,940 ,,	400 ,,

All payments under both licence and sub-licence have been made annually on 31st December.

You are required to show the accounts in the books of Co-operative Ltd. to record these transactions for these years.

एक नये प्रकार के उस्तरों के एकस्व धारक सुरेन्दर ने 1 जनवरी, 1963 को उस्तरों का उत्पादन एवं विक्री करने हेतु कॉपरेटिव लिमिटेड को एक लाइसेन्स दिया। उसी दिन कॉपरेटिव लिमिटेड ने उक्त कार्य हेतु एसोशियेटेड लिमिटेड को उप लाइसेन्स दिया।

सुरेन्दर द्वारा दिये गये लाइसेन्स में यह व्यवस्था थी कि अधिकार-शुल्क की दर बेचे गये उस्तरों पर 1 रु० प्रति उस्तरे के हिसाब से होगी तथा न्यूनतम राशि 7,500 रु० वार्षिक होगी। कॉपरेटिव लिमिटेड द्वारा दिये गये उप पट्टे में यह व्यवस्था थी कि उत्पादित उस्तरों पर 1.50 रु० प्रति उस्तरे के हिसाब से अधिकार-शुल्क मिलेगा तथा न्यूनतम राशि 3,000 रु० वार्षिक होगी। लाइसेंस व उपलाइसेंस दोनों में यह व्यवस्था थी कि यदि किसी कलेंडर वर्ष में अधिकार-शुल्क की रकम निश्चित न्यूनतम से कम होगी तो कमी को आगामी दो वर्षों में वसूल किया जा सकेगा।

आपको निम्नलिखित सूचनायें दी जाती हैं :—

वर्ष	कॉपरेटिव लि० द्वारा विक्री	एसोशियेटेड लि० द्वारा विक्री	एसोशियेटेड लि० के पास स्टॉक
1963	4,520 उस्तरे	1,220 उस्तरे	340 उस्तरे
1964	6,180 उस्तरे	2,790 उस्तरे	60 उस्तरे
1965	5,675 उस्तरे	1,940 उस्तरे	400 उस्तरे

लाइसेंस व उपलाइसेंस, दोनों, के अन्तर्गत समस्त भुगतान वार्षिक, 31 दिसम्बर को, किए जाते हैं।

उक्त वर्षों के इन सौदों को दर्ज करने के लिए कॉपरेटिव लिमिटेड की पुस्तकों में आपको खाते तैयार करने है। [105]

Ans : Unrecoupable shortworkings transferred to P. & L. a/c Rs. 175 in 1965.

5

किराया-क्रय खाते
(Hire-Purchase Accounts)

"यदि माल, किराया-क्रय पद्धति के अन्तर्गत, खरीदा जाता है तो माल का स्वामित्व विक्रेता के पास उस समय तक रहता है जब तक कि क्रेता द्वारा अन्तिम भुगतान न कर दिया जावे। दोष की स्थिति में विक्रेता वैधानिक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए, अपने माल पर पुनः अधिकार कर सकता है।"[1]

किराया-क्रय समझौते (Hire Purchase Agreement) के अन्तर्गत माल की सुपुर्दगी किराये पर खरीदने वाले को सौदा होते ही दे दी जाती है तथा खरीदने वाला व्यक्ति माल के मूल्य का किस्तों में भुगतान करने का वादा करता है। किराया क्रय पद्धति में माल के पूर्ण भुगतान हो जाने तक, क्रेता के द्वारा किया गया किस्तों का भुगतान माल को प्रयोग में लेने का किराया समझा जाता है। किराया क्रय पद्धति की निम्नलिखित विशेषतायें होती हैं:—

1. समझौता होते ही या तुरन्त बाद किराया-क्रेता (Hire Purchaser) को माल की सुपुर्दगी मिल जाती है।

2. किराया-क्रेता समस्त मूल्य का सुपुर्दगी के समय भुगतान नहीं करता। प्रायः वह एक निश्चित रकम सौदा होते ही तुरन्त जमा (Immediate Deposit) करा देता है तथा मूल्य की बाकी रकम किस्तों में चुकाने का वादा करता है।

3. जब तक कि मूल्य का पूर्ण भुगतान न कर दिया जावे, किराया क्रेता द्वारा किया गया भुगतान माल को प्रयोग में लेने का किराया समझा जाता है तथा विक्रेता उसे लौटाने के लिए बाध्य नहीं है।

4. किसी किस्त के भुगतान में दोष करने पर अथवा समझौते की शर्तों का उल्लंघन करने पर विक्रेता को अपने माल को वापस लेने का अधिकार है।

5. मूल्य का पूर्ण भुगतान न हो जाने तक माल का स्वामित्व (Property or Ownership) किराया-क्रेता को हस्तान्तरित नहीं समझा जाता तथा विक्रेता ही माल का स्वामी समझा जाता है।

---

1. When goods are bought under the Hire Purchase System, the property in the goods or ownership remains with the seller until the last payment is made and in the event of default, he can again take possession of them subject to legal requirements. [Hire Purchase Act, 1938, England]

6. मूल्य का पूर्ण भुगतान हो जाने पर विक्रय पूर्ण (Complete) हो जाता है तथा समझौते में दी गई औपचारिकताओं को पूरा कर लेने पर माल का स्वामित्व (Property) विक्रेता से क्रेता को हस्तान्तरित हो जाता है।

7. इस प्रकार के समझौतों में किराया-क्रेता के पास माल को खरीदने का विकल्प (Option) रहता है; यदि वह चाहे तो किस्तों का पूर्ण भुगतान करके माल को खरीद ले अन्यथा बीच में कभी भी माल को लौटाकर समझौते को समाप्त कर दे। ऐसा होने पर उसके द्वारा किये गये भुगतान, माल को प्रयोग में लेने का, किराया समझ लिए जायेंगे तथा विक्रेता द्वारा उसको वापस नहीं किये जायेंगे। क्रेता को पूर्ण भुगतान करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता किन्तु जिस तिथि तक उसने माल को रखा है, उस तिथि तक देय होने वाली समस्त किस्तों के भुगतान के लिये किराया-क्रेता दायी होगा।

8. यदि किराया-क्रेता ने माल को गिरवी रख दिया है अथवा किसी अन्य व्यक्ति को बेच दिया है तो भी वह माल को खरीदने के लिए बाध्य नहीं है। (Helby v. Mathews, 1895)

उपर्युक्त मामले में किराया-क्रेता ने एक 'पियानो' किराया क्रय पद्धत्ति के अन्तर्गत खरीदा था। कुछ समय पश्चात् उसने उस पियानो को एक महाजन (Pawn-broker) के पास गिरवी रख दिया तथा विक्रेता को आगे किस्तों का भुगतान भी नहीं किया। निर्णय हुआ कि माल के स्वामी अर्थात् मूल विक्रेता को महाजन से 'पियानो' को वापस लेने का ही अधिकार है, किराया क्रेता को पियानो खरीदने के लिए बाध्य करने का अधिकार नहीं।

9. यदि माल किराया-क्रय पद्धति के अन्तर्गत खरीदा गया है तो किरायेदार की स्थिति में अर्थात् पूर्ण भुगतान न करने तक किराया-क्रेता तीसरे पक्ष को कोई स्वत्व (Title) प्रदान नहीं करता चाहे तीसरे पक्ष ने माल को सद्विश्वास में लिया हो।

10. यदि किराया-क्रेता के पास से अथवा किसी अन्य व्यक्ति के पास से माल पर पुनः अधिकार नहीं किया जा सकता तो विक्रेता को क्षति-पूर्ति मांगने का अधिकार है। क्षतिपूर्ति की यह रकम मूल्य का वह भाग हो सकती है जोकि विक्रेता को अभी तक भुगतान नहीं की गई है।

[Dominion Trust (Commercial) Ltd. v. Parkway Motors Ltd. 1955]

11. यदि किराया क्रेता चाहे तो मूल्य की किस्तों का देय तिथि से पहले ही पूर्ण भुगतान करके माल का स्वामित्व ग्रहण कर सकता है।

12. 'किराया-क्रय समझौता' एक निक्षेप के समझौते (Agreement of Bailment) की तरह समझा जाता है, अतः किराया-क्रेता का कर्तव्य है कि वह निक्षेपी (Bailee) के समस्त कर्तव्यों का पालन करे तथा माल को उचित चतुराई एवं सावधानी के साथ प्रयोग में ले तथा उसे अच्छी स्थिति में रखे।

13. किराया-क्रय समझौता हो जाने के बाद यदि किराया-क्रेता सुपुर्दगी लेने से मना करदे तो विक्रेता उससे समझौता भंग के लिए क्षति-पूर्ति की मांग कर सकता है, माल के किराये की नहीं।

किराया-क्रय समझौतों से लाभ (Advantages)—

'किराया-क्रय समझौते' आधुनिक व्यवसायिक सौदों का विकसित रूप है। इसके अन्तर्गत किराया-क्रेता को उधार की सुविधायें (Credit facilities) मिल जाती हैं तथा उसे थोड़ा सा भुगतान करने के

बाद ही माल को प्रयोग में लेने का अधिकार प्राप्त हो जाता है। माल के प्रयोग से उसें जो लाभ अर्जित होते हैं, वे लाभ प्राय: उसके द्वारा दिये जाने वाले ब्याज से अधिक होते हैं। फिर, किराया-क्रेता के पास माल को खरीदने या उसे वापस लौटाने का विकल्प भी रहता है; अतः अर्जित लाभ ब्याज से कम होने पर वह माल को वापस लौटा भी सकता है।

विक्रेता के दृष्टिकोण से भी किराया-क्रय समझौते बहुत लाभदायक हैं। इस प्रकार के सौदों में विक्रेता अधिक सुरक्षित रहता है क्योंकि क्रेता के दिवालिया हो जाने पर अथवा भुगतान में दोष (default) करने पर वह माल को पुन: अधिकार में ले सकता है। चूंकि माल के स्वामी को ही दुर्घटना से होने वाली हानि को सहना पड़ता है, अतः विक्रेता के लिए यह स्वाभाविक है कि वह अपने हितों की रक्षा के लिए माल का बीमा कराये। किराया-क्रय पद्धति में प्राय: बीमे की प्रीमियम का भुगतान किराया-क्रेता द्वारा किया जाता है। इस प्रकार माल के स्वामी अर्थात् विक्रेता की जोखिम को कम करने का खर्चा किराया-क्रेता वहन करता है।

किराया क्रय एवं उधार बिक्री में अन्तर (Credit Sale distinguished from Hire Purchase)—

किराया-क्रय समझौते एवं उधार विक्री समझौते में निम्नलिखित अन्तर हैं:—

(1) उधार विक्री समझौते के अन्तर्गत क्रेता द्वारा माल खरीद लिया जाता है तथा उसके पास माल को वापस लौटाकर समझौता भंग करने का विकल्प नहीं होता किन्तु किराया-क्रय समझौते में किराया-क्रेता के पास पूर्ण भुगतान करके माल को खरीदने अथवा बीच में ही माल को लौटाने व समझौता समाप्त करने का विकल्प रहता है।

(2) प्राय: उधार विक्री के अन्तर्गत माल का स्वामित्व सौदा होते ही तुरन्त क्रेता को हस्तान्तरित हो जाता है किन्तु किराया-क्रय समझौते में किराया-क्रेता सौदा होते ही माल का स्वामी नहीं बनता। पूर्ण भुगतान होने पर ही वह माल का स्वामी बनता है।

(3) किराया-क्रय समझौते के अन्तर्गत दोष करने पर विक्रेता को किराया-क्रेता से माल वापस लेने का अधिकार है किन्तु उधार विक्री के अन्तर्गत किस्तों के भुगतान में दोष (default) होने पर विक्रेता को क्रेता से माल वापस लेने का अधिकार नहीं है। माल की अदत्त किस्तों या अन्य क्षतियों की पूर्ति के लिए वह मुकदमा चला सकता है।

(4) तीसरे पक्षों से सम्बन्धित अधिकारों के अध्ययन करने पर उधार विक्री एवं किराया-क्रय समझौतों में अन्तर अधिक स्पष्ट हो जाता है। उधार विक्री के समझौते के अन्तर्गत खरीदे गये माल को यदि क्रेता तीसरे पक्ष को सुपुर्दगी दे देता है, बेच देता है, गिरवी रख देता है अथवा अपने अधिकार हस्तान्तरित कर देता है और तीसरा पक्ष इसे सद्विश्वास में ग्रहण करता है तो इसके अधिकार श्रेष्ठ हो सकते हैं। [Lee v. Butler, 1893] किराया क्रय समझौतों के अन्तर्गत लिये गये माल के सम्बन्ध में भी किराया क्रेता द्वारा उक्त कार्यवाही की जा सकती है, किन्तु किरायेदार की स्थिति में अर्थात् पूर्ण भुगतान न होने तक वह तीसरे पक्ष को श्रेष्ठ स्वत्वाधिकार नहीं दे सकता चाहे तीसरे पक्ष ने सद-विश्वास में माल को खरीदा हो या गिरवी रखा हो। दोष (Default) होने पर तीसरे पक्ष को माल लौटाना होगा। [Helby v. Mathews, 1895]

किराया क्रय मूल्य का विश्लेषण (Analysis of Hire Purchase Price)—

किराया क्रय मूल्य (Hire Purchase Price) रोकड़ी मूल्य (Cash Price)[1] से हमेशा ज्यादा होता है क्योंकि इसमें विक्रेता को मूल्य का भुगतान किस्तों में मिलता है तथा उसे माल की सुपुर्दगी देने के बाद जोखिम भी रहती है। अतः किराया क्रय मूल्य में निम्नलिखित तत्व सम्मिलित रहते हैं।

(i) रोकड़ी मूल्य; (ii) मूल्य की अदत्त किस्तों पर ब्याज; तथा (iii) किराया क्रेता द्वारा माल को लौटाने अथवा मूल्य की किस्तों के भुगतान में दोष (Default) करने पर जोखिम का भार।

चूंकि जोखिम के भार को मुद्रा में नापने में कठिनाई अनुभव होती है, अतः ब्याज की दर ही इतनी अधिक रखी जाती है कि जोखिम के भार का समायोजन किया जा सके। इसलिये लेखा सम्बन्धी प्रश्नों में किराया क्रय मूल्य (Hire Purchase Price) में दो तत्व ही सम्मिलित किए जाते हैं–रोकड़ी मूल्य तथा मूल्य की अदत्त राशि पर ब्याज।

किराया क्रय मूल्य में से इन दोनों तत्वों की राशियों को सरलता से ज्ञात किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, एक ट्रक का रोकड़ी मूल्य 37,500 रु० है तथा किराया क्रय समझौते के अनुसार क्रेता को इस प्रकार भुगतान करने हैं। सुपुर्दगी के समय तुरन्त जमा 5,000 रु० तथा 7,500 रु० की प्रत्येक किस्त के हिसाब से पाँच वार्षिक किस्तें। इस प्रकार किराया क्रय मूल्य 5,000 रु०+(7,500 × 5) रु० 42,500 रु० हुआ। पाँच वर्ष में भुगतान किया जाने वाला कुल ब्याज (42,500–37,500) रु० =5000 रु० होगा। अब प्रश्न यह उठता है कि 7,500 रु० की प्रत्येक किस्त में पूँजीगत मूल्य या रोकड़ी मूल्य का भुगतान कितना है तथा ब्याज का भुगतान कितना है। इसके लिए यह देखना होगा कि किराया क्रेता को ब्याज की दर ज्ञात है अथवा नहीं। यदि ब्याज की दर ज्ञात है तो विश्लेषण तालिका (Analytical Table) बनाकर प्रत्येक किस्त में सम्मिलित पूंजीगत मूल्य एवं ब्याज की राशि ज्ञात करली जावेगी। ब्याज अदत्त रोकड़ी मूल्य पर निकाला जाता है। अन्तिम देय किस्त पर ब्याज की गणना नहीं की जाती है, अन्तिम किस्त पर देय राशि तथा उस किस्त पर अदत्त रोकड़ी मूल्य के अन्तर को ही उस किस्त का ब्याज मान लेते हैं।

Illustration 77.

On 1st April, 1963, A Ltd. purchased from B Ltd. one motor truck under hire purchase system, Rs. 5,000 being paid on delivery and the balance in five annual instalments of Rs. 7,500 each payable on 31st March each year. The cash price of the motor truck is Rs. 37,500 and the seller charges interest at the rate of 5% per annum on yearly balances.

Find out the principal amount and interest included in each instalment.

1 अप्रैल, 1963 को अ लिमिटेड ने किराया क्रय पद्धति के अन्तर्गत ब लिमिटेड से एक मोटर ट्रक खरीदा जिसके बदले में 5,000 रु० तुरन्त जमा कराये जावेंगे तथा शेष रकम का 7,500 रु० वाली पांच वार्षिक किस्तों में भुगतान किया जायेगा। ये किस्तें प्रतिवर्ष 31 मार्च को देय होंगी। मोटर ट्रक

1. रोकड़ी मूल्य (Cash Price) से तात्पर्य ऐसे मूल्य से है जिसका भुगतान एक-मुश्त करने पर माल को खरीदा जा सके।

का रोकड़ी मूल्य 37,500 रु० है तथा विक्रेता वार्षिक बाकियों पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज वसूल करता है।

प्रत्येक किस्त में सम्मिलित पूंजीगत मूल्य व ब्याज की राशि ज्ञात कीजिये।

Solution :

प्रत्येक किस्त में सम्मिलित पूंजीगत मूल्य व ब्याज की राशि निम्न विश्लेषण तालिका के खाने नं० 4 व 5 से स्पष्ट हो जायेंगी—

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

भुगतान की किस्त (1)	रोकड़ी मूल्य का प्रारम्भिक शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	ब्याज (4)	रोकड़ी या पूंजीगत मूल्य (3–4) (5)	शेष रोकड़ी मूल्य जो देना है (2–5) (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
तुरन्त जमा[1]	37,500	5,000	—	5,000	32,500
प्रथम किस्त	32,500	7,500	1,625 ($\frac{5}{100} \times 32,500$)	5,875	26,625
द्वितीय किस्त	26,625	7,500	1,331 ($\frac{5}{100} \times 26,625$)	6,169	20,456
तृतीय किस्त	20,456	7,500	1,023	6,477	13,979
चतुर्थ किस्त	13,979	7,500	699	6,801	7,178
पंचम किस्त	7,178	7,500	322*	7,178	—
योग		42,500	5,000	37,500	

यदि ब्याज की दर नहीं दी हुई है तो पहले किराया-क्रय मूल्य में से रोकड़ी मूल्य घटाकर सम्पूर्ण अवधि का ब्याज ज्ञात कर लेते हैं। विभिन्न किस्तों में इस ब्याज का विभाजन विभिन्न किस्तों पर बकाया रहे अदत्त किराया-क्रय मूल्य के अनुपात में किया जाता है। इसे क्रमागत वृद्धि प्रणाली (Progression Method) कहा जाता है।

1. चूंकि तुरन्त जमा (Immediate Deposit) की राशि सौदा होने के दिन ही भुगतान कर दी जाती है, अतः उसका भुगतान पूंजीगत या रोकड़ी मूल्य का भुगतान ही समझा जाता है। उसमें कोई ब्याज सम्मिलित नहीं होता।

* 37 रु० का समायोजन किया गया है।

उदाहरण संख्या 77 में यदि ब्याज की दर न दी हुई होती तो, क्रमागत वृद्धि प्रणाली के अनुसार प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम व पूंजीगत मूल्य निम्न प्रकार निकाला जाता:—

भुगतान की किस्तें (1)	किस्त देय होने के समय बकाया किराया-क्रय मूल्य (2)	प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज (3)	प्रत्येक किस्त में सम्मिलित पूंजीगत मूल्य (4)
	रु०	रु० रु०	रु०
प्रथम	37,500	$\frac{37,500}{1,12,500} \times \frac{5,000}{1} = 1,667$	5,833 (7,500—1,667)
द्वितीय	30,000	$\frac{30,000}{1,12,500} \times \frac{5,000}{1} = 1,333$	6,167 (7,500—1,333)
तृतीय	22,500	$\frac{22,500}{1,12,500} \times \frac{5,000}{1} = 1,000$	6,500
चतुर्थ	15,000	$\frac{15,000}{1,12,500} \times \frac{5,000}{1} = 667$	6,833
पंचम	7,500	$\frac{7,500}{1,12.500} \times \frac{5,000}{1} = 333$	7,167
योग	11,2,500	5,000	32,500

कुल पूंजीगत मूल्य का भुगतान=32,500 रु०+5,000 रु० (तुरन्त जमा)=37,500 रु०

Illustration 78.

On 1st January, 1965, the Jaipur Transport Company purchased a truck from Bombay Transport Company on hire-purchase basis, the cash price being Rs. 31,000 and hire-purchase price Rs. 60,000. The purchase consideration is to be satisfied by payments of Rs. 20,000 at the end of the first year, Rs. 15,000 at the end of the second year, Rs. 10,000 at the end of the third year, Rs. 10,000 at the end of the fourth year and Rs. 5,000 at the end of the fifth year. Find out the amount of interest included in each instalment.

1 जनवरी 1965 को जयपुर ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने बम्बई ट्रांसपोर्ट कम्पनी से किराया क्रय पद्धति पर एक ट्रक खरीदा जिसका रोकड़ी मूल्य 31,000 रु० था और किराया क्रय मूल्य 60,000 रु० था। क्रय मूल्य का भुगतान प्रथम वर्ष के अन्त में 20,000 रु०, द्वितीय वर्ष के अन्त में 15,000 रु०, तृतीय वर्ष के अन्त में 10,000 रु०, चतुर्थ वर्ष के अन्त में 10,000 रु० और पंचम वर्ष के अन्त में 5,000 रु० में किया जाना है। प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज की राशि ज्ञात कीजिये।

Solution:

	रु०
किराया क्रय मूल्य	= 60,000
रोकड़ी मूल्य	= 31,000
सम्पूर्ण अवधि का कुल ब्याज	= 29,000

विभिन्न किस्तों में ब्याज का विभाजन

किस्त संख्या	अदत्त किराया क्रय मूल्य	अनुपात	किस्त में सम्मिलित ब्याज
	रु०		
प्रथम	60,000	$\frac{60}{145}=\frac{12}{29}$	$\frac{12}{29}\times\frac{29,000}{1}=12,000$ रु०
द्वितीय	40,000	$\frac{40}{145}=\frac{8}{29}$	$\frac{8}{29}\times\frac{29,000}{1}=8,000$ रु०
तृतीय	25,000	$\frac{25}{145}=\frac{5}{29}$	$\frac{5}{29}\times\frac{29,000}{1}=5,000$ रु०
चतुर्थ	15,000	$\frac{15}{145}=\frac{3}{29}$	$\frac{3}{29}\times\frac{29,000}{1}=3,000$ रु०
पंचम	5,000	$\frac{5}{145}=\frac{1}{29}$	$\frac{1}{29}\times\frac{29,000}{1}=1,000$ रु०
योग	1,45,000		

यदि ब्याज की दर नहीं दी हुई है, रोकड़ी मूल्य और किराया क्रय मूल्य दिया हुआ है तथा विभिन्न किस्तों पर देय धन राशि तथा आपसी भुगतान अवधि समान नहीं है, तो प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज की राशि गुणनफल विधि (Product method) के आधार पर ज्ञात की जावेगी। यह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जावेगा।

Illustration 79.

Ram purchases a machinery from Mohan on Hire-purchase basis, the cash price being Rs. 16,600 and Hire-purchase price Rs. 20,000. Rs. 8,000 are to be paid at the end of 3 months, Rs. 7,000 at the end of 8 months and Rs. 5,000 at the end of 18 months. Find out the amount of interest included in each instalment. Also find out the rate of interest per annum.

राम मोहन से किराया क्रय पद्धति पर एक मशीन खरीदता है। मशीन का रोकड़ी मूल्य 16,600 रु० है तथा किराया क्रय मूल्य 20,000 रु० है। 8000 रु० तीन माह के अन्त में दिये जाने हैं, 7,000 रु० 8 माह के अन्त में तथा 5,000 रु० 18 माह के अन्त में। प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज की राशि को ज्ञात कीजिये तथा वार्षिक ब्याज की दर भी ज्ञात कीजिये।

Solution:

कुल किराया क्रयमूल्य = 20,000 रु०
रोकड़ी मूल्य = 16,600 रु०

कुल अवधि का ब्याज = 3,400 रु०

विभिन्न किस्तों में सम्मिलित ब्याज की राशि

किस्त संख्या	किस्त पर अदत्त किराया क्रय मूल्य	अवधि	गुणनफल	अनुपात	ब्याज
	रु०	माह			रु०
प्रथम	20,000	3	60,000	$\frac{60}{170}=\frac{6}{17}$	$\frac{6}{17}\times\frac{3,400}{1}=1,200$
द्वितीय	12,000	5(8–3)	60,000	$\frac{60}{170}=\frac{6}{17}$	$\frac{6}{17}\times\frac{3,400}{1}=1,200$
तृतीय	5,000	10(18–8)	50,000	$\frac{50}{170}=\frac{5}{17}$	$\frac{5}{17}\times\frac{3,400}{1}=1,000$
			1,700,00		

ब्याज की दर $\frac{3,400\times12\times100}{1,70,000}=24\%$ वार्षिक

हिसाब-किताब सम्बन्धी लेखा (Accounting Entries) :—

अधिक मूल्य का माल (Goods of considerable value)

किराया क्रेता की बहियाँ—

किराया क्रय पद्धति में माल को दो भागों में बाँटा गया है, (i) कम मूल्य का माल और अधिक मूल्य का माल। कम मूल्य के माल से अभिप्राय पंखे, सीने की मशीन आदि से है जो प्रायः उपभोक्ता वर्ग द्वारा ख़रीदी जाती है। अधिक मूल्य के माल से अभिप्राय मशीन, प्लान्ट, वैगन आदि से है जिनका उपयोग उत्पादन कार्यों में होता है।

किराया क्रेता की पुस्तकों में अधिक मूल्य के माल के लेखा करने की दो विधियां हैं। प्रथम विधि* के अनुसार किराया-क्रय का सौदा एक साधारण उधार क्रय का सौदा माना जाता है और समस्त लेखे इस प्रकार किये जाते हैं, जैसे यह साधारण उधार का सौदा हो। सम्पत्ति के खरीदने पर सम्पत्ति को रोकड़ी मूल्य से (किराया क्रय मूल्य से नहीं) डेबिट कर दिया जाता है तथा विक्रेता के खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। ब्याज देय होने पर 'ब्याज खाते' को डेबिट कर दिया जाता है तथा विक्रेता के खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। किस्तों का भुगतान करने पर विक्रेता के खाते को डेबिट कर दिया जाता है तथा 'रोकड़ खाते' को क्रेडिट कर दिया जाता है। इस प्रकार समस्त सौदों का लेखा इस प्रकार किया जाता है, जैसे यह उधार खरीद का सौदा हो। अन्तर केवल चिट्ठे में निरूपण के

* द्वितीय विधि को सम्पत्ति अर्जित विधि (Asset Accrual Method) कहते हैं। इसका वर्णन आगे किया गया है।

समय पाया जाता है। उधार पर खरीदी गई सम्पत्ति को चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष पर उसके क्रय मूल्य में से ह्रास की राशि को घटाकर दिखलाया जाता है। विक्रेता को देय राशि दायित्व पक्ष पर दिखलाई जाती है, परन्तु किराया क्रय के सौदों में सम्पत्ति को चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष पर उसके रोकड़ी मूल्य में से मूल्य ह्रास तथा विक्रेता को देय राशि घटाकर बतलाते हैं। जर्नल प्रविष्टियां निम्नलिखित होती हैं।

सुपुर्दगी लेने पर	Asset a/c... Dr.	(रोकड़ी मूल्य से)
	To Hire Vendor's a/c	(रोकड़ी मूल्य से)
	(Asset purchased on hire-purchase.)	
तुरन्त जमा राशि भुगतान करने पर :	Hire Vendor's a/c...Dr.	(तुरन्त जमा की राशि से)
	To Cash or Bank a/c	
	(Immediate deposit paid.)	
किस्त के देय होने पर :	Interest a/c...Dr.	(किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम से)
	To Hire Vendor's a/c	
	(Interest due.)	
किस्त का भुगतान करने पर	Hire Vendor's a/c...Dr.	(किस्त की पूरी रकम से)
	To Cash or Ban ka/c	
	(Instalment paid.)	
ह्रास का प्रावधान करने पर	Depreciation a/c...Dr.	(ह्रास की रकम से)
	To Asset a/c	
	(Depreciation charged.)	
पुस्तकें बन्द करते समय	Profit and Loss a/c...Dr.	
	To Interest a/c	(ब्याज खाते के शेष से)
	To Depreciation a/c	(ह्रास खाते के शेष से)
	(Balances transferred.)	

Illustration 80.

On 1st January, 1965, the Rajasthan Transport Company purchased motor lorries from Delhi Motors Ltd. on hire-purchase basis, the cash price being Rs. 55,850. Rs. 15,000 was paid on the signing of the contract and the balance in three annual instalments of Rs. 15,000 each on 31st December each year. Interest is charged at 5 per cent per annum. Depreciation was written off at the rate of 10 per cent per annum on the reducing instalment system.

Enter the above transactions in the books of Rajasthan Transport Company, whose accounting year ends on 31st December each year. How the items would appear in the Balance Sheet on 31st December, 1965.

1 जनवरी, 1965 को राजस्थान ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने किराया-क्रय के आधार पर देहली मोटर्स लिमिटेड से मोटर लारियाँ खरीदीं जिनका रोकड़ी मूल्य 55,850 रु० है। सौदा होते ही 15,000 रु० भुगतान किये गये तथा शेष राशि का भुगतान, 15,000 रु० वाली तीन वार्षिक किस्तों में प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को किया जावेगा। ब्याज 5 प्रतिशत वार्षिक दर पर लगाया जाता है। क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार सम्पत्ति पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से मूल्य ह्रास अपलिखित किया गया।

उपरोक्त सौदों को राजस्थान ट्रांसपोर्ट कम्पनी की पुस्तकों में दर्ज कीजिए जिनका लेखा-वर्ष 31 दिसम्वर को समाप्त होता है। 31 दिसम्वर, 1965 को चिट्ठे में मदें किस प्रकार दिखलाई जायेंगी।

Solution :

मोटर-लारियों का किराया-क्रय मूल्य 60,000 रु० है तथा रोकड़ी मूल्य 55,850 रु० है। अतः भुगतान की अवधि का कुल ब्याज 4,150 रु० है। प्रत्येक किस्त में कितना ब्याज सम्मिलित है, इसके बारे 'में किराया-क्रय मूल्य का विश्लेपण' शीर्षक के अन्तर्गत वतलाया जा चुका है। हमें सबसे पहले विश्लेपण तालिका वना लेनी चाहिये, जो निम्न प्रकार होगी :—

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

भुगतान की किस्तें (1)	रोकड़ी मूल्य का प्रारम्भिक शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	ब्याज (4)	रोकड़ी या पूंजीगत मूल्य (3 – 4) (5)	शेष रोकडी मूल्य जो देना है (2 – 5) (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
तुरन्त जमा	55,850	15,000	—	15,000	40,850
प्रथम किस्त	40,850	15,000	2,043	12,957	27,893
द्वितीय किस्त	27,893	15,000	1,395	13,605	14,288
तृतीय किस्त	14,288	15.000	712*	14,288	—
योग		60,000	4,150	55,850	

*2 रु० का समायोजन कर दिया गया है।

Journal of Rajasthan Transport Company

1965			Rs.	P.	Rs.	P.
Jan. 1	Motor Lorries a/c Dr.		55,850	—		
	To Delhi Motors Ltd.				55,850	—
	(Motor lorries purchased on hire-purchase.)					
„ „	Delhi Motors Ltd. Dr.		15,000	—		
	To Bank a/c				15,000	—
	(Immediate deposit paid.)					
Dec. 31	Interest a/c Dr.		2,043	—		
	To Delhi Motors Ltd.				2,043	—
	(Interest due.)					
„ „	Delhi Motors Ltd. Dr.		15,000	—		
	To Bank a/c				15,000	—
	(Instalment paid.)					

Journal Contd...

				Rs.	P.	Rs.	P.
1965 Dec. 31	Depreciation a/c	Dr.		5,585	—		
	To Motor Lorries a/c					5,585	—
	(Depreciation charged.)						
" "	Profit and Loss a/c	Dr.		7,628	—		
	To Interest a/c					2,043	—
	To Depreciation a/c					5,585	—
	(Balances transferred.)						
1966 Dec. 31	Interest a/c	Dr.		1,395	—		
	To Delhi Motors Ltd.					1,395	—
	(Interest due.)						
" "	Delhi Motors Ltd.	Dr.		15,000	—		
	To Bank a/c					15,000	—
	(Instalment paid.)						
" "	Depreciation a/c	Dr.		5,027	—		
	To Motor Lorries a/c					5,027	—
	(Depreciation charged.)						
" "	Profit & Loss a/c	Dr.		6,422	—		
	To Interest a/c					1,395	—
	To Depreciation a/c					5,027	—
	(Balances transferred.)						
1967 Dec. 31	Interest a/c	Dr.		712	—		
	To Delhi Motors Ltd.					712	—
	(Interest due.)						
" "	Delhi Motors Ltd.	Dr.		15,000	—		
	To Bank a/c					15,000	—
	(Final Instalment paid.)						
" "	Depreciation a/c	Dr.		4,524	—		
	To Motor Lorries a/c					4,524	—
	(Depreciation charged.)						
" "	Profit and Loss a/c	Dr.		5,236	—		
	To Interest a/c					712	—
	To Depreciation a/c					4,524	—
	(Balances transferred.)						

Ledger Accounts : **Books of Rajasthan Transport Company**

Motor Lorries Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965				1965			
Jan. 1	To Delhi Motors Ltd.	55,850	—	Dec. 31	By Dep. a/c (10% on Rs. 55,850)	5,585	—
				„ „	By Balance c/d	50,265	—
		55,850	—			55,850	—
1966				1966			
Jan. 1	To Balance b/d	50,265	—	Dec. 31	By Dep. a/c (10% on Rs. 50,265)	5,027	—
				„ „	By Balance c/d	45,238	—
		50,265	—			50,265	—
1967				1967			
Jan. 1	To Balance b/d	45,238	—	Dec. 31	By Dep. a/c (10% on Rs. 45,238)	4,524	—
				„ „	By Balance c/d	40,714	—
		45,238	—			45,238	—

Delhi Motors Ltd.

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965				1965			
Jan. 1	To Bank a/c	15,000	—	Jan. 1	By Motor Lorries a/c	55,850	—
Dec. 31	To Bank a/c	15,000	—	Dec. 31	By Interest a/c	2,043	—
„ „	To Balance c/d	27,893	—				
		57 893	—			57,893	—
1966				1966			
Dec. 31	To Bank a/c	15,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	27,893	—
„ „	To Balance c/d	14,288	—	Dec. 31	By Interest a/c	1,395	—
		29,288	—			29,288	—
1967				1967			
Dec. 31	To Bank a/c	15,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	14,288	—
				Dec. 31	By Interest a/c	712	—
		15,000	—			15,000	—

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
31–12–65	To Delhi Motors Ltd.	2,043	–	31–12–65	By P. & L. a/c	2,043	–
31–12–66	To Delhi Motors Ltd.	1,395	–	31–12–66	By P. & L. a/c	1,395	–
31–12–67	To Delhi Motors Ltd.	712	–	31–12–66	By P. & L. a/c	712	–

Depreciation Account

1965		Rs.	1965		Rs.
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	5,585	Dec. 31	By P. & L. a/c	5,585
1966			1966		
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	5,027	Dec. 31	By P. & L. a/c	5,027
1967			1967		
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	4,524	Dec. 31	By P. & L. a/c	4,524

Balance Sheet as on 31st Dec. 1965...

Liabilities	Amount	Assets		Amount
	Rs.			Rs.
		Motor Lorries on hire-purchase at cost price	Rs. 55,850	
		Less Dep. for the year	5,585	
			50,265	
		Less amount due to vendor	27,893	22,372

विक्रेता की बहियां (Hire-Vendor's books) :—किराया-क्रय बिक्रियों को विक्रेता की पुस्तकों में दर्ज करने की जो प्रचलित विधि पाई जाती है, उसे विक्रय पद्धति (Sales method) कह सकते हैं। इस पद्धति के अनुसार किराया-क्रय विक्री का सौदा एक नियमित विक्री की तरह माना जाता है। इसके अन्तर्गत निम्नप्रकार से प्रविष्टियां होती हैं :—

सुपुर्दगी देने पर : Hire Purchaser.... Dr. (रोकड़ी मूल्य से)
To Hire-purchase Sales a/c
(Goods sold on hire-purchase.)

तुरन्त जमा की राशि प्राप्त होने पर : Cash a/c...... Dr. (तुरन्त जमा की राशि से)
To Hire Purchaser
(Immediate deposit received.)

किस्त के देय होने पर : Hire Purchaser...... Dr. (अदत्त रोकड़ी मूल्य पर ब्याज की रकम से)
To Interest a/c
(Interest charged.)

किस्त की रकम प्राप्त होने पर : Cash a/c......Dr. (किस्त की पूरी रकम से)
To Hire Purchaser
(Instalment received.)

पुस्तकें बन्द करने के समय पर पद : (i) Hire Purchase Sales a/c Dr. (बिक्री के वर्ष के अन्त में ही)
To Trading a/c
(Balance transferred.)

(ii) Interest a/c... Dr. (प्रत्येक वर्ष के अन्त में)
To P. & L. a/c
(Interest transferred.)

Illustration 81

Enter the transactions given in illustration No. 80 in the books of Delhi Motors Ltd. whose accounting year ends on 31st December. How the items would appear in the balance sheet on 31st December, 1965.

उदाहरण संख्या 80 में दिये हुये सौदों को देहली मोटर्स लिमिटेड की पुस्तकों में दर्ज कीजिए जिसका लेखा वर्ष 31 दिसम्बर को समाप्त होता है। 31 दिसम्बर, 1965 को चिट्ठे में मदों को किस प्रकार दिखायेंगे ?

Solution.

उदाहरण संख्या 80 की विश्लेषण तालिका यहां पर भी काम आजायेगी।

Journal of Delhi Motors Ltd.

1965			Rs.	P.	Rs.	P.
Jan. 1	Rajasthan Transport Company Dr. To Hire-purchase Sales a/c (Goods sold on hire-purchase.)		55,850	—	55,850	—
Jan. 1	Cash a/c Dr. To Rajasthan Transport Company (Immediate deposit received.)		15,000	—	15,000	—
Dec. 31	Rajasthan Transport Company Dr. To Interest a/c (Interest due.)		2,043	—	2,043	—
,, ,,	Cash a/c Dr. To Rajasthan Transport Company (Instalment received.)		15,000	—	15,000	—
,, ,,	Hire-purchase Sales a/c Dr. To Trading a/c (Balance transferred.)		55,850	—	55,850	—
,, ,,	Interest a/c Dr. To Profit and Loss a/c (Balance transferred.)		2,043	—	2,043	—

Journal Contd...

			Rs.	P.	Rs.	P.
1966 Dec. 31	Rajasthan Transport Company To Interest a/c (Interest due.)	Dr.	1,395	—	1,395	—
" "	Cash a/c To Rajasthan Transport Company (Instalment received.)	Dr.	15,000	—	15,000	—
" "	Interest a/c To Profit & Loss a/c (Balance transferred.)	Dr.	1,395	—	1,395	—
1967 Dec. 31	Rajasthan Transport Company To Interest a/c (Interest due.)	Dr.	712	—	712	—
" "	Cash a/c To Rajasthan Transport Company (Final instalment received.)	Dr.	15,000	—	15,000	—
" "	Interest a/c To Profit & Loss a/c (Balance transferred.)	Dr.	712	—	712	—

Ledger of Delhi Motors Ltd.

Rajasthan Transport Company (Hire-purchaser)

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Jan. 1	To Hire-purchase Sales a/c	55,850	—	1965 Jan. 1	By Cash a/c	15,000	—
Dec. 31	To Interest a/c	2,043	—	Dec. 31	By Cash a/c	15,000	—
				" "	By Balance c/d	27,893	—
		57,893	—			57,893	—
1966 Jan. 1	To Balance b/d	27,893	—	1966 Dec. 31	By Cash a/c	15,000	—
Dec. 31	To Interest a/c	1,395	—	" "	By Balance c/d	14,288	—
		29,288	—			29,288	—
1967 Jan. 1	To Balance b/d	14,288	—	1967 Dec. 31	By Cash a/c	15 000	—
Dec. 31	To Interest a/c	712	—				
		15,000	—			15,000	—

Hire purchase Sales Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Dec. 31	To Trading a/c	55,850	—	1965 Jan. 1	By Rajasthan Transport Co.	55,850	—

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Dec. 31	To P. & L. a/c	2,043	–	1965 Dec. 31	By Rajasthan Transport Co.	2,043	–
1966 Dec. 31	To P. & L. a/c	1,395	–	1966 Dec. 31	By Rajasthan Transport Co.	1,395	–
1967 Dec. 31	To P. & L. a/c	712	–	1967 Dec. 31	By Rajasthan Transport Co.	712	–

Balance Sheet as on 31st December, 1965

Liabilities	Amount Rs.	P.	Assets	Amount Rs.	P.
			Customers for goods sold on hire purchase	27,893	–

Illustration 82.

An engineering firm sold, on 1st January, 1966, to Bright Star Limited a Knitting machine for Rs. 16,600 on the terms, that Rs. 4,000 should be paid on delivery and the balance in three equal instalments of Rs. 4,200 payable on 30th June, 1966, 31st December, 1966 and 30th June, 1967.

The machine costs Rs. 13,000 to the engineering firm and the cash sale price was Rs. 16,000. Interest charged is calculated at the ra'e of 5 per cent per annum.

Show by means of ledger accounts how these transactions would be recorded in the books of both the parties assuming that the books are closed at the end of each calendar year. How the items would appear in the balance-sheet as on 31st December, 1966.

1 जनवरी, 1966 को एक इंजिनियरिंग फर्म ने ब्राइट स्टार लिमिटेड को 16,600 रु० में एक बुनने की मशीन इन शर्तों पर बेची—4,000 रु० सपुर्दगी के समय दिया जावे तथा शेष राशि का भुगतान 4,200 रु० वाली तीन बराबर की किस्तों में किया जावे। ये किस्तें क्रमश: 30 जून, 1966, 31 दिसम्बर, 1966 तथा 30 जून, 1967 को भुगतान की जावें।

इंजिनियरिंग फर्म ने उक्त मशीन को 13,000 रु० में खरीदा था तथा उसका रोकड़ी विक्रय-मूल्य 16,000 रु० था। ब्याज 5 प्रतिशत वार्षिक दर पर वसूल किया जाता है।

दोनों पक्षों की पुस्तकों में खाते खोलकर यह मानते हुए सौदों को दर्ज कीजिए कि उनकी पुस्तकें प्रत्येक कलेन्डर वर्ष के अन्त में बन्द की जाती हैं। 31 दिसम्बर, 1966 को चिट्ठे में उक्त मदें किस प्रकार दिखलाई जावेंगी।

Solution :

विश्लेषण तालिका (Analytical table)

भुगतान की किस्तें (1)	रोकड़ी मूल्य का प्रारम्भिक शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	ब्याज (4)	रोकड़ी या पूँजीगत मूल्य (3–4) (5)	शेष रोकड़ी मूल्य जो देना है। (2–5) (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
तुरन्त जमा	16,000	4,000	—	4,000.00	12,000
प्रथम किस्त(छमाही)	12,000	4,200	300·00*	3,900.00	8,100
द्वितीय किस्त(छमाही)	8,100	4,200	202.50	3,997.50	4,102·50
तृतीय किस्त (छमाही)	4,102·50	4,200	97.50	4,102.50	—
		16,600	600.00	16,000.00	

* ब्याज इस प्रकार निकाला जावेगा : $\left(\frac{5 \times 12000 \times 1}{100 \times 2}\right)$ रु० = 300 रु०

Books of Bright Star Limited (Hire Purchaser) :

Knitting Machine Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966 Jan. 1	To Hire Vendor	16,000	—	1966 Dec. 31	By Balance c/d	16,000	—
1967 Jan. 1	To Balance b/d	16,000	—	1967 Dec. 31	By Balance c/d	16,000	—

Hire Vendor's Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966 Jan. 1	To Bank a/c	4,000	—	1966 Jan. 1	By knitting Machine a/c	16,000	—
June 30	To Bank a/c	4,200	—	June 30	By Interest a/c	300	—
Dec. 31	To Bank a/c	4,200	—	Dec. 31	By Interest a/c	202	50
„ „	To Balance c/d	4,102	50				
		16,502	50			16,502	50
1967 June 30	To Bank a/c	4,200	—	1967 Jan. 1	By Balance b/d	4,102	50
				June 30	By Interest a/c	97	50
		4,200	—			4,200	—

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
June 30	To Hire-vendor	300	—	Dec. 31	By P. & L. a/c	502	50
Dec. 31	To Hire-vendor	202	50				
		502	50			502	50
1967				1967			
June 30	To Hire-vendor	97	50	Dec. 31	By P. & L. a/c	97	50

Balance Sheet as on 31st December, 1966

			Rs.	P.
		Knitting Machine on hire-purchase at cost price Rs. 16,000.00 Less amount due to vendor 4,102.50	11,897	50

टिप्पणी : मूल्य ह्रास का ध्यान नहीं रखा गया है।

Books of Engineering firm (Hire-vendor) :

Bright Star Limited (Hire-purchaser)

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Jan. 1	To Hire-purchase Sales a/c	16,000	—	Jan. 1	By Cash a/c	4,000	—
				June 30	By Cash a/c	4,200	—
June 30	To Interest a/c	300	—	Dec. 31	By Cash a/c	4,200	—
Dec. 31	To Interest a/c	202	50	,, ,,	By Balance c/d	4,102	50
		16,502	50			16,502	50
1967				1967			
Jan. 1	To Balance b/d	4,102	50	June 30	By Cash a/c	4,200	—
June 30	To Interest a/c	97	50				
		4,200	—			4,200	—

Hire-purchase Sales Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Dec. 31	To Trading a/c	16,000	—	Jan. 1	By Bright Star Ltd.	16,000	—

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Dec. 31	To P. & L. a/c	502	50	June 30	By Bright Star Ltd.	300	—
				Dec. 31	By Bright Star Ltd.	202	50
		502	50			502	50
1967				1967			
Dec. 31	To P. & L. a/c	97	50	June 30	By Bright Star Ltd.	97	50

Balance Sheet as on 31st December, 1966

			Rs.	P.
		Customers for goods sold on hire purchase	4,102	50

Illustration 83

Ram acquired a motor truck on hire-purchase from Motor Hirers Ltd. on 1st January 1965, agreeing to pay Rs. 4,000 on the delivery of truck to him and the balance in four half-yearly instalments of Rs. 4,000 each commencing on 30th June, 1965. The cash price of the motor truck was Rs. 18,870 and the Motor Hirers Ltd. charges interest at 6% per annum with half yearly rest.

Ram prepares his accounts annually on 30th September and writes off depreciation on the motor truck at 20% per annum on written down value basis. The truck met with an accident on January 1, 1967 and Ram received from the Insurance Company a sum of Rs. 8,500 as claim.

You are required to show the necessary accounts in the books of Ram and how the various items would appear in the balance-sheet on 30th September, 1966.

1 जनवरी, 1965 को राम ने किराया-क्रय पर मोटर हायरर्स लिमिटेड से एक मोटर ट्रक खरीदा तथा सुपुर्दगी पर 4,000 रु० व 4,000 रु० वाली चार छमाही किस्तों में बाकी रकम भुगतान करने का वादा किया। किस्तें 30 जून, 1965 से प्रारम्भ होंगी। मोटर ट्रक का रोकड़ी मूल्य 18,870 रु० है तथा मोटर हायरर्स लिमिटेड अर्ध वर्ष के हिसाब से 6 प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज वसूल करते हैं।

राम अपने वार्षिक खाते 30 सितम्बर को तैयार करता है और मोटर ट्रक के मूल्य पर क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार 20 प्रतिशत वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित करता है। 1 जनवरी

1967 को मोटर ट्रक की दुर्घटना हो गई तथा राम को वीमा कम्पनी से दावे के रूप में 8,500 रु० प्राप्त हुये।

राम की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये। 30 सितम्बर, 1966 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में विभिन्न मदों को किस प्रकार दिखलाया जावेगा।

Solution :

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

भुगतान की किस्तें (1)	रोकड़ी मूल्य का प्रारम्भिक शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	ब्याज (4)	रोकड़ी या पूंजीगत मूल्य (3–4) (5)	शेष रोकड़ी मूल्य जो देना है (2–5) (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
तुरन्त जमा	18,870·00	4,000	—	4,000·00	14,870·00
प्रथम किस्त	14,870·00	4,000	446·10	3,553·90	11,316·10
द्वितीय किस्त	11,316·10	4,000	339·48	3,660·52	7,655·58
तृतीय किस्त	7,655·58	4,000	229 67	3,770·33	3,885·25
चतुर्थ किस्त	3,885·25	4,000	114·75	3,885·25	—
		20,000	1,130·00	18,870·00	

Motor Truck Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1-1-65	To Motors Hirer Ltd.	18,870	–	30-9-65	By Dep. a/c (for 9 months)	2,830	50
				,, ,, ,,	By Balance c/d	16,039	50
		18,870	–			18,870	00
1-10-65	To Balance b/d	16,039	50	30-9-66	By Dep. a/c	3,207	90
				,, ,, ,,	By Balance c/d	12,831	60
		16,039	50			16,039	50
1-10-66	To Balance, b/d	12,831	60	1-1-67	By Cash a/c	8,500	–
				1-1-67	By Dep. a/c (for 3 months)	641	58
				30-9-67	By P.&L.a/c (Loss)	3,690	02
		12,831	60			12,831	60

Motor Hirers Ltd.

		Rs.	P.			Rs.	P.
1-1-65	To Bank a/c	4,000		1-1-65	By Motor truck a/c	18,870	00
30-6-65	To Bank a/c	4,000		30-6-65	By Interest a/c	446	10
30-9-65	To Balance c/d	11,316	10				
		19,316	10			19,316	10
31-12-65	To Bank a/c	4,000		1-10-65	By Balance b/d	11,316	10
30-6-66	To Bank a/c	4,000		30-12-65	By Interest a/c	339	48
30-9-66	To Balance c/d	3,885	25	30-6-66	By Interest a/c	229	67
		11,885	25			11,885	25
31-12-66	To Bank a/c	4,000		1-10-66	By Balance b/d	3,885	25
				31-12-66	By Interest a/c	114	75
		4,000				4,000	00

Accrued Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
30-9-65	To Balance c/d	169	74	30-9-65	By Interest a/c	169	74
1-10-65	To Interest a/c	169	74	1-10-65	By Balance b/d	169	74
30-9-66	To Balance c/d	57	38	30-9-66	By Interest a/c	57	38
		227	12			227	12
1-10-66	To Interest a/c	57	38	1-10-66	By Balance b/d	57	38

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
30-6-65	To Motor Hirers Ltd.	446	10	30-9-65	By P. & L. a/c	615	84
30-9-65	To Accrued Interest a/c	169	74				
		615	84			615	84
31-12-65	To Motor Hirers Ltd.	339	48	1-10-65	By Accrued Interest a/c	169	74
30-6-66	To Motor Hirers Ltd.	229	67	30-9-66	By P. & L. a/c	456	79
30-9-66	To Accrued Interest a/c	57	38				
		626	53			626	53
31-12-66	To Motor Hirers Ltd.	114	75	1-10-66	By Accrued Interest a/c	57	38
				30-9-67	By P. & L. a/c	57	37
		114	75			114	75

Depreciation Account

		Rs.	P.		
30-9-65	To Motor Truck a/c	2,830	50	30-9-65	By I
30-9-66	To Motor Truck a/c	3,207	90	30-9-66	By P.
1-1-67	To Motor Truck a/c	641	58	30-9-67	By P. A

Balance Sheet as on 30th September, 196

	Rs.	P.		Rs.	P.
Accrued Interest	57	38	Motor Truck on Hire Purchase at cost Rs. price 18,870 Less depreciation to date 6,038.40 12,831.60 Less Amount due to Vendor 3,942.63	8,888	97

Illustration 84

On 1st April, 1964 Globe Motors Limited purchased a motor car on hire-purchase for Rs. 30,000 form Krishna Brothers, agreeing to pay Rs. 6,000 as immediate deposit and the balance in four annual instalments of Rs. 6,000 each commencing from 31st March, 1965. The cash sale price of the motor car was Rs. 24,000. Globe Motors Ltd. charge depreciation @ 20 per cent per annum on straight line method.

Show Motor Car Account and Hire Vendor's Account in the books of Globe Motors Limited and Globe Motors Limited Account in the books of Krishna Brothers. How the items would appear in the Balance Sheet of the purchasers on 31st March, 1967 (the closing date of the books of both the parties).

1 अप्रैल, 1964 को ग्लोव मोटर्स लिमिटेड ने कृष्णा ब्रादर्स से किराया-क्रय पर एक मोटर कार 30,000 रु० में खरीदी तथा 6,000 रु० तुरन्त जमा व 6,000 रु० वाली 4 वार्षिक किस्तों में भुगतान करने का वचन दिया। पहली किस्त का भुगतान 31 मार्च, 1965 को होगा। मोटरकार का रोकड़ी विक्रय मूल्य 24,000 रु० था। ग्लोव मोटर्स लिमिटेड स्थायी किस्त पद्धति पर 20 प्रतिशत वार्षिक दर से ह्रास काटते हैं।

ग्लोव मोटर्स लिमिटेड की पुस्तकों में मोटर कार खाता तथा विक्रेता का खाता दिखाइये तथा कृष्णा ब्रादर्स की पुस्तकों में ग्लोव मोटर्स लिमिटेड का खाता खोलिये। 31 मार्च, 1967 (दोनों पक्षों की बहियां बन्द होने की तिथि) को क्रेता के चिट्ठे में उक्त मदें किस प्रकार दिखलाई जावेंगी।

Solution :

चूंकि प्रश्न में ब्याज की दर नहीं दी हुई है, अतः प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम क्रमागत वृद्धि प्रणाली (Progression Method) के आधार पर निकाली जायेगी, जो निम्न प्रकार होगी:—

(प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज एवं पूंजीगत मूल्य का विवरण)

भुगतान की किस्त	किस्तें देय होने के समय बकाया किराया क्रय-मूल्य	प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज	प्रत्येक किस्त में सम्मिलित पूंजीगत मूल्य
	रु०	रु०	रु०
प्रथम किस्त	24,000	24/60 × 6,000 = 2,400	3,600
द्वितीय किस्त	18,000	18/60 × 6,000 = 1,800	4,200
तृतीय किस्त	12,000	12/60 × 6,000 = 1,200	4,800
चतुर्थ किस्त	6,000	6/60 × 6,000 = 600	5,400
	60,000	6,000	18,000

रोकड़ी मूल्य = 18,000 रु० + 6,000 रु० (तुरन्त जमा) = 24,000 रु०

Books of Globe Motors Ltd. (Hire Purchaser) :

Motor Car Account

		Rs.			Rs.
1964 April 1	To Krishna Brothers	24,000	1965 March 31	By Dep. a/c (20% on Rs. 24,000)	4,800
			,, ,,	By Balance c/d	19,200
		24,000			24,000
1965 April 1	To Balance b/d	19,200	1966 March 31	By Dep. a/c (20% on Rs. 24,000)	4,800
			,, ,,	By Balance c/d	14,400
		19,200			19,200
1966 April 1	To Balance b/d	14,400	1967 March 31	By Dep. a/c	4,800
			,, ,,	By Balance c/d	9,600
		14,400			14,400
1967 April 1	To Balance b/d	9,600	1968 March 31	By Dep. a/c	4,800
			,, ,,	By Balance c/d	4,800
		9,600			9,600

Krishna Brothers

		Rs.	P.			Rs.	P.
1-4-64	To Bank a/c	6,000	—	1-4-64	By Motor Car a/c	24,000	—
31-3-65	To Bank a/c	6,000	—	31-3-65	By Interest a/c	2,400	—
,, ,, ,,	To Balance c/d	14,400	—				
		26,400	—			26,400	—
31-3-66	To Bank a/c	6,000	—	1-4-65	By Balance b/d	14,400	—
31-3-66	To Balance c/d	10,200	—	31-3-66	By Interest a/c	1,800	—
		16,200	—			16,200	—
31-3-67	To Bank a/c	6,000	—	1-4-66	By Balance b/d	10,200	—
31-3-67	To Balance c/d	5,400	—	31-3-67	By Interest a/c	1,200	—
		11,400	—			11,400	—
31-3-68	To Bank a/c	6,000	—	1-4-67	By Balance b/d	5,400	—
				31-3-68	By Interest a/c	600	—
		6,000	—			6,000	—

Balance Sheet as on 31st March, 1967

Liabilities	Amount Rs.	P.	Assets		Amount Rs.	P.
			Motor car on Hire-purchase at cost price	Rs. 24,000		
			Less Dep. to date	14,400		
				9,600		
			Less Amount due to Vendor	5,400	4,200	—

Books of Krishna Brothers :

Globe Motors Limited

		Rs.			Rs.
1-4-64	To Hire Sales a/c	24,000	1-4-64	By Bank a/c	6,000
31-3-65	To Interest a/c	2,400	31-3-65	By Bank a/c	6,000
			,, ,, ,,	By Balance c/d	14,400
		26,400			26,400
1-4-65	To Balance b/d	14,400	31-3-66	By Bank a/c	6,000
31-3-66	To Interest a/c	1,800	,, ,, ,,	By Balance c/d	10,200
		16,200			16,200

Globe Motors Ltd.'s a/c Contd..

		Rs.			Rs.
1-4-66	To Balance b/d	10,200	31-3-67	By Bank a/c	6,000
31-3-67	To Interest a/c	1,200	,, ,, ,,	By Balance c/d	5,400
		11,400			11,400
1-4-67	To Balance b/d	5,400	31-3-68	By Bank a/c	6,000
31-3-68	To Interest a/c	600			
		6,000			6,000

किराया-क्रेता की पुस्तकों में लेखा करने की द्वितीय विधि

सम्पत्ति अर्जित विधि (Asset Accrual Method)—

अब तक क्रेता की पुस्तकों में जो प्रविष्टियां बतलाई गई हैं, उनमें सौदे के प्रारम्भ में ही सम्पूर्ण रोकड़ी मूल्य से सम्पत्ति खाते को डेबिट तथा विक्रेता के खाते को क्रेडिट किया गया है। कुछ लेखापालों का मत है कि सम्पत्ति खाते को सम्पूर्ण रोकड़ी मूल्य से इक-मुश्त डेबिट नहीं किया जाना चाहिये बल्कि सम्पत्ति पर ज्यों-ज्यों पूंजीगत मूल्य का भुगतान होता जाये, त्यों-त्यों उस पूंजीगत मूल्य से सम्पत्ति खाते को डेबिट किया जाना चाहिये। उदाहरणार्थ, एक मोटर ट्रक का रोकड़ी मूल्य 37,500 रु० है, 5,000 रु० का तुरन्त भुगतान किया गया है तथा शेष राशि 7,500 रु० वाली पाँच वार्षिक किस्तों में चुकाई जावेगी। विक्रेता 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज वसूल करता है। उक्त उदाहरण में, इन लेखापालों के अनुसार, सौदा होते समय मोटर ट्रक को केवल 5,000 रु० तुरन्त भुगतान से ही डेबिट करके रोकड़ खाते को क्रेडिट किया जायेगा। प्रथम किस्त के 7,500 रु० में ब्याज के 1,625 रु० तथा पूंजीगत मूल्य के 5,875 रु० सम्मिलित हैं। इस किस्त के भुगतान करने पर सम्पत्ति खाते को 5,875 रु० से डेबिट, ब्याज खाते को 1,625 रु० से डेबिट तथा रोकड़ खाते को 7,500 रु० से क्रेडिट किया जायेगा। अन्य किस्तों के भुगतान पर भी इसी प्रकार प्रविष्टियां होती रहेंगी। ब्याज खाते के शेष को प्रतिवर्ष लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। इस विधि को **'सम्पत्ति अर्जित विधि'** **(Asset Accrual Method)** कहते हैं।

सम्पत्ति पर जो ह्रास लगाया जाता है, वह सम्पत्ति के लागत मूल्य पर लगाया जाता है। किराया क्रेता के लिए सम्पूर्ण रोकड़ी मूल्य सम्पत्ति का लागत मूल्य समझा जाता है। अतः इस पद्धति को अपनाने पर भी ह्रास सम्पूर्ण रोकड़ी मूल्य पर ही लगाया जाता है। विक्रेता की पुस्तकों में लेखा करने के लिए इस विधि को नहीं अपनाया जाता अपितु प्रथम विधि के साथ, विक्रेता की पुस्तकों में लेखा करने की जो विधि समझाई गई है, उसी को अपनाया जाता है।

Illustration 85

The Madras Transport Company purchased motor lorries from Bombay Motor Co. on hire-purchase system on 1st January, 1965 paying cash Rs. 10,000 and agreeing to pay three further instalments of Rs. 10,000 each on 31st December of each year. The cash price of the lorries is Rs. 37,250 and the sellers charge

interest at 5% per annum. The Madras Transport Co. write off 10% every year of the cash value of the lorries on the reducing instalment system.

Prepare Journal and ledger of Madras Transport company if the accounts are kept on Asset Accrual basis. How the items shall appear in the Balance Sheet as on 31st Dec., 1965.

1 जनवरी, 1965 को मद्रास ट्रांसपोर्ट कं० ने बाम्बे मोटर कम्पनी से किराया-क्रय पद्धति पर मोटर लारियां खरीदीं। 10,000 रु० तुरन्त जमा कराये तथा प्रत्येक वर्ष 31 दिसम्बर को 10,000 रु० वाली तीन किस्तें चुकाने का वादा किया। लारियों का रोकड़ी मूल्य 37,250 रु० है और विक्रेता 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज वसूल करते हैं। मद्रास ट्रांसपोर्ट कम्पनी क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार, लारियों के रोकड़ी मूल्य पर 10 प्रतिशत वार्षिक ह्रास अपलिखित करती हैं।

यदि लेखे 'सम्पत्ति अर्जित विधि' के आधार पर रखे जायें तो मद्रास ट्रान्सपोर्ट कम्पनी के जर्नल में प्रविष्टियां तथा लेजर खाते दीजिए। 31 दिसम्बर, 1965 को चिट्ठे में मदें किस प्रकार दिखलाई जावेंगी ?

Solution :

विश्लेषण तालिका

भुगतान की किस्तें (1)	रोकड़ी मूल्य का प्रारम्भिक शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	ब्याज (4)	रोकड़ी या पूंजीगत मूल्य (3–4) (5)	शेष रोकड़ी मूल्य जो देना है (2–5) (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
तुरन्त जमा	37,250·00	10,000	—	10,000 00	27,250·00
प्रथम किस्त	27,250·00	10,000	1,362·50	8,637·50	18,612·50
द्वितीय किस्त	18,612·50	10,000	930·63	9,069·37	9,543·13
तृतीय किस्त	9,543·13	10,000	456·87	9,543·13	—
	योग	40,000	2,750·00	37,250·00	—

* 20.29 रु० का ब्याज की राशि में समायोजन किया गया है।

Journal of Madras Transport Company

			Rs.	P.	Rs.	P.
1965 Jan. 1	Motor Lorries a/c	Dr.	10,000	00		
	To Bank a/c				10,000	00
	(Amount paid on signing of the contract.)					
Dec. 31	Motor Lorries a/c	Dr.	8,637	50		
	Interest a/c	Dr.	1,362	50		
	To Bank a/c				10,000	00
	(First instalment including principal amount and interest paid.)					
" "	Depreciation a/c	Dr.	3,725	00		
	To Motor Lorries a/c				3,725	00
	(Depreciation charged.)					
" "	Profit and Loss a/c	Dr.	5,087	50		
	To Interest a/c				1,362	50
	To Depreciation a/c				3,725	00
	(Interest and Depreciation transferred.)					
1966 Dec. 31	Motor Lorries a/c	Dr.	9,069	37		
	Interest a/c	Dr.	930	63		
	To Bank a/c				10,000	00
	(Second instalment including principal amount and interest paid.)					
" "	Depreciation a/c	Dr.	3,352	50		
	To Motor Lorries a/c				3,352	50
	(Depreciation charged.)					
" "	Profit and Loss a/c	Dr.	4,283	13		
	To Interest a/c				930	63
	To Depreciation a/c				3,352	50
	(Interest & Depreciation Transferred.)					
1967 Dec. 31	Motor Lorries a/c	Dr.	9,543	13		
	Interest a/c	Dr.	456	87		
	To Bank a/c				10,000	00
	(Third instalment including principal amount and interest paid.)					
" "	Depreciation a/c	Dr.	3,017	25		
	To Motor Lorries a/c				3,017	25
	(Depreciation charged.)					
" "	Profit and Loss a/c	Dr.	3,474	12		
	To Interest a/c				456	87
	To Depreciation a/c				3,017	25
	(Balances transferred.)					

Ledger of Madras Transport Company—

Motor Lorries Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965				1965			
Jan. 1	To Bank a/c	10,000	00	Dec. 31	By Dep. a/c (10% on Rs. 37,250)	3,725	00
Dec. 31	To Bank a/c	8,637	50	,, ,,	By Balance c/d	14,912	50
		18,637	50			18,637	50
1966				1966			
Jan. 1	To Balance b/d	14,912	50	Dec. 31	By Dep. a/c (10% on Rs. 33,525)	3,352	50
Dec. 31	To Bank a/c	9,069	37	,, ,,	By Balance c/d	20,629	37
		23,981	87			23,981	87
1967				1967			
Jan. 1	To Balance b/d	20,629	37	Dec. 31	By Dep. a/c (10% on Rs. 30,172·50)	3,017	25
Dec. 31	To Bank a/c	9,543	13	,, ,,	By Balance c/d	27,155	25
		30,172	50			30,172	50

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965				1965			
Dec. 31	To Bank a/c	1,362	50	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,362	50
1966				1966			
Dec. 31	To Bank a/c	930	63	Dec. 31	By P. & L. a/c	930	63
1967				1967			
Dec. 31	To Bank a/c	456	87	Dec. 31	By P. & L. a/c	456	87

Depreciation Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965				1965			
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	3,725	—	Dec. 31	By P. & L. a/c	3,725	—
1966				1966			
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	3,352	50	Dec. 31	By P. & L. a/c	3,352	50
1967				1967			
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	3,017	25	Dec. 31	By P. & L. a/c	3,017	25

Balance Sheet as on 31st Dec. 1965

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.	Motor Lorries on hire-purchase at cost price Rs. 18,637·50 Less Dep. 3,725·00	Rs. 14,912·50

Illustration 86.

On 1st January, 1960 the New Colliery Co. bought wagons on the hire-purchase system. The cash price of the wagons was Rs. 11,175 and the payment was to be made as follows :—

Rs. 3,000 was to be paid on signing of the agreement and the balance in three instalments of Rs. 3,000 each. The instalments due at the end of each year were paid by cheque on 1st January of the following year. 5% interest per annum is charged by the Wagon Co. The Colliery Co. decides to write off 10% annually on the diminishing balance.

Show Wagons' Accounts and Hire Vendor's Account in the books of Colliery Company.

1 जनवरी 1960 को न्यू कोलीयरी कम्पनी ने किराया-क्रय पर वैगन खरीदे। वैगनों का रोकड़ी मूल्य 11,175 रु० था और भुगतान निम्न प्रकार किया जाना था:—

अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करते समय 3,000 रु० तथा शेष 3,000 रु० वाली 3 वार्षिक किस्तों में। ये किस्तें प्रत्येक वर्ष के अन्त में देय होंगी परन्तु इनका भुगतान अगले वर्ष की प्रथम तारीख को किया जायेगा। वैगन कम्पनी द्वारा 5% वार्षिक ब्याज वसूल किया जाता है। कोलीयरी कम्पनी क्रमागत ह्रास पद्धति पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास अपलिखित करने का निश्चय करती है।

कोलीयरी कम्पनी की पुस्तकों में वैगन खाता तथा विक्रेता का खाता दिखाइये।

Solution :

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

भुगतान की किस्तें	रोकड़ी मूल्य का प्रारम्भिक शेष	भुगतान की जा रही कुल रकम	ब्याज	रोकड़ी या पूंजीगत मूल्य	शेष पूंजीगत मूल्य जो देना है
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
तुरन्त जमा	11,175.00	3,000	—	3,000.00	8,175.00
प्रथम किस्त	8,175.00	3,000	408.75	2,591.25	5,583.75
द्वितीय किस्त	5,583.75	3,000	279.19	2,720.81	2,862.94
तृतीय किस्त	2,862.94	3,000	*137.06	2,862.94	—
		12,000	825.00	11,175.00	

*6·09 रु० का ब्याज की राशि में समायोजन किया गया है।

Wagons' Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1960				1960			
Jan. 1	To Bank a/c	3,000	—	Dec. 31	By Depreciation a/c (10% on Rs. 11,175)	1,1[illegible]	
Dec. 31	To Wagon Co.	2,591	25	Dec. 31	By Balance c/d	4,473	75
		5,591	25			5,591	25
1961				1961			
Jan. 1	To Balance b/d	4,473	75	Dec. 31	By Depreciation a/c (10% on Rs. 10,057.50)	1,005	75
Dec. 31	To Wagon Co.	2,720	81	„ „	By Balance c/d	6,188	81
		7,194	56			7,194	56
1962				1962			
Jan. 1	To Balance b/d	6,188	81	Dec. 31	By Depreciation a/c (10% on Rs. 9,051·75)	905	18
Dec. 31	To Wagon Co.	2,862	94	„ „	By Balance c/d	8,146	57
		9,051	75			9,051	75

Wagon Company's Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1960				1960			
Dec. 31	To Balance c/d	3,000	—	Dec. 31	By Wagons' a/c	2,591	25
				„ „	By Interest a/c	408	75
		3,000	—			3,000	—
1961				1961			
Jan. 1	To Bank a/c	3,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	3,000	—
Dec. 31	To Balance c/d	3,000	—	Dec. 31	By Wagons' a/c	2,720	81
				„ „	By Interest a/c	279	19
		6,000	—			6,000	—
1962				1962			
Jan. 1	To Bank a/c	3,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	3,000	—
Dec. 31	To Balance c/d	3,000	—	Dec. 31	By Wagons' a/c	2,862	94
				„ „	By Interest a/c	137	06
		6,000	—			6,000	—
1963				1963			
Jan. 1	To Bank a/c	3,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	3,000	—

किस्त में ब्याज सम्मिलित नहीं (Instalments not including interest) :

Illustration 87.

On 1st January, 1965 Ramnath & Co. acquired a machine on hire-purchase. The terms of the contract were as follows :

(i) The cash price of the machine was Rs. 20,000.

(ii) Rs. 8,000 were to be paid on the signing of the contract.

(iii) The balance was to be paid in annual instalments of Rs. 4,000 plus interest.

(iv) Interest chargeable on the outstanding balance was 12% per annum.

Depreciation at 10 per cent per annum is to be written off on the straight line method.

You are required to show :—

(a) The relevant accounts in the books of Ramnath & Co. from 1st Jan., 1965 to 31st December, 1967.

(b) The Machinery Account in the Balance Sheet of the purchaser as at the end of each year.

1 जनवरी 1965 को रामनाथ एण्ड कम्पनी ने किराया-क्रय पर एक मशीन खरीदी। अनुबन्ध की शर्तें निम्न प्रकार थीं:—

(i) मशीन का रोकड़ी मूल्य 20,000 रु० था।

(ii) अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करते समय 8,000 रु० का भुगतान किया जावेगा।

(iii) शेष राशि का 4,000 रु० की वार्षिक किस्तों (ब्याज अलग) में भुगतान होगा।

(iv) बकाया राशि पर चार्ज की जाने वाली ब्याज की दर 12 प्रतिशत वार्षिक होगी।

सीधी रेखा पद्धति के आधार पर 10 प्रतिशत वार्षिक ह्रास अपलिखित किया जावेगा।

आपको दिखलाना है :

(अ) 1 जनवरी, 1965 से 31 दिसम्बर, 1967 तक रामनाथ एण्ड कम्पनी की पुस्तकों में सम्बन्धित खाते; तथा

(ब) प्रत्येक वर्ष के अंत में क्रेता के चिट्ठे में मशीनरी खाता।

विद्यार्थियों की सुविधा के लिए इस प्रश्न को दोनों विधियों से हल किया गया है।

प्रथम विधि :

Solution :

Machinery Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Jan. 1	To Ramnath & Co.	20,000	–	1965 Dec. 31	By Depreciation a/c	2,000	–
				,, ,,	By Balance c/d	18,000	–
		20,000	–			20,000	–
1966 Jan. 1	To Balance b/d	18,000	–	1966 Dec. 31	By Depreciation a/c	2,000	–
				,, ,,	By Balance c/d	16,000	–
		18,000	–			18,000	–
1967 Jan. 1	To Balance b/d	16,000	–	1967 Dec. 31	By Depreciation a/c	2,000	–
				,, ,,	By Balance c/d	14,000	–
		16,000	–			16,000	–

Ramnath & Co.

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1965			1965		
Jan. 1	To Bank a/c	8,000	Jan. 1	By Machinery a/c	20,000
Dec. 31	To Bank a/c	5,440	Dec. 31	By Interest a/c	1,440
,, ,,	To Balance c/d	8,000			
		21,440			21,440
1966			1966		
Dec. 31	To Bank a/c	4,960	Jan. 1	By Balance b/d	8,000
,, ,,	To Balance c/d	4,000	Dec. 31	By Interest a/c	960
		8,960			8,960
1967			1967		
Dec. 31	To Bank a/c	4,480	Jan. 1	By Balance b/d	4,000
			Dec. 31	By Interest a/c	480
		4,480			4,480

Interest Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1965			1965		
Dec. 31	To Ramnath & Co.	1,440	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,440
1966			1966		
Dec. 31	To Ramnath & Co.	960	Dec. 31	By P. & L. a/c	960
1967			1967		
Dec. 31	To Ramnath & Co.	480	Dec. 31	By P. & L. a/c	480

Depreciation Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1965			1965		
Dec. 31	To Machinery a/c	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1966			1966		
Dec. 31	To Machinery a/c	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1967			1967		
Dec. 31	To Machinery a/c	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000

चिट्ठे में निरूपण (Presentation in Balance Sheet)

Balance Sheet as on......

Liabilities	Rs.	P.	Assets		Rs.	P.
			31st Dec. 1965			
			Machinery	20,000		
			Less Dep. charged	2,000		
				18,000		
			Less Amount due to the Vendor	8,000	10,000	
			31st Dec. 1966			
			Machinery	20,000		
			Less Depreciation charged to date	4,000		
				16,000		
			Less Amount due to the Vendor	4,000	12,000	
			31st Dec. 1967			
			Machinery	20,000		
			Less Dep. charged to date	6,000	14,000	

द्वितीय विधि—

Books of Ramnath and Co. :—

Machinery Account

Date		Rs.	Date		Rs.
1965			1965		
Jan. 1	To Bank a/c	8,000	Dec. 31	By Depreciation a/c (10% of Rs.20,000)	2,000
Dec. 31	To Bank a/c	4,000	,, 31	By Balance c/d	10,000
		12,000			12,000
1966			1966		
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	Dec. 31	By Depreciation a/c (10% of Rs. 20,000)	2,000
Dec. 31	To Bank a/c	4,000	,, 31	By Balance c/d	12,000
		14,000			14,000
1967			1967		
Jan. 1	To Balance b/d	12,000	Dec. 31	By Depreciation a/c (10% of Rs.20,000)	2,000
Dec. 31	To Bank a/c	4,000	,, 31	By Balance c/d	14,000
		16,000			16,000

Interest Account

1965		Rs.	1965		Rs.
Dec. 31	To Bank a/c	1,440	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,440
1966			1966		
Dec. 31	To Bank a/c	960	Dec. 31	By P. & L. a/c	960
1967			1967		
Dec. 31	To Bank a/c	480	Dec. 31	By P. & L. a/c	480

Depreciation Account

1965		Rs.	1965		Rs.
Dec. 31	To Machinery a/c	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1966			1966		
Dec. 31	To Machinery a/c	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000
1967			1967		
Dec. 31	To Machinery a/c	2,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	2,000

चिट्ठे में निरूपण (Presentation in Balance Sheet) :—

Balance Sheet as on...

Liabilities	Amount		Assets		Amount	
	Rs.	P.	31st Dec. 1965	Rs.	Rs.	P.
			Machinery	12,000		
			Less Depreciation charged	2,000	10,000	—
			31st Dec. 1966			
			Machinery	14,000		
			Less Dep. charged	2,000	12,000	—
			31st Dec. 1967			
			Machinery	16,000		
			Less Dep. charged	2,000	14,000	—

नोट :— किस्तों की भुगतान तिथि व देय तिथि एक होने के कारण विक्रेता का खाता नहीं खोला गया है ।

क्रेता द्वारा समझौते की शर्तों का उल्लंघन एवं विक्रेता के पास उपलब्ध उपचार (Remedies available to Seller on Default by Purchaser) :—

यदि किराया-क्रेता समझौते की शर्तों का उल्लंघन करता है तो विक्रेता को निम्नलिखित उपचार उपलब्ध होते हैं :—

(i) सम्पूर्ण माल को अपने कब्जे में लेना ;

(ii) आंशिक माल को अपने कब्जे में लेना; अथवा

(iii) माल कब्जे में न आ सकने के कारण क्षतिपूर्ति मांगना।

सम्पूर्ण माल को अपने कब्जे में लेना : विक्रेता की पुस्तकों में लेखा—

माल के वापस आने पर उसका मूल्यांकन किया जायेगा तथा निम्न प्रविष्टि होगी:—

Returned Stock a/c Dr. (मूल्यांकन के बाद बाजार विक्रय मूल्य से)
Loss on Repossession of Stock a/c Dr. (हानि की रकम से)
To Hire Purchasers' a/c (उस समय तक जो किस्तें बकाया नहीं हुई हैं, उनके रोकड़ी मूल्य से)
(Goods returned and loss transferred.)

यदि माल को ठीक हालत में करने के लिये विक्रेता द्वारा कोई खर्चा किया जाता है तो निम्नलिखित प्रविष्टि होगी:—

Returned Stock a/c Dr. (खर्च की रकम से)
To Cash or Bank a/c
(Expenses incurred.)

उस माल को बेचने पर निम्नलिखित प्रविष्टि होगी:...

Cash or Bank a/c Dr. (वास्तविक प्राप्ति से)
To Returned Stock a/c
(Repossessed Stock sold for cash.)

यदि वापस आये माल (Returned Stock) खाते का शेष पुनर्विक्री पर लाभ या हानि बतलाता है तो इस लाभ या हानि को उस वर्ष के लाभ-हानि खाते में ले जाया जायेगा।

वर्ष के अंत में माल की वापसी पर हानि खाते (Loss on Repossession of Stock a/c) का शेष भी लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। यदि लौटा हुआ माल (Returned Stock) वर्ष के अंत तक पुनः नहीं बेचा गया है तो इसे चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में Returned Stock शीर्षक के अन्तर्गत दिखलाया जायेगा। यहाँ पर इस बात का स्मरण रखना चाहिये कि दुकान के अंतिम स्टॉक का मूल्यांकन (Valuation) करते समय लौटे हुये माल को मूल्यांकन में शामिल नहीं किया जायेगा।

ऐसा भी हो सकता है कि किराया क्रेता से सम्पूर्ण माल वापस आगया हो तथा वापस आने की तिथि तक जो किस्तें देय (Due) हो चुकी हों, उनकी रकम प्राप्त नहीं हुई हो, ऐसी स्थिति में "किराया क्रेता' के खाते में शेष (Balance) रहना स्वाभाविक होगा। उस शेष को किराया-क्रेता के खाते में ही रहने दिया जायेगा। रकम प्राप्त होने पर रोकड़ या बैंक खाते को डेबिट कर किराया क्रेता का खाता बन्द कर दिया जायेगा। यदि कोई रकम वसूल नहीं हो पाती तो डूबत खाते (Bad Debts Account) को डेबिट तथा किराया क्रेता के खाते को क्रेडिट कर दिया जायेगा। वर्ष के अन्त में डूबत खाते को लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जायेगा। चिट्ठा बनाते समय किराया क्रेता के खाते का शेष (यदि बचता है) सम्पत्ति पक्ष की ओर पुस्तक ऋण (Book debt) के रूप में दिखलाया जायेगा।

किराया क्रेता की पुस्तकों में लेखा:—जिस तिथि को समझौते का उल्लंघन हुआ है तथा विक्रेता द्वारा सम्पूर्ण माल को कब्जे में लिया गया है, उस तिथि तक देय किस्तें किराया क्रेता को देनी

होगी। अतः उस तिथि तक तो उसकी पुस्तकों में प्रविष्टियां सामान्य नियमों के आधार पर की जायेगी, तत्पश्चात् माल को वापस करने के समय उस वस्तु का उस तिथि को रोकड़ी मूल्य ज्ञात किया जावेगा तथा किराया क्रेता की पुस्तकों में निम्न प्रविष्टियाँ की जायेंगी।

Hire–Vendor's a/c Dr. (उस समय तक जो किस्तें बकाया नहीं हुई हैं, उनके रोकड़ी मूल्य से)
To Asset a/c
(Asset returned and balance transferred.)

'सम्पत्ति खाते' में लौटाने की तिथि तक का ह्रास काटने के बाद जो शेष रहेगा, उसे लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित कर दिया जायेगा।

यदि विक्रेता के खाते में कोई शेष रहता है तो यह उन देय (Due) किस्तों की रकम को बतलाता है जिनका किराया क्रेता ने अभी तक भुगतान नहीं किया है। जब इस रकम का भुगतान किया जायेगा तो विक्रेता का खाता डेबिट करके रोकड़ या बैंक खाता क्रेडिट कर दिया जायेगा। देय रकम का भुगतान करने पर यह खाता कोई शेष नहीं बतायेगा। यदि भुगतान करने के पहले ही वार्षिक खाते बनाये गये हैं तो चिट्ठे में विक्रेता के खाते का शेष दायित्व पक्ष की ओर ऋणदाता (Creditor) के रूप में दिखलाया जावेगा।

यदि किराया क्रेता ने 'सम्पत्ति अर्जित विधि' अपना रखी है, अर्थात् सम्पत्ति खाते को भुगतान के पूंजीगत मूल्य से ही डेबिट करता है तो माल लौटाने पर कोई प्रविष्टि नहीं होगी। सम्पत्ति खाते में लौटाने की तिथि तक का ह्रास काटने के बाद जो शेष रहेगा, उसे लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जावेगा। इस विधि के अन्तर्गत यदि विक्रेता का खाता खुला हुआ है तो उसका शेष देय किस्तों की रकम को बतलायेगा जिसका भुगतान किराया क्रेता को करना होगा। भुगतान न होने तक यह खाता क्रेडिट शेष बतलावेगा। यदि भुगतान करने के पहले ही वार्षिक खाते बनाये गये हैं तो इस खाते का शेष ऋणदाता (Creditor) के रूप में दिखलाया जावेगा। भुगतान करने पर विक्रेता का खाता डेबिट तथा रोकड़ या बैंक खाता क्रेडिट कर दिया जावेगा।

Illustration 88.

On 1st January, 1965, the Rajasthan Agrofarming Ltd. acquired one tractor on hire-purchase system and agreed to pay three equal instalments of Rs. 3,000 each on 1st January, 1966, 1967 and 1968. The cash value of the tractor on delivery was Rs. 8,170, the vendors charging interest at 5 per cent per annum on yearly balances. The purchasers write off 25 percent depreciation on the diminishing value for each year on 31st December.

On 1st January, 1967 Rajasthan Agro-farming Ltd. defaulted in paying the second instalment. By virtue of a clause in the agreement, the sellers seized the tractor on 5th Jan., 1967 and recovered the instalment due, on 20th March, 1968. The tractor, being in bad condition, was valued by the sellers at Rs. 1,500 only. Nothing could be recovered from the hire-purchaser on account of this loss. After

incurring an expenditure of Rs. 750 on reconditioning, the tractor was sold for Rs. 2,300 on 18th Feb., 1967.

Show the Tractor Account and Vendor's Account in the books of Rajasthan Agro-farming Ltd. and pass necessary journal entries in the books of the seller to record the transactions of repossession of tractor.

1 जनवरी, 1965 को राजस्थान एग्रो-फार्मिग लिमिटेड ने किराया क्रय पर एक ट्रैक्टर खरीदा और 3,000 रु० वाली तीन वार्षिक किस्तों (1 जनवरी, 1966, 1967 एवं 1968) में भुगतान करने का वादा किया। सुपुर्दगी के समय ट्रैक्टर का रोकड़ी मूल्य 8,170 रु० था तथा विक्रेता वार्षिक बाकियों पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज वसूल करता था। क्रेता प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को क्रमागत ह्रास विधि के आधार पर 25 प्रतिशत के हिसाब से ह्रास अपलिखित करते हैं।

1 जनवरी, 1967 को राजस्थान एग्रो-फार्मिंग लिमिटेड ने द्वितीय किस्त का भुगतान करने में दोष किया। समझौते की शर्तों के अनुसार विक्रेता ने 5 जनवरी 1967 को ट्रैक्टर को अपने कब्जे में ले लिया और बकाया किस्त 20 मार्च 1968 को वसूल की। ट्रैक्टर की खराब स्थिति होने के कारण विक्रेता ने उसका 1,800 रु० मूल्य निर्धारित किया किन्तु इस हानि के बदले में किराया क्रेता से कुछ भी वसूल नहीं हो सका। 750 रु० खर्च करने के बाद ट्रैक्टर को 18 फरवरी, 1967 को 2,300 रु० में बेच दिया।

राजस्थान एग्रो-फार्मिग लिमिटेड की पुस्तकों में ट्रैक्टर खाता तथा विक्रेता का खाता बनाइये और विक्रेता की पुस्तकों में ट्रैक्टर लौटने सम्बन्धी सौदों को दर्ज करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Solution : **Books of Rajasthan Agro-farming Ltd.**

Tractor Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1-1-65	To Hire-Vendor's a/c	8,170	—	31-12-65	By Dep. a/c (25% on Rs. 8,170)	2,042	50
				,, ,, ,,	By Balance c/d	6,127	50
		8,170	—			8,170	—
1-1-66	To Balance b/d	6.127	50	31-12-67	By Dep. a/c	1,531	75
				,, ,, ,,	By Balance c/d	4,595	75
		6,127	50			6,127	50
1-1-67	To Balance b/d	4,595	75	5-1-67	By Hire-Vendor's a/c	2,857	43
				31-12-67	By P. & L. a/c (Loss)	1,738	32
		4,595	75			4,595	75

Hire Vendor's Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
31-12-65	To Balance c/d	8,578	50	1-1-65	By Tractor a/c	8,170	–
				31-12-65	By Interest a/c (5% on Rs. 8,170)	408	50
		8,578	50			8,578	50
1-1-66	To Bank a/c	3,000	–	1-1-66	By Balance b/d	8,578	50
31-12-66	To Balance c/d	5,857	43	31-12-66	By Interest a/c (5% on Rs. 5,578·50)	278	93
		8,857	43			8,857	43
5-1-67	To Tractor a/c	2,857	43	1-1-67	By Balance b/d	5,857	43
31-12-67	To Balance c/d (Instalment due on 1-1-67)	3,000	–				
		5,857	43			5,857	43
20-3-68	To Bank a/c	3,000	–	1-1-68	By Balance b/d	3,000	–

नोट : (i) ट्रैक्टर को लौटाया गया मूल्य, लौटाये जाने वाले वर्ष में, विक्रेता के खाते के प्रारम्भिक शेष में से किस्त की उस रकम को जो देय हो गई है परन्तु जिसका भुगतान नहीं किया गया है घटाकर ज्ञात किया जाता है।

(ii) किस्त की वह राशि जो देय हो गई है परन्तु जिसका भुगतान नहीं हुआ है, भुगतान न होने तक विक्रेता के खाते (Hire-vendor's Account) में शेष के रूप में दिखाई जावेगी।

यदि क्रेता की पुस्तकों में 'सम्पत्ति अर्जित विधि' से सौदों को दर्ज किया जावे तो ट्रैक्टर खाता व विक्रेता के खाते निम्न प्रकार होंगे :—

Tractor Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
31-12-65	To Hire Vendor's a/c	2,591	50	31-12-65	By Dep. a/c (25% on Rs.8,170)	2,042	50
				,, ,,	By Balance c/d	549	–
		2,591	50			2,591	50
1-1-66	To Balance b/d	549	–	31-12-66	By Dep. a/c (25% on Rs. 6,127·50)	1,531	75
31-12-66	To Hire Vendor's a/c	2,721	07	31-12-66	By Balance c/d	1,738	32
		3,270	07			3,270	07
1-1-67	To Balance b/d	1,738	32	31-12-67	By P. & L. a/c (Loss)	1,738	32

Hire Vendor's Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
31-12-65	To Balance c/d	3,000	–	31-12-65	By Tractor a/c	2,591	50
				,, ,, ,,	By Interest a/c	408	50
		3,000	–			3,000	–
1-1-66	To Bank a/c	3,000	–	1-1-66	By Balance b/d	3,000	–
31-12-66	To Balance c/d	3,000	–	31-12-66	By Tractor a/c	2,721	07
				31-12-66	By Interest a/c	278	93
		6,000	–			6,000	–
31-12-67	To Balance c/d	3,000	–	1-1-67	By Balance b/d	3,000	–
20-3-68	To Bank a/c	3,000	–	1-1-68	By Balance b/d	3,000	–

Books of Hire Vendor

Journal of............

			Rs.	P.	Rs.	P.
5-1-67	Returned Stock a/c	Dr.	1,800	—		
	Loss on Repossession of Stock a/c	Dr.	1,057	43		
	To Rajasthan Agro-Farming Ltd.				2,857	43
	(Tractor repossessed and loss transferred.)					
5-1-67	Returned Stock a/c	Dr.	750	—		
	To Cash a/c				750	—
	(Expenses incurred on reconditioning of repossessed tractor.)					
18-2-67	Cash a/c	Dr.	2,300	—		
	To Returned Stock a/c				2,300	—
	(Repossessed tractor sold for cash.)					
31-12-67	Profit and Loss a/c	Dr.	1,307	43		
	To Returned Stock a/c				250	—
	To Loss on Repossession of Stock a/c				1,057	43
	(Balances transferred.)					
20-3-68	Cash a/c	Dr.	3,000	—		
	To Rajasthan Agro-farming Ltd.				3,000	—
	(Instalment due on 1-1-67 received.)					

आंशिक माल को अपने कब्जे में लेना (Repossession of a part of goods)—जब विक्रेता सम्पूर्ण माल को अपने कब्जे में नहीं करता बल्कि किराया क्रेता के साथ समझौता करके आंशिक माल पर ही कब्जा करता है तो किराया-क्रेता की पुस्तकों में माल वापसी के लेखे करने में थोड़ी सी भिन्नता होगी। उसकी पुस्तकों में खुले हुए 'विक्रेता खाते' में से वापस गये माल का अदेय रोकड़ी मूल्य (Cash price

not due) अथवा 'समझौते द्वारा तय मूल्य' (Agreed Value) ही सम्पत्ति र
हस्तांतरित किया जायेगा। यदि वापस किये गये माल का तय मूल्य (Agreed V
माल वापसी की प्रविष्टि तय मूल्य (Agreed Value) पर की जावेगी। यदि त
है तो वापस किये गये माल का अदेय रोकड़ी मूल्य ज्ञात किया जावेगा और उस मूल्य से माल वा...
प्रविष्टि की जावेगी।

'सम्पत्ति खाते' में उसके पास रहने वाले माल का ह्रासित मूल्य (Depreciated Value) शेष रहने दिया जावेगा, बाकी रकम लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित कर दी जायेगी। विक्रेता की पुस्तकों में लेखे उसी प्रकार होंगे, जैसे कि पहले बतलाये जा चुके हैं।

Illustration 89.

On 1st January, 1967, X purchased from Y, on hire purchase, machinery valued at Rs. 22,305, payment to be made by four half-yearly instalments of Rs. 6,000 each, interest being charged at 6 per cent per annum with half-yearly rest.

X paid the first instalment on 1st July, 1967 and failed to pay the next. On 2nd January, 1968 Y seized the machinery and after negotiations X was allowed to retain the machine of which original cash price was Rs. 10,000 and he was to bear the loss on the remainder, which was taken over by Y at an agreed valuation of Rs. 9,000 on 3rd January, 1968. Y waived the interest accruing after 31st December, 1967 i.e. for 3 days. Another agreement was entered into for the liquidation of the balance.

Show Machinery Account and Hire-vendor's Account in X's books charging depreciation at 12 per cent per annum half-yearly on the reducing balance. X closes the books half-yearly on 30th June and 31st December each year.

1 जनवरी, 1967 को एक्स ने वाई से किराया-क्रय पर मशीनरी खरीदी जिसका मूल्य 22,305 रु० था। भुगतान 6,000 रु० वाली चार छमाही किस्तों में किया जाना है। ब्याज अर्ध वर्ष के अन्तर पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से लगाया जाता है।

एक्स ने 1 जुलाई, 1967 को प्रथम किस्त का भुगतान कर दिया किन्तु अगली किस्त चुकाने में असमर्थ रहा। 2 जनवरी, 1968 को वाई ने मशीनरी पर कब्जा कर लिया और बातचीत के बाद एक्स को ऐसी मशीन रखने की आज्ञा दे दी गई जिसका मूल रोकड़ी मूल्य 10,000 रु० था। शेष मशीन पर उसे नुकसान भोगना पड़ा जो कि 3 जनवरी, 1968 को वाई ने 9,000 रु० के मूल्य पर वापस ले ली। वाई ने 31 दिसम्बर, 1967 के बाद 3 दिन का ब्याज छोड़ दिया। एक्स और वाई के मध्य शेष राशि के भुगतान के लिए नया समझौता हो गया।

एक्स की पुस्तकों में मशीनरी खाता तथा विक्रेता का खाता बनाइये। मशीनरी पर क्रमागत ह्रास विधि के आधार पर अर्ध वर्ष के अन्तर पर 12 प्रतिशत वार्षिक दर से मूल्य ह्रास काटिये। एक्स अपनी पुस्तकें प्रति वर्ष 30 जून व 31 दिसम्बर को बन्द करता है।

Solution :

Books of X

Machinery Account

		Rs.			Rs.
1-1-67	To Y's a/c	22,305	30-6-67	By Dep. a/c (6% on Rs. 22,305)	1,338
			,, ,, ,,	By Balance c/d	20,967
		22,305			22,305
1-7-67	To Balance b/d	20,967	31-12-67	By Dep. a/c (6% on Rs. 20,967)	1,258
			,, ,, ,,	By Balance c/d	19,709
		20,967			20,967
1-1-68	To Balance b/d	19,709	3-1-68	By Y's a/c	9,000
				By P. & L. a/c (Loss)	1,873
				By Balance c/d	8,836
		19,709			19,709

Y's Account (Machinery on Hire-Purchase)

		Rs.	P.			Rs.	P.
30–6–67	To Balance c/d	22,974	—	1–1–67	By Machinery a/c	22,305	—
				30–6–67	By Interest a/c (3% on Rs. 22,305)	669	—
		22,974	—			22,974	—
1–7–67	To Bank a/c	6,000	—	1–7–67	By Balance b/d	22,974	—
31–12–67	To Balance c/d	17,483	—	31–12–67	By Interest a/c (3% on Rs. 16,974)	509	—
		23,483	—			23,483	—
3–1–68	To Machinery a/c	9,000	—	1–1–68	By Balance b/d	17,483	
30–6–68	To Balance c/d	8,483	—				
		17,483	—			17,483	—

नोट:—(1) गणना निकटतम रुपयों तक की गई है।

(2) 10,000 रु० के रोकड़ी मूल्य का दो छमाही तक मूल्य ह्रास काटने के बाद शेष मूल्य 8,836 रु० होगा।

क्षति पूर्ति की मांग करना:—यदि किराया-क्रेता के पास से माल पर पुन: अधिकार नहीं किया जा सकता तो विक्रेता के पास क्षतिपूर्ति मांगने का उपचार ही रहता है। क्षतिपूर्ति की यह रकम मूल्य का

वह भाग हो सकती है जो कि विक्रेता को अभी तक भुगतान नहीं की गई है। इस प्रकार के सौदों की निम्नलिखित प्रविष्टियां होंगी :—

किराया-क्रेता की पुस्तकों में भुगतान करने पर :	Hire-Vendor's a/c Dr. To Cash or Bank a/c (Damages paid.)		(क्षति पूर्ति की रकम से)
विक्रेता की पुस्तकों में भुगतान प्राप्त होने पर :	Cash or Bank a/c Dr. To Hire-purchaser's a/c (Damages received.)		

किराया-क्रेता द्वारा अपने अधिकारों का तीसरे पक्ष को हस्तांकन (Assignment of rights by hire-purchaser to third party)—

यदि समझौते में कोई विपरीत शर्त न हो तो किराया-क्रेता के अधिकार हस्तांतरित हो सकते हैं क्योंकि ये अधिकार सम्पत्ति के सम्बन्ध में हैं तथा कानून ऐसे अधिकारों के हस्तांकन पर रोक नहीं लगाता। हस्तांकी को केवल वही अधिकार मिलते हैं जो किराया-क्रेता के पास थे, उससे अधिक नहीं।[1]

अगर कोई किराया-क्रेता पूर्ण भुगतान करने से पहले ही माल किसी अन्य व्यक्ति को बेचता है तो प्रायः वह ऐसा कार्य विक्रेता की सहमति से करता है।

मूल किराया-क्रेता की पुस्तकों में लेखेः—सम्पत्ति का तीसरे पक्ष को हस्तान्तरण करने पर किराया क्रेता नये क्रेता से पहले भुगतान के फलस्वरूप रोकड़ में विक्रय मूल्य प्राप्त करता है। साथ में ही वह भविष्य की किस्तों के भुगतान का दायित्व भी नये क्रेता में हस्तान्तरण कर देता है। नये क्रेता से रोकड़ मूल्य प्राप्त होने पर रोकड़ खाते को डेबिट कर दिया जाता है तथा सम्पत्ति खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। किस्तों के भुगतान के दायित्व के हस्तान्तरण पर वही प्रविष्टि की जाती है जो विक्रेता को माल लौटाने पर की जाती है, अर्थात् विक्रेता के खाते को उसके शेष से डेबिट कर दिया जाता है तथा सम्पत्ति खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। इन लेखों को करने के फलस्वरूप विक्रेता का खाता बन्द हो जावेगा। सम्पत्ति खाते में यदि कोई शेष रहे तो उसको लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

नये क्रेता की पुस्तकें—नये क्रेता की पुस्तकों में 'सम्पत्ति खाता' (Asset a/c) डेबिट करके उस व्यक्ति अथवा उन व्यक्तियों के खाते क्रेडिट किये जायेंगे जिनको उसे भुगतान करना है। भुगतान करने पर उस व्यक्ति का खाता डेबिट तथा रोकड़ या बैंक खाता क्रेडिट हो जायेगा। अलग-अलग किस्तों के देय होने पर वह 'किराया-क्रय सम्बन्धी सामान्य लेखा नियमों' के आधार पर अपनी पुस्तकों में प्रविष्टियां करता रहेगा।

---

1. In the absence of a covenant to contrary, the rights of a hirer in the goods are assignable, since they are rights in the property and the law does not prohibit the transfer of such rights, but the assignee gets only such rights as the hirer had and no more. [Helby v. Mathews, 1895]

Illustration 90.

On 1st January, 1967 Renters Ltd. purchased two wagons from Owners Ltd. under hire-purchase system. The payment was to be made over a period of three years from 1st January, 1967 by half-yearly instalments of Rs. 7,385 payable on 30th June and 31st December each year, the cash price being Rs. 20,000 per wagon and the rate of interest at 8 per cent per annum with half yearly rests.

On 1st January 1968, after paying two instalments, Renters Ltd. transferred their rights in the agreement to Assignees Ltd. for a consideration of Rs. 10,000. Assignees Ltd. paid this sum to Renters Ltd. on 1st January, 1968 and the next instalment to Owners Ltd. on the due date.

Find out the principal amount not due on accounts of two wagons on 1st January, 1968 and pass necessary journal entries in the books of Assignees Ltd. upto 3oth June, 1968(when their financial year ended)writing off depreciation at 10 per cent per annum. Also prepare Wagon Account and Owners Ltd. Account in the books of Renters Ltd.

1 जनवरी, 1967 को रेन्टर्स लिमिटेड ने किराया-क्रय पद्धति के अंतर्गत, ओनर्स लिमिटेड से दो वैगन खरीदे। मूल्य का भुगतान 7,385 रु० छमाही वाली किस्तों में 1 जनवरी, 1967 से तीन वर्ष तक किया जायेगा। किस्तें प्रति वर्ष 30 जून व 31 दिसम्बर को चुकाई जायेंगी। रोकड़ी मूल्य प्रति वैगन 20,000 रु० है तथा अर्ध वर्ष के अंतर से 8 प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज लगाया जाता है।

दो किस्तों का भुगतान करने के वाद 1 जनवरी, 1968 को रेन्टर्स लिमिटेड ने 10,000 रु० के प्रतिफल के वदले अपने अधिकार असाइनीज लिमिटेड को हस्तांतरित कर दिये। 1 जनवरी, 1968 को असाइनीज लिमिटेड ने उक्त राशि रेन्टर्स लिमिटेड को भुगतान करदी तथा अगली किस्त देय तिथि पर, ओनर्स लिमिटेड को चुकादी।

1 जनवरी, 1968 को इन दो वैगनों पर अदेय रोकड़ी मूल्य ज्ञात कीजिए तथा 30 जून 1968 (आर्थिक वर्ष समाप्ति की तारीख) तक असाइनीज लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा सम्पत्ति पर 10 प्रतिशत वार्षिक मूल्य ह्रास काटिए। रेन्टर्स लिमिटेड की पुस्तकों में वैगन खाता तथा ओनर्स लिमिटेड का खाता भी वनाइये।

Solution :

1 जनवरी, 1968 को दो वैगनों का अदेय पूंजीगत मूल्य, विश्लेषण तालिका बनाकर ज्ञात किया जावेगा, जो निम्न प्रकार है:—

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

भुगतान की किस्तें (1)	रोकड़ी-मूल्य का प्रारम्भिक शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	ब्याज (4)	पूँजीगत मूल्य (3–4) (5)	शेष रोकड़ी मूल्य जो देना है (2–5) (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
प्रथम किस्त (30-6-67)	40,000	7,385	1,600 (8% onRs.40,000 for six months)	5,785	34,215
द्वितीय किस्त (31-12-67)	34,215	7,385	1,369 (8% on Rs.34,215 for six months)	6,016	28,199

अतः 1 जनवरी 1968 को दो वैगनों का अदेय पूँजीगत मूल्य = 28,199 रु० ।

Journal of Assignees Limited

				Rs.	Rs.
1–1–68	Wagons a/c	Dr.		38,199	
	To Renters Ltd.				10,000
	To Owners Ltd.				28,199
	(Wagons purchased under Hire-purchase system.)				
,, ,, ,,	Renters Ltd.	Dr.		10,000	
	To Bank a/c				10,000
	(Payment made.)				
30–6–68	Interest a/c	Dr.		1,128	
	To Owners Ltd.				1,128
	(Interest at 8% p. a. due on Rs.28,199.)				
,, ,, ,,	Owners Ltd.	Dr.		7,385	
	To Bank a/c				7,385
	(Instalment paid.)				
,, ,, ,,	Depreciation a/c	Dr.		1,910	
	To Wagons a/c				1,910
	(Dep. for half year charged.)				
,, ,, ,,	Profit and Loss a/c	Dr.		3,038	
	To Interest a/c				1,128
	To Depreciation a/c				1,910
	(Balances transferred.)				

Books of Renters Limited :

Wagons Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1-1-67	To Owners Ltd.	40,000	—	31-12-67	By Balance c/d	40,000	—
1-1-68	To Balance b/d	40,000	—	1-1-68	By Cash a/c	10,000	—
				1-1-68	By Owners Ltd.	28,199	—
				31-12-68	By P. & L. a/c	1,801	—
		40,000	—			40,000	—

Owners Limited

		Rs.	P.			Rs.	P.
30-6-67	To Bank a/c	7,385	—	1-1-67	By Wagons a/c	40,000	—
31-12-67	To Bank a/c	7,385	—	30-6-67	By Interest a/c	1,600	—
31-12-67	To Balance c/d	28,199	—	31-12-67	By Interest a/c	1,369	—
		42,969	—			42,969	—
1-1-68	To Wagons a/c	28,199	—	1-1-68	By Balance b/d	28,199	—

टिप्पणी : रेन्टर्स लिमिटेड की पुस्तकों में वैगनों पर मूल्य-ह्रास का ध्यान नहीं रखा गया है।

रोकड़ी विक्रय मूल्य ज्ञात करना (Calculation of Cash Selling Price)—

कभी-कभी प्रश्न में किराया क्रय मूल्य, ब्याज की दर तथा भुगतान की जाने वाली विभिन्न किस्तों का विवरण दिया रहता है परन्तु रोकड़ी विक्रय-मूल्य नहीं दिया रहता। ऐसी स्थिति में किराया क्रेता अथवा विक्रेता की पुस्तकों में सौदों को दर्ज करने के लिये रोकड़ी विक्रय-मूल्य को ज्ञात करना आवश्यक है क्योंकि प्रविष्टियां रोकड़ी विक्रय मूल्य पर होती हैं। इसके लिये हम वार्षिकी तालिकाओं (Annuity tables) की सहायता ले सकते हैं। उनके आधार पर वस्तु का रोकड़ी विक्रय-मूल्य मालूम किया जा सकता है। यदि वार्षिकी तालिकायें उपलब्ध न हों तो गणित द्वारा गणना करके भी रोकड़ी विक्रय-मूल्य ज्ञात किया जा सकता है। रोकड़ी विक्रय-मूल्य ज्ञात हो जाने पर किराया-क्रेता अथवा विक्रेता की पुस्तकों में सौदों को सुविधापूर्वक दर्ज किया जा सकता है।

वार्षिकी तालिकाओं के आधार पर रोकड़ी मूल्य ज्ञात करना :

Illustration 91.

On 1st July, 1964, a manufacturing company buys on the hire-purchase system machinery for Rs. 30,000 payable by three equal annual instalments combining principal and interest, the latter being at the nominal rate of 5 per cent per annum.

Calculate the amount of cash selling price and show the necessary accounts for the three years in the manufacturing company's ledger. (The present value of an annuity of one rupee for three years at 5% per annum is Rs. 2.72325). The manufacturing company decides to write off depreciation at 10 per cent on written down value.

1 जुलाई, 1964 को एक उत्पादक कम्पनी किराया-क्रय पद्धति पर 30,000 रु० में मशीनरी खरीदती है जिसका भुगतान तीन बराबर की वार्षिक किस्तों में किया जायेगा। किस्तों में पूँजीगत मूल्य व ब्याज सम्मिलित है। ब्याज 5 प्रतिशत वार्षिक दर पर लगाया जाता है।

रोकड़ी विक्रय-मूल्य ज्ञात कीजिए तथा उत्पादक कम्पनी की खाता-बही में तीन वर्षों तक आवश्यक खाते खोलिए। (1 रु० की वार्षिकी का 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज की दर पर 3 वर्ष के लिये वर्तमान मूल्य 2·72325 रु० है) उत्पादक कम्पनी क्रमागत ह्रास विधि के आधार पर 10 प्रतिशत की दर से ह्रास काटने का निश्चय करती है।

Solution :

मशीनरी का रोकड़ी मूल्य ज्ञात करना :—

∵ 1 रु० की 3 साल के लिए वार्षिकी का वर्तमान मूल्य = 2·72325 रु०

∴ 10,000 रु० की 3 साल के लिए वार्षिकी का वर्तमान मूल्य = 27,232·50 रु०

अतः रोकड़ी विक्रय मूल्य = 27,232·50 रु०

विश्लेषण तालिका

किस्तों की क्रम संख्या (1)	रोकडी मूल्य का प्रारम्भिक शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	ब्याज (4)	पूँजीगत मूल्य (5)	शेष रोकड़ी मूल्य जो देना है (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
प्रथम किस्त	27,232·50	10,000	1,361·63	8.638·37	18,594·13
द्वितीय किस्त	18,594·13	10,000	929·71	9,070·29	9,523·84
तृतीय किस्त	9,523·84	10,000	476·16	9,523·84	—
		30.000	2,767·50	27,232·50	—

Machinery Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1-7-64	To Hire Vendor's a/c	27,232	50	30-6-65	By Depreciation a/c	2,723	25
				30-6-65	By Balance c/d	2,4509	25
		27,232	50			27 232	50
1-7-65	To Balance b/d	24,509	25	30-6-66	By Depreciation a/c	2,450	93
				30-6-66	By Balance c/d	22,058	32
		24,509	25			24,509	25
1-7-66	To Balance b/d	22,058	32	30-6-67	By Depreciation a/c	2,205	83
				30-6-67	By Balance c/d	19.852	49
		22,058	32			22,058	32

Hire Vendor's Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
30-6-65	To Bank a/c	10,000	–	1-7-64	By Machinery a/c	27,232	50
30-6-65	To Balance c/d	18,594	13	30-6-65	By Interest a/c	1,361	63
		28,594	13			28,594	13
30-6-66	To Bank a/c	10,000	–	1-7-65	By Balance b/d	18,594	13
30-6-66	To Balance c/d	9,523	84	30-6-66	By Interest a/c	929	71
		19,523	84			19,523	84
30-6-67	To Bank a/c	10,000		1-7-66	By Balance b/d	9,523	84
				30-6-67	By Interest a/c	476	16
		10,000				10,000	–

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
30-6-65	To Hire Vendor	1,361	63	30-6-65	By P. & L. a/c	1,361	63
30-6-66	To Hire Vendor	929	71	30-6-66	By P. & L. a/c	929	71
30-6-67	To Hire Vendor	476	16	30-6-67	By P. & L. a/c	476	16

Depreciation Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
30-6-65	To Machinery a/c	2,723	25	30-6-65	By P. & L. a/c	2,723	25
30-6-66	To Machinery a/c	2.450	93	30-6-66	By P. & L. a/c	2,450	93
30-6-67	To Machinery a/c	2,205	83	30-6-67	By P. & P. a/c	2.205	83

तुरन्त जमा की राशि दिये जाने पर वार्षिकी तालिकाओं द्वारा रोकड़ी मूल्य ज्ञात करना—यदि प्रश्न में 'तुरन्त जमा' की राशि भी दी हुई हो तो वह रकम वार्षिकीत ालिकाओं के आधार पर ज्ञात की गई वर्तमान मूल्य में जोड़ दी जायेगी। दोनों का जोड़ रोकड़ी मूल्य होगा। उदाहरण के लिए पिछले प्रश्न में किराया-क्रय मूल्य के भुगतान की विधि इस प्रकार तय होती कि 6,000 रु० तुरन्त जमा कराने हैं तथा वाकी 24,000 रु०, बराबर की तीन वार्षिक किस्तों में चुकाने हैं तो रोकड़ी मूल्य निम्न प्रकार निकाला जाता :—

$$\text{Rs. } (8{,}000 \times 2{\cdot}72325) + \text{Rs. } 6{,}000 = \text{Rs. } 27{,}786$$

गणित द्वारा गणना करके रोकड़ी मूल्य ज्ञात करना (Calculation of Cash Price by mathematical calculation)—यदि प्रश्न में रोकड़ी मूल्य व वार्षिकी तालिकाओं के आधार पर 1 रु० का वर्तमान मूल्य (दोनों ही) न दिये हुये हों तो, गणित द्वारा गणना करके रोकड़ी मूल्य ज्ञात किया जा सकता है। आगे के उदाहरणों से इस प्रकार का रोकड़ी मूल्य ज्ञात करना स्पष्ट हो जावेगा—

Illustration 52.

A man bought a machine on hire-purchase. He paid Rs. 4,000 as immediate deposit, Rs. 2,000 at the end of first year, Rs. 2,400 at the end of second year, Rs. 2,900 at the end of third year and Rs. 3,300 each at the end of fourth and fifth year. The interest on unpaid cash price is 10 per cent per annum. Find out the cash price and amount of interest included in each instalment.

एक व्यक्ति ने किराया-क्रय पर एक मशीन खरीदी। उसने सुपुर्दगी पर 4,000 रु०, प्रथम वर्ष के अंत में 2,000 रु०, द्वितीय वर्ष के अंत में 2,400 रु०, तृतीय वर्ष के अंत में 2,900 रु० तथा चौथे व पाँचवें वर्ष के अंत में 3,300 रु०, प्रति वर्ष भुगतान किये। अदत्त रोकड़ी मूल्य पर 10 प्रतिशत ब्याज लगाया जाता है। रोकड़ी मूल्य ज्ञात कीजिए तथा प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम निकालिए।

Solution :

रोकड़ी मूल्य की गणना निम्न प्रकार की जावेगी :

रोकड़ी मूल्य व ब्याज की गणना का विवरण

किस्त	गणना	प्रारम्भिक अदत्त पूँजीगत मूल्य	ब्याज
पंचम	$\frac{3,300 \times 100}{110}$ रु०*	3,000 रु०	3,300- 3,000= 300 रु०
चतुर्थ	$(3,000+3,300) \times \left(\frac{100}{110}\right)$ रु०	5,727 रु०	6,300- 5,727= 573 रु०
तृतीय	$(5,727+2,900) \times \left(\frac{100}{110}\right)$ रु०	7,843 रु०	8,627- 7,843 = 784 रु०
द्वितीय	$(7,843+2,400) \times \left(\frac{100}{110}\right)$ रु०	9,312 रु०	10,243- 9,312= 931 रु०
प्रथम	$(9,312+2,000) \times \left(\frac{100}{110}\right)$ रु०	10,284 रु०	11,312-10,284=1,028 रु०

रोकड़ी मूल्य 10,284 रु० + 4,000 रु० (तुरन्त जमा) = 14,284 रु० होगा। प्रथम किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम 1,028 रु०, द्वितीय किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम 931 रु०, तृतीय किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम 784 रु०, चतुर्थ किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम 573 रु०, एवं पंचम किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम 300 रु० होगी।

सूचनाः—उपरोक्त विवरण बना लेने के बाद विश्लेषण तालिका बनाने की आवश्यकता नहीं है तथा प्रश्न हल किया जा सकता है।

*3,300 रु० पंचम वर्ष के अंत में दी गई किस्त की रकम है। जब 100 रु० मूलधन माना गया है तो मिश्रधन 100 रु० + ब्याज की दर अर्थात् 110 रु० हो गया। अतः उक्त सूत्र का प्रयोग किया गया।

Illustration 93.

Prabhat Cinematic company purchase a photographic machinery from Machine Stores Limited on hire-purchase basis for Rs. 2,520. The amount is to be paid as follows:—

Rs. 400 on delivery, Rs. 600 at the end of first year, Rs. 400 at the end of second year and Rs. 1,120 at the end of third year. Interest at the rate of 12 per cent per annum on the unpaid cash value of the machine is included in the above instalments. Prepare ledger accounts in the books of hire purchaser.

प्रभात सिनेमेटिक कम्पनी किराया-क्रय के आधार पर मशीन स्टोर्स लिमिटेड से एक फ़ोटोग्राफिक मशीनरी 2,520 रु० में खरीदते हैं। रकम का भुगतान इस प्रकार किया जायेगा:—400 रु० सुपुर्दगी के समय, 600 रु० प्रथम वर्ष के अंत में, 400 रु० द्वितीय वर्ष के अंत में, तथा 1,120 रु० तृतीय वर्ष के अंत में। मशीन के अदत्त रोकड़ी मूल्य पर 12 प्रतिशत वार्षिक दर से लगाया गया ब्याज उपरोक्त किस्तों में सम्मिलित है। किराया-क्रेता की पुस्तकों में खाते तैयार कीजिये।

Solution :

चूंकि प्रश्न में रोकड़ी मूल्य नहीं दिया हुआ है, अतः सर्व प्रथम रोकड़ी मूल्य ज्ञात किया जावेगा। साथ ही प्रत्येक किस्त में सम्मिलित ब्याज की रकम भी ज्ञात कर ली जावेगी।

रोकड़ी मूल्य व ब्याज की गणना का विवरण

किस्त	गणना	प्रारम्भिक अदत्त पूंजीगत मूल्य	ब्याज
	रु०	रु०	रु०
तृतीय	$\frac{1,120 \times 100}{112}$ रु०	1,000	1,120–1,000=120
द्वितीय	$(1,000+400) \times \left(\frac{100}{112}\right)$ रु०	1,250	1,400–1,250=150
प्रथम	$(1,250+600) \times \left(\frac{100}{112}\right)$ रु०	1,652	1,850–1,652=198

रोकड़ी मूल्य = 1,652 रु० + 400 रु० (तुरन्त जमा) = 2,052 रु०

Books of Prabhat Cinematic Company (Hire Purchaser) :–

Photographic Machinery Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
Time of Delivery	To Machine Stores Limited	2,052	—	End of 1st year	By Balance c/d	2,052	—
Beginning of II year	To Balance b/d	2,052	—	End of II year	By Balance c/d	2,052	—
Beginning of III year	To Balance b/d	2,052	—	End of III year	By Balance c/d	2,052	—

नोट:—मूल्य-ह्रास का ध्यान नहीं रखा गया है।

Machine Stores Limited

		Rs.	P.			Rs.	P.
Time of Delivery	To Bank a/c	400	—	Time of Delivery	By Photographic Machinery a/c	2,052	—
End of I year	To Bank a/c	600	—	End of I year	By Interest a/c	198	—
,, ,,	To Balance c/d	1,250	—				
		2,250	—			2,250	—
End of II year	To Bank a/c	400	—	Beginning of II yr.	By Balance b/d	1,250	—
,, ,,	To Balance c/d	1,000	—	End of II year	By Interest a/c	150	—
		1,400	—			1,400	—
End of III year	To Bank a/c	1,120	—	Beginning of III yr	By Balance b/d	1,000	—
				End of III year	By Interest a/c	120	—
		1,120	—			1,120	—

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
End of I year	To Machine Stores Ltd.	198	—	End of I year	By P. & L. a/c	198	—
End of II year	To Machine Stores Ltd.	150	—	End of II year	By P. & L. a/c	150	—
End of III year	To Machine Stores Ltd.	120	—	End of III year	By P. & L. a/c	120	—

कम कीमत के माल (Goods of Small Value)

स्टॉक पद्धति (Goods Out or Stock Method)—

जब किराया-क्रय विक्रियों की संख्या अधिक हो, बेचे गये माल का मूल्य कम हो तथा किस्तों की संख्या प्रत्येक विक्री में एक समान न हो तो विक्रेता की पुस्तकों में स्टॉक पद्धति द्वारा सौदों को दर्ज किया जाता है। इस पद्धति की मुख्य विशेषता यह है कि जो भी माल किराये पर बाहर गया हुआ होता है, वह स्टॉक (Stock) समझा जाता है। इस पद्धति के अन्तर्गत वित्तीय पुस्तकों (Financial books) के अतिरिक्त कई स्मरण पुस्तिकायें (Memorandum books) रखी जाती हैं। वित्तीय पुस्तकों में किराया-क्रय माल खाता (Hire Purchase Trading Account) एक मुख्य खाता होता है जोकि वर्ष भर में हुए किराया-क्रय सौदों पर लाभ अथवा हानि बतलाता है। यह प्रेपण खाते (Consignment Account) के समान होता है।

मुख्य-मुख्य स्मरण पुस्तिकायें निम्नलिखित होती हैं :—

(i) किराया क्रेताओं की खाता वही (Hire Purchase Customers Ledger)

(ii) किराया क्रय विक्री पुस्तक (Hire Purchase Sales Day Book)

(iii) किराया-क्रय वापसी पुस्तक (Hire Purchase Returns Book)

(iv) वकाया किस्त पुस्तक (Instalment Overdue Book)

इनमें से किराया-क्रेताओं की खाता बही एक प्रमुख स्मरण पुस्तिका है। यह पुस्तक दोहरे लेखे का अंग नहीं मानी जाती। इस पुस्तक में किराया क्रेताओं के व्यक्तिगत खाते खुले हुए होते हैं। प्रत्येक खाते के डेविट पक्ष में क्रेता को वेचे जाने वाले माल को किराया-क्रय मूल्य (Hire purchase price) पर दिखलाया जाता है तथा क्रेडिट पक्ष में निम्न बातें दिखलाई जाती हैं :—

(i) समय-समय पर क्रेता से प्राप्त किस्तों की रकमें;

(ii) वकाया किस्तें जो देय हो गई हैं, किन्तु भुगतान नहीं हुआ है; तथा

(iii) लौटाये गये माल या स्टॉक का किराया-क्रय मूल्य।

अलग-अलग खातों के शेष का योग एक निश्चित तिथि को, बाहर रहे स्टॉक (Stock out on hire) का किराया-क्रय मूल्य वतलायेंगे। चूंकि यह एक स्मरण-पुस्तिका है, अत: ये खाते 'संदर्भ खाते' (Reference Accounts) ही कहे जा सकते हैं तथा तलपट में शामिल नहीं किये जाते।

माल बेचने का सौदा होते ही सबसे पहले 'किराया-क्रय विक्री पुस्तक' में दर्ज किया जाता है। पुस्तक में तिथि अनुसार समस्त बिक्रियों के विवरण दर्ज रहते हैं। क्रेता का नाम, खाता वही पृष्ठांक, किस्तों के विवरण, माल का लागत मूल्य तथा किराया-क्रय मूल्य इत्यादि सूचनायें इस पुस्तक में दर्ज की जाती हैं। इस पुस्तक का योग दैनिक, साप्ताहिक अथवा माहवारी, जैसी भी आवश्यकता हो किया जा सकता है।

किराया-क्रेता के दोष के कारण अथवा स्वेच्छा से लौटाने पर जव माल वापस आता है तो 'किराया-क्रय वापसी पुस्तक' में सौदे को दर्ज किया जाता है। माल वापस लौटने पर उसका पुनर्मूल्यांकन किया जाता है तथा पुनर्मूल्यांकित राशि से 'Returned Stock a/c को डेबिट करके Hire-Purchase Trading a/c को क्रेडिट किया जाता है। जिस तिथि को माल वापस लौटता है उस तिथि को यह ज्ञात किया जाता है कि ग्राहक या क्रेता की तरफ कितनी किस्तें ऐसी है, जो देय (Due) नहीं हुई हैं। इन किस्तों का योग वापस लौटे हुए माल का किराया-क्रय मूल्य कहलाता है। इस राशि को 'स्मरण खाता वही' में खुले हुए सम्वन्धित क्रेता के खाते में क्रेडिट भी कर देना चाहिये।

किराया-क्रेताओं के खातों में वकाया किस्तें (जो देय हो गई हैं किन्तु भुगतान नहीं हुआ है) ज्ञात की जाती हैं तथा उनके विवरण 'वकाया किस्त पुस्तक' में दर्ज किये जाते हैं। यह पुस्तक 'वकाया किस्तों की सूची' भी कही जा सकती है। प्राय: इस पुस्तक का योग वर्ष के अन्त में पुस्तकें वन्द करते समय लगाया जाता है। योग की राशि से, 'Instalments overdue a/c' डेविट करके 'Hire Purchase Trading Account' को क्रेडिट किया जाता है।

रोकड़ बही (Cash Book) :—यह पुस्तक वित्तीय पुस्तक मानी जाती है तथा दोहरे लेखे का अंग है। जव किराया-क्रेताओं से किस्तों का रुपया प्राप्त होता है तो इस पुस्तक के डेविट पक्ष में दर्ज कर

लिया जाता है। इस पुस्तक का दैनिक, साप्ताहिक या माहवारी (जैसी भी आवश्यकता हो) योग लगाया जाता है तथा किराया-क्रय माल खाते (Hire Purchase Trading Account) के क्रेडिट पक्ष में खता लिया जाता है। इस प्रकार सौदे का दोहरा लेखा पूर्ण हो जाता है अर्थात् रोकड़ खाता डेबिट व किराया-क्रय माल खाता क्रेडिट हो जाता है।

इस पुस्तक से किराया-क्रेताओं की खाता वही में खुले हुए व्यक्तिगत खातों में भी प्रविष्टि की जाती है। उन खातों के क्रेडिट पक्ष में 'प्राप्त रकम' जमा कर ली जाती है। अतः रोकड़ पुस्तक से दो कार्य सम्पन्न होते हैं—(i) दोहरा लेखा, तथा (ii) किराया-क्रेताओं की खाता वही में रकमें खताने के लिए सामग्री प्रदान करना।

'बाहर गये माल' का लागत मूल्य निकालना (Valuation of Stock out on hire at Cost Price)—

जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है, किराया-क्रेताओं की खाता-वही (Hire purchase Customers' Ledger) में खुले हुए विभिन्न खातों के शेष का योग 'बाहर गये माल' का किराया-क्रय मूल्य बतलाते हैं। चूंकि वर्ष के अन्त में 'बाहर गये माल या स्टॉक' की रकम किराया-क्रय माल खाते (Hire-Purchase Trading Account) के क्रेडिट पक्ष में दिखलाई जाती है, अतः उसका लागत मूल्य पर मूल्यांकन करना बहुत जरूरी है। उसको लागत मूल्य पर मूल्यांकित करने के लिए 'किराया-क्रय मूल्य' में से लाभ की रकम घटा देनी चाहिए। उदाहरण के लिए बाहर गये स्टॉक का किराया-क्रय मूल्य 2,400 रु० है तथा बिक्री मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ कमाया जाता है तो उक्त स्टॉक का लागत मूल्य निम्न प्रकार होगा :—

$$\text{लागत मूल्य} = \text{Rs.}\left(\frac{80}{100} \times \frac{2,400}{1}\right) = \text{Rs. } 1,920$$

उक्त सूत्र तभी लागू होगा जबकि वर्ष भर लाभ की दर एक समान रही हो। यदि लाभ की दर एक समान नहीं रही बल्कि भिन्न-भिन्न सौदों में भिन्न-भिन्न रही है तो वर्ष के अन्त में स्टॉक सूची (Stock Schedule) बनानी होगी। स्टॉक सूची में वस्तु के लागत मूल्य को आनुपातिक आधार पर घटा कर दर्ज किया जावेगा। आनुपातिक आधार पर घटाने के लिए निम्न सूत्र काम में आयेगा :—

$$\frac{\text{Hire Purchase Price not due}}{\text{Total Hire Purchase price of stock sold}} \times \text{Cost price of stock sold}$$

स्टॉक सूची का नमूना निम्न प्रकार का हो सकता है :—

Stock Schedule

Agreement Number	Particulars	Memo L. F.	Amount of Hire-Purchase Price		Cost Price	Proportionate Cost Price
			Total Price	Not due		
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
			Rs.	Rs.	Rs.	Rs. P.
	Ram		220–00	184–00	154–00	128–80
	Shyam		114–00	76–00	78–00	52–00
						180–80

उक्त सूची में राम और श्याम के पास जो स्टॉक था, उसके लागत मूल्य का आनुपातिक लागत दिखलाया गया है। वर्ष के अन्त में कालम संख्या 7 के योग से निम्न प्रविष्टि कर दी जाती है :—

	Rs. P.	Rs. P.
Stock out on hire a/c......Dr.	180–80	
To Hire-Purchase Trading a/c		180–80
(Stock valued and transferred.)		

वित्तीय पुस्तकों में 'किराया-क्रय माल खाता' एवं अन्य खाते खोलना (Preparation of Hire Purchase Trading a/c and other connected accounts in financial books) :—

जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है, किराया-क्रय माल खाता वित्तीय पुस्तकों में एक मुख्य खाता है। अतः वित्तीय पुस्तकों में किराया-क्रय माल खाते एवं अन्य सम्वन्धित खातों को खोलने के लिए इस प्रकार जर्नल प्रविष्टियां की जाती हैं :—

वर्ष के प्रारम्भ में	Hire-Purchase Trading a/c......Dr.	
	To Stock out on hire a/c	(लागत मूल्य से)
	To Instalments over due a/c	(बकाया किस्तों के योग से)
	(Opening balances transferred.)	
वर्ष भर में समय-समय पर :	Hire-Purchase Trading a/c......Dr.	
	To Goods sold on hire purchase a/c	(लागत मूल्य से)
	(Goods sold on Hire-purchase.)	
	Cash a/c ......Dr.	
	To Hire-Purchase Trading a/c	
	(Cash received.)	
	Returned stock a/c.........Dr.	(पुनर्मूल्यांकित राशि से)
	To Hire-Purchase Trading a/c	
	(Goods returned.)	
वर्ष के अन्त में	Instalments Overdue a/c......Dr.	(बकाया किस्तों के योग से)
	Stock out on Hire a/c... Dr.	(लागत मूल्य से)
	To Hire-Purchase Trading a/c	
	(Closing balances.)	
	Hire-Purchase Trading a/c......Dr.	(यदि लाभ है, हानि की दशा में विपरीत प्रविष्टि होगी)
	To General Trading a/c	
	(Profit transferred.)	
	Goods sold on Hire-purchase a/c...Dr.	
	To Trading a/c	
	(Balance transferred to close the account.)	

'बकाया किस्त खाते' तथा 'बाहर गये माल खाते' का शेष निकाला जायेगा तथा चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखलाया जायेगा।

Purchases a/c.........Dr.
To Returned Stock a/c
(Balance transferred to close the account.)

'बकाया किस्त खाते' तथा 'बाहर गये माल खाते' का शेप निकाला जायेगा तथा चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखलाया जायेगा।

Illustration 94

Jain & Brothers sell miscellaneous articles of small value on hire purchase. They sold 25 small articles to Banarsi for a total sum of Rs. 1,000 to be paid in ten monthly instalments of Rs.100 each; and ten articles to Krishna for a total sum of Rs. 1,500 to be paid in six monthly instalments of Rs. 250 each. At the end of the year, Banarsi had paid five instalments and was in arrear for one instalment and Krishna had paid two instalments that fell due during the course of the year. The vendors sell goods at a profit of 20% on the selling price. You are required to prepare for the year ending 31st December, 1967 :—

(i) Memorandum books; and
(ii) Journal in financial books.

जैन एण्ड ब्रादर्स कम कीमत की विविध वस्तुएं किराया-क्रय पद्धति पर बेचते हैं। उन्होंने बनारसी को 1,000 रु० में 25 वस्तुएं बेची जिनका भुगतान 100 रु० वाली 10 माहवारी किस्तों में होगा। कृष्णा को 1,500 रु० में 10 छोटी वस्तुएं बेची गई जिनका भुगतान 250 रु० वाली 6 माहवारी किस्तों में होगा। वर्ष के अन्त तक, बनारसी ने देय किस्तों में से पाँच का भुगतान कर दिया तथा एक किस्त की रकम बकाया थी। कृष्णा की तरफ दो किस्तें देय हुई जिसका उसने भुगतान कर दिया। विक्रेता विक्रय मूल्य पर 20 प्रतिशत लाभ कमाकर माल बेचते हैं। 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए आप निम्नलिखित तैयार कीजिए:—

(i) स्मरण पुस्तकें; तथा
(ii) वित्तीय पुस्तकों में जर्नल

Solution : स्मरण पुस्तकें (Memorandum books)

Hire Purchase Sales Day Book

Date (1)	Particulars (2)	Memo L.F. (3)	Immediate deposit (4)	Instalments No. (5)	Instalments Periodicity (6)	Instalments Amount (7)	* Cost Price (8)	Hire Purchase Price (9)
1967						Rs.	Rs.	Rs.
July 31	Banarsi	—	—	10	Monthly	100	800	1,000
Nov. 30	Krishna	—	—	6	Monthly	250	1,200	1,500
							2,000	2,500

$$* \text{ Cost price} = \text{Rs.} \frac{80}{100} \times \frac{1000}{1} = \text{Rs. } 800$$

$$\text{Cost price} = \text{Rs.} \frac{80}{100} \times \frac{1500}{1} = \text{Rs. } 1{,}200$$

Hire Purchase Customers Ledger

Banarsi's Account

1967		Rs.	P.	1967		Rs.	P.
July 31	To Stock sold	1,000	—	July 31	By Cash a/c	100	—
				Aug. 31	By Cash a/c	100	—
				Sept. 30	By Cash a/c	100	—
				Oct. 31	By Cash a/c	100	—
				Nov. 30	By Cash a/c	100	—
				Dec. 31	By Instalment due	100	—
				,, ,,	By Balance c/d	400	—
		1,000	—			1,000	—

Krishna's Account

1967		Rs.	P.	1967		Rs.	P.
Nov. 30	To Stock sold	1,500	—	Nov. 30	By Cash a/c	250	—
				Dec. 31	By Cash a/c	250	—
				,, ,,	By Balance c/d	1,000	—
		1,500	—			1,500	—

Instalments Overdue Book

Agreement Number	Particulars	Memo L.F.	Instalments overdue			Total Amount overdue
			No.	Periodicity	Amount	
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)
					Rs.	Rs.
	Banarsi	—	1	Monthly	100	100
						100

नोट :—(1) किराया-क्रय वापसी पुस्तक की इस प्रश्न में आवश्यकता नहीं है।
(2) किस्तों की प्राप्तियों को रोकड़ वही के डेबिट पक्ष में दिखलाया जावेगा।

Journal Entries in Financial Books :

Journal of Jain & Brothers

			Dr. Rs.	P.	Cr. Rs.	P.
(i)	Hire Purchase Trading a/c Dr. To Goods sold on hire-purchase a/c (Total of cost price of Hire-Purchase Sales Day book.)		2,000	—	2,000	—
(ii)	Cash a/c Dr. To Hire-Purchase Trading a/c (Total cash received on instalments.)		1,000	—	1,000	—
(iii)	Instalments Overdue a/c Dr. To Hire Purchase Trading a/c (Total of Instalments overdue book.)		100	—	100	—
(iv)	Stock out on hire a/c Dr. To Hire Purchase Trading a/c (Cost price of stock out on hire i. e. closing balances of customers' a/cs.)		1,120	—	1,120	—
(v)	Hire-Purchase Trading a/c Dr. To General Trading a/c (Profit Transferred.)		220	—	220	—
(vi)	Goods sold on hire-purchase a/c Dr. To General Trading a/c (Balance transferred in order to close the account.)		2,000	—	2,000	—
			6,440	—	6,440	—

Calculation of cost price of stock out on hire :—

Customers ledger balances or Rs.

Hire-Purchase price of stock out on hire =1,400

Less profit Rs. $\left(\frac{20}{100} \times 1{,}400\right)$ = 280

Cost Price of stock out on hire=1,120

स्टॉक पद्धति की यह विशेषता है कि लागत मूल्य एवं किराया-क्रय मूल्य का अन्तर लाभ समझा जाता है तथा व्याज के तत्व के लिए अलग से प्रविष्टियां नहीं की जाती हैं ।

Illustration 95.

From the following details set out the Hire-Purchase Trading Account in the books of a trader who sells number of articles of comparatively small value on the hire-purchase system, showing his profit on this department of the business for the year ending 31st March, 1968. For the purpose of charging hire-purchase customers, he adds 60 per cent to the cost price of the goods.

निम्नलिखित विवरणों से एक ऐसे व्यापारी की पुस्तकों में किराया-क्रय माल खाता बनाइये जो कम कीमत की वस्तुओं को किराया-क्रय पद्धति पर बेचता है। उक्त व्यापारी लागत मूल्य पर 60 प्रतिशत जोड़कर किराया-क्रेताओं को माल बेचता है। 31 मार्च, 1968 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए इन सौदों पर लाभ दिखलाइये।

		Rs.
1967 April 1	Stock in customers hands at selling price	3,240
1968 March 31	Sale of hire purchase goods during the year at selling price.	13,068
	Cash received from hire-purchasers at selling price	4,200
	Stock in customers' hands at selling price	11,348

Solution :

Hire purchase Trading Account

		Rs.	p.			Rs.	p.
1967 April 1	To Hire Purchase Stock a/c Rs. $\left(\frac{100}{160}\times 3,240\right)$	2,025	–	1968 Mar. 31	By Cash a/c	4,200	–
				„ „	By Instalments overdue a/c	*760	–
1968 Mar. 31	To Goods sold on Hire purchase a/c Rs. $\left(\frac{100}{160}\times 13,068\right)$	8,167	50	„ „	By Hire-purchase Stock a/c Rs $\left(\frac{100}{160}\times 11,348\right)$	7,092	50
„ „	To Gross Profit to P. & L. a/c	1,860	–				
		12,052	50			12,052	50

Memorandum Hire-Purchase Customers Account

	Rs.	p.		Rs.	p.
To Balance (opening)	3,240	–	By Cash a/c	4,200	–
			By Balance (closing)	11,348	–
To Goods sold	13,068	–	By Instalments overdue (Balancing figure)	760	–
	16,308	–		16,308	–

*Instalments overdue on 31st March, 1968 have been calculated by preparing Memorandum Hire Purchase Customers' Account.

Illustration 96.

A Ltd., which sells a product of small value on hire-purchase terms, has the following transactiohs for the year ending 31st December, 1967. The gross profit is 25 per cent on selling price.

ए लिमिटेड, जोकि कम कीमत की वस्तुएं किराया-क्रय शर्तों पर वेचते हैं, के 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए निम्नलिखित सौदे हैं। सकल लाभ विक्रय-मूल्य पर 25 प्रतिशत कमाया जाता है।

1967		Rs.
Jan. 1	Stock out on hire at hire-purchase price	4,000
	Stock in hand (at shop)	500
	Instalments overdue (customers still paying)	300
Dec. 31	Stock out on hire at hire-purchase price	4,600
	Stock in hand (at shop)	700
	Instalments overdue (customers still paying)	500
	Cash purchases during the year	6,800
	Cash received on instalments during the year	8,000

Prepare Hire Purchase Trading Account for the year ended 31st December 1967 and a Balance Sheet as on that date. (31 दिसम्बर, 1967 को किराया क्रय व्यापार खाता तथा चिट्ठा बनाइये।)

Solution : **Hire Purchase Trading Account**

1967		Rs.	1967		Rs.
Jan. 1	To Stock out on hire at cost	3,000	Dec. 31	By Cash	8,000
,, ,,	To Instalments overdue	300	,, ,,	By Instalments Overdue	500
,, ,,	To Stock at shop	500	,, ,,	By Stock out on hire at cost	3,450
Dec. 31	To Purchases	6,800	,, ,,	By Stock a tshop	700
,, ,,	To Gross Profit transferred to P. & L. a/c	2,050			
		12,650			12,650

Balance Shcet as at 31st December, 1967

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Capital (Balancing figure)	3,800	Cash Rs. (8000–6,800)	1,200
Profit and Loss a/c	2,050	Instalments Overdue	500
		Stock at shop at cost	700
		Stock out on hire at cost	3,450
	5,850		5,850

स्टॉक पद्धति के अन्तर्गत मदों को विक्रय मूल्य पर दिखलाना (At selling Price)

कभी-कभी स्टॉक पद्धति के अन्तर्गत बनाये गये 'किराया क्रय माल खाते' (Hire Purchase Trading a/c) में मदों को विक्रय मूल्य पर दिखलाया जाता है। ऐसी स्थिति में ऐसी मदों को जिनको विक्रय मूल्य पर दिखलाया गया है, विक्रय मूल्य और क्रय मूल्य के अन्तर से विपरीत प्रविष्टियाँ करके क्रय मूल्य पर लाया जाता है जिससे सही लाभ ज्ञात किया जा सके।

डेबिट पक्ष पर निम्नलिखित मद विक्रय मूल्य पर दिखलाये जाते हैं :

(i) वर्ष के प्रारम्भ में किराया क्रेताओं के पास स्टॉक
(Stock out on Hire purchase at the beginning of the year)

(ii) वर्ष पर्यन्त किराया क्रय पर वेचा गया माल
(Goods sold on Hire purchase during the year)

उपरोक्त दोनों सौदों की समायोजन प्रविष्टियाँ निम्नलिखित होगी।

(i) Stock Reserve a/c Dr. To Hire purchase Trading a/c (Balance transferred.)		प्रारम्भिक स्टॉक के विक्रय मूल्य और क्रय मूल्य के अन्तर से
(ii) Goods sold on Hire purchase a/c Dr. To Hire purchase Trading a/c (Adjustment made.)		किराया क्रय पर वेचे गये माल के विक्रय मूल्य और क्रय मूल्य के अन्तर से

उपरोक्त दोनों समायोजन प्रविष्टियों की खतोनी 'किराया क्रय माल खाते' के क्रेडिट पक्ष में की जावेगी, जिसके फलस्वरूप, किराया क्रेताओं के पास प्रारम्भिक स्टाक तथा वर्ष पर्यन्त किराया क्रय पर वेचा गया माल' जो विक्रय मूल्य पर दिखलाये गये हैं, क्रय मूल्य पर आजावेंगे।

किराया क्रय माल खाते के क्रेडिट पक्ष पर निम्नलिखित मद विक्रय मूल्य पर बताये जाते हैं।

(i) किराया क्रय पर लौटाया गया माल। यदि लौटाया गया माल क्षतिग्रस्त अवस्था में है और उसका बाजार मूल्य दिया हुआ है तो ऐसी अवस्था में लौटाये गये माल को बाजार मूल्य पर दिखलाया जाता है। यदि लौटाया गया माल बाजार मूल्य पर दिखलाया गया है तो उसकी समायोजन प्रविष्टि नहीं की जाती है।

(ii) वर्ष की अन्तिम तिथि को किराया क्रेताओं के पास स्टॉक

उपरोक्त दोनों सौदों की समायोजन प्रविष्टियाँ निम्नलिखित होंगी :

(i) Hire purchase Trading a/c Dr. To Returned Stock a/c (Adjustment made.)		लौटाये गये माल के विक्रय मूल्य और क्रय मूल्य के अन्तर से (यदि लौटाया गया माल विक्रय मूल्य पर दिखलाया गया है)
(ii) Hire purchase Trading a/c Dr. To Stock Reserve a/c (Stock Reserve created.)		अन्तिम स्टॉक के विक्रय और और क्रय मूल्य के अन्तर से

उपरोक्त दोनों समायोजन प्रविष्टियाँ किराया क्रय माल खाते के डेबिट पक्ष में की जावेंगी जिसका शुद्ध प्रभाव यह होगा कि लौटाया गया माल तथा अन्तिम स्टॉक जो विक्री मूल्य पर बतलाये गये हैं, क्रय मूल्य पर आजावेंगे।

Illustration 97

1966		Rs.
Jan., 1	Goods out on hire purchase (at hire purchase price)	8,000
Dec., 31	Goods sold on hire purchase during the year (at hire purchase price)	40,000
	Cash received during the year	28,000
	Goods received back (hire-purchase instalments not due Rs. 1,000) valued at	150
	Goods out on hire with customers (at hire purchase price)	18,000

Goods are hire sold on purchase at cost plus 60%. Prepare Hire purchase Trading Account and other connected ledger accounts in the financial books of Hire-Purchase Seller. (माल लागत में 60% जोड़कर किराया क्रय पर वेचा जाता है। किराया क्रय विक्रेता की पुस्तकों में किराया क्रय व्यापार खाता एवं अन्य सम्बन्धित खाते तैयार कीजिये।)

Solution : **Hire-Purchase Trading Account**

1966		Rs.	P.	1966		Rs.	P.
Jan. 1	To Hire Purchase Stock a/c	8,000	—	Jan. 1	By Stock Reserve a/c (Adjustment)	3,000	—
Dec. 31	To goods sold on hire purchase a/c	40,000	—	Dec. 31	By Cash a/c	28,000	—
„	To Stock Reserve a/c (Adjustment of Closing Stock on hire)	6,750	—	„	By Returned Stock a/c	150	—
„	To Gross Profit to P. & L. a/c	10,400	—	„	By Instalments overdue	1,000	—
				„	By Hire Purchase Stock a/c	18,000	—
					By Goods sold on hire purchase a/c (Adjustment)	15,000	—
		65,150	—			65,150	—

Memorandum Hire Purchase Customers Account

	Rs.	P.		Rs.	P.
To Balance b/d	8,000	—	By Cash received	28,000	—
To Goods sold	40,000	—	By Returned Stock (at hire purchase value,	1,000	—
			By Balance (closing)	18,000	—
			By Instalments Overdue (Balancing figure)	1,000	—
	48,000	—		48,000	—

Instalments overdue have been calculated by preparing Memorandum Hire–Purchase Customers A/c.

Other connected accounts would be as follows :

Hire–Purchase Stock Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Jan. 1	To Balance b/d	8,000	—	Jan. 1	By Hire Purchase Trandig a/c	8,000	—
Dec. 31	To Hire Purchase Trading a/c	18,000	—	Dec. 31	By Balance c/d	18,000	—
		26,000	—			26,006	—
1967							
Jan. 1	To Balance b/d	18,000					

Goods sold on Hire Purchase Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Dec. 31	To Hire Purchase Trading a/c	15,000	—	Dec. 31	By Hire Purchase Trading a/c	40,000	—
,,	ToGeneral Trading a/c	25,000	—				
		40,000	—			40,000	—

Cash Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966							
Dec. 31	To Hire-Purchase Trading a/c	28,000	—				

Returned Stock Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Dec. 31	To Hire-Purchase Trading a/c	150	—	Dec. 31	By Purchases a/c	150	—

Instalment Overdue Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Dec. 31	To Hire-Purchase Trading a/c	1,000	—	Dec. 31	By Balance c/d	1,000	—

Stock Reserve Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1966				1966			
Jan. 1	To Hire-Purchase Trading a/c	3,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	3,000	—
Dec. 31	To Balance c/d	6,750	—	Dec. 31	By Hire-Purchase Trading a/c	6,750	—
		9,750	—			9,750	—
				1967			
				Jan. 1	By Balance b/d	6,750	—

नोट :—(1) चूंकि गत वर्ष के अंत में 8,000 रु० का किराया-क्रय स्टॉक था, अतः इस पर 3,000 रु० का स्टॉक रिजर्व भी होगा। इसको स्टॉक रिजर्व खाते में प्रारम्भिक शेष के रूप में दिखलाया गया है।

(2) 31 दिसम्बर, 1966 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में 'Hire Purchase Stock Account' का शेष 18,000 रु० तथा Instalments Overdue Account का शेष 1,000 रु० सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखलाये जावेंगे। Stock Reserve Account का शेष 6,750 रु० Hire Purchase Stock Account की रकम में से घटा दिया जावेगा।

(3) अगले वर्ष 1 जनवरी 1967 को तैयार किये जाने वाले किराया-क्रय माल खाते (Hire Purchase Trading a/c) में Hire Purchase Stock a/c की रकम 18,000 रु० तथा Instalment Overdue की रकम 1,000 रु० डेबिट में दिखाई जायेगी तथा Stock Reserve a/c की रकम 6,750 रु० क्रेडिट पक्ष में दिखाई जायेगी।

Questions

✓1. On 1st January, 1962 M/s Vallabhbhai & Co. Ltd. took delivery from Gariwala Ltd. of 5 vans on hire-purchase system. Rs. 2,000 being paid on delivery and the balance in 5 instalments of Rs. 3,000 each, payable on 31st December each year. The vendors charge 5% p.a. interest on yearly balances. The cash value is Rs. 15,000. Show the details of this transaction in the books of both the parties.

1 जनवरी, 1962 को मैसर्स वल्लभभाई एण्ड कम्पनी ने, किराया-क्रय पद्धति पर, गाड़ी वाला लि० से 5 गाड़ियां खरीदीं। 2,000 रु० सुपुर्दगी पर दिये जायेंगे तथा 3,000 रु० वाली पांच किस्तों में शेष राशि का भुगतान किया जायेगा जोकि प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को देय होंगी। विक्रेता वार्षिक बाकियों पर 5 प्रतिशत वार्षिक के हिसाब से ब्याज वसूल करते हैं। रोकड़ी मूल्य 15,000 रु० है। दोनों पक्षों की पुस्तकों में इस सौदे के विवरणों को दिखाइये। [106]

Hint : There is an adjustment of Rs. 14.77. In the amount of interest included in the final instalment.

2. A colliery company hired wagons on hire-purchase system over a term of two years starting on 1st January, 1966. Instalments of Rs. 4,000 each were payable half yearly, first instalment being paid on 30th June, 1966. The cash value of the wagons at the time of the agreement was Rs. 14,870 and the Wagon Company charged interest at the rate of 6 per cent per annum with half-yearly rests.

Give the necessary ledger accounts to record the above transactions in the books of both the parties assuming that depreciation is charged on wagons @ 10% per annum on reducing instalment basis. How will the items appear in the Balance Sheet as at 31st December, 1966 ?

1 जनवरी, 1966 से प्रारम्भ होने वाले दो वर्षों की अवधि के लिए एक कोलीयरी कम्पनी ने, किराया-क्रय पद्धति पर वैगन खरीदे। 4,000 रु० वाली अर्द्धवार्षिक किस्तों में भुगतान किया जायेगा। प्रथम किस्त का भुगतान 30 जून, 1966 को होगा। अनुबन्ध के समय वैगनों का रोकड़ी मूल्य 14,870 रु० था और वैगन कम्पनी अर्ध वर्ष के अन्तर से 6 प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज वसूल करती है।

यह मानते हुए कि क्रमागत ह्रास पद्धति के आधार पर वैगनों पर 10 प्रतिशत वार्षिक ह्रास अपलिखित किया जाता है, दोनों पक्षों की पुस्तकों में सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक लेजर खाते बनाइये। 31 दिसम्बर, 1966 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में मदें किस प्रकार दिखलाई जावेंगी ? [107]

Ans. Balance of Wagons a/c on 31-12-1967—Rs. 12,044-70; Wagons shown in the Balance Sheet on 31-12-1966—Rs. 5,727-42 net.)

3. On 1st January, 1965 the Agri-pump Manufacturing Company sold on hire-purchase Pump Sets to the Co-operative Farming Association. The cash price of the pumps was Rs. 18,625.

The arrangement was that the Association was to pay Rs. 5,000 on the date of purchase and execution of the agreement. Further, three instalments of Rs. 5,000 each were also to be paid on 31st December, 1965, 1966 and 1967 respectively. The seller company is entitled to charge 5 percent interest per annum.

Pass journal entries and write up ledger accounts in the books of Co-operative Farming Association assuming that depreciation is to be charged at 20 percent per annum on Fixed Instalment basis.

Also write up the account of the Co-operative Farming Association in the books of the Agri-pump Manufacturing Company.

1 जनवरी, 1965 को एग्रो-पम्प निर्माता कम्पनी ने कॉपरेटिव फार्मिंग एसोशिएशन को किराया क्रय पर पम्पों के सैट वेचे। पम्पों का रोकड़ी मूल्य 18,625 रु० था।

व्यवस्था यह की गई कि क्रय एवं अनुबन्ध पालन की तिथि को एसोशिएशन 5,000 रु० का भुगतान करेगी। आगे, 5,000 रु० वाली तीन किस्तों का क्रमशः 31 दिसम्बर, 1965, 1966 एवं 1967 को भुगतान किया जावेगा। विक्रेता कम्पनी 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज वसूल करने का अधिकार रखती है।

कॉपरेटिव फार्मिंग एसोशिएशन की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियाँ दिखाइये तथा लेजर खाते भी बनाइये। स्थायी किस्त पद्धति के आधार पर 20 प्रतिशत वार्षिक ह्रास अपलिखित किया जाता है।

एग्रो-पम्प निर्माता कम्पनी की पुस्तकों में कॉपरेटिव फार्मिंग एसोशिएशन का खाता भी खोलिए। [108]

Ans. Balance of Pump Sets a/c on 31-12-67—Rs. 7,450.

✓4. A firm of coal merchants purchased wagons on hire-purchase system over a period of four years, Rs. 6,000 were payable on delivery (1st January, 1964) and the balance by annual instalments of Rs. 6,000 each on 31st December. The vendors charged 5% per annum interest on the yearly balances. The cash price of the wagons on delivery was Rs. 27,300. Depreciation at 10% on the diminishing balance was written off each year.

Write up the accounts in the purchaser's books and show how they would appear in its Balance Sheet on 31st December, 1965?

कोयला व्यापारियों की एक फर्म ने चार वर्ष की अवधि के लिए, किराया-क्रय पद्धति पर वैगन खरीदे। सुपुर्दगी की तिथि (1 जनवरी, 1964) पर 6,000 रु० का भुगतान होगा तथा शेष राशि का 31 दिसम्बर को 6,000 रु० वाली वार्षिक किस्तों में भुगतान किया जायेगा। वार्षिक बाकियों पर विक्रेता 5 प्रतिशत वार्षिक ब्याज वसूल करते हैं। सुपुर्दगी पर वैगनों का रोकड़ी मूल्य 27,300 रु० था। क्रमागत ह्रास पद्धति पर 10 प्रतिशत ह्रास प्रत्येक वर्ष के अन्त में अपलिखित किया जाता है।

क्रेता की पुस्तकों में खाते खोलिए तथा बतलाइये कि 31 दिसम्बर, 1965 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में ये किस प्रकार दिखलाये जायेंगे। (109]

Ans. Wagons shown in the Balance Sheet on 31.12.65—Rs. 10,929·75 net.

✓5. Lucky Machinery Mart had purchased a machinery on hire-purchase system from Ideal Engineering Company. The terms are that they would pay Rs. 8,000 down on signing of the agreement and 5 annual instalments of Rs.5,500 each, commencing from the beginning of the next year. The cash value of machinery was Rs. 28,850. The purchasers had charged depreciation at the rate of 10 per cent per annum on cost under diminishing balance. At the end of five years, the machinery was sold for Rs. 15,000 cash. The sellers had charged interest at the rate of 10 per cent per annum.

Show the necessary accounts for five years in the books of both the parties assuming that the purchasers decide to maintain asset accrual basis.

लक्की मशीनरी मार्ट ने आइडियल इन्जीनियरिंग कम्पनी से किराया-क्रय पद्धति पर एक मशीनरी खरीदी। शर्तें इस प्रकार थीं कि अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करते समय वे 8,000 रु० का भुगतान करेंगे तथा अगले वर्ष से प्रारम्भ होकर 5,500 रु० वाली 5 वार्षिक किस्तें चुकायेंगे। मशीनरी का रोकड़ी मूल्य 28,850 रु० था। क्रेताओं ने, क्रमागत ह्रास पद्धति के आधार पर, 10 प्रतिशत वार्षिक दर से मूल्य ह्रास अपलिखित किया था। पांच वर्ष के अन्त में मशीनरी को 15,000 रु० नकद में बेच दिया गया। विक्रेताओं ने 10 प्रतिशत वार्षिक दर पर ब्याज वसूल किया था।

क्रेता 'सम्पत्ति अर्जित विधि' अपनाने का निश्चय करते हैं। दोनों पक्षों की पुस्तकों में पांच वर्ष के आवश्यक खाते खोलिये। [110]

Ans. Loss on sale of Machinery—Rs. 2,035-63.

(Hint : It has been assumed that the machine was purchased at the beginning of the first year.)

✓6. Transport Ltd. purchased a truck on 1st January. 1965 on hire-purchase basis from Rajasthan Motors Ltd. The cash price was Rs. 30,000. Rs. 12,000 is payable as immediate deposit, the balance being payable by 12 quarterly instalments of Rs. 1,890 each falling due from April 1, 1965. The financial year of both the parties ends on 30th June.

The purchasers decide to charge depreciation @ 20% per annum on cost on Fixed Instalment basis. Show the necessary accounts in the books of both the parties.

ट्रांसपोर्ट लिमिटेड ने राजस्थान मोटर्स लिमिटेड से किराया-क्रय आधार पर 1 जनवरी, 1965 को एक ट्रक खरीदा। रोकड़ी मूल्य 30,000 रु० था। 12,000 रु० तुरन्त जमा कराये जायेंगे तथा शेष राशि का 1,890 रु० वाली 12 तिमाही किस्तों में भुगतान होगा। प्रथम किस्त 1 अप्रैल, 1965 को देय होगी। दोनों पक्षों का आर्थिक वर्ष 30 जून को समाप्त होता है।

क्रेताओं ने स्थायी किस्त पद्धति के आधार पर 20 प्रतिशत वार्षिक दर से ह्रास अपलिखित करने का निर्णय किया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिये। [111]

Ans. Balance of Truck Account as on June 30, 1968 Rs. 9,000; Interest for first quarter—Rs. 720 and for last quarter—Rs. 60.)

✓7. On 1st January, 1966 Krishna Brothers supplied a motor vehicle to X on hire-purchase system. The cash selling price was Rs. 24,500. According to the terms of the agreement, Krishna Brothers was to receive four half-yearly instalments of Rs. 8,000 each, the first payment to be made on 30th June, 1966. The sellers guaranteed to repair the motor vehicle free of charge for two years.

The motor vehicle cost Rs. 21,800 to Krishna Brothers and they decide to carry forward one-third of the profit to a separate account making provision for service of repairs. The actual repair charges were as follows : First half year Nil; Second half year—Rs. 100; Third half year —Rs. 250 and fourth half year Rs. 500.

Show by means of ledger accounts how these transactions would be recorded in the books of Krishna Brothers. How the items will appear in his Balance Sheet on 31st December, 1966.

1 जनवरी, 1966 को कृष्णा ब्रदर्स ने एक्स को किराया-क्रय पद्धति पर एक मोटर गाड़ी दी। रोकड़ी विक्रय मूल्य 24,500 रु० था। अनुबन्ध की शर्तों के अनुसार, कृष्णा ब्रदर्स को 8,000 रु० वाली चार अर्ध वार्षिक किस्तें प्राप्त होनी थीं। प्रथम किस्त का भुगतान 30 जून, 1966 को होना था। विक्रेताओं ने मोटर गाड़ी की दो वर्ष तक मुफ्त मरम्मत कराने की गारन्टी दी है।

कृष्णा ब्रादर्स को मोटर गाड़ी का लागत मूल्य 21,800 रु० पड़ा था और उन्होंने लाभ का एक तिहाई भाग, मुफ्त मरम्मत के प्रावधान करने के लिए, एक अलग खाते में ले जाने का निश्चय किया है। मरम्मत के वास्तविक खर्चे इस प्रकार थे:—प्रथम छमाही–कुछ नहीं; द्वितीय छमाही-100 रु०; तृतीय छमाही-250 रु० तथा चतुर्थ छमाही-500 रु०।

कृष्णा ब्रदर्स की पुस्तकों में लेजर खाते खोल कर इन सौदों को दर्ज कीजिये। 31 दिसम्बर, 1966 को तैयार किये जाने वाले उसके चिट्ठे में मदें किस प्रकार दिखलाई जावेंगी। [112]

Answer : Balance of Provision for Repairs a/c on 31st Dec. 1967 —Rs. 50.

8. On 1st January, 1963 Vimco Drycleaners purchased a plant on hire-purchase system. According to the terms of the agreement Rs. 3,000 was to be paid on the signing of the contract. The balance was to be paid in four annual instalments of Rs. 1,500 each plus interest. The cash price of the plant was Rs. 9,000. Interest chargeable on outstanding balances was 6 percent per annum. Vimco Drycleaners decide to write off depreciation at 10 percent per annum on straight line method.

You are required to prepare relevant accounts in the books of Hire-Purchasers. How will the Plant account Appear in the Balance Sheet as at 31st December, 1964 ?

1 जनवरी, 1963 को विमको ड्राई क्लीनर्स ने किराया-क्रय पद्धति पर एक प्लान्ट खरीदा। अनुबंध की शर्तों के अनुसार, 3,000 रु० अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करते समय, दिये जायेंगे। शेष राशि का, 1,500 रु० वाली चार वार्षिक किस्तों (व्याज अलग) में भुगतान किया जायेगा। प्लान्ट का रोकड़ी मूल्य 9,000 रु० था। बकाया राशियों पर 6 प्रतिशत वार्षिक दर से व्याज वसूल किया जाना था। विमको ड्राईक्लीनर्स सीधी रेखा पद्धति पर 10 प्रतिशत वार्षिक ह्रास अपलिखित करने का निर्णय करते हैं।

आपको किराया-क्रेता की पुस्तकों में सम्बन्धित खाते खोलने हैं। 31 दिसम्बर, 1964 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में प्लान्ट खाता किस प्रकार दिखलाया जायेगा। [113]

Answer : Plant shown in Balance Sheet on 31-12-64—Rs. 4,200 net.

9. Enterprises Ltd. purchased a machinery on 1st January, 1966 on the hire-purchase system. Terms of payments were—Rs. 4,000 half-yearly for two years, the first payment to be made on 30th June, 1966. The cash selling price was Rs. 14,900. Rate of interest was charged at 6% per annum. Enterprises Ltd. decide to write off 20% depreciation and close its books on 30th June every year.

The hire-purchasers could not pay the instalment due on 30th June, 1967. As a consequence, the hire vendor took possession of the machinery on 2nd July,

1967 waiving interest for two days. The sellers revalue the machinery at Rs. 3,500. After negotiations, the hire-vendor received on 25th July, 1967 the instalment due on 30th June, 1967 from Enterprises Ltd.

Give necessary Journal entries and ledger accounts in the books of both the parties.

एन्टरप्राइजेज लिमिटेड ने, 1 जनवरी, 1966 को, किराया-क्रय पद्धति पर एक मशीन खरीदी। भुगतान की शर्तें इस प्रकार थी—दो वर्ष तक 4,000 रु० छमाही का भुगतान; प्रथम भुगतान 30 जून, 1966 को किया जायेगा। रोकड़ी विक्रय मूल्य 14,900 रु० था। ब्याज की दर 6 प्रतिशत वार्षिक थी। एन्टरप्राइजेज लिमिटेड ने 20 प्रतिशत ह्रास अपलिखित करने का निश्चय किया। उनकी पुस्तकें प्रति वर्ष 30 जून को बन्द की जाती हैं।

किराया-क्रेता 30 जून, 1967 को देय होने वाली किस्त का भुगतान नहीं कर सके। परिणाम-स्वरूप विक्रेता ने 2 जुलाई 1967 को (दो दिन के व्याज का त्याग करते हुए) मशीन को अपने अधिकार में ले लिया। विक्रेता ने मशीन का 3,500 रु० पर पुनर्मूल्यांकन किया। बातचीत के बाद, विक्रेता को 25 जुलाई, 1967 को उस किस्त का पूर्ण भुगतान मिल गया जोकि एन्टरप्राइजेज लिमिटेड द्वारा 30 जून, 1967 को देय थी।

दोनों पक्षों की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां तथा खाते दीजिये, [114]

Ans. : Loss on return of Machinery—Rs. 6,810; Loss on repossession of Stock Rs. 418.

10. Rajasthan Transport Company, Jaipur purchased from Kohinoor Motors Ltd., Delhi five trucks on hire-purchase system. The cash-down price for each truck was Rs. 10,000. The price was payable as to Rs. 2,200 for each truck on signing of the contract (1st January, 1954) and the rest in four equal annual instalments of Rs. 2,200 for each truck. The instalments included interest charged at 5 percent per annum. Rajasthan Transport Company write off depreciation at 20% per annum on the diminishing balance basis.

After paying the two annual instalments, Rajasthan Transport Company discontinued payment of instalments in respect of two trucks and returned them to the sellers on 2nd January, 1956 according to the terms of the agreement. The sellers did not charge interest for two days. The agreement with regard to the other three trucks was, however, duly carried out.

Show the necessary accounts in the books of Rajasthan Transport Company for the period from 1st January, 1954 to 31st December, 1957.

राजस्थान ट्रांसपोर्ट कम्पनी, जयपुर ने कोहिनूर मोटर्स लिमिटेड, देहली से किराया-क्रय पद्धति पर पाँच ट्रक खरीदे। प्रत्येक ट्रक का रोकड़ी मूल्य 10,000 रु० था। मूल्य का भुगतान इस प्रकार किया

जाना था–अनुबन्ध के हस्ताक्षर के समय (1 जनवरी, 1954) 2,200 रु० प्रति ट्रक के लिये। शेष राशि का 2,200 रु० (प्रति ट्रक) वाली चार वार्षिक किस्तों में भुगतान किया जायेगा। किस्तों में 5 प्रतिशत वार्षिक दर पर निकाला गया ब्याज सम्मिलित था। राजस्थान ट्रांसपोर्ट कम्पनी, क्रमागत ह्रास पद्धति के आधार पर, 20 प्रतिशत वार्षिक ह्रास अपलिखित करती है।

दो वार्षिक किस्तें चुका देने के बाद राजस्थान ट्रांसपोर्ट कम्पनी ने दो ट्रकों से सम्बन्धित किस्तों का भुगतान बन्द कर दिया तथा 'अनुबन्ध की शर्तों के अनुसार' 2 जनवरी, 1956 को इन ट्रकों को विक्रेता को लौटा दिया। विक्रेता ने दो दिन का ब्याज वसूल नहीं किया। शेष तीन ट्रकों के सम्बन्ध में अनुबन्ध का पूर्णतया पालन किया गया।

1 जनवरी, 1954 से 31 दिसम्बर, 1957 तक की अवधि के लिये राजस्थान ट्रांसपोर्ट कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक खाते दिखाइये। [115]

Ans : Loss on return of two trucks—Rs. 4,621

11. A Ltd. entered into a hire-purchase agreement with B Ltd. for the purchase of 10 wagons over a period of three years from 1st January 1964 by half-yearly instalments of Rs. 925 payable on 30th June and 31st December each year, the cash price being Rs. 500 per wagon and the rate of interest at 6 percent per annum with half-yearly rest.

On 1st January 1965 after paying two instalments A Ltd. transferred his right in the agreement to C Ltd. for a consideration of Rs. 1,200. C Ltd. paid the sum to A Ltd. on 1st January, 1965 and the next instalment to B Ltd. on the due date. Show in the form of Journal entries how the transactions should appear in the books of C Ltd. upto 30 the June, 1965 writing off depreciation at the rate of 15% per annum. Also show wagons a/c and the account of B Ltd. in the books of A Ltd.

ए लिमिटेड बी लिमिटेड से 10 वैगन खरीदने के लिए, 1 जनवरी,1964 से 2 वर्ष की अवधि के लिए 925 रु० की छमाही किस्तों द्वारा 30 जून और 31 दिसम्बर को देय, किराया-क्रय समझौता करते हैं। रोकड़ मूल्य 500 रु० प्रति वैगन है और ब्याज अर्धं वार्षिक शेष पर 6% की दर से हैं।

दो किस्तों का भुगतान करने के पश्चात् 1 जनवरी, 1965 को ए लिमिटेड ने समझौते में अपने अधिकार सी लिमिटेड को 1,200 रु० प्रतिफल के बदले में हस्तान्तरित कर दिये। सी लिमिटेड ने 1 जनवरी 1965 को यह राशि ए लिमिटेड को और अगली किस्त की राशि देय तिथि को बी लिमिटेड को चुका दी। 15% वार्षिक की दर से ह्रास अपलिखित करते हुये इन व्यवहारों की 30 जून, 1965 तक सी लिमिटेड की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। ए लिमिटेड की पुस्तकों में वैगन खाता और बी लिमिटेड का खाता दिखाइये। [116]

Ans. Purchase consideration of C Ltd.—Rs. 3,426-75 due to B Ltd. plus Rs. 1,200 due to A Ltd. Total Rs. 4,626-75

12. On 1st April, 1964, a manufacturing company buys on the hire-purchase system a plant for Rs. 35,000 payable as to Rs. 5,000 down and the balance in there equal annual instalments to include interest at the rate of 5 per cent per annum.

Calculate the amount of cash selling price and show the necessary accounts for three years in the manufacturing company ledger. The manufacturing company decides to write off depreciation at 10 per cent per annum on written down value. (The present value of an annuity of Re. 1 for three years at 5 percent per annum is Rs. 2·72325.)

1 अप्रैल, 1964 को एक उत्पादक कम्पनी किराया क्रय विधि के अन्तर्गत 35,000 रु० की एक प्लांट खरीदती है जिसके 5,000 रु० तुरन्त और शेष मूलधन और व्याज शामिल करते हुए तीन बराबर की वार्षिक किस्तों में देय है। किस्त में 5% वार्षिक दर से व्याज शामिल है।

नकद विक्रय-मूल्य की गणना कीजिए और उत्पादक कम्पनी की खाता वही में तीन वर्षों के लिए आवश्यक खाते दिखाइये। उत्पादक कम्पनी क्रमागत ह्रास विधि से 10% वार्षिक की दर पर ह्रास अपलिखित करने का निश्चय करती है। 5% वार्षिक दर से तीन वर्ष के लिए 1 रु० की वार्षिक वृत्ति का वर्तमान मूल्य 2·72325 रु० है। (117)

Ans. : Cash selling price—Rs. $(10,000 \times 2{\cdot}72325) +$ Rs. 5,000
=Rs. 32,232·50

13. On 1st January, 1964 X company purchased motor cars on the hire-purchase system. The cash price was Rs. 29,800 and the payment was to be made as follows :—

Rs. 8,000 was to be paid on signing of the agreement and the balance in three equal annual instalments at the end of each year with five percent interest per annum. X Company wrote off depreciation @ 15% per annum on reducing instalment basis.

Enter the foregoing transactions in the books of X company assuming that Rs. 2.725 is the present value of Re. 1 payable each year over three years a 5 per cent per annum.

1 जनवरी, 1964 को एक्स कम्पनी ने किराया-क्रय विधि के अन्तर्गत मोटर-कार खरीदी। इसका नकद-मूल्य 29,800 रु० था और भुगतान निम्नलिखित प्रकार से देय था:—

8,000 रु० समझौते पर हस्ताक्षर करते समय और शेष 5% वार्षिक व्याज सहित प्रत्येक वर्ष के अन्त में तीन बराबर की वार्षिक किस्तों में। एक्स कम्पनी ने 15% वार्षिक दर पर क्रमागत ह्रास विधि से ह्रास अपलिखित किया।

यह मानते हुये कि 5% वार्षिक दर से तीन वर्ष तक प्रतिवर्ष देय एक रुपये का वर्तमान मूल्य 2.725 रु० है, एक्स कम्पनी की पुस्तकों में उपरोक्त व्यवहारों का लेखा कीजिए। [118]

Ans. Amount of annual instalment Rs. 8,000 calculated as:

Rs. $\dfrac{29,800-8,000}{2.725}$; Adjustment of Final Interest—Rs. 16.23

14. Krishi Ltd. acquire a tractor for Rs. 11,000 on January 1, 1964. The Agricultural Finance Corporation finance the purchase. Krishi Ltd. pay them Rs. 2,000 on January 1, 1964 and instalments (inclusive of interest) of Rs. 3,000 at the end of each year. Interest is charged at 5 per cent per annum.

On January 1, 1966 the tractor was sold for Rs. 5,000 only. The debt of the Agricultural Finance Corporation was discharged on the date.

Show the Tractor Account and the Account of the Agricultural Finance Corporation in the ledger of Krishi Ltd. Allow a depreciation of 10 per cent on the diminishing balance.

1 जनवरी, 1964 को कृषि लिमिटेड 11,000 रु० में एक ट्रैक्टर प्राप्त करती है। कृषि वित्त निगम इस क्रय के लिए अर्थ-व्यवस्था करता है। कृषि लिमिटेड 1 जनवरी, 1964 को उसे 2,000 रु० और प्रत्येक वर्ष के अन्त में 3,000 रु० की किस्तें (व्याज शामिल करते हुए) चुकाती है। व्याज 5% वार्षिक दर से वसूल किया जाता है।

1 जनवरी, 1966 को ट्रैक्टर 5,000 रु० में बेच दिया जाता है। इस तारीख को कृषि वित्त निगम का कर्ज भी चुका दिया जाता हैं।

कृषि लिमिटेड की खाता-वही में ट्रैक्टर का खाता और कृषि वित्त निगम का खाता दिखाइये। घटते हुए शेष पर 10% की दर से मूल्य ह्रास अपलिखित कीजिए। [119]

Ans. : Loss on sale of Tractor Rs. 3,910.

15. X Ltd. sold goods to A for Rs. 1,500 and to B for Rs. 1,000; the gross profit being 20 per cent on selling price. A is to pay six monthly instalments of Rs. 250 each and B ten monthly instalments of Rs. 100 each. At the end of the accounting period i.e. 31st December, 1966. A had paid two and B five instalments. B was in arrear for one instalment.

Show Hire Purchase Trading Account and the personal accounts of A and B in the books of X Ltd.

एक्स लिमिटेड ने ए को 1,500 रु० का और बी को 1,000 रु०का माल बेचा। सकल लाभ विक्रय मूल्य पर 20% है। ए को 250 रु० की 6 माहवारी किस्तें और बी को 100 रु० की 10 माहवारी किस्तें देनी हैं। लेखा-काल के अन्त में अर्थात् 31 दिसम्बर, 1966 को ए ने 2 और बी ने 5 किस्तें चुकादी थीं। बी में एक किस्त बकाया थी।

एक्स लिमिटेड की पुस्तकों में किराया–क्रय–व्यापार–खाता और ए तथा बी के व्यक्तिगत खाते दिखाइये। (120)

Ans. : Profit Rs. 220/–. Amounts due from A Rs. 1,000 and from B Rs. 400; Cost of Stock out on hire Rs. 1,120.

16. The following figures have been extracted from the books of a trader who sells goods of small value under hire-purchase system:—

1964		Rs.
Jan. 1	Stock out on hire at Hire Purchase price	20,000
	Stock in hand at shop	2,500
	Instalments overdue (customers still paying)	1,500
Dec., 31	Stock out on hire at Hire Purchase price	23,000
	Stock in hand at shop	3,500
	Instalments overdue (customers still paying)	2,500
	Purchases during the year	34,000
	Instalments received during the year	40,000

Assuming his Gross Profit to be 25% on Hire–Purchase price, prepare Hire Purchase Trading Account for the year 1964.

एक व्यापार जो किराया–क्रय विधि के अन्तर्गत अल्प–मूल्य का माल वेचता है, की पुस्तकों से निम्नलिखित आंकड़े प्राप्त किये गये—

1964		रु०
जनवरी 1	किराया क्रय–मूल्य पर वाहर रहा स्टॉक	20,000
	दुकान पर स्टॉक	2,500
	वकाया किस्तें (ग्राहक अभी चुका रहे हैं)	1,500
दिसम्वर, 31	किराया-क्रय-मूल्य पर वाहर रहा स्टॉक	23,000
	दुकान पर स्टॉक	3,500
	वकाया किस्तें (ग्राहक अभी चुका रहे हैं)	2,500
	वर्ष के क्रय	34,000
	वर्ष में प्राप्त किस्तें	40,000

यह मानते हुए कि उसका सकल लाभ किराया-क्रय-मूल्य पर 25% है, वर्ष 1964 के लिए किराया-क्रय व्यापार खाता वनाइये। (121)

Ans.: Profit—Rs. 10,250.

17. Mr. Ram sold out goods on Hire-purchase at a profit (including hire-purchase charges) of 25 per cent on cost price. From the following details make out Hire Purchase Trading a/c:—

Stock in Godown Rs. 30,000 (opening) and Rs. 25,000 (closing)

Goods out on Hire-Purchase (opening) at hire-purchase price	Rs. 36,000
Purchases	,, 64,600
Goods sent out during the year	,, 87,000
Instalments received	,, 60,000

Overdue instalments (opening) Rs. 2,000 and (closing) Rs. 3,000

राम ने लागत मूल्य पर 25% लाभ (किराया-क्रय खर्चों सहित) से किराया-क्रय विधि के अन्तर्गत माल वेचा। निम्नलिखित विवरण से किराया-क्रय व्यापार खाता बनाइये :—

गोदाम में स्टॉक 30,000 रु० (प्रारम्भिक) और 25,000 रु० (अंतिम)	
किराया-क्रय पर बाहर माल (किराया-क्रय मूल्य पर)	36,000 रु०
क्रय	64,600 रु०
वर्ष में माल भेजा	87,000 रु०
किस्तें प्राप्त हुईं	60,000 रु०
बकाया किस्तें 2,000 रु० (प्रारम्भिक) और 3,000 रु० (अंतिम)।	[122]

Ans. : Profit—Rs.12,200 ; Goods out on hire-purchase at the close of the year Rs. 62,000 at hire-purchase price.

18. X Ltd. has a Hire Purchase Department. Goods are sold on hire purchase at cost plus 60%. From the following particulars, find out the profit or loss made by this department :

1967		Rs.
Jan. 1	Goods out on Hire Purchase (at hire purchase price)	16,000
	Goods sold on hire purchase during the year (at hire purchase price)	80,000
	Cash received during the year	56,000
	Goods received back (Hire-purchase value Rs.2,200) valued at	300
	Goods with Hire Purchase customers (at hire purchase price)	36,000

एक्स लिमिटेड के पास एक किराया-क्रय-विभाग है। किराया-क्रय पर माल लागत पर 60% जोड़कर वेचा जाता है। निम्नलिखित विवरण से इस विभाग की लाभ अथवा हानि बताइये :—

1967		रु०
जनवरी 1	किराया-क्रय मूल्य पर बाहर माल	16,000
	किराया क्रय मूल्य पर वर्ष में वेचा गया माल	80,000
	वर्ष में नकद प्राप्ति	56,000
	माल वापस आया (किराया-क्रय मूल्य 2,200 रु०) मूल्य लगाया गया	300
	किराया-क्रय ग्राहकों के पास किराया- क्रय–मूल्य पर माल	36,000

[123]

Ans : Profit—Rs. 20,600 ; Instalments due at the end—Rs. 1,800

(Hint : Hire-Purchase value of returned goods will be credited to Memorandum Hire-purchase Customers' Account to find out instalments due at the end.)

19. R and Co. sell goods of small value on hire purchase at cost plus 50 per cent. From the following particulars, prepare Hire-Purchase Trading a/c in the books of R and Co.

1967			Rs.
Jan.	1	Stock out with Hire-purchase customers at selling price	9,000
		Stock at shop (at cost)	18,000
		Instalments due	5,000
Dec.	31	Cash received from customers	60,000
		Goods repossessed (Instalments not yet due Rs. 2,000) as valued	500
		Instalments due, customers still paying	9,000
		Stock at shop at cost (excluding repossessed goods)	20,000
		Goods purchased during the year	60,000

आर एण्ड कम्पनी लागत में 50% जोड़कर किराया-क्रय विधि से अल्प-मूल्य का माल बेचते हैं। निम्नलिखित विवरण से आर एण्ड कम्पनी की पुस्तकों में किराया-क्रय व्यापार खाता बनाइये—

1967		रु०
जनवरी—1	किराया-क्रय-ग्राहकों के पास स्टॉक (विक्रय मूल्य पर)	9,000
	दूकान पर स्टॉक (लागत पर)	18,000
	बकाया किस्तें	5,000
दिसम्बर—31	ग्राहकों से प्राप्त नकद	60,000
	माल वापस प्राप्त हुआ (अभी तक अदेय किस्तें 2,000 रु०) मूल्य लगाया गया	500
	किस्तें बकाया (ग्राहक अभी चुका रहे हैं)	9,000
	दुकान पर स्टॉक (लागत मूल्य पर) वापस आये माल के अलावा	20,000
	वर्ष में खरीदा गया माल	60,000

(124)

Ans. : Profit—Rs. 20,500; Stock out on hire at the end of the year at Hire Purchase Price—Rs. 30,000.

(Hint : Instalments not yet due Rs. 2,000 is the hire purchase value of repossessed goods; goods sold on hire purchase during the year at H. P. Price—Rs. 87,000.)

20. The Rajasthan Furniture Mart sell furniture on hire-purchase basis. The following informations are available from his account books. (दी राजस्थान फर्नीचर मार्ट किराया क्रय पद्धति पर फर्नीचर बेचते हैं। उनकी लेखा पुस्तकों से निम्नलिखित सूचनायें उपलब्ध हैं)—

1967		Rs.
Jan. 1	Stock out on hire (at invoice price)	1,00,000
	Stock at shop	12,500
	Instalments overdue-customers still paying	7,500
	Cash in hand	1,500
	Cash at Bank	5,000
	Other Assets	23,500
Dec. 31	Stock out on hire (at invoice price)	1,15,000
	Stock at shop	17,500
	Instalments overdue-customers still paying	12,500
	Cash purchases	1,70,000
	Instalments received in cash	2,00,000
	Advertising expenses	1,000
	Repairs	500
	Local Taxes	150
	Other Expenses	1,250
	Depreciation	2,350

Assuming that a gross profit of 25 per cent on invoice price is charged by Rajasthan Furniture Mart, prepare Trading Account and Profit & Loss Account for the year ending 31st December, 1967 and a Balance Sheet as on that date.

(यह मानते हुए कि राजस्थान फर्नीचर मार्ट बीजक मूल्य पर 25% सकल लाभ कमाते हैं, उनका 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये व्यापारिक खाता, एवं लाभ-हानि खाता तथा उसी दिन का चिट्ठा तैयार कीजिये।) [125]

Answer : Gross profit as per Hire Purchase Trading a/c Rs. 51,250; Net profit Rs. 46,000; B/s Total Rs. 1,71,000.

6

किस्त भुगतान खाते
(Instalment Payment Accounts)

क्रेता एवं विक्रेता के मध्य विक्री का सौदा होने पर, यदि मूल्य का भुगतान किस्तों में चुकाया जाता है तो उसे किस्त भुगतान पद्धति (Instalment Payment System) कहा जाता है।* इस प्रकार के सौदों की निम्न विशेषतायें होती हैं :—

(i) प्रसंविदा होते ही माल का स्वामित्व क्रेता को हस्तांतरित हो जाता है।

(ii) क्रेता द्वारा मूल्य का भुगतान एक साथ न चुका कर किस्तों में चुकाया जाता है।

(iii) माल की सुपुर्दगी, क्रेता को, सौदा होते ही या तुरन्त वाद दे दी जाती है तथा वह माल का स्वामी (Owner) होता है।

(iv) किस्तों के भुगतान में दोष करने पर अथवा विक्री के समझौते की शर्तों का उल्लंघन करने पर विक्रेता द्वारा माल पर कब्जा नहीं किया जा सकता बल्कि अदत्त रकम (Price Unpaid) वसूल करने की कार्यवाही की जा सकती है।

किराया-क्रय पद्धति एवं किस्त-भुगतान पद्धति में अन्तर
(Difference between Hire Purchase and Instalment Payment System):—

इन दोनों पद्धतियों में केवल एक ही समानता पाई जाती है कि क्रेता द्वारा मूल्य का भुगतान किस्तों में चुकाया जाता है तथा उसका उद्देश्य माल को खरीदना है। किन्तु वैधानिक (Legal) तथा लेखाशास्त्र (Accountancy) के दृष्टिकोण से इन दोनों में बहुत अन्तर है, जो निम्नलिखित है :—

वैधानिक दृष्टिकोण से अन्तर :—

अन्तर का आधार	किराया-क्रय पद्धति	किस्त भगतान पद्धति
(i) समझौते की प्रवृत्ति :	यह किराये पर देने का समझौता है।	यह विक्री का समझौता है।
(ii) अधिनियम :	भारत में अभी तक अलग से अधिनियम नहीं है।	माल की बिक्री अधिनियम लागू होता है।
(iii) स्वामित्व का हस्तांतरण	समझौते की शर्त के अनुसार मूल्य की अन्तिम किस्त के भुगतान पर हो जाता है।	प्रसंविदा होते समय ही स्वामित्व का हस्तान्तरण हो जाता है।

---

* In the transaction of sale between the buyer and the seller, if price is to be paid in instalments, it is known as 'Instalment Payment System.'

(iv) क्रेता के अधिकार	माल को लौटाने व समझौता समाप्त करने का विकल्प रहता है।	ऐसा कोई विकल्प नहीं रहता।
(v) विक्रेता के अधिकार :	क्रेता द्वारा दोष होने पर माल पर पुनः कब्जा कर सकता है तथा देय किन्तु भुगतान न की गई रकम को वसूल करने की कार्यवाही कर सकता है।	क्रेता द्वारा दोष होने पर अदत्त रकम को वसूल करने की कार्यवाही कर सकता है, माल पर पुनः कब्जा नहीं।
(vi) तीसरे पक्ष के अधिकार	मूल विक्रेता को पूर्ण भुगतान न होने तक माल का स्वत्व व स्वामित्व नहीं मिल सकता चाहे सद्‌विश्वास में खरीदा हो।	सद्‌विश्वास में खरीदने वाले को अच्छा स्वत्व मिल सकता है।

लेखाशास्त्र के दृष्टिकोण से अन्तर :—

(i) अदेय मूल्य की प्रकृति (Nature of amount not due)	विक्रेता की पुस्तकों में 'बाहर गया माल' (Goods out on hire) माना जाता है।	विक्रेता की पुस्तकों में पुस्तक ऋण (Book debt) समझा जाता है।
(ii) दोनों का सम्बन्ध	किरायेदार एवं स्वामी का सम्बन्ध होने के कारण, क्रेता की पुस्तकों में विक्रेता का खाता खोलने की आवश्यकता नहीं है, किन्तु विक्रेता की पुस्तकों में क्रेता का खाता खोलना आवश्यक है।	ऋणी एवं ऋण दाता का सम्बन्ध होने के कारण दोनों की पुस्तकों में एक दूसरे का व्यक्तिगत खाता खोलना आवश्यक है।
(iii) डूबत ऋण सम्बन्धी हानि के लिए प्रावधान :	माल पर पुनर्कब्जा करने के अधिकार होने के कारण प्रायः डूबत ऋण सम्बन्धी हानि के लिए प्रावधान करने की आवश्यकता नहीं है।	वट्टे खाते रकम डूबने के लिये प्रावधान करने की आवश्यकता है।
(iv) चिट्ठे में निरूपण	क्रेता के चिट्ठे में, 'विक्रेता को अदेय रकम' सम्पत्ति के क्रय मूल्य में से घटाकर दिखलाई जाती है।	माल के क्रय मूल्य को सम्पत्ति पक्ष की ओर तथा विक्रेता को अदत्त रकम दायित्व पक्ष की ओर दिखलाई जाती है।

क्रेता एवं विक्रेता की पुस्तकों में लेखे (Accounting records):—

क्रेता की पुस्तकें (Purchaser's Books):—किस्त भुगतान पद्धति में क्रेता सौदे की तिथि से ही उसका स्वामी हो जाता है, अतः वह उस तिथि से ही विक्रेता को अपना ऋणी मान लेता है और उधार क्रय की भांति लेखा प्रविष्टियां करता है। समस्त किस्तों पर देय मूल्य तथा रोकड़ी मूल्य

का जो अन्तर होता है, उसे सौदे की तिथि को ही ब्याज उचंती खाते (Interest Suspense Account) में डेबिट कर दिया जाता है तथा विभिन्न किस्तों पर देय होने वाले ब्याज को उस समय पर विक्रेता के खाते में क्रेडिट न किया जाकर ब्याज उचंती खाते में क्रेडिट किया जाता है। चूंकि किस्त भुगतान पद्धति के सौदे में माल को वापस करने या लेने का विकल्प नहीं होता, अतः माल के मूल्य की किस्तें तो चुकानी ही पड़ेंगी। इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखकर लेखापाल किस्तों में सम्मिलित समस्त ब्याज की राशि से सौदा होने की तिथि को ही 'ब्याज उचंती खाता खोल लेते हैं। इसी प्रकार विक्रेता की पुस्तकों में भी ब्याज उचंती खाता खोल लिया जाता है। अन्य प्रविष्टियां सामान्य नियमों के अनुसार होती हैं, जो निम्न प्रकार हैं:—

(i) सौदा होने पर :	Asset a/c	Dr. (रोकड़ी मूल्यसे)
	Interest Suspense a/c	Dr. (कुल ब्याज से)
	To Seller's personal a/c	(दोनों के योग से)
	(Asset purchased on instalment payment system.)	
(ii) 'तुरन्त जमा' के भुगतान पर :	Seller's Personal a/c Dr.	
	To Cash or Bank a/c	
	(Immediate deposit paid.)	
(iii) किस्तों के भुगतान पर :	Seller's Personal a/c Dr.	(किस्त की पूरी राशि से)
	To Cash or Bank a/c	
	(Instalment paid.)	
(iv) प्रत्येक वर्ष के अन्त में :	Interest a/c Dr.	(वर्ष भर में देय (Due) ब्याज की रकम से)
	To Int. Suspense a/c	
	(Interest due.)	
	Depreciation a/c Dr.	(ह्रास की रकम से)
	To Asset a/c	
	(Depreciation charged.)	
	P. & L. a/c ... Dr.	
	To Interest a/c	(ब्याज की रकम से)
	To Depreciation a/c	(ह्रास की रकम से)
	(Balances transferred.)	

चिट्ठे में निरूपण : क्रेता के चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर, सम्पत्ति को क्रय मूल्य पर ह्रास घटाने के बाद दिखाया जाता है। विक्रेता को देय रकम दायित्व पक्ष की ओर दिखलाई जाती है। ब्याज उचंती खाते (Interest Suspense Account) का शेष सम्पत्ति पक्ष को ओर दिखलाया जाता है।

विक्रेता की पुस्तकें (Sellers Books):—सौदा होने पर विक्रय मूल्य से क्रेता के खाते को डेबिट किया जाता है तथा रोकड़ी मूल्य से विक्रय खाता क्रेडिट व कुल ब्याज की रकम से ब्याज उचंती

खाता क्रेडिट किया जाता है। भुगतान प्राप्त होने पर रोकड़ खाते को डेबिट व क्रेता के खाते को क्रेडिट किया जाता है। प्रत्येक वर्ष के अन्त में देय व्याज की रकम को व्याज उचंती खाते से ब्याज खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इसके लिए व्याज उचंती खाता डेबिट तथा 'ब्याज खाता' क्रेडिट किया जाता है। विक्रय वाले वर्ष के अन्त में 'विक्रय खाते' का माल खाते (Trading account) के क्रेडिट में हस्तान्तरण कर दिया जाता है।

विक्रेता के चिट्ठे में, क्रेता के खाते का शेष पुस्त ऋणों (Book debts) में सम्मिलित करके सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखलाया जाता है। व्याज उचंती खाते का शेष दायित्व पक्ष की ओर दिखलाया जाता है।

Illustration 98

On 1st January, 1965, The Rajasthan Transport Company purchases Motor Lorries from Bombay Motor Company on instalment payment system, paying cash Rs. 10,000 and agreeing to pay three further instalments of Rs. 10,000 each on 31st December each year. The cash price of the lorries is Rs. 37,250 and Bombay Motor Company charges interest at 5% per annum. The Rajasthan Transport Company writes off 10% every year on the cash value of the lorries on the diminishing balance method. Make Journal entries and open the necessary accounts in the books of Rajasthan Transport Company and also of the Bombay Motor Company. How items shall appear in the balance sheet as on 31st December, 1965.

1 जनवरी, 1965 को राजस्थान ट्रांस्पोर्ट कम्पनी ने, किस्त भुगतान पद्धति पर बॉम्बे मोटर कम्पनी से मोटर लारियां खरीदीं, 10,000 रु० तुरन्त भुगतान किया तथा प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को 10,000 रु० की तीन किस्तें भुगतान करने का वादा किया। लारियों का रोकड़ी मूल्य 37,250 रु० है और बॉम्बे मोटर कम्पनी 5 प्रतिशत वार्षिक व्याज वसूल करती है। राजस्थान ट्रांस्पोर्ट कम्पनी प्रतिवर्ष क्रमागत ह्रास पद्धति के आधार पर लारियों के रोकड़ी मूल्य पर 10 प्रतिशत ह्रास अपलिखित करती है। राजस्थान ट्रांस्पोर्ट कम्पनी एवं बॉम्बे मोटर कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा आवश्यक खाते खोलिये। 31 दिसम्बर 1965 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में मदें किस प्रकार दिखलाई जायेंगी।

Solution :

विश्लेषण तालिका (Analytical Table)

भुगतान की किस्त (1)	रोकड़ी मूल्य का शेष (2)	भुगतान की जा रही कुल रकम (3)	व्याज (4)	पूँजीगत मूल्य (3 – 4) (5)	शेष रोकड़ी मूल्य जो देना है (2–5) (6)
	रु०	रु०	रु०	रु०	रु०
तुरन्त जमा	37,250	10,0C0	—	10,000	27,250
प्रथम किस्त	27,250	10,000	1362·50	8,637·50	18,612·50
द्वितीय किस्त	18,612·50	10,000	930·63	9,069·37	9,543·13
तृतीय किस्त	9,543·13	10,000	456·87	9,543·13	
		40,000	2,750·00	37,250·00	

Books of Rajasthan Transport Company—

Journal

		Rs.	P.	Rs.	P.
1965 Jan. 1	Motor Lorries a/c Dr.	37,250	—		
	Interest Suspense a/c Dr.	2,750	—		
	To Bombay Motor Company			40,000	—
	(Motor Lorries purchased on instalment payment system.)				
" "	Bombay Motor Company Dr.	10,000	—		
	To Bank a/c			10,000	—
	(Immediate deposit paid.)				
Dec. 31	Bombay Motor Company Dr.	10,000	—		
	To Bank a/c			10,000	—
	(First instalment paid.)				
" "	Interest a/c Dr.	1,362	50		
	To Interest Suspense a/c			1,362	50
	(Interest due.)				
" "	Depreciation a/c Dr.	3,725	—		
	To Motor Lorries a/c			3,725	—
	(Depreciation charged.)				
" "	Profit and Loss a/c Dr.	5,087	50		
	To Interest a/c			1,362	50
	To Depreciation a/c			3,725	—
	(Balances transferred.)				
1966 Dec. 31	Bombay Motor Company Dr.	10,000	—		
	To Bank a/c			10,000	—
	(Second Instalment paid.)				
" "	Interest a/c Dr.	930	63		
	To Interest Suspense a/c			930	63
	(Interest due.)				
" "	Depreciation a/c Dr.	3,352	50		
	To Motor Lorries a/c			3,352	50
	(Depreciation charged.)				
" "	Profit and Loss a/c Dr.	4,283	13		
	To Interest a/c			930	63
	To Depreciation a/c			3,352	50
	(Balances transferred.)				
1967 Dec. 31	Bombay Motor Company Dr.	10,000	—		
	To Bank a/c			10,000	—
	(Third Instalment paid.)				

Journal Contd......

			Rs.	P.	Rs.	P.
1967 Dec. 31	Interest a/c Dr. To Interest Suspense a/c (Interest due.)		456	87	456	87
,, ,,	Depreciation a/c Dr. To Motor Lorries a/c (Depreciation charged.)		3,017	25	3,017	25
,, ,,	Profit and Loss a/c Dr. To Interest a/c To Depreciation a/c (Balances transferred.)		3,475	12	457 3,017	87 25

Motor Lorries Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Jan. 1	To Bombay Motor Company	37,250	—	1965 Dec. 31	By Depreciation a/c	3,725	—
				,, ,,	By Balance c/d	33,525	—
		37,250	—			37,250	—
1966 Jan. 1	To Balance b/d	33,525	—	1966 Dec. 31	By Depreciation a/c	3,352	50
				,, ,,	By Balance c/d	30,172	50
		33,525	—			33,525	—
1967 Jan. 1	To Balance b/d	30,172	50	1967 Dec. 31	By Depreciation a/c	3,017	25
				,, ,,	By Balance b/d	27,155	25
		30,172	50			30,172	50

Interest Suspense Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Jan. 1	To Bombay Moter Company	2,750	—	1965 Dec. 31	By Interest a/c	1,362	50
				,,	By Balance c/d	1,387	50
		2,750	—			2,750	—
1966 Jan. 1	To Balance b/d	1,387	50	1966 Dec. 31	By Interest a/c	930	63
				,,	By Balance c/d	456	87
		1,387	50			1,387	50
1967 Jan. 1	To Balance b/d	456	87	1967 Dec. 31	By Interest a/c	456	87

Bombay Motor Company

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1965				1965			
Jan. 1	To Bank a/c	10,000	—	Jan. 1	By Motor Lorries a/c	37,250	—
Dec. 31	To Bank a/c	10,000	—	„ „	By Interest Suspense a/c	2,750	—
„ „	To Balance c/d	20,000	—				
		40,000	—			40,000	—
1966				1966			
Dec. 31	To Bank a/c	10,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	20,000	—
„ „	To Balance c/d	10,000	—				
		20,000	—			20,000	—
1967				1967			
Dec. 31	To Bank a/c	10,000	—	Jan. 1	By Balance b/d	10,000	—

Interest Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1965				1965			
Dec. 31	To Int. Suspense a/c	1,362	50	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,362	50
1966				1966			
Dec. 31	To Int. Suspense a/c	930	63	Dec. 31	By P. & L. a/c	930	63
1967				1967			
Dec. 31	To Int. Suspense a/c	456	87	Dec. 31	By P. & L. a/c	456	87

Depreciation Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1965				1965			
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	3,725	—	Dec. 31	By P. & L a/c	3,725	—
1966				1966			
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	3,352	50	Dec. 31	By P. & L a/c	3,352	50
1967				1967			
Dec. 31	To Motor Lorries a/c	3,017	25	Dec. 31	By P. & L. a/c	3,017	25

Balance Sheet as on 31st Dec., 1965

Liabilities	Rs.	P.	Assets	Rs.	Rs.	P.
Bombay Motor Company	20,000		Motor Lorries at cost	37,250		
			Less Depreciation	3,725		
					33,525	—
			Interest Suspense		1,387	50

Books of Bombay Motor Company

Journal

			Rs.	P.	Rs.	P.
1965 Jan. 1	Rajasthan Transport Company Dr. To Sales a/c To Interest Suspense a/c (Motor Lorries sold on instalment payment system.)		40,000	—	37,250 2,750	— —
Jan. 1	Cash a/c Dr. To Rajasthan Transport Company (Immediate deposit received.)		10,000	—	10,000	—
Dec. 31	Cash a/c Dr. To Rajasthan Transport Company (First Instalment received.)		10,000	—	10,000	—
" "	Interest Suspense a/c Dr. To Interest a/c (Interest earned.)		1,362	50	1,362	50
" "	Interest a/c Dr. To P. & L. a/c (Balance transferred.)		1,362	50	1,362	50
1966 Dec. 31	Cash a/c Dr. To Rajasthan Transport Company (Second Instalment received.)		10,000	—	10,000	—
" "	Interest Suspense a/c Dr. To Interest a/c (Interest earned.)		930	63	930	63
" "	Interest a/c Dr. To P. & L. a/c (Balance transferred.)		930	63	930	63
1967 Dec. 31	Cash a/c Dr. To Rajasthan Transport Company (Third instalment received.)		10,000	—	10,000	—
" "	Interest Suspense a/c Dr. To Interest a/c (Interest earned.)		456	87	456	87
" "	Interest a/c Dr. To P. & L. a/c (Balance transferred.)		456	87	456	87

Rajasthan Motor Transport Company

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1965			1965		
Jan. 1	To Sales a/c	37,250	Jan. 1	By Cash a/c	10,000
	To Int. Suspense a/c	2,750	Dec. 31	By Cash a/c	10,000
			,, ,,	By Balance c/d	20,000
		40,000			40,000
1966			1966		
Jan. 1	To Balance b/d	20,000	Dec. 31	By Cash a/c	10,000
			,, ,,	By Balance c/d	10,000
		20,000			20,000
1967			1967		
Jan. 1	To Balance b/d	10,000	Dec. 31	By Cash a/c	10,000

Sales Account

Date	Particulars	Rs.	Date	Particulars	Rs.
1965			1965		
Dec. 31	To Trading a/c	37,250	Jan. 1	By Raj. Motor Transport Company	37,250

Interest Suspense Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1965				1965			
Dec. 31	To Interest a/c	1,362	50	Jan. 1	By Raj. Motor Transport Company	2,750	—
,, ,,	To Balance c/d	1,387	50				
		2,750	—			2,750	—
1966				1966			
Dec. 31	To Interest a/c	930	63	Jan. 1	By Balance b/d	1,387	50
,, ,,	To Balance c/d	456	87				
		1,387	50			1,387	50
1967				1967			
Dec. 31	To Interest a/c	456	87	Jan. 1	By Balance b/d	456	87

Interest Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1965				1965			
Dec. 31	To P. & L. a/c	1,362	50	Dec. 31	By Int. Suspense a/c	1,362	50
1966				1966			
Dec. 31	To P. & L. a/c	930	63	Dec. 31	By Int. Suspense a/c	930	63
1967				1967			
Dec. 31	To P. & L. a/c	456	87	Dec. 31	By Int. Suspense a/c	456	87

Balance Sheet as on 31st December, 1965

	Rs.	P.		Rs.	P.
			Book Debts :		
Interest Suspense	1,387	50	Rajasthan Transport Company	20,000	—

नोट—(1) कुछ व्यापारी 'ब्याज का खाता' अलग से नहीं खोलते; सीधे ही ब्याज की रकम 'ब्याज उचंती खाते' से लाभ हानि खाते में, प्रति वर्ष, हस्तांतरित करते रहते हैं।

Illustration 99.

On 1st April, 1964 Delite Drycleaners Ltd. purchases machinery on the Instalment Payment System. The cash price of the machinery is Rs. 8,000, the deposit being Rs. 800 and four annual instalments of Rs. 1,800 each to be paid on 1st April, 1965, 1966, 1967 and 1968. In addition, interest is charged at 7 per cent on yearly balances and the purchaser is to pay to the seller an insurance premium of $\frac{1}{4}$ per cent per annum on the outstanding balances. The seller decides to create a provision for doubtful debts at 10 per cent of the amount not received from the purchaser.

Show the necessary accounts in the books of the seller and how the transactions would appear in the Balance Sheet at 31st March, 1965 and 1966.

1 अप्रैल, 1964 को डिलाइट ड्राईक्लीनर्स लिमिटेड किस्त-भुगतान पद्धति पर मशीनरी खरीदते हैं। मशीनरी का रोकड़ी मूल्य 8,000 रु० है; 800 रु० तुरन्त जमा कराने हैं तथा 1 अप्रैल, 1965, 1966, 1967 व 1968 को 1,800 रु० की चार किस्तें भुगतान की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, वार्षिक बाकियों पर 7 प्रतिशत की दर से ब्याज वसूल किया जाता है और क्रेता को बकाया राशियों पर $\frac{1}{4}$ प्रतिशत वार्षिक के हिसाब से बीमे के प्रीमियम का भुगतान विक्रेता को करना है। विक्रेता यह निर्णय करता है कि क्रेता की तरफ बकाया रकम के 10 प्रतिशत के लिये 'सन्देहजनक ऋण' के रूप में प्रावधान किया जाये।

विक्रेता की पुस्तकों में आवश्यक खाते दिखाइये तथा 31 मार्च, 1965 व 1966 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में सौदे किस प्रकार दिखलाये जायेंगे।

Solution :

तुरन्त जमा 800 रु० तथा 1,800 रु० की चार किस्तों का योग 8,000 रु० रोकड़ी मूल्य के बराबर होता है। अतः ब्याज किस्तों में सम्मिलित नहीं है। किस्तों की रकम पूंजीगत मूल्य का भुगतान है। अतः विश्लेषण तालिका बनाने की आवश्यकता नहीं है। ब्याज का भुगतान अलग से किया जाना है।

Delite Drycleaners Ltd.

		Rs.	P.			Rs.	P.
1-4-64	To Sales a/c	8,000	—	1-4-64	By Cash a/c	800	
31-3-65	To Interest a/c (7% on Rs. 7,200)	504	—	31-3 65	By Balance c/d	7,722	—
,, ,, ,,	To Ins. Premium Received a/c	18	—				
		8,522	—			8,522	—
1-4-65	To Balance b/d	7,722	—	1-4-65	By Cash a/c (1800+504+18)	2,322	—
31-3-66	To Interest a/c (7% on Rs. 5,400)	378	—	31-3-66	By Balance c/d	5,791	50
,, ,, ,,	To Ins. Premium Received a/c	13	50				
		8,113	50			8,113	50
1-4-66	To Balance b/d	5,791	50	1-4-66	By Cash a/e Rs.(1800+378+13.50)	2,191	50
31-3-67	To Interest a/c (7% on Rs. 3,600)	252	—	31-3-67	By Balance c/d	3,861	
,, ,, ,,	To Ins. Premium Received a/c	9	—				
		6,052	50			6,052	50
1-4-67	To Balance b/d	3,861	—	1-4-67	By Cash a/c (1800+252+9)	2,061	—
31-3-68	To Interest a/c (7% on Rs. 1,800)	126	—	31-3-68	By Balance c/d	1,930	50
,, ,, ,,	To Ins. Premium Received a/c	4	50				
		3,991	50			3,991	50
1-4-68	To Balance b/d	1,930	50	1-4-68	By Cash a/c Rs.(1800+126+4.50)	1,930	50

Sales Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1965 Mar. 31	To Trading a/c	8,000		1964 April 1	By Delite Drycleaners Ltd.	8,000	

Interest Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
31-3-65	To P. & L. a/c	504	—	31-3-65	By Delite Drycleaners Ltd.	504	—
31-3-66	To P. & L. a/c	378	—	31-3-66	By Delite Drycleaners Ltd.	378	—
31-3-67	To P. & L. a/c	252	—	31-3-67	By Delite Drycleaners Ltd.	252	—
31-3-68	To P. & L. a/c	126	—	31-3-68	By Delite Drycleaners Ltd.	126	—

Insurance Premium Received Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
31-3-65	To P. & L. a/c	18	—	31-3-65	By Delite Drycleaners Ltd.	18	—
31-3-66	To P. & L. a/c	13	50	31-3-66	By Delite Drycleaners Ltd.	13	50
31-3-67	To P. & L. a/c	9	—	31-3-67	By Delite Drycleaners Ltd.	9	—
31-3-68	To P. & L. a/c	4	50	31-3-68	By Delite Drycleaners Ltd.	4	50

Provision for Doubtful Debts Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
31-3-65	To Balance c/d	772	—	31-3-65	By P. & L. a/c $\left(\frac{10}{100} \times \text{Rs. } 7{,}722\right)$	772	—
31-3-66	To P. & L. a/c	193	—	1-4-65	By Balance b/d	772	—
31-3-66	,, Balance c/d	579	—				
		772	—			772	—
31-3-67	To P. & L. a/c	193	—	1-4-66	By Balance b/d	579	—
31-3-67	,, Balance c/d	386	—				
		579	—			579	—
31-3-68	To P. & L. a/c	193	—	1-4-67	By Balance b/d	386	—
31-3-68	To Balance c/d	193	—				
		386	—			386	—
				1-4-68	By Balance b/d	193	—

Balance Sheet

				Rs.	P.
		As on 31-3-65			
		Books Debts :			
		Delite Drycleaners	Rs.		
		Limited	7,722		
		Less Provision for			
		doubtful debts	772	6,950	–
		As on 31-3-66			
		Book Debts :			
		Delite Drycleaners	Rs.		
		Limited	5,791·50		
		Less Provision for			
		doubtful debts	579·00	5,212	50

नोट :—(1) यह माना गया है कि विक्रेता द्वारा अन्य मशीनरी के साथ इस मशीनरी का भी बीमा कराया गया होगा तथा प्रीमियम का भुगतान किया गया होगा ।

(2) चूँकि किस्तों में ब्याज सम्मिलित नहीं है, अतः ब्याज उचंती खाता खोलने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

Illustration 100.

Rohtas Industries limited purchased on instalment basis machinery on 1st January, 1962. The terms were that a payment of Rs. 5,000 has to be made on 31st December each year to the vendors Messrs Hira & Sons Limited. This includes interest @ 5% on the balance of cash down price due and so on for five years completing the payment in five instalments. It was decided to depreciate the machinery @ 10 per cent per annum on reducing balance method.

Ascertain the cash down price and show Interest Suspense Account and the Machinery Account in the books of the buyers. (Calculation may be made to the nearest rupee.)

1 जनवरी, 1962 को रोहतास इन्डस्ट्रीज लिमिटेड ने किस्त भुगतान पर मशीनरी खरीदी । भुगतान की शर्तें इस प्रकार थीं : मैसर्स हीरा एण्ड संस लिमिटेड (विक्रेता) को प्रतिवर्ष 31 दिसम्बर को 5,000 रु० का भुगतान किया जावेगा । इस रकम में बकाया रोकड़ी मूल्य के शेष पर 5 प्रतिशत की दर से ब्याज सम्मिलित है और यह रकम भुगतान पूर्ण करने के लिए पांच वर्ष तक दी जाती रहेगी । यह निर्णय किया गया कि मशीनरी पर क्रमागत ह्रास विधि के हिसाब से 10 प्रतिशत वार्षिक दर पर मूल्य ह्रास अपलिखित किया जाये ।

रोकड़ी मूल्य ज्ञात कीजिए और क्रेता की पुस्तकों में 'ब्याज उचंती खाता' तथा 'मशीनरी खाता' दिखाइये । (गणना निकटतम रुपये तक की जा सकती है)

Solution : रोकड़ी मूल्य व ब्याज निम्न प्रकार निकाला जायेगा :

Instalment	Calculation	Principal Amount	Interest
	Rs.	Rs.	Rs. Rs.
5th	$(5000 \times \frac{100}{105})$	4,762	5,000— 4,762=238
4th	$(5000+4762) \times (\frac{100}{105})$	9,297	9,762— 9,297=465
3rd	$(5000+9297) \times (\frac{100}{105})$	13,616	14,297—13,616=681
2nd	$(5000+13616) \times (\frac{100}{105})$	17,730	18,616—17,730=886
1st	$(5000+17730) \times (\frac{100}{105})$	21,648	22,730—21,648=1,082

चूंकि 'तुरन्त जमा' की राशि नहीं है, अतः रोकड़ी मूल्य 21,648 रु० होगा।

कुल भुगतान=25,000 रु०

रोकड़ी मूल्य=21,648 रु०

अतः कुल ब्याज= 3,352 रु०

Interest Suspense Account

Date	Particulars	Rs.	P.	Date	Particulars	Rs.	P.
1962 Jan. 1	To Hira & Sons Limited	3,352	—	1962 Dec. 31	By P. & L. a/c	1,082	—
				,, ,,	By Balance c/d	2,270	—
		3,352	—			3,352	—
1963 Jan. 1	To Balance b/d	2,270	—	1963 Dec. 31	By P. & L. a/c	886	—
				,, ,,	By Balance c/d	1,384	—
		2,270	—			2,270	—
1964 Jan. 1	To Balance b/d	1,384	—	1964 Dec. 31	By P. & L. a/c	681	—
				,, ,,	By Balance c/d	703	—
		1,384	—			1,384	—
1965 Jan. 1	To Balance b/d	703	—	1965 Dec. 31	By P. & L. a/c	465	—
				,, ,,	By Balance c/d	238	—
		703	—			703	—
1966 Jan. 1	To Balance b/d	238	—	1966 Dec. 31	By P. & L. a/c	238	—

Machinery Account

		Rs.	P.			Rs.	P.
1962 Jan. 1	To Hira & Sons Limited	21,648	—	1962 Dec. 31	By Depreciation a/c	2,165	—
				,,	By Balance c/d	19,483	—
		21,648	—			21,648	—
1963 Jan. 1	To Balance b/d	19,483	—	1963 Dec. 31	By Depreciation a/c	1,948	—
				,,	By Balance c/d	17,535	—
		19,483	—			19,483	—
1964 Jan. 1	To Balance b/d	17,535	—	1964 Dec. 31	By Depreciation a/c	1,754	—
				,,	By Balance c/d	15,781	—
		17,535	—			17,535	—
1965 Jan. 1	To Balance b/d	15,781	—	1965 Dec. 31	By Depreciation a/c	1,578	—
				,,	By Balance c/d	14,203	—
		15,781	—			15,781	—
1966 Jan. 1	To Balance b/d	14,203	—	1966 Dec. 31	By Depreciation a/c	1,420	—
				,, ,,	By Balance c/d	12,783	—
		14,203	—			14,203	—

क्रेता की पुस्तकों में ब्याज उचंती खाता न खोलना—जब किस्त-भुगतान पद्धति पर माल खरीदा जाता है तो कुछ क्रेता-व्यापारी ब्याज उचंती खाता नहीं खोलते। किराया-क्रय पद्धति की भाँति, वे सौदे के प्रारम्भ में, सम्पूर्ण रोकड़ी मूल्य से सम्पत्ति खाते को डेबिट करके विक्रेता के खाते को क्रेडिट कर देते हैं। किस्तों के देय होने पर ब्याज की राशि से ब्याज खाते को डेबिट तथा विक्रेता के खाते को क्रेडिट करते रहते हैं। किस्त भुगतान एवं पुस्तकें बन्द करने के अवसर पर हस्तांतरण की प्रविष्टियां उसी प्रकार होती हैं, जैसे किराया क्रय-पद्धति में होती हैं।

Illustration 101

M/s X Y & Co. purchases from the Office Appliances Co. a comptometer on the instalment payment system. The cash value of the comptometer was Rs. 2980, Rs. 800 was to be paid on signing the agreement and Rs. 800 each in three instalments at the end of each year. 5% Interest is charged by the vendor. Assuming all the instalments to have been duly paid, give the necessary accounts in the books of X Y & Co. They write off depreciation at the rate of 10% per annum on the reducing balance method (Calculations may be made to the nearest rupee).

मैसर्स एक्स वाई एण्ड कम्पनी आफिस एप्लाइन्सेज कम्पनी से किस्त भुगतान पद्धति पर एक कम्पटोमीटर खरीदते हैं। कम्पटोमीटर का रोकड़ी मुल्य 2,980 रु० था। 800 रु० अनुबन्ध पर हस्ताक्षर करते समय भुगतान किये गये और 800 रु० वाली तीन किस्तें प्रत्येक वर्ष के अन्त में चुकाई गई। विक्रेताओं द्वारा 5% ब्याज वसूल किया जाता है। यह मानते हुए कि तमाम किस्तों का भुगतान कर दिया गया है, एक्स वाई एण्ड कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिये। एक्स वाई एण्ड कम्पनी क्रमागत ह्रास पद्धति पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास अपलिखित करते हैं (गणना निकटतम रुपयों तक कीजिये)।

Solution :

Books of X Y & Co.

Comptometer Account

	Rs.		Rs.
To Office Appliances Co.	2,980	By Depreciation a/c	298
		By Balance c/d	2,682
	2,980		2,980
To Balance b/d	2,682	By Depreciation a/c	268
		By Balance c/d	2,414
	2,682		2,682
To Balance b/d	2,414	By Depreciation a/c	241
		By Balance c/d	2,173
	2,414		2,414

Office Appliances Company

	Rs.		Rs.
To Bank a/c	800	By Comptometer a/c	2,980
To Bank a/c	800	By Interest a/c	109
To Balance c/d	1,489		
	3,089		3,089
To Bank a/c	800	By Balance b/d	1,489
To Balance c/d	763	By Interest a/c	74
	1,563		1,563
To Bank a/c	800	By Balance b/d	763
		By Interest a/c	37
	800		800

Interest Account

		Rs.			Rs.
	To Office Appliances Co.	109		By P. & L. a/c	109
	To Office Appliances Co.	74		By P. & L. a/c	74
	To Office Appliances Co.	37		By P. & L. a/c	37

Depreciation Account

		Rs.			Rs.
	To Comptometer a/c	298		By P. & L. a/c	298
	To Comptometer a/c	268		By P. & L. a/c	268
	To Comptometer a/c	241		By P. & L. a/c	241

Illustration 102.

X acquires a motor car on agreement to pay by instalments from Rajasthan Motors Ltd. The car can be purchased by cash for Rs. 20,100 or by instalments as follows:—Rs. 4,000 on delivery, Rs. 6,000 after three months, Rs. 8,000 after six months and Rs. 4,000 after 12 months.

Make the necessary accounts in X's books, after ascertaining the rate of interest per annum which the seller is charging on selling the car on instalment payment system.

एक्स एक मोटर कार राजस्थान मोटर्स लिमिटेड से किस्त-भुगतान पर खरीदते हैं। कार को रोकड़ी मूल्य देकर 20,100 रु० में और किस्त-भुगतान पर निम्न प्रकार से खरीदा जा सकता है:—

सुपुर्दगी पर 4,000 रु०; तीन महीने बाद 6,000 रु०; 6 महीने बाद 8,000 रु० तथा 12 महीने बाद 4,000 रु०।

विक्रेता किस्त-भुगतान पद्धति पर मोटर कार बेचने पर जो ब्याज की दर वसूल कर रहे हैं, उस ब्याज की दर को ज्ञात करने के बाद, एक्स की पुस्तकों में आवश्यक खाते खोलिये।

Solution :

ब्याज की दर निम्न तरीके से निकाली जा सकती है—

बकाया रोकड़ी मूल्य	कितने महीने तक	गुणनफल (Products)
रु०		रु०
20,100—4,000=16,100	3	48,300
16,100—6,000=10,100	3	30,300
10,100—8,000=2,100	6	12,600
		91,200

कुल ब्याज = 22,000 रु० — 20,100 रु० = 1,900 रु०

ब्याज की दर = $\frac{1,900 \times 12 \times 100}{91,200}$ = 25 percent per annum.

Books of X

Motor Car Account

		Rs.			Rs.
Jan. 1	To Rajasthan Motors Ltd.	20,100	Dec. 31	By Balance c/d	20,100

Interest Suspense Account

		Rs.			Rs.
Jan. 1	To Rajasthan Motors Ltd.	1,900	Dec. 31	By P. & L. a/c	1,900

Rajasthan Motors Limited

		Rs.			Rs.
Jan. 1	To Bank a/c	4,000	Jan. 1	By Motor Car a/c	20,100
Mar. 31	To Bank a/c	6,000	" "	By Int. Suspense a/c	1,900
June 30	To Bank a/c	8,000			
Dec. 31	To Bank a/c	4,000			
		22,000			22,000

नोट:—(i) यह मान लिया गया है कि मोटर कार 1 जनवरी को खरीदी गई है।

(ii) Interest suspense Account को सीधा ही लाभ-हानि खाते में हस्तांतरित कर दिया गया है।

Questions

1. (a) Explain how the Hire-purchase system differs from the Instalment payment system.

(b) What entries are made in the books of the buyer as well as the seller when goods are sold on the instalment payment system?

(अ) किराया-क्रय पद्धति तथा किस्त-भुगतान पद्धति में क्या अन्तर है, वर्णन कीजिए।

(ब) जब किस्त-भुगतान पद्धति पर माल बेचा जाता है तो क्रेता तथा विक्रेता की पुस्तकों में क्या प्रविष्टियां की जाती हैं?

2, Fearless Periodicals Ltd. purchased a printing machine on instalment payment system from Smooth Machinery Co. Ltd. on 1st January, 1960. Its cash price was Rs. 7,450 and it was agreed that Rs. 2,000 was to be paid against

delivery followed by three annual instalments of Rs. 2,000 each. The interest agreed was 5% per annum.

Pass journal entries and give ledger accounts in the books of both parties charging depreciation at 10% per annum on the diminishing balance method.

1 जनवरी, 1960 को फीयरलेस पीरियोडिकल्स लिमिटेड ने स्मूथ मशीनरी कम्पनी लिमिटेड से, किस्त भुगतान पद्धति पर, छापने की एक मशीन खरीदी। उसका रोकड़ी मूल्य 7,450 रु० था और यह तय हुआ कि 2,000 रु० सुपुर्दगी पर दिये जायेंगे। इसके अलावा 2,000 रु० वाली तीन वार्षिक किस्तें भी चुकाई जायेंगी। ब्याज 5 प्रतिशत वार्षिक तय हुआ।

क्रमागत ह्रास पद्धति के अनुसार 10 प्रतिशत वार्षिक मूल्य ह्रास काटते हुए दोनों पक्षों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां तथा लेजर खाते दीजिए। [126]

Ans. : Balance of Printing Machine a/c on 31-12-62—Rs. 5,431-05.

3. On 1st April, 1964 Deepak sells machinery to Ravi on instalment payment system, the cash price being Rs. 12,000. The purchaser agrees to pay Rs. 2,000 on signing of the agreement and the balance in four half-yearly instalments of Rs. 2,500 each, commencing from 30th Sept., 1964. The interest is paid at the rate of 6 per cent per annum with half-yearly rests. The purchasers decide to charge depreciation at the rate of 15% per annum on straight line method. The accounting year ends on 31st December each year.

Enter the above transactions in the books of both the parties.

1 अप्रैल, 1964 को दीपक किस्त भुगतान पद्धति पर, रवि को मशीनरी बेचता है। उसका रोकड़ी मूल्य 12,000 रु० था। क्रेता वादा करता है कि अनुबंध के हस्ताक्षर के समय 2,000 रु० का भुगतान किया जावेगा तथा शेष राशि का, 2,500 रु० वाली चार अर्ध-वार्षिक किस्तों में भुगतान किया जावेगा। प्रथम किस्त 30 सितम्बर, 1964 को दी जायेगी। ब्याज का भुगतान, अर्ध-वर्ष के अन्तर से 6 प्रतिशत वार्षिक दर से किया जाता है। क्रेता ने सीधी रेखा पद्धति पर 15 प्रतिशत वार्षिक की दर से मूल्य ह्रास काटने का निश्चय किया है। लेखा वर्ष 31 दिसम्बर को समाप्त होता है।

उपरोक्त सौदों को दोनों पक्षों की पुस्तकों में दर्ज कीजिए। [127]

Ans. : Balance of Machinery a/c 31.12.66 Rs. 7,050
(Hint : Accrued interest is to be taken into account)

4. On 1st January, 1965 X Company bought a Motor Truck on the instalment payment system. The cash price of the truck was Rs. 29,800 and the payment was to be made as follows :—

Rs. 8,000 was to be paid on signing of the agreement and the balance in three annual instalments of Rs. 8,000 each at the end of each year including 5% interest per annum.

Assuming that X company bought motor truck on the hire-purchase system on the same terms as above, give accounts only (journal entries need not be given) in the books of X company under both the methods, adding a note for the differences in entries in the two methods of purchase.

1 जनवरी, 1965 को एक्स कम्पनी ने किस्त भुगतान पद्धति पर एक मोटर ट्रक खरीदा। ट्रक का रोकड़ी मूल्य 29,800 रु० थां तथा भुगतान निम्न प्रकार से करना था।

अनुबंध के हस्ताक्षर के समय 8,000 रु० दिये जायेंगे तथा शेष राशि का प्रत्येक वर्ष के अन्त में 8,000 रु० वाली तीन वार्षिक किस्तों में भुगतान होगा। किस्त की रकम में 5% वार्षिक दर पर ब्याज सम्मिलित है।

मान लीजिये कि एक्स कम्पनी ने मोटर ट्रक को समान शर्तों पर किराया-क्रय पद्धति पर खरीदा। अब एक्स कम्पनी की पुस्तकों में दोनों पद्धतियों के अन्तर्गत खाते बनाइये (जर्नल प्रविष्टियों को देने की आवश्यकता नहीं है)। खरीद की दोनों पद्धतियों में की जाने वाली प्रविष्टियों के अन्तर को भी समझाइये। [128]

(Hint : Under Hire-purchase system, Asset Accrual method is preferable.)

5. On 1st January, 1965 the New Colliery Co. bought wagons on instalment payment system. The cash price of the wagons was Rs. 11,175 and the payment was to be made as follows :—

Rs. 3,000 was to be paid on delivery and the balance in three instalments of Rs. 3,000 each, payable on the first day of the following year, 5% per annum interest is charged by the sellers.

The company has decided to write off 10% annually on the diminishing balance of the cash value.

Show the necessary accounts in the books of the New Colliery Co. How will the items appear in the Balance Sheet as at December 31, 1965 and 1966 ?

1 जनवरी, 1965 को न्यू कोलीयरी कम्पनी ने किस्त भुगतान पद्धति पर वैगन खरीदे। वैगनों का रोकड़ी मूल्य 11,175 रु० था और भुगतान निम्न प्रकार से किया जाना था :

सुपुर्दगी पर 3,000 रु० का भुगतान होगा तथा शेष राशि का 3,000 रु० वाली तीन वार्षिक किस्तों में भुगतान किया जायेगा जोकि अगले वर्ष के प्रथम दिन देय होगी। विक्रेता द्वारा 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज वसूल किया जाता है।

कम्पनी ने, क्रमागत ह्रास पद्धति के अनुसार, रोकड़ी मूल्य पर 10 प्रतिशत वार्षिक मूल्य ह्रास अपलिखित करने का निश्चय किया है।

न्यू कोलीयरी कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये। 31 दिसम्बर, 1965 व 1966 को तैयार किये जाने वाले चिट्ठे में मदों को किस प्रकार दिखाया जावेगा। [129]

Ans. : Balance of Wagons a/c on 31.12.67—Rs. 8,146–57; Wagons shown in the Balance Sheet on 31.12.65—Rs. 10,057.50 net and on 31.12.66—Rs. 9051·75 net.

6. Messrs Bright Engineering Works Ltd. sold a machine on 1st January, 1966 to Uttam Chand and Brothers ont he following terms :

(i) Uttam Chand and Brothers to pay Rs. 6,000 on 1st January, 1966 at the time of delivery;

(ii) the remaining amount to be paid in three instalments of equal amount of Rs. 6,302·75, first instalment to be paid on 1st July, 1966, second instalment on 1st January, 1967 and the third instalment on 1st July, 1967.

The cost of the machine to the manufacturers i.e. Bright Engineering Works Ltd. was Rs. 19,500 and its cash selling price was fixed at Rs. 24,000. The sellers charge 5% per annum interest on the unpaid balances.

The manufacturers agreed to maintain the machine in ordinary repairs for a period of two years from the date of sale, and one-third of the profits on sale is taken to cover this service. The sellers close their accounts on 31st December each year. They had to incur, in the first year and second year of sale, an expenditure of Rs. 319 and Rs. 431 respectively on account of repairs to the machine.

Show by means of ledger accounts how these transactions would be recorded in the books of Bright Engineering Works Ltd.

1 जनवरी, 1966 को मेसर्स ब्राइट इंजीनियरिंग वर्क्स लिमिटेड ने एक मशीन उत्तम चन्द एण्ड ब्रदर्स को निम्नलिखित शर्तों पर बेची :

(i) उत्तम चन्द एण्ड ब्रदर्स, 1 जनवरी, 1966 को, सुपुर्दगी के समय, 6,000 रु० का भुगतान करेंगे।

(ii) शेष राशि का भुगतान 6,302 रु० 75 पैसे की 3 समान किस्तों में किया जावेगा। पहली किस्त 1 जुलाई 1966 को दी जावेगी, दूसरी किस्त 1 जनवरी, 1967 को और तीसरी किस्त 1 जुलाई, 1967 को दी जावेगी।

निर्माता अर्थात् ब्राइट इंजीनियरिंग वर्क्स लिमिटेड के यहाँ मशीन का लागत मूल्य 19,500 रु० था और इसका रोकड़ी विक्रय मूल्य 24,000 रु० तय किया गया। विक्रेता अदत्त शेषों पर 5% वार्षिक ब्याज लेते हैं।

निर्माता ने विक्री की तिथि से दो वर्ष तक मशीन की साधारण मरम्मत करना स्वीकार किया और विक्री पर $\frac{1}{3}$ लाभ का इस सेवा के लिए आयोजन कर दिया गया। विक्रेता प्रतिवर्ष अपनी पुस्तकें 31 दिसम्बर को बन्द करते हैं। उनको मशीन की मरम्मत के लिए पहले और दूसरे वर्ष में क्रमशः 319 रु० और 431 रु० खर्च करने पड़े।

लेखे खातों के माध्यम से यह बतलाइये कि यह सौदे ब्राइट इंजीनियरिंग वर्क्स लिमिटेड की पुस्तकों में कैसे दर्ज किये जायेंगे। (130)

Ans. : Balance of Provision for Repairs Account Rs. 750 transferred to Profit and loss a/c on 31st December, 1967.

7

दिवाला सम्बन्धी खाते
(Insolvency Accounts)

साधारण बोलचाल की भाषा में 'दिवालिया' से आशय किसी एसे व्यक्ति से है जो अपने ऋणों का भुगतान नहीं कर सकता है, परन्तु दिवाला विधान के अनुसार 'दिवालिया' से आशय किसी ऐसे व्यक्ति से है जो कानूनी रूप से दिवालिया घोषित कर दिया गया हो। कानूनी रूप से दिवालिया घोषित होने पर वह अपने समस्त दायित्वों से मुक्त हो जाता है। इस सुविधा को प्राप्त करने के लिए ऋणी को अपने ऋणदाताओं के हित में समस्त सम्पत्ति का समर्पण करना पड़ता है। दिवाला-विधान ऋणी तथा ऋणदाता दोनों ही के पक्ष में है। ऋणदाताओं को वह ऋणी द्वारा सम्भावित 'कपट पूर्ण प्राथमिकताओं' से सुरक्षा प्रदान करता है तथा ऋणी को वर्तमान दायित्वों से मुक्ति प्रदान करता है। पामर के अनुसार दिवाला कानून का उद्देश्य एक ऋणी को उसकी समस्त सम्पत्ति ऋणदाताओं में समान रूप से बांटकर, ऋण के भार से मुक्ति दिलाना है।*

भारत में दिवाला सम्बन्धी निम्नलिखित दो विधान हैं :—

(i) प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवेन्सी एक्ट 1909 (Presidency Towns Insolvency Act): 1909 यह विधान केवल तीन नगरों—बम्बई, कलकत्ता और मद्रास पर लागू होता है।

(ii) प्रान्तीय दिवाला अधिनियम, 1920 (Provincial Insolvency Act, 1920): यह विधान बम्बई, कलकत्ता और मद्रास के नगरों को छोड़कर शेष सम्पूर्ण भारत (जम्मू व कश्मीर राज्य के अतिरिक्त) पर लागू होता है।

दिवालिया कौन घोषित हो सकता है (Who may be declared insolvent)–

उपरोक्त विधानों के अनुसार एक वयस्क व्यक्ति, स्त्री या पुरुष, दिवालिया घोषित किया जा सकता है। ये विधान निम्नलिखित संस्थाओं पर लागू नही होते हैं :–

(i) कम्पनी; (ii) सहकारी समितियाँ; (iii) ऐसी संस्थायें जिनका पंजीयन सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट के अन्तर्गत हुआ है।

दिवालियापन के कार्य (Acts of Insolvency)–

प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवेन्सी एक्ट, 1909 की धारा 9 के अनुसार तथा प्रान्तीय दिवाला अधिनियम, 1920 की धारा 6 के अनुसार यदि ऋणी द्वारा अग्रलिखित कार्यों में से कोई भी कार्य किया गया है तो वह 'दिवालियापन का कार्य' माना जावेगा :–

---

*"The object of the Laws of Bankruptcy is to free a debtor who has become insolvent from the burden of his debts by distributing his assets equitably among his creditors." (Alfred Palmer)

(i) यदि वह भारत में या अन्यत्र अपनी समस्त सम्पत्ति अथवा सम्पत्ति का अधिकांश भाग अपने ऋणदाताओं के हित के लिए किसी तीसरे पक्ष को हस्तान्तरित करता है।

(ii) यदि वह भारत में या अन्यत्र अपनी सम्पत्ति का अथवा उसके किसी भाग का हस्तान्तरण अपने ऋणदाताओं के हित का विनाश या विलम्ब करने के उद्देश्य से करता है।

(iii) यदि वह भारत में या अन्यत्र अपनी सम्पत्ति का अथवा उसके किसी भाग का हस्तान्तरण इस प्रकार करता है कि अगर वह दिवालिया घोषित कर दिया जाता तो इस अधिनियम के नियमों के अनुसार अथवा अन्य किसी अधिनियम के नियमों के अनुसार उसका यह हस्तान्तरण 'कपट पूर्ण प्राथमिकता' (Fraudulent Preference) होने के कारण व्यर्थ होता।

(iv) यदि वह अपने ऋणदाताओं के हित का विनाश अथवा उनको विलम्ब करने के उद्देश्य से—

(अ) भारत से वाहर चला जाता है या भारत के बाहर रहता है;

(ब) अपने निवास स्थान से या व्यापार के सामान्य स्थान से चला जाता है अथवा वहाँ अनुपस्थित रहता है; अथवा

(स) अपने ऋणदाताओं से सम्बन्ध विच्छेद करने हेतु किसी एकान्त स्थान को चला जाता है।

(v) जब किसी न्यायालय की डिक्री को क्रियान्वित करने के उद्देश्य से उसकी कोई सम्पत्ति बेच दी गई है या कम से कम 21 दिन के लिए कुड़क (attach) कर ली गई है।

(vi) यदि वह, दिवालिया घोषित किये जाने हेतु, न्यायालय में प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करता है।

(vii) यदि वह अपने ऋणदाताओं में से किसी भी ऋणदाता को यह सूचना देता है कि उसने अपने ऋणों का भुगतान स्थगित कर दिया है अथवा वह उनका भुगतान स्थगित करने वाला है।

(viii) यदि भुगतान न होने के कारण न्यायालय द्वारा जारी की गई डिक्री के अन्तर्गत उसको गिरफ्तार कर लिया गया है।

दिवाला कार्य-विधि (Insolvency Procedure)—

एक व्यक्ति न्यायालय द्वारा ही दिवालिया घोषित किया जा सकता है। इस हेतु न्यायालय में एक प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करना पड़ता है। यह प्रार्थना-पत्र ऋणी अथवा ऋणदाता (दोनों में से किसी भी पक्ष) द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है परन्तु यह प्रार्थना-पत्र तभी प्रस्तुत किया जा सकता है जबकि ऋणी ने दिवालियापन सम्बन्धी कोई कार्य किया हो।

दिवालिया होने का आदेश (Order of Adjudication)—

ऋणी अथवा ऋणदाता के प्रार्थना-पत्र पर विचार करके न्यायालय 'दिवालिया होने का आदेश' जारी कर सकता है तथा एक अधिकारी की नियुक्ति कर सकता है। इस अधिकारी को प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवैन्सी एक्ट में 'आफिशियल असाइनी' (Official Assignee) तथा प्रान्तीय दिवाला अधिनियम में 'आफिशियल रिसीवर' (Official Receiver) कहते हैं।

इस आदेश के फलस्वरुप दिवालिये का अपनी सम्पत्ति पर कोई अधिकार नहीं रहता है। उसकी समस्त सम्पत्ति पर न्यायालय द्वारा नियुक्त किये गये अधिकारी का अधिकार हो जाता है जो दिवालिया के ऋणदाताओं के हित में इसका उपयोग करता है।

दिवालिया की ऋणदाताओं में विभाजन योग्य सम्पत्ति (Property divisible amongst creditors):—

हमारे यहां प्रचलित दोनों अधिनियमों के अनुसार दिवालिया की निम्नलिखित सम्पत्ति उसके ऋणदाताओं में विभाजित की जा सकती है :—

(अ) दिवाला प्रारम्भ होने की तिथि को दिवालिये से सम्बन्धित सभी सम्पत्ति जिस पर दिवालिये को व्यवस्थापन (disposal) का अधिकार है;

(ब) ऐसी सम्पत्ति जो दिवालिया घोषित होने के आदेश के बाद परन्तु मुक्ति के आदेश के पहले प्राप्त की गई है;

(स) ऐसी सम्पत्ति जिस पर दिवालिये को ख्याति प्राप्त स्वामी के रूप में अधिकार है अर्थात् ऐसी सम्पत्ति जिसका दिवालिया स्वामी नहीं है परन्तु उसके वास्तविक स्वामी की अनुमति से वह सम्पत्ति दिवालिये के अधिकार में है तथा उस पर दिवालिये का व्यवस्थापन (disposal) का अधिकार है।

दिवालिया की अविभाजन योग्य सम्पत्ति (Property not divisible amongst creditors)—

प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवेन्सी एक्ट, 1909 के अनुसार दिवालिये की निम्नलिखित सम्पत्तियां ऋणदाताओं में विभाजित नहीं की जा सकती हैं:—

(अ) ऐसी सम्पत्ति जो दिवालिये के पास प्रन्यासी की हैसियत से है।

(ब) व्यापार के उपकरण, आवश्यक पहनने व ओढ़ने के कपड़े, भोजन बनाने के बर्तन, उसका, उसकी पत्नी और उसके बच्चों का आवश्यक सामान, परन्तु इन सब का मूल्य सम्मिलित रूप से 300 रु० से अधिक नहीं होना चाहिए।

प्रान्तीय दिवाला अधिनियम के अनुसार ऐसी सम्पत्ति, जो Civil Procedure Code के अन्तर्गत कुड़क से मुक्त है, लेनदारों में विभाजित नहीं की जा सकती है, जैसे रसोई के बर्तन, ओढ़न-बिछाने के कपड़े, सुहाग के गहने, आदि।

सम्पत्तियों तथा दायित्वों का विवरण (Statement of Assets and Liabilities)

न्यायालय द्वारा जारी किये गये आदेश के 30 दिन*की अवधि में ऋणी को न्यायालय में अपनी समस्त सम्पत्ति और दायित्वों का विवरण एक निर्धारित प्रपत्र में प्रस्तुत करना पड़ता है। दिवालिये द्वारा प्रेषित सम्पत्ति तथा दायित्व के विवरण का फार्म 'स्थिति-विवरण' (Statement of Affairs) कहलाता है। प्रान्तीय दिवाला अधिनियम के अन्तर्गत इस स्थिति-विवरण के लिये कोई निर्धारित फार्म नहीं है परन्तु ऋणी को इसमें लगभग उन सभी सूचनाओं को सम्मिलित करना पड़ता है जोकि प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवेन्सी एक्ट के अनुसार आवश्यक है। इस एक्ट के अनुसार स्थिति विवरण का नमूना आगे दिया जाता है:—

*यदि ऋणी स्वयं के प्रार्थना-पत्र पर दिवालिया घोषित हुआ है तो यह अवधि उस तिथि से गिनी जायेगी जिस तिथि को ऋणी दिवालिया घोषित किया गया है। यदि ऋणी ऋण-दाता के प्रार्थना-पत्र पर दिवालिया घोषित किया गया है, तो दिवालिया घोषित आदेश प्राप्ति की तिथि से यह अवधि गिनी जावेगी।

Statement of Affairs

(As required by the Presidency Towns Insolvency Act, 1909)

In the High Court of Justice.

In Insolvency.

To the insolvent,—you are required to fill up, carefully and accurately, this sheet and the several sheets A, B, C, D, E, F, G and H, showing the state of your affairs on the day on which the order of adjudication was made against you, viz. the........day of.........19......

Such sheet, when filled up will constitute your schedule and must be verified by oath or declaration.

Gross Liabilities	Liabilities (As stated & estimated by debtor)	Expected to rank	Assets (As stated & estimated by debtor)	Estimated to produce
Rs.		Rs.		Rs.
	Unsecured Creditors as per list A	... ...	Property as per list E viz.	
	Creditors fully secured as per List B		(a) Cash at Bank	... ...
	Estimated value of Security		(b) Cash in hand	... ...
	Surplus to contra... ...		(c) Cash deposited with solicitors for costs of petition	... ...
	Creditors partly secured as per list C		(d) Stock in Trade	... ...
	Less estimated value of securities	... ...	(e) Machinery	... ...
			(f) Trade Fixtures, fittings, utensils etc.	... ...
			(g) Furniture	... ...
			(h) Life Policies	... ...
	Creditors for rent, taxes, salaries and wages etc. payable in full as per list D deducted as per contra		(e) Other property	... ...
			Book debts as per list F. viz.	
			Good	... ...
			Doubtful	... ...
			Bad	
			Bills of Exchange or other similar securities in hand as per list G	... ...
			Surplus from securities in the hands of creditors fully secured as per contra	... ...
				... ...
			Deduct creditors for preferential rent, rates, taxes, wages etc. as per contra	... ...
				... ...
			Deficiency as per list H	... ...
				... ...

स्थिति-विवरण (Statement of Affairs) के नमूने को देखने से स्पष्ट है कि यह चिट्ठे के अनुरूप होता है। इसमें दो पक्ष होते हैं, बाँयी तरफ दायित्व का तथा दाहिनी तरफ सम्पत्ति का। दायित्व पक्ष की तरफ सभी प्रकार के लेनदारों का विवरण दिया जाता है जबकि सम्पत्ति पक्ष की ओर सभी प्रकार की सम्पत्तियों का वर्णन दिया जाता है। दायित्व पक्ष के सम्पत्ति पक्ष पर आधिक्य को घाटा अथवा न्यूनता (Deficiency) कहते हैं।

स्थिति-विवरण के दायित्व पक्ष का वर्णन निम्नलिखित है :

विभिन्न लेनदार (Sundry Creditors)

व्यापार में लेनदार दो प्रकार के होते हैं–सुरक्षित (Secured) तथा असुरक्षित (Unsecured)। सुरक्षित लेनदार पुन: दो प्रकार के होते हैं—पूर्ण रूप से सुरक्षित (Fully secured) तथा अंशत: सुरक्षित (Partly secured)। असुरक्षित लेनदार भी दिवालिया की स्थिति में दो प्रकार के हो जाते हैं–(i) जिनको भुगतान पाने का पूर्वाधिकार नहीं है तथा जिनको भुगतान पाने का पूर्वाधिकार है। विभिन्न लेनदारों को निम्नलिखित तालिका से भी स्पष्ट किया जा सकता है :—

लेनदार (Creditors)

असुरक्षित (Unsecured)		सुरक्षित (Secured)	
जिनको भुगतान पाने का पूर्वाधिकार नहीं है— सूची 'ए' List 'A' (Non-Preferential)	जिनको भुगतान पाने का पूर्वाधिकार है। सूची 'डी' List 'D' (Preferential)	पूर्ण सुरक्षित सूची 'बी' List 'B' (Fully secured)	अंशत: सुरक्षित सूची 'सी' List 'C' (Partly secured)

असुरक्षित लेनदार जिनको पूर्वाधिकार भुगतान पाने का अधिकार नहीं है (List A.) :...

असुरक्षित लेनदारों से तात्पर्य उन ऋणदाताओं से है जिनके पास कोई सम्पत्ति जमानत के रूप में नहीं है तथा जिनको भुगतान पाने का अधिकार सुरक्षित लेनदार और पूर्वाधिकार लेनदारों के बाद में होता है। इस प्रकार, लेनदारों में ये सबके अन्त में भुगतान प्राप्त करते हैं।

असुरक्षित लेनदारों में प्राय: निम्नलिखित ऋणदाता सम्मिलित किये जाते हैं:—

(1) व्यापारिक ऋणदाता (Trade Creditors);

(2) ऋण और जमा (Loans and Deposits from Outsiders);

(3) निजी ऋण (Private Loans),

(4) बैंक अधिविकर्ष (Bank Overdraft);

(5) देय बिल (Bills Payable);

(6) वेतन, मजदूरी तथा किराये के ऐसे ऋण जो पूर्वाधिकार लेनदारों में सम्मिलित नहीं किये गये है। (Liabilities for Rent, Wages and Salaries in excess of Preferential Creditors);

(7) असुरक्षित लेनदारों पर ब्याज (Interest outstanding on unsecured creditors);

(8) संदिग्ध ऋण (Contingent Liability)। इन ऋणों से तात्पर्य उन दायित्वों से है जो स्थिति विवरण की तिथि को देय नहीं है परन्तु किसी बाद की तिथि को किसी घटना के घटने पर देय हो सकते

हैं। ऐसे ऋणों की सम्भावित देय राशि ज्ञात कर लेनी चाहिये तथा उस सम्भावित देय राशि को असुरक्षित लेनदारों में सम्मिलित करके दिखाना चाहिये। उदाहरणार्थ, भुनाये हुये प्राप्य बिल जिनके, देय तिथि पर, अप्रतिष्ठित होने की सम्भावना है।

पूर्ण सुरक्षित लेनदार (Fully Secured Creditors) List B:—

पूर्ण सुरक्षित लेनदारों से तात्पर्य ऐसे लेनदारों से है जिनके पास दिवालिये की सम्पत्ति जमानत के रूप में रखी हुई है तथा उस सम्पत्ति का बाजार मूल्य, स्थिति-विवरण की तिथि को, उनके द्वारा दिए हुए ऋण से अधिक है। उदाहरणार्थ, हरि (दिवालिया) का राम 10,000 रु० से लेनदार है और उसके पास उसकी 12,000 रु० के बाजार मूल्य की सम्पत्ति गिरवी रखी हुई है तो ऐसी दशा में राम पूर्ण सुरक्षित लेनदार माना जावेगा।

जमानत में रखी जाने वाली सम्पत्ति दिवालिये की होनी चाहिये, यदि वह सम्पत्ति दिवालिये की नहीं है, तो दिवालिये के दृष्टिकोण से वह ऋण पूर्ण सुरक्षित नहीं माना जावेगा। प्रायः फर्म के ऋण के लिये साझेदार अपनी निजी सम्पत्ति गिरवी रख देते हैं, ऐसी स्थिति में फर्म के लिये वह लेनदार पूर्ण सुरक्षित नहीं माना जावेगा।

पूर्ण सुरक्षित लेनदारों को सम्पत्ति बेचकर अपना ऋण वसूल करने का अधिकार है। अतः इन लेनदारों को स्थिति विवरण के 'अनुमानित देय राशि' (Amount Expected to Rank) वाले खाने (Column) में नहीं दिखाना चाहिये।

यदि पूर्ण सुरक्षित लेनदारों के पास जमानत पर रखी हुई सम्पत्ति का मूल्य उनके द्वारा दिये हुए ऋण से अधिक होता है, तो इस आधिक्य को सम्पत्ति पक्ष पर हस्तान्तरित कर देना चाहिये क्योंकि इस आधिक्य का प्रयोग असुरक्षित लेनदारों के भुगतान करने के लिए किया जाता है।

अंशतः सुरक्षित लेनदार (Partly Secured Creditors) List C:—

अंशतः सुरक्षित लेनदारों से तात्पर्य ऐसे लेनदारों से है जिनके पास जो सम्पत्ति बन्धक के रूप में है, उसका स्थिति-विवरण की तिथि को बाजार मूल्य उनके द्वारा दिये हुए ऋण से कम है। इस प्रकार के लेनदारों को भी ऋणी की ऐसी सम्पत्ति को बेचकर भुगतान पाने का अधिकार है परन्तु सम्पत्ति का मूल्य कम होने के कारण उनके सम्पूर्ण ऋण का भुगतान नहीं हो सकता। ऐसे लेनदार ऋण की शेष राशि के लिए असुरक्षित लेनदार माने जाते हैं और इनको दिवालिये की ऐसी सम्पत्ति, जो गिरवी नहीं रखी हुई है, उसमें से हिस्सा पाने का अधिकार है। यह शेष ऋण की राशि 'अनुमानित देय राशि' (Amount expected to rank) वाले खाने (Column) में दिखाई जाती है। कभी-कभी अंशतः सुरक्षित लेनदारों के पास ऐसी सम्पत्ति जमानत के रूप में रहती है जिस पर पहले से ही पूर्ण सुरक्षित लेनदारों का अधिकार होता है। ऐसी स्थिति में अंशतः सुरक्षित लेनदारों को, पूर्ण सुरक्षित लेनदारों के भुगतान के पश्चात् सम्पत्ति का जो शेष मूल्य रहता है, उसमें से अपने ऋण को वसूल करने का अधिकार रहता है। इसके पश्चात् उनके ऋण का जितना भाग शेष रहता है उसके लिए वे असुरक्षित लेनदार रहते हैं।

Illustration 103.

Following are the details of secured creditors of three different insolvents. Show how the secured creditors will be shown in the Statement of Affairs.

(a) Stock having a book value of Rs. 50,000 mortgaged with creditors amounting to Rs. 30,000. Furniture having a book-value of Rs. 10,000 was

mortgaged with creditors of Rs. 9,000 and machinery having a book value of Rs. 18,000was mortgaged with the creditors of Rs. 24,000. The Stock is expected ot realise Rs. 40,000, furniture Rs. 8,000 and machinery Rs. 15,000.

(b) Stock having a book value of Rs. 50,000 was mortgaged with creditors amounting to Rs. 30,000. This stock was further mortgaged with another set of creditors for Rs 25,000 giving them the right to exercise second charge on the above stock. The stock is expected to realise Rs. 40,000.

(c) Creditors amounting to Rs. 40,000 were given the first charge on the stock mortgaged with them for Rs. 65,000. Creditors amounting to Rs. 30,000 were given the second charge on the above stock subject to the maximum limit of Rs. 15,000. The stock is expected to realise Rs. 60,000.

तीन दिवालियों के सुरक्षित लेनदारों का विवरण निम्न प्रकार है :—

(अ) 50,000 रु० का पुस्तक-मूल्य का स्टॉक 30,000 रु० के लेनदारों के पास वन्धक में रखा हुआ है। फर्नीचर, जिसका पुस्तक-मूल्य 10,000 रु० है, 9,000 रु० के लेनदारों के पास वन्धक में है तथा एक मशीन जिसका पुस्तक-मूल्य 18,000 रु० है वह 24,000 रु० के लेनदारों के पास वन्धक है। स्कन्ध के बेचने पर 40,000 रु०, फर्नीचर पर 8,000 रु०, तथा मशीन पर 15,000 रु० मिलने की आशा है।

(ब) स्टॉक जिसका पुस्तक-मूल्य 50,000 रु० है, वह 30,000 रु० के लेनदारों के पास बन्धक रखा हुआ है। इसी स्टॉक को पुन: 25,000 रु० के लेनदारों के पास बन्धक में रख दिया है तथा इन लेनदारों को उक्त स्टॉक में से अपने ऋण वसूली का द्वितीय नम्बर का अधिकार है। स्टॉक के 40,000 रु० में विकने की आशा है।

(स) 40,000 रु० के लेनदारों को उनके पास जो 65,000 रु० का स्टॉक वन्धक रखा हुआ है, उसमें से प्रथम वसूली का अधिकार है। 30,000 रु० के लेनदारों को उक्त स्टॉक में से अपना ऋण वसूली का द्वितीय नम्बर का अधिकार दिया गया है परन्तु वे केवल अधिकतम 15,000 रु० तक ही ऐसा कर सकते हैं। स्टॉक के 60,000 रु० में विकने की आशा है।

उपरोक्त सुरक्षित लेनदारों को तीनों दिवालियों के स्थिति-विवरण में दिखाइये।

Solution :

(a)

Statement of Affairs

Gross Liabilities	Liabilities (As stated & estimated by debtor)		Expected to rank	Assets (As stated & estimated by debtor)	Estimated to produce
Rs.			Rs.		Rs.
	Unsecured Creditors as per list A		......		
	Fully Secured Creditors	Rs.			
30,000	as per list B	30,000			
	Estimated value of security with them	40,000			
	Surplus to Contra	10,000			

Statement of Affairs Contd....

Rs.		Rs.	Rs.		
33,000	Partly Secured Creditors as per list C	33,000			
	Estimated value of security with them	23,000	10,000		

नोट:—(i) वन्धक रखी हुई सम्पत्ति को सम्बन्धित ऋण में से बाजार मूल्य पर घटाकर बताया जाता है।

(ii) 9,000 रु० के ऋणदाताओं के पास 10,000 रु० पुस्तक मूल्य का फर्नीचर बन्धक के रूप में था परन्तु उस फर्नीचर का बाजार मूल्य केवल 8,000 रु० था, अतः यह ऋण पूर्ण सुरक्षित न होकर अंशतः सुरक्षित हुआ।

(iii) पूर्ण सुरक्षित लेनदारों के पास वन्धक रखी सम्पत्ति से बचे हुए 10,000 रु० स्थिति-विवरण में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखाये जावेगें।

(*b*) **Statement of Affairs**

Gross Liabilities	Liabilities (As stated & estimated by the debtor)		expected to rank	Assets (As stated and estimated by the debtor)	Estimated to produce
Rs.			Rs.		Rs.
	Unsecured Creditors as per list A		... ...		
30,000	Fully Secured Creditors as per list B	Rs. 30,000			
	Estimated value of security with them	40,000			
	Surplus to list 'C'	10,000			
25,000	Partly Secured Creditors as per List 'C'	Rs. 25,000			
	Estimated value of security with them	10,000	15,000		

(c) **Statement of Affairs**

Gross Liabilities	Liabilities (As stated & estimated by the debtor)		Expected to rank	Assets (As stated & estimated by the debtor)	Estimated to produce
Rs.					Rs.
	Unsecured Creditors as per list A		Rs.		
	Fully Secured Creditors as per list B	Rs.			
40,000		40,000			
	Estimated value of security with them	60,000			
	Surplus	20,000			
	Less value of security transferred to list C	15,000			
	Surplus to contra	5,000			
	Partly Secured Creditors as per list C	Rs. 30,000			
30,000	Less estimated value of securities	15,000			
			15,000		

पूर्वाधिकार लेनदार (Preferential Creditors) List D :—

कतिपय असुरक्षित लेनदारों को 'दिवाला अधिनियम' अन्य असुरक्षित लेनदारों के पहले भुगतान पाने का अधिकार प्रदान करता है। कानूनन पूर्व भुगतान प्राप्ति के अधिकार मिलने के कारण इनको 'पूर्वाधिकार लेनदार' (Preferential Creditors) कहते हैं।

दिवाला अधिनियम निम्नलिखित असुरक्षित लेनदारों को पूर्व भुगतान प्राप्ति का अधिकार प्रदान करता है :—

प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवेन्सी एक्ट 1909 के अनुसार (धारा 49)	प्रान्तीय दिवाला अधिनियम 1920 के अनुसार (धारा 61)
1. सरकार को या किसी स्थानीय संस्था को देय धन;	1. सरकार को या किसी स्थानीय संस्था को देय धन,
2. प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के तुरन्त पहिले चार महीनों का लिपिकों (Clerks), सेवकों (Servants) और मजदूरों का वेतन या मजदूरी जो अधिक से अधिक 300 रु० प्रति लिपिक अथवा 100 रु० प्रति सेवक या मजदूर हो सकती है।	2. प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत करने के तुरन्त पहिले चार महीनों का लिपिकों, सेवकों और मजदूरों का वेतन या मजदूरी जो अधिक से अधिक 20 रु० प्रति लिपिक, सेवक या मजदूर हो सकती है।
3. भूमि स्वामी (Landlord) को एक माह का किराया।	3. कुछ नहीं।

दिवाला अधिनियमों ने केवल उपरोक्त लेनदारों को ही पूर्वाधिकार लेनदार माना है परन्तु Workmen's Compensation Act के अनुसार किसी मजदूर की क्षतिपूर्ति की स्वीकृत-राशि का वह भाग जो दिवालिया घोषित होने की तिथि को दिया जाना शेष है, पूर्वाधिकार ऋण माना जाता है।[1]

यदि सुरक्षित लेनदारों के भुगतान के पश्चात् दिवालिये की शेष सम्पत्ति पूर्वाधिकार लेनदारों की पूर्ण रकम का भुगतान करने के लिए भी पर्याप्त नहीं हैं, तो सभी पूर्वाधिकार लेनदारों को यह सम्पत्ति उनके ऋण के अनुपात में बांट दी जावेगी।

Illustration 104

A has been adjudged insolvent on July 1, 1970. His creditors are as follows (ए को 1 जुलाई, 1970 को दिवालिया घोषित कर दिया गया है। उसके लेनदार निम्न-लिखित हैं) :—

	रु०
(i) Trade Creditors (व्यापारिक लेनदार)	50,000
(ii) Bank Overdraft (बैंक अधिविकर्ष)	5,000
(iii) Income Tax (आयकर)	500
(iv) Sales Tax (बिक्री कर)	300
(v) Municipal Dues (नगरपालिका को देय)	400
(vi) Salary of 4 Clerks for two months (4 लिपिकों का 2 माह का वेतन)	1,500
(vii) Wages of two labourers for one month (दो मजदूरों की एक माह की मजदूरी)	180
(viii) Rent due to the landlord for two months (भू-स्वामी को दो माह का बकाया किराया)	1,200
(ix) Bills Payable (देय बिल)	1,000
(x) Private Creditor (borrowings for the marriage of A's daughter) (निजी लेनदार–ए की पुत्री के विवाह के लिए उधार)	4,000
(xi) Salary due to X for the month of January, 1970 (एक्स का माह जनवरी 1970 का वेतन देय)	50
(xii) Bills discounted Rs. 1,000 but expected to rank Rs. 200 (भुनाये हुए प्राप्य बिल 1,000 रु० जिन पर 200 रु० के दायित्व उत्पन्न होने की संभावना है)	

[1] Workmen's Compensation Act—Sec. 14(4)

Find out the amount due to the unsecured creditors and preferential creditors according to the Presidency Towns Insolvency Act and Provincial Insolvency Act.

(प्रेसीडैन्सी टाउन्स इन्साल्वैन्सी अधिनियम और प्रान्तीय दिवाला अधिनियम के अन्तर्गत असुरक्षित लेनदार और पूर्वाधिकार लेनदारों की राशि ज्ञात कीजिये ।)

Solution :

प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवैन्सी तथा प्रान्तीय दिवाला अधिनियम के अन्तर्गत असुरक्षित लेनदार और पूर्वाधिकार लेनदारों की ज्ञात की हुई राशि का विवरण (Statement)

Particulars	Total Amount due	Presidency Towns Insolvency Act		Provincial Insolvency Act	
		Preferential creditors	Unsecured creditors	Preferential creditors	Unsecured creditors
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
(i) Trade Creditors	50,000	—	50,000	—	50,000
(ii) Bank Overdraft	5,000	—	5,000	—	5,000
(iii) Income Tax	500	500	—	500	—
(iv) Sales Tax	300	300	—	300	—
(v) Municipal dues	400	400	—	400	—
(vi) Salary of 4 clerks for two months	1,500	1,200	300	80	1,420
(vii) Wages fo 2 labourers for one month	180	180	—	40	140
(viii) Rent due to the landlord for two months.	1,200	600	600	—	1,200
(ix) Bills Payable	1,000	—	1,000	—	1,000
(x) Private Creditors	4,000	—	4,000	—	4,000
(xi) Salary due to X for the month of January, 1970	50	—	50	—	50
(xii) Bills discounted Rs. 1,000 but expected to rank Rs. 200	200	—	200	—	200
	64,330	3,180	61,150	1,320	63,010

स्थिति-विवरण का सम्पत्ति पक्ष :

स्थिति-विवरण का दाहिना पक्ष सम्पत्तियों का होता है जिसका वर्णन नीचे किया जाता है—

(i) सम्पत्ति-सूची 'ई' (Properties as per list 'E')

(ii) देनदार-सूची 'एफ' (Debtors as per list 'F')

(iii) प्राप्य विल एवं प्रतिज्ञा पत्र-सूची 'जी' (Bills of Exchange and Promissory Notes as per list 'G')

सम्पत्ति-सूची 'ई' (Properties as per list 'E') :

एकाकी व्यापारी की स्थिति में सम्पत्ति शब्द से तात्पर्य दिवालिये की व्यावसायिक एवं निजी सम्पत्तियां दोनों से है। साझेदारी की अवस्था में सम्पत्ति शब्द से तात्पर्य साझेदारी व्यवसाय की सम्पत्ति तथा साझेदारों की निजी सम्पत्ति के उस भाग से है जोकि उनके निजी दायित्वों के देने के पश्चात् शेष रह जाती है। सूची ई में जो सम्पत्तियाँ दिखाई जाती हैं, उनमें निम्नलिखित सम्पत्तियां सम्मिलित नहीं होती हैं:—

(i) दिवालिये के देनदार (Debtors of the Insolvent) जो सूची 'एफ' में बतलाये जाते हैं।

(ii) प्राप्य बिल एवं प्रतिज्ञा पत्र (Bills Receivable and Promissory Notes) जो सूची 'जी' में बतलाये जाते हैं।

(iii) दिवालिये की ऐसी सम्पत्ति जो लेनदारों के पास बन्धक के रूप में रखी हुई है अथवा जिन पर लेनदारों का ग्रहणाधिकार है। (Property mortgaged with the creditors or the property on which the creditors have their lien.)

देनदार-सूची 'एफ' (Debtors as per list 'F') :

देनदारों को 'सूची एफ' में दिखाया जाता है। देनदारों को निम्नलिखित तीन श्रेणियों में विभक्त किया जाता है :—

(i) अच्छे देनदार (Good Debts)

(ii) संदिग्ध देनदार (Doubtful Debts)

(iii) डूबत देनदार (Bad Debts)

प्राप्य बिल एवं प्रतिज्ञा पत्र-सूची जी (Bills of Exchange and Promissory Notes as per list 'G':

'सूची जी' में दिखाये जाने वाले प्राप्य बिल एवं प्रतिज्ञा पत्रों से आशय दिवालिये द्वारा प्राप्त ऐसे प्राप्य बिल एवं प्रतिज्ञा-पत्रों से है जोकि स्थिति-विवरण बनाने की तिथि को परिपक्व (matured) नहीं हुए हैं तथा जिनको भुनाया (Discount) नहीं गया है।

यदि प्राप्य बिल अथवा प्रतिज्ञा पत्रों को भुना लिया गया है तो उनको सूची जी में शामिल नहीं किया जावेगा। यदि इस प्रकार के भुनाये गये बिलों के अप्रतिष्ठित होने का डर नहीं है अर्थात् उन पर कोई दायित्व उत्पन्न होने की संभावना नहीं है तो इस प्रकार के बिलों को कहीं भी नहीं दिखाया जावेगा अर्थात् यह बिल न तो स्थिति विवरण में दिखाये जावेंगे और न 'न्यूनता खाता' में दिखाये जावेंगे।

यदि इस प्रकार के बिलों के अप्रतिष्ठित होने की सम्भावना है तो ऐसी स्थिति में अप्रतिष्ठित होने पर, जो धन देना पड़ेगा, उसको 'असुरक्षित लेनदारों' में सम्मिलित करके बताया जाता है।

न्यूनता खाता-सूची एच (Deficiency Account as per list 'H'):

जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट है, न्यूनता खाता एक ऐसा खाता है जो दिवालिये के घाटे को प्रकट करता है। इस खाते के डेबिट पक्ष पर ये मद दिखाये जाते हैं:—

(i) दिवालिये द्वारा लगाई गई पूंजी अथवा किसी निश्चित तिथि को सम्पत्तियों का दायित्वों पर आधिक्य (Capital invested by the proprietor or Surplus of assets over liabilities on a fixed date)
(ii) व्यापारिक लाभ (Trading Profits)
(iii) पूंजी पर ब्याज (Interest on Capital)
(iv) दिवालिये को व्यापार से प्राप्त वेतन (Salary received from business)
(v) सम्पत्तियों को वेचने से संभावित लाभ (Estimated profit on the realisation of the assets)
(vi) अन्य कोई लाभ जैसे सट्टे में मुनाफा आदि (Profits from other sources-such as speculative profits)
(vii) दिवालिये की विभाजन योग्य निजी सम्पत्तियां (Divisible private property of the insolvent)
(viii) न्यूनता (Deficiency)

क्रेडिट पक्ष पर निम्नलिखित मद दिखाये जाते हैं:—

(i) किसी निश्चित तिथि को दायित्वों का सम्पत्तियों पर आधिक्य (Surplus of liabilities over assets on a fixed date)
(ii) व्यापारिक हानियां (Trading losses)
(iii) आहरण तथा उस पर ब्याज (Drawings and interest thereon)
(iv) सम्पत्तियों को वेचने से सम्भावित हानि (Estimated loss on realisation of the assets)
(v) अन्य हानियां, जैसे सट्टे से हानि (Other losses such as speculative losses)
(vi) संदिग्ध ऋण से सम्भावित हानि-जैसे भुनाये गये विलों पर अनुमानित देय राशि (Estimated loss on account of contingent liability-such as liability on bills discounted)
(vii) दिवालिये के निजी दायित्व (Private liabilities of the insolvent)
(viii) वचत यदि कोई हो (Surplus, if any)

न्यूनता खाते के क्रेडिट पक्ष में दिखाई गई मदों का योग प्रायः डेविट पक्ष से अधिक होता है और वह अन्तर दिवालिये के घाटे को प्रकट करता है। इस घाटे को स्थिति-विवरण के सम्पत्ति पक्ष की तरफ "Deficiency as per list 'H' के नाम में सवसे अन्त में दिखाया जाता है। इसके पश्चात् स्थिति विवरण के सम्पत्ति एवं दायित्व पक्ष का योग वरावर हो जाता है। न्यूनता खाते का नमूना आगे दिया जाता है:—

Deficiency Account

List H

	Rs.		Rs.
1. Excess of assets over liabilities		1. Excess of liabilities over assets	
2. Net Profit arising from carrying on business from.. to date of Receiving Order after deducting usual trade expenses		2. Net Loss arising from carrying on business from ......to date of Receiving Order after deducting from profits the usual trade expenses.	
3. Income or Profits from other sources.		3. Bad Debts	
4. Interest on Capital		4. Expenses other than the usual trade expenses viz. household expenses.	
5. Deficiency as per Statement of Affairs		5. Other Losses & Expenses— Loss through stock exchange speculation Loss on Realisation : Stock in Trade Buildings Machinery Shares Debentures Bills Receivable	
		6. Surpuls as per Statement of Affairs (if any)	

कुछ ध्यान देने योग्य बातें :

(1) प्राय: प्रश्न में स्थिति-विवरण बनाने के साथ-साथ न्यूनता खाता बनाने के लिए भी पूछा जाता है, किन्तु कभी-कभी न्यूनता खाता बनाने के लिए पूर्ण सूचनायें नहीं दी हुई रहती है। उदाहरणार्थ, जिस अवधि के लिए न्यूनता खाता बनाया गया है उस अवधि में से किसी वर्ष या किन्हीं वर्षों का लाभ या हानि स्पष्ट रूप से प्रश्न में नहीं दिया रहता है। ऐसी स्थिति में प्रश्न का हल प्रारम्भ करने से पूर्व स्थिति विवरण बनाने की तिथि को चिट्ठा बना लेना चाहिए तथा चिट्ठे के दोनों पक्षों के अन्तर के आधार पर लाभ हानि ज्ञात कर लेना चाहिए। चिट्ठे में विभिन्न मदों को पुस्तक मूल्य पर दिखाना चाहिए। संदिग्ध ऋणों (जैसे भुनाये गये बिल जिन पर दायित्व होने की सम्भावना है) को चिट्ठे में नहीं दिखलाना चाहिए। यदि दायित्व पक्ष का योग सम्पत्ति पक्ष के योग से अधिक है तो यह अन्तर सम्बन्धित वर्ष या वर्षों की हानि को बतलाता है। यदि सम्पत्ति पक्ष का योग दायित्व पक्ष के योग से अधिक है तो यह आधिक्य सम्बन्धित वर्ष या वर्षों के लाभ को इंगित करता है। (देखिये उदाहरण संख्या 106)

(2) प्राय: प्रश्न में दी हुई विभिन्न मदों को स्थिति-विवरण या न्यूनता खाता (दोनों में से एक में) दिखाया जाता है। परन्तु कुछ मदों को 'स्थिति विवरण' और 'न्यूनता खाता' दोनों में दिखलाते हैं। दोनों स्थानों पर दिखाई जाने वाली मदें वे हैं जो या तो मूल से दिवालिये के चिट्ठे में दिखलाई नहीं गई हैं अथवा जिनको सैद्धान्तिक रूप से दिवालिये के चिट्ठे में नहीं दिखाया गया है। इन मदों के कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

(i) **संदिग्ध ऋण** : इन ऋणों को चिट्ठे के दायित्व पक्ष के योग में सम्मिलित नहीं किया जाता है। ये ऋण चिट्ठे के नीचे टिप्पणी के रूप में दिखाये जाते हैं। उदाहरणार्थ भुनाये गये बिल जिन पर दायित्व होने की सम्भावना है। इनको स्थिति विवरण की सूची 'ए' में दिखलाया जाता है तथा न्यूनता खाता के क्रेडिट पक्ष में दिखलाया जाता है। (देखिये उदाहरण संख्या 106)

(ii) **दिवालिये की निजी सम्पत्तियाँ** : यदि ऋणदाताओं को चुकाने के लिए दिवालिये की निजी सम्पत्तियों का प्रयोग हुआ है तो निजी सम्पत्तियों को स्थिति विवरण की सूची 'ई' में बतलाया जाता है तथा साथ में ही न्यूनता खाता के डेबिट पक्ष पर बतलाया जाता है।

(iii) **दिवालिये के निजी दायित्व** : यदि दिवालिये के निजी दायित्व भी हैं तो इन निजी दायित्वों को स्थिति विवरण की सूची 'ए' में सम्मिलित किया जावेगा तथा साथ में न्यूनता खाता के क्रेडिट पक्ष पर दिखलाया जावेगा।

यदि दिवालिये के निजी दायित्व और निजी सम्पत्ति दोनों ही लिए गये हैं तो स्थिति विवरण में निजी दायित्वों को सूची 'ए' में दिखलाया जावेगा तथा निजी सम्पत्तियों को सूची 'ई' में दिखलाया जावेगा। न्यूनता खाता में सम्पत्ति तथा दायित्व को क्रमश: डेबिट व क्रेडिट में दिखलाने की वजाय दोनों मदों के अन्तर को न्यूनता खाते में बतलाया जा सकता है। यदि दायित्व सम्पत्ति से अधिक हैं तो इस आधिक्य को न्यूनता खाता के क्रेडिट पक्ष में दिखलाना चाहिए। यदि सम्पत्ति दायित्व से अधिक हैं तो इस आधिक्य को न्यूनता खाता के डेबिट पक्ष पर दिखलाना चाहिए। (देखिये उदाहरण संख्या 111)

Illustration 105

The following is the balance-sheet of A as it appears on 31st March, 1968 (नीचे 'ए' का चिट्ठा दिया हुआ है जो कि 31 मार्च 1968 का है) :—

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Sundry Creditors (विभिन्न लेनदार)	8,000	Bills Receivable (प्राप्य बिल)	2,000
		Stock (स्टॉक)	8,000
Loan (ऋण)	2,500	Sundry Debtors (विभिन्न देनदार)	3,000
Capital (पूंजी)	3,000	Furniture (फर्नीचर)	500
	13,500		13,500

A was declared insolvent on 31st March, 1968. His assets are expected to realise as follows :—

Sundry Debtors Rs. 2,000, Stock Rs. 4,500 and Furniture Rs. 200. B/R Rs. 2,000 in full.

Prepare Statement of Affairs and Deficiency Account.

(ए को 31 मार्च 1968 को दिवालिया घोषित किया गया। उसकी सम्पत्तियों से अनुमानतः निम्न राशि वसूल होगी :—

विभिन्न देनदार 2,000 रु०, स्टॉक 4,500 रु०, फर्नीचर 200 रु० तथा प्राप्य बिल 2,000 रु०।

स्थिति-विवरण और न्यूनता खाता बनाइये।)

Solution :

Statement of Affairs of A

(As at 31st March, 1968)

Gross Liabilities	Liabilities (As stated and estimated by debtor)	Expected to rank	Assets (As stated & estimated by debtor)	Estimated to produce
Rs.		Rs.		Rs.
	Unsecured Creditors as		Property as per list E:	
10,500	per list A.	10,500	Stock Rs. 8,000	4,500
			Furniture Rs. 500	200
	Fully Secured Creditors		Book Debts as per list F:	
Nil	as per list B. Nil		Good	
			Doubtful } Rs. 3,000	2,000
	Partly Secured Creditors		Bad	
Nil	as per list C.	Nil	Bills of Exchange and	
			Promissory Notes as per	
	Preferential Creditors as		list G. Rs. 2,000	2,000
Nil	per list D. Nil			8,700
			Deficiency as per list 'H'	1,800
10,500		10,500		10,500

Deficiency Account

Particulars	Amount	Particulars	Amount
	Rs.		Rs.
Excess of Assets over Liabilities i. e. Capital	3,000	Loss on account of realisation:	
		Stock	3,500
Deficiency as per Statement of Affairs	1,800	Debtors	1,000
		Furniture	300
	4,800		4,800

Illustration 106

From the following figures, prepare Statement of Affairs and Deficiency Account as at 31st December, 1967. Assume that the stock realises two-thirds of its value, the fixtures one-half, the shares par, and the doubtful debts one-third. On 1st Jan., 1965, the debtor commenced business with a capital of Rs. 3,175. His profits for the first two years amounted to Rs. 2,027 and his drawings were Rs. 1,500 per year.

	Rs.		Rs.
Creditors on open accounts	5,900	Cash	115
Creditors (secured)	1,250	Stock in trade	315
		Debtors (good)	3,490
Value of Securities held by creditors	1,750	Debtors (Doubtful)	900
		Debtors (Bad)	750
Preferential claims for rates and taxes	95	Fixtures and Fittings	282
		Shares	250

Bills discounted Rs. 300 expected to rank Rs. 100.

निम्नलिखित अंकों की सहायता से 31 दिसम्वर, 1967 को स्थिति विवरण और न्यूनता खाता वनाइये। यह मान लीजिये के स्टॉक का 2/3 मूल्य वसूल होता है, फिक्सचर्स का आधा, अंशों का पूर्ण, और संदिग्ध देनदारों का एक तिहाई। 1 जनवरी, 1965 को ऋणी ने 3,175 रु० से व्यापार आरंभ किया था। उसके पहले 2 वर्षों का लाभ 2,027 रु० था और उसका आहरण 1,500 रु० प्रति वर्ष था।

	रु०		रु०
असुरक्षित लेनदार	5,900	नकद	115
सुरक्षित लेनदार	1,250	स्कन्ध	315
सुरक्षित लेनदारों के पास प्रतिभूति	1,750	लेनदार (अच्छे)	3,490
		लेनदार (संदिग्ध)	900
पूर्वाधिकार लेनदार-कर एवं दर	95	लेनदार (डूबत)	750
		फिक्सचर्स और फिटिंग्स	282
		अंश	250

भुनाये गये विल 300 रु० जिन पर 100 रु० के दायित्व की सम्भावना है।

Solution :

उक्त प्रश्न का हल करते समय सर्व प्रथम व्यापारी का 31 दिसम्वर, 1967 को आगे वताये अनुसार चिट्ठा वना लेना चाहिए ताकि तृतीय वर्ष का लाभ या हानि ज्ञात हो जाये :—

Balance Sheet as at December 31, 1967

	Rs.		Rs.
Creditors		Cash	115
Rs. (5,900+1,250+95)	7,245	Stock in Trade	315
Capital		Debtors	5,140
Rs. (3,175+2,027–4,500)	702	Fixtures and Fittings	282
		Shares	250
		Sundry Assets mortgaged with creditors	1,750
		Balancing Figure (Loss)	95
	7,947		7,947

उपरोक्त चिट्ठे को तैयार करने के वाद स्थिति विवरण व न्यूनता खाता निम्न प्रकार वनाये जायेंगे :—

Statement of Affairs

(As at 31st December, 1967)

Gross liabilities	Liabilities	Expected to rank	Assets	Estimated to produce
Rs.		Rs.		Rs.
6,200	Unsecured creditors as per list 'A'	6,000	Property as per list 'E'	
			Cash Rs. 115	115
			Stock Rs. 315	210
1,250	Fully Secured creditors as per list 'B' Rs. 1,250		Fixtures & Fittings Rs. 282	141
	Value of security held by them 1,750		Shares Rs. 250	250
	Surplus to contra 500		Book Debts as per list 'F'	
			Good Rs. 3,490	3,490
Nil	Partly secured creditors as per list 'C'	Nil	Doubtful Rs. 900	300
			Bad Rs. 750	—
95	Preferential creditors as per list 'D' deducted as per contra Rs. 95		Bills of Exchange, Promissory Notes as per list 'G'	Nil
				4,506
			Add surplus value of securities held by Fully Secured creditors as per contra	500
				5,006
			Deduct Preferential Creditors, as per contra	95
				4,911
			Deficiency as per list 'H'	1,089
		6,000		6,000

Deficiency Account

Particulars	Amount Rs.	Particulars	Amount Rs.
	Rs.		
Capital as on 1st Jan., 1965	3,175	Loss for the year 1967	95
Profit for the year, 1965-1966	2,027	Drawings for 3 years	4,500
Deficiency as per Statement of Affairs	1,089	Loss on account of realisation:	
		Stock	105
		Fixtures	141
		Debtors	1,350
		Liability for Bills discounted	100
	6,291		6,291

Illustration 107

A receiving order has been made against B on 15th September, 1967. The particulars of his assets and liabilities are (15 सितम्बर, 1967 को ब के विरुद्ध एक दिवाला सम्बन्धी आदेश जारी किया गया। उसकी सम्पत्तियों एवं दायित्वों का विवरण इस प्रकार है):

	Rs.
Unsecured Creditors	14,487
Creditors fully secured (holding life policies valued at Rs. 12,315)	10,333
Creditors partly secured (the security held is a second mortgage on an asset pledged to a fully secured creditor, the surplus available from the latter being estimated at Rs. 1,020)	1,582
Creditors Preferential	37
Cash in hand	4
Life Policy, not charged, surrender value (estimated)	30
Stock and Shares (estimated)	154
Motor-cycle (estimated)	249
Debts Rs. 76 (of which Rs. 39 are good) estimated	52
B/R discounted (expected to rank-nil)	100

The debtor has conveyed his furniture to his wife by deed of gift dated 3rd March, 1967. The value of this item is estimated at Rs. 300.

The Deficiency account starts from 30th June, 1966, on which date the excess of liabilities over assets was Rs. 8,936. The causes of failure are unsuccessful trading, stock exchange speculation and excessive interest on money borrowed.

Prepare Statement of Affairs and the Deficiency Account, inserting in the latter such items of gain and loss as are usual or suggested by the particulars given.

(ऋणी (दिवालिये) ने 3 मार्च, 1967 को अपना फर्नीचर अपनी पत्नि को भेंट के रूप में हस्तान्तरित कर दिया था। इस मद का अनुमानित मूल्य 300 रु० है।

न्यूनता खाता 30 जून, 1966 को प्रारम्भ होता है जिस दिन दायित्वों का सम्पत्तियों पर 8,936 रु० से आधिक्य है। असफलता के कारण असफल व्यापार, स्कन्ध विनिमय में सट्टा और उधार पूंजी पर अत्यधिक व्याज है।

स्थिति-विवरण एवं न्यूनता खाता बनाइये। न्यूनता खाते में लाभ और हानि की ऐसी मदों को शामिल कर लीजिए जो साधारणतया होती हैं अथवा ऊपर दिये गये विवरणों से ध्वनित होती हैं।)

Solution :

Statement of Affairs as at 15th September, 1967

Rs.			Rs.		Rs.
14,587	Unsecured Creditors as per list 'A'		14,487	Property as per list 'E' Cash in hand	4
		Rs.			
10,333	Creditors fully secured	10,333		Life policy not charged (Rs. 50)	30
	Value of security with them	12,315		Stock & Shares (Rs. 200)	154
	Surplus	1,982		Motor cycle (Rs. 600)	249
	Carried to list 'C'	1,020		Furniture (Rs. 500)	300
	Surplus to contra	962		Book-debts as per list F	
				Good	39
1,582	Creditors Partly secured	Rs. 1,582		Doubtful (Rs. 26)	13
				Bad (Rs. 11)	—
	Less value of security with them	Rs. 1,020	562	Bills of Exchange and Promissory Notes as per list G	Nil
					789
				Add Surplus from contra	962
					1,751
37	Preferential creditors deducted per contra	37		Less Preferential Creditors per contra	37
					1,714
				Deficiency as per list 'H'	13,335
			15,049		15,049

Deficiency Account

	Rs.		Rs.
Deficiency	13,335	Excess of Liabilities over assets	8,936
		Trading losses including interest on borrowed capital	2,000
		Speculation losses	1,758
		Loss on realisation :	
		Life Policy	20
		Stock and Shares	46
		Motor cycle	351
		Furniture	200
		Debtors	24
	13,335		13,335

नोट—

(1) जो फर्नीचर दिवालिया व्यक्ति ने अपनी पत्नि को 3 मार्च, 1967 को भेंट स्वरूप दिया है, वह दिवालिया के लेनदारों में वितरित करने के लिए वापस ले लिया जावेगा क्योंकि उक्त हस्तांतरण दिवालिया घोषित होने की तिथि के पूर्व दो वर्ष के भीतर तथा बिना प्रतिफल के हुआ है। (धारा 53 प्रान्तीय दिवाला अधिनियम 1920)*

(2) प्रश्न में सम्पत्तियों का पुस्तक मूल्य (Book-value) नहीं दिया हुआ है, अतः ये मूल्य काल्पनिक दिखाये गये हैं।

(3) प्राप्य बिल (100 रु०) को भुना लिया गया है। परन्तु चूंकि कोई दायित्व उत्पन्न होने की सम्भावना नहीं है। अतः इसको स्थिति विवरण और न्यूनता खाता में नहीं दिखाया गया है परन्तु स्थिति विवरण के सकल दायित्व (Gross Liabilities) में इस मद को संदिग्ध ऋण होने के नाते सम्मिलित किया गया है।

Illustration 108

A filed his petition in insolvency on 31st December, 1956. His books showed that he owed Rs. 50,000 to trade creditors, Rs. 30,000 to creditors holding lien on stock in trade, Rs. 10,000 mortgage on works; and Rs. 1,000 for salaries, wages and rates. Bills of Exchange for Rs. 10,000 had been dis-

*"Any transfer of property not being a transfer made before and in consideration of marriage or made in favour of a purchaser or incumbrancer in good faith and for valuable consideration shall, if the transferor is adjudged insolvent (on a petition presented) within two-years after the date of transfer, be voidable as against the receiver and may be annulled by the Court.

counted with his bankers, and it was estimated that there was a liability of Rs. 3,000 in respect of them.

His assets were : consignments Rs. 20,000 estimated to realise Rs. 2,000; Good book debts Rs. 18,000; Doubtful debts Rs. 6,000 estimated to realise Rs. 3,000; Bad debts Rs. 15,650; Works Cost Rs. 1,00,000 (depreciated out of Profit and Loss a/c to Rs. 75,000), estimated to realise Rs. 50,000; Furniture and Fittings Rs. 2,000 estimated to realise Rs. 1,000; Stock–in–Trade Rs. 25,000 estimated to realise Rs. 8,000; Cash Rs. 1,350.

He commenced business on 1st January, 1952 with a capital of Rs.90,000. After charging annually Rs. 5,000 for depreciation of works and Rs. 5,500 for interest on capital, the trading shows profits of Rs. 6,500 in 1952 and Rs. 5,000 in 1953 and losses of Rs. 6,000 in 1954, Rs. 7,000 in 1955, and Rs. 9,500 in 1956. He lost Rs. 14,500 in speculation while his drawings averaged Rs. 4,000 a year.

His records further show that included in the trade creditors is the account of X for Rs. 3,000, who also stands debited to him for Rs. 2,000 and similarly included in the sundry debtors is the account of Y for Rs. 6,000 who stands credited in the books for Rs. 4,000.

From the above particulars, prepare his Statement of Affairs & Deficiency Account.

'ए' ने दिवालिया घोपित होने के लिये 31 दिसम्वर, 1956 को प्रार्थना-पत्र दिया। उसकी पुस्तकों ने वताया कि उसको 50,000 रु० व्यापारिक लेनदारों को देने हैं; 30,000 रु० ऐसे लेनदारों को देनें हैं जिनका स्टाक पर अधिकार है। 10,000 रु० के अन्य ऐसे लेनदार हैं जिनके पास कार्यशाला को वन्धक रखा गया है, तथा 1,000 रु० वेतन, मजदूरी और करों के देने हैं। 10,000 रु० के प्राप्य बिलों को बैंक से भुना लिया गया है और यह अनुमान किया जाता है कि इस सम्वन्ध में 3,000 रु० के दायित्व उत्पन्न होंगे।

उसकी सम्पत्तियां इस प्रकार थीं : चालानी पर माल 20,000 रु०–अनुमानित प्राप्य राशि 2,000 रु०; अच्छे देनदार 18,000 रु०; संदिग्ध ऋण 6,000 रु० (अनुमानित प्राप्य राशि 3,000 रु०); डूवत ऋण 15,650 रु०; कार्यशाला 1,00,000 रु० (उस पर लाभ-हानि खाते से मूल्य ह्रास काटने के वाद उसका अपलिखित मूल्य 75,000 रु० था), अनुमानित प्राप्य राशि 50,000 रु०; फर्नीचर एण्ड फिटिंग्स 2,000 रु०–अनुमानित प्राप्य राशि 1,000 रु०; स्टाक 25,000 रु०–अनुमानित प्राप्य राशि 8,000 रु०; नकद 1,350 रु०।

उसने 1 जनवरी 1952 को 90,000 रु० की पूंजी से व्यापार आरम्भ किया था। प्रति वर्ष कार्यशाला पर 5,000 रु० मूल्य ह्रास के रूप में अपलिखित करने के पश्चात तथा 5,500 रु० पूंजी पर व्याज

लगाने के पश्चात् उसको 1952 में 6,500 रु० का तथा 1953 में 5,000 रु० का लाभ हुआ। तत्पश्चात् 1954 में 6,000 रु० की हानि, 1955 में 7,000 रु० की हानि और 1956 में 9,500 रु० की हानि हुई। उसने सट्टे में 14,500 रु० खोये और उसके आहरण औसतन 4,000 रु० वार्षिक थे।

उसके लेखे से अतिरिक्त सूचना प्राप्त हुई कि विभिन्न लेनदारों में 'एक्स' का 3,000 रु० का खाता भी सम्मिलित है जो कि उसका 2,000 रु० से देनदार है और साथ में ही विभिन्न देनदारों में 'वाई' का 6,000 रु० का खाता सम्मिलित है जो कि उसका 4,000 रु० से लेनदार है।

उपरोक्त विवरण के आधार पर 'ए' का स्थिति विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये।

Solution :

Statement of Affairs of A

(As at 31st December, 1956)

Rs.		Rs.		Rs.
54,000	Unsecured creditors as per list 'A'	47,000	Property as per list 'E' Cash	1,350
			Consignments Rs. 20,000	2,000
10,000	Fully secured creditors as per list 'B' Rs. 10,000		Furniture & Fittings Rs. 2,000	1,000
	Estimated value of securities with them Rs. 50,000		Book debts as per list 'F' Good	12,000
			Doubtful Rs. 6,000	3,000
			Bad Rs. 15,650	—
	Surplus to contra Rs. 40,000		Bills of Exchange, Promissory Notes etc. as per list 'G'	Nil
				19,350
30,000	Partly secured creditors as per list 'C' Rs. 30,000 Less estimated value of securities Rs. 8,000		Surplus from securities in the hands of Fully Secured Creditors, per contra	40,000
				59,350
		22,000		
1,000	Preferential creditors for Salaries, Wages and Rates as per list 'D' deducted as per contra. Rs. 1,000		Deduction of Preferential Creditors, per contra	1,000
				58,350
			Deficiency as per List 'H'	10,650
		69,000		69,000

Deficiency Account

	Rs.		Rs.
Excess of Assets over liabilities as on 1st Jan. 1952	90,000	Trading Losses for the year 1954	6,000
		-do- 1955	7,000
Net Profit for the year 1952	6,500	-do- 1956	9,500
Net Profit for the year 1953	5,000	Losses in Speculation	14,500
Interest for 5 years i.e. from 1952 to 1956 @ Rs. 5,500 each year	27,500	Drawings @ Rs. 4,000 a year	20,000
		Losses on realisation :	
		Stock	17,000
		Consignment	18,000
Deficiency as per Statement of Affairs	10,650	Works	25,000
		Furniture	1,000
		Debtors	18,650
		Liability for bills discounted	3,000
	1,39,650		1,39,650

नोट—

(1) दिवालिया की पुस्तकों में एक्स और वाई में से प्रत्येक के दो खाते खुले हुए हैं। एक खाते में एक्स का क्रेडिट शेष 3,000 रु० है तथा दूसरे खाते में डेबिट शेष 2,000 रु० है। प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवेन्सी एक्ट 1909 की धारा 47 के अनुसार उक्त खातों के शेष की पूर्ति (Set off) करके बची हुई राशि के लिये ही एक्स दिवालिया का लेनदार माना जावेगा।

इसी प्रकार वाई के एक खाते का शेष 6,000 रु० डेबिट तथा दूसरे खाते का शेष 4,000 रु० क्रेडिट है। खातों के शेषों के पूर्ति करने के बाद, वाई दिवालिया का 2,000 रु० से देनदार माना जावेगा।

उक्त नियम लागू होने के कारण 6,000 रु० की राशि से असुरक्षित लेनदार तथा अच्छे देनदार (दोनों ही) कम हो जावेंगे।

(2) असुरक्षित लेनदारों की राशि निम्न प्रकार ज्ञात की गई है :
असुरक्षित लेनदार=(50,000—6,000+भुनाये गये बिलों के 3,000) रु०=47,000 रु०।

Illustration 109

A filed his petition on 31st December, 1966 and his Statement of Affairs was composed of the following figures. (ए ने 31 दिसम्बर, 1966 को दिवालिया घोषित होने के लिए प्रार्थना-पत्र दिया। उसकी स्थिति निम्न प्रकार थी) :—

	Rs.
Sundry Debtors : Good Rs. 5,000; Doubtful Rs. 15,250 (estimated to produce Rs. 10,000); Bad Rs. 5,000	
100 shares in Textiles Ltd. (estimated to produce Rs. 7,500)	12,500
Mining Shares (estimated to produce Rs. 38,000)	42,500

	Rs.
Loss through Betting	7,500
Creditors on open accounts	45,000
Creditors holding a second charge on the mining shares to the extent of Rs. 15,000	17,500
Creditors holding a first charge on mining shares	20,000
Bills Payable	2,500
Bills Receivable discounted (of which Rs. 1,750 is likely to be dishonoured)	3,500
Taxes and wages etc. (of which Creditors for taxes Rs. 1,250 are preferential)	1,500
Furniture (estimated to produce Rs. 1,500)	2,000
Cash in hand	60
Stock in trade (estimated to produce Rs. 15,000)	19,440
Bills Receivable (estimated to produce Rs. 3,500)	5,000

He started business with a capital of Rs. 30,000 on 1st January, 1964 and the business resulted in profit of Rs. 5,000 and Rs. 3,750 for the first two years respectively, and in a loss of Rs. 2,500 for the third year, after allowing Rs. 1,500 as interest on capital each year. Withdrawals for the whole period amounted to Rs. 13,000.

Prepare Statement of Affairs and Deficiency Account.

उसने 30,000 रु० की पूंजी से 1 जनवरी 1964 को व्यापार आरम्भ किया। प्रति वर्ष पूंजी पर 1,500 रु० का व्याज लगाने के पश्चात् उसके प्रथम दो वर्षों का लाभ क्रमशः 5,000 रु० और 3,750 रु० रहा और तीसरे वर्ष का नुकसान 2,500 रु० रहा। उसके आहरण कुल 13,000 रु० के थे।

स्थिति-विवरण और न्यूनता खाता बनाइये।

Solution :

Statement of Affairs

(As at 31st December, 1966)

Rs.		Rs.		Rs.
51,250	Unsecured creditors as per list 'A'	49,500	Property as per list 'E' :	
			100 Shares in Textiles Ltd. Rs. 12,500	7,500
20,000	Fully secured creditors as per list 'B' Rs. 20,000		Furniture Rs. 2,000	1,500
			Cash in Hand Rs. 60	60
	Estimated value of Security Rs. 38,000		Stock in trade Rs.19,440	15,000
	Surplus Rs. 18,000		Book-Debts as per list 'F' :	
	Value of security transferred to list C' Rs. 15,000		Good Rs. 5,000	5,000
			Doubtful Rs. 15,250	10,000
			Bad Rs. 5,000	Nil

Statement of Affairs Contd.…

		Rs.		Rs.
	Surplus to Contra Rs. 3,000		Bills of Exchange, Promissory Notes etc. as per list 'G':	
17,500	Partly Secured creditors as per list 'C' Rs. 17,500		Bills Receivable Rs. 5,000	3,500
				42,560
	Value of Security (2nd charge on Mining Shares up to Rs. 15,000) Rs. 15,000	2,500	Add surplus from contra	3,000
				45,560
			Deduct Preferential creditors as per contra	1,250
				44,310
1,250	Preferential creditors as per list 'D' deducted as per contra Rs. 1,250		Deficiency as per list 'H'	7,690
		52,000		52,000

Deficiency Account

	Rs.		Rs.
Capital as on 1st Jan. 64	30,000	Loss through betting	7,500
Profit for the year 1964	5,000	Loss for the year 1966	2,500
Profit for the year 1965	3,750	Drawings for three years	13,000
Interest for 3 years	4,500	Liability for bills discounted	1,750
Deficiency as per Statement of Affairs	7,690	Loss on realisation :	
		Shares in Textiles Ltd.	5,000
		Mining Shares	4,500
		Furniture	500
		Stock in Trade	4,440
		Bills Receivable	1,500
		Debtors	10,250
	50,940		50,940

नोट—असुरक्षित लेनदारों की राशि निम्न प्रकार ज्ञात की गई है:—

	Rs.
Creditors on open Accounts	45,000
Liabilities for bills discounted	1,750
Creditors for rates, taxes & wages etc. (Non-preferential)	250
Bills Payable	2,500
	49,500

Illustration 110

The assets of Shivjeet as on 30th June, 1968, were Rs. 70,000 and his liabilities Rs. 60,000. He filed his and estimated his deficiency to be Rs. 40,000. After making found that the following items were not passed through his

1. Interest at 6% per annum on his capital from 1

2. A contingent liability for Rs. 3,000 on bills discounted by him for Rs. 12,000.

3. Amount due as wages Rs. 300; Salaries Rs. 700; Rent Rs. 300; Rates and Taxes Rs. 200; Arrears of Compensation to a workman under Workmen's Compensation Act, Rs. 100.

Prepare his Statement of Affairs and Deficiency Account.

शिवजीत की सम्पत्ति 30 जून 1968 को, जोकि उसकी पुस्तकों द्वारा बतलाई गई है, 70,000 रु० है और उसके दायित्व 60,000 रु० है। उसने दिवालिया घोषित होने के लिए प्रार्थना पत्र दिया और अपनी न्यूनता का 40,000 रु० का अनुमान लगाया। न्यूनता का उपरोक्त अनुमान लगाने के पश्चात् उसको यह ज्ञात हुआ कि निम्नलिखित मदों की प्रविष्टि उसके खातों में नहीं हुई है:—

(1) 1 जनवरी 1968 से उसकी पूंजी पर 6% दर से ब्याज;

(2) संदिग्ध ऋण 3,000 रु० जोकि 12,000 रु० के बिल भुनाने के कारण हैं;

(3) देय राशि—मजदूरी 300 रु०; वेतन 700 रु०; किराया 300 रु०; कर 200 रु० एक मजदूर को वर्कमैन्स कम्पनसेशन एक्ट के अन्तर्गत हर्जाना की बकाया 100 रु०।

स्थिति-विवरण और न्यूनता खाता बनाइये।

Solution :

Statement of Affairs

Rs.		Rs.		Rs.
72,300	Unsecured creditors as per list 'A'	63,300	Sundry Assets as per list 'E' 'F' & 'G' Rs. 70,000	20,000
Nil	Fully Secured Creditors as per list 'B' Nil		Deduct Preferential Creditors as per contra	1,300
Nil	Partly Secured creditors as per list 'C'	Nil		18,700
			Deficiency as per list 'H'	44,600
1,300	Preferential creditors as per list 'D' deducted per contra Rs. 1,300			
		63,300		63,300

Deficiency Account

	Rs.		Rs.
Capital as on 30th June, 1968 as disclosed by his Balance Sheet	10,000	Loss on realisation of various assets	50,000
		Liabilities on account of bills discounted	3,000
Deficiency as per Statement of Affairs	44,600	Various outstanding liabilities not accounted for :— Wages Rs. 300; Salaries Rs. 700; Rent Rs. 300; Taxes Rs. 200; Arrears of Compensation Rs. 100	1,600
	54,600		54,600

नोटः—(1) विभिन्न सम्पत्तियों का प्राप्य मूल्य निम्न विधि से ज्ञात किया गया है :—

	Rs.
Sundry liabilities as per Balance Sheet without taking into account the additional liabilities on account of rent, wages etc.	60,000
Deficiency as estimated by the insolvent without taking into account the additional liabilities on account of rent, wages etc.	40,000
Estimated realisable value of the assets of Rs. 70,000	20,000

(2) पूंजी 10,000 रु० निम्न प्रकार ज्ञात की गई है :

	Rs.
Sundry Assets as per Balance Sheet	70,000
Less Sundry Liabilities as per Balance Sheet	60,000
Capital as on 30th June, 1968	10,000

(3) असुरक्षित लेनदारों के विवरण निम्न प्रकार हैं :

	Rs.
Creditors as per Balance Sheet	60,000
Liability for Bills discounted	3,000
Rent outstanding (Non-preferential under the Provincial Insolvency Act)	300
	63,300

His private properties amounted to Rs. 25,000 including the following properties:—

Property held under trust for others	Rs. 8,000
Property for which he was reputed owner	Rs. 2,000
Household Furniture, Cooking Vessels & other necessary wearing apparel for himself and the members of his family	Rs. 4,000

(a) Prepare Statement of Affairs and Deficiency Account from the above particulars. Also find out the estimated rate of dividend payable to the creditors.

(b) Find out the estimated rate of dividend payable to the creditors if his private divisible assets amounted to Rs. 2,700 only.

(उसने 1 जनवरी 1965 को 50,000 रु० की पूंजी से व्यापार आरम्भ किया। उसने सन् 1965 में 40,000 रु का लाभ कमाया और सन् 1966 में 50,000 रु० का। तत्पश्चात् उसके आज तक के 90,000 रु० के नुकसान हैं (व्यापारिक नुकसान 30,000 रु० और सट्टे से नुकसान 60,000 रु०), उसने 38,200 रु० के आहरण किये।

उसका 75,000 रु० का माल बन्धक के रूप में 40,000 रु० के लेनदारों के पास में है। 30,000 रु० के लेनदारों को इस माल के सम्बन्ध में द्वितीय चार्ज उपलब्ध है।

उसकी सम्पत्तियों से निम्नलिखित धन राशि वसूल हुई :—

स्टॉक पुस्तक-मूल्य से 40% कम; फर्नीचर 1,000 रु०; मशीन 6,000 रु०; देनदार अच्छे 7,500 रु०; संदिग्ध 2,000 रु० (उसमें से 500 रु० वसूल होने की आशा है), डूबत ऋण 500 रु०।

उसके व्यक्तिगत लेनदार 20,000 रु० के थे। उसकी निजी सम्पत्तियों का मूल्यांकन 25,000 रु० था जिसमें निम्नलिखित सम्पत्तियों का मूल्य शामिल था :—

	रु०
अन्य व्यक्तियों के लिए रखी हुई प्रन्यास पर सम्पत्ति	8,000
सम्पत्ति जिसका वह ख्याति प्राप्त स्वामी था	2,000
उसके तथा उसके परिवार के प्रयोग के लिये फर्नीचर, रसोई के बर्तन, पहनने व ओढ़ने के कपड़े	4,000

(अ) उपरोक्त विवरण से स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये। साथ में यह भी बतलाइये कि उसके लेनदारों को दिवालिये की सम्पत्ति में से मिलने वाली हिस्से की क्या दर होगी।

(ब) उसके लेनदारों को सम्पत्ति में से हिस्सा मिलने की क्या दर होगी यदि उसकी निजी विभाजन योग्य सम्पत्ति केवल 2,700 रु० की है?

Solution :

Statement of Affairs
(As at 30th June 1967)

Rs.		Rs.			Rs.
35,500	Unsecured creditors as per list 'A'	35,500	*Property as per list 'E'*		
			Stock	Rs. 5,000	3,000
	Fully Secured creditors as per list 'B' Rs. 40,000		Furniture	Rs. 3,000	1,000
40,000			Machinery	Rs. 15,000	6,000
	Estimated value of security held by them Rs. 45,000		Private divisible property		16,700
	Surplus to list 'C' Rs. 5,000		*Book debts as per list 'F'*		
			Good	Rs. 7,500	7,500
			Doubtful	Rs. 2,000	500
			Bad	Rs. 500	Nil
30,000	Partly Secured creditors as per list 'C' Rs. 30,000		*Bills of Exchange, Promissory Notes etc. as per list 'G'*		Nil
	Less estimated value of security Rs. 5,000	25,000			34,700
			Deduct Preferential creditors as per contra		22,200
					12,500
22,200	Preferential creditors as per list 'D' deducted per contra Rs. 22,200		Deficiency as per List 'H'		48,000
		60,500			60,500

Deficiency Account

	Rs.		Rs.
Capital as on 1st Jan. 1965	50,000	Trading Losses 1967 & 1968	30,000
Trading Profits—		Drawings	38,200
1965 Rs. 40,000		Loss on realisation :	
1966 Rs. 50,000	90,000	Stock	32,000
Provision for doubtful debts	500	Furniture	2,000
Deficiency as per Statement of Affairs	48,000	Machinery	9,000
		Debtors	2,000
		Speculative Losses	60,000
		Excess of personal creditors over personal assets	3,300
		Goodwill	12,000
	1,88,500		1,88,500

सम्पत्ति में से हिस्सा विभाजन की अनुमानित दर (Expected rate of dividend) :—

सुरक्षित और पूर्वाधिकार लेनदारों को देने के पश्चात् दिवालिये की सम्पत्ति का अनुमानित मूल्य केवल 12,500 रु० रह जाता है जबकि उसके असुरक्षित लेनदार 60,500 रु० के हैं। अतः लेनदारों को (12,500 ÷ 60,500) रु० = 20·66 पैसे प्रति रु० प्राप्त होगा।

(ब) आर० दत्ता की निजी सम्पत्तियों के मूल्य के अलावा व्यापार की सम्पत्तियों का योग निम्न प्रकार होगा :—

		रु०
सूची E = (3,000 + 1,000 + 6,000) रु०	=	10,000
सूची F = (7,500 + 500) रु०	=	8,000
व्यापारिक सम्पत्तियों का योग		18,000
जोड़िये		
दिवालिये की निजी सम्पत्तियों का मूल्य		2,700
दिवालिये की व्यापारिक और निजी सम्पत्तियों का योग		20,700

आर० दत्ता के पूर्वाधिकार लेनदार 22,200 रु० के हैं, अतः अन्य असुरक्षित लेनदारों को तो भुगतान का प्रश्न ही नहीं उठता। पूर्वाधिकार लेनदारों को 20,700 ÷ 22,200 = 93.24 पैसे प्रति रु० मिलेगा।

नोट :—

1. स्टॉक में 75,000 रु० की राशि जो गिरवी है, सम्पत्ति पक्ष की तरफ नहीं दिखाई जावेगी।
2. असुरक्षित लेनदारों की गणना निम्न प्रकार से की गई है :—

	रु०
लेनदार (82,000 रु०—70,000 रु० सुरक्षित लेनदार)	12,000
बैंक अधिविकर्ष	1,000
वेतन (2,000 रु०—1,200 रु०)	800
मजदूरी (1,500 रु०—800 रु०)	700
किराया (1,200 रु०—200 रु०)	1,000
निजी लेनदार	20,000
कुल असुरक्षित लेनदार	35,500

3. पूर्वाधिकार लेनदारों को निम्न विधि से ज्ञात किया गया है :

	रु०
आयकर देना बाकी	20,000
4 लिपिकों का वेतन—प्रति लिपिक 300 रु०	1,200
8 मजदूरों की मजदूरी—प्रति मजदूर 100 रु०	800
1 माह का किराया	200
	22,200

4. प्रेसीडेन्सी टाउन्स इन्सालवेन्सी एक्ट 1909 की धारा 52 के अनुसार इस उदाहरण में दी हुई निम्नलिखित सम्पत्ति विभाजन योग्य नहीं हैं। अतः इनको स्थिति-विवरण में सम्मिलित नहीं किया जावेगा :—

	रु०
दिवालिये के पास अन्य व्यक्तियों के लिए प्रन्यास में रखी हुई सम्पत्ति (Property held under trust)	8,000
निजी फर्नीचर तथा पहनने-ओढ़ने का अन्य सामान	300
	8,300

5. दिवालिये के पास ख्यातिप्राप्त सम्पत्ति 2,000 रु० लेनदारों में विभाजित की जावेगी।

6. स्थिति-विवरण में दिखाई गई विभाजन योग्य निजी सम्पत्ति का मूल्य 16,700 रु० निम्न प्रकार से ज्ञात किया गया है :—

		रु०
दिवालिये की कुल निजी सम्पत्ति		25,000
घटाइये—		
प्रन्यास पर रखी हुई सम्पत्ति	8,000 रु०	
निजी फर्नीचर, पहनने-ओढ़ने का आवश्यक सामान	300 रु०	8,300
निजी सम्पत्ति जो विभाजन योग्य है		16,700

फर्म का दिवालिया होना
(Insolvency of a Firm)

भारतीय साझेदारी अधिनियम 1932 के अनुसार किसी भी फर्म के साझियों का दायित्व न केवल असीमित होता है बल्कि यह सामूहिक एवं व्यक्तिगत (Joint and Several) भी होता है। इसका तात्पर्य यह हुआ कि यदि कोई एक साझी अथवा कुछ साझी फर्म के दायित्वों में अपने हिस्से का भुगतान नहीं कर पाते हैं तो शेष साझियों को उन दायित्वों का तब तक भुगतान करना होगा जब तक कि या तो वे समस्त दायित्व चुका नहीं दिये जाते अथवा शेष सभी साझियों की निजी सम्पत्तियां भी समाप्त नही हो जातीं। फर्म को दिवालिया उसी दशा में कहा जावेगा जब कि फर्म की तथा उसमें सभी साझियों की निजी सम्पत्तियां भी फर्म के समस्त दायित्वों का भुगतान करने में असमर्थ रहती हैं।

एकाकी व्यापार की स्थिति में व्यापारिक दायित्व और व्यक्तिगत दायित्व तथा व्यापारिक सम्पत्ति और व्यक्तिगत सम्पत्ति में कोई अन्तर नहीं किया जाता है। दोनों प्रकार के दायित्वों को सम्मिलित करके स्थिति-विवरण के दायित्व पक्ष की ओर तथा दोनों प्रकार की सम्पत्तियों को सम्मिलित करके स्थिति-विवरण के सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखाया जाता है। इन सम्मिलित सम्पत्तियों से सम्मिलित दायित्वों का भुगतान किया जाता है। साझेदारी अधिनियम की धारा 49 के द्वारा फर्म की सम्पत्तियों एवं दायित्वों तथा साझियों की व्यक्तिगत सम्पत्तियों एवं दायित्वों में अन्तर किया गया है। किसी साझी की व्यक्तिगत सम्पत्ति में से सर्वप्रथम उसके व्यक्तिगत दायित्वों का भुगतान किया जावेगा। इसके पश्चात् यदि सम्पत्ति का कुछ अंश शेष रहा तो वह फर्म के दायित्वों के भुगतान करने में प्रयुक्त होगा। यह ध्यान देने योग्य है कि किसी साझी की सम्पत्तियों का आधिक्य (Surplus) ही फर्म को हस्तान्तरित किया जाता है, घाटा (Deficiency) नहीं।

इसी प्रकार फर्म की सम्पत्तियों में से सर्वप्रथम फर्म के दायित्वों का भुगतान किया जावेगा और यदि इसके पश्चात् सम्पत्तियों का कुछ अंश शेष रहा तो इसमें से किसी साझी के आनुपातिक भाग का उसके व्यक्तिगत दायित्वों के भुगतान करने में प्रयोग किया जा सकेगा।

किसी फर्म के दिवालिया होने पर न्यायालय द्वारा जिस आफिशियल रिसीवर की नियुक्ति की जाती हैं, वह प्रत्येक साझी की व्यक्तिगत सम्पत्ति और दायित्वों के सम्बन्ध में भी आफिशियल रिसीवर का कार्य करता है। जैसा कि बताया जा चुका है, एकाकी व्यापार की स्थिति में केवल एक स्थिति-विवरण और एक न्यूनता खाता तैयार किया जाता है, लेकिन फर्म के दिवालिया होने पर उसके प्रत्येक साझी के सम्बन्ध में एक पृथक स्थिति-विवरण और पृथंक न्यूनता खाता बनाया जाता है तथा साथ ही फर्म का भी एक अलग स्थिति-विवरण और न्यूनता खाता तैयार करना होता है।

Illustration 112

On 31st March, 1953, the Balance Sheet of A and B of Jaipur was as follows. (31 मार्च, 1953 को जयपुर के अ व ब का चिट्ठा निम्न प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Trade Creditors	24,000	Machinery	24,000
Bills Payable	30,000	Buildings	12,000
Bank	18,000	Book-Debts	24,000
Twelve Month's rent	1,200	Cash	1,200
One month's Salary and Taxes	1,200	Stock	37,200
Capital			
A Rs. 12,000			
B Rs. 12,000	24,000		
	98,400		98,400

A owed personally Rs. 21,600 and he had, in addition to his interest, in the firm, a house which cost Rs. 6,000, Furniture Rs. 2,400 and Life Policies on which he had paid premiums amounting to Rs. 1,200. B owed Rs. 16,800 and he had paid life insurance premiums amounting to Rs. 3,600 and had furniture which cost Rs. 1,200.

The Partnership assets were valued as follows:

Machinery Rs. 13,080; Buildings Rs. 6,000; Good Book debts Rs. 12,000; Doubtful Rs. 6,000 (estimated at Rs. 3,600), Bad Rs. 6,000; Stock Rs. 24,000.

A's property was considered to be worth Rs. 6,000, his Life Policies Rs. 600 and his furniture Rs. 1,800.

B's Life Policies were worth Rs. 1,800; his furniture Rs. 600. Prepare separate Statement of Affairs and Deficiency Accounts of the firm as well as of the partners.

(अ के 21,600 रु० के निजी दायित्व थे। फर्म में हित के अतिरिक्त उसके पास एक मकान था जिसका मूल्य 6,000 रु० था, फर्नीचर 2,400 रु० था तथा बीमा पालिसी थी जिस पर उसने 1,200 रु० प्रीमियम दिया था। ब को 16,800 रु० देने थे, उसने जीवन बीमा प्रीमियम 3,600 रु० दिया था और उसके फर्नीचर का लागत मूल्य 1,200 रु० था।

साझेदारी की सम्पत्तियों का मूल्यांकन निम्न प्रकार से किया गया :—मशीन 13,080 रु०, भवन 6,000 रु०; पुस्तक ऋण अच्छे 12,000 रु०, संदिग्ध 6,000 रु० (अनुमानित 3,600 रु०); डूबत ऋण 6,000 रु०; स्टॉक 24,000 रु०।

अ की सम्पत्तियों का मूल्य 6,000 रु०, उसकी बीमा पालिसी 600 रु० और उसका फर्नीचर 1,800 रु० का आंका गया।

ब की जीवन-बीमा पालिसियों का मूल्य 1,800 रु० तथा उसके फर्नीचर का मूल्य 600 रु० आंका गया। फर्म तथा साझेदारों के अलग-अलग स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाते बनाइये।

Solution :

Statement of Affairs of Messrs A and B

(As at 31st March, 1953)

Rs.		Rs.		Rs.
	Unsecured creditors as		Property as per list 'E'	
73,200	per list 'A'	73,200	Cash	1,200
	Fully secured creditors		Stock (cost Rs. 37,200)	24,000
Nil	as per list 'B' Nil		Machinery (cost	
	Partly secured creditors		Rs. 24,000)	13,080
Nil	as per list 'C'	Nil	Buildings	
			(cost Rs. 12,000)	6,000
1,200	Preferential creditors		Book debts as per list 'F'	
	as per list 'D'		Good Rs. 12,000	12,000
	deducted per		Doubtful Rs. 6,000	3,600
	contra Rs. 1,200		Bad Rs. 6,000	—
			Bills of Exchange and	
			Promissory Notes	
			as per list 'G'	Nil
				59,880
			Deduct preferential	
			creditors as per contra	1,200
				58,680
			Deficiency as per list 'H'	14,520
		73,200		73,200

Deficiency Account of Messrs A and B

	Rs.		Rs.
Excess of assets over liabilities as on 31st March, 1953	24,000	Loss on realisation :	
		Stock	13,200
		Buildings	6,000
Deficiency as per Statement of Affairs	14,520	Machinery	10,920
		Debtors	8,400
	38,520		38,520

Statement of Affairs of A

Rs.		Rs.		Rs.
			Property as per list 'E'	
21,600	Unsecured creditors as per list 'A'	21,600	Furniture—cost Rs. 2,400	1,800
			House—cost Rs. 6,000	6,000
Nil	Fully secured creditors as per list 'B' Nil		Life policy (premiums paid, Rs. 1,200)	600
			Book debts as per list 'F'	Nil
Nil	Partly secured creditors as per list 'C'	Nil	Bills, Promissory Notes etc. as per list 'G'	Nil
				8,400
	Preferential creditors as per list 'D' Nil		Deficiency as per list 'H'	13,200
		21,600		21,600

Deficiency Account of A

	Rs.		Rs.
Deficiency as per Statement of Affairs	13,200	Share of Capital in the firm of A & B	12,000
		Loss on realisation :	
		Furniture	600
		Life Policy	600
	13,200		13,200

Statement of Affairs of B

Rs.		Rs.		Rs.
16,800	Unsecured creditors as per list 'A'	16,800	Property as per List 'E' Furniture cost Rs. 1,200	600
Nil	Fully secured creditors as per list 'B' Nil		Life Policy (premiums paid Rs. 3,600)	1,800
Nil	Partly secured creditors as per list 'C'	Nil	Book debts as per list 'F'	Nil
			Bills of Exchange, Promissory Notes etc. as per list 'G'	Nil
Nil	Preferential creditors as per list 'D' Nil			2,400
			Deficiency as per list 'H'	14,400
		16,800		16,800

Deficiency Account of B

	Rs.		Rs.
Deficiency as per Statement of Affairs	14,400	Loss on realisation :	
		Furniture	600
		Life Policy	1,800
		Capital in the firm	12,000
	14,400		14,400

Illustration 113

From the following particulars, prepare the Statement of Affairs and Deficiency Accounts of the Joint Estate and the Separate Estate of the partners. (निम्नलिखित विवरण से साझेदारों की संयुक्त सम्पत्ति तथा पृथक सम्पत्तियों के लिए स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाते बनाइये):—

	A & B	A	B
	Rs.	Rs.	Rs.
Liabilities :			
Mortgage of Freehold	3,000	...	...
Bank Overdraft	3,000	...	...
Sundry Creditors	12,500	1,500	2,900
Preferential Creditors	100	...	....
Capital A	3,000	...	...
Capital B	2,000	...	...
Surplus	...	5,000	1,100
	23,600	6,500	4,000

	Rs.	Rs.	Rs.
Assets :			
Freeholds	6,000	...	...
Plant	6,500	...	...
Furniture	400	1,000	1,200
Stock	5,600	...	...
Debtors	5,000	...	...
Investments	...	2,500	800
Cash	100	...	...
Capital in the firm of A & B	...	3,000	2,000
	23,600	6,500	4,000

The Bank overdraft was secured by a second mortgage on Freeholds and B's personal guarantee supported by the deposit of B's Investments as collateral security. Estimated values are :

Firm's Assets : Freeholds Rs. 4,500; Plant Rs. 3,000; Furniture Rs. 150; Stock Rs. 3,100; Debtors : Good Rs. 2,575; Doubtful (Rs. 1,000) 50 paise in Re. 1; Bad Rs. 1,425.

A's Assets : Furniture Rs. 600 and Investments Rs. 2,000.

B's Assets : Furniture Rs. 800 and Investments Rs. 600.

(बैंक अधिविकर्ष स्वकीय सम्पत्ति पर द्वितीय बन्धक द्वारा सुरक्षित था तथा 'बी' के विनियोग एवं व्यक्तिगत गारन्टी समर्थक ऋणाधार के रूप में थी। अनुमानित मूल्य हैं:—

फर्म की सम्पत्तियां : स्वकीय सम्पत्ति 4,500 रु०; प्लान्ट 3,000 रु०; फर्नीचर 150 रु०; स्टॉक 3,100 रु०; देनदार :—अच्छे 2,575 रु०; संदिग्ध (1,000 रु०) 50 पैसे 1 रु० में; डूबत— 1,425 रु०।

'ए' की सम्पत्तियां : फर्नीचर 600 रु० तथा विनियोग 2,000 रु०।
'बी' की सम्पत्तियां : फर्नीचर 800 रु० तथा विनियोग 600 रु०।)

Solution :

Statement of Affairs of Messrs A and B

Rs.		Rs.		Rs.
	Unsecured creditors as per		Property as per list 'E'	
12,500	list 'A'	12,500	Cash	100
			Stock Rs. 5,600	3,100
	Fully Secured creditors as		Plant Rs. 6,500	3,000
3,000	per list 'B' Rs. 3,000		Furniture Rs. 400	150
			Surplus from	
	Estimated value		A's Estate	1,100
	of security with		Debtors as per list 'F'	
	them Rs. 4,500		Good Rs. 2,575	2,575
			Doubtful Rs. 1,000	500
	Surplus to list 'C' Rs. 1,500		Bad Rs. 1,425	—
				10,525
	Partly Secured creditors as per list 'C'		Less Preferential	
3,000	Rs. 3,000		creditors per contra	100
	Estimated value			10,425
	of Security Rs. 1,500	1,500	Deficiency as per list 'H'	3,575
	Preferential creditors as per list 'D'			
	deducted as			
100	per contra Rs. 100			
		14,000		14,000

Deficiency Account of A and B

	Rs.	Losses on Realisaton :	Rs.
Capital of A and B	5,000	Stock	2,500
Surplus from A's Estate	1,100	Plant	3,500
Deficiency as per Statement		Furniture	250
of Affairs	3,575	Freeholds	1,500
		Debtors	1,925
	9,675		9,675

Statement of Affairs of A

Rs.		Rs.			Rs.
1,500	Unsecured Creditors	1,500	Furniture	Rs. 1,000	600
	Surplus as per list 'H'	1,100	Investments	Rs. 2,500	2,000
		2,600			2,600

Deficiency Account of A

	Rs.		Rs.
Surplus of assets over liabilities	5,000	Losses on realisation :	
		Furniture	400
		Investments	500
		Capital in firm of A&B lost	3,000
		Surplus as per statement of Affairs	1,100
	5,000		5,000

Statement of Affairs of B

Rs.		Rs.		Rs.
2,900	Unsecured Creditors	2,900	Furniture Rs. 1,200	800
			Surplus of Investments as security held by the bank Rs. (600–383)	217
				1,017
			Deficiency as per list 'H'	1,883
		2,900		2,900

Deficiency Account of B

	Rs.		Rs.
Surplus of assets over liabilities	1,100	Losses on realisation :	
Deficiency as per Statement of Affairs	1,883	Furniture	400
		Investments	200
		Liabilities in respect of Guarantee	383
		Capital in firm of A & B totally lost	2,000
	2,983		2,983

नोट:—बैंक अधिविकर्ष के 1,500 रु० फर्म के स्थिति-विवरण में असुरक्षित लेनदारों के रूप में दिखाये गये हैं क्योंकि बैंक के पास व के जो विनियोग रखे हुए हैं, वह फर्म की सम्पत्ति नहीं हैं। अतः अन्य असुरक्षित लेनदारों की भांति फर्म से इसको $\left(\frac{10,425}{14,000} \times 1,500\right)$ रु० = 1,117 रु० मिल जायेंगे। बैंक बाकी 383 रु० व के विनियोगों से प्राप्त करेगा। विनियोगों की बची हुई राशि (600–383) रु० = 217 रु० बैंक द्वारा व को वापस करदी जायेगी जो उसके स्वयं के लेनदारों के भुगतान के काम में आवेगी।

चिट्ठा और स्थिति विवरण में अन्तर :

1. चिट्ठा प्रायः वर्ष की अंतिम तिथि को बनाया जाता है परन्तु स्थिति-विवरण-दिवालिया घोषित होने की तिथि पर बनाया जाता है।
2. चिट्ठा व्यापारी की आर्थिक स्थिति का ज्ञान कराता है, स्थिति-विवरण व्यापारी की न्यूनता (Deficiency) बतलाता है।
3. चिट्ठे में सम्पत्तियां पुस्तक मूल्य पर दिखलाई जाती हैं परन्तु स्थिति-विवरण में सम्पत्तियां बाजार मूल्य पर दिखलाई जाती हैं।
4. चिट्ठे में सम्पत्तियां 'नकद क्रम' (Cash order) में दिखलाई जाती हैं परन्तु स्थिति-विवरण में सम्पत्तियां न्यायालय द्वारा आदेशित एक निश्चित क्रम में दिखलाई जाती हैं।
5. चिट्ठे में व्यापारी की केवल व्यापारिक सम्पत्तियां ही दिखलाई जाती हैं किन्तु स्थिति-विवरण में व्यापारी की व्यापारिक और निजी सम्पत्तियां, दोनों, दिखलाई जाती हैं।
6. चिट्ठे में सम्पत्तियों का वर्गीकरण नहीं किया जाता है परन्तु स्थिति-विवरण में सम्पत्तियों का वर्गीकरण किया जाता है, जैसे सम्पत्तियां, देनदार, बिल इत्यादि।
7. चिट्ठे में दायित्वों का वर्गीकरण नहीं किया जाता है परन्तु स्थिति-विवरण में दायित्वों का वर्गीकरण किया जाता है, जैसे अरक्षित लेनदार, पूर्ण रक्षित लेनदार, अंशतः रक्षित लेनदार, पूर्वाधिकार लेनदार।
8. ऐसी सम्पत्तियां जो बन्धक रूप में रख दी गई हैं चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष पर दिखलाई जाती हैं परन्तु स्थिति-विवरण में ऐसी सम्पत्तियों को उनके सम्बन्धित ऋण में से घटा कर बताया जाता है।
9. चिट्ठे में पूंजी, लाभ, हानियां, आहरण आदि बतलाये जाते हैं परन्तु स्थिति-विवरण में पूंजी, लाभ, हानियां, आहरण आदि नहीं बतलाये जाते हैं।
10. चिट्ठे में कृत्रिम सम्पत्तियां (Fictitious Assets) तथा कोष (Reserves) आदि भी बतलाये जाते हैं परन्तु स्थिति-विवरण में इन्हें नहीं दिखलाया जाता है।
11. चिट्ठे में सभी लेनदार दायित्व पक्ष की ओर दिखाये जाते हैं परन्तु स्थिति-विवरण में पूर्वाधिकार लेनदारों को सम्पत्ति पक्ष में से घटाकर बताया जाता है।
12. सुरक्षित लेनदारों का योग चिट्ठे में अन्य लेनदारों के योग में जोड़ दिया जाता है परन्तु स्थिति-विवरण में सुरक्षित लेनदारों को दी जाने वाली राशि 'देय धन कोष्टक' (Expected to rank) में नहीं बतलाई जाती है।

13. एकाकी व्यवसायी व साझेदारी फर्म के लिए चिट्ठा बनाना आवश्यक नहीं है, परन्तु दिवालिये की स्थिति में स्थिति-विवरण बनाना आवश्यक है।
14. चिट्ठा व्यापारी तथा उसके लेनदारों की सुविधा के लिए बनाया जाता है परन्तु स्थिति-विवरण न्यायालय की सुविधा के लिए बनाया जाता है।
15. चिट्ठा व्यापारी अपने पास रखता है, परन्तु स्थिति-विवरण न्यायालय में प्रस्तुत करना पड़ता है तथा उसके साथ 8 सूचियां और नत्थी करनी पड़ती हैं।
16. चिट्ठे में गलत तथ्य के समावेश पर कोई दण्ड नहीं है परन्तु स्थिति-विवरण में गलत तथ्य के समावेश पर दंड की व्यवस्था है।

Questions

1. What do you understand by the term 'Preferential Creditors' ? How are they shown in the Statement of Affairs ?

'पूर्वाधिकार लेनदारों से आप क्या समझते हैं ? इनको स्थिति–विवरण में किस प्रकार दिखाया जाता है ?

2. Distinguish between :
   (i) Statement of Affairs and Balance Sheet; and
   (ii) Insolvency of an Individual and that of a Firm.

   अन्तर बताइये :
   (i) स्थिति-विवरण और चिट्ठा; तथा
   (ii) एक व्यक्ति का दिवाला और एक फर्म का दिवाला।

3. Write short notes on (संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए) :
   (i) Unsecured Creditors (असुरक्षित लेनदार)
   (ii) Secured Creditors (सुरक्षित लेनदार)
   (iii) Deficiency Account (न्यूनता खाता)
   (iv) Divisible and Not Divisible Property
   (विभाजन योग्य तथा अविभाजन योग्य सम्पत्ति।)

4. Prepare a Statement of Affairs and Deficiency Account as at March 31, 1962 from the following figures : Stock realised Rs. 500, Fixtures and Fittings Rs. 400 and Bad and Doubtful Debts Rs. 500. Shares realise full value. The business was commenced on April 1, 1959 with a capital of Rs. 9,100. Profits for 1959-60 amounted to Rs. 4,000; for 1960-61 Rs. 2,000, and there was a loss of Rs. 1,800 in 1961-62. Total drawings amounted to Rs. 10,000.

		Rs.
Cash		300
Stock in Trade		1,000
Debtors :	Good	8,000
	Doubtful	2,000
	Bad	1,500
Fixtures and Fittings		600

	Rs.
Investment in shares	600
Unsecured Creditors	11,000
Secured Creditors	3,000
Value of security held by Secured Creditors	3,500
Preferential Claims	200

निम्नलिखित अंकों की सहायता से 31 मार्च, 1962 को एक स्थिति-विवरण और न्यूनता खाता बनाइये। स्टॉक से 500 रु०; फिक्सचर्स एण्ड फिटिंग्स से 400 रु०; संदिग्ध और डूबत-ऋण से 500 रु० वसूली हुई। अंशों का पूर्ण मूल्य प्राप्त हो गया है। व्यापार 1 अप्रैल 1959 को 9,100, रु० की पूंजी से प्रारम्भ किया गया। 1959-60 का लाभ 4,000 रु० था, 1960-61 में लाभ 2,000 रु० और 1961-62 में 1,800 रु० का नुकसान था। कुल आहरण 10,000 रु० थे।

	रु०
नकद	300
स्टॉक	1,000
देनदार :	
अच्छे	8,000
संदिग्ध	2,000
डूबत	1,500
फिक्सचर्स एण्ड फिटिंग्स	600
अंशों में विनियोग	600
असुरक्षित लेनदार	11,000
सुरक्षित लेनदार	3,000
सुरक्षित लेनदारों के पास प्रतिभू में रखी हुई सम्पत्ति	3,500
पूर्वाधिकार लेनदार	200

Answer :—Deficiency Rs. 400. [201]

5. Ram Mohan filed a petition in insolvency on 30th June. His books showed the following balances (राम मोहन ने 30 जून को दिवालिया घोषित होने के लिए प्रार्थना-पत्र दिया। उसकी पुस्तकों के अनुसार निम्नलिखित शेष थे) :—

		Rs.	Rs.
Cash		10	
Furniture (estimated to produce Rs. 80)		250	
Stock-in trade (estimated to produce Rs. 1,200)		1,800	
Sundry Creditors :			
Trade Creditors			2,000
Bills Payable			2,200
Sundry Debtors :			
Good	Rs. 1,000		
Doubtful (estimated at 50%)	Rs. 2,000		
Bad	Rs. 2,000	5,000	
Bank Overdraft			1,200
Capital			1,660
		7,060	7,060

Liability on bills discounted Rs. 500, expected to rank Rs. 100.

His household furniture etc., was valued at Rs. 250. He owned a house valued at Rs. 750, having a mortgage on it of Rs. 600 at 4% interest paid upto the preceding 31st December.

Preferential creditors amounted to Rs. 35 (included in Sundry Creditors) and Rs. 15 for rates on the house.

Prepare a Statement of Affairs.

(भुनाये गये बिल के सम्बन्ध में दायित्व 500 रु० हैं, उसमें से दायित्व उत्पन्न होने की आशा 100 रु० है।

उसके मकान पर रखे हुये फर्नीचर का मूल्य 250 रु० था। उसके पास 750 रु० का मकान था जिसको उसने 600 रु० पर गिरवी रख दिया था। उस ऋण पर ब्याज 4% की दर से पिछले 31 दिसम्बर तक दिया गया है।

पूर्वाधिकार लेनदार 35 रु० के हैं (वह राशि विभिन्न लेनदारों में सम्मिलित है) और 15 रु० मकान के कर के हैं।

स्थिति-विवरण बनाइये।) [202]

Answer : Deficiency Rs. 1,837.

6. The capital in the business of Hari on 31st December, 1959 was Rs. 700. During the year ended 31st December, 1960 he sustained a trading loss of Rs. 780 and his drawings out of the business were Rs. 700. Owing to depreciation of stocks and his unsatisfactory financial position, he was compelled to file his petition, and a receiving order was made against him on 31st December, 1960.

His assets consisted of :—

(a) Book Debts Rs. 1,000 of which Rs. 800 was considered good and the remainder estimated to produce Rs. 100.

(b) Stock (cost Rs. 1,500) estimated to produce Rs. 900.

(c) Machinery (cost Rs. 1,600) estimated to produce Rs 1,100.

(d) Freehold house valued at Rs. 1,200, the deeds of which were lodged with the Bank as security for an overdraft on business account of Rs. 800.

(e) His life policy (surrender value Rs. 600) given as part security for a private loan of Rs. 1,000.

His unsecured creditors amounted to Rs. 4,030, and he owed Rs. 50 to his clerk, being salary for the two months ended 30th November, 1960.

Prepare his statement of Affairs and Deficiency Account.

31 दिसम्बर, 1959 को हरि की व्यापार में पूंजी 700 रु० थी। 31 दिसम्बर, 1960 को अंत होने वाले वार्षिक वर्ष में उसको 780 रु० का नुकसान हुआ। व्यापार से उसके आहरण 700 रु० थे। स्टॉक के मूल्य में कमी होने के कारण तथा असन्तोषजनक आर्थिक स्थिति होने के कारण, उसको दिवालिया घोषित होने के लिये प्रार्थना-पत्र देना पड़ा और 31 दिसम्बर, 1960 को उसके विरुद्ध रिसीविंग आदेश जारी कर दिया गया।

उसकी सम्पत्तियाँ निम्नलिखित थीं :—

(अ) पुस्तक-ऋण 1,000 रु० जिसमें से 800 रु० उत्तम हैं और शेष में से 100 रु० वसूल होने की आशा है।

(ब) स्टॉक (क्रय मूल्य 1,500 रु०) विकने का अनुमानित मूल्य 900 रु०।

(स) मशीन (क्रय मूल्य 1,600 रु०) विकने का अनुमानित मूल्य 1,100 रु०।

(द) स्वकीय भवन 1,200 रु० जिसका पट्टा बैंक में, व्यापार के लिए 800 रु० का अधिविकर्ष लेने के कारण, जमा करा रखा है।

(ई) उसकी जीवन बीमा पालिसी (समर्पण मूल्य 600 रु०) 1,000 रु० के निजी ऋण के लिए आंशिक जमानत के रूप में दी गई।

उसके असुरक्षित लेनदार 4,030 रु० के थे और उसको अपने लिपिक को 30 नवम्बर, 1960 को समाप्त दो माह के वेतन के रूप में 50 रु० देने थे।

उसका स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता वनाइये। [203]

Answer : Deficiency Rs. 1,180;

Surplus from private assets shown in Deficiency a/c Rs. 800;
Deficiency Account Total Rs. 2,680.

7. Ram and Hari filed their petition for insolvency on 31st December, 1967.

Their books showed that they owed Rs. 50,000 to unsecured creditors Rs. 30,000 to creditors holding lien on goods for Rs. 10,000; Rs. 10,000 Mortgage on the Works; and Rs. 1,000 for Salaries and Rates. Bills of Exchange for Rs. 10,000 had been discounted with their bankers, and it was estimated that there was a liability in respect of them for Rs. 3,000.

Their Assets were :—

Consignment Rs. 20,000 estimated to realise Rs. 2,000, Good Book Debts Rs. 18,000 Doubtful Debts Rs. 6,000 estimated to realise Rs. 3,000; Bad Debts Rs. 15,650.

Works cost Rs. 1,00,000 (depreciated out of Profit & Loss Account to Rs. 75,000) estimated to realise Rs. 50,000.

Furniture and Fittings Rs. 2,000 estimated to realise Rs. 1,000; Stocks (including held by creditors) Rs. 25,000 estimated to realise Rs. 18,000.

Cash and Bills Rs. 1,350.

They commenced business on Ist January 1963, with a capital of Rs.83,000. After charging annually Rs. 5,000 for depreciation of the works, Rs. 4,000 for interest on capital and Rs. 1,500 for partners' salaries, the trading showed profits of Rs. 6,500 in 1963, and Rs. 5,000 in 1964 and losses of Rs. 6,000 in the year 1965 and Rs. 7,000 in the year 1966 and Rs. 9,500 in the year 1967, while the withdrawals of the partners averaged Rs. 5,500 a year.

Draw up Statement of affairs and prepare Deficiency Account.

राम और हरि ने,दिवालिया घोषित होने के लिए, 31 दिसम्बर 1967 को प्रार्थना-पत्र दिया।

उनकी पुस्तकों ने बताया कि उनको 50,000 रु० असुरक्षित लेनदारों को देने हैं,30,000 रु० ऐसे लेनदारों को देने हैं जिनको 10 000 रु० के स्टाक पर अधिकार है; 10,000 रु० के अन्य ऐसे लेनदार हैं जिनके पास कार्यशाला को बन्धक रखा गया है तथा 1,000 रु० वेतन और करों के देने है। 10,000 रु० के प्राप्य बिलों को बैंक मे भुना लिया गया है और यह अनुमान किया जाता है कि इस सम्बन्ध में 3,000 रु० देने पड़ेंगे।

उनकी सम्पत्तियाँ इस प्रकार थीं :—

चालानी पर माल 20,000 रु० (अनुमानित प्राप्य राशि 2,000 रु०); प्रचछे लेनदार 18,000 रु०; संदिग्ध ऋण 6,000 रु० (अनुमानित प्राप्य राशि 3,000 रु०); डूबत ऋण 15,650 रु०;

कार्य-शाला-1,00,000 रु० लागत मूल्य (उस पर लाभ-हानि खाते से मूल्य ह्रास काटने के बाद उसका अपलिखित मूल्य 75,000 रु० था) अनुमानित प्राप्य राशि-50,000 रु०;

फर्नीचर एण्ड फिटिंग्स 2,000 रु० अनुमानित प्राप्य राशि 1,000 रु०;

स्टॉक (लेनदारों के पास सहित) का मूल्य 25,000 रु० अनुमानित प्राप्य राशि 18,000 रु०;

नकद और बिल 1,350 रु०।

उन्होंने 1 जनवरी 1963 को 83,000 रु० की पूंजी से व्यापार आरम्भ किया। प्रतिवर्ष कार्यशालाओं पर 5,000 रु० मूल्य ह्रास के रूप में अपलिखित करने के पश्चात्, 4,000 रु० पूंजी पर ब्याज तथा 1,500 रु० साझेदारों के वेतन के डेबिट करने के पश्चात् उसको 1963 में 6,500 रु० का तथा 1964 में 5,000 रु० का लाभ हुआ। तत्पश्चात् 1965 में उसको 6,000 रु० की हानि हुई। 1966 और 1967 में उसको क्रमशः 7,000 रु० और 9,500 रु० की हानि हुई जबकि साझेदारों द्वारा किये गये आहरण औसतन 5,500 रु० प्रति वर्ष थे।

स्थिति विवरण बनाइये तथा न्यूनता खाता तैयार कीजिये। **(204)**

Answer : Deficiency Rs. 650;

Deficiency Account Total Rs. 1,22,650.

8. Virendra filed his petition for insolvency on 30th September, 1967. The details of his assets and liabilities were as follows : Cash in hand Rs. 50, Book debts : good Rs. 48,000; doubtful Rs. 21,000 estimated to produce Rs. 9,800; bad Rs. 4,500; Stock-in-trade Rs. 80,000 estimated to produce Rs. 65,000; Bills Receivable, good Rs. 14,500; Office Furniture Rs. 3,500 estimated to produce Rs. 2,500; Machinery and Plant Rs. 6,000 estimated to produce Rs. 4,500; Private house Rs. 16,000 subject to a mortgage of Rs. 8,000; Private Furniture Rs. 3,000 estimated to produce Rs. 2,200; Unsecured Creditors Rs. 2,40,000; Creditors partly secured Rs. 1,40,000 estimated value of security held Rs. 85,000.

Outstanding liabilities at the date of the petition not otherwise included: Rent 6 months Rs. 2,500; Salaries of office staff (2 months) Rs. 1,500.

Prepare the Statement of Affairs.

वीरेन्द्र ने 30 सितम्बर 1967 को दिवालिया घोषित होने हेतु प्रार्थना-पत्र दिया उसकी सम्पत्तियां तथा दायित्वों का विवरण निम्न प्रकार था :—

नकद 50 रु०; पुस्तक ऋण : अच्छे–48,000 रु०; संदिग्ध 21,000 रु० अनुमानित प्राप्य राशि 9,800 रु०; डूबत 4,500 रु०; व्यापार में स्टॉक 80,000 रु० अनुमानित प्राप्य मूल्य 65,000 रु०; प्राप्य बिल अच्छे 14,500 रु०; कार्यालय फर्नीचर 3,500 रु० अनुमानित प्राप्य राशि 2,500 रु०; मशीन और प्लान्ट 6,000 रु० अनुमानित प्राप्य राशि 4,500 रु०; निजी भवन 16,000 रु० जिस पर 8,000 रु० का वन्धक है।

निजी फर्नीचर 3,000 रु० अनुमानित प्राप्य राशि 2,200 रु०; असुरक्षित लेनदार 2,40,000 रु०; अंशत सुरक्षित लेनदार 1,40,000 रु० जिनके पास रखी हुई प्रतिभूति का अनुमानित मूल्य 85,000 रु०।

प्रार्थना-पत्र की तिथि को बकाया दायित्व जो उपरोक्त मदों में सम्मिलित नहीं हैं : किराया 6 मास का–2,500 रु०; कार्यालय के कर्मचारियों का वेतन (2 माह का) 1,500 रु०।

स्थिति विवरण बनाइये। (205)

Answer : Deficiency—Rs. 1,44,450

9. K. Sharma filed his petition for insolvency on 31st December, 1967, on which date his position was as follows : Book-debts : good Rs. 20,000, doubtful Rs. 6,000 estimated to produce Rs. 2,000, bad Rs.1,000; Stock Rs. 60,000 estimated to realise Rs. 43,000; Preference Shares of Hydro Power Ltd. Rs.15,000 estimated to produce Rs. 14,000; Equity Shares Rs. 5,000 estimated to produce Rs. 2,000; Cash at Bank Rs. 500; B/R Rs. 1,000; Buildings cost Rs. 15,000, valued at Rs. 12,000; Machinery Rs. 14,000 estimated to realise Rs. 11,000;

Fixtures Rs. 2,000 estimated to realise Rs. 1,500; Debentures in a company cost Rs. 6,250 estimated to realise Rs. 5,000.

Sundry Creditors Rs. 60,000; B/P Rs. 15,000; Creditors partly secured by lien on shares Rs. 40,000; Landlord for rent Rs. 100; Liability on bills receivable discounted (estimated to rank Rs. 3,500) Rs. 7,000; Mortgage on buildings Rs. 10,100; Creditors for rates, taxes, wages and salaries Rs. 2,900.

On 1st January, 1963, he had a capital of Rs. 50,000. The business resulted in a profit of Rs. 10,000, Rs. 4,500 and Rs. 3,000 in the years 1963, 1964 and 1965 respectively and a loss of Rs. 2,000 and Rs. 7,500 in 1966 and 1967 respectively after allowing Rs. 2,500 for interest on capital each year. The withdrawals amounted to Rs. 35,850 during the period. Losses were incurred through betting, stock exchange transactions and cotton speculation of Rs. 1,000; Rs. 11,000 and Rs. 5,000 respectively.

Prepare a Statement of Affairs and a Deficiency Account.

31 दिसम्बर, 1967 को के० शर्मा ने दिवालिया घोषित होने हेतु प्रार्थना-पत्र दिया। उस तिथि को उसकी स्थिति निम्न प्रकार थी : पुस्तक ऋण-अच्छे 20,000 रु०, संदिग्ध 6,000 रु० अनुमानित प्राप्य मूल्य 2,000 रु०, डूबत ऋण 1,000 रु०; स्टॉक 60,000 रु०, अनुमानित प्राप्य मूल्य 43,000 रु०; हाइड्रो पावर लि० के अधिमान अंश 15,000 रु०, अनुमानित प्राप्य मूल्य 14,000 रु०; ईक्विटी अंश 5,000 रु०, अनुमानित प्राप्य मूल्य 2,000 रु०; बैंक में जमा 500 रु०; प्राप्य बिल 1,000 रु०; भवन लागत मूल्य 15,000 रु०, आंका गया मूल्य 12,000 रु०; मशीन 14,000 रु०, अनुमानित प्राप्य राशि 11,000 रु०; फिक्सचर्स 2,000 रु०, अनुमानित प्राप्य राशि 1,500 रु०; कम्पनी के ऋणपत्र, क्रय मूल्य 6,250 रु०, अनुमानित प्राप्य मूल्य 5,000 रु०।

विभिन्न लेनदार 60,000 रु०; देय बिल 15,000 रु०; अंशतः सुरक्षित लेनदार जिनका अंशों पर ग्रहणाधिकार है 40,000 रु०; भूस्वामी को किराया 100 रु०; भुनाये गये बिल पर दायित्व (अनुमानित देय राशि 3,500 रु०) 7,000 रु०; भवन पर बन्धक 10,100 रु०; कर, मजदूरी और वेतन के लेनदार 2,900 रु०।

1 जनवरी, 1963 को उसकी पूंजी 50,000 रु० थी। 2,500 रु० प्रतिवर्ष पूंजी पर ब्याज चार्ज करने के पश्चात् 1963, 1964 और 1965 में उसको क्रमशः 10,000 रु०, 4,500 रु० और 3,000 रु० का लाभ तथा 1966 और 1967 में क्रमशः 2,000 रु० और 7,500 रु० का नुकसान हुआ। इस काल में आहरण 35,850 रु० के हुये। दाव, स्कन्ध विनिमय व्यवहार तथा रुई में सट्टा लगाने के कारण उसको क्रमशः 1,000 रु०, 11,000 रु० और 5,000 रु० की हानि हुई।

स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये। [206]

Answer : Deficiency Rs. 19,600;
Total of Deficiency Account Rs. 99,600.

5. The assets and liabilities of X, as shown by his books as on 31st December, 1967, were Rs. 80,000 and Rs. 60,000. He filed his petition for insolvency and estimated his deficiency to be Rs. 50,000. After making the above estimates, he found that the following items were not passed through his account book :—

(a) Interest on his capital @ 6% from 1st January, 1967;

(b) Bills discounted Rs. 10,000 expected to rank Rs. 4,000;

(c) A creditor of Rs. 500 omitted to be entered in the books. His claim was, however, admitted by the debtor;

(d) Outstanding expenses—salaries of 4 clerks @ Rs. 100 per month for each clerk for 3 months; wages of a worker for the month of August, 1967 Rs. 50; wages of 4 workers for the month of November, 1967 @ Rs. 40 per worker; Rent for the month of November, 1967 Rs. 400; Amount due to the municipality for rates Rs. 1,000 and to the Income Tax Deptt. Rs. 2,000 and to the Sales Tax Deptt. Rs. 1,500.

Prepare his Statement of Affairs and Deficiency Account.

31 दिसम्बर 1967 को एक्स की पुस्तकों के अनुसार उसकी सम्पत्ति 80,000 रु० थी और उसके दायित्व 60,000 रु० थे। उसने दिवालिया घोषित होने हेतु प्रार्थना-पत्र दिया और उसने 50,000 रु० घाटे का अनुमान लगाया। घाटे का उपरोक्त अनुमान लगाने के पश्चात् उसको यह ज्ञात हुआ कि निम्नलिखित मदों की प्रविष्टि उसके खातों में नहीं हुई है—

(अ) 1 जनवरी 1967 से 6% की दर से उसकी पूंजी पर व्याज;

(ब) भुनाये गये बिल 10,000 रु०, अनुमानित देय राशि 4,000 रु०;

(स) 500 रु० के ऋणदाता को पुस्तकों में दिखाना भूल गये। उसका दावा ऋणी ने स्वीकार कर लिया है;

(द) बकाया खर्चे—4 लिपिकों का 100 रु० प्रति माह प्रति लिपिक के हिसाब से 3 माह का वेतन; अगस्त 1967 माह के लिए एक मजदूर की मजदूरी 50 रु०; नवम्बर 1967 माम के लिए 4 मजदूरों का 40 रु० प्रति मजदूर के हिसाब से मजदूरी; नवम्बर 1967 मास का किराया 400 रु०; करों की देय राशि नगरपालिका को 1,000 रु०, आयकर विभाग को 2,000 रु० और बिक्री कर विभाग को 1.500 रु०।

उसका स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये। [207]

Answer : Deficiency Rs. 60,810;

Total of Deficiency Account Rs. 80,810.

11. B of Bombay was declared insolvent on 30th June, 1968. His Balance Sheet on that date was as follows. (बम्बई के ब को 30 जून, 1968 को दिवालिया घोषित कर दिया गया उसका चिट्ठा उस तिथि को निम्न प्रकार था) :—

Balance Sheet

As of 30th June 1968

	Rs.		Rs.
Creditors for business	1,83,000	Cash	5,000
Income Tax Arrears	10,000	Debtors	25,000
Salary of 6 clerks	1,500	Stock	90,000
Wages of 10 labourers	2,000	Furniture	10,000
Rent for two months due to landlord	800	Buildings	60,000
Provision for Bad Debts	2,000	Goodwill	8,000
Arrears of Workmen's Compensation	700	B's Capital overdrawn	2,000
	2,00,000		2,00,000

Goods worth Rs. 80,000 were mortgaged with creditors amounting to Rs. 50,000. Creditors amounting to Rs. 40,000 had the second charge on the goods mortgaged with the above creditors. Creditors amounting to Rs. 8,000 have their lien on the furniture. His assets were expected to realise as follows : Stock 30% less than its book value; Furniture Rs. 7,500, Buildings Rs. 40,000, Debtors Rs. 24,000.

His personal creditors amounted to Rs. 60,000.

His private properties amounted to Rs. 50,000 including that of the following properties:—

Property held under trust for others	Rs.	10,000
Property which was under his possession as reputed owner	Rs.	5,000
Household Furniture, cooking vessels and other necessary wearing apparel for himself and the members of his family	Rs.	6,000

Prepare a Statement of Affairs and Deficiency Account from the above particulars. Also find out the estimated rate of dividend payable to the creditors.

(80,000 रु० का माल 50,000 रु० के लेनदारों के पास बन्धक रखा हुआ है। 40,000 रु० के लेनदारों को इस माल के सम्बन्ध में द्वितीय चार्ज उपलब्ध है। 8,000 रु० के लेनदारों का फर्नीचर पर ग्रहणाधिकार है। उसकी सम्पत्तियों से निम्न प्रकार वसूली होने की आशा है:—

स्टॉक पुस्तक मूल्य से 30 प्रतिशत कम;

फर्नीचर 7,500 रु०; भवन 40,000 रु०; देनदार 24,000 रु०।

उसके व्यक्तिगत लेनदार 60,000 रु० के थे;

उसकी सम्पत्तियों का मूल्य 50,000 रु० था जिसमें अग्रलिखित सम्पत्तियों का मूल्य सम्मिलित था:—

	रु०
अन्य व्यक्तियों के लिये रखी हुई प्रन्यास पर सम्पत्ति	10,000
सम्पत्ति जो उसके अधिकार में ख्याति प्राप्त स्वामी के रूप में थी	5,000
उसका तथा उसके परिवार के प्रयोग के लिये फर्नीचर, रसोई के वर्तन, पहनने के कपड़े	6,000

उपरोक्त विवरण से स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये। साथ में यह भी बतलाइये कि उसके लेनदारों को दिवालिये की सम्पत्ति में से मिलने वाली हिस्से की दर क्या होगी।) [208]

Answer : Deficiency Rs. 78,800; Rate of Dividend—56.44 paise per rupee; Total of Deficiency Account Rs. 79,800.

12. On 31st March, 1967, the Balance Sheet of Messrs A and B was as follows (31 मार्च, 1967 को अ और ब का चिट्ठा निम्न प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Trade Creditors	2,000	Machinery	2,000
Bills Payable	2,500	Buildings	1,000
Bank	1,500	Book-Debts	2,000
12 Months' Rent	100	Cash	100
1 Month's Salaries	100	Stock	3,100
Capital :			
A Rs. 1,000			
B Rs. 1,000	2,000		
	8,200		8,200

A owed Rs. 1,800 personally and he had in addition to his interest in the firm a house which cost Rs. 500, Furniture Rs. 200 and Life Policies on which he had paid premiums amounting to Rs. 100. B owed Rs. 1,400 and he had paid Life Insurance Premiums amounting to Rs. 300, and had furniture which cost Rs. 100. The bank held the deed of A's property and his life policies.

The partnership assets were valued as follows : Machinery Rs. 1,090: Buildings Rs. 500; Good Book debts Rs. 1,000; Doubtful Rs. 500 (estimated at Rs. 300); Bad Rs. 500; Stock Rs. 2,000

A's property was considered to be worth Rs. 500; his life policies Rs.50 and his Furniture Rs. 150, B's life policies were worth Rs. 150 and his furniture Rs. 50.

Prepare Statement of Affairs and Deficiency Account of the firm and the Statement of Affairs and Deficiency Account of the partners.

(अ के 1,800 रु० के निजी दायित्व थे। फर्म में हित के अतिरिक्त उसके पास एक मकान है जिसका मूल्य 500 रु० है, फर्नीचर 200 रु० का है तथा वीमा पालिसी है जिस पर उसने 100 रु० प्रीमियम दिया है। व को 1,400 रु० देने थे, उसने जीवन वीमा प्रीमियम के 300 रु० दिये थे और उसके फर्नीचर का मूल्य 100 रु० था। वैंक के पास अ की सम्पत्ति और वीमा पॉलिसी के स्वत्व प्रपत्र थे।

साझेदारी की सम्पत्तियों का मूल्यांकन इस प्रकार किया गया—मशीन 1,090 रु०; भवन 500 रु०; पुस्तक ऋण-अच्छे 1,000 रु०; संदिग्ध 500 रु० (अनुमानित प्राप्य मूल्य 300 रु०); डूवत 500 रु०; स्टॉक 2,000 रु०।

अ की सम्पत्ति का मूल्य 500 रु०; उसकी वीमा पालिसी 50 रु० और उसके फर्नीचर का मूल्य 150 रु० आंका गया। व की जीवन वीमा पालिसी 150 रु० और उसका फर्नीचर 50 रु० का आंका गया।

फर्म का स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता वनाइये। [209]
साझेदारों के स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाते भी वनाइये।)

Answer : Deficiency of the Firm Rs. 1,210; Deficiency of A Rs. 1,398;
Surplus available for A's personal creditors after
discharging the liability for guarantee Rs. 252;
Deficiency of B Rs. 1,200.

13. Hari and Mohan are equal partners. Insolvency petition is filed on 30th June, 1968. The Balance Sheet as on 30th June, 1968 is as follows. Realisable value is indicated in brackets. (हरि और मोहन बराबर के साझी हैं। दिवालिया घोषित होने हेतु प्रार्थना पत्र 30 जून, 1968 को दाखिल किया गया है। 30 जून, 1968 को उनका चिट्ठा निम्न प्रकार है। अनुमानित प्राप्य मूल्य कोष्ठकों में दिये गये हैं):—

Balance Sheet

	Rs.		Rs.
Mortgage Loan (on freehold property)	20,000	Freehold Property (Rs. 60,000)	80,000
Bank Overdraft (secured by second mortgage on freehold property)	80,000	Plant and Machinery (Rs. 36,000)	60,000
		Fixture (Rs. 2,000)	6,000
		Stock (Rs. 20,000)	40,000
Preferential Creditors	3,000	Debtors (Rs. 30,000)	50,000
Unsecured Creditors	1,00,000	Cash	1,000
Capital—Hari	44,000	Mohan's Capital overdrawn	10,000
	2,47,000		2,47,000

The overdraft is secured, in addition to second mortgage, by Hari's personal guarantee against which his investments amounting to Rs. 40,000 have

been deposited. Hari's investments are estimated to realise Rs. 34,000. Hari's personal creditors amounted to Rs. 50,000 and his assets other than the investments were valued at Rs. 10,000. Personal creditors of Mohan (including firm's overdrawn balance) amounted to Rs. 20,000. His assets, however, amounted to Rs. 29,000.

Prepare : (a) Statement of Affairs of the firm and its Deficiency Account.

(b) Statement of Affairs of both the partners and their Deficiency Accounts.

(बैंक अधिविकर्ष स्वकीय सम्पत्ति पर द्वितीय नम्बर के वन्धक के अतिरिक्त हरि की व्यक्तिगत गारन्टी से सुरक्षित है जिसके लिए हरि के 40,000 रु० के विनियोग बैंक में जमा करा दिये गये हैं। हरि के विनियोगों से 34,000 रु० वसूल होने का अनुमान है। हरि के व्यक्तिगत दायित्व 50,000 रु० के थे और उनकी सम्पत्तियों का मूल्य (विनियोगों को छोड़ते हुए) 10,000 रु० आंका गया। मोहन के व्यक्तिगत लेनदार (फर्म के दायित्व को सम्मिलित करते हुए) 20,000 रु० के थे। उसकी सम्पत्तियों का मूल्य 29,000 रु० आंका गया।

(अ) फर्म का स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता तैयार कीजिये।

(ब) साझेदारों के स्थिति विवरण तथा न्यूनता खाते तैयार कीजिये। (210)

Ans. : Deficiencies-Firm Rs. 35,000, Hari's Deficiency Rs. 16,000; Surplus from investments to be distributed among Hari's personal creditors Rs. 24,000; Surplus from Mohan's Deficiency a/c Rs. 9,000.

Revisional Problems

14. From the following information prepare a Statement of Affairs and Deficiency Account of A. (निम्नलिखित सूचनाओं से ए का स्थिति-विवरण और न्यूनता खाता बनाइये) :—

	Rs.
Capital on 1st April, 1962	4,470
Drawings for the year to 31st March, 1963	1,852
Loss on trading for the year to 31st March, 1963	3,130
Creditors for Income tax	208
Creditors	8,064
Cash in hand	30
Book debts Rs. 2,737 (estimated to produce)	2,350
Furniture Rs. 248, estimated to produce	128
Stock Rs. 1,320, estimated to produce	1,200
Machinery Rs. 2,125, estimated to produce	1,930
Freehold Property Rs. 5,800, estimated to produce (subject to mortgage of Rs. 4,500)	5,800

Assuming the cost of winding up at Rs. 282, state the amount of dividend which could be expected to be paid.

(समापन व्यय के 282 रु० मानते हुए, यह बताइये कि भुगतान किये जाने वाले लाभांश की राशि क्या होगी।) [211]

Answer : Deficiency Rs. 1,334; Total of Deficiency Account Rs. 5,804.

15. Sohan Lal filed his insolvency petition on 31st December, 1967 and his Statement of Affairs was composed of the following figures (सोहन लाल ने अपने दिवाला होने का प्रार्थना-पत्र 31 दिसम्बर, 1967 को दाखिल किया और उसका स्थिति-विवरण निम्नलिखित अंकों से बनाया गया था):—

	Rs.
Unsecured Creditors	15,000
Creditors partly secured by lien on shares	8,000
Creditors fully secured by lien on stock	20
Mortgage on Buildings	2,000
Value of Buildings	2,200
Liability on B/R discounted (of which estimated to rank Rs. 700)	1,400
Six months' rent due to landlord	300
Creditors payable in property for taxes and wages	300
Book-Debts :	
Good	4,000
Doubtful (estimated to produce Rs. 400)	800
Bad	1,200
Life Policy (Surrender Value)	1,000
Stock (estimated to realise Rs. 8,000)	12,000
Shares	3,200
Cash in hand	40
Bills of Exchange	260
Machinery (estimated to realise Rs. 2,400)	3,000
Fixtures and Fittings (estimated to realise Rs. 300)	600
Furniture (estimated to realise Rs. 600)	700

There is a liability (in respect of a contract which the debtor cannot now complete)of Rs. 300 but it is not expected to rank for dividend against the debtor's estate. A loss of Rs. 140 was sustained in the year after allowing interest on capital Rs. 240 and the drawings amounted to Rs. 720. On 1st January, 1967

he had commenced business with a capital of Rs. 4,000. Prepare the Statement of Affairs and Deficiency Account of Sohan Lal. Also find out the estimated rate of dividend payable to the creditors, if the estimated cost of winding up is Rs. 240.

(एक अनुबंध के सम्बन्ध में, जिसे अब पूर्ण नहीं किया जा सकता, सोहन लाल का दायित्व 300 रु० का है किन्तु ऋणी की सम्पत्ति के विरुद्ध उसके लिये दायित्व उत्पन्न होने की आशा नहीं है। पूंजी पर 240 रु० ब्याज वसूल करने के बाद वर्ष में 140 रु० की हानि हुई तथा आहरण 720 रु० के किये गये। 1 जनवरी, 1967 को उसने 4,000 रु० की पूंजी से व्यापार प्रारम्भ किया। सोहन लाल का स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता तैयार कीजिए। यदि समापन के 240 रु० व्यय होने का अनुमान हो तो लेनदारों को किये जाने वाले अनुमानित लाभांश की दर भी ज्ञात कीजिए।) [212]

Answer : Deficiency Rs. 3,920; Total of Deficiency Account Rs. 8,160: Rate of Dividend 80 paise per rupee.

16. X, on 31st March, 1968, unable to meet his engagements, requires a Statement of Affairs for submission to his creditors. Prepare the same from the following :—

	Rs.
Leasehold Premises for 99 years, subject to payment of ground rent Rs. 1,000 per year, book value Rs. 1,00,000 estimated to realise	90,000
Book-Debts : Good Rs. 66,500 estimated to realise	60,000
Book-Debts : Doubtful Rs. 5,000 estimated to realise	2,000
Book-Debts : Bad Rs. 7,500 estimated to realise	nil
Plant and Machinery Rs. 40,000 estimated to realise	30,000
Stock-in trade, book value Rs. 20,000 estimated to realise	14,000
Cash in hand	100

Life Insurance Policy for Rs. 25,000 at death, subject to a premium of Rs. 500 a year due and paid on 28th February, 1968 and held by the Insurance Company for a loan of Rs. 2,000, Surrender value being Rs. 5,000; Household Furniture Rs. 3,600; Private and household debts Rs. 2,900; 600 Shares in National Engineering Co. Ltd. of Rs. 10 each, Rs. 5 paid up, now quoted at Rs. 6.25 per share. Loan of Rs. 50,000 secured by first mortgage on the leasehold at $4\frac{1}{2}$ percent, the interest on same being paid to the 31st March, 1968; Unsecured Creditors Rs. 1,50,000; Bankers for overdraft and interest, Rs. 50,000

holding as security a second mortgage on leasehold; Loan from K. L. Kamal Rs. 4,000 at 5 per cent per annum, interest being paid to 31st March, 1968, who holds as security second charge on Life Insurance Policy; Ground Rent of leasehold accrued since 31st December, 1967.

Also prepare Deficiency Account. On the 1st April, 1965, he had a capital of Rs. 1,20,000 in addition to household furniture. His private drawings as shown in the Cash Book were as follows :—

For the year ended 31st March, 1966 Rs. 49,800; 1967–Rs. 40,000; 1968–Rs. 50,000. He made a profit in his business in 1966 of Rs. 50,000 and in the subsequent years losses of Rs. 30,000 and Rs. 9,350 respectively.

एक्स, जो कि अपने ऋणियों को भुगतान करने में असमर्थ हैं, अपने लेनदारों को समर्पण करने हेतु स्थिति-विवरण तैयार करना चाहता है। निम्नलिखित सूचनाओं से उसे तैयार कीजिए :—

	रु०
99 वर्ष के लिए पट्टाधृत सम्पत्ति (जिस पर प्रति वर्ष 1,000 रु० भू-किराया दिया जाता है) का पुस्तक मूल्य 1,00,000 रु०	
अनुमानित प्राप्य मूल्य	90,000
पुस्तक ऋण : उत्तम मूल्य 66,500 रु० अनुमानित प्राप्य मूल्य	60,000
पुस्तक ऋण : संदिग्ध मूल्य 5,000 रु० अनुमानित प्राप्य मूल्य	2,000
पुस्तक ऋण : डूबत मूल्य 7,500 रु० अनुमानित प्राप्य मूल्य	शून्य
प्लांट व मशीनरी 40,000 रु० अनुमानित प्राप्य मूल्य	30,000
स्टॉक पुस्तक मूल्य 20,000 रु० अनुमानित प्राप्य मूल्य	14,000
रोकड़ हस्ते	100

जीवन बीमा पालिसी 25,000 रु० जिस पर 500 रु० का वार्षिक प्रीमियम 28 फरवरी, 1968 को देय हुआ तथा भुगतान दिया गया और यह पालिसी 2,000 रु० के ऋण के बदले में बीमा कम्पनी के पास रखी हुई थी। इस पालिसी का समर्पण मूल्य 5,000 रु० है। घरेलू फर्नीचर 3,600 रु० का है। निजी एवं घरेलू ऋण 2,900 रु०। नेशनल इंजीनियरिंग कम्पनी लिमिटेड के 10 रु० वाले 600 अंश जिन पर 5 रु० प्रति अंश भुगतान किया गया था तथा जिनका अब बाजार मूल्य 6·25 रु० प्रति अंश है। $4\frac{1}{2}$ प्रतिशत वार्षिक पर 50,000 रु० का एक ऋण जो कि पट्टाधृत सम्पत्ति पर प्रथम बन्धक के रूप में सुरक्षित था तथा जिस पर 31 मार्च, 1968 तक का ब्याज भुगतान किया गया था। असुरक्षित लेनदार 1,50,000 रु०। अधिविकर्ष एवं ब्याज के लिये लेनदार बैंक 50,000 रु० जिनके पास पट्टावृत सम्पत्ति द्वितीय बन्धक के रूप में रखी थी। 5 प्रतिशत वार्षिक दर पर के. एल. कमल का 4,000 रु० का ऋण जिस पर 31 मार्च, 1968 तक का ब्याज भुगतान किया गया था और उसको जीवन बीमा पालिसी पर द्वितीय भार उपलब्ध है। पट्टावृत सम्पत्ति पर 31 दिसम्बर, 1967 के बाद से भू-किराया अर्जित है।

न्यूनता खाता भी बनाइये—1 अप्रैल, 1965 को घरेलू फर्नीचर के अतिरिक्त उसकी पूंजी 1,20,000 रु० थी। उसकी रोकड़ बही में दिखाये गये अनुसार, उसके निजी आहरण निम्न प्रकार थे—

31 मार्च, 1966 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए 49,800 रु०; 1967 के लिए 40,000 रु०; 1968 के लिए 50,000 रु०। 1966 में उसने 50,000 रु० का लाभ कमाया और बाद वाले वर्षों में क्रमशः 30,000 रु० व 9,350 रु० की हानि हुई। [213]

Answer : Deficiency Rs. 50,200; Total of Deficiency Account Rs. 2,21,650.

17. From the following figures, prepare the Deficiency Account and Statement of Affairs of A as on 30th June, 1968 :

The Stock-in-trade at cost is Rs. 1,44,000 of which Rs. 12,000 worth is in the hands of a creditor for Rs. 20,000 who is entitled to exercise a lien. Book Debts : Good Rs. 1,95,000, Doubtful Rs. 2,400 worth 33 paise in the rupee, Bad Rs. 3,000; Fixtures and Fittings (after depreciation) Rs. 4,600; Cash in hand Rs. 200; Bills Receivable Rs. 22,000 (held by bankers against overdraft of Rs. 80,000 the balance of which is secured by a second charge on debtor's freehold property and by the guarantee of his brother); Customers' bills under discount Rs. 30,000 of which Rs. 4,000 is ascertained to be bad and Rs. 2,000 is doubtful. Freehold Property Rs. 60,000 subject to a first mortgage o` Rs. 40,000. The unsecured creditors amount to Rs. 5,96,000 in addition to claims for rates, taxes and wages amounting to Rs. 4,800.

The stock-in trade is estimated to be worth 75 per cent of its face value and the freehold property which cost Rs. 56,000 is valued at Rs. 44,000. Subject to the modifications above stated assets are worth their book values.

It is also informed that the debtor had a surplus of assets of Rs. 1,00,000 on 1st January, 1966 since when he has withdrawn Rs. 60,000 per annum in equal monthly instalments. His profits for the year ended 31st December, 1966 were Rs. 42,000 and for 1967 Rs. 8,400 since when he has not made up his books.

निम्नलिखित सूचनाओं से ए का 30 जून, 1968 को स्थिति-विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये:—

स्टॉक का लागत मूल्य 1,44,000 रु० जिसमें से 12,000 रु० की कीमत का स्टॉक 20,000 रु० के एक लेनदार के पास है जिसे उस पर ग्रहणाधिकार प्राप्त है। पुस्तक ऋण: उत्तम 1,95,000, रु० संदिग्ध, 2,400 रु० जिनसे रुपये में 33 पैसे प्राप्त होने की आशा है, डूबत 3,000 रु०। फिक्सचर्स व फिटिंग्स (मूल्य ह्रास घटाने के बाद) 4,600 रु०; रोकड़ हस्ते 200 रु०; प्राप्य बिल 22,000 रु० (जोकि 80,000 रु० के अधिविकर्ष के विरुद्ध बैंक के पास रखे थे तथा अधिविकर्ष की

शेष राशि ऋणी की स्वकीय सम्पत्ति पर द्वितीय भार से व उसके भाई की जमानत से सुरक्षित थी)। ग्राहकों के प्राप्य विल भुनाये हुये 30,000 रु० जिनमें से 4,000 रु० डूबने की सम्भावना है तथा 2,000 रु० सदिग्ध हैं। स्वकीय सम्पत्ति 60,000 रु० जिन पर 40,000 रु० के लिये प्रथम बन्धक के रूप मे भार उपस्थित है। दर, कर एवं मजदूरी के 4,800 रु० के लेनदारों के अलावा असुरक्षित लेनदार 5,96.000 रु० के हैं।

स्टॉक से उसके अंकित मूल्य का 75 प्रतिशत वसूल होने का अनुमान है तथा स्वकीय सम्पत्ति, जिसका लागत मूल्य 56,000 रु० है, को 44,000 रु० के मूल्य पर आंका गया। उपरोक्त संशोधनों के अतिरिक्त, सम्पत्तियों से पुस्तक मूल्य वसूल होने का अनुमान है।

यह भी सूचना दी जानी है कि 1 जनवरी, 1966 को ऋणी के पास सम्पत्तियों का 1,00,000 रु० का आधिक्य था। उक्त तिथि के बाद से उसने बराबर की माहवारी किस्तों में 60,000 रु० वार्षिक आहरण किये हैं 31 दिसम्बर, 1966 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए उसका लाभ 42,000 रु० तथा 1967 वर्ष के लिये उसके लाभ 8,400 रु० हैं। उस तिथि के बाद से उसने लेखा पुस्तकें नहीं बनाई हैं। [214]

Answer : Deficiency Rs. 3,68,208; Total of Deficiency Account Rs. 5,18,608.

[Hint : The loss from 1st January, 1968 to 30th June, 1968 (Rs.3,10,000) has been arrived at by preparing the balance sheet of the insolvent on the basis of the book figures given in the question and assuming the difference of the two sides as a loss for the period.]

18. A and B are partners. On 31st December, 1967, their position was as follows. (ए और बी साझेदार हैं। 31 दिसम्बर, 1967 को उनकी स्थिति निम्न प्रकार थी) :

Balance Sheet of A and B

	Rs.			Rs.
Bank Overdraft (having a charge on Furniture)	20,000	Cash		1,000
Loan from X (having a lien on Stock of Rs. 12,000)	10,000	Stock		25,000
Creditors	30,000	Debtors	Rs. 20,000	
A	5,000	Less provision for bad debts	Rs. 1,000	19,000
		Furniture		8,000
		Machinery		10,000
		B		2,000
	65,000			65,000

Balance Sheet of A

	Rs.		Rs.
Creditors	23,000	Furniture	3,000
		Buildings	15,000
		Share in the firm of A & B	5,000
	23,000		23,000

Balance Sheet of B

	Rs.		Rs.
Creditors	1,000	Furniture	2,500
Firm of A & B	2,000	Life Policy	500
	3,000		3,000

The Bank Overdraft of the firm is further secured by the mortgage on the Buildings of A, the title deeds of which have been deposited with the bankers.

The assets of the firm are expected to realise as follows : Stock 25% less, Debtors Rs. 17,000, Furniture Rs. 6,000 and Machinery Rs. 7,000.

The assets of A are expected to realise as follows : Buildings Rs. 12,000, Furniture Rs. 2,000.

The assets of B are expected to realise : Furniture Rs. 2,000 and Life Policy Rs. 500.

Prepare Statement of Affairs and the Deficiency Accounts of the firm and of the individual partners.

(फर्म का वैंक अधिविकर्ष ए के भवन पर बंधक द्वारा और सुरक्षित था जिसके स्वत्व-प्रपत्र वैंक के पास जमा थे।

फर्म की सम्पत्तियों से निम्न प्रकार वसूल होने का अनुमान था—स्टॉक 25% कम; देनदार 17,000 रु०; फर्नीचर 6,000 रु०; मशीनरी 7,000 रु०।

ए की सम्पत्तियों से इस प्रकार वसूल होने का अनुमान था—भवन 12,000 रु०; फर्नीचर 2,000 रु०।

बी की सम्पत्तियों से इस प्रकार वसूल होने का अनुमान था—फर्नीचर 2,000 रु० और जीवन पालिसी 500 रु०।

फर्म का तथा व्यक्तिगत साझेदारों का स्थिति विवरण तथा न्यूनता खाता बनाइये। (215)

Ans. : Deficiency of firm Rs. 8,583; Deficiency of A Rs, 11,670; Deficiency of B Rs. 500.

1

कम्पनी लेखे—1

(Company Accounts-1)

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 3 (i) व (ii) के अनुसार, "कम्पनी से आशय किसी ऐसी कम्पनी से है जिसका निर्माण तथा पंजीयन वर्तमान अथवा निम्नलिखित में से किसी भी पूर्व अधिनियम के अन्तर्गत हुआ हो :—

(1) 1866 से पूर्व के तत्कालीन कम्पनी सन्नियम;
(2) कम्पनी अधिनियम, 1866;
(3) कम्पनी अधिनियम, 1882;
(4) कम्पनी अधिनियम, 1913;
(5) हस्तांतरित कम्पनियों के पंजीयन का अध्यादेश, 1942;
(6) पार्ट बी स्टेट्स या मिले हुए क्षेत्रों में ऐसा कोई कानून जो उपरोक्त कानून या अध्यादेश के समकक्ष हो ।

विभिन्न न्यायाधीशों ने अपना निर्णय देते समय भी कम्पनी की विभिन्न प्रकार से परिभाषाएं दी हैं, जिनमें से प्रमुख इस प्रकार हैं :—

"कम्पनी का आशय व्यक्तियों के उस समूह से लगाया जाता है जो कि एक सामान्य उद्देश्य के लिए एकत्रित हुए हों ।" (न्यायाधीश जेम्स)

"एक कम्पनी बहुत से मनुष्यों का वह समूह है जिन्होंने पूंजी अथवा पूंजी के तुल्य किसी वस्तु का एक सामान्य स्कन्ध में अनुदान किया हो तथा जिसे व्यापार अथवा व्यवसाय में लगादी हो, और उससे होने वाले लाभ व हानि में हिस्सा लेते हों ।" (न्यायाधीश लिंडले)

"कम्पनी विधान द्वारा निर्मित एक वह कृत्रिम व्यक्ति है जिसको पृथक अस्तित्व के साथ-साथ स्थाई उत्तराधिकार प्राप्त है तथा जिसकी (अपनी) सार्व-मुद्रा होती है ।" (हैने)

कम्पनी के प्रकार (Types of Companies) : कम्पनियां कई प्रकार की पाई जाती हैं, जैसे असीमित दायित्व वाली कम्पनियां (**Unlimited Companies**), प्रत्याभूति द्वारा सीमित कम्पनियां (Companies Limited by Guarantee), अंशों द्वारा सीमित दायित्व वाली कम्पनियां (Companies Limited by Shares) इत्यादि । इनमें से अंशों द्वारा सीमित दायित्व वाली कम्पनियां हमारे देश में अधिक प्रचलित हैं तथा सबसे अधिक संख्या में पाई जाती हैं ।

कम्पनियों का पंजीयन सार्वजनिक कम्पनी (Public Company), निजी कम्पनी (Private Company, अथवा सरकारी कम्पनी के रूप में हो सकता है । निजी कम्पनी से आशय किसी ऐसी कम्पनी से है जो अपने अन्तर्नियमों द्वारा :—

(अ) अपने अंशों के हस्तांतरण पर प्रतिबन्ध लगाती है;

(ब) अपने सदस्यों की संख्या 50 तक सीमित रखती है (भूत तथा वर्तमान कर्मचारी सदस्यों को छोड़ कर); तथा

(स) अपने अंशों व ऋण-पत्रों को खरीदने के लिए जनता को आमंत्रित किया जाना निषेध करती है।

सार्वजनिक कम्पनी से आशय किसी ऐसी कम्पनी से है जो कि एक निजी कम्पनी नहीं है। सीमित दायित्व वाली निजी कम्पनियों को अपने नाम के अन्त में 'प्राइवेट लिमिटेड' व सार्वजनिक कम्पनियों को 'लिमिटेड' शब्द लगाना आवश्यक है।

कम्पनी अधिनियम की धारा 4 (1) के अनुसार, एक कम्पनी किसी अन्य कम्पनी की सहायक (Subsidiary) कहलाती है, यदि :—

(अ) अन्य कम्पनी इस कम्पनी के संचालक मंडल की रचना को नियंत्रित करती है; अथवा

(ब) अन्य कम्पनी इस कम्पनी की आधी से अधिक मताधिकार शक्ति का नियंत्रण करती है; अथवा

(स) यदि यह कम्पनी किसी ऐसी कम्पनी की सहायक है जो कि अन्य कम्पनी की सहायक है।

यदि एक कम्पनी किसी अन्य कम्पनी की सहायक है तो अन्य कम्पनी 'धारक कम्पनी' (Holding Company) कहलायेगी।

भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 617 के अनुसार 'सरकारी कम्पनी' से आशय एक ऐसी कम्पनी से है जिसकी प्रदत्त अंश पूँजी (Paid up Share Capital) का कम से कम 51% भाग निम्नलिखित में से किसी के पास हो :

(i) केन्द्रीय सरकार, अथवा

(ii) कोई राज्य सरकार या सरकारें, अथवा

(iii) अंशतः केन्द्रीय सरकार के पास और अंशतः एक या अधिक राज्य सरकारों के पास।

यदि कोई कम्पनी सरकारी कम्पनी की सहायक कम्पनी है तो वह भी सरकारी कम्पनी कहलावेगी।

कम्पनी का निर्माण (Formation of a Company) :—

कम्पनी के निर्माण का कार्य करने वाले व्यक्ति प्रवर्तक कहलाते हैं। कम्पनी का पंजीयन कराने के लिए 'कम्पनी रजिस्ट्रार' के कार्यालय में निम्नलिखित महत्वपूर्ण प्रलेख जमा कराने पड़ते हैं :—

(1) पार्षद सीमानियम (Memorandum of Association);

(2) पार्षद अन्तर्नियम (Articles of Association);

(3) संचालकों का विवरण (Particulars of Directors);

(4) संचालकों की लिखित सहमति (Written Consent of Directors);

(5) संचालकों का आवश्यक योग्यता अंश खरीदने का लिखित अनुबंध;

(6) प्रबन्ध संचालक अथवा प्रबन्धक के साथ हुए समझौते की प्रतिलिपि; तथा

(7) समामेलन के पूर्व की सभी वैधानिक आवश्यकताएं पूरी करली जाने की एक वैधानिक

घोषणा। इस घोषणा पर किसी एडवोकेट, एटोर्नी, चार्टर्ड एकाउण्टेन्ट, प्रस्तावित संचालक, प्रबन्धक अथवा सचिव के हस्ताक्षर होने चाहिएँ।

निजी कम्पनी को सूचना संख्या (4) व (5) देना आवश्यक नहीं है। एक कम्पनी को उद्योग (विकास एवं नियंत्रण) अधिनियम के अन्तर्गत आने वाले उद्योगों की स्थापना के लिए अलग से लाइसेंस लेना पड़ता है। 'कम्पनी रजिस्ट्रार' से समामेलन का प्रमाण-पत्र (Certificate of Incorporation) मिलते ही कम्पनी का वैधानिक निर्माण हो जाता है तथा सार्वजनिक कम्पनी की स्थिति में अंश पूंजी निर्गमित करने की कार्यवाही प्रारम्भ की जाती है।

अंशों के प्रकार (Kinds of Shares) : कम्पनी अधिनियम, 1956 के अन्तर्गत एक सार्वजनिक कम्पनी निम्नलिखित दो प्रकार के अंश निर्गमित कर सकती है :—

(i) अधिमान अंश (Preference Shares); तथा

(ii) ईक्विटी अंश (Equity Shares)।

कम्पनी अधिनियम, 1956 के लागू होने के पूर्व एक सार्वजनिक कम्पनी को तीन प्रकार के अंश निर्गमित करने का अधिकार था—(i) अधिमान अंश, (ii) साधारण अंश (Ordinary Shares), तथा (iii) आस्थगित अंश (Deferred Shares), किन्तु अब केवल दो ही प्रकार के अंश निर्गमित करने का अधिकार है।

(1) अधिमान अंश (Preference Shares) : अधिमान अंशों से आशय ऐसे अंशों से है जो निम्नलिखित दो शर्तों की पूर्ति करते हैं :

(i) इनको ईक्विटी अंशों से पहले निश्चित राशि या निश्चित दर से लाभांश प्राप्त करने का अधिकार है; तथा

(ii) कम्पनी के समापन की दशा में उन्हें पूंजी की वापसी का पूर्वाधिकार है।

उपरोक्त वर्णित अधिकारों के अतिरिक्त कम्पनी के सीमानियम या अन्तर्नियम अधिमान अंशों को निम्नलिखित अधिकार और दे सकते हैं :

(i) ईक्विटी अंशधारियों को निश्चित दर से लाभांश देने के पश्चात् शेष लाभ में से लाभांश प्राप्त करने का अधिकार;

(ii) समापन के समय लाभांश की बकाया रकम की प्राप्ति का अधिकार;

(iii) अदत्त लाभांशों को आगामी वर्षों के लाभों में प्राप्त करने का पूर्वाधिकार;

(iv) समापन की दशा में ईक्विटी अंशधारियों को पूंजी वापसी करने के पश्चात् शेष सम्पत्ति में से बँटवारे का अधिकार, आदि।

इन अंशों पर लाभांश एक निश्चित दर पर मिलता है, अतः इस प्रकार के अंश उन विनियोगकों के लिये उपयोगी होते हैं जो स्थायी आय चाहते हैं चाहे वह सीमित मात्रा में हो।

अधिमान अंश निम्नलिखित प्रकार के हो सकते हैं :

(i) संचयी अधिमान अंश (Cumulative Preference Shares) : यदि किसी वर्ष कम्पनी के लाभ (Profits) लाभांश (Dividends) देने के लिए पर्याप्त नहीं हैं तो इन अंशधारियों को नहीं दिया गया लाभांश संचित होता रहता है तथा आगामी वर्षों के लाभों में से इन संचित लाभांशों का भुगतान किया जाता है। जब तक ऐसे अंशों का पूरा लाभांश नहीं दे दिया जाता तब तक ईक्विटी अंशों पर लाभांश नहीं दिया जा सकता। कम्पनी के समस्त अंश संचयी माने जाते हैं जब तक कि इसके विपरीत कम्पनी के अन्तर्नियमों में अथवा निर्गमन की शर्तों में स्पष्ट वर्णन न हो।

(ii) असंचयी अधिमान अंश (Non-Cumulative Preference Shares) : ऐसे अंशधारियों को लाभांश प्रत्येक वर्ष के लाभ में से दिया जाता है। यदि किसी वर्ष में लाभ नहीं है तो अंशों पर लाभांश नहीं दिया जाता है। असंचयी अधिमान अंशों की स्थिति में यदि किसी वर्ष में लाभों की अपर्याप्तता के कारण उन अंशों पर लाभांश नहीं दिया गया है तो नहीं दिया गया लाभांश संचित नहीं होता है, अर्थात् उसका भुगतान बाद वाले वर्षों के लाभ में से नहीं किया जा सकता है।

(iii) अवशिष्टभागी अधिमान अंश (Participating Preference Shares) : ये इस प्रकार के अंश होते हैं जिनमें अंशधारकों को पूर्वाधिकार लाभांश पाने का अधिकार तो होता ही है परन्तु इसके अतिरिक्त शेष लाभ में से भी (ईक्विटी अंशधारियों को निश्चित लाभांश देने के पश्चात्) वे, ईक्विटी अंशधारियों के साथ, लाभांश के भागी होते हैं। यदि कम्पनी के अन्तर्नियमों में स्पष्ट प्रावधान नहीं किया गया है तो समस्त अधिमान अंश अनावशिष्टभागी अधिमान अंश (Non-Participating Preference Shares) माने जायेंगे।

(iv) अनावशिष्टभागी अधिमान अंश (Non-Participating Preference Shares) : इस प्रकार के अंशधारियों को केवल निश्चित दर से ही लाभांश पाने का पूर्वाधिकार होता है तथा शेष लाभ में से लाभ पाने का अधिकार नहीं होता है।

(v) अशोध्य अधिमान अंश (Irredeemable Preference Shares) : इस प्रकार के अंशधारियों को कम्पनी के जीवन काल में, न्यायालय की आज्ञा के बिना, पूंजी का भुगतान नहीं हो सकता है। कम्पनी के समापन के समय इनको पूंजी प्राप्त करने का पूर्वाधिकार होता है।

(vi) शोध्य अधिमान अंश (Redeemable Preference Shares) : इस प्रकार के अंशधारियों को कम्पनी के जीवन काल में भुगतान हो सकता है। इस प्रकार के अंशों का निर्गमन अन्तर्नियमों द्वारा अधिकार मिलने पर कम्पनी अधिनियम की धारा 80 के अधीन दी हुई शर्तों के अन्तर्गत किया जा सकता है। इसका विस्तृत वर्णन आगामी पृष्ठों में किया गया है।

(2) ईक्विटी अंश (Equity Shares) : धारा 85 (2) के अनुसार ईक्विटी अंशों का अर्थ कम्पनी के उन अंशों से लगाया जाता है जो अधिमान अंश नहीं हैं।

उपरोक्त विभिन्न अंश मिलकर कम्पनी की अंश पूंजी बनाते हैं। कम्पनी की अंश पूंजी को निम्नलिखित श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है :—

अधिकृत पूंजी (Authorised Capital) : यह पूंजी की वह अधिकतम राशि है जिसको

निर्गमन करने का अधिकार कम्पनी को है। इस राशि से अधिक के अंश-पत्रों को कम्पनी निर्गमित नहीं कर सकती है। यह कम्पनी की पूंजी की अधिकतम सीमा का निर्धारण करती है। अधिकृत पूंजी का विवरण पार्षद सीमानियम में दिया जाता है। यह निश्चित राशि के अंश जैसे 1 रु०, 100 रु०, 1,000 रु० आदि में विभाजित होती है। इसको अंकित पूंजी (Nominal Capital) अथवा पंजीकृत पूंजी (Registered Capital) भी कहते हैं।

निर्गमित पूंजी (Issued Capital) : कम्पनी ने अधिकृत पूंजी में से जितने अंशों का बन्टन कर दिया है, उनके अंकित मूल्य (Nominal value) को निर्गमित पूंजी कहते हैं।

अभिदत्त पूंजी (Subscribed Capital) : निर्गमित पूंजी में से जितनी रकम अंशधारियों द्वारा चुका दी गई है, वह 'अभिदत्त पूंजी' (Subscribed Capital) कहलाती है। इसे प्रदत्त पूंजी (Paid up Capital) भी कहते हैं।

कम्पनी द्वारा अंशधारियों से अंशों के सम्बन्ध में जितनी राशि मांग ली जाती है, वह मांगी हुई पूंजी (Called up Capital) कहलाती है। यदि मांगी गई समस्त राशि का अंशधारियों द्वारा भुगतान कर दिया जाता है तो मांगी गई पूंजी और प्रदत्त पूंजी एक ही हो जाती हैं, लेकिन मांगी गई राशि का कुछ भाग अंशधारियों ने अभी नहीं चुकाया है तो इस भाग को 'बकाया मांग राशि' (Calls in Arrears) कहते हैं और मांगी गई राशि में से इसे घटाने पर प्रदत्त पूंजी ज्ञात होती है।

उदाहरण : एक कम्पनी 100 रु० वाले 50,000 अंश जनता को निर्गमित करने का अधिकार रखती है। उसने जनता से 40,000 अंशों के लिए आवेदन-पत्र मांगे। जनता ने 38,000 अंशों के लिए आवेदन-पत्र दिये जो कि कम्पनी द्वारा स्वीकार कर लिये गये और संचालकों ने 38,000 अंश बंटित कर दिये। प्रत्येक अंश पर पूरी रकम मांग ली गई। हरि, जो कि 100 अंशों का मालिक है; 20 रु० प्रति अंश के हिसाब से अन्तिम मांग का भुगतान नहीं कर पाया और शेष रकम कम्पनी द्वारा प्राप्त करली गई है।

अधिकृत पूंजी = 50,000 × 100 रु० =	50,00,000 रु०	
निर्गमित पूंजी = 38,000 × 100 रु० =	38,00,000 रु०	
अभिदत्त पूंजी = 38,000 × 100 रु० =	38,00,000 रु०	मांगी गई पूंजी
घटाओ 100 × 20 रु० =	2,000 रु०	बकाया मांग
अभिदत्त अथवा प्रदत्त पूंजी =	37,98,000 रु०	

संचित पूंजी (Reserve Capital) : 'न मांगी हुई पूंजी' पर कम्पनी का अधिकार होता है। संचालक मण्डल जब चाहे तभी न मांगी हुई पूंजी को अंशधारियों से मंगवा सकता है। परन्तु कभी-कभी एक सीमित दायित्व वाली कम्पनी, विशेष प्रस्ताव पारित करके, यह निश्चित कर देती है कि 'न मांगी हुई पूंजी' का एक विशिष्ट भाग कम्पनी के केवल समापन के समय ही मंगाया जा सकेगा। इस प्रकार का कार्य लेनदारों में विश्वास स्थापित करने के उद्देश्य से किया जाता है। 'न मांगी हुई पूंजी' का वह भाग जिसको समापन के लिए संचित (Reserve) कर दिया जाता है, 'संचित पूंजी' (Reserve Capital) कहलाता है। उदाहरणार्थ, माना कि कम्पनी की निर्गमित पूंजी 20 लाख रु० है जो 10 रुपये वाले

2 लाख अंशों में विभाजित है। कम्पनी के अंशधारियों ने विशेष प्रस्ताव पारित करके 3 रु० प्रति अंश को समापन के समय के लिये संचित कर दिया है, ऐसी अवस्था में 2,00,000 × 3 रु०=6,00,000 रु० की पूंजी 'संचित पूंजी' कहलायेगी। इस प्रकार की संचित पूंजी पर कोई प्रभार (Charge) उत्पन्न नहीं किया जा सकता है।

अंश पूंजी निर्गमन प्रक्रिया (Procedure for Issue of Shares) :—

कम्पनी के पंजीयन के वाद संचालक मंडल कम्पनी की पूंजी एकत्रित करने के लिए आवश्यक प्रवन्ध करते हैं। उक्त पूंजी का प्रवन्ध करने के लिए प्रविवरण का निर्गमन किया जाता है तथा अंशों के लिए आवेदन-पत्र मांगे जाते हैं। विनियोगकों को सूचना दे दी जाती है कि वे अपने आवेदन-पत्र, आवेदन रकम सहित, कम्पनी के वेंकरों के पास जमा करादें। वेंकर उक्त आवेदन इकट्ठे करते हैं, रकम प्राप्ति की रसीद देते हैं तथा उक्त रकम को 'अंश आवेदन खाते' में जमा करते हैं। सामान्यतया वेंक प्रतिदिन या निश्चित दिनों के अन्तर से प्राप्त आवेदनों की सूची कम्पनी को भेज देता है जिसके साथ में आवेदन-पत्र भी नत्थी होते हैं। कम्पनी कार्यालय में आवेदन-पत्रों की जांच की जाती है। यदि अधिक अभिदान (Oversubscription) हो गया है तो अनियमित व अपूर्ण आवेदन-पत्रों को हटा दिया जाता हैं। यदि आवेदन की रकम अपर्याप्त है तो आवेदक को शेष रकम जमा कराने के लिए लिखा जा सकता है। जांच करने के वाद आवेदकों को नाम के अनुसार वर्णक्रम (Alphabetic Order) में छांटना होता है। कुछ कम्पनियां उनको आवेदित अंशों की संख्या के अनुसार भी छांट लेती हैं। आवेदनों को छांटने के वाद उनको 'आवेदन तथा वंटन सूचियां' में दर्ज किया जाता हैं जिसका नमूना अगले पृष्ठ पर दिया गया है। ये सूचियां पुस्तक के रूप में हो सकती हैं। अलग–अलग श्रेणी के अंशों के लिए अलग–अलग रंग की पुस्तकें रखी जा सकती हैं। पुस्तक में दर्ज करने के वाद पुनः जांच (Rechecking) करके भी देख लेना चाहिए।

इस पुस्तक में आवेदनों को दर्ज करने के वाद 'अन्तिम सारांश सूची' (अंशों की संख्या के अनुसार) तैयार कर लेनी चाहिए।

उक्त कार्य करने के वाद अंश–वंटन कार्यवाही प्रारम्भ की जाती है। सार्वजनिक कम्पनी द्वारा अंश–वंटन पर कुछ वैधानिक प्रतिवन्ध हैं, जो निम्न प्रकार हैं :—

(1) कोई भी सार्वजनिक कम्पनी अपने अंशों का वंटन उस समय तक नहीं कर सकती जव तक कि न्यूनतम राशि (Minimum Subscription) का अभिदान नहीं हो जाता तथा आवेदन पर देय रकम कम्पनी को भुगतान नहीं कर दी जाती और कम्पनी द्वारा यह रकम नकद या चैक द्वारा प्राप्त नहीं हो जाती। यह न्यूनतम अभिदान की रकम कम्पनी द्वारा निर्गमित किये गये प्रविवरण (Prospectus) में स्पष्ट रूप से दिखाई जाती है।

(2) प्रविवरण में इस प्रकार दी गई न्यूनतम राशि के अभिदान के लिए अंशों की उन रकमों को शामिल नहीं किया जायेगा जो मुद्रा (Money) के अतिरिक्त किसी अन्य रूप में देय हों।

(3) प्रत्येक अंश के आवेदन–पत्र पर देय रकम अंश के अंकित मूल्य के ५ प्रतिशत से कम नहीं होनी चाहिए।

अंश आवेदन एवं बंटन पुस्तक
(Share Application and Allotment Book)

आवेदन की तिथि	आवेदन संख्या	आवेदक का नाम	आवेदक का पता	आवेदक का व्यवसाय	आवेदित अंशों की संख्या	आवेदन पर दी गई राशि		रोकड़ बही पृष्ठांक	बंटन की तिथि	बंटित अंशों की संख्या	अंशों के क्रमांक		बंटन पत्र की क्रम संख्या	खेद पत्र की क्रम संख्या	बंटन पर देय राशि		भुगतान की तिथि	रोकड़ बही का पृष्ठांक	वापसी की गई राशि		वापस करने की तिथि	सदस्य रजिस्टर पृष्ठ संख्या	अंश प्रमाण पत्र की संख्या	अन्य विवरण
						रु०	पै०				से	तक			रु०	पै०			रु०	पै०				

(4) अंशों के आवेदकों से प्राप्त समस्त धन एक अनुसूचित बैंक में उस समय तक जमा रहेगा जब तक कि कम्पनी को धारा 149 के अनुसार व्यापार आरम्भ करने का प्रमाण-पत्र नहीं मिल जाता। यदि यह प्रमाण-पत्र पहले ही मिल गया हो तो उक्त समस्त धन अनुसूचित बैंक में उस समय तक जमा रहेगा जब तक कि न्यूनतम अभिदान के बराबर अंशों के लिए आवेदन-पत्रों पर पूरा रुपया कम्पनी को प्राप्त न हो गया हो।

यदि प्रविवरण निर्गमन के बाद 120 दिन के भीतर उक्त राशि प्राप्त नहीं होती तो अंशों के आवेदकों से प्राप्त राशि उनको उपधारा (5) के अनुसार बिना ब्याज के लौटा दी जायेगी।

(5) यदि उपर्युक्त शर्तों का पालन प्रविवरण के प्रथम निर्गमन के बाद 120 दिन के भीतर नहीं किया जाता तो इस अवधि के व्यतीत हो जाने पर अंशों के आवेदकों को प्राप्त धन तुरन्त लौटा देना चाहिये। यह धन प्रविवरण निर्गमन तिथि से 130 दिन के भीतर लौटाना होगा अन्यथा 130वें दिन के समाप्त होते ही कम्पनी के संचालक वैयक्तिक व सामूहिक रूप से 6 प्रतिशत ब्याज सहित इस राशि को लौटाने के लिए उत्तरदायी होंगे।

(6) उपधारा (3) के अतिरिक्त अन्य प्रावधान अंशों के किसी बंटन पर लागू नहीं होंगे जो कि अंशों के प्रथम बंटन के बाद में किए जाते हैं।

उपरोक्त वैधानिक आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए कम्पनी सचिव अंश-बंटन सूचियाँ तैयार करता है। यदि अधिक अभिदान हुआ है तो बंटन समिति बनाकर बंटन का आधार तय किया जा सकता है। यदि अधिक अभिदान नहीं हुआ है तो बंटन सूचियां तैयार करने के सम्बन्ध में कोई समस्या ही नहीं होगी। अधिक अभिदान की स्थिति में खेद-पत्र सूची भी तैयार करली जाती है। संचालक मंडल की सभा में उक्त सूचियों पर विचार किया जाता है तथा 'बंटन प्रस्ताव' पास होता है। प्रस्ताव पास होने के बाद मंडल के अध्यक्ष द्वारा बंटन सूची के प्रत्येक पन्ने पर हस्ताक्षर कर दिये जाते हैं। प्रस्ताव पास हो जाने के बाद कम्पनी सचिव बंटन-पत्र व खेद-पत्र तैयार करता है तथा सम्बन्धित व्यक्तियों को ये पत्र भेज दिये जाते हैं। बंटन-पत्र में अंशधारकों से यह भी मांग की जाती है कि वे बंटन की अमुक रकम अमुक तिथि तक जमा करा दें।

बंटन करने के बाद प्रत्येक कम्पनी को रजिस्ट्रार के पास बंटन रिटर्न (Return of Allotment) भेजनी पड़ती है जिसमें बंटन सम्बन्धी कुछ सूचनायें दी जानी आवश्यक हैं। यह रिटर्न प्रत्येक कम्पनी को बंटन के बाद 30 दिन के भीतर अथवा रजिस्ट्रार द्वारा बढ़ाई गई अवधि के भीतर रजिस्ट्रार के पास प्रस्तुत करनी पड़ती है।

अंश प्रमाण-पत्र तथा अंशों पर मांग (Share Certificate and Calls on Shares) :—

अंश प्रमाण-पत्र कम्पनी की सार्वमुद्रा (Common Seal) के अधीन निर्गमित एक प्रमाण-पत्र है जिसमें किसी सदस्य द्वारा धारण किए हुए अंश निर्दिष्ट होते हैं। अंश प्रमाण-पत्र उस सदस्य के ऐसे अंशों पर अधिकार होने का मूलतः प्रमाण (Prima facie Evidence) है। कम्पनी अधिनियम की धारा 113 के अनुसार कम्पनी को बंटन तिथि के 3 महीने के भीतर अंश प्रमाण-पत्र पूर्णतया सुपुर्दगी के लिए तैयार रखने चाहियें। यदि इनके निर्गमन की शर्तों में इसके विपरीत दिया हुआ है तो उतनी

अवधि में यह कार्य हो जाना चाहिए। अंशों के संयुक्त स्वामित्व की दशा मे कम्पनी केवल एक प्रमाण-पत्र देने के लिए बाध्य है और उनमें से किसी एक स्वामी को दी गई सुपुर्दगी सभी को सुपुर्दगी मानी जावेगी।

आवेदन तथा वंटन के समय ली गई रकमों के अतिरिक्त अंशों की शेष रकम को कम्पनियाँ प्रायः कई किस्तों में लेती हैं। इसी प्रत्येक किस्त की मांग को, जो वंटन के पश्चात् वसूल की जाती है, मांग (Call) कहते हैं। मांग के समय प्रत्येक अंशधारी के पास एक मांग-पत्र भेजा जाता है। इसमें अंशधारी से एक निर्दिष्ट तिथि तक इस मांग राशि को चुकाने की प्रार्थना की जाती है। मांग पर प्राप्त राशि का विवरण एक पुस्तक में लिखा जाता है जिसे मांग-पुस्तक (Call Book) कहते हैं। इसका प्रारूप नीचे दिया जाता है :

मांग-पुस्तक
(Call Book)

ईक्विटी अंशों पर 20 रु० प्रति अंश के हिसाव से प्रथम मांग (देय तिथि..............)

क्रम संख्या	नाम	पता	अंशों की संख्या	अंशों के क्रमांक	सदस्य रजिस्टर की पृष्ठ संख्या	देय राशि	भुगतान तिथि	प्राप्त राशि	टिप्पणी
						रु०		रु०	

कम्पनी के अन्तर्नियमों में प्रायः मांग सम्वन्धी व्यवस्थायें दी रहती हैं। कम्पनी अधिनियम की तालिका 'ए' के नियम 13 से 18 तक इस सम्वन्ध में प्रकाश डालते हैं जो निम्न प्रकार हैं :—

(1) प्रत्येक मांग की राशि अंशों के अंकित मूल्य के 25 प्रतिशत से अधिक नहीं होनी चाहिये।

(2) प्रत्येक सदस्य को मांग पर देय राशि, समय तथा भुगतान करने के स्थान के विषय में 14 दिन की सूचना मिलनी चाहिये।

(3) दो लगातार मांगों के वीच कम से कम एक मास का अन्तर होना चाहिए।

(4) मांग करने का अधिकार संचालकों को ही है और मांग संचालकों की सभा में उचित प्रस्ताव पास करके ही की जा सकती है।

(5) संचालकों को यह मांग कम्पनी के अधिकतम हित में करनी चाहिए। इस अधिकार के सम्वन्ध में संचालक कम्पनी के प्रन्यासी माने जाते हैं।

(6) संचालक किसी भी मांग को निरस्त अथवा स्थगित कर सकते हैं।

(7) अंशों के संयुक्तधारी अंशों पर मांग का भुगतान करने के लिए संयुक्त रूप में व व्यक्तिगत रूप में दायी होंगे।

(8) अंशों की अदत्त मांगों पर उनके भुगतान की देय तिथि से भुगतान करने की तिथि तक पांच प्रतिशत व्याज की दर से व्याज मांगा जा सकता है। ऐसे व्याज लेने के अधिकार को संचालक-सभा पूर्णतः अथवा आंशिक रूप में निरस्त अथवा कम कर सकती है।

(9) अग्रदत्त मांगों पर संचालक मंडल एवं सदस्यों के समझौते के अनुसार 6 प्रतिशत वार्षिक दर से व्याज दिया जा सकता है परन्तु साधारण सभा में प्रस्ताव स्वीकृत होने पर इससे अधिक दर पर भी व्याज दिया जा सकता है। समझौता होने पर ऐसा व्याज तो कम्पनी को देना ही पड़ेगा भले ही उसे लाभ हो या नहीं।

(10) हस्तांतरक (Transferer) अथवा हस्तांतरी (Transferee) द्वारा बकाया मांग का भुगतान नहीं होने तक संचालक हस्तांतरण पर प्रतिबन्ध लगा सकते हैं।

(11) देय तिथि से वाद छः महीने के भीतर किसीसंचालक द्वारा मांग का भुगतान नहीं करने पर उसका पद रिक्त समझा जायेगा।

(12) जब तक मांग का भुगतान नहीं किया जाता तब तक दोषी सदस्य को मताधिकार नहीं दिया जा सकता है।

मांग के सम्बन्ध में सचिव का पहला कर्तव्य यह होता है कि वह मांग चुकाने वाले दायी अंशधारियों की एक सूची वनाये। यह सूची सदस्य-रजिस्टर की सहायता से बनायी जाती है और इसमें अंशधारियों के नाम, सदस्य संख्या, पता, व्यवसाय, खरीदे हुए अंशों की संख्या, सदस्य रजिस्टर की पृष्ठ संख्या, माँग पर देय रकम, भुगतान तिथि, मांग से पूर्व प्राप्त रकम आदि लिखने के लिए अलग-अलग खाने (Columns) होते है। सूची तैयार हो जाने के वाद संचालक मंडल की सभा में मांग का प्रस्ताव पास किया जाता है तथा मांग की सूचना सम्बन्धित सदस्यों को भेज दी जाती है।

सदस्य रजिस्टर (Register of Members) :

प्रत्येक कम्पनी को, अपने सदस्यों का पूर्ण विवरण रखने के लिए एक या अधिक 'सदस्य रजिस्टर' रखने होते हैं जिसका नमूना अगले पृष्ठ पर दिया जाता है :—

प्रत्येक कम्पनी को, जिसकी सदस्य संख्या 50 से अधिक है, सदस्यों के रजिस्टर की एक अनुक्रमणिका (Index) रखनी होगी और सदस्यों के रजिस्टर में कोई परिवर्तन करने पर 15 दिन के भीतर ही उस परिवर्तन की इस अनुक्रमणिका में प्रविष्टि करनी होगी।

न्यूनतम अभिदान (Minimum Subscription) :

धारा 69 (1) के अनुसार कोई भी सार्वजनिक कम्पनी अपने अंशों का वंटन उस समय तक नहीं कर सकती जब तक कि न्यूनतम राशि का अभिदान नहीं हो जाता। न्यूनतम अभिदान की

सदस्य रजिस्टर

(Register of Members)

पृष्ठ संख्या.......................... सदस्य बनने की तिथि ....

नाम.......................... सदस्यता समाप्त होने की तिथि..........................

व्यवसाय..........................

पता..........................

क्रेडिट											डेबिट									
अंश प्राप्त किये गये											अंश हस्तान्तरित किये गये						शेष			टिप्पणी
आवंटन अथवा हस्तान्तरण की संख्या	तिथि	अंशों की संख्या	अंशों के क्रमांक	हस्तान्तरक की पृष्ठ संख्या	मांग की संख्या	मांग (Calls)				धारण किये गये अंशों का कुल मूल्य	हस्तान्तरण की संख्या	तिथि	हस्तान्तरित अंशों की संख्या	हस्तान्तरित अंशों के क्रमांक	हस्तान्तरित अंशों की राशि	हस्तान्तरी की पृष्ठ संख्या	अंशों की संख्या	अंशों के क्रमांक	अंशों की राशि	
						देय तिथि	राशि	प्राप्ति की तिथि	रोकड़ पुस्तक पृष्ठ संख्या											
							रु०			रु०					रु०				रु०	

राशि पूंजी की वह रकम है जिसको संचालक व्यापार आरम्भ करने के लिए न्यूनतम रकम समझते हैं। न्यूनतम अभिदान की राशि प्रविवरण में स्पष्ट रूप से दिखाई जाती है।

न्यूनतम अभिदान की राशि की गणना करने में निम्नलिखित मदों को सम्मिलित किया जाता है :—

(1) क्रय की गई किसी सम्पत्ति अथवा क्रय की जाने वाली किसी सम्पत्ति के क्रय मूल्य के लिए जिसका अंश निर्गमन द्वारा प्राप्त रकम से पूर्णतः अथवा अंशतः भुगतान किया जावेगा;

(2) कम्पनी द्वारा देय प्रारम्भिक व्यय तथा कोई कमीशन;

(3) उक्त दोनों कार्यों के लिये कम्पनी द्वारा उधार लिया गया धन जिसका पुनर्भुगतान करना है;

(4) कार्यशील पूंजी; तथा

(5) किसी अन्य व्यय के सम्बन्ध में अनुमानित रकम।

प्रारम्भिक व्यय (Preliminary Expenses) :

ऐसे खर्चे जो कम्पनी के निर्माण के सम्बन्ध में किये जाते हैं 'प्रारम्भिक व्यय' कहलाते हैं। इन्हें निर्माण व्यय (Formation Expenses), प्रवर्तन व्यय (Promotion Expenses) या संगठन व्यय (Organisation Expenses) के नाम से भी पुकारा जाता है। इन खर्चों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

(1) कम्पनी के रजिस्ट्रेशन के लिये वैधानिक प्रलेखों (मेमोरेण्डम, आर्टिकल्स आदि) के लिखने और छपाने की कीमत।

(2) रजिस्ट्रार के पास प्रलेखों को फाइल करने की फीस; प्रलेखों पर मुद्रांक कर और अधिकृत पूंजी पर चुकाई जाने वाली ड्यूटी।

(3) प्रविवरण के विज्ञापन पर हुआ खर्च।

(4) प्रार्थना-पत्र, बंटन-पत्र आदि प्रपत्रों को छपाने का व्यय, कम्पनी की मोहर का व्यय।

(5) कम्पनी के अंश या ऋण-पत्रों पर दिया गया कमीशन। निर्माण के समय निर्गमित अंशों या ऋण-पत्रों पर दिया गया कमीशन भी प्रारम्भिक व्यय में गिना जाता है। निर्माण के बाद में अंशों या ऋणपत्रों के निर्गमन पर जो कमीशन दिया जाता है, उसको प्रारम्भिक खर्चों में नहीं गिना जाता है।

प्रारम्भिक खर्चे पूंजीगत व्यय होते हैं, अतः इन्हें जब तक अपलिखित न कर दिया जावे, चिट्ठे में कृत्रिम सम्पत्ति के रूप में दिखाया जाता है।

वित्तीय पुस्तकों में लेखा (Entries in Financial Books) :

कम्पनी अधिनियम की धारा 209 के अन्तर्गत प्रत्येक कम्पनी को हिसाब की पुस्तकें रखना अनिवार्य है। कम्पनी में दोहरा लेखा पद्धति अपनाई जाती है। कम्पनी में कुछ सौदे विशेष प्रकृति के होते हैं। इन सौदों की प्रवृत्ति एकल व्यापारी और साझेदारी व्यवसाय में नहीं पाई जाती है। कम्पनी के कुछ विशेष प्रकृति के सौदों के उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

(1) अंशों का निर्गमन (2) अंशों का हरण

(3) शोध्य अधिमान अंशों का शोधन (4) ऋणपत्रों का निर्गमन तथा शोधन

(5) चालू व्यापार की खरीद (6) समामेलन से पूर्व तथा बाद के लाभ
(7) अंशों तथा ऋण-पत्रों का अभिगोपन (8) लाभांश और बोनस अंश
(9) प्रबन्धकों को पारिश्रमिक (10) अन्तिम खाते, आदि

अंशों का निर्गमन (Issue of Shares)

सम मूल्य पर निर्गमन (Issue at par)

अंशों पर एक साथ पूर्ण भुगतान किए जाने पर :
(Shares payable in full in one lump sum)

अंशों को खरीदने वाले अंशधारी कहलाते है। वे कम्पनी के स्वामी होते हैं। कम्पनी का अंश, अंश-प्रमाणपत्र में लिखित राशि तक, उनके स्वामित्व का परिचायक है। यही कारण है कि अंशों की बिक्री पर अंश खाते (Shares a/c) को क्रेडिट नहीं किया जाकर अंश पूंजी खाते (Share Capital a/c) को क्रेडिट किया जाता है। वस्तुतः बिक्री पूंजी की है, अंश तो माध्यम मात्र हैं। कम्पनी में अंशधारियों की संख्या अत्यधिक होने के कारण वित्तीय पुस्तकों में सभी अंशधारियों से प्राप्त हुई रकम का एक लेखा किया जाता है। साझेदारों को तरह से कम्पनी की वित्तीय पुस्तकों में प्रत्येक अंशधारी का व्यक्तिगत खाता नहीं खोला जाता तथा अलग-अलग लेखा नहीं किया जाता। अंशधारियों से प्राप्त हुई रकम का व्यक्तिगत ब्यौरा सदस्य रजिस्टर (Register of Members) में रखा जाता है।

अंशों पर देय राशि इक मुश्त मांगी जा सकती है अथवा किस्तों में। यदि यह राशि इक मुश्त देय है तो इसकी प्रविष्टियां इस प्रकार होंगी :

अंशों को खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र के साथ राशि प्राप्त होने पर:—

Bank a/c Dr. } अंश प्रार्थना-पत्र पर प्रार्थियों से प्राप्त
To Share Application a/c } वास्तविक राशि से
(Being cash received @ Rs............
per share from sundry applicants for
the purchase of...........shares.)

अंशों के बंटन पर :—

Share Application a/c Dr. } वंटित अंशों पर प्रार्थना-पत्र के
To Share Capital a/c } साथ मांगी गई राशि से
(Being the allotment of...........shares
and the transfer of share application
money received @ Rs............per share
to the Share Capital a/c.)

Illustration 1

Prakash Ltd. with a registered capital of Rs. 10,00,000 in Equity shares of Rs. 10 each issued 50,000 shares to the public, full amount being payable on application. All the shares were taken up by the public and paid for. Pass the necessary Journal entries in the books of the company.

प्रकाश लि० ने, जिसकी पंजीकृत पूंजी 10 लाख रु० है और जो 10 रु० वाले ईक्विटी अंशों में विभाजित है, 50,000 अंश जनता को निर्गमित किये। सम्पूर्ण अंश-राशि प्रार्थना-पत्र के साथ देनी है। जनता द्वारा सारे अंश खरीद लिये गए और उनका भुगतान कर दिया गया। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Solution :

Journal of Prakash Ltd.

Dr. Cr.

Date	Particulars	L.F.	Amount	Amount
			Rs.	Rs.
	Bank a/c Dr. To Equity Share Application a/c (Being amount received from sundry applicants for the purchase of 50,000 Equity shares @ Rs. 10/- per share.)		5,00,000	5,00,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being the allotment of 50,000 shares to the applicants and the consequent transfer from Share Application a/c to the Share Capital a/c.)		5,00,000	5,00,000

अंशों का किस्तों में भुगतान (Shares Payable by Instalments) :

अंशधारियों की सुविधा की दृष्टि से अंशों की कीमत प्रायः उनसे किस्तों में वसूल की जाती है। हिसाब-किताब की पुस्तकों में लेखा करते समय प्रत्येक किस्त को अलग-अलग नाम से पहचाना जाता है। आवेदन-पत्रों के साथ आने वाली राशि को 'अंश आवेदन खाते' (Share Application a/c), बंटन की राशि को 'अंश बंटन खाते' (Share Allotment a/c), प्रथम मांग की राशि को 'अंश प्रथम मांग खाते' (Share First Call a/c), द्वितीय मांग की राशि को 'अंश द्वितीय मांग खाते' (Share Second Call a/c) आदि में दर्ज किया जाता है।

कम्पनी की पुस्तकों में अंशधारियों के खाते को डेबिट-क्रेडिट न किया जाकर विभिन्न खातों, जैसे अंश आवेदन खाते, अंश बंटन खाते, अंश मांग खाते आदि को डेबिट-क्रेडिट किया जाता है। ये खाते अव्यक्तिगत से लगते हैं परन्तु अंशधारियों अर्थात् व्यक्तिगत खातों के स्थान में आने के कारण ये वास्तव में व्यक्तिगत खाते ही हैं।

यदि ये खाते उतनी ही रकम से क्रेडिट किए गये हैं जितनी रकम से डेबिट किये गये थे तो इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि अंशधारियों से जितनी रकम मांगी गई थी, वह सब प्राप्त हो गई है। यदि ये खाते जितनी रकम से डेबिट हुये हैं, उससे कम रकम से क्रेडिट किए गये हैं तो यह अन्तर 'मांग की बकाया राशि' (Calls in Arrears) को प्रकट करता है। मांग की बकाया राशि के लिए अलग से कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है। यदि अंशों पर बकाया राशि अन्तिम खाते बनाने की तिथि तक वसूल नहीं हुई है तो इस बकाया राशि को चिट्ठे में अंश पूंजी में से घटाकर बतलाना चाहिये।

अंशों के किस्तों पर निर्गमन की प्रविष्टियां :

सौदा	तिथि	प्रविष्टि	धन राशि जिससे प्रविष्टि की जायेगी
प्रार्थना-पत्र के साथ धन राशि प्राप्त होने पर	आवेदन राशि प्राप्ति की तिथि को	Bank a/c Dr. To Share Application a/c (Being amount received for the purchase of......shares @ Rs.......per share.)	अंश आवेदन पर प्राप्त वास्तविक धन राशि से
वंटन होने पर प्रार्थना-पत्र के साथ आई हुई राशि का पूंजी खाते में हस्तान्तरण करने पर	वंटन की तिथि को	Share Application a/c Dr. To Share Capital a/c (Being the transfer of share application money to Share Capital a/c.)	वंटित अंशों पर प्रार्थना-पत्र के साथ मांगी गई राशि से
वंटन पर अंशधारियों से वंटन-राशि मांगने पर	वंटन की तिथि को	Share Allotment a/c Dr. To Share Capital a/c (Being the amount due on allotment of ......shares @ Rs. ....per share as per Board's resolution dated.......)	अंशधारियों से मांगी गई कुल वंटन राशि से
वंटन राशि प्राप्त होने पर	वंटन राशि प्राप्त करने की तिथि को	Bank a/c Dr. To Share Allotment a/c (Being amount received on allotment of......shares.)	वास्तविक प्राप्त वंटन राशि से
प्रथम मांग का भुगतान मांगने पर	प्रथम मांग की तिथि को	Share First Call a/c Dr. To Share Capital a/c (Being amount due on first call on......shares @ Rs...... per share.)	अंश प्रथम मांग पर मांगी गई कुल राशि से
प्रथम मांग का भुगतान प्राप्त करने पर	प्रथम मांग की राशि प्राप्त होने की तिथि को	Bank a/c Dr. To Share First Call a/c (Being the amount received on first call.)	प्रथम मांग पर प्राप्त वास्तविक राशि से

अन्य मांगों की प्रविष्टियां प्रथम मांग के अनुसार होंगीं। केवल माग की संख्या बदल जायेगी। मांग की बकाया रकम (Calls in arrears) की कोई अलग प्रविष्टि नहीं होगी।

Illustration 2.

X Co. Ltd. was registered with an authorised capital of Rs. 35 lakhs divided into 25,000 equity shares of Rs. 100 each and 10,000 preference shares of Rs. 100 each. All the shares were issued and fully subscribed. The shares were issued on January 1, 1967. The subscription lists were closed on 18th January, 1967. Allotment was made on 1st February, 1967, due on 15th Feb. The first and second calls were made on 1st May, 1967 and 1st Oct, 1967 due on 15th May and 15th Oct. 1967 respectively. The shares were payable as follows:—

Rs. 20/– on application; Rs. 30/– on allotment;

Rs. 40/– on first call; and Rs. 10/– on second call.

All the amounts were received on the due dates. Make necessary journal entries in the books of the company, post them in the ledger and give its Balance Sheet.

एक्स कम्पनी लि० का पंजीयन 35 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से हुआ जो 100 रु० वाले 25,000 ईक्विटी अंशों में और 100 रु० वाले 10,000 अधिमान अंशों में विभाजित थी। सभी अंश निर्गमित कर दिये गये और उनके खरीदने के लिए प्रार्थना–पत्र प्राप्त हुए। अंश 1 जनवरी, 1967 को निर्गमित किए गए। अभिदान सूचियां 18 जनवरी, 1967 को बन्द कर दी गईं। बंटन 1 फरवरी, 1967 को किया गया जिस पर मांगी गई राशि 15 फरवरी को देय थी। प्रथम तथा द्वितीय मांग 1 मई 1967 और 1 अक्टूबर 1967 को मांगी गई। ये मांगें क्रमशः 15 मई 1967 और 15 अक्टूबर 1967 को देय थीं। इन अंशों का भुगतान निम्न प्रकार करना था:—

प्रार्थना-पत्र के साथ	20 रु०;	बंटन पर	30 रु०;
प्रथम मांग पर	40 रु०; और	द्वितीय मांग पर	10 रु०।

सभी धन राशि देय तिथियों पर प्राप्त हो गईं। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये, खाता बही में खतौनी कीजिए तथा कम्पनी का चिट्ठा दीजिये।

Solution :

Journal of X Co. Ltd.

Date	Particulars	L.F.	Dr. Amount Rs.	Cr. Amount Rs.
1967 Jan. 18	Bank a/c Dr. To Equity Share Application a/c To Preference Share Application a/c (Being application money received on 25,000 equity shares and 10,000 preference shares @ Rs. 20 per share.)		7,00,000	 5,00,000 2,00,000
Feb. 1	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being amount received on Equity Share Application a/c transferred to Equity Share Capital a/c.)		5,00,000	5,00,000
Feb. 1	Preference Share Application a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Being amount received on Preference Share Application a/c transferred to Preference Share Capital a/c.)		2,00,000	2,00,000
Feb. 1	Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being the allotment money due on, 25,000 equity shares @ Rs. 30/- per share as per resolution no . . of the Board's Meeting dated......)		7,50,000	7,50,000
Feb. 1	Preference Share Allotment a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Being allotment money due on 10,000 preference shares @ Rs. 30/- per share as per resolution no.........of the Board's meeting dated......)		3,00,000	3,00,000
Feb. 15	Bank a/c Dr. To Equity Share Allotment a/c To Preference Share Allotment a/c (Being the allotment money received on equity shares and preference shares.)		10,50,000	 7,50,000 3,00,000

Journal Contd.

		Rs.	Rs.
1967 May I	Equity Share First Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being the amount due on first call on 25,000 equity shares @ Rs. 40 per share as per resolution no......of the Board's meeting dated...)	10,00,000	10,00,000
May I	Preference Share First Call a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Being the amount due on first call on 10,000 preference shares @ Rs. 40/- per share as per resolution no .....of the Board's meeting dated...)	4,00,000	4,00,000
May 15	Bank a/c Dr. To Equity Share First Call a/c To Preference Share First Call a/c (Being the amount received on equity share first call and preference share first call.)	14,00,000	10,00,000 4,00,000
Oct. I	Equity Share Second Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being the amount due on second call on 25,000 equity shares @ Rs. 10 per share as per resolution no......of the Board's meeting dated ..)	2,50,000	2,50,000
Oct. I	Preference Share Second Call a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Being the amount due on second call on 10,000 preference shares @ Rs. 10 per share as per resolution no......of the Board's meeting dated......)	1,00,000	1,00,000
Oct. 15	Bank a/c Dr. To Equity Share Second Call a/c To Preference Share Second Call a/c (Being amount received on equity share second call and preference share second call.)	3,50,000	2,50,000 1,00,000

Ledger of X Co. Ltd.

Bank Account

Dr. Date	Particulars	Amount	Date	Particulars	Cr. Amount
1967		Rs.	1967		Rs.
Jan. 18	To Equity Share Application a/c	5,00,000	Dec. 31	By Balance c/d	35,00,000
Jan. 18	To Preference Share Application a/c	2,00,000			
Feb. 15	To Equity Share Allotment a/c	7,50,000			
Feb. 15	To Preference Share Allotment a/c	3,00,000			
May 15	To Equity Share First Call a/c	10,00,000			
May 15	To Preference Share First Call a/c	4,00,000			
Oct. 15	To Equity Share Second Call a/c	2,50,000			
Oct. 15	To Preference Share Second Call a/c	1,00,000			
		35,00,000			35,00,000

Equity Share Application Account

		Rs.			Rs.
Feb. 1,67	To Equity Share Capital a/c	5,00,000	Jan. 18,67	By Bank a/c	5,00,000

Preference Share Application Account

		Rs.			Rs.
Feb. 1,67	To Preference Share Capital a/c	2,00,000	Jan. 18,67	By Bank a/c	2,00,000

Equity Share Allotment Account

		Rs.			Rs.
Feb. 1,67	To Equity Share Capital a/c	7,50,000	Feb. 15,67	By Bank a/c	7,50,000

Preference Share Allotment Account

		Rs.			Rs.
Feb. 1,67	To Preference Share Capital a/c	3,00,000	Feb. 15,67	By Bank a/c	3,00,000

Equity Share First Call Account

		Rs.			Rs.
May 1,67	To Equity Share Capital a/c	10,00,000	May 15,67	By Bank a/c	10,00,000

Preference Share First Call Account

		Rs.			Rs.
May 1,67	To Preference Share Capital a/c	4,00,000	May 15,67	By Bank a/c	4,00,000

Equity Share Second Call Account

		Rs.			Rs.
Oct. 1,67	To Equity Share Capital a/c	2,50,000	Oct. 15,67	By Bank a/c	2,50,000

Preference Share Second Call Account

		Rs.			Rs.
Oct. 1,67	To Preference Share Capital a/c	1,00,000	Oct 15,67	By Bank a/c	1,00,000

Equity Share Capital Account

		Rs.			Rs.
Dec. 31,67	To Balance c/d	25,00,000	Feb. 1,67	By Equity Share Application a/c	5,00,000
			Feb. 1,67	By Equity Share Allotment a/c	7,50,000
			May 1,67	By Equity Share First Call a/c	10,00,000
			Oct. 1,67	By Equity Share Second Call a/c	2,50,000
		25,00,000			25,00,000

Preference Share Capital Account

		Rs.			Rs.
Dec. 31,67	To Balance c/d	10,00,000	Feb. 1,67	By Preference Share Application a/c	2,00,000
			Feb. 1,67	By Preference Share Allotment a/c	3,00,000
			May 1,67	By Preference Share First Call a/c	4,00,000
			Oct. 1,67	By Preference Share Second Call a/c	1,00,000
		10,00,000			10,00,000

X Co. Limited
Balance Sheet as on 31st December, 1967

	Rs.	Rs.		Rs.
Share Capital			Cash at Bank	35,00,000
Authorised Capital :				
25,000 Equity Shares of Rs. 100 each	25,00,000			
10,000 Preference Shares of Rs. 100 each	10,00,000	35,00,000		
Issued and Subscribed Capital :	Rs.			
25,000 Equity Shares of Rs. 100 each	25,00,000			
10,000 Preference Shares of Rs. 100 each	10,00,000	35,00,000		
		35,00,000		35,00,000

अंशों को प्रीमियम पर निर्गमित करना (Issue of Shares at Premium) :—

अंशों के अंकित मूल्य से अधिक मूल्य पर जब अंश निर्गमित किए जाते हैं, तब उनको प्रीमियम पर निर्गमित हुआ कहते हैं। निर्गमित मूल्य में से अंकित मूल्य को घटा देने के पश्चात् जो राशि शेष रहती है, वह प्रीमियम कहलाती है। कम्पनी के अंशों का प्रीमियम पर निर्गमन, उसकी सुदृढ़ आर्थिक स्थिति तथा ख्याति का द्योतक है।

कम्पनी अधिनियम की धारा 78 में उक्त प्रीमियम के प्रयोग के बारे में प्रावधान हैं। प्रीमियम की कुल रकम अंश प्रीमियम खाते में हस्तान्तरित कर दी जानी चाहिए और प्रीमियम का प्रयोग आगे बताये गए कार्यों के अलावा अन्य किसी कार्य में नहीं किया जाना चाहिये। यदि इसका उपयोग अन्य किसी कार्य के लिए किया गया तो विधान के अनुसार प्रीमियम की कमी पूंजी की कमी मानी जावेगी और कम्पनी तथा अधिकारीगण उन्ही दण्डों के भागी होंगे जो पूंजी कमी करने की स्थिति में होते हैं।

प्रीमियम की रकम का निम्नलिखित कार्यों के लिए प्रयोग किया जा सकता है :—

(i) सदस्यों को पूर्ण प्रदत्त बोनस अंश निर्गमित करना।

(ii) प्रारम्भिक व्ययों को अपलिखित करना।

(iii) अंशों अथवा ऋण-पत्रों के निर्गमन सम्बन्धी विपणन (Marketing) व्ययों को अपलिखित करना।

(iv) शोध्य अधिमान अंशों अथवा ऋण-पत्रों के शोधन पर दिये गए प्रीमियम के लिए प्रावधान करना।

इस प्रकार प्रीमियम की रकम सदस्यों में लाभांश के रूप में मुक्त रूप से वितरित नहीं की जा सकती है तथा अंश प्रीमियम खाते में जमा रकम कम्पनी की पूंजीगत सम्पत्ति मानी जाती है।

Illustration 3

Rajendra Ltd. was formed with an authorised capital of Rs. 20 lakhs divided into 20,000 equity shares of Rs. 100 each. It issued 10,000 shares to the public at Rs. 105 per share payable as to Rs. 25 on application, Rs. 35 (including premium) on allotment, Rs. 20 on first call and the balance as and when required. 8,000 shares were subscribed for by the public. All the moneys were called except the second and final call. The amounts were received from the shareholders with the following exceptions :—

A holder of 200 shares failed to pay the allotment money and the first call money.

A holder of 100 shares failed to pay the first call money.

Enter the above transactions in the books of the company and show how share capital will appear in the balance sheet.

राजेन्द्र लिमिटेड की स्थापना 20 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से की गई। उक्त पूंजी 100 रु० वाले 20,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित थी। उसने जनता में 10,000 अंश, 105 रु० प्रति अंश के हिसाब से, निर्गमित किए, जो इस प्रकार देय थे : प्रार्थना-पत्र के साथ 25 रु०, बंटन पर 35 रु० (प्रीमियम सहित), प्रथम मांग पर 20 रु० और शेष राशि आवश्यकता पड़ने पर। जनता द्वारा 8,000 अंश खरीदे गए। इन अंशों पर द्वितीय व अन्तिम मांग के अलावा सभी राशि मंगाली गई और अंशधारियों से निम्नलिखित के अतिरिक्त सभी धन राशि प्राप्त हो गई :—

एक अंशधारी ने जिसके पास 200 अंश थे, बंटन तथा प्रथम मांग पर देय धन राशि नहीं दी।

एक अंशधारी ने, जिसके पास 100 अंश थे, प्रथम मांग पर देय धन राशि नहीं दी।

कम्पनी की पुस्तकों ने आवश्यक प्रविष्टियां कीजिए तथा यह बतलाइये कि कम्पनी के चिट्ठे में अंश पूंजी किस प्रकार दिखलाई जावेगी।

Solution :

Journal of Rajendra Limited

			Rs.	Rs.
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being the transfer of Equity Share Application a/c to Equity Share Capital a/c.)		2,00,000	2,00,000
	Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Being the amount due on allotment.)		2,80,000	2,40,000 40,000
	Equity Share First Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being the amount due on equity share first call.)		1,60,000	1,60,000

नोट—रोकड़ प्राप्ति से सम्बन्धित प्रविष्टियां रोकड़ बही में दिखाई गई हैं।

Cash Book (Bank Column)

	Rs.		Rs.
To Share Application a/c	2,00,000	By Balance c/d	6,27,000
To Share Allotment a/c	2,73,000		
To Share First Call a/c	1,54,000		
	6,27,000		6,27,000

Equity Share Application Account

	Rs.		Rs.
To Equity Share Capital a/c	2,00,000	By Bank a/c	2,00,000

Equity Share Allotment Account

	Rs.		Rs.
To Equity Share Capital a/c	2,40,000	By Bank a/c	2,73,000
To Share Premium a/c	40,000	By Balance c/d	7,000
	2,80,000		2,80,000

Equity Share Capital Account

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	6,00,000	By Equity Share Application a/c	2,00,000
		By Equity Share Allotment a/c	2,40,000
		By Equity Share First Call a/c	1,60,000
	6,00,000		6,00,000

Equity Share First Call Account

	Rs.		Rs.
To Equity Share Capital a/c	1,60,000	By Bank a/c	1,54,000
		By Balance c/d	6,000
	1,60,000		1,60,000

Share Premium Account

	Rs.		Rs.
To Balance c/d	40,000	By Equity Share Allotment a/c	40,000

Balance Sheet of Rajendra Limited

		Rs.		Rs.
Authorised Capital :			Ca-h at Bank	6,27,000
20,000 Equity Shares of Rs. 100 each		20,00,000		
Issued and Subscribed Capital :				
8,000 Equity Shares of Rs. 100 each of which Rs. 75 called up		6,00,000		
Less Calls in Arrears.		12,000		
		5,88,000		
Share Premium	40,000			
Less amount not received	1,000	39,000		
		6,27,000		6,27,000

अंशों का बट्टे पर निर्गमन करना (Issue of Shares at Discount) :—

जब अंशों का निर्गमित मूल्य उनके अंकित मूल्य से कम होता है तो अंश बट्टे पर निर्गमित हुए कहे जाते हैं। दोनों मूल्यों का अन्तर बट्टा (Discount) कहलाता है। कोई भी कम्पनी धारा 79 के अन्तर्गत दी हुई शर्तों तथा प्रतिबन्धों के अधीन ही अंशों का बट्टे पर निर्गमन कर सकती है। ये शर्तें तथा प्रतिबन्ध निम्नलिखित हैं :—

(i) अंश ऐसी श्रेणी के होने चाहिए जो पहले से ही निर्गमित किए हुए हों।

(ii) अंशों को बट्टे पर निर्गमन करने का अधिकार, कम्पनी की साधारण सभा में पास किए गए प्रस्ताव द्वारा दिया जाना चाहिए तथा न्यायालय द्वारा अनुमोदित होना चाहिए।

(iii) बट्टे की अधिकतम दर प्रस्ताव में स्पष्ट की हुई होनी चाहिए जो कि 10% से अधिक नहीं होनी चाहिए। 10% से अधिक होने पर केन्द्रीय सरकार को स्वीकृति लेना आवश्यक है।

(iv) निर्गमन की तिथि को कम्पनी को व्यवसाय प्रारम्भ करने का अधिकार मिले हुए कम से कम एक वर्ष की अवधि समाप्त हो गई है।

(v) अंशों का निर्गमन न्यायालय द्वारा अनुमोदन की तिथि से दो माह के भीतर अथवा न्यायालय द्वारा बढ़ाई गई अवधि के भीतर करना चाहिये।

(vi) न्यायालय द्वारा अनुमोदन के समय लगाये गये अन्य प्रतिबन्ध तथा शर्तों का भी ध्यान रखना चाहिए।

अंशों के निर्गमन से सम्बन्धित प्रत्येक प्रविवरण में, दिए गए बट्टे का विवरण होना चाहिए अथवा बट्टे की उस रकम का वर्णन होना चाहिए जिसे प्रविवरण की निर्गमन तिथि तक अपलिखित नहीं किया गया है। यदि इस उपधारा का पालन करने में त्रुटि की जाती है तो कम्पनी तथा उसके प्रत्येक दोषी पदाधिकारी पर 50 रु० तक अर्थदण्ड किया जा सकता है।

बट्टे की रकम कम्पनी के पूंजीगत लाभों (प्रीमियम, संस्थापन से पूर्व के लाभ आदि) में से अपलिखित की जा सकती है। यदि कम्पनी के पास पूंजीगत लाभ नहीं हैं तो इसको लाभ-हानि खाते से भी अपलिखित किया जा सकता है।

वट्टे की राशि का वह भाग जो अपलिखित नहीं किया गया है चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की तरफ दिखाया जाता है।

वट्टे की लेखा प्रविष्टि—

Discount on Issue of Shares a/c Dr.

To Share Capital a/c

Illustration 4.

Kalar Limited (established in the year 1965) had an authorised share capital of Rs. 80 lakhs divided into 80,000 equity shares of Rs. 100 each, of which equity shares worth Rs. 50 lakhs were already issued to the public in 1965. It further decided to raise fresh capital by issuing remaining equity shares to the public at a discount of 5 per cent in the year 1967. The allotment took place on 15th April, 1967 and a call was made on 15th June, 1967. Rs. 30 were payable on application, Rs. 40 on allotment and the balance at the time of call. The due dates for payment on allotment and call were 30th April and 30th June, 1967 respectively. All the moneys were received on due dates.

Pass necessary journal entries relating to this issue in the books of the company and show how transactions would appear in the balance sheet.

कालार लिमिटेड (स्थापित 1965) की अधिकृत अंश-पूंजी 80 लाख रु० थी जो 100 रु० वाले 80,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित थी। इन अंशों में से उसने 50 लाख रु० के ईक्विटी अंश 1965 में जनता को निर्गमित किये हुये थे। अब 1967 में उसने शेष ईक्विटी अंश जनता को 5 प्रतिशत वट्टे पर निर्गमित करके नयी पूंजी प्राप्त करने का निश्चय किया। वंटन 15 अप्रैल, 1967 को किया गया तथा मांग 15 जून, 1967 को की गई। प्रार्थनापत्र के साथ 30 रु०, वंटन पर 40 रु० और शेष राशि मांग के समय देय थी। वंटन तथा मांग राशियों की भुगतान देय तिथि क्रमशः 30 अप्रैल व 30 जून, 1967 थी। देय तिथियों पर समस्त धन राशि प्राप्त हो गई।

उक्त निर्गमन के लिए कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा बतलाइये कि चिट्ठे में ये सौदे किस प्रकार दिखलाए जायेंगे।

Solution :

Journal of Kalar Limited

			Rs.	Rs.
?	Bank a/c	Dr.	9,00,000	
	To Equity Share Application a/c			9,00,000
	(Being the share application money received.)			
1967 Apr. 15	Equity Share Application a/c	Dr.	9,00,000	
	To Equity Share Capital a/c			9,00,000
	(Being the balance of Share Application a/c transferred.)			
Apr. 15	Equity Share Allotment a/c	Dr.	12,00,000	
	Discount on Issue of Equity Shares a/c	Dr.	1,50,000	
	To Equity Share Capital a/c			13,50,000
	(Being the allotment money due.)			
Apr. 30	Bank a/c	Dr.	12,00,000	
	To Equity Share Allotment a/c			12,00,000
	(Being the allotment money received.)			
June 15	Equity Share Call a/c	Dr.	7,50,000	
	To Equity Share Capital a/c			7,50,000
	(Being the amount due on equity share call.)			
June 30	Bank a/c	Dr.	7,50,000	
	To Equity Share Call a/c			7,50,000
	(Being the equity share call money received.)			

Balance Sheet of Kalar Limited

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		Rs.
Authorised Capital : 80,000 Equity Shares of Rs. 100 each	80,00,000	Discount on Issue of Shares	1,50,000
Issued and subscribed capital : 80,000 Equity Shares of Rs. 100 each fully paid up	80,00,000		

नोट :— यह मान लिया गया है कि वंटन पर 40 रु० प्रति अंश नकद प्राप्त होता है और बट्टा इसके अतिरिक्त है।

अंशों का अधि-अभिदान (Over subscription):—

प्रायः लोकप्रिय कम्पनियों में अभिदान के लिए जितने अंश जनता में निर्गमित किये जाते हैं, उनसे कहीं अधिक अंशों को खरीदने के लिए जनता से प्रार्थना-पत्र आ जाते हैं। ऐसी स्थिति को 'अंशों के अधि-अभिदान' की स्थिति कहते हैं। अंशों के अधि-अभिदान की अवस्था में, वंटन करते समय, संचालकों का कार्य कुछ कठिन हो जाता है। वे सभी प्रार्थियों को उनके प्रार्थनानुसार अंशों का वंटन नहीं कर सकते हैं क्योंकि प्रविवरण में वर्णित निर्गमित अंशों से अधिक का वंटन नहीं किया जा सकता। अधि-अभिदान की अवस्था में अंश वंटन के लिए जो विधियां अपनाई जाती हैं, उनके कतिपय उदाहरण निम्नलिखित हैं :—

(i) सभी प्रार्थियों को यथानुपात अंशों का वंटन कर दिया जावे। जैसे, 1 लाख रु० के अंश निर्गमित किए गए और 2 लाख रु० के अंश खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये। ऐसी स्थिति में 2 अंशों के लिए प्रार्थना-पत्र देने वाले को 1 अंश के हिसाब से वंटन कर दिया जायेगा। प्रार्थी की शेष राशि उसे लौटाई नहीं जाती अपितु वंटित अंशों की भविष्य की मांग-पूर्तियों के लिए रख ली जाती है।

(ii) कुछ प्रार्थियों को उनके द्वारा प्रार्थित सभी अंशों का वंटन कर दिया जावे तथा कुछ प्रार्थियों को अंशों का वंटन बिल्कुल नहीं किया जावे। जब प्रार्थियों को वंटन के लिए बिल्कुल मना कर दिया जाता है, तब प्रार्थना-पत्र राशि खेद-पत्र के साथ लौटा दी जाती है।

Illustration 5.

Robbins Limited was registered with an authorised capital of Rs. 1,00,00,000 divided into 1 lakh shares of Rs. 100 each. The company issued 50,000 shares to the public @ Rs. 105 per share payable as follows :—Rs. 20 on application, Rs. 35 (including premium) on allotment, Rs. 30 on first call and Rs. 20 on second call. The shares were subscribed to the extent of 1,20,000. The directors proceeded to allotment in the following way :—

(i) *Applicants of 20,000 shares were refused allotment and their application money was refunded.*

(ii) The remaining applicants were allotted shares in the company pro-rata.

A holder of 100 shares failed to pay the allotment money and moneys due on subsequent calls. Another holder of 200 shares failed to pay the moneys due on share first call and second call.

Give journal entries in the books of the company and prepare Cash Book relating to the above transactions. Also prepare a statement showing calls in arrears.

रोबिन्स लिमिटेड का पंजीयन 1 करोड़ रु० की अधिकृत पूंजी से हुआ जो 100 रु० वाले 1 लाख अंशों में विभाजित थी। कम्पनी ने 50,000 अंशों को 105 रु० प्रति अंश के हिसाब से जनता में निर्गमित किया जो निम्न प्रकार देय थे.—प्रार्थना-पत्र के साथ 20 रु०; वंटन पर 35 रु० (प्रीमियम सहित), प्रथम मांग पर 30 रु०, तथा द्वितीय मांग पर 20 रु०। 1,20,000 अंशों को खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये। संचालकों ने निम्न प्रकार से वंटन किया :—

(1) 20,000 अंशों के प्रार्थियों को वंटन के लिए मना कर दिया गया तथा उनकी आवेदन राशि लौटा दी गई।

(2) शेष प्रार्थियों को यथानुपात अंशों का वंटन कर दिया गया।

एक अंशधारी ने जिसके पास 100 अंश थे, वंटन राशि तथा आगामी मांगों पर देय राशि का भुगतान नहीं किया। दूसरे अंशधारी ने, जिसके पास 200 अंश थे, प्रथम तथा द्वितीय मांग राशियों का भुगतान नहीं किया।

उक्त व्यवहारों के सम्बन्ध में कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिये तथा रोकड़ वही बनाइये। बकाया मांग राशि का एक विवरण भी तैयार कीजिए।

Solution :

Journal of Robbins Limited

			Rs.	Rs.
	Share Application a/c Dr. To Share Capital a/c (Being the balance of Share Application a/c transferred.)		10,00,000	10,00,000
	Share Allotment a/c Dr. To Share Capital a/c To Premium on Issue of Shares a/c (Being the amount due on allotment.)		17,50,000	15,00,000 2,50,000
	Share Application a/c Dr. To Share Allotment a/c (Being the excess application money adjusted towards allotment dues.)		10,00,000	10,00,000
	Share First Call a/c Dr. To Share Capital a/c (Being the amount due on first call.)		15,00,000	15,00,000
	Share Second Call a/c Dr. To Share Capital a/c (Being the amount due on second call.)		10,00,000	10,00,000

Cash Book (Bank Column)

		Rs.			Rs.
To Share Application a/c		24,00,000	By Share Application a/c		4,00,000
To Share Allotment a/c		7,48,500	By Balance c/d		52,33,500
To Share First Call a/c		14,91,000			
To Share Second Call a/c		9,94,000			
		56,33,500			56,33,500

नोट :— अंश वंटन पर प्राप्त राशि का परिकलन इस प्रकार किया गया है:

	रु०
वंटन पर कुल देय राशि	17,50,000
अंश आवेदन खाते से हस्तान्तरित	10,00,000
कुल राशि जो 50,000 अंशों के धारकों से अब देय है	7,50,000
100 अंशों के धारक से राशि प्राप्त नहीं हुई $\left(\frac{7,50,000}{50,000} \times 100\right)$ रु०	1,500
अंश वंटन पर प्राप्त राशि	7,48,500

Statement Showing Calls in Arrears

Particulars	Amount due	Amount received	Calls in arrears
	Rs.	Rs.	Rs.
Share Allotment	17,50,000	17,48,500	1,500
Share First Call	15,00,000	14,91,000	9,000
Share Second Call	10,00,000	9,94,000	6,000
	42,50,000	42,33,500	16,500

अग्रदत्त मांग (Calls in Advance)

यदि कोई अंशधारी अंशों पर न मांगी गई राशि को स्वेच्छा से कम्पनी को देना चाहता है तो कम्पनी उसे स्वीकार कर सकती है बशर्ते कि अंतर्नियमों में इस सम्बन्ध में प्रावधान किया गया है अथवा कम्पनी पर 'सारणी ए' लागू होती है। उक्त राशि 'अग्रिम मांग राशि' (Calls in Advance) कहलाती है। इस अग्रिम राशि पर सदस्य को ब्याज भी दिया जा सकता है। कम्पनी द्वारा 'सारणी ए' अपनाये जाने पर यह दर 6 प्रतिशत वार्षिक हो सकती है परन्तु साधारण सभा में प्रस्ताव पास करके इस दर को बढ़ाया भी जा सकता है।

Illustration. 6.

Narendra Ltd. with a nominal capital of Rs. 5,00,000 divided into 50,000 equity shares of Rs. 10 each issued 30,000 equity shares at par, payable as to Rs. 2 on application, Rs. 3 on allotment, Rs. 2.50 on first call and Rs. 2.50 on second call. All the shares were subscribed for and were allotted on 1st April, 1967, the due date for payment of amount due on allotment being 30th April, 1967. The first and second calls were made on 1st August, 1967 and 1st December, 1967 and were payable on 31st August, 1967 and 31st December, 1967 respectively. All the amounts were received on the due dates except that a holder of 100 shares failed to deposit the amount due on allotment on its due date and instead deposited this amount with interest @ 5% p. a, with the first call money. Another holder of 200 shares paid the whole of the amount due along with allotment money. He was, however, paid interest @ 6% per annum on his advance deposits.

Journalise the above transactions.

नरेन्द्र लि० ने, जिसकी अधिकृत पूंजी 5 लाख रु० (10 रु० वाले 50,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित) थी, 30,000 ईक्विटी अंश सम मूल्य पर निर्गमित किये जो इस प्रकार देय थे: प्रार्थना-पत्र के साथ 2 रु०, वंटन पर 3 रु०, प्रथम मांग पर 2.50 रु० और द्वितीय मांग पर 2.50 रु०। सभी अंशों को खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये। और 1 अप्रैल 1967 को अंशों का वंटन किया गया। वंटन-राशि के भुगतान करने की तिथि 30 अप्रैल 1967 थी। प्रथम और द्वितीय मांग क्रमशः 1 अगस्त

1967 और 1 दिसम्बर 1967 को की गई, तथा इन की भुगतान तिथियां क्रमशः 31 अगस्त 1967 और 31 दिसम्बर 1967 थीं। देय तिथियों को सभी धन राशि प्राप्त हो गई; केवल एक धारक ने, जिसके पास 100 अंश हैं, वंटन पर मांगी गई राशि का भुगतान समय पर नहीं किया और उसने वंटन पर मांगी हुई राशि का प्रथम मांग के साथ 5% वार्षिक ब्याज सहित भुगतान कर दिया। दूसरे अंशधारी ने, जिसके पास 200 अंश हैं, पूर्ण देयधन वंटन के साथ दे दिया। उसके द्वारा अग्रिम जमा कराये हुए धन पर 6% वार्षिक दर से ब्याज दिया गया।

उपरोक्त सौदों का जर्नल में लेखा कीजिए।

Solution : **Journal of Narendra Ltd.**

				Rs.	Rs.
?	Bank a/c Dr. To Equity Share Application a/c (Application money received on 30,000 shares @ Rs. 2/- per share.)			60,000	60,000
1967 April 1	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Balance of Equity Share Application a/c transferred to Equity Share Capital a/c.)			60,000	60,000
April 1	Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Allotment money due on 30,000 shares @ Rs. 3/- per share.)			90,000	90,000
April 30*	Bank a/c Dr. To Equity Share Allotment a/c (Cash received on allotment.)			89,700	89,700
April 30*	Bank a/c Dr. To Calls in Advance a/c (Cash received on 'Calls in Advance' on 200 shares @ Rs. 5/- per share.)			1,000	1,000
August 1	Equity Share First Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (First call money due on 30,000 shares @ Rs 2.50 per share.)			75,000	75,000
August 1	Calls in Advance a/c Dr. To Equity Share First Call a/c (Calls in advance money adjusted.)			500	500

*दोनों की मिश्रित प्रविष्टि भी की जा सकती है।

Journal Contd.

Journal of Narendra Ltd. Continued

		Rs.	Rs.
Aug. 31	Bank a/c Dr. To Equity Share First Call a/c (Cash received on first call.)	74,500	74,500
Aug. 31	Bank a/c Dr. To Equity Share Allotment a/c To Interest a/c (Cash received on allotment on 100 shares and interest @ 5% p. a. on Rs. 300 for 4 months.)	305	300 5
Dec. 1	Equity Share Final Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Final call money due on 30,000 shares @ Rs. 2.50 per share.)	75,000	75,000
Dec. 1	Calls in Advance a/c Dr. To Equity Share Final Call a/c (Calls in advance money adjusted.)	500	500
Dec. 31	Bank a/c Dr. To Equity Share Final Call a/c (Cash received on second call.)	74,500	74,500
Dec. 31	Interest on Calls in Advance a/c Dr. To Bank a/c (Being interest on calls in advance paid as to Rs. 15 from 1st May to 1st August and Rs. 10 from Ist August to Ist December, 1967.)	25	25

अंशों का हरण (Forfeiture of Shares)

जब कोई अंशधारी अंशों से सम्बन्धित मांग का भुगतान नहीं कर पाता है तो कम्पनी द्वारा उसके अंश जब्त किये जा सकते हैं और उसकी सदस्यता का अन्त किया जा सकता है। अंशों के जब्त किये जाने को ही 'अंशों का हरण' कहते हैं। कम्पनी को अंश हरण का अधिकार अन्तर्नियमों के प्रावधानों द्वारा प्राप्त होता है। यदि अन्तर्नियमों ने कम्पनी को अंश हरण का अधिकार नहीं दे रखा है और कम्पनी पर टेबिल 'ए' लागू नहीं होती है तो कम्पनी अंशों का हरण नहीं कर सकती है। अंशों का हरण अन्तर्नियमों में दिये हुये नियमों के अन्तर्गत होना चाहिए, यदि नियमों का पालन नहीं किया गया है तो वह हरण वैध नहीं होगा। अंशों का हरण अंशों से सम्बन्धित मांग का न भुगतान करने

के कारण ही हो सकता है, अन्य कारणों से नहीं। जैसे, यदि किसी कम्पनी ने व्यापारिक ऋण का भुगतान न करने के कारण किसी अंशधारी के अंशों का हरण किया है तो यह अवैध हरण माना जायेगा (Hopkinson v. Mortimer Harley & Co. 1917)।

अंशों के हरण हो जाने पर भी अंशधारी, उन अंशों पर उस समय तक मांगी गई किन्तु उसके द्वारा अदत्त राशि के लिये, उत्तरदायी रहेगा। अंशों को किसी अन्य व्यक्ति को बेचे जाने पर उसका उत्तरदायित्व समाप्त हो जाता है। अंशों के हरण के पश्चात् हरण किये गए अंश कम्पनी की सम्पत्ति हैं और कम्पनी उन अंशों को किसी अन्य व्यक्ति को बेच सकती है। अंशों के हरण किये जाने पर अंशधारी कम्पनी का सदस्य नहीं रहता है तथा उसका नाम सदस्यों के रजिस्टर से हटा दिया जाता है। उसे हरण किये गये अंशों का प्रमाण-पत्र कम्पनी को लौटाना पड़ता है तथा उन अंशों पर उस अंशधारी द्वारा दी गई राशि जब्त करली जाती है।

अंशों के हरण पर लेखा प्रविष्टियां

(अ) सम मूल्य पर निर्गमित अंशों का हरण :

यदि अंश अंशधारी को सम मूल्य पर निर्गमित किये गये थे और मांगी गई रकम का भुगतान न करने के कारण उन अंशों का हरण कर लिया गया है तो हरण की प्रविष्टि निम्नलिखित होगी:—

Share Capital a/c Dr. (हरण किये गये अंशों पर मांगी गई कुल राशि से)*

To Forfeited Shares a/c (हरण किये गये अंशों पर हरण होने तक प्राप्त राशि से)
To Share Allotment a/c
To Share First Call a/c
To Share Second Call a/c } (विभिन्न मांगों पर बकाया राशि से)

उपरोक्त प्रविष्टि से स्पष्ट है कि अंश पूंजी खाता (Share Capital a/c) हरण किये गये अंशों पर मांगी गई पूंजी की राशि से ही डेबिट किया जायेगा न कि अंशों के अंकित मूल्य से। जैसे, 1 अंश 100 रु० का है और हरण की तिथि तक उस पर 60 रु० मांगे गये हैं तो अंश पूंजी खाता (Share Capital a/c) 60 रु० से डेबिट होगा न कि 100 रु० से।

अंशों पर जो धन राशि उस अंशधारी से, जिसके अंश हरण किये गये हैं, हरण करने की तिथि तक प्राप्त हुई है, उसको हरण अंश खाते (Forfeited Shares a/c) में क्रेडिट कर दिया जाता है।

केवल वे ही मांग के खाते, जैसे वंटन, प्रथम मांग, द्वितीय मांग, आदि क्रेडिट किये जावेंगे, जिन पर मांगी गई धन राशि प्राप्त नहीं हुई है।

---

*Share Capital a/c को डेबिट किये जाने वाली राशि निम्नलिखित सूत्र से भी ज्ञात की जा सकती है:—

$$\frac{\text{No. of Shares forfeited}}{\text{No. of Shares issued}} \times \text{Credit balance of Share Capital Account}$$

Illustration 7

X was allotted 100 equity shares of Rs. 100 each in Y Co. Ltd. The company called Rs. 10/- on application, Rs. 20/- on allotment, Rs. 20/- on first call and Rs. 30/- on second call. X could pay only application and allotment moneys. He could not pay the amounts due on first call and the second call. His shares were forfeited by the company. Pass the necessary journal entry regarding this forfeiture in the books of the company.

एक्स को वाई कम्पनी लि० में 100 रु० वाले 100 ईक्विटी अंशों का वंटन किया गया। कम्पनी ने प्रार्थना पर 10 रु०, वंटन पर 20 रु०, प्रथम मांग पर 20 रु० और द्वितीय मांग पर 30 रु० मंगवाये। एक्स केवल प्रार्थना-पत्र और वंटन राशियां दे सका। उसने प्रथम मांग तथा द्वितीय मांग पर मांगी गई राशि नहीं दी। उसके अंश कम्पनी द्वारा जब्त कर लिये गये। कम्पनी की पुस्तकों में जब्त सम्बन्धी आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिये।

Journal

Solution :

			Rs.	Rs.
	Equity Share Capital a/c Dr.		8,000	
	To Forfeited Shares a/c			3,000
	To Equity Share First Call a/c			2,000
	To Equity Share Second Call a/c			3,000
	(Being the forfeiture of 100 equity shares on which Rs. 80 called up for non payment of calls as per resolution No...of the meeting of Board of Directors dated...)			

(व) जबकि अंशों को प्रीमियम पर निर्गमित किया गया है और हरण किये गये अंशों पर प्रीमियम की राशि प्राप्त नहीं हुई है:—

Share Capital a/c Dr. (हरण किए गये अंशों पर पूंजी के रूप में मांगी गई कुल राशि से)

Premium on Issue of Shares a/c Dr. (हरण किये गये अंशों पर प्रीमियम के रूप में मांगी गई धन राशि से)

To Forfeited Shares a/c (हरण किये गए अंशों पर प्राप्त धन राशि से)

To Share Allotment a/c
To Share First Call a/c
To Share Second Call a/c
} (हरण किये गए अंशों पर बकाया राशि से)

प्रीमियम की राशि प्राप्त न होने के कारण डेबिट कर दी गई है।

Illustration 8

X purchased 100 equity shares of Rs. 100 each in Y Co. Ltd. at a premium of Rs. 5/- per share. The company called Rs. 10/- on application, Rs. 25/- on

allotment (including premium), Rs. 20/- on first call and Rs. 30/- on second call. He could pay only application money. He could not pay allotment, first call and second call moneys. His shares were forfeited by the company. Pass the necessary journal entry regarding this forfeiture in the books of the company.

एक्स ने वाई कम्पनी में 100 रु० वाले 100 ईक्विटी अंशों को, 105 रु० प्रति अंश के हिसाब से, खरीदा। कम्पनी ने 10 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 25 रु० वंटन पर (प्रीमियम सहित), 20 रु० प्रथम मांग पर और 30 रु० द्वितीय मांग पर मंगवाये। वह केवल प्रार्थना-पत्र राशि ही दे सका। उसने वंटन, प्रथम तथा द्वितीय मांग पर मांगी गई राशि नहीं चुकाई। कम्पनी ने उसके अंश जब्त कर लिये। कम्पनी की पुस्तकों में हरण सम्बन्धी आवश्यक जर्नल प्रविष्टि कीजिये।

Journal

Solution :

			Rs.	Rs.
	Equity Share Capital a/c Dr.		8,000	
	Premium on Issue of Shares a/c Dr.		500	
	To Forfeited Shares a/c			1,000
	To Equity Share Allotment a/c			2,500
	To Equity Share First Call a/c			2,000
	To Equity Share Second Call a/c			3,000
	(Being the forfeiture of 100 equity shares on which Rs. 85 called up including premium of Rs. 5 per share for nonpayment of calls as per resolution No......of the meeting of Board of Directors dated......)			

(स) जबकि अंशों को प्रीमियम पर निर्गमित किया गया है और हरण किये गये अंशों प प्रीमियम की राशि प्राप्त हो गई है:—

Share Capital a/c Dr.	(हरण किए गये अंशों पर मांगी गई कुल राशि में से प्रीमियम-राशि को घटाने के बाद शेष राशि से)
To Forfeited Shares a/c	(हरण किए गए अंशों पर प्राप्त धन राशि में से प्रीमियम की राशि घटाने के बाद शेष राशि से)
To Share Allotment a/c To Share First Call a/c To Share Second Call a/c	} (हरण किए गए अंशों पर बकाया राशि से)

यदि अंश प्रीमियम पर निर्गमित किए गये हैं तथा हरण किए गये अंशो पर प्रीमियम राशि प्राप्त हो चुकी है तो प्रीमियम का खाता डेबिट नहीं किया जाता है। हरण किये गये अंशों जितनी धन राशि प्राप्त हो गई है उसमें से प्रीमियम की रा। को घटाकर शेष रकम से ही 'हरण गये अंश खाते' (Forfeited Shares a/c) को क्रेडिट करना चाहिये।

Illustration 9

X was allotted 100 equity shares of Rs. 100 each in Y Co. Ltd. at Rs. 105. The company called Rs. 30/- on application, Rs. 25 on allotment (including premium of Rs. 5/- per share), Rs. 20 on first call and Rs. 30 on second call. He could pay only application and allotment dues and could not pay first call and second call. His shares were forfeited by the company. Pass the necessary journal entry regarding this forfeiture in the books of the company.

एक्स को वाई कम्पनी में 100 रु० वाले 100 ईक्विटी अंशों का वंटन 105 रु० प्रति अंश के हिसाव से किया गया। कम्पनी ने 30 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 25 रु० वंटन पर (5 रु० प्रीमियम सहित), 20 रु० प्रथम मांग पर और 30 रु० द्वितीय मांग पर मंगवाये। वह केवल प्रार्थना-पत्र राशि तथा वंटन राशि ही भुगतान कर सका तथा उसने प्रथम तथा द्वितीय मांग राशियां नहीं दी। कम्पनी ने उसके अंश जब्त कर लिये। कम्पनी की पुस्तकों में हरण सम्बन्धी आवश्यक प्रविष्टि कीजिए।

Journal

Solution :

		Rs.	Rs.
	Equity Share Capital a/c Dr.	10,000	
	To Forfeited Shares a/c		5,000
	To Equity Share First Call a/c		2,000
	To Equity Share Second Call a/c		3,000
	(Being the forfeiture of 100 equity shares on which Rs. 100 per share called up for non-payment of calls as per resolution No......of the meeting of Board of Directors dated......)		

हरण किये गए अंशों का पुनर्निर्गमन (Reissue of Forfeited Shares) :—

पहले बताया जा चुका है कि हरण किए गये अंश कम्पनी की सम्पत्ति हैं और कम्पनी उन अंशों का पुनर्निर्गमन कर सकती है। पुनर्निर्गमन प्रीमियम, सममूल्य या वट्टे पर भी हो सकता है। धारा 79 में दिए हुये प्रतिवन्ध, हरण किए गए अंशों को वट्टे पर निर्गमन करने पर, लागू नहीं होते हैं। इस स्थिति में, अधिकतम वट्टे की राशि वह हो सकती है जो उन अंशों पर हरण की तिथि तक प्राप्त हो चुकी है। जैसे यदि कोई अंश 100 रु० का है, उस पर 70 रु० प्राप्त हो गये हैं, 30 रुपये प्राप्त नहीं हुए हैं और इस कारण से उस अंश का हरण किया गया है तो पुनर्निर्गमन पर उस अंश पर 70 रु० तक वट्टा दिया जा सकता है।

अंशों का हरण खाता (Forfeited Shares Account) : अंशों के हरण किए जाने पर, हरण किये हुए अंशों पर जितनी धन राशि प्राप्त हो गई है, उससे यह खाता क्रेडिट कर दिया जाता है। यदि अंशों का पुनर्निर्गमन वट्टे पर होता है तो वट्टे की राशि से Discount on Issue of Shares Account को डेविट न कर Forfeited Shares Account को डेविट किया जाता है। इसके पश्चात्

इस खाते में जो शेष रहे, उसको पूंजी संचय (Capital Reserve) में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। हस्तान्तरण की प्रविष्टि निम्नलिखित होगी।

Forfeited Shares a/c Dr.
To Capital Reserve a/c
(Balance of Forfeited Shares a/c transferred to Capital Reserve.)

यदि अंशों का पुर्ननिर्गमन उस वित्तीय वर्ष में नहीं हुआ है जिसमें उन अंशों का हरण किया गया है तो Forfeited Shares a/c को पूंजी संचय में हस्तान्तरित नहीं किया जाता अपितु उसके शेष को अन्तिम खाते बनाते समय चिट्ठे में प्रदत्त अंश पूंजी में जोड़कर दिखाया जाता है।

पुर्ननिर्गमन पर प्रविष्टियां (Entries on Reissue of Forfeited Shares)

(अ) सम मूल्य पर पुर्ननिर्गमन :

Bank a/c Dr. (प्राप्त की गई राशि से)
To Share Capital a/c
(Being the reissue of......forfeited shares at Rs......as per resolution No......of the meeting of the Board of Directors dated......)

(ब) प्रीमियम पर पुर्ननिर्गमन :

Bank a/c Dr. (कुल प्राप्त की गई राशि से)
To Share Capital a/c (अंशों पर पूंजी के लिए प्राप्त राशि से)
To Premium on Issue of Shares a/c (प्रीमियम के लिए प्राप्त राशि से)
(Being the re-issue of...........forfeited shares at Rs...........as per resolution No......of the meeting of the Board of Directors dated......)

(स) बट्टे पर पुर्ननिर्गमन :

Bank a/c Dr. (प्राप्त की गई राशि से)
Forfeited Shares a/c Dr. (बट्टे की राशि से)
To Share Capital a/c (अंशों पर मांगी गई राशि से)
(Being the re-issue of.........forfeited shares at Rs...........as per resolution No......of the meeting of the Board of Directors dated......)

Illustration 10

Ganesh Cotton Mills Limited registered in the year 1967 with an authorised capital of Rs. one crore divided into 1 lakh equity shares of Rs. 100 each issued all its shares to the public payable as to Rs. 20/- on application, Rs. 25 on allotment, Rs. 20/- on first call and the balance as and when required. The shares were subscribed to the extent of 1,25,000. All the applicants were allotted shares pro-rata. Allotment took place on 1st May, and the first call was made on 1st August

of that year. The allotment money was due on Ist June and the first call money was due on Ist September. All the shareholders except that of the following paid the above calls on the due dates:

Shareholder A, who was holding 60 shares, did not pay allotment and the first call moneys, Shareholder B, who was holding 120 shares, did not pay first call money.

After giving proper notices to both of these shareholders, their shares were forfeited on 15th November, 1967.

Subsequently, these shares were reissued on Dec. 1, 1967 at Rs. 55 per share with Rs. 65/- paid up on these shares.

(a) Pass necessary Journal entries (including those of cash transactions) in the books of the company and show how Share Capital and Forfeited Shares Accounts will appear in the Balance Sheet; and

(b) also point out whether there will be any difference in the presentation of the Share Capital Account and Forfeited Shares Account in the Balance Sheet if the forfeited shares would have not been re-issued in the year 1967.

गणेश कॉटन मिल्स लि. ने जिसका पंजीयन 1967 में 1 करोड़ रु० की पूंजी से हुआ तथा जिसकी पूंजी 100 रु० वाले 1 लाख ईक्विटी अंशों में विभाजित थी, अपनी समस्त अंश पूंजी का जनता में निर्गमन किया। अंश-राशि इस प्रकार देय थी—20 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ; 25 रु० वंटन पर; 20 रु० प्रथम मांग पर तथा शेष राशि आवश्यकता पड़ने पर। 1,25,000 अंशों को खरीदने के लिए आवेदन-पत्र आए। सभी प्रार्थियों को कम्पनी में यथानुपात वंटन किया गया वंटन 1 मई को किया गया और प्रथम मांग 1 अगस्त को की गई। वंटन की देय तिथि 1 जून थी और प्रथम मांग की 1 सितम्बर। निम्नलिखित अंशधारियों के सिवाय सभी अंशधारियों ने उनसे मांगी गई धन राशि को भुगतान की तिथि तक जमा करा दिया :—

अंशधारी 'अ' ने जिसके पास 60 अंश थे, वंटन तथा प्रथम मांग राशि नहीं दी।

अंशधारी 'ब' ने जिसके पास 120 अंश थे प्रथम मांग राशि का भुगतान नहीं किया।

उपरोक्त दोनों अंशधारियों को उचित नोटिस देकर उनके अंश 15 नवम्बर 1967 को हरण कर लिये गए।

तत्पश्चात् ये अंश 1 दिसम्बर 1967 को 65 रु० प्रदत्त पूंजी मानते हुए 55 रु० प्रति अंश के हिसाब से पुनर्निर्गमित किए गए।

(अ) रोकड़ी व्यवहारों सहित कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये तथा बताइए कि अंश पूंजी खाता तथा अंश हरण खाता कम्पनी के चिट्ठे में किस प्रकार दिखाया जायेगा;

(ब) यह भी बताइये कि यदि हरण किए गये अंश 1967 में पुनर्निर्गमित [illegible] चिट्ठे में अंश पूंजी और अंश हरण खाते के [illegible]।

Solution :

Journal

(a)

Date	Particulars		Rs.	Rs.
1967 ?	Bank a/c Dr. To Equity Share Application a/c (Being cash received for the purchase of 1,25,000 equity shares @ Rs. 20 per share.)		25,00,000	25,00,000
1st May	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being application money on 1,00,000 equity shares transferred to Equity Share Capital Account.)		20,00,000	20,00,000
1st May	Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being amount due on allotment of 1,00,000 equity shares @ Rs. 25/- per share.)		25,00,000	25,00,000
1st May	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share ~~Capital~~ a/c (Being excess amount received on application transferred to Equity Share Allotment a/c.)		5,00,000	5,00,000
1st June	Bank a/c Dr. To Equity Share Allotment a/c (Being amount received on allotment.)		19,98,800	19,98,800
1st Aug	Equity Share First Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Being amount due on share first call.)		20,00,000	20,00,000
1st Sept.	Bank a/c Dr. To Equity Share First Call a/c (Being amount received on first call.)		19,96,400	19,96,400

Journal Contd.

Date	Particulars	Dr. Rs.	Cr. Rs.
1967 15th Nov.	Equity Share Capital a/c Dr.	11,700	
	To Forfeited Shares a/c		6,900
	To Equity Share Allotment a/c		1,200
	To Equity Share First Call a/c		3,600
	(Being the forfeiture of 180 equity shares on which Rs. 65/- were called up, as per resolution of the meeting of the Board of Directors dated.........)		
1st Dec.	Bank a/c Dr.	9,900	
	Forfeited Shares a/c Dr.	1,800	
	To Equity Share Capital a/c		11,700
	(Forfeited shares re-issued at a discount with Rs 65/- as paid-up capital.)		
1st Dec.	Forfeited Shares a/c Dr.	5,100	
	To Capital Reserve a/c		5,100
	(Balance of Forfeited Shares a/c transferred to Capital Reserve a/c.)		

Balance Sheet

As on 31st December, 1967.

Liabilities	Amount	Assets	Amount
	Rs.		
Authorised Capital :			
1,00,000 Equity Shares of Rs. 100 each	1,00,00,000		
Issued and Subscribed Capital :			
1,00,000 Equity Shares of Rs. 100 each, Rs. 65 paid up	65,00,000		
Capital Reserve	5,100		

(b) यदि हरण किए गए अंश 1967 में पुनर्निर्गमित नहीं किए गये होते तो उपरोक्त प्रश्न का हल करते हुए जर्नल में 1 दिसम्बर 1967 को अंशों के पुनर्निर्गमन की जो प्रविष्टि की गई है, वह नहीं की जावेगी। फलस्वरूप कम्पनी का ईक्विटी अंश पूंजी खाता (Equity Share Capital a/c), जो अंश हरण के कारण 11,700 रु० से कम हो गया था, 31 दिसम्बर 1967 को भी 11,700 रु० से कम रहेगा। उसी वर्ष में अंशों के पुनर्निर्गमन न होने की अवस्था में अंश पूंजी (Share Capital a/c) तथा अंशहरण खाते (Forfeited Shares a/c) का निरूपण चिट्ठे में इस प्रकार से होगा :—

Balance Sheet as on 31st December, 1967

Liabilities	Amount	
	Rs.	
Authorised Capital :		
1,00,000 Equity Shares of Rs. 100 each	1,00,00,000	
Issued Capital :		
99,820 Equity Shares of Rs. 100 each	99,82,000	
Subscribed Capital :		
99,820 Equity Shares of Rs. 100 each, Rs 65/- paid up	64,88,300	
Add Forfeited Shares Account	6,900	
	64,95,200	

Illustration 11

Khandelwal Electric Works Ltd., was registered with an authorised capital of Rs. 60 lakhs divided into 30,000 equity shares of Rs. 100 each and 30,000 preference shares of Rs. 100 each. The company purchased a building and issued 8,000 preference shares at a premium of 5% as fully paid in consideration therefor. All the equity shares and rest of the preference shares were issued to the public at a premium of 5%. These shares were payable as to Rs. 30/- on application, Rs 40/- on allotment (including premium of Rs. 5/- per share), Rs. 20/- on first call and Rs. 15/- on second & final call. The amounts received in respect of these shares were as follows :

Preference Shares

On 20,000 shares the full amount called had been received.

On 1,000 shares, only Rs. 30/- per share had been received.

On 600 shares, only Rs. 70/- per share had been received.

On 400 shares, Rs. 90/- per share had been received.

Equity Shares

On 27,000 shares the full amount called had been received.

On 2,000 shares Rs. 70/- per share had been received.

On 1,000 shares, Rs. 90/- per share had been received.

All those shares on which less than Rs. 90/- per share (including premium) had been paid, were forfeited by the directors. Journalise the above transactions and show how the share capital will appear in the Balance-sheet.

खण्डेलवाल इलेक्ट्रिक वर्क्स लि. का पंजीयन 60 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से हुआ जो 100 रु० वाले 30,000 ईक्विटी अंशों और 100 रु० वाले 30,000 अधिमान अंशों में विभाजित थी। कम्पनी ने एक भवन खरीदा और उसके प्रतिफल के वदले में 8,000 अधिमान अंश 5% प्रीमियम पर पूर्ण दत्त निर्गमित किये। सभी ईक्विटी अंश तथा शेप अधिमान अंश जनता में 5% प्रीमियम पर निर्गमित किए गये। दोनों ही प्रकार के अंशों की विभिन्न किस्तों पर, धन निम्नलिखित प्रकार से देय था :—

प्रार्थना-पत्र के साथ 30 रु०, वंटन पर 40 रु० (प्रीमियम सहित), प्रथम मांग पर 20 रु० और अन्तिम मांग पर 15 रु०। इन अंशों पर देय राशि अग्रलिखित प्रकार से वसूल हुई :—

अधिमान अंश	ईक्विटी अंश
20,000 अंशों पर पूर्ण राशि प्राप्त हो चुकी है;	27,000 अंशों पर पूर्ण राशि प्राप्त हो चुकी है;
1,000 अंशों पर 30 रु० प्रति अंश प्राप्त हुए हैं;	2,000 अंशों पर 70 रु० प्रति अंश के हिसाब से प्राप्त हुआ;
600 अंशों पर 70 रु० प्रति अंश प्राप्त हुये हैं;	1,000 अंशों पर 90 रु० प्रति अंश प्राप्त हुआ।
400 अंशों पर 90 रु० प्रति अंश प्राप्त हुए हैं।	

ऐसे सब अंश जिन पर प्रति अंश 90 रु० से कम प्राप्त हुआ है, जब्त कर लिए गये। उपरोक्त सौदों की आवश्यक प्रविष्टियां दीजिए और यह बतलाइये कि पूंजी खाता चिट्ठे में किस प्रकार बतलाया जावेगा।

Journal of Khandelwal Electric Works Ltd.

Solution :

			Rs.	Rs.
	Buildings a/c Dr. To Preference Share Capital a/c To Share Premium a/c (8,000 shares of Rs. 100 each issued to the vendor, as fully paid up, at a premium of 5% in consideration for the purchase of a building.)		8,40,000	8,00,000 40,000
	Bank a/c Dr. To Preference Share Application a/c To Equity Share Application a/c (Cash received on application for the purchase of 22,000 preference shares and 30,000 equity shares @ Rs. 30/-per share.)		15,60,000	6,60,000 9,00,000
	Preference Share Application a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Preference Share Application a/c transferred to Preference Share Capital a/c.)		6,60,000	6,60,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount received on Equity Share Application a/c transferred to Equity Share Capital a/c.)		9,00,000	9,00,000
	Preference Share Allotment a/c Dr. To Preference Share Capital a/c To Share Premium a/c (Amount due on allotment of 22,000 preference shares @ Rs. 40 per share.)		8,80,000	7,70,000 1,10,000

Journal Contd.

		Rs.	Rs.
Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Amount due on equity shares @ Rs. 40 per share.)		12,00,000	10,50,000 1,50,000
Bank a/c Dr. To Preference Share Allotment a/c To Equity Share Allotment a/c (Cash received on preference and equity share allotment.)		20,40,000	8,40,000 12,00,000
Preference Share First Call a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Amount due on first call @ Rs. 20 per share.)		4,40,000	4,40,000
Equity Share First Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount due on first call @ Rs 20 per share.)		6,00,000	6,00,000
Bank a/c Dr. To Preference Share First Call a/c To Equity Share First Call a/c (Cash received on preference share first call and equity share first call.)		9,68,000	4,08,000 5,60,000
Preference Share Second Call a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Amount due on preference share second call @ Rs. 15 per share.)		3,30,000	3,30,000
Equity Share Second Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount due on second call on 30,000 equity shares @ Rs. 15 per share.)		4,50,000	4,50,000

Journal Contd.

Particulars		L.F.	Rs.	Rs.
Bank a/c	Dr.		7,05,000	
To Preference Share Second Call a/c				3,00,000
To Equity Share Second Call a/c				4,05,000
(Cash received on preference share second call and equity share second call.)				
Preference Share Capital a/c	Dr.		1,60,000	
Share Premium a/c	Dr.		5,000	
To Forfeited Shares a/c				69,000
To Preference Share Allotment a/c				40,000
To Preference Share First Call a/c				32,000
To Preference Share Second Call a/c				24,000
(Being the forfeiture of 1,600 preference shares of Rs. 100 each.)				
Equity Share Capital a/c	Dr.		2,00,000	
To Forfeited Shares a/c				1,30,000
To Equity Share First Call a/c				40,000
To Equity Share Second Call a/c				30,000
(Being the forfeiture of 2,000 equity shares of Rs. 100 each.)				

Balance-Sheet of Khandelwal Electric Works Limited

(Liabilities side)

Liabilities			Amount	Amount
			Rs.	Rs.
Authorised Capital :				
30,000 Preference Shares of Rs. 100 each			30,00,000	
30,000 Equity Shares of Rs. 100 each			30,00,000	60,00,000
Issued Capital :				
28,400 Preference Shares of Rs. 100 each			28,40,000	
28,000 Equity Shares of Rs. 100 each			28,00,000	56,40,000
Subscribed Capital :				
8,000 Preference Shares of Rs. 100 each issued for consideration other than cash		Rs. 8,00,000		
20,400 Preference Shares of Rs. 100 each, fully called up	Rs. 20,40,000			
Less calls in arrears	6,000	20,34,000	28,34,000	
28,000 Equity Shares of Rs. 100 each, fully called up	Rs. 28,00,000			
Less calls in arrears	15,000		27,85,000	56,19,000
Add Forfeited Shares				1,99,000
				58,18,000
Share Premium				2,95,000
				61,13,000

Illustration 12 :

A company offered 1,000 equity shares of Rs. 100 each to the public. The amount was payable as follows :

(a) Rs. 50 on application (including Rs. 10 premium);

(b) Rs. 30 on allotment; and

(c) Rs. 30 on first call.

Applications were received for 3,000 shares. Applicants for 1,000 shares were not made any allotment and their application money refunded. Rest of the applicants were made pro-rata allotment.

X to whom 100 shares were allotted did not pay any money except that with the application. The issue was completed and rest of the applicants paid their amount when due.

Shares of X were forfeited and reissued to Y at Rs. 50 each as fully paid up.

Journalise :

एक कम्पनी ने 100 रु० वाले 1,000 ईक्विटी अंश जनता को प्रस्तुत किये। राशि इस प्रकार देय थी :

(अ) प्रार्थना पर 50 रु० (मय 10 रु० प्रीमियम);

(ब) वंटन पर 30 रु०; एवं

(स) प्रथम मांग पर 30 रु०।

3,000 अंशों के लिए प्रार्थनापत्र प्राप्त हुये। 1,000 अंशों के प्रार्थियों को कोई बंटन नहीं किया गया और उनकी आवेदन-राशि लौटा दी गई। शेष प्रार्थियों को यथानुपात बंटन किया गया।

एक्स ने, जिसे 100 अंशों का वंटन किया गया था, आवेदन के अतिरिक्त कोई राशि नहीं चुकाई। निर्गमन पूर्ण हुआ और शेष प्रार्थियों ने अपनी-अपनी राशि देय होने पर चुका दी।

एक्स के अंश जब्त कर लिये गये और 50 रु० प्रति अंश के हिसाब से वाई को पूर्ण दत्त निर्गमित कर दिये गये।

जर्नल में प्रविष्टियाँ कीजिए।

Solution :

Journal

			Rs.	Rs.
	Bank a/c Dr. To Equity Share Application a/c (Application deposit for 3,000 equity shares @ Rs. 50 per share including Rs. 10 per share premium received.)		1,50,000	1,50,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Bank a/c (Application deposit of non-allottees refunded.)		50,000	50,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Application deposit received on 1,000 equity shares transferred.)		50,000	40,000 10,000
	Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount due on allotment.)		30,000	30,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Allotment a/c (Excess money received as application deposit partly adjusted.)		30,000	30,000
	Equity Share First and Final Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount due on first and final call.)		30,000	30,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share First and Final Call a/c (Balance of excess money received as application deposit adjusted.)		20,000	20,000
	Bank a/c Dr. To Equity Share First and Final Call a/c (First and final call money received with the exception of 100 shares.)		9,000	9,000

Journal Contd.

			Rs.	Rs.
Equity Share Capital a/c Dr. To Forfeited Shares a/c To Equity Share First and Final Call a/c (100 Equity shares forfeited.)			10,000	9,000 1,000
Bank a/c Dr. Forfeited Shares a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (100 Equity shares reissued.)			5,000 5,000	10,000
Forfeited Shares a/c Dr. To Capital Reserve a/c (Balance of Forfeited Shares Account transferred.)			4,000	4,000

Illustration 13 :

Sun Private Limited with both equity and preference share capitals was operating for many years. It issues 1,000 6% preference shares of Rs. 100 each, at a discount of 5% and 4,000 equity shares of Rs. 10 each at the rate of Rs. 11 each. 25% and 50% of face values of shares in both the cases are payable on application and allotment respectively (premium, if any, to be also paid with allotment money), and the balance in one call.

Applications were received for 1,200 preference shares and 5,000 equity shares. The shares were allotted pro-rata. All amounts due were paid in time except the following :

(a) X to whom 100 preference shares were allotted failed to pay money on allotment and first call.

(b) Y to whom 400 equity shares were allotted failed to pay money on allotment and first call.

Shares of X and Y were forfeited and reissued to Z as follows :

(i) Preference shares at Rs. 90 each as fully paid up.

(ii) Equity shares at Rs. 9 each as fully paid up.

Give necessary journal entries and Cash Account for recording the above transactions.

सन प्राईवेट लिमिटेड ईक्विटी और अधिमान दोनों प्रकार की अंश पूंजी से बहुत दिन से कार्य कर रही थी। अब इसने 100 रु० वाले 1,000, 6% अधिमान अंश 5% कटौती पर और 10 रु० वाले 4,000 ईक्विटी अंश 11 रु० प्रति अंश पर निर्गमित किए। दोनों प्रकार के अंशों के प्रकाशित मूल्य का 25% और 50% क्रमशः आवेदन पर तथा बंटन पर देय हैं (यदि कोई प्रीमियम है तो वह भी वंटन पर ही देय है) और शेष राशि प्रथम मांग पर देय है।

कम्पनी को 1,200 अधिमान और 5,000 ईक्विटी अंशों के लिये आवेदन पत्र प्राप्त हुए। सब अंश यथानुपात वंटित कर दिये गये।

निम्नलिखित को छोड़कर सब राशि देय तिथियों पर प्राप्त हो गईं :

(अ) एक्स, जिसे 100 अधिमान अंश बंटित किये गये थे, बंटन व प्रथम मांग पर राशि चुकाने में असफल रहा।

(ब) वाई, जिसे 400 ईक्विटी अंश वंटित किये गये थे, वंटन व प्रथम मांग पर राशि चुकाने में असफल रहा।

एक्स व वाई के अंश जब्त कर लिये गये और जेड को इस प्रकार पुनर्निर्गमित किये गये :

(i) अधिमान अंश 90 रु० प्रति अंश की दर से पूर्णदत्त।

(ii) ईक्विटी अंश 9 रु० प्रति अंश की दर से पूर्णदत्त।

उपरोक्त व्यवहारों का लेखा करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ और रोकड़ खाता तैयार कीजिए।

Solution :

Journal

			Rs.	Rs.
	Cash a/c Dr. To 6% Preference Share Application a/c To Equity Share Application a/c (Application deposit for 1,200 preference shares and 5,000 equity shares received.)		42,500	 30,000 12,500
	6% Preference Share Application a/c Dr. To 6% Preference Share Capital a/c (Application deposit in respect of 1,000 preference shares transferred.)		25,000	 25,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Application deposit in respect of 4,000 equity shares transferred.)		10,000	 10,000

Journal Contd.

		Rs.	Rs.
6% Preference Share Allotment a/c Dr. Discount on Issue of Shares a/c Dr. To 6% Preference Share Capital a/c (Amount due on allotment.)		50,000 5,000	55,000
Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Amount due on allotment.)		24,000	20,000 4,000
6% Preference Share Application a/c Dr. To 6% Preference Share Allotment a/c (Excess money received as application deposit adjusted.)		5,000	5,000
Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Allotment a/c (Excess money received as application deposit adjusted.)		2,500	2,500
Cash a/c Dr. To 6% Preference Share Allotment a/c To Equity Share Allotment a/c (Allotment money received with the exception of 100 preference shares and 400 equity shares.)		59,850	40,500 19,350
6% Preference Share First and Final Call a/c Dr. To 6% Preference Share Capital a/c (Amount due on first and final call.)		20,000	20,000
Equity Share First and Final Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount due on first and final call.)		10,000	10,000
Cash a/c Dr. To 6% Preference Share First and Final Call a/c To Equity Share First and Final Call a/c (First and final call money received with the exception of 100 preference shares and 400 equity shares.)		27,000	18,000 9,000

Journal Contd.

Particulars			Rs.	Rs.
6% Preference Share Capital a/c	Dr.		10,000	
To Forfeited Shares a/c				3,000
To 6% Preference Share Allotment a/c				4,500
To 6% Preference Share First and Final Call a/c				2,000
To Discount on Issue of Shares a/c				500
(100 Preference shares forfeited and discount written back.)				
Equity Share Capital a/c	Dr.		4,000	
Share Premium a/c	Dr.		400	
To Forfeited Shares a/c				1,250
To Equity Share Allotment a/c				2,150
To Equity Share First and Final Call a/c				1,000
(400 Equity shares forfeited.)				
Cash a/c	Dr.		9,000	
Discount on Issue of Shares a/c	Dr.		500	
Forfeited Shares a/c	Dr.		500	
To 6% Preference Share Capital a/c				10,000
(100 Preference shares re-issued.)				
Cash a/c	Dr.		3,600	
Forfeited Shares a/c	Dr.		800	
To Equity Share Capital a/c				4,000
To Share Premium a/c				400
(400 Equity shares re-issued.)				
Forfeited Shares a/c	Dr.		2,950	
To Capital Reserve a/c				2,950
(Balance transferred.)				

Cash Account

	Rs.			Rs.
To 6% Preference Share Application a/c	30,000		By Balance c/d	1,41,950
To Equity Share Application a/c	12,500			
To 6% Preference Share Allotment a/c	40,500			
To Equity Share Allotment a/c	19,350			
To 6% Preference Share First and Final Call a/c	18,000			
To Equity Share First and Final Call a/c	9,000			
To 6% Preference Share Capital a/c	9,000			
To Sundries as per Journal	3,600			
	1,41,950			1,41,950

टिप्पणियाँ :

1. प्रश्न के अनुसार यह मान लिया गया है कि कम्पनी द्वारा रोकड़ वही नहीं रखी जाती है।

2. अधिमान अंशों पर वट्टे का समायोजन बंटन के समय किया गया है।

3. वाई द्वारा आवेदन के समय दिये गये अतिरिक्त 250 रु० का बंटन के समय पूर्ण रूप से अंश पूंजी के प्रति समायोजन किया गया है और प्रीमियम के प्रति नहीं।

4. यह मान लिया गया है कि कम्पनी को अधिमान अंशों को वट्टे पर निर्गमन करने का अधिकार था और एक्स के जब्त अंशों का पुनर्निर्गमन न्यायालय की अनुमति से दो माह के भीतर कर दिया गया था।

5. ईक्विटी अंशों का निर्गमन मूल्य 11 रु० प्रति अंश है। अतः कम्पनी अधिनियम की भावना का आदर करते हुये 400 ईक्विटी अंशों के पुनर्निर्गमन पर 400 रु० अंश प्रीमियम खाते में जमा कर दिये गये हैं।

अंश पूंजी का आगे और निर्गमन (Further issue of Share Capital) :

यदि एक कम्पनी अपनी स्थापना के दो वर्ष पश्चात् अथवा स्थापना के बाद किए गये प्रथम वंटन के एक वर्ष पश्चात् (जो भी जल्दी हो) पूंजी बढ़ाने के उद्देश्य से नये अंशों का निर्गमन करती है तो ये नए अंश सर्वप्रथम पुराने ईक्विटी अंशधारियों को प्रस्तावित किये जाते हैं (धारा 81)। उनके मना करने पर उक्त अंश किसी अन्य व्यक्ति को निर्गमित किए जा सकते हैं। इन अंशधारियों को ये नये अंश उनके द्वारा दी हुई पूंजी के अनुपात में निर्गमित किए जाते हैं। इस निर्गमन का नोटिस 15 दिन से कम नहीं होना चाहिये।

उपरोक्त अंश पुराने अंशधारियों को कम्पनी अधिनियम द्वारा प्रदत्त अधिकार के अन्तर्गत मिलते हैं, अतः ऐसे अंशों को 'अधिकार अंश' (Rights Shares) के नाम से भी पुकारा जाता है तथा यह अधिकार 'हकशफा' (Right of Pre-emption) कहलाता है।

उक्त नियम एक निजी कम्पनी पर लागू नहीं होते हैं। अपनी साधारण सभा में विशेष प्रस्ताव पास करके एक सार्वजनिक कम्पनी भी उक्त नियम से छुटकारा पा सकती है। यदि सार्वजनिक कम्पनी ने उक्त नियम से छुटकारा पाने हेतु साधारण प्रस्ताव ही पास किया है तो केन्द्रीय सरकार की अनुमति आवश्यक है।

अंशधारियों को मिले हुए अधिकार-अंश प्रायः टुकड़ों (Fractions) में विभाजित होते हैं। उदाहरण के लिए, यदि एक कम्पनी पुराने तीन अंशों के बदले में एक नया अंश निर्गमित करती है और एक अंशधारी के पास उक्त कम्पनी के 20 पुराने अंश हैं तो वह $6\frac{2}{3}$ नये अंशों का अधिकारी होगा। अंशों का वंटन अंशधारियों को टुकड़ों में न किया जाकर पूर्ण अंशों में किया जाता है। अतः अंशों के टुकड़ों को पुराने अंशधारियों में कई विधियों से विभाजित किया जा सकता है। सबसे अधिक व्यावहारिक विधि यह है कि ऐसे पुराने अंशधारियों द्वारा किन्हीं दो संचालकों को अपना ट्रस्टी नियुक्त कर दिया जाय तथा नये अंशों के टुकड़े इन संचालकों के नाम में वंटित कर दिए जांय। ये संचालक इन अंशों को या तो बाजार में बेचकर शुद्ध प्राप्ति (Net Proceeds) को सम्बन्धित अंशधारियों में विभाजित कर देते हैं अथवा अंशधारियों को, इन टुकड़ों को निश्चित अवधि में खरीद या बेचकर पूर्ण अंश में परिवर्तित करवाने की सुविधा प्रदान करते हैं।

अधिकार अंशों के निर्गमन पर कम्पनी द्वारा अपनी पुस्तकों में प्रविष्टियां उसी प्रकार की जाती हैं, जिस प्रकार साधारण निर्गमन की स्थिति में।

Illustration 14.

Navin Ltd. was registered with an authorised capital of Rs. 60 lakhs divided into 30,000 equity shares of Rs. 100 each and 30,000 preference shares of Rs 100 each of which 20,000 equity shares and 20,000 preference shares had already been issued. After three years from the date of its incorporation, the company decides to increase its share capital by issuing the remaining equity and preference shares at a premium of 5%. To satisfy the requirements of Sec. 81 of the Companies Act, 1956 the company first offers these shares to those shareholders who enjoy the preemption right to purchase these shares. All these shares have been taken up by these persons. The shares are payable as to Rs. 50 on application, Rs. 55 on allotment (including premium of Rs 5/- per share).

The company spent Rs. 2,000 in connection with this issue and the directors decided to write off this expenditure against premium on issue of shares.

(a) In what ratio the new share capital will be offered to the shareholders of the company who are entitled to purchase these shares under Sec. 81.

(b) Pass the necessary journal entries in the books of the company.

(c) Show the share capital and premium on issue of shares in the Balance Sheet.

नवीन लिमिटेड का 60 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से पंजीयन हुआ था। अधिकृत पूंजी 100 रु० वाले 30,000 ईक्विटी अंशों तथा 30,000 अधिमान अंशों में विभाजित थी जिसमें से 20,000 ईक्विटी अंश और 20,000 अधिमान अंश जनता में पहले ही निर्गमित किए जा चुके थे। अपने संस्थापन के तीन वर्ष पश्चात् कम्पनी ने अपनी पूंजी बढ़ाने हेतु शेष ईक्विटी और अधिमान अंशों को 5% प्रीमियम पर निर्गमित करने का निश्चय किया। भारतीय कम्पनी अधिनियम की धारा 81 की पूर्ति करने के लिए ये अंश सर्वप्रथम उन अंशधारियों को प्रस्तावित किये गए जिनको इन्हें खरीदने का पूर्वाधिकार है। इन अंशधारियों ने समस्त अंशों को खरीदने के लिए अपनी स्वीकृति दे दी। अंशों पर 50 रु० प्रार्थना पत्र के साथ तथा 55 रु० (5 रु० प्रीमियम सहित) बंटन पर देय है।

कम्पनी ने इस निर्गमन पर 2,000 रु० खर्च किए। संचालकों ने इस खर्चे को अंश प्रीमियम की राशि से अपलिखित करने का निश्चय किया।

(अ) बतलाइये कि उन अंशधारियों को जिनको ये नए अंश धारा 81 के अन्तर्गत खरीदने का अधिकार है, किस अनुपात में बंटित किए जायेंगे ?

(ब) कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

(स) चिट्ठे में अंश पूंजी तथा प्रीमियम की मदों को दिखाइए।

Solution :

(a) धारा 81 के अन्तर्गत नए 10,000 ईक्विटी अंश तथा 10,000 अधिमान अंश सर्वप्रथम खरीदने का अधिकार केवल 20,000 ईक्विटी अंशों के धारकों को ही है। उक्त अधिकार पहले से निर्गमित 20,000 अधिमान अंशों के धारकों को नहीं है। अतः एक ऐसे ईक्विटी अंशधारी को, जिसके पास 2 अंश हैं, नव-निर्गमित एक ईक्विटी अंश तथा एक पूर्वाधिकार अंश प्राप्त करने का अधिकार है।

(b) **Journal of Navin Limited**

			Rs.	Rs.
	Bank a/c Dr.		10,00,000	
	To Preference Share Application a/c			5,00,000
	To Equity Share Application a/c			5,00,000
	(Cash received on applications for the purchase of 10,000 preference shares and 10,000 equity shares.)			

Journal Contd.

Preference Share Application a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Amount received on Preference Share Application a/c transferred to Preference Share Capital a/c.)		5,00,0[illegible]	
Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount received on Equity Share Application a/c transferred to the Equity Share Capital a/c.)		5,00,000	5,00,000
Preference Share Allotment a/c Dr. To Preference Share Capital a/c To Share Premium a/c (Amount due on allotment of 10,000 preference shares at Rs. 55 per share.)		5,50,000	5,00,000 50,000
Equity Share Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Amount due on allotment of 10,000 equity shares at Rs. 55 per share.)		5,50,000	5,00,000 50,000
Bank a/c Dr. To Preference Share Allotment a/c To Equity Share Allotment a/c (Cash received on allotment.)		11,00,000	5,50,000 5,50,000
Issue Expenses a/c Dr. To Bank a/c (Expenses incurred Rs. 2,000 in connection with the issue of preference shares and equity shares.)		2,000	2,000
Share Premium a/c Dr. To Issue Expenses a/c (Being expenses of capital issues written off.)		2,000	2,000

(c) **Balance-Sheet of Navin Ltd.**

(Liabilities side)

Liabilities		Amount
Authorised Capital :		Rs.
30,000 Equity Shares of Rs. 100 each		30,00,000
30,000 Preference Shares of Rs. 100 each		30,00,000
		60,00,000
Issued and Subscribed Capital :		
30,000 Equity Shares of Rs. 100 each	30,00,000	
30,000 Preference Shares of Rs. 100 each	30,00,000	60,00,000
Premium on Issue of Shares		98,000

अधिमान अंशों का शोधन (Redemption of Redeemable Preference Shares):

कभी-कभी कम्पनी ऐसे अधिमान अंशों का निर्गमन करती है जिनके अंशधारियों को, कम्पनी के जीवन-काल में ही उनकी रकम लौटाकर, अंश वापस लेने का वचन दिया जाता है। ऐसे अंशों को शोध्य-अधिमान अंश कहते हैं। कम्पनी विधान की धारा 80 के अन्तर्गत इन अंशों के निर्गमन व शोधन के जो नियम दिए गए हैं, वे निम्नलिखित हैं—

(i) शोध्य अधिमान अंशों का निर्गमन अंशों द्वारा सीमित कम्पनी ही कर सकती है।

(ii) यह निर्गमन कम्पनी के अन्तर्नियमों द्वारा अधिकृत होना चाहिए।

(iii) ऐसे अंशों का शोधन या तो उन लाभों में से किया जा सकता है जो लाभांश के लिए उपलब्ध हैं अथवा उस रकम से किया जा सकता है जो शोधन के लिए ही नये अंशों का निर्गमन करके प्राप्त हो गई है।

(iv) अंशों को पूर्ण दत्त होना चाहिये। आंशिक दत्त (Partly paid up) अंशों का शोधन नहीं हो सकता।

(v) यदि इन अंशों का शोधन प्रीमियम पर होना है तो अंशों के शोधन से पूर्व इस प्रीमियम के लिए, कम्पनी के लाभों में से या कम्पनी के अंश प्रीमियम खाते में से, आयोजन करना अनिवार्य है।

(vi) यदि अंशों का शोधन नये अंशों के निर्गमन द्वारा प्राप्त रकम से नहीं किया जाता है तो कम्पनी के लाभांश के लिए उपलब्ध लाभों में से शोध्य अधिमान अंशों के अंकित मूल्य के बराबर रकम पूंजी शोधन कोष खाते (Capital Redemption Reserve Account) में हस्तान्तरित की जानी चाहिए। पूंजी शोधन कोष खाते के शेष का उपयोग केवल पूर्ण दत्त बोनस अंश बांटने के काम में किया जा सकता है। पूंजी में कटौती सम्बन्धी योजना (Capital Reduction Scheme) के समय भी इसका उपयोग किया जाता है। अन्य कामों में इसका उपयोग नहीं किया जा सकता।

शोध्य अधिमान अंशों के निर्गमन की प्रविष्टियां—

इन अंशों के निर्गमन पर प्रविष्टियां उसी प्रकार की जाती हैं जिस प्रकार अन्य अंशों के निर्गमन पर की जाती हैं।

शोध्य पूर्वाधिकार अंशों के शोधन पर प्रविष्टियां—

सम मूल्य पर शोधन :

Redeemable Preference Share Capital a/c Dr.
To Bank a/c
(Being the Redemption of······Redeemable Preference Shares.)

प्रीमियम पर शोधन :

अंशों के शोधन पर जो प्रीमियम दी जाती है, वह हानि है। अंशों को प्रीमियम पर शोधन की अवस्था में उसका आयोजन लाभों में से या अंश प्रीमियम मे से करना अनिवार्य है। आयोजन की प्रविष्टि इस प्रकार होगी:—

P. & L. a/c Dr.
or
General Reserve a/c Dr.
or
Share Premium a/c Dr.
To Premium on Redemption of Preference Shares a/c
(Provision made for premium on redemption of preference shares.)

अंशों को प्रीमियम पर शोधन की प्रविष्टि इस प्रकार होगी :—

Redeemable Preference Share Capital a/c Dr.
Premium on Redemption of Pref. Shares a/c Dr.
To Bank a/c
(Being the Redemption of...........preference shares at premium.)

यदि अधिमान अंशों का शोधन लाभों में से किया गया है तो लाभों में से शोधित अंशों के अंकित मूल्य के बराबर राशि पूंजी शोधन कोष खाते (Capital Redemption Reserve Account) में हस्तान्तरित की जावेगी। हस्तान्तरण की प्रविष्टि निम्नलिखित होगी:—

P. & L. a/c Dr.
Or
General Reserve a/c Dr.
To Capital Redemption Reserve a/c
(Transfer of profits from P. & L. a/c to Capital Redemption Reserve a/c.)

Illustration 15.

Kamal Ltd. have part of their share capital in 3,000 5% redeemable preference shares of Rs. 100 each. According to the Articles of Association of the Company, the shares are to be redeemed at a premium of 5%. The general reserve of the company shows a credit balance of Rs. 2,00,000. The directors decide to utilise 50% of the reserve in redeeming the shares and the balance is to be met from the proceeds of fresh issue of sufficient number of equity shares of Rs. 10 each. The premium is to be met from the year's Profit and Loss Account.

You are required to give the journal and the ledger entries on completion of the above transactions.

कमल लिमिटेड की निर्गमित अंश पूंजी में 100 रु० वाले 3,000 5% शोध्य अधिमान अंश सम्मिलित हैं। अन्तर्नियमों के अनुसार अंशों का शोधन 5% प्रीमियम पर होना है। कम्पनी के सामान्य संचय में 2,00,000 रु० जमा हैं। संचालक इन अंशों के शोधन में आधे संचय का उपयोग करना

चाहते हैं तथा शेष की पूर्ति पर्याप्त मात्रा में 10 रु० वाले नये ईक्विटी अंशों के निर्गमन द्वारा करना चाहते हैं। प्रीमियम की पूर्ति वर्ष के लाभ-हानि खाते से करनी है।

उपरोक्त सौदों के पूर्ण हो जाने पर आपको जर्नल तथा लेजर में आवश्यक प्रविष्टियां देनी हैं।

Journal

Solution :

			Rs.	Rs.
Bank a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Cash proceeds from the issue of 20,000 equity shares of Rs. 100 each.)			2,00,000	2,00,000
P. & L. a/c Dr. To Premium on Redemption of Preference Shares a/c (Premium on redemption of preference shares provided for.)			15,000	15,000
Redeemable Preference Share Capital a/c Dr. Premium on Redemption of Preference Shares a/c Dr. To Bank a/c (Being the redemption of redeemable preference shares at a premium of 5%.)			3,00,000 15,000	3,15,000
General Reserve a/c Dr. To Capital Redemption Reserve a/c (Being the amount transferred to Capital Redemption Reserve Account.)			1,00,000	1,00,000

Redeemable Preference Share Capital Account

			Rs.				Rs.
	To Bank a/c		3,00,000		By balance b/d		3,00,000

Premium on Redemption of Preference Shares Account

			Rs.				Rs.
	To Bank a/c		15,000		By P. & L. a/c		15,000

General Reserve Account

		Rs.			Rs.
To Capital Redemption Reserve a/c		1,00,000	By Balance b/d		2,00,000
To Balance c/d		1,00,000			
		2,00,000			2,00,000

Equity Share Capital Account

		Rs.			Rs.
To Balance c/d		2,00,000	By Bank a/c		2,00,000

Capital Redemption Reserve Account

		Rs.			Rs.
To Balance c/d		1,00,000	By General Reserve a/c		1,00,000

Illustration 16

5,000 7% Redeemable Preference Shares of Rs. 100 each fully paid in Y Ltd. are outstanding on Ist January, 1967. On this date these shares are to be redeemed at a premium of 2%. The company has sufficient profits but in order to increase liquid funds and redeem the shares, it makes the following issues :—

(a) 2,000 equity shares of Rs. 100 each at a premium of 5%
(b) 1,000 preference shares of Rs. 100 each at par
(c) 1,000 6% debentures of Rs. 100 each at par

All the above issues were fully subscribed and the amounts were received and the redeemable preference shares were duly redeemed. Give journal entries.

1 जनवरी 1967 को वाई लि० में 100 रु० वाले 5,000 7 प्रतिशत पूर्ण प्रदत्त शोध्य अधिमान अंश बकाया हैं। इसी तारीख को शोध्य अधिमान अंशों को 2 प्रतिशत प्रीमियम पर शोधन करना है। कम्पनी के पास लाभ पर्याप्त मात्रा में हैं परन्तु तरल कोषों को बढ़ाने तथा इन अंशों का शोधन करने हेतु निम्नलिखित निर्गमन किये जाते हैं :—

(अ) 100 रु० वाले 2,000 ईक्विटी अंश 5% प्रीमियम पर
(ब) 100 रु० वाले 1,000 अधिमान अंश सम मूल्य पर
(स) 100 रु० वाले 1,000 6% ऋण-पत्र सम मूल्य पर

उपरोक्त सभी निर्गमनों के सम्बन्ध में प्रार्थना-पत्र आ गये और पूर्ण धनराशि वसूल हो गई तथा शोध्य अधिमान अंशों का शोधन कर दिया गया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये।

Solution :

Journal of Y Ltd.

1967			Rs.	Rs.
Jan. 1	Bank a/c	Dr.	4,10,000	
	To Equity Share Application a/c			2,10,000
	To Preference Share Application a/c			1,00,000
	To Debenture Application a/c			1,00,000
	(Money received on application.)			
Jan. 1	Equity Share Application a/c	Dr.	2,10,000	
	To Equity Share Capital a/c			2,00,000
	To Share Premium a/c			10,000
	(Amount received on Equity Share Application a/c transferred to Equity Share Capital a/c and Share Premium a/c on allotment.)			
Jan. 1	Preference Share Application a/c	Dr.	1,00,000	
	To Preference Share Capital a/c			1,00,000
	(Amount received on Preference Share Application a/c transferred to Preference Share Capital a/c on allotment.)			
Jan. 1	Debenture Application a/c	Dr.	1,00,000	
	To Debentures a/c			1,00,000
	(Amount received on Debenture Application a/c transferred to Debentures a/c on allotment.)			
	Share Premium a/c	Dr.	10,000	
	To Premium on Redemption of Preference Shares a/c			10,000
	(Premium on redemption of preference shares provided out of Share Premium a/c.)			
	Profit & Loss a/c	Dr.	1,90,000	
	To Capital Redemption Reserve a/c			1,90,000
	(Profit transferred to Capital Redemption Reserve a/c.)			
	Redeemable Preference Share Capital a/c	Dr.	5,00,000	
	Premium on Redemption of Preference Shares a/c	Dr.	10,000	
	To Bank a/c			5,10,000
	(Redemption of 5,000 preference shares of Rs. 100 each at a premium of 2%.)			

टिप्पणियां:—(1) इक्विटी अंशों पर 2,00,000 रु०+10,000 रु०=2,10,000 रु० प्राप्त हुए हैं। अधिमान अंशों पर 1,00,000 रु० प्राप्त हुए हैं। दोनों प्रकार के अंशों पर कुल मिलाकर 3,10,000 रु० प्राप्त हुए हैं। अधिमान अंशों का शोधन 5,00,000 रु० का करना है, अतः शेष धन राशि (5,00,000 रु०—3,10,000 रु०)=1,90,000 रु० का शोधन लाभों में से किया गया है। तथा यह रकम Capital Redemption Reserve a/c में हस्तान्तरित की गई है।

(2) कुछ लेखापालों का दृष्टिकोण है कि नये अंशों का निर्गमन यदि प्रीमियम पर किया गया है तो अधिमान अंशों के शोधन की व्यवस्था करते समय इस प्रीमियम का ध्यान नहीं रखा जाना चाहिए। इस दृष्टिकोण के अनुसार उपरोक्त उदाहरण में लाभ-हानि खाते से Capital Redenption Reserve a/c में 2,00,000 रु० हस्तान्तरित किये जावेंगे। यह राशि इस प्रकार ज्ञात की गई है :

शोधनीय अधिमान अंश 5,00,000 रु०—नये निर्गमित ईक्विटी अंश 2,00,000 रु०—नये निर्गमित अधिमान अंश 1,00,000 रु०=2,00,000 रु०।

(3) ऋण पत्रों के निर्गमन द्वारा प्राप्त राशि से शोध्य अधिमान अंशों का शोधन नहीं किया जा सकता है।

Illustration 17

Prakash Ltd. has an authorised share capital of Rs. 10,00,000. Its summarised Balance-Sheet as on 31st December, 1960 is as under—

	Rs.		Rs.	Rs.
Share Capital :		Fixed Assets :		
Issued and fully paid :		Plant and Machinery	4,00,000	
15,000 5% Redeemable Preference Shares of Rs. 10 each fully paid up	1,50,000	Furniture	42,000	
30,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up	3,00,000	Vehicles	48,000	
				4,90,000
	4,50,000	Investments		1,00,000
Share Premium	1,35,000	Current Assets :		
General Reserve	2,60,000	Stock	2,10,000	
Profit and Loss a/c	55,000	Debtors	1,10,000	
Sundry Creditors	1,00,000	Balance at Bank	90,000	4,10,000
	10,00,000			10,00,000

The company decided to redeem on Ist January, 1961 the whole of the preference share capital at a premium of 5%. In order to pay off the preference shareholders, it sold the investments realising Rs. 97,500.

Draft out the Journal entries to record the above transactions, post them into Ledger and give the Balance Sheet after the redemption of the preference shares.

प्रकाश लि० की अधिकृत अंश पूंजी 10 लाख रु० है। 31 दिसम्बर 1960 को उसके चिट्ठे का संक्षिप्त रूप इस प्रकार से है :—

चिट्ठा

	रु०		रु०	रु०
अंश पूंजी		स्थायी सम्पत्तियाँ :		
निर्गमित तथा पूर्ण दत्त				
15,000 10 रु० वाले		प्लान्ट एण्ड मशीन	4,00,000	
5% शोध्य अधिमान अंश	1,50,000	फर्नीचर	42,000	
10 रु० वाले 30,000		गाड़ियाँ	48,000	4,90,000
ईक्विटी अंश	3,00,000			
		विनियोग		1,00,000
	4,50,000			
अंश प्रीमियम	1,35,000	चल सम्पत्तियाँ :		
सामान्य संचय	2,60,000	स्कन्ध	2,10,000	
लाभ-हानि खाता	55,000	देनदार	1,10,000	
विभिन्न लेनदार	1,00,000	बैंक	90,000	4,10,000
	10,00,000			10,00,000

कम्पनी ने सम्पूर्ण अधिमान अंशों का 5% प्रीमियम पर 1 जनवरी 1961 को शोधन करने का निश्चय किया। अधिमान अंशों के शोधन करने के लिए विनियोगों को 97,500 रु० में बेचा गया।

आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये, खातों में खतौनी कीजिए तथा शोधन के पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा दीजिये।

Journal of Prakash Limited

Solution :

Date	Particulars	Rs.	Rs.
1961 1st Jan.	Bank a/c Dr.	97,500	
	To Investments a/c		97,500
	(Investments sold.)		
	Redeemable Preference Share Capital a/c Dr.	1,50,000	
	Premium on Redemption of Preference Shares a/c Dr.	7,500	
	To Bank a/c		1,57,500
	(Redemption of preference shares at a premium of 5%.)		
	Share Premium a/c Dr.	7,500	
	To Premium on Redemption of Preference Shares a/c		7,500
	(Premium on Redemption provided out of Share Premium a/c.)		

Journal Contd.

1961		Rs.	Rs.
1st Jan.	General Reserve a/c Dr.	1,50,000	
	To Capital Redemption Reserve a/c		1,50,000
	(Profit transferred from the General Reserve a/c to the Capital Redemption Reserve a/c equal to the nominal value of the shares redeemed.		
"	P. & L. a/c Dr.	2,500	
	To Investments a/c		2,500
	(Loss on investments transferred to P. & L. a/c.).		

Ledger of Prakash Limited

5% Redeemable Preference Share Capital Account

1961		Rs.	1961		Rs.
1st Jan.	To Bank a/c	1,50,000	Jan. 1	By Balance b/d	1,50,000

Share Premium Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Jan. 1	To Premium on Redemption of Pref. Shares a/c	7,500	Jan. 1	By Balance b/d	1,35,000
Dec. 31	To Balance c/d	1,27,500			
		1,35,000			1,35,000

General Reserve Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Jan. 1	To Capital Redemption Reserve a/c	1,50,000	Jan. 1	By Balance b/d	2,60,000
Dec. 31	To Balance c/d	1,10,000			
		2,60,000			2,60,000

Profit and Loss Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To Investments a/c	2,500	Jan. 1	By Balance b/d	55,000
Dec. 31	To Balance c/d	52,500			
		55,000			55,000

Investments Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	1,00,000	Jan. 1	By Bank a/c	97,500
			Dec. 31	By P. & L. a/c	2,500
		1,00,000			1,00,000

Bank Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d	90,000	Jan. 1	By 5% Redeemable Preference Share Capital a/c	1,50,000
,,	To Investments a/c	97,500	Jan. 1	By Premium on Redemption of Pref. Shares a/c	7,500
			Dec. 31	By Balance c/d	30,000
		1,87,500			1,87,500

Premium on Redemption of Preference Shares Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Jan. 1	To Bank a/c	7,500	Jan. 1	By Share Premium a/c	7,500

Capital Redemption Reserve Account

1961		Rs.	1961		Rs.
Dec. 31	To Balance c/d	1,50,000	Jan. 1	By General Reserve a/c	1,50,000

Balance Sheet of Prakash Limited

Liabilities	Amount	Assets		Amount
	Rs.		Rs.	Rs.
Share Capital :		Fixed Assets :		
30,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up	3,00,000	Plant & Machinery	4,00,000	
Share Premium a/c	1,27,500	Furniture	42,000	
		Vehicles	48,000	
Capital Redemption Reserve a/c	1,50,000			4,90,000
General Reserve a/c	1,10,000	Current Assets :		
Profit & Loss a/c	52,500	Stock	2,10,000	
Sundry Creditors	1,00,000	Debtors	1,10,000	
		Balance at Bank	30,000	3,50,000
	8,40,000			8,40,000

ऋण-पत्र (Debentures)

ऋण-पत्र कम्पनी की सार्वमुद्रा के अन्तर्गत दी गई ऋण की एक स्वीकृति है। ऋण-पत्र में मूलधन तथा व्याज के भुगतान सम्बन्धी शर्तों का उल्लेख रहता है। यह ऋण-पत्रधारी और कम्पनी के मध्य अनुबन्ध प्रलेख का भी कार्य करता है। कम्पनी अधिनियम की धारा 2 (12) के अनुसार ऋणपत्र से आशय ऋणपत्र, बांड या किसी अन्य प्रतिभूति से है जो कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभार उत्पन्न कर सकती है और नहीं भी।[1] न्यायाधीश चिट्टी (Chitty) के अनुसार "यह एक प्रलेख है जो या तो ऋण का निर्माण करता है या ऋण की स्वीकृति देता है।"[2]

ऋण-पत्रों के प्रकार (Kinds of Debentures)

(i) रजिस्टर्ड ऋण-पत्र Registered Debentures) : रजिस्टर्ड ऋणपत्र वे ऋणपत्र हैं जिनके धारक का नाम कम्पनी के ऋणपत्रों के रजिस्टर में लिखा जाता है। ऐसे ऋणपत्रों का वैध हस्तान्तरण हस्तान्तरी के पक्ष में कम्पनी के इस रजिस्टर में उसका नाम लिखवाकर ही सम्भव है। ऋणपत्रों पर व्याज कम्पनी उसी व्यक्ति को देती है जिसका नाम कम्पनी के रजिस्टर में लिखा हुआ है।

(ii) वाहक ऋणपत्र (Bearer Debentures) : वाहक ऋणपत्र से आशय ऐसे ऋण-पत्रों से है जो केवल सुपुर्दगी द्वारा ही हस्तान्तरित किये जा सकते हैं। इनके वैध हस्तान्तरण के लिए इनकी कम्पनी के कार्यालय में रजिस्ट्रेशन कराने की कोई आवश्यकता नहीं है। रजिस्टर्ड ऋणपत्रों में तो व्याज उस व्यक्ति को दिया जाता है जिसका नाम कम्पनी के कार्यालय में अंकित है परन्तु वाहक ऋण-पत्रों में व्याज उस व्यक्ति को दिया जाता है जो उसका धारक है। व्याज के सुगम भुगतान के लिए वाहक ऋण-पत्रों के साथ कूपन लगा दिये जाते हैं। व्याज की देय तिथि पर या उसके पश्चात् धारक इन कूपनों को किसी बैंक के जरिये कम्पनी के बैंक में भुगतान के लिए प्रस्तुत करता है तथा कम्पनी का बैंक ऐसे कूपनों का भुगतान कर देता है।

(iii) बन्धक ऋणपत्र (Mortgage Debentures) : बन्धक ऋणपत्रों से आशय ऐसे ऋण-पत्रों से है जिनके धारकों के पास कम्पनी की कोई सम्पत्ति जमानत के रूप में है। ऐसी सम्पत्ति पर इस प्रकार के ऋण-पत्रों का प्रभार होता है। कम्पनी द्वारा इन ऋण-पत्रों का भुगतान न होने की अवस्था में वे उस सम्पत्ति को वेचकर अपने ऋण का भुगतान प्राप्त कर सकते हैं।

(iv) नग्न ऋणपत्र (Naked Debentures) : नग्न ऋणपत्रों से आशय ऐसे ऋण-पत्रों से है जिनके पास कोई सम्पत्ति जमानत के रूप में नहीं हैं। ऐसे ऋण-पत्रों का मूलधन तथा व्याज असुरक्षित रहता है।

(v) शोध्य ऋण-पत्र (Redeemable Debentures) : ये इस प्रकार के ऋणपत्र हैं जिसका भुगतान एक निश्चित अवधि के पश्चात् कर दिया जावेगा। कम्पनियों द्वारा अधिकतर इसी प्रकार के ऋण-पत्र निर्गमित किये जाते हैं।

---

1. Debenture includes debenture stock, bonds and any other security of a company, whether constituting a charge on the assets of the company or not.
(Indian Companies Act, 1956)

2. "Debenture is a document which either creates a debt or acknowledges it".
(Justice Chitty)

(vi) अशोध्य ऋण-पत्र या स्थायी ऋण-पत्र (**Irredeemable or Perpetual Debentures**) : कम्पनी अधिनियम की धारा 120 के अनुसार अशोध्य ऋणपत्रों से आशय ऐसे ऋणपत्रों से है जिनका भुगतान कम्पनी के जीवन काल में नहीं किया जा सकता या जिनका भुगतान किसी दूर की आकस्मिक घटना के घटने पर या किसी लम्बी अवधि के बीतने पर किया जावेगा।

ऋणपत्रों का निर्गमन (Issue of Debentures) :

ऋणपत्रों का निर्गमन प्रीमियम, सम मूल्य या बट्टे पर हो सकता है। ऋणपत्रों पर जो प्रीमियम प्राप्त होती है उस पर अंश प्रीमियम की भांति कम्पनी अधिनियम की धारा 78 के प्रतिबन्ध लागू नहीं होते हैं। ऋण-पत्रों को बट्टे पर निर्गमित किया जा सकता है। अंशों के निर्गमन के समय बट्टे की अधिकतम सीमा का ध्यान रखना आवश्यक है, परन्तु ऋणपत्रों के निर्गमन के लिए बट्टे की कोई अधिकतम सीमा नहीं है। ऋणपत्रों के निर्गमन पर दिया गया बट्टा कम्पनी की पूंजीगत हानि है। इस हानि को पूंजीगत लाभ या अन्य किसी लाभ में से अपलिखित करना चाहिये। जब तक इस हानि को अपलिखित नहीं किया जाता है, इसको चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष में दिखाना चाहिये।

ऋणपत्रों का भी निर्गमन और वंटन अंशों के निर्गमन और वंटन की तरह होता है। न्यूनतम अभिदान के अतिरिक्त कम्पनी अधिनियम द्वारा अंशों के वंटन पर लगाये गये प्रतिबन्ध ऋण-पत्रों पर भी लागू होते हैं। अंशों की भांति ऋणपत्रों को भी इक मुश्त (In one lump sum) या विभिन्न किस्तों में निर्गमित किया जा सकता है। ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्रविष्टियां उसी प्रकार की जाती हैं, जिस प्रकार से अंशपत्रों के निर्गमन पर। ऋणपत्रों के निर्गमन पर भी अधि-अभिदान (Over-subscription), मांग का बकाया, अग्रिम मांग का भुगतान आदि की स्थिति आ सकती है। इनकी भी प्रविष्टियां उसी प्रकार होती हैं जिस प्रकार अंशों की स्थिति में।

ऋण-पत्रों पर ब्याज (Interest on Debentures) :—

प्रायः ऋण-पत्रों पर ब्याज अर्ध वार्षिक दिया जाता है। ब्याज की दर ऋणपत्रों में ही वर्णित रहती है। ब्याज ऋणपत्रों के अंकित मूल्य पर दिया जाता है। यदि ऋणपत्र प्रीमियम पर निर्गमित किये गए हैं तो प्रीमियम पर कोई ब्याज नहीं दिया जाता है। वर्ष के अन्त में ब्याज को अन्य खर्चों की भांति लाभ-हानि खाते में ले जाया जाता है। ब्याज की प्रविष्टि निम्नलिखित होती है :—

ब्याज देने पर	Debenture Interest a/c Dr. To Bank a/c (Debenture interest paid.)
लाभ-हानि खाते में ब्याज ले जाने पर	P. & L. a/c Dr. To Debenture Interest a/c (Debenture interest transferred.)

Illustration 18

X Co. Ltd. is registered with an authorised capital of Rs. 90 lakhs. the company also issued 4,000 debentures of Rs. 100 each for subscription. Applications for

purchase of 5,000 debentures have been received. The debentures have been allotted proportionately to the applicants. The debenture moneys are payable as follows :

Rs. 30/-on application, Rs. 40/- on allotment, Rs. 20/- on first call and Rs. 10/- on second call. A person who holds 100 debentures fails to pay the amount due at the time of allotment. He, however, pays this amount with the first call money. Another person, who is holding 200 debentures, has paid all the calls in advance at the time of allotment.

Pass the necessary journal entries (including those of cash) in the books of the company.

एक्स कम्पनी लि० का 90 लाख रु० की अधिकृत पूंजी के साथ पंजीयन हुआ। कम्पनी ने अभिदान के लिए 100 रु० वाले 4,000 ऋण-पत्र भी निर्गमित किये। कम्पनी के कार्यालय में 5,000 ऋणपत्रों को खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये हैं। प्रार्थियों को ऋण-पत्र यथानुपात वंटित कर दिये गये हैं। ऋण-पत्रों पर विभिन्न मांगें इस प्रकार देय हैं :—

प्रार्थना-पत्र के साथ 30 रु०, वंटन पर 40 रु०, प्रथम मांग पर 20 रु० और अन्तिम मांग पर 10 रु०। एक व्यक्ति ने, जिसके पास 100 ऋणपत्र हैं, वंटन के समय देय राशि का भुगतान नहीं किया। उसने वंटन पर देय राशि का प्रथम मांग के साथ भुगतान किया। दूसरे व्यक्ति ने, जिसके पास 200 ऋणपत्र हैं, वंटन राशि के साथ ही भविष्य की मांगों का भी भुगतान कर दिया।

कम्पनी की पुस्तकों में (नकद सहित) आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये।

Solution

Journal of X Co. Ltd.

				Rs.	Rs.
	Bank a/c	Dr.		1,50,000	
	To Debenture Application a/c				1,50,000
	(Application money for the purchase of 5,000 debentures received against 4,000 offered to the public.)				
	Debenture Application a/c	Dr.		1,20,000	
	To Debentures a/c				1,20,000
	(Debenture application money received on 4,000 debentures transferred to debentures a/c.)				
	Debenture Allotment a/c	Dr.		1,60,000	
	To Debentures a/c				1,60,000
	(Allotment money due on 4,000 debentures.)				
	Debenture Application a/c	Dr.		30,000	
	To Debenture Allotment a/c				30,000
	(Excess amount received on debenture applications transferred to Debenture Allotment a/c.)				

Journal Contd.

		Rs.	Rs.
Bank a/c Dr.		1,32,750	
To Debenture Allotment a/c			1,26,750
To Debenture Calls Received in Advance a/c			6,000
(Amount due on allotment received and one debentureholder holding 200 debentures deposited the remaining amount of Rs. 30 per debenture in advance.)			
Debenture First Call a/c Dr.		80,000	
To Debentures a/c			80,000
(Amount due on 4,000 debentures @ Rs. 20/- per debenture in respect of first call.)			
Debenture Calls Received in Advance a/c Dr.		4,000	
To Debenture First Call a/c			4,000
(Adjustment of debenture calls received in advance.)			
Bank a/c Dr.		79,250	
To Debenture First Call a/c			76,000
To Debenture Allotment a/c			3,250
(Amount due on first call received; Allotment dues in arrears on 100 debentures also received with the first call.)			
Debenture Second Call a/c Dr.		40,000	
To Debentures a/c			40,000
(Amount due on 4,000 debentures in respect of second call @ Rs. 10 per debenture.)			
Debenture Calls Received in Advance a/c Dr.		2,000	
To Debenture Second Call a/c			2,000
(Debenture Calls in Advance adjusted.)			
Bank a/c Dr.		38,000	
To Debenture Second Call a/c			38,000
(Amount due on debenture second call received.)			

ऋणपत्रों का समर्थक ऋणाधार के रूप में निर्गमन (Issue of debentures as collateral security)—

कभी-कभी कम्पनी बैंक से या किसी अन्य संस्था से धन उधार लेती है और उस संस्था के पास अन्य प्रतिभूति के अलावा ऋणपत्रों को समर्थक ऋणाधार (Collateral Security) के रूप में जमा करा देती है। इस प्रकार के ऋणपत्र कम्पनी के द्वारा लिये गये ऋण की अतिरिक्त जमानत का काम करते हैं। यदि कम्पनी ऋण का भुगतान करने में असमर्थ रहती है तो ऋणदाता को अधिकार है कि वह जमा कराये हुए ऋणपत्रों को बेचकर अपने ऋण का भुगतान करले। यदि कम्पनी ऋण का भुगतान कर देती है तो ऋणदाता को जमा कराये हुए ऋणपत्र कम्पनी को वापस करने पड़ते हैं। ऋणदाता को व्याज उसके द्वारा कम्पनी को उधार दी गई राशि पर दिया जाता है। जमा कराये हुए ऋणपत्रों पर कोई व्याज नहीं दिया जाता है।

हिसाब सम्बन्धी प्रविष्टि—

ऋणपत्रों को ऋण की प्रतिभूति के रूप में जमा कराने पर कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है, केवल कम्पनी द्वारा बैंक से या अन्य किसी संस्था से उधार ली गई राशि की प्रविष्टि की जाती है।

यदि इस प्रकार के ऋणपत्रों को जमा कराने पर कोई प्रविष्टि करना ही है तो निम्न प्रकार से हो सकती है।

Debenture Suspense a/c Dr. (ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)
 To Debentures a/c

Debenture Suspense a/c को सम्पत्ति पक्ष पर दिखाया जाता है तथा Debentures a/c को दायित्व पक्ष पर; परन्तु ऐसे ऋणपत्र जो जमानत के रूप में निर्गमित किये गये हैं, उनको अन्य ऋण-पत्रों से अलग दिखाना चाहिये।

Illustration 19

Z Co. Ltd. took a loan of Rs. one lakh from the Bank of Rajasthan Ltd., and deposited debentures worth Rs. 1,60,000 as collateral security with the bank. The company also issued debentures worth Rs. 2 lakhs to the public at a discount of 5%. Pass necessary journal entries for the above transactions and show them in the Balance Sheet.

जेड कं० लि० ने राजस्थान बैंक से 1 लाख रु० उधार लिया तथा अपने 1,60,000 रु० के ऋणपत्र समर्थक ऋणाधार के रूप में जमा करा दिये। कम्पनी ने जनता में भी 5% बट्टे पर 2 लाख रु० के ऋणपत्र जारी किये। उपरोक्त सौदों के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये और इनको चिट्ठे में बतलाइये।

Solution :

Journal of Z Co. Ltd.

			Rs.	Rs.
	Bank a/c Dr. To Bank Loan a/c (Loan of Rs. one lakh taken from the Bank of Rajasthan Ltd. and debentures worth Rs, 1,60,000 deposited as collateral security.)		1,00,000	1,00,000
	Bank a/c Dr. To Debenture Application a/c (Debenture applications received.)		1,90,000	1,90,000
	Debenture Application a/c Dr. Discount on Issue of Debentures a/c Dr. To Debentures a/c (Debenture application money transferred on allotment.)		1,90,000 10,000	2,00,000

Balance Sheet of Z Co. Limited

As on......

	Rs.		Rs.
Authorised Capital :	....	Cash at Bank	2,90,000
Issued and Subscribed Capital :	....	Discount on Issue of Debentures	10,000
2,000 Debentures of Rs. 100 each	2,00,000		
Bank Loan (Debentures worth Rs.1,60,000 deposited as collateral security.)	1,00,000		
	3,00,000		3,00,000

ऋणपत्रों का अंशों में परिवर्तन (Conversion of Debentures into Shares)

ऋणपत्रों को निर्गमन करते समय कुछ कम्पनियां ऋणपत्रधारियों को यह अधिकार देती हैं कि यदि वे चाहें तो एक निश्चित समय में अपने ऋणपत्रों को अंशों में बदल सकते हैं। यह एक अतिरिक्त सुविधा है। इससे बहुत से ऐसे व्यक्ति, जो कम्पनी के अंशधारी बनना चाहते हैं परन्तु जिनको कम्पनी की प्रारम्भिक लाभ अर्जन क्षमता में विश्वास नहीं है, इस प्रकार के ऋण-पत्रों को खरीद सकते हैं तथा अपने ब्याज को सुरक्षित कर सकते हैं। कम्पनी की लाभ-अर्जन क्षमता का विश्वास हो जाने पर वे अपने ऋणपत्रों को अंशों में बदल सकते हैं। ऋणपत्रधारियों को, अंशों में परिवर्तित कराने का, विकल्प दिया जाता है और वे उस विकल्प का लाभ उसी समय उठाते हैं, जबकि इस प्रकार का कार्य उनके हित में हो। प्रायः ऋणपत्रों का अंशों में परिवर्तन प्रीमियम पर होता है।

Illustration 20

A Company issued 5,000 6% Debentures of Rs. 100 each at Rs. 99 per debenture on 1st January, 1967. Holders of these debentures have an option to convert their holdings into equity shares of Rs. 100 each at a premium of 25% at any time within 3 years.

On 31st October, 1967, a holder of 100 debentures gave his option to convert his holdings into the equity shares. Pass necessary Journal entries in the books of the company.

एक कम्पनी ने 100 रु० वाले 5,000 6% ऋणपत्र, 1 जनवरी, 1967 को 99 रु० प्रति ऋणपत्र के हिसाब से निर्गमित किये। ऋणपत्रधारियों को यह अधिकार है कि वे अपने ऋणपत्रों को 3 वर्ष की अवधि में 100 रु० वाले ईक्विटी अंशों में 25% प्रीमियम पर बदल सकते हैं।

31 अक्टूबर, 1967 को 100 ऋणपत्रों के एक धारक ने अपने ऋणपत्रों को ईक्विटी अंशों में बदलने का विकल्प दिया। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये।

Solution :

Journal

1967			Rs.	Rs.
Jan. 1	Bank a/c Dr. To Debenture Application a/c (Amount received on applications for 5,000 debentures at Rs. 99 per debenture.)		4,95,000	4,95,000
,,	Debenture Application a/c Dr. Discount on issue of Debentures a/c Dr. To Debentures a/c (Amount received on Debenture Application a/c transferred to Debentures a/c on allotment.)		4,95,000 5,000	5,00,000
Oct. 31	6% Debentures a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Premium on Issue of Shares a/c (Conversion of 6% debentures into equity shares at a premium of 25%.)		10,000	8,000 2,000
Dec. 31	Debenture Interest a/c Dr. To Outstanding Interest on Debentures a/c (Being interest due on debentures of Rs. 4,90,000 @ 6% per annum for 12 months and debentures worth Rs. 10,000 for 10 months.)		29,900	29,900
,,	Profit and Loss a/c Dr. To Debenture Interest a/c (Debenture interest transferred to Profit & Loss a/c.)		29,900	29,900

ऋणपत्रों का शोधन (Redemption of Debentures)

शोधन के आधार पर ऋण-पत्र दो प्रकार के हो सकते हैं—शोध्य एवं अशोध्य। शोध्य ऋण-पत्र वे होते हैं जिनका भुगतान कम्पनी के जीवन काल में एक निश्चित अवधि के पश्चात् होता है। अशोध्य ऋण-पत्र वे होते हैं जिनका भुगतान कम्पनी के जीवन काल में नहीं हो सकता। प्रायः कम्पनियां शोध्य ऋण-पत्र ही निर्गमित करती हैं और इस प्रकार के ऋण-पत्र जनता में लोकप्रिय हैं।

ऋण-पत्रों के निर्गमन करते समय उनके शोधन को विधि भी स्पष्ट करदी जाती है। प्रायः ऋण-पत्रों का शोधन निम्नलिखित विधियों से हो सकता है —

(1) एक निर्दिष्ट अवधि के पश्चात् ऋण-पत्र धारियों को इक मुश्त (In one lump sum) भुगतान करके; अथवा

(2) वार्षिक किस्तों (Annual Drawings) द्वारा शोधन।

ऋण-पत्राधारियों को इक मुश्त भुगतान द्वारा शोधन (Redemption by payment in one lump sum)—

निर्गमन की शर्तों के अनुसार, ऋण-पत्रों का भुगतान सम मूल्य पर, प्रीमियम पर या बट्टे (Discount) पर किया जा सकता है। शोधन के समय सम-मूल्य पर भुगतान किये जाने की स्थिति में कम्पनी को न तो लाभ होता है और न हानि। सम-मूल्य पर भुगतान करने पर शोधन को प्रविष्टि निम्नलिखित होगी :—

Debentures a/c Dr. (ऋण-पत्रों के अंकित मूल्य से)
 To Bank a/c
(Debentures paid.)

जब कम्पनी ऋण-पत्रों का प्रीमियम पर शोधन करती है तो भुगतान के समय दिया गया प्रीमियम कम्पनी की पूंजीगत हानि होती है। कम्पनी अपनी अन्य पूंजीगत आय से अथवा लाभ-हानि खाते से इस हानि को अपलिखित कर सकती है। प्रीमियम अथवा बोनस पर शोधन की प्रविष्टियां इस प्रकार होंगी :—

Debentures a/c Dr. (ऋण-पत्रों के अंकित मूल्य से)
Premium on Redemption of Debentures a/c Dr. (ऋण-पत्रों पर दिये जाने वाले प्रीमियम से)
 To Bank a/c (नकद भुगतान की गई वास्तविक राशि से
(Debentures redeemed at premium.)

(Particular) Capital Profit a/c Dr.
or
Profit and Loss a/c Dr.
 To Premium on Redemption of Debentures a/c
(Premium on Redemption of debentures written off.)

निर्गमन की शर्तों के अनुसार कभी-कभी ऋण-पत्रों का शोधन उनके अंकित मूल्य से भी कम मूल्य पर अथवा बट्टे पर किया जाता है। इस प्रकार के शोधन से कम्पनी को पूंजीगत लाभ होता है। किन्तु इस प्रकार का शोधन लोकप्रिय नहीं होता। बट्टे पर किये गये शोधन की निम्नलिखित प्रविष्टियां होती हैं :—

Debentures a/c	Dr.	(ऋणपत्रों के अंकित मूल्य से)
To Bank a/c		(भुगतान की वास्तविक राशि से)
To Profit on Redemption of Debentures a/c		(अंकित मूल्य व भुगतान की राशि के अन्तर से)
(Debentures redeemed at a discount of Rs...... per debenture.)		

Illustration 21

A company desires to redeem the following classes of debentures :—

(a) 1,000 6% Debentures of Rs. 100 each to be redeemed at par.

(b) 1,000 5% Debentures of Rs. 100 each to be redeemed at a premium of 5%.

(c) 1,000 7% Debentures of Rs. 100 each to be redeemed at a discount of 2%.

The company redeems all the above debentures. Give Journal entries for their redemption.

एक कम्पनी ऋणपत्रों की निम्नलिखित श्रेणियों का शोधन करना चाहती है:—

(अ) 100 रु० वाले 1,000 6% ऋण-पत्र जिनका शोधन सम-मूल्य पर करना है।

(ब) 100 रु० वाले 1,000 5% ऋण-पत्र जिनका शोधन 5% प्रीमियम पर करना है।

(स) 100 रु० वाले 1,000 7% ऋण-पत्र जिनका शोधन 2% बट्टे पर करना है।

कम्पनी ने उक्त ऋण-पत्रों का शोधन कर दिया है। उपरोक्त ऋण-पत्रों के शोधन की प्रविष्टियां दीजिये।

Solution :

Journal

			Rs.	Rs.
(a)	6% Debentures a/c Dr.		1,00,000	
	To Bank a/c			1,00,000
	(Debentures redeemed at par.)			
(b)	5% Debentures a/c Dr.		1,00,000	
	Premium on Redemption of Debentures a/c Dr.		5,000	
	To Bank a/c			1,05,000
	(Debentures redeemed at a premium.)			
(c)	7% Debentures a/c Dr.		1,00,000	
	To Bank a/c			98,000
	To Profit on Redemption of Debentures a/c			2,000
	(Debentures redeemed at a discount of 2%.)			

जैसा कि पहले बतलाया जा चुका है, ऋण-पत्रों का शोधन एक निश्चित अवधि के बाद इक मुश्त भुगतान करके किया जा सकता है। यदि कम्पनी की आर्थिक व तरल स्थिति (Liquid Position) सुदृढ़ है तो कम्पनी को इक मुश्त भुगतान करने में कठिनाई नहीं होगी। लेकिन बहुत सी कम्पनियां शोधन के समय इक मुश्त भुगतान करने के लिये प्रारम्भ से ही अपने लाभ हानि खाते से प्रति वर्ष एक निश्चित रकम का संचय करती रहती हैं तथा उसको व्यापार के बाहर विनियोग कर देती हैं। इस विधि को आगे समझाया गया है।

संचित लाभों में से ऋण-पत्रों का शोधन (Redemption of Debentures ont of Accumulated Profits)

निर्गमन की शर्तों के अनुसार प्रायः ऋण-पत्रों का भुगतान एक निश्चित अवधि के पश्चात् करना पड़ता है। उस अवधि के पश्चात् उनका भुगतान करने के लिए धन की आवश्यकता होती है। अतः कम्पनियां ऋण-पत्रों का भुगतान करने के लिए संचित कोष की स्थापना कर लेती हैं। लाभ-हानि खाते में से प्रतिवर्ष एक निश्चित धन राशि संचय खाते में हस्तान्तरित की जाती है। इस संचित धन राशि का प्रयोग व्यापार के लिए किया जा सकता है अथवा इस संचित धन राशि को व्यापार के बाहर प्रतिभूतियों को खरीदने में विनियोग किया जा सकता है। संचित राशि को व्यापार में प्रयोग करने से यह खतरा है कि ऋण-पत्रों का भुगतान करते समय व्यापार की सम्पत्तियों को बेचना पड़ेगा, इससे व्यापार की गतिविधि को धक्का लगने की आशंका है। दूसरी विधि के अनुसार संचित धन व्यापार के बाहर प्रतिभूतियों में विनियोग कर दिया जाता है। आवश्यकता पड़ने पर प्रतिभूतियां बेच दी जाती हैं और उससे ऋण-पत्रों का भुगतान कर दिया जाता है। संचित कोष को व्यापार के बाहर विनियोग करने से ऋण-पत्रों के भुगतान के समय व्यापारिक गतिविधि को कोई धक्का नहीं लगता है। जब कोष ऋण-पत्रों के भुगतान के लिए बनाया जाता है और उसकी धनराशि को व्यापार के बाहर विनियोग कर दिया जाता है तो उस कोष को 'शोधन कोष' अथवा 'सिंकिंग फन्ड' (Sinking Fund) कहते हैं। यदि इस कोष का प्रयोग व्यापार में किया गया है तो उसको 'ऋण–पत्र शोधन संचय' (Reserve for Redemption of Debentures) कहते हैं।

संचयी सिंकिंग फन्ड (Cumulative Sinking Fund)

लाभ-हानि खाते में से प्रति वर्ष निकाली गई राशि के साथ-साथ जब उस पर अर्जित ब्याज को भी पुनः विनियोग कर दिया जाता है तब यह सिंकिंग फन्ड 'संचयी सिंकिंग फन्ड' कहलाता है। ब्याज पर जो ब्याज प्राप्त होता है उसका भी विनियोग कर दिया जाता है।

असंचयी सिंकिंग फन्ड (Non-cumulative Sinking Fund)

इस प्रकार के सिंकिंग फन्ड में केवल लाभ-हानि से निकाली गई राशि ही विनियोग की जाती है, उस पर अर्जित ब्याज नहीं।

संचयी सिंकिंग फन्ड के निर्माण पर प्रविष्टियां

प्रथम वर्ष में

(i) लाभ-हानि विनियोग खाते से निश्चित धन राशि के हस्तान्तरण पर—

P. & L. Appropriation a/c . . Dr.
    To Sinking Fund a/c
(Being the amount transferred to Sinking Fund a/c).

सिंकिग फन्ड में हस्तान्तरित राशि का विनियोग करने पर—.

Sinking Fund Investments a/c Dr.
To Bank a/c
(Being the amount of Sinking Fund invested in securities.)

प्रथम वर्ष के बाद अगले प्रत्येक वर्ष में:—

लाभ-हानि नियोजन खाते में निश्चित धन राशि के सिंकिंग फन्ड में हस्तान्तरण करने पर—

P. & L. Appropriation a/c Dr.
To Sinking Fund a/c
(Being the amount transferred to Sinking Fund a/c from Profit & Loss Appropriation a/c.)

गतवर्ष के विनियोगों पर व्याज प्राप्ति पर—

(क) Bank a/c Dr.
To Sinking Fund a/c
(Being interest received on sinking fund investments.)

अथवा

(ख) (i) Bank a/c Dr.
To Interest a/c
(Interest received on sinking fund investments.)

(ii) Interest a/c Dr.
To Sinking Fund a/c
(Transfer of interest to Sinking Fund a/c.)

चूंकि यह व्याज सिंकिंग फन्ड के विनियोगों पर है और व्याज के रूप में प्राप्त राशि का पुनः विनियोग किया जायेगा, अतः व्याज को लाभ-हानि खाते में हस्तान्तरित न करके सिंकिंग फन्ड खाते में हस्तान्तरित करते हैं।

यदि (क) के स्थान पर ख के अनुसार दो प्रविष्टियां की जाती हैं तो, व्याज खाता एक बार क्रेडिट किया जाता है और एक बार डेबिट किया जाता है और इस प्रकार से व्याज खाता बन्द हो जाता है। अन्त में एक प्रविष्टि रह जाती है—बैंक खाता डेबिट और सिंकिग फन्ड खाता क्रेडिट। अतः व्यवहार में व्याज प्राप्ति पर (ख) प्रविष्टियां न की जाकर; केवल (क) प्रविष्टि की जाती है।

धन-राशि का विनियोग करने पर—

Sinking Fund Investments a/c Dr.
To Bank a/c
(Being the investment of sinking fund.)

(उपरोक्त प्रविष्टि में धन का विनियोग लाभ-हानि नियोजन खाते में निकाली गई धन-राशि तथा इस वर्ष में प्राप्त की गई राशि के व्याज की राशि के योग के बराबर होगा।)

अन्तिम वर्ष में

प्रतिवर्ष की भांति उपरोक्त प्रथम दो प्रविष्टियां की जावेंगी लेकिन विनियोग की प्रविष्टि नहीं की जावेगी क्योंकि अंतिम वर्ष धन का विनियोग नहीं किया जाता, बल्कि विनियोगों को इस वर्ष बेच दिया जाता है, ताकि इस धन की सहायता से ऋण-पत्रों का शोधन किया जा सके। अतः इस वर्ष उपरोक्त दो के अतिरिक्त अन्य प्रविष्टियां इस प्रकार होंगी :—

विनियोगों को बेचने पर—

Bank a/c Dr.
To Sinking Fund Investments a/c
(Investments sold.)

विनियोगों के बेचने से लाभ होने पर—

Sinking Fund Investments a/c Dr.
To Sinking Fund a/c
(Being profit on sale of investments transferred to Sinking Fund a/c.)

विनियोग के बेचने से हानि होने पर—

Sinking Fund a/c Dr.
To Sinking Fund Investments a/c
(Being loss on sale of sinking fund investments transferred to Sinking Fund a/c.)

ऋण-पत्रों का भुगतान करने पर—

Debentures a/c Dr.
To Bank a/c
(Debentures paid.)

Sinking Fund a/c Dr.
To General Reserve a/c
(Being the balance of Sinking Fund a/c transferred to General Reserve a/c.)

सम्पत्ति के पुनर्स्थापन के लिए एवं दायित्वों के भुगतान के लिये सिंकिंग फण्ड में अन्तर (Difference between Sinking Fund to replace an Asset and to repay a Liability) :—

कभी-कभी सम्पत्ति के पुनर्स्थापन के लिये भी सिंकिंग फंड का निर्माण किया जा सकता है जैसा कि 'ह्रास एवं संचय' वाले अध्याय में बताया जा चुका है। सिंकिंग फंड का निर्माण दायित्व के भुगतान के लिये भी किया जाता है। इन दोनों में निम्नलिखित अन्तर हैं:—

(i) सम्पत्ति के पुनर्स्थापन के लिये बनाये गये सिंकिंग फंड में प्रति वर्ष रकम लाभ-हानि खाते से हस्तान्तरित की जाती है क्योंकि सम्पत्ति पर ह्रास के लिये किया गया प्रावधान एक आवश्यक व्यापारिक खर्चा है।

दायित्व के भुगतान के लिये बनाये गये सिंकिंग फंड में प्रति वर्ष रकम लाभ-हानि नियोजन खाते (Profit and Loss Appropriation Account) से हस्तान्तरित की जाती है क्योंकि दायित्व के भुगतान के लिये किया गया प्रावधान एक व्यापारिक खर्चा नहीं है।

(ii) जब वह सम्पत्ति, जिसके पुनर्स्थापन के लिये सिंकिंग फन्ड का निर्माण किया गया है, बेकार हो जाती है तथा उस खाते को बंद करना होता है तो सिंकिंग फंड खाते के शेष को सम्पत्ति खाते में हस्तान्तरित करके दोनों खातों को बन्द कर दिया जाता है।

जब दायित्व का भुगतान किया जाता है तो दायित्व खाते को डेबिट करके रोकड़ या बैंक खाते को क्रेडिट कर दिया जाता है। इस प्रकार दायित्व खाता बन्द हो जाता है किन्तु सिंकिंग फण्ड खाते का शेष बचा रहता है। उसे सामान्य संचय खाते में हस्तान्तरित कर दिया जाता है।

(iii) दायित्वों के भुगतान हेतु बने सिंकिंग फण्ड का उपयोग लाभांश देने में किया जा सकता है जबकि सम्पत्ति के पुनर्स्थापन के लिए बनाये गये सिंकिंग फण्ड का उपयोग लाभांश देने में नहीं किया जा सकता।

Illustration 22.

On 1st January, 1963 Surendra Ltd. issued debentures worth Rs. 5 lakhs repayable after 5 years at par. It was decided to set up a sinking fund for the purpose of redeeming the above debentures. Sinking Fund Tables reveal that an amount of Rs. ·184627 set aside every year and invested in 4% securities will amount to Re. 1/- after five years. The debentures were paid on the due date.

Give Journal entries (ignoring debenture interest) and prepare Debentures a/c, Debenture Sinking Fund a/c and Debenture Sinking Fund Investment a/c for the five years.

1 जनवरी 1963 को सुरेन्द्र लिमिटेड ने जनता में 5 लाख रु० के ऋण-पत्र जारी किये जो 5 वर्ष पश्चात् सम मूल्य पर शोधनीय हैं। ऋण-पत्रों के शोधन के लिये यह निश्चय किया गया कि सिंकिंग फण्ड का निर्माण कर दिया जाय। सिंकिंग फण्ड तालिकायें यह बतलाती हैं कि यदि ·184627 रु० का धन प्रतिवर्ष निकाला जाय तथा 4% प्रतिभूतियों में विनियोग कर दिया जाय तो 5 वर्ष पश्चात् यह राशि 1 रु० हो जावेगी। ऋण-पत्रों का भुगतान देय तिथि पर कर दिया गया।

आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां (ऋण-पत्रों पर व्याज के अलावा) कीजिये तथा डिबेन्चर खाता, डिबेन्चर सिंकिंग फन्ड खाता तथा डिबेन्चर सिंकिंग फण्ड इनवैस्टमैन्ट खाता 5 वर्षों का तैयार कीजिये।

Solution :

Journal of Surendra Limited

			Rs.	P.	Rs.	P.
1963 Jan. 1	Bank a/c Dr. To Debenture Application a/c (Amount received on application for 5,000 debentures at Rs. 100 per debenture.)		5,00,000	00	5,00,000	00

Journal Contd.

			Rs.	P.	Rs.	P.
1963 Jan. 1	Debenture Application a/c Dr. To Debentures a/c (Amount received on Debenture Application transferred to *Debentures a/c, on* allotment.)		5,00,000	00	5,00,000	00
Dec. 31	P. & L. Appropriation a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Transfer from P. & L. Appropriation a/c to Debenture Sinking Fund a/c.)		92,313	50	92,313	50
"	Debenture Sinking Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments made.)		92,313	50	92,313	50
1964 Dec. 31	Bank a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Interest received on investments.)		3,692	54	3,692	54
"	P. & L. Appropriation a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Transfer from P. & L. Appropriation a/c to Debenture Sinking Fund a/c.)		92,313	50	92,313	50
"	Debenture Sinking Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments made.)		96,006	04	96,006	04
1965 Dec. 31	Bank a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Receipt of interest on debenture sinking fund investments.)		7,532	78	7,532	78
"	P. & L. Appropriation a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Transfer from P. & L. Appropriation a/c to Debenture Sinking Fund a/c.)		92,313	50	92,313	50
"	Debenture Sinking Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments made.)		99,846	28	99,846	28
1966 Dec. 31	Bank a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Receipt of interest on debenture sinking fund investments.)		11,526	63	11,526	63

Journal Contd.

		Rs.	P.	Rs.	P.
1966 Dec. 31	P. & L. Appropriation a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Transfer from P. & L. Appropriation a/c to Debenture Sinking Fund a/c.)	92,313	50	92,313	50
,,	Debenture Sinking Fund Investments a/c Dr. To Bank a/c (Investments made.)	1,03,840	13	1,03,840	13
1967 Dec. 31	Bank a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Interest received on sinking fund investments.)	15,680	24	15,680	24
,,	P. & L. Appropriation a/c Dr. To Debenture Sinking Fund a/c (Transfer from P. & L. Appropriation a/c to Debenture Sinking Fund a/c.)	92,313	81	92,313	81
,,	Bank a/c Dr. To Debenture Sinking Fund Investments a/c (Investments sold at the purchase price.)	3,92,005	95	3,92,005	95
,,	Debentures a/c Dr. To Bank a/c (Debentures paid at par.)	5,00,000	00	5,00,000	00
,,	Debenture Sinking Fund a/c Dr. To General Reserve a/c (Balance of Debenture Sinking Fund a/c transferred to General Reserve a/c.)	5,00,000	00	5,00,000	00

Debentures Account

		Rs.			Rs.
1963 Dec. 31	To Balance c/d	5,00,000	1963 Jan. 1	By Bank a/c	5,00,000
1964 Dec. 31	To Balance c/d	5,00,000	1964 Jan. 1	By Balance b/d	5,00,000
1965 Dec. 31	To Balance c/d	5,00,000	1965 Jan. 1	By Balance b/d	5,00,000
1966 Dec. 31	To Balance c/d	5,00,000	1966 Jan. 1	By Balance b/d	5,00,000
1967 Dec. 31	To Bank a/c	5,00,000	1967 Jan. 1	By Balance b/d	5,00,000

Debenture Sinking Fund Account

1963		Rs.	1963		Rs.
Dec. 31	To Balance c/d	92,313–50	Dec. 31	By P. & L. Appropriation a/c	92,313–50
1964			1964		
Dec. 31	To Balance c/d	1,88,319–54	Jan. 1	By Balance b/d	92,313–50
			Dec. 31	By Bank a/c	3,692–54
			,,	By P. & L. Appropriation a/c	92,313–50
		1,88,319–54			1,88,319–54
1965			1965		
Dec. 31	To Balance c/d	2,88,165–82	Jan. 1	By Balance b/d	1,88,319–54
			Dec. 31	By Bank a/c	7,532–78
			,,	By P. & L. Appropriation a/c	92,313–50
		2,88,165–82			2,88,165–82
1966			1966		
Dec. 31	To Balance c/d	3,92,005–95	Jan. 1	By Balance b/d	2,88,165–82
			Dec. 31	By Bank a/c	11,526–63
			,,	By P. & L. Appropriation a/c	92,313–50
		3,92,005–95			3,92,005–95
1967			1967		
Dec. 31	To General Reserve a/c	5,00,000–00	Jan. 1	By Balance b/d	3,92,005–95
			Dec. 31	By Bank a/c	15,680–24
			,,	By P. & L. Appropriation a/c	92,313–81
		5,00,000–00			5,00,000–00

Debenture Sinking Fund Investments Account

		Rs.			Rs.
1963 Dec. 31	To Bank a/c	92,313-50	1963 Dec. 31	By Balance c/d	92,313-50
1964 Jan. 1	To Balance b/d	92,313-50	1964 Dec. 31	By Balance c/d	1,88,319-54
Dec. 31	To Bank a/c	96,006-04			
		1,88,319-54			1,88,319-54
1965 Jan. 1	To Balance b/d	1,88,319-54	1965 Dec. 31	By Balance c/d	2,88,165-82
Dec. 31	To Bank a/c	99,846-28			
		2,88,165-82			2,88,165-82
1966 Jan. 1	To Balance b/d	2,88,165-82	1966 Dec. 31	By Balance c/d	3,92,005-95
Dec. 31	To Bank a/c	1,03,840-13			
		3,92,005-95			3,92,005-95
1967 Jan. 1	To Balance b/d	3,92,005-95	1967 Dec. 31	By Bank a/c	3,92,005-95

नोट—(i) यह मान लिया गया है कि विनियोगों से ठीक उतनी ही राशि प्राप्त हुई है जो उनका क्रय मूल्य था।

(ii) अंतिम वर्ष लाभ-हानि नियोजन खाते से 92,313 रु० 81 पै० लाये गये हैं।

Illustration 23.

The following balances appeared in the books of Y & Co. Ltd. on 31st December, 1966 :—

	Rs.
5% Mortgage Debentures	6,00,000
Debenture Sinking Fund	6,05,000
Debenture Sinking Fund Investments :	
Rs. 3,60,000 (5% Govt. Loan purchased at par)	3,60,000
Rs. 2,40,000 4% Govt. Loan purchased for	2,30,000

On 30th June, 1967, 5% Govt. Loan was sold at a premium of one per cent and 4% Govt. Loan at a discount of 8 per cent. On the above date, the debentures were paid off at a premium of 2 per cent. The interest on debentures had only been paid upto 31st December, 1966.

Show the necessary accounts in the books of Y & Co. Ltd.

वाई एण्ड कम्पनी लि० की पुस्तकों में 31 दिसम्बर 1966 को निम्न शेष थे:—

	Rs.
5% वन्धक ऋण	6,00,000
डिवेन्चर सिंकिंग फण्ड	6,05,000
डिवेन्चर सिंकिंग फण्ड इनवैस्टमैन्ट :	
3,60,000 रु० 5% सरकारी ऋण सम मूल्य पर खरीदा गया	3,60,000
2,40,000 रु० 4% सरकारी ऋण खरीदा गया	2,30,000

30 जून 1967 को 5% सरकारी ऋण 1% प्रीमियम पर बेचा गया और 4% सरकारी ऋण 8% बट्टे पर बेचा गया। उसी तारीख को कम्पनी के ऋण-पत्रों को 2% प्रीमियम पर भुगतान कर दिया गया। ब्याज केवल 31 दिसम्बर 1966 तक दिया गया है।

वाई एण्ड कं० लि० की पुस्तकों में आवश्यक खाते बनाइये।

Solution : **5% Mortgage Debentures Account**

1967		Rs.	1967		Rs.
June 30	To Bank a/c	6,00,000	Jan. 1	By Balance b/d	6,00,000

Debenture Sinking Fund Investments Account

1967		Rs.	1967		Rs.
Jan. 1	To Balance b/d		June 30	By Bank a/c :	
	Rs. 3,60,000 5% Govt. Loan	3,60,000		Rs. 3,60,000 5% Govt. Loan	3,63,600
	Rs. 2,40,000 4% Govt. Loan	2,30,000		Rs. 2,40,000 4% Govt. Loan	2,20,800
			Dec. 31	By Debenture Sinking Fund a/c (Loss)	5,600
		5,90,000			5,90,000

Debenture Sinking Fund Account

1967		Rs.	1967		Rs.
Dec. 31	To Debenture Sinking Fund Investments a/c	5,600	Jan. 1	By Balance b/d	6,05,000
,,	To Premium on Redemption of Debentures a/c	12,000			
,,	To General Reserve	5,87,400			
		6,05,000			6,05,000

Premium on Redemption of Debentures Account

1967		Rs.	1967		Rs.
June 30	To Bank a/c	12,000	Dec. 31	By Debenture Sinking Fund a/c	12,000

Interest on Debentures Account

1967		Rs.	1967		Rs.
June 30	To Bank a/c	15,000	Dec. 31	By P. & L. a/c	15,000

… रद्द करने के लिए 100
में खर्चा 100 रु०

Solution : **5% De Investments Accou…**

June 30,61	To Debenture-holders' a/c	4,00	…ne 30,61 / …ec. 31,61	By Bank a/c / By Investments a/c	1,1…
					2,32,400

…पत्रों से

Premium on Rede… Account

		R…			Rs.
June 30,61	To Debenture-holders' a/c	2(	…ec. 31,61	By Debenture Redemption Fund a/c	2,06,800

Debentur… …ebentures Account

		R			Rs.
June 30,61	To 7% Debentures a/c	2,74	…ec. 31,61	By Debenture Redemption Fund a/c	5,600
June 30,61	To Bank a/c	1,45			
		4,20			

…वाले ऋण-पत्र धारकों को नकद में जो 7 रु० दिया
…पत्रों पर देय प्रीमियम है और शेष 2 रु० को नये
…ान लिया गया है।

7% Debe…

…न हो गया है, ऋण-पत्र शोधन विनियोग खाते का
…खाते' में हस्तान्तरित कर दिया गया है।

		Rs.
Dec. 31,61	To Balance c/d	2,80,
		2,80,…

…ां इस प्रकार होंगी :

		Rs.	Rs.
	Dr.	4,00,000	
…ebentures a/c	Dr.	20,000	4,20,000
…c			
…insferred to			
…lemption.)			
	Dr.	2,74,400	
…entures a/c	Dr.	5,600	2,80,000
(a discount			
	Dr.	1,45,600	1,45,600

Debenture Rede…

		Rs.
Dec. 31,61	To Premium on Redemption of Debentures a/c	20,(
,,	To Discount on Issue of Debentures a/c	5,6
Dec. 31,61	To General Reserve a/c	2,06,8
		2,32,4

वार्षिक किस्तों द्वारा शोधन (Redemption by Annual Drawings):

ऋण-पत्रों का शोधन वार्षिक किस्तों द्वारा भी किया जा सकता है। कम्पनी प्रति वर्ष एक निश्चित धन राशि का उपयोग इन ऋण-पत्रों के शोधन कार्य में करती है। उस धन राशि से कुल ऋण-पत्रधारियों में से कुछ को उनके ऋण-पत्रों का भुगतान किया जा सकता है। उक्त भुगतान किन ऋण-पत्रधारियों को किया जाये, यह बात लॉटरी (Lottery) द्वारा अथवा अन्य किसी विधि से निश्चित की जा सकती है। इन ऋण-पत्रधारियों को भुगतान, निर्गमन की शर्तों के अनुसार, सम मूल्य या प्रीमियम पर किया जा सकता है। लेखा प्रविष्टियां उसी प्रकार होंगी जिस प्रकार ऋण-पत्रों का इक मुश्त भुगतान करने पर बताई गई हैं, अन्तर केवल रकम (Amount) का होगा।

जब कभी ऋण-पत्रों का बाजार मूल्य कम्पनी द्वारा शोधन पर दिये जाने वाले मूल्य से कम होता है तो कम्पनी यह भी निश्चय कर सकती है कि ऋण-पत्रधारियों को सीधे भुगतान न करके ऋण-पत्रों को बाजार में खरीद लिया जाये। विधान कम्पनी को अपने स्वयं के ऋण-पत्र खरीदने पर प्रतिबंध नहीं लगाता है, लेकिन ऋण-पत्रों के निर्गमन की शर्तों में ऐसा प्रतिवन्ध लगाया जा सकता है। सामान्यतया कम्पनी को अपने ऋण-पत्र बाजार में खरीदने का अधिकार प्राप्त होता है। कम्पनी बाजार में अपने ऋण-पत्र तभी खरीदती है जबकि उसे लाभ हो। अतः इसकी निम्न लेखा प्रविष्टि होगी :—

Debentures a/c	Dr.	(ऋण-पत्रों के अंकित मूल्य से)
To Cash/Bank a/c		(वास्तविक भुगतान की रकम से)
To Profit on Redemption of Debentures a/c		(लाभ की राशि से)

(Debentures cancelled by purchase in the open market).

Illustration 25

On 1st January, 1964 a company issued 2,000 6% debentures of Rs. 1,000 each at Rs. 960. The expenses of issue amounted to Rs. 5,000 which were written off in 1964. The terms of issue provided that beginning from 1966, Rs. 1,00,000 of debentures should be redeemed either by drawings at par or by purchase in the market every year. The company wrote off Rs. 10,000 from the discount on debentures every year. In 1966, the debentures to be redeemed were repaid at the end of the year by drawings. In 1967 the company purchased for cancellation 100 debentures at the ruling price of Rs. 985 on 31st December, the expenses being Rs. 100. Interest is payable yearly. Ignore income-tax.

Give journal entries for the years 1964 to 1967 and prepare the balance sheet (as far as it relates to debentures) on 31st December, 1967.

1 जनवरी 1964 को एक कम्पनी ने 1,000 रु० वाले 2,000 6% ऋण-पत्र 960 रु० प्रति ऋण-पत्र की दर से निर्गमित किये। निर्गमन व्यय 5,000 रु० था जो 1964 में अपलिखित कर दिया गया। निर्गमन की शर्तों के अनुसार 1966 से प्रारम्भ होकर प्रति वर्ष 1 लाख रु० के ऋण-पत्र आहरण द्वारा या बाजार में खरीद कर शोधन किये जाने चाहियें। कम्पनी ने प्रति वर्ष ऋण-पत्रों के निर्गमन पर दिये हुए बट्टे में से 10,000 रु० अपलिखित किये। 1966 के अन्त में शोध्य योग्य ऋण-पत्रों का भुगतान

ग्राहरण द्वारा किया गया। 31 दिसम्बर 1967 को कम्पनी ने ऋण पत्रों को रद्द करने के लिए 100 ऋण-पत्र985 रु० प्रति ऋण-पत्र की दर से बाजार से खरीद लिये। इस सम्बन्ध में खर्चा 100 रु० हुआ। ब्याज वार्षिक देय है। आयकर का ध्यान नहीं रखना है।

1964 से 1967 तक की जर्नल प्रविष्टियां दीजिये और 31 दिसम्वर, 1967 को ऋण-पत्रों से सम्बन्धित मदों को दिखाते हुए चिट्ठा बनाइये।

Solution : **Journal**

			Rs.	Rs.
1964 Jan. 1	Bank a/c Dr. Discount on Issue of Debentures a/c Dr. To Debentures a/c (Issue of 2,000 Debentures of Rs. 1,000 each at Rs. 960 per debenture.)		19,20,000 80,000	 20,00,000
,,	Debenture Issue Expenses a/c Dr. To Bank a/c (Expenses incurred on the issue of debentures.)		5,000	 5,000
Dec. 31	Debenture Interest a/c Dr. To Bank a/c (Debenture Interest paid.)		1,20,000	 1,20,000
,,	Profit and Loss a/c Dr, To Debenture Issue Expenses a/c To Discount on Issue of Debentures a/c To Debenture Interest a/c (Debenture Issue expenses Rs. 5,000, discount on issue of debentures Rs. 10,000 and debenture interest Rs. 1,20,000 written off.)		1,35,000	 5,000 10,000 1,20,000
1965 Dec. 31	Debenture Interest a/c Dr. To Bank a/c (Debenture interest paid.)		1,20,000	 1,20,000
,,	Profit and Loss a/c Dr. To Discount on Issue of Debentures a/c To Debenture Interest a/c (Discount on issue of debentures and debenture interest written off.)		1,30,000	 10,000 1,20,000

Journal Contd.

			Rs.	Rs.
1966 Dec. 31	Debenture Interest a/c	Dr.	1,20,000	
	To Bank a/c			1,20,000
	(Debenture interest paid.)			
,,	Profit and Loss a/c	Dr.	1,30,000	
	To Discount on Issue of Debentures a/c			10,000
	To Debenture Interest a/c			1,20,000
	(Discount on issue of debentures and debenture interest written off.)			
,,	6% Debentures a/c	Dr.	1,00,000	
	To Bank a/c			1,00,000
	(Redemption of debentures worth Rs. 1,00,000 at par, by drawings.)			
1967 Dec. 31	Debenture Interest a/c	Dr.	1,14,000	
	To Bank a/c			1,14,000
	(Debenture interest paid.)			
,,	6% Debentures a/c	Dr.	1,00,000	
	To Bank a/c			98,600
	To Profit on Redemption of Debentures a/c			1,400
	(Cancellation of 100 debentures of Rs. 1,000 each by purchasing them in the market @ Rs. 985 per debenture and Rs. 100 expenses incurred thereon.)			
,,	Profit & Loss a/c	Dr.	1,22,600	
	Profit on Redemption of Debentures a/c	Dr.	1,400	
	To Discount on Issue of Debentures a/c			10,000
	To Debenture Interest a/c			1,14,000
	(Discount on issue of debentures Rs. 10,000 and debenture interest Rs. 1,14,000 written off.)			

Balance Sheet
As at 31st December, 1967

	Rs.		Rs.
1,800 6% Debentures of Rs. 1,000 each	18,00,000	Sundry Assets	....
		Discount on Issue of Debentures	40,000

नोट:— ऋण-पत्रों के शोधन पर लाभ 100 रु० खर्चा घटाने के बाद निकाला गया है।

अपने ऋण-पत्रों का विनियोग के रूप में क्रय (P**y**
investment)—कभी-कभी कम्पनी अपने ऋण-पत्रों को बा
बल्कि उन्हें विनियोग के रूप में कायम रखती है। ऐसा कर
हो जाती है। ऐसा तब किया जाता है जब कम्पनी के पास थो
आवश्यकता पड़ने पर ऋण-पत्र पुनः बाजार में बेच दिये जाते हैं।
कम्पनी इन ऋण-पत्रों को रद्द कर देती है।

Illustration 26.

A company had issued 1,000 9% debentures of Rs. 100 each. On De 1968 it purchased 200 of its debentures at Rs. 90 in the open market and them as investments. On December 31, 1969 half of these debentures wer cancelled and the remaining half were sold at Rs. 102. The company prepares its annual accounts on December 31.

Give necessary journal entries for purchase, cancellation and resale of the debentures. Also show how debentures will appear in the balance-sheet of the company on December 31, 1968.

एक कम्पनी ने 100 रु० वाले 1,000 9% ऋण-पत्र निर्गमित कर रखे थे। 31 दिसम्बर, 1968 को इसने अपने ऋण-पत्रों में से 200 ऋण-पत्र 90 रु० की दर से बाजार में खरीदे। 31 दिसम्बर, 1969 को इन ऋण-पत्रों में से आधे रद्द कर दिये गये और शेष आधे 102 रु० की दर से बेच दिये गये। कम्पनी अपने वार्षिक खाते 31 दिसम्बर को तैयार करती है।

ऋण-पत्रों के क्रय, निरसन व पुनर्विक्री के सम्बन्ध में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। यह बताइये कि ऋण-पत्र 31 दिसम्बर, 1968 को कम्पनी के चिट्ठे में किस प्रकार दिखाये जावेंगे।

Solution :

Journal

				Rs.	Rs.
1968 Dec. 31	Own Debentures a/c To Bank a/c (200 Debentures of Rs. 100 each purchased at Rs. 90.)	Dr.		18,000	 18,000
1969 Dec. 31	9% Debentures a/c To Own Debentures a/c To Profit on Redemption of Debentures a/c (100 Debentures cancelled.)	Dr.		10,000	 9,000 1,000

| Contd.

Date	Particulars		Rs.	Rs.
1969 Dec. 31	Bank a/c To Own Debentures a/c (100 Debentures resold.)	Dr.	10,200	10,200
Dec. 31	Profit on Redemption of Debentures a/c Own Debentures a/c To General Reserve a/c (Profit transferred.)	Dr. Dr.	1,000 1,200	2,200

Balance Sheet as on December 31, 1968

	Rs.		Rs.
1,000 9% Debentures of Rs. 100 each	1,00,000	**Investments :** Own Debentures	18,000

ऋण-पत्रों के निर्गमन पर दिये गये बट्टे इत्यादि को अपलिखित करना (Writing off discount on issue of debentures) :

ऋण-पत्रों के निर्गमन पर दिये गये बट्टे अथवा निर्गमन पर हुई हानि या खर्चों को जल्दी ही अपलिखित करना अच्छा होता है। जब कभी उक्त बट्टे, हानि या खर्चों को अपलिखित करना हो तो लाभ-हानि खाते को डेबिट तथा बट्टे खाते या खर्चे खाते को क्रेडिट करना चाहिये।

इस बट्टे या खर्चे खाते को कितने वर्षों में कितनी रकम से अपलिखित किया जाये, यह अलग-अलग परिस्थितियों पर निर्भर करता है। अधिक लाभ होने की स्थिति में कुछ कम्पनियां एक साथ एक ही वर्ष में इनको अपलिखित कर देती हैं। अन्य कम्पनियां इसको कई वर्षों में धीरे-धीरे अपलिखित करती हैं। यदि ऋण-पत्रों का शोधन एक निश्चित अवधि के अन्त में किया जाता है तो इन खर्चों को उक्त अवधि में बराबर-बराबर अपलिखित किया जा सकता है। उदाहरणार्थ, यदि एक कम्पनी ने 1 लाख रु० के ऋण-पत्र 5 प्रतिशत बट्टे पर निर्गमित किये तथा उनका शोधन 10 वर्ष बाद करना है तो बट्टे के 5,000 रु० में से 10 वर्ष तक प्रति वर्ष 500 रु० अपलिखित किये जा सकते हैं। बट्टे की जो रकम अपलिखित नहीं की गई है, उसको चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखाया जायेगा।

यदि ऋण-पत्रों का किस्तों में भुगतान किया जाता है तो बट्टे के खर्चे को अपलिखित करने की अन्य विधि अपनाई जा सकती है। ऐसी स्थिति में, बकाया ऋण-पत्र (Outstanding Debentures) का शोधन की कुल अवधि में अनुपात ज्ञात किया जायेगा और बट्टे का खर्चा उसी अनुपात में अपलिखित किया जायेगा। इससे फायदा यह होगा कि कम्पनी ने जिस अनुपात में ऋण-पत्रों के निर्गमन से लाभ उठाया है उसी अनुपात में लाभ-हानि खाते को डेबिट कर दिया जायेगा। यह विधि अगले उदाहरण से स्पष्ट हो जाये

Illustration 27

A company issued debentures of the face value of Rs. 1,00,000 at a discount of 6%. The debentures were repayable by annual drawings of Rs. 20,000.

Show the Discount Account in the company's ledger for the duration of debentures.

एक कम्पनी ने 1 लाख रु० के अंकित मूल्य के ऋण-पत्रों को 6% बट्टे पर निर्गमित किया। 20,000 रु० के ऋण-पत्रों का भुगतान प्रति वर्ष करना है।

कम्पनी की पुस्तकों में ऋण-पत्रों की अवधि के लिए बट्टा खाता दिखलाइये।

Solution :

Discount on Issue of Debentures Account

		Rs.			Rs.
1st year (Date of issue)	To Debentures a/c	6,000	1st year (At the end of the year)	By Profit & Loss a/c	2,000
				By Balance c/d	4,000
		6,000			6,000
2nd year	To Balance b/d	4,000	2nd year	By Profit & Loss a/c	1,600
			,,	By Balance c/d	2,400
		4,000			4,000
3rd year	To Balance b/d	2,400	3rd year	By Profit & Loss a/c	1,200
			,,	By Balance c/d	1,200
		2,400			2,400
4th year	To Balance b/d	1,200	4th year	By Profit & Loss a/c	800
			,,	By Balance c/d	400
		1,200			1,200
5th year	To Balance b/d	400	5th year	By Profit & Loss a/c	400

नोटः—एक लाख रु० के ऋण-पत्रों पर कुल कटौती 6,000 रु० दी गई है। ऋण-पत्रों की निर्गमन की शर्तों के अनुसार 20,000 रु० के ऋण-पत्र प्रति वर्ष भुगतान किये जावेंगे। इसका अर्थ यह हुआ कि ऋण-पत्रों की राशि का उपयोग निम्न प्रकार से होगा :—

		रु०
प्रथम वर्ष में	कुल धन राशि	1,00,000
द्वितीय वर्ष में	(1,00,000—20,000) रु०	80,000
तीसरे वर्ष में	(80,000—20,000) रु०	60,000
चौथे वर्ष में	(60,000—20,000) रु०	40,000
पांचवें वर्ष में	(40,000—20,000) रु०	20,000

चूंकि पाँचों वर्षों में ऋण-पत्रों की राशि का उपयोग समान नहीं हुआ है, अतः कटौती की रकम पांच वर्षों में समान रूप से नहीं बांटी जावेगी, वरन् धन राशि के उपयोग के अनुपात में बांट दी जावेगी। उपयोग का अनुपात निम्न प्रकार है :—

10 : 8 : 6 : 4 : 2 अथवा 5 : 4 : 3 : 2 : 1

प्रथम वर्ष में कटौती की राशि	6,000 रु० × 5/15 =	2,000 रु०
द्वितीय वर्ष में ,, ,, ,,	6,000 रु० × 4/15 =	1,600 रु०
तीसरे वर्ष में ,, ,, ,,	6,000 रु० × 3/15 =	1,200 रु०
चौथे वर्ष में ,, ,, ,,	6,000 रु० × 2/15 =	800 रु०
पांचवें वर्ष में ,, ,, ,,	6,000 रु० × 1/15 =	400 रु०

ऋण-पत्रों के शोधन पर प्रीमियम (Premium on Redemption of Debentures)

ऋण-पत्रों के शोधन पर दिया गया प्रीमियम पूंजीगत हानि है। यदि निर्गमन की शर्तों के अनुसार ऋण-पत्रों के शोधन पर प्रीमियम अवश्य दिया जाना है तो इस प्रीमियम का आयोजन (Provision) ऋण-पत्रों के निर्गमन के समय से ही प्रारम्भ कर देना चाहिए। यदि ऋण-पत्रों के शोधन पर दिया जाने वाला प्रीमियम वैकल्पिक है तो इसका आयोजन किया जाना आवश्यक नहीं है। ऋण-पत्रों के शोधन पर प्रीमियम देना आवश्यक है या वैकल्पिक, यह ऋण-पत्रों के निर्गमन की शर्तों पर निर्भर करता है। मान लीजिये, निर्गमन की शर्तों के अनुसार ऋण-पत्र 1975 में 5% प्रीमियम पर शोधित किये जावेंगे। निर्गमन की शर्तों से स्पष्ट है कि 1975 में कम्पनी को ऋण-पत्रों के शोधन पर प्रीमियम देना पड़ेगा, अतः इस प्रीमियम का प्रावधान निर्गमन के समय से ही आरम्भ कर देना चाहिए। इसके विपरीत मान लीजिये कि निर्गमन की शर्तों के अनुसार ऋण-पत्रों का शोधन 1975 में सम मूल्य पर करना है। ऐसी स्थिति में भी यदि कम्पनी चाहे तो 1975 के पहले इन ऋण-पत्रों का भुगतान प्रीमियम पर कर सकती है। इस उदाहरण में ऋण-पत्रों पर प्रीमियम का भुगतान वैकल्पिक माना जायेगा। अतः इस प्रीमियम का प्रावधान आवश्यक नहीं है।

शोधन पर दिये जाने वाले प्रीमियम को ऋण-काल में बांट देना चाहिए। जैसे, ऋण-पत्र 10 वर्ष के लिए निर्गमित किये गये हैं और शोधन पर 50,000 रु० प्रीमियम के देने हैं तो पहले वर्ष से ही लाभ-हानि खाते से 5,000 रु० प्रतिवर्ष Premium on Redemption of Debentures a/c में हस्तान्तरित करते रहना चाहिए। इससे 10 वर्षों में इस खाते में 50,000 रु० की राशि संचित हो जावेगी। प्रत्येक वर्ष में आयोजन करने से अन्त के वर्ष के लाभ-हानि खाते पर अधिक भार नहीं पड़ता है।

अंशों एवम् ऋण-पत्रों पर कमीशन

धारा 76 (1) के अन्तर्गत कम्पनी को उन व्यक्तियों अथवा संस्थाओं को कमीशन देने का अधिकार है जो कि कम्पनी की पूंजी प्राप्त करने अथवा जुटाने में मदद करते हैं। कमीशन का भुगतान निम्नलिखित शर्तों की पूर्ति पर किया जा सकता है :—

(1) अन्तर्नियमों (Articles of Association) ने इस प्रकार के कमीशन देने का अधिकार दे रखा हो।

(2) अंशों पर कमीशन उनके निर्गमन मूल्य के 5% से अधिक नहीं होना चाहिए और ऋण-पत्रों पर उनके निर्गमन मूल्य के $2\frac{1}{2}$% से अधिक नहीं होना चाहिए। यदि अन्तर्नियमों में उपरोक्त दरों से कम दरों का प्रावधान है तो कमीशन अन्तर्नियमों में दी हुई दर से अधिक नहीं हो सकता है।

(3) यदि अंश या ऋण-पत्र जनता में निर्गमित किये जाने को हैं तो कमीशन के रूप में दी जाने वाली राशि या दर प्रविवरण में दी जानी चाहिए। यदि अंश या ऋण-पत्र जनता में निर्गमित नहीं किये जाने को हैं तो कमीशन की राशि या दर स्थानापन्न विवरण में अथवा परिपत्र या नोटिस में दी जानी चाहिए। साथ में ही उल्लेखित कमीशन पर निर्गमित किये जाने वाले अंशों या ऋण-पत्रों की संख्या का भी उल्लेख होना चाहिए।

उपरोक्त दशाओं के अतिरिक्त अन्य किसी दशा में कम्पनी द्वारा अंशों एवम् ऋण-पत्रों पर कमीशन नहीं दिया जा सकता है। यदि कोई कम्पनी या उसका अधिकारी उपरोक्त नियमों का उल्लंघन करता है तो कम्पनी और उसका प्रत्येक अधिकारी जो दोषी है, उस पर 500 रुपये तक जुर्माना किया जा सकता है।

अंशों व ऋण-पत्रों का अभिगोपन (Under-writing of Shares and Debentures)—

कम्पनी में पूंजी निर्गमन बहुत ही महत्वपूर्ण कार्य है। सार्वजनिक कम्पनी अपने अंशों को खरीदने के लिए जनता को आमंत्रित करती है। जनता द्वारा न्यूनतम अभिदान-राशि (Minimum Subscription) के अंश न खरीदने पर कम्पनी को व्यापार प्रारम्भ करने का अधिकार नहीं रहता है। यदि पर्याप्त मात्रा में पूंजी नहीं खरीदी गई तो कम्पनी का कार्य संचालन सुगमतापूर्वक नहीं हो सकता। इन सब कठिनाइयों से बचने के लिये कम्पनी अपने अंशों का अभिगोपन करवा लेती है। अभिगोपन में अभिगोपक कम्पनी को गारन्टी देता है कि एक निश्चित समय में कम्पनी के निर्गमित अंश या ऋण-पत्र (सभी या उनका कोई भाग) यदि जनता द्वारा नहीं खरीदे गये तो वह (अभिगोपक) उन अंशों या ऋण-पत्रों को स्वयं खरीदेगा। इस तरह से अभिगोपन एक प्रकार का बीमा है जो कम्पनी को अंश या ऋण-पत्र निर्गमन पर जनता द्वारा न खरीदे जाने की जोखिम से सुरक्षा प्रदान करता है। गारन्टी देने के बदले में कम्पनी की तरफ से अभिगोपक को जो पुरस्कार मिलता है, उसको 'अभिगोपन कमीशन, कहते हैं।

अभिगोपन कम्पनी की समस्त पूंजी के लिये हो सकता है अथवा उसके किसी भाग के लिए हो सकता है। अभिगोपकों को कमीशन अभिगोपित राशि पर मिलता है। उदाहरणार्थ, अभिगोपक ने कम्पनी की 5 लाख रु० की अंश पूंजी का अभिगोपन किया। जनता द्वारा केवल 3 लाख रु० के अंश खरीदे गये। ऐसी स्थिति में अभिगोपक को शेष 2 लाख रु० के अंश खरीदने पड़ेंगे परन्तु उसको अभिगोपन कमीशन 5 लाख रु० की अभिगोपित राशि पर मिलेगा।

अभिगोपन कमीशन पर भी धारा 76 (1) में दिये हुए प्रतिबन्ध लागू होते हैं। अभिगोपन कमीशन का भुगतान नकद, अंश (Shares) या ऋण-पत्रों के निर्गमन द्वारा हो सकता है।

अभिगोपक एक व्यक्ति, फर्म या कम्पनी हो सकती है। अंशों या ऋण-पत्रों का अभिगोपन होने पर उसका विवरण एवं अभिगोपकों का नाम भी प्रविवरण में दिया जाता है। साथ में ही संचालकों को

प्रविवरण में अपनी सम्मति प्रकाशित करनी पड़ती है कि उनकी दृष्टि में अभिगोपकों की आर्थिक स्थिति सुदृढ़ है और यदि अंश या ऋण-पत्र जनता द्वारा न खरीदे गये, तो वे इन्हें खरीद कर अपने दायित्व की पूर्ति करने में समर्थ होंगे।

अभिगोपन पर दिया जाने वाला कमीशन पूंजीगत हानि है। इस हानि को पूंजीगत लाभों में से या रेवेन्यूगत लाभों में से अपलिखित किया जा सकता है। जब तक इस हानि को अपलिखित नहीं किया जाता है, इसको चिट्ठे में सम्पत्ति पक्ष की ओर दिखाया जाता है।

उप-अभिगोपन (Sub-underwriting)—

यदि अभिगोपक की सम्मति में अभिगोपन के परिणामस्वरूप जोखिम अत्यधिक है तो वह अपनी जोखिम को किसी अन्य व्यक्ति से प्रसंविदा करके हस्तान्तरित कर सकता है। उप-अभिगोपक अभिगोपक के प्रति प्रसंविदे के अनुसार निश्चित राशि के अंशों के निर्गमन के लिए उत्तरदायी रहता है। उपअभिगोपन अभिगोपक और उपअभिगोपक के मध्य में प्रसंविदा है। इससे कम्पनी और अभिगोपक के मध्य में हुए प्रसंविदे पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। उपअभिगोपक अभिगोपक के प्रति उत्तरदायी है परन्तु कम्पनी के प्रति नहीं। उप-अभिगोपक को अभिगोपन कार्य के लिए अभिगोपक से कमीशन प्राप्त होता है जिसे 'उपअभिगोपन कमीशन' कहते हैं। कम्पनी उपअभिगोपक को कमीशन देने के लिए उत्तरदायी नहीं है।

फर्म अभिगोपन (Firm Underwriting)—

फर्म अभिगोपन में अभिगोपक कम्पनी से यह अनुबन्ध करता है कि वह (अभिगोपक) कम्पनी से एक निश्चित मात्रा तक अंश या ऋण-पत्र स्वयं खरीदेगा। प्रायः इस प्रकार का अनुबन्ध प्रारम्भ में ही अभिगोपन के साथ कर लिया जाता है। यह अनुबन्ध करके अभिगोपक उस कम्पनी में अपने नाम से एक निश्चित राशि के अंशों या ऋण-पत्रों का बंटन सुरक्षित करवा लेता है। इस प्रकार के अनुबन्ध के अभाव में अभिगोपक को केवल वे ही अंश बंटित किये जाते हैं जिनके खरीदने के लिये जनता से प्रार्थना-पत्र नहीं आये हैं। जनता से समस्त अंशों या ऋण-पत्रों को खरीदने के प्रार्थना-पत्र आने पर, अभिगोपक के नाम में अंशों का बंटन नहीं किया जाता है। जब अभिगोपक अपने नाम में अंशों का बंटन निश्चित रूप में करवाना चाहता है तब वह कम्पनी से उक्त प्रकार का समझौता कर लेता है।

फर्म अभिगोपन की दशा में, अभिगोपक का शुद्ध दायित्व निकालते समय फर्म अभिगोपित अंशों को घटा दिया जाता है, जैसे एक अभिगोपक ने 10,000 अंशों का अभिगोपन अनुबन्ध किया जिसमें से 1,000 अंश फर्म अभिगोपन के थे। जनता ने 6,000 अंश खरीदने के लिये अनुदान किया तो अभिगोपक का शुद्ध दायित्व (Net Liability) केवल 3,000 अंश खरीदने के लिए रहेगा।

दलाली (Brokerage)—

स्कन्ध-दलाल उस व्यक्ति को कहते हैं जो कम्पनी के अंशों व ऋण-पत्रों को बाजार में बिकवाने में सहायता करता है। एक निश्चित दलाली के बदले में वह जनता से अंश या ऋण-पत्र खरीदने के लिये प्रार्थना-पत्र लाता है। उसके मारफत अंशों या ऋण-पत्रों को खरीदने के लिए, जो प्रार्थना पत्र आते हैं, उन पर उसको दलाली दी जाती है। दलाली पर भी धारा 76 (1) में दिये हुए प्रतिबन्ध लागू होते हैं।

Illustration 28

A company issues 2,000 7% debentures of Rs. 1,000 each at a premium of 5%. Sixty per cent of the issue was underwritten by M/s Ravi Prakash & Co. at the maximum rate of commission allowed by law. Applications were received for 1,600 debentures which were accepted and paid for in full. Give journal entries.

एक कम्पनी ने 1,000 रु० वाले 2,000 7% ऋण-पत्रों का 5% प्रीमियम पर निर्गमन किया। मेसर्स रवि प्रकाश एण्ड कम्पनी ने उक्त निर्गमन के 60 प्रतिशत का अभिगोपन किया तथा उनको कमीशन विधान द्वारा इजाजत दी गई अधिकतम दर के अनुसार देय है। 1,600 ऋण-पत्रों के लिए प्रार्थना-पत्र आये जिनको स्वीकार कर लिया गया तथा जिनका पूरा भुगतान हो गया। जर्नल प्रविष्टियां दीजिए।

Solution : **Journal**

			Rs.	Rs.
	Bank a/c Dr. To Debenture Application a/c (Application money on 1,600 debentures received.)		16,80,000	16,80,000
	Debenture Application a/c Dr. To 7% Debentures a/c To Premium on Issue of Debentures a/c (Amount received on debenture application transferred to Debentures Account, on allotment.)		16,80,000	16,00,000 80,000
	Ravi Prakash & Co.'s a/c Dr. To 7% Debentures a/c To Premium on Issue of Debentures a/c (Allotment of 240 debentures to the underwriters in pursuance of their agreement.)*		2,52,000	2,40,000 12,000
	Underwriting Commission a/c Dr. To Ravi Prakash & Co.'s a/c (Commission @ $2\frac{1}{2}$% (maximum allowed by law) on 1,200 debentures calculated at the issue price of Rs. 1,050 per debenture.)		31,500	31,500
	Bank a/c Dr. To Ravi Prakash & Co.'s a/c (Amount received from underwriters in full settlement.)		2,20,500	2,20,500

*नोट—अभिगोपित ऋण-पत्र 1,200; कुल प्रार्थना-पत्र आये 1,600; अन्य सूचना के अभाव में $\frac{1,600 \times 60}{100}$ ऋण-पत्र = 960 ऋण-पत्र अभिगोपकों के जरिये माने जायेंगे। अतः उनका दायित्व 240 ऋण-पत्रों का ही रहेगा।

Illustration 29.

The Underwriters Pvt. Ltd. agreed to underwrite the new issue of 50,000 equity shares of Rs. 100 each of Lucky Ltd. The agreed commission was 5% payable as to 40% in cash and the rest in fully paid up shares. The public subscribed for 30,000 shares and the rest had to be taken up by the Underwriters Pvt. Ltd. These shares were subsequently quoted in the market at 10% discount.

Pass the necessary journal entries in the books of Lucky Ltd. and the Underwriters Pvt. Ltd. Also open the necessary accounts in the books of the under-writers.

दी अन्डरराइटर्स प्राइवेट लिमिटेड़ ने लक्की लिमिटेड के 100 रु० वाले 50,000 ईक्विटी अंशों के नये निर्गमन के अभिगोपन का अनुबंध किया। कमीशन 5 प्रतिशत तय हुआ जिसका भुगतान 40 प्रतिशत नकद देय है तथा शेष राशि पूर्ण प्रदत्त अंशों में चुकानी है। जनता ने 30,000 अंशों के लिये प्रार्थना-पत्र भेजे तथा बाकी अंश अन्डरराइटर्स प्राइवेट लिमिटेड को लेने पड़े। बाद में, इन अंशों का बाजार मूल्य 10 प्रतिशत बट्टे पर उद्धृत किया गया।

लक्की लिमिटेड तथा अन्डरराइटर्स प्राइवेट लिमिटेड की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। अभिगोपकों की पुस्तकों में आवश्यक खाते भी खोलिए।

Solution :

Journal of Lucky Limited

	Particulars		Rs.	Rs.
	Bank a/c Dr. To Equity Share Application a/c (Application money received on 30,000 Equity shares @ Rs. 100 per share.)		30,00,000	30,00,000
	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Amount received on equity share application transferred to Share Capital a/c on allotment.)		30,00,000	30,00,000
	Underwriters Pvt. Ltd. Dr. To Equity Share Capital a/c (20,000 Equity shares not subscribed for by the public allotted to the underwriters.)		20,00,000	20,00,000
	Underwriting Commission a/c Dr. To Underwriters Pvt. Ltd. (Underwriting commission due.)		2,50,000	2,50,000
	Underwriters Pvt. Ltd. Dr. To Equity Share Capital a/c (1,500 Equity shares allotted to underwriters in part payment i. e. upto 60% of underwriting commission.		1,50,000	1,50,000

Journal Contd.

			Rs.	Rs.
	Bank a/c Dr. To Underwriters Pvt. Limited (Amount received from underwriters in full settlement.)		19,00,000	19,00,000

Journal of Underwriters Pvt. Ltd.

			Rs.	Rs.
	Shares in Lucky Ltd. a/c Dr. To Lucky Ltd. (20,000 Shares purchased in Lucky Ltd. as per underwriting agreement.)		20,00,000	20,00,000
	Lucky Ltd. Dr. To Underwriting Commission a/c (Underwriting Commission due from Lucky Ltd.)		2,50,000	2,50,000
	Shares in Lucky Ltd. a/c Dr. To Lucky Ltd. (1,500 Shares received in part payment of underwriting commission.)		1,50,000	1,50,000
	Lucky Ltd. Dr. To Bank a/c (Amount due to Lucky Ltd. paid.)		19,00,000	19,00,000
	Underwriting Commission a/c Dr. To Shares in Lucky Ltd. a/c (Balance of Underwriting Commission a/c transferred to Shares in Lucky Ltd. a/c.)		2,50,000	2,50,000
	Shares in Lucky Ltd. a/c Dr. To Profit and Loss a/c (21,500 Shares in Lucky Ltd. valued at 10% discount and balance of this a/c transferred.)		35,000	35,000

Books of Underwriters Pvt. Ltd.

Shares in Lucky Ltd. Account

		Rs.			Rs.
	To Lucky Ltd.	20,00,000	By Underwriting Commission a/c		2,50,000
	To Lucky Ltd.	1,50,000	By Balance c/d		19,35,000
	To P. & L. a/c (Transfer)	35,000			
		21,85,000			21,85,000

Lucky Limited

	Rs.		Rs.
To Underwriting Commission a/c	2,50,000	By Shares in Lucky Ltd. a/c	20,00,000
To Bank a/c	19,00,000	By Shares in Lucky Ltd. a/c	1,50,000
	21,50,000		21,50,000

Underwriting Commission Account

	Rs.		Rs.
To Shares in Lucky Ltd. a/c	2,50,000	By Lucky Ltd.	2,50,000

व्यापार क्रय करना (Purchase of business)

कभी-कभी कम्पनी एक चालू व्यापार को खरीद लेती है। यह व्यापार किसी एकल व्यापारी, फर्म या किसी अन्य कम्पनी का हो सकता है। जो व्यापार बेचता है उसको विक्रेता (Vendor) कहते हैं। व्यापार खरीदने के एवज में जो मूल्य दिया जाता है उसको प्रतिफल (Consideration) कहते हैं। कम्पनी व्यापार खरीदते समय पुराने व्यापार की समस्त सम्पत्तियां तथा दायित्व खरीद सकती है। जब कम्पनी पुराने व्यापार की समस्त सम्पत्तियां खरीदती है, उस अवस्था में पुराने व्यापार के रोकड़ शेष तक को नई कम्पनी ले लेती है। समस्त व्यापार को खरीदते समय कम्पनी देनदारों (Debtors) व लेनदारों (Creditors) को भी खरीद लेती है। खरीदने के पश्चात् देनदारों से धन वसूल करने का दायित्व कम्पनी का ही होता है, उसी प्रकार से लेनदारों को भुगतान करने का दायित्व कम्पनी का ही होता है। समस्त व्यापार को खरीदने के बजाय कम्पनी कुछ सम्पत्तियाँ तथा कुछ दायित्व या केवल कुछ सम्पत्तियाँ भी खरीद सकती है। कौन-कौन सी सम्पत्तियाँ खरीदी गई हैं, कितने मूल्य में खरीदी गई हैं, ये सब कम्पनी और पुराने व्यापारी के मध्य में समझौते पर निर्भर है।

प्रतिफल का निर्धारण (Ascertainment of Consideration)—

प्रतिफल या क्रय-मूल्य कम्पनी और व्यापार विक्रेता (Vendor) के मध्य हुये समझौते पर निर्भर करता है। यदि क्रय-शर्तों में प्रतिफल का कोई विशेष उल्लेख नहीं है, तो प्रतिफल खरी सम्पतियों (Net Assets) के मूल्य के बराबर होगा। खरी सम्पत्ति से तात्पर्य कम्पनी द्वारा खरीदी गई सम्पत्तियों के कुल मूल्य में से खरीदे गये दायित्वों के कुल मूल्य घटा देने के पश्चात् रहे शेष से है। यह निम्नलिखित उदाहरण से स्पष्ट हो जाता है :—

Balance Sheet of A & B

	Rs.		Rs.
Creditors	20,000	Cash	10,000
Mrs. A's Loan	10,000	Debtors	13,000
General Reserve	8,000	Stock	20,000
Capital A	60,000	Machinery	35,000
Capital B	40,000	Buildings	60,000
	1,38,000		1,38,000

यदि कम्पनी इस व्यवसाय को चिट्ठे के मूल्यों पर खरीद लेती है तो खरी सम्पत्तियों का मूल्य (1,38,000–30,000) रु० अर्थात् 1,08,000 रु० होगा।—

यदि व्यापार खरीदते समय विभिन्न सम्पत्तियाँ तथा दायित्व चिट्ठे के मूल्य पर नहीं लिये गये हैं तो खरी सम्पत्ति का मूल्य विभिन्न सम्पत्तियों के परिवर्तित मूल्यों को ध्यान में रखकर ही निकाला जावेगा। मान लीजिये, उक्त कम्पनी ने व्यवसाय खरीदते समय श्रीमती अ के ऋण को खरीदना स्वीकार नहीं किया, स्टॉक का मूल्य 15,000 रु० आँका गया, मशीन का 25,000 रु०, शेष सम्पत्तियों का मूल्य चिट्ठे के अनुसार। ऐसी स्थिति में खरी सम्पत्तियों का मूल्य (10,000+13,000+15,000+25,000+60,000) रु०–20,000 रु०=(1,23,000–20,000) रु० = 1,03,000 रु० होगा।

ख्याति का मूल्य ज्ञात करना—व्यापार खरीदते समय विभिन्न सम्पत्तियों के मूल्य अलग-अलग दिये हुये होते हैं। यदि ख्याति का मूल्य भी अलग दिया हुआ है तो कोई कठिनाई नहीं होती है। परन्तु कभी-कभी ख्याति का मूल्य अलग से नहीं दिया रहता है। ऐसी स्थिति में अन्य सूचनाओं की सहायता के आधार पर ख्याति का मूल्य निकाला जाता है। जब ख्याति का मूल्य निकलवाया जाता है तो प्रतिफल-मूल्य दिया रहता है। **प्रतिफल मूल्य में से खरी सम्पत्तियों का मूल्य घटा देने से जो शेष रहता है, वह ख्याति का मूल्य है।** मान लीजिए, चिट्ठे के आधार पर विभिन्न सम्पत्तियों तथा दायित्वों को खरीदते हुए उपरोक्त ए और बी के व्यवसाय का प्रतिफल कम्पनी ने 1,50,000 रु० दिया। ऐसी स्थिति में ख्याति का मूल्य इस प्रकार निकाला जावेगा। प्रतिफल-मूल्य 1,50,000 रु० है। खरी सम्पत्तियों का मूल्य (1,38,000–30,000) रु०=1,08,000 रु० है। अतः ख्याति का मूल्य हुआ=(1,50,000 –1,08,000) रु० = 42,000 रु०।

ख्याति को निम्नलिखित सूत्र की सहायता से ज्ञात किया जा सकता है :—

ख्याति (Goodwill)=प्रतिफल या क्रय-मूल्य का खरी सम्पत्तियों के मूल्य पर आधिक्य।

पूंजीगत लाभ - यदि प्रतिफल खरी सम्पत्तियों के मूल्य से कम है तो ऐसी अवस्था में उस व्यापार को खरीदने में पूंजीगत लाभ होगा। पूंजीगत लाभ निम्न सूत्र की सहायता से ज्ञात किया जा सकता है :—

पूंजीगत लाभ=खरी सम्पत्तियों के मूल्य का प्रतिफल या क्रय मूल्य पर आधिक्य।

विक्रेता को भुगतान (Payment to Vendor) : व्यापार खरीदने पर प्रायः विक्रेता को कुछ भुगतान नकद में किया जाता है, शेष प्रतिफल के लिए उसको कम्पनी के अधिमान अंश, ईक्विटी अंश, ऋण-पत्र आदि बंटित कर दिए जाते हैं।

व्यापार-क्रय पर लेखा प्रविष्टियां (Accounting entries) :

सम्पत्ति तथा दायित्व खरीदने पर—

Sundry Assets a/c	Dr.	(ख्याति सहित सम्पत्तियों के क्रय मूल्य से)
To Sundry Liabilities a/c		(दायित्वों के क्रय मूल्य से)
To Vendor's a/c		(प्रतिफल से)
(Sundry assets and liabilities taken over)		

क्रय मूल्य का भुगतान करने पर—

Vendor's a/c Dr.

To Bank a/c

To Equity Share Capital a/c

To Pref. Share Capital a/c

To Debentures a/c

(Purchase consideration discharged.)

क्रय मूल्य पर व्याज देने पर—

Interest to Vendor a/c Dr.

To Bank a/c

(Interest paid to vendor.)

Illustration 30.

A company was formed with an authorised capital of Rs. 10,00,000 divided into 50,000 equity shares of Rs. 10 each and 50,000 preference shares of Rs. 10 each to acquire the going concern of Messrs Prem Bahadur & Sons, whose Balance Sheet stood as follows :—

(एक कम्पनी की स्थापना 10 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से, जो 10 रु० वाले 50,000 ईक्विटी अंशों तथा 10 रु० वाले 50,000 अधिमान अंशों में विभाजित थी, मेसर्स प्रेम बहादुर एण्ड संस के चालू व्यवसाय को ग्रहण करने हेतु हुई। मैसर्स प्रेम बहादुर एण्ड संस का चिट्ठा इस प्रकार था) :—

	Rs.		Rs.
Bills Payable	7,000	Cash at Bank	9,000
Sundry Creditors	12,800	Book Debts	15,000
Capital	2,64,200	Insurance Policy	8,000
		Stock in Trade	62,000
		Plant & Machinery	1,00,000
		Freehold Premises	90,000
	2,84,000		2,84,000

The purchase price was agreed upon at Rs. 3,50,000 to be paid as to Rs. 1,00,000 in fully paid equity shares, Rs. 1,00,000 in fully paid preference shares, Rs. 60,000 in redeemable debentures and the balance in cash. The company does not take over the insurance policy, values the stock and plant and machinery at 10 per cent less than the book value and the freehold premises at 20% more than the book value. The liabilities will be discharged by the company.

The balance of both kinds of shares was issued to and paid up by public with the exception of 1,200 equity shares held by Lala K. Pd. on which he had not paid the final call of Rs. 3 per share and which were subsequently forfeited and reissued at a discount of 20 per cent.

Give Journal entries to record the above and prepare the Balance Sheet of the company.

(क्रय-मूल्य 3,50,000 रु० निश्चित किया गया। इसमें से 1,00,000 रु० के पूर्ण प्रदत्त ईक्विटी अंशों में; 1,00,000 रु० के पूर्ण प्रदत्त अधिमान अंशों में, 60,000 रु० के शोध्य ऋण-पत्रों में तथा शेष धन राशि का नकद में, भुगतान करना है। कम्पनी ने बीमा पॉलिसी नहीं ली है। स्टॉक तथा प्लान्ट और मशीन का मूल्य पुस्तक मूल्य से 10 प्रतिशत कम लगाया है। भवन का मूल्य पुस्तक मूल्य से 20% अधिक लगाया है। दायित्वों का भुगतान कम्पनी करेगी।

दोनों प्रकार के अंशों की शेष राशि जनता मे निर्गमित करदी गई। जनता ने उन अंशों को खरीद लिया। लाला के० प्रसाद के पास जो 1,200 अंश हैं, उन पर अन्तिम मांग के 3 रु० प्रति अंश प्राप्त नहीं हुए। शेष अंशों पर पूर्ण धन प्राप्त हो गया। लाला के० प्रसाद के अंशों का हरण कर लिया गया तथा उनको 20% बट्टे पर पुनर्निर्गमित कर दिया गया।

उपरोक्त सौदों का इन्द्राज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा कम्पनी का चिट्ठा बनाइये।)

Solution : **Journal**

		Rs.	Rs.
Cash at Bank a/c Dr.		9,000	
Book Debts a/c Dr.		15,000	
Stock-in-trade a/c Dr.		55,800	
Plant & Machinery a/c Dr.		90,000	
Freehold Premises a/c Dr.		1,08,000	
Goodwill a/c Dr.		92,000	
To Bills Payable a/c.			7,000
To Sundry Creditors a/c			12,800
To Vendors' a/c			3 50,000
(Assets and liabilities taken over.)			
Bank a/c Dr.		2,80,000	
To Equity Share Application & Allotment a/c			2,80,000
(Amount due on equity share application and allotment received.)			
Bank a/c Dr.		4,00,000	
To Pref. Share Application & Allotment a/c			4,00,000
(Amount due on preference share application and allotment received.)			
Equity Share Application and Allotment a/c Dr.		2,80,000	
To Equity Share Capital a/c			2,80,000
(Amount received on equity share application and allotment on 40,000 shares @ Rs. 7 per share transferred to Equity Share Capital a/c.)			

Journal Contd.

		Rs.	Rs.
Pref. Share Application and Allotment a/c Dr.		4,00,000	
To Pref. Share Capital a/c			4,00,000
(Preference Share Application & Allotment money transferred.)			
Equity Share Call a/c Dr.		1,20,000	
To Equity Share Capital a/c			1,20,000
(Call of Rs. 3 per share due on equity shares.)			
Bank a/c Dr.		1,16,400	
To Equity Share Call a/c			16,400
(Amount due on equity share call received.)			
Vendors' a/c Dr.		3,50,000	
To Equity Share Capital a/c			1,00,000
To Preference Share Capital a/c			1,00,000
To Redeemable Debentures a/c			60,000
To Bank a/c			90,000
(Purchase consideration discharged.)			
Equity Share Capital a/c Dr.		12,000	
To Forfeited Shares a/c			8,400
To Equity Share Call a/c			3,600
(1,200 Equity shares forfeited of which Rs. 7 per share was received.)			
Bank a/c Dr.		9,600	
Forfeited Shares a/c Dr.		2,400	
To Equity Share Capital a/c			12,000
(Forfeited shares re-issued.)			
Forfeited Shares a/c Dr.		6,000	
To Capital Reserve a/c			6,000
(Balance transferred.)			

Balance Sheet as on......

		Rs.		Rs.
Authorised Capital :			*Fixed Assets :*	
50,000 Preference Shares of Rs. 10 each		5,00,000	Goodwill	92,000
50,000 Equity Shares of Rs. 10 each		5,00,000	Freehold Premises	1,08,000
		10,00,000	Plant & Machinery	90,000
			Current Assets and Loans and Advances :	
Issued and Subscribed Capital :			Stock in Trade	55,800
40,000 Preference Shares of Rs. 10 each issued for cash as fully paid	Rs. 4,00,000		Sundry Debtors	15,000
10,000 Preference Shares of Rs. 10 each issued to the vendors as fully paid	Rs. 1,00,000	5,00,000	Cash at Bank	7,25,000
40,000 Equity Shares of Rs. 10 each issued for cash as fully paid	Rs. 4,00,000			
10,000 Equity Shares of Rs. 10 each issued as fully paid to the vendors	Rs. 1,00,000	5,00,000		
Capital Reserve		6,000		
Redeemable Debentures		60,000		
Bills Payable		7,000		
Sundry Creditors		12,800		
		10,85,800		10,85,800

कम्पनी द्वारा लेनदार व देनदार न लेना—

कभी-कभी कम्पनी व्यापार को खरीदते समय पुराने व्यापारी के लेनदार व देनदार नहीं खरीदती है। परन्तु एजेन्ट के रूप में विक्रेता के देनदारों को वसूल करने तथा लेनदारों को भुगतान करने का दायित्व स्वीकार कर लेती है। इस कार्य के लिए कम्पनी व्यापार -विक्रेता से कमीशन भी वसूल कर सकती है।

कम्पनी की पुस्तकों में लेखा प्रविष्टियां—

देनदारों से वसूल करने तथा लेनदारों को भुगतान करने का भार स्वीकार करने पर कम्पनी की पुस्तकों में कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है। केवल इसका व्यौरा स्मरण पुस्तकों (Memorandum Books) में रखा जाता है।

देनदारों से धन वसूल करने पर—

Bank a/c Dr.

To Vendors' Adjustment a/c

(Being cash received from vendors' debtors.)

ये देनदार कम्पनी के देनदार नहीं हैं, व्यापार-विक्रेताओं के देनदार हैं। व्यापार विक्रेताओं के देनदारों से रुपया प्राप्त करने की प्रविष्टि इस भांति की जाती है जैसे यह राशि व्यापार विक्रेताओं से प्राप्त हो रही हो।

लेनदारों को भुगतान करने पर—

Vendors' Adjustment a/c Dr. (नकद भुगतान की राशि से)

To Bank a/c

(Being cash paid to vendors' creditors.)

ये लेनदार व्यापार-विक्रेताओं के लेनदार हैं। अतः व्यापार-विक्रेता के लेनदारों के भुगतान के समय इस तरह प्रविष्टि की जाती है जैसे व्यापार-विक्रेता को यह भुगतान किया जा रहा है।

देनदारों से देय धन प्राप्त न होने पर या राशि डूब जाने पर—

यदि व्यापार-विक्रेता के देनदारों से धन वसूल नहीं हो सका है अर्थात् देनदारों से जो राशि वसूल की जानी थी वह डूब गई तो डूबत ऋण की कोई प्रविष्टि नहीं की जाती है।

कम्पनी द्वारा कमीशन लेने पर—

Vendors' Adjustment a/c Dr.

To Commission a/c

(Being commission due from vendors.)

व्यापार-विक्रेता को भुगतान करने पर—

व्यापार-विक्रेता को कितना धन देना है, यह ज्ञात करके निम्न प्रविष्टि करदी जावेगी—

Vendors' Adjustment a/c Dr. (देय राशि से)

To Cash a/c (यदि नकद दिया गया है)

To Share Capital a/c (यदि अंश दिये गये हैं)

To Debentures a/c (यदि ऋण-पत्र दिये गये हैं)

(Being the amount paid to vendors.)

Illustration 31.

Make the necessary entries in Journal to record the following transactions :

(1) Jan. 1. 1966 : The company purchased from vendors plant and machinery at Rs. 5,000, stock in trade at Rs. 2,500 and patent rights at Rs. 3,000.

(2) Jan. 10 1966 : The company allotted to vendors in part payment of purchase of these assets, 800 fully paid equity shares of Rs. 10 each and issued 25 mortgage debentures of Rs. 100 each in satisfaction of the balance of purchase money.

(3) Jan. 15, 1966 : The company allotted to applicants 1,000 equity shares of Rs. 10 each having received on same date Rs. 2 per share, the amount payable on applicaton and allotment.

(4) Feb. 15, 1966 : First call of Rs. 2 per share made on 1,000 equity shares.

(5) Feb. 20, 1966 : Payment of first call received in full.

(6) March 1,1966 : The company received Rs. 2,500 in respect of book debts due to vendors to be collected on their behalf. Vendors agreed to accept 30 mortgage debentures of Rs. 100 each in payment thereof and these debentures were issued to them on that date.

(7) April, 1, 1966 : Certain shareholders being desirous of paying up the balance due on their shares pending further calls, the company agreed to allow them 5% p. a. interest on calls paid in advance. Rs. 3,000 were received on this date from shareholders under this agreement.

(8) April 15, 1966 : The company applied the sum of Rs. 2,300 in redeeming debentures of Rs. 100 each at a premium of 10% with Rs. 100 interest thereon to date of redemption.

निम्नलिखित सौदों का इन्द्राज करने के लिये जर्नल में आवश्यक प्रविष्टियां कीजिये :

(1) जनवरी 1,1966—कम्पनी ने व्यापार विक्रेताओं से प्लान्ट और मशीन 5,000 रु० में, स्टॉक 2,500 रु० में और पेटेन्ट अधिकार, 3,000 रु० में खरीदा।

(2) जनवरी 10, 1966—कम्पनी ने प्रतिफल का आंशिक भुगतान करने हेतु विक्रेता के नाम में 10 रु० वाले 800 पूर्णदत्त ईक्विटी अंशों का वंटन किया तथा शेष क्रय मूल्य के लिये 100 रु० वाले 25 वन्धक ऋण-पत्रों का वटन किया।

(3) जनवरी 15,1966—कम्पनी ने प्रार्थियों को 10 रु० वाले 1,000 ईक्विटी अंशों का वंटन किया तथा उसी रोज 2 रु० प्रति अंश के हिसाब से प्रार्थना तथा वंटन-राशि के प्राप्त किये।

(4) फरवरी 15,1966—1,000 ईक्विटी अंशों पर 2 रु० प्रति अंश के हिसाब से प्रथम मांग की गई।

(5) फरवरी 20, 1966—प्रथम मांग का पूर्ण भुगतान प्राप्त हो गया।

(6) मार्च 1,1966—कम्पनी ने विक्रेता (vendor) के देनदारों से 2,500 रु० प्राप्त किया जो कम्पनी ने विक्रेता की ओर से एकत्र करना स्वीकार कर लिया था। विक्रेताओं ने देनदारों से प्राप्त रकम का भुगतान नकद में लेने के स्थान पर कम्पनी से 100 रु० वाले 30 बन्धक ऋण-पत्रों को लेना स्वीकार किया। ये ऋण-पत्र उनको इस तिथि पर निर्गमित कर दिये गये।

(7) अप्रैल 1,1966— कुछ अंशधारी मांगों का अग्रिम भुगतान करना चाहते थे। कम्पनी ने मांगों के अग्रिम भुगतान पर 5% वार्षिक व्याज देना स्वीकार कर लिया। इस तिथि को इस समझौते के आधीन अंशधारियों से 3,000 रु० प्राप्त हुए।

(8) अप्रैल 15,1966—कम्पनी ने 2,300 रु० की धन राशि का, 100 रु० वाले ऋण-पत्रों को 10% प्रीमियम पर भुगतान करने में तथा साथ ही शोधन की तिथि तक 100 रु० व्याज के चुकाने में प्रयोग किया।

Solution :

Journal

			Rs.	Rs.
1966 Jan. 1	Plant & Machinery a/c	Dr.	5,000	
	Stock in Trade a/c	Dr.	2,500	
	Patent Rights a/c	Dr.	3,000	
	To Vendors' a/c			10,500
	(Being the purchase of sundry assets.)			
Jan. 10	Vendors' a/c	Dr.	10,500	
	To Equity Share Capital a/c			8,000
	To Mortgage Debentures a/c			2,500
	(Being the discharge of purchase consideration.)			
Jan. 15	Bank a/c	Dr.	2,000	
	To Equity Share Application and Allotment a/c			2,000
	(Cash received on application and allotment @ Rs. 2/- per share on 1,000 equity shares.)			
Jan. 15	Equity Share Application & Allotment a/c	Dr.	2,000	
	To Equity Share Capital a/c			2,000
	(Being the transfer of Equity Share Application & Allotment money to Capital a/c.)			
Feb. 15	Equity Share First Call a/c	Dr.	2,000	
	To Equity Share Capital a/c			2,000
	(Being the amount due on first call as per the resolution of the meeting of the directors dated......)			
Feb. 20	Bank a/c	Dr.	2,000	
	To Equity Share First Call a/c			2,000
	(Being the amount received on first call.)			
March 1	Bank a/c	Dr.	2,500	
	To Vendors' Adjustment a/c			2,500
	(Cash received from the debtors of the vendors.)			
March 1	Vendors Adjustment a/c	Dr.	2,500	
	Discount on Issue of Debentures a/c	Dr.	500	
	To Mortgage Debentures a/c			3,000
	(Being the issue of 30 Mortgage Debentures of Rs. 100 each in satisfaction of their dues of Rs. 2,500 for the amount collected from their sundry debtors.			

Journal Contd.

			Rs.	Rs.
1966 April 1	Bank a/c Dr. To Calls Received in Advance a/c (Being the amount received in advance from the holders of 500 equity shares in respect of their future calls.)		3,000	3,000
April 15	Mortgage Debentures a/c Dr. Premium on Redemption of Debentures a/c Dr. Interest on Mortgage Debentures a/c Dr. To Bank a/c (Being the redemption of 200 debentures at a premium of 10% and the payment of interest thereon to date of redemption.)		2,000 200 100	2,300

Illustration 32.

The following is the Balance-sheet of Bhawani and Ravi as on 31st March, 1968. (31, मार्च, 1968 को भवानी और रवि का चिट्ठा निम्नलिखित है) :—

		Rs.		Rs.
Sundry Creditors		21,664	Furniture	1,074
Capital Accounts—			Stock	12,084
Bhawani	32,870		Sundry Debtors	46,842
Ravi	11,648	44,518	Cash in hand	6,182
		66,182		66,182

A private company, Bhawani & Ravi Private Ltd., with an authorised capital of Rs. 3,50,000 divided into 2,500 preference shares of Rs. 100 each and 1,000 equity shares of Rs, 100 each, was registered in March, and took over the business on 1st April 1968 on the following terms:—

Goodwill to be taken at Rs. 20,000.

Stock and furniture to be taken at balance-sheet values.

The purchase price to be paid in cash Rs. 1,658 and remaining by issuing equity shares at a premium of 5%.

The liabilities, book debts and cash in hand not to be taken over but the company to collect book debts and discharge liabilities as agents for the vendors and to account to them at the end of each month.

Bhawani to subscribe forthwith for 500 equity shares and 1,500 preference shares and Ravi for 1,000 preference shares and the remaining equity shares.

Equity shares to be paid in full on allotment and the preference shares Rs. 50 per share on allotment and the balance when called. Equity shares have been taken up at a premium of 5%.

The purchase price was paid and the shares were duly applied for and allotted on 1st April.

The cash received from customers in April amounted to Rs. 24,794 of which Rs. 1,008 were in respect of April sales and in addition Rs. 7,240 were received as damages in an old suit pending in the court, which was not included in the balance-sheet on 31st march, 1968.

The payments amounted to Rs. 29,932 of which Rs. 13,730 were in respect of the old firm's debts.

Show the Journal entries recording the above transactions and also prepare the Vendors' Adjustment Account showing the balance due to or by them.

(एक निजी कम्पनी भवानी और रवि प्राईवेट लि०, 3,50,000 रु० की अधिकृत पूंजी के साथ, जो 100 रु० वाले 2,500 अधिमान अंशों में तथा 100 रु० वाले 1,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित थी, मार्च के माह में पंजीकृत हुई और 1 अप्रैल 1968 से उसने उपरोक्त व्यापार निम्नलिखित शर्तों पर ले लिया।

ख्याति 20,000 रु० पर लेनी है।

स्टॉक और फर्नीचर चिट्ठे के मूल्य पर लेने हैं।

क्रय मूल्य में से 1,658 रु० नकद देने हैं तथा शेष क्रय मूल्य के भुगतान में ईक्विटी अंश 5% प्रीमियम पर दिये गये हैं।

दायित्व, देनदार, व नकद धन कम्पनी के द्वारा नहीं लिये गये परन्तु कम्पनी को व्यापार विक्रेता के एजेन्ट की हैसियत से देनदारों से वसूल करना है तथा लेनदारों को भुगतान करना है और प्रतिमाह के अन्त में व्यापार विक्रेताओं को हिसाब देना है।

भवानी 500 ईक्विटी अंश तथा 1,500 अधिमान अंश खरीदने के लिये प्रार्थना-पत्र देता है तथा रवि 1,000 अधिमान अंश तथा शेष ईक्विटी अंशों को खरीदने के लिये प्रार्थना-पत्र देता है। ईक्विटी अंशों का पूर्ण भुगतान वंटन के समय करना है तथा अधिमान अंशों का 50 रु० वंटन के समय तथा शेष धन राशि जब मांगी जाय। ईक्विटी अंशों को 5% प्रीमियम पर निर्गमित किया गया है।

क्रय मूल्य दे दिया गया और अंशों के लिए प्रार्थना-पत्र आये और उनका वंटन 1 अप्रैल को हो गया।

देनदारों से अप्रैल माह में 24,794 रु० वसूल हुआ है जिसमें से 1,008 रु० अप्रैल माह की बिक्री के हैं और इसके अलावा पुराने चल रहे मुकदमे में क्षति के 7,240 रु० प्राप्त हुए, यह 31 मार्च 1968 के चिट्ठे में सम्मिलित नहीं था।

भुगतान 29,932 रु० के हुए जिसमें से 13,730 रु० पुरानी फर्म के ऋणों के सम्बन्ध में थे।

उपरोक्त सौदों का इन्द्राज करते हुए जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा व्यापार विक्रेता का समायोजन खाता भी बनाइये, यह बताते हुए कि उससे कितना लेना है या देना है।

Solution : **Journal of Bhawani Ravi Private Ltd.**

1968			Rs.	Rs.
April 1	Stock a/c Dr. Furniture a/c Dr. Goodwill a/c Dr. To Vendors' a/c (Various assets taken over from the vendors.)		12,084 1,074 20,000	 33,158
„	Bank a/c Dr. To Equity Share Application & Allotment a/c (Received cash on 700 equity shares on application & allotment @ Rs. 105 per share.)		73,500	 73,500
„	Bank a/c Dr. To Preference Share Application & Allotment a/c (Received cash on 2,500 preference shares on application & allotment @ Rs. 50 per share.)		1,25,000	 1,25,000
„	Equity Share Application & Allotment a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Equity share application & allotment money transferred to Equity Share Capital a/c and Share Premium a/c.)		73,500	 70,000 3,500
„	Preference Share Application & Allotment a/c Dr. To Preference Share Capital a/c (Preference share application & allotment money transferred to Preference Share Capital a/c.)		1,25,000	 1,25,000
„	Vendors' a/c Dr. To Bank a/c To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Discharge of purchase consideration by payment of Rs. 1,658 in cash and Rs. 31,500 by way of issue of equity shares at a premium of 5%.)		33,158	 1,658 30,000 1,500

Journal Contd....

			Rs.	Rs.
1968 April 30	Bank a/c Dr. To Vendors' Adjustment a/c (Cash received from the vendors' debtors.)		23,786	23,786
	Bank a/c Dr. To Vendors' Adjustment a/c (Cash received as damages in a suit filed previously by the vendors.)		7,240	7,240
	Vendors' Adjustment a/c Dr. To Bank a/c (Cash paid to vendors' creditors.)		13,730	13,730

Vendors' Adjustment Account

		Rs.		Rs.
	To Bank a/c	13,730	By Bank a/c	23,786
	To Balance c/d	17,296	By Bank a/c	7,240
		31,026		31,026

विक्रेता द्वारा गारन्टी देना (Guarantee by Vendor)—

व्यापार-विक्रेता कभी-कभी कम्पनी को व्यापार के सम्बन्ध में कई प्रकार की गारन्टी देता है। गारन्टी देने के कतिपय उदाहरण नीचे दिये हुए हैं :

(अ) देनदारों व लेनदारों से सम्बन्धित गारन्टी—

कम्पनी जब व्यापार विक्रेता से देनदारों को खरीद लेती है और बाद में यदि देनदारों से बकाया राशि वसूल नहीं होती है तो वह नुकसान कम्पनी का है। कभी-कभी व्यापार विक्रेता कम्पनी को यह गारन्टी देता है कि देनदारों से वसूल रकम की राशि एक निश्चित रकम से कम नहीं होगी। यदि देनदारों से वसूल हुई राशि उस निश्चित रकम से कम रहती है तो व्यापार विक्रेता उस क्षति की पूर्ति करेगा। उसी प्रकार व्यापार विक्रेता कम्पनी को यह गारन्टी दे सकता है कि लेनदारों को भुगतान एक निश्चित रकम से अधिक रकम का नहीं करना पड़ेगा, यदि कम्पनी को उस निश्चित रकम से अधिक का भुगतान करना पड़ता है तो कम्पनी इस क्षति की वसूली व्यापार विक्रेता से कर सकती है।

(ब) लाभांश की गारन्टी (Guarantee of Dividends)—

व्यापार-विक्रेता कम्पनी को यह गारन्टी दे सकता है कि कम्पनी के लाभ निश्चित वर्षों तक निश्चित धन राशि से कम नहीं होंगे अथवा अंशधारियों को लाभांश दिया जावेगा, वह निश्चित वर्षों तक निश्चित दर से कम नहीं होगा। यदि गारन्टी के समय में लाभ निश्चित धन या निश्चित दर से कम होता है, तो इस कमी की पूर्ति व्यापार विक्रेता को करनी पड़ेगी।

गारंटी की अवस्था में कम्पनी को व्यापार-विक्रेता की धन राशि (जमानत) पर्याप्त मात्रा में रखनी चाहिए। यदि व्यापार-विक्रेता क्षति-पूर्ति करने में असमर्थ रहता है तो उस क्षति की पूर्ति जमानत की रकम में से की जा सकती है।

Illustration 33.

Ram was working as a sole trader. He sold his business to Ram Ltd.

The company took over the following assets and liabilities :

Buildings Rs. *60,000; Machinery* Rs. *30,000; Furniture* Rs. *10,000;* Debtors Rs. 50,000; Investments Rs. 5,000; Creditors—Rs. 60,000; Provision for Bad and Doubtful Debts—Rs. 5,000.

Ram guaranteed that the debtors would realize Rs. 45,000 and creditors would not exceed the book figures. The debtors actually realised Rs. 43,000 and creditors amounted to Rs. 62,000.

The company issued 2,000 equity shares of Rs. 100 each and these were duly taken up by the public and paid for. Ram was issued 850 equity shares of Rs. 100 each in payment of part of his consideration and the remaining amount retained towards his guarantee amount.

Ram further guaranteed that the dividends during each of the first three years would amount to 6%. The actual dividends paid were 5%, 7% and 4%.

Give the necessary journal entries relating to the purchase of business and issue of shares in the books of the company. Also give Ram's Guarantee a/c in the books of the company.

राम एकल व्यापारी की हैसियत से कार्य कर रहा था। उसने अपना व्यापार 'राम लि०' को बेच दिया।

कम्पनी ने निम्नलिखित सम्पत्तियां तथा दायित्व खरीदे :—

भवन 60,000 रु०; मशीनरी 30,000 रु०; फर्नीचर 10,000 रु०; देनदार 50,000 रु०; विनियोग 5,000 रु०; लेनदार 60,000 रु०; संदिग्द ऋण आयोजन 5,000 रु०।

राम ने गारन्टी दी कि देनदारों से 45,000 रु० वसूल हो जावेंगे और लेनदार पुस्तक मूल्य से अधिक के नहीं होंगे। वास्तव में देनदारों से 43,000 रु० वसूल हुआ है तथा लेनदारों को 62,000 रु० दिया गया है।

कम्पनी ने जनता में 100 रु० वाले 2,000 ईक्विटी अंश निर्गमित किये। जनता ने इन अंशों को खरीद लिया तथा इनका भुगतान कर दिया। राम को आंशिक प्रतिफल के रूप में 100 रु० वाले 850 ईक्विटी अंश दिये गये और शेष धन गारन्टी के लिये रख लिया गया।

राम ने यह भी गारन्टी दी कि अंशधारियों को मिलने वाला लाभांश प्रथम तीन वर्षों में हर साल 6% होगा। प्रथम तीन वर्षों में 5%, 7% और 4% लाभांश दिया गया।

कम्पनी की पुस्तकों में व्यापार खरीदने एवं अंश-निर्गमन सम्बन्धी आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये। कम्पनी की पुस्तकों में राम का गारन्टी खाता भी बनाइये।

Solution : **Journal of Ram Ltd.**

			Rs.	Rs.
	Buildings a/c	Dr.	60,000	
	Machinery a/c	Dr.	30,000	
	Furniture a/c	Dr.	10,000	
	Debtors a/c	Dr.	50,000	
	Investments a/c	Dr.	5,000	
	To Sundry Creditors a/c			60,000
	To Provision for Bad & Doubtful Debts a/c			5,000
	To Ram			90,000
	(Sundry assets and liabilities taken over.)			
	Bank a/c	Dr.	2,00,000	
	To Equity Share Application a/c			2,00,000
	(Amount received on application for 2,000 equity shares at Rs. 100 per share.)			
	Equity Share Application a/c	Dr.	2,00,000	
	To Equity Share Capital a/c			2,00,000
	(Share Application money transferred to Share capital a/c on allotment.)			
	Ram	Dr.	90,000	
	To Equity Share Capital a/c			85,000
	To Ram's Guarantee a/c			5,000
	(Allotted to Ram 850 equity shares of Rs. 100 each in part payment of purchase consideration and transferred Rs. 5,000 to his Guarantee Account.)			

Ram's Guarantee Account

		Rs.			Rs.
1st year	To Debtors' a/c	2,000	1st year	By Ram	5,000
,,	To Cash a/c (creditors over Rs. 60,000)	2,000	,,	By Dividends a/c (Amount retained)	4,250
,,	To Dividend a/c (1% on Rs. 2,00,000)	2,000			
,,	To Balance c/d	3,250			
		9,250			9,250
2nd year	To Balance c/d	9,200	2nd year	By Balance b/d	3,250
			,,	By Dividend a/c (Amount retained)	5,950
		9,200			9,200
3rd year	To Dividend a/c (2% on Rs. 2,00,000)	4,000	3rd year	By Balance b/d	9,200
,,	To Cash a/c	5,200			
		9,200			9,200

नोटः—तृतीय वर्ष के अन्त में जो लाभांश राम (व्यापार विक्रेता) को देय है, उनको उपरोक्त खाते में

पुरानी लेखा पुस्तकें चालू रखना (Old Books of Accounts Continued) :—

कभी-कभी कम्पनी व्यवसाय खरीदने के बाद नई लेखा पुस्तकें प्रारम्भ नहीं करती- बल्कि उस व्यवसाय की पुरानी लेखा पुस्तकों को ही चालू रखती है। इस स्थिति में कम्पनी द्वारा व्यापारी से सम्पत्ति एवं दायित्व खरीदने की अलग से प्रविष्टि करने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि उन सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खाते व्यापारी की लेखा पुस्तकों में पहले से ही खुले हुए हैं। प्रायः कम्पनी इन सम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके पुस्तक मूल्य पर न लेकर, पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर लेती है। अतः इनके खातों के शेषों को पुनर्मूल्यांकित मूल्यों पर लाने के लिए 'पुनर्मूल्यांकन खाते' अथवा 'लाभ-हानि समायोजन खाते' द्वारा समायोजन कर लिया जाता है। पुनर्मूल्यांकन खाते का शेष लाभ व हानि बतलाता है जिसे पुराने व्यवसायियों (साझेदारों की स्थिति में लाभ विभाजन के अनुपात में) के पूंजी खातों में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। यदि कोई सम्पत्ति या दायित्व कम्पनी द्वारा नहीं खरीदा जाता है तो उस सम्पत्ति या दायित्व के खाते को बन्द करना आवश्यक है। इसके लिये उस सम्पत्ति या दायित्व खाते के पुस्तक शेष को व्यवसायियों के पूंजी खाते में (अन्य किसी समझौते के अभाव में पूंजी के अनुपात में) हस्तान्तरित करना चाहिए। कृत्रिम सम्पत्तियों को भी पुराने व्यवसायियों के पूंजी खातों में हस्तान्तरित कर देना चाहिए।

सामान्य संचय, लाभ-हानि खाते का शेष इत्यादि रकमों पर पुराने व्यवसायियों का ही अधिकार रहता है। ये मदें कम्पनी को नहीं बेची जातीं, अतः इनको भी पुराने व्यवसायियों के पूंजी खातों में हस्तान्तरित कर देना चाहिए। पुराने व्यवसायियों को जब क्रय मूल्य (Purchase Consideration) का भुगतान किया जाये तो उनके पूंजी खातों को डेबिट तथा अंश पूंजी खाते, ऋण-पत्र खाते अथवा रोकड़ी खाते को क्रेडिट करना चाहिए। इस प्रविष्टि से पुराने व्यवसायियों के पूंजी खाते बन्द हो जायेंगे तथा अंश पूंजी खाता या ऋण-पत्र खाता खुल जायेगा।

उपर्युक्त प्रविष्टियों को लेखा पुस्तकों में कर लेने का परिणाम यह होगा कि उन सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खाते बन्द हो जायेंगे जिन्हें कम्पनी ने नहीं खरीदा है। पुराने व्यवसायियों के सामान्य संचय, लाभ-हानि खाता तथा पूंजी खाते भी बन्द हो जायेंगे। अब केवल उन्हीं सम्पत्तियों एवं दायित्वों के खाते बच रहेंगे जिन्हें कम्पनी ने खरीदा है। इन खातों के शेषों को भी पुनर्मूल्यांकित मूल्य पर ले आया गया है। अब कम्पनी में आगे जो भी सौदे होंगे, उनकी प्रविष्टियां सामान्य रूप से होती रहेंगी।

Illustration 34

The following is the Balance Sheet of Rajendra & Surendra as on 31st December, 1967 (31 दिसम्बर, 1967 को राजेन्द्र और सुरेन्द्र का चिट्ठा निम्नलिखित है) :—

		Rs.		Rs.
Sundry Creditors		60,000	Cash in hand	8,000
General Reserve		3,000	Investments	10,000
Capital :	Rs.		Debtors	30,000
Rajendra	60,000		Stock	25,000
Surendra	20,000	80,000	Furniture	10,000
			Machinery	60,000
		1,43,000		1,43,000

They were sharing profits and losses in the ratio of 3:2. On 1st January, 1968 the above business was purchased by R. S. Ltd., the purchase consideration being Rs. 90,000, the whole of the purchase consideration being satisfied by issue of equity shares at par.

Investments were not taken up by the company. A provision @ 5% for bad & doubtful debts was created on sundry debtors. Stock is to be valued at Rs. 30,000, furniture at Rs. 8,000 and machinery at Rs. 70,000. A liability of Rs. 1,000 of the old firm not included in the sundry creditors was also admitted by the company.

The company decides to continue the old books of the firm. Give necessary journal entries. Open ledger accounts and prepare a fresh trial balance.

(वे 3:2 के अनुपात में लाभ व हानि बांट रहे थे। 1 जनवरी 1968 को उक्त व्यापार आर० एस० लि० द्वारा 90,000 रु० में खरीद लिया गया। सम्पूर्ण प्रतिफल का भुगतान ईक्विटी अंशों के सम मूल्य पर निर्गमन द्वारा करना है।

कम्पनी ने विनियोग नहीं लिये। विभिन्न देनदारों पर 5% के हिसाब से डूबत एवं संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन करना है। स्टॉक 30,000 रु० मूल्य का आंका गया, फर्नीचर 8,000 रु० और मशीन 70,000 रु० 1,000 रु० का पुरानी फर्म का दायित्व जो विभिन्न लेनदारों में सम्मिलित नहीं था, कम्पनी द्वारा देना स्वीकार कर लिया गया।

कम्पनी ने निश्चय किया कि पुरानी पुस्तकों को ही चालू रखा जावे। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये, खाते खोलिए तथा नया तलपट बनाइये।)

Solution :

Journal of R. S. Ltd.

			Rs.	Rs.
	Rajendra's Capital a/c Dr. Surendra's Capital a/c Dr. To Investments a/c (Investments not taken over by the company distributed amongst the old partners in their capital ratio.)		7,500 2,500	 10,000
	Revaluation a/c Dr. To Furniture a/c To Provision for Bad and Doubtful Debts a/c (Decrease in the value of furniture and creation of a provision for bad & doubtful debts.)		3,500	 2,000 1,500

Journal Contd.

Particulars		L.F.	Rs.	Rs.
Stock a/c	Dr.		5,000	
Machinery a/c	Dr.		10,000	15,000
To Revaluation a/c				
(Increase in the values of stock & machinery.)				
Revaluation a/c	Dr.		1,000	1,000
To Sundry Creditors a/c				
(Liability previously omitted, now accounted for.)				
Revaluation a/c	Dr.		10,500	
To Rajendra's Capital a/c				6,300
To Surendra's Capital a/c				4,200
(Profit on revaluation transferred to the capital accounts of the partners in their profit sharing ratio.)				
Goodwill a/c	Dr.		6,500	
To Rajendra's Capital a/c				3,900
To Surendra's Capital a/c				2,600
(Creation of goodwill.)				
General Reserve a/c	Dr.		3,000	
To Rajendra's Capital a/c				1,800
To Surendra's Capital a/c				1,200
(General reserve distributed amongst the old partners in their profit-sharing ratio.)				
Rajendra's Capital a/c	Dr.		64,500	
Surendra's Capital a/c	Dr.		25,500	90,000
To Equity Share Capital a/c				
(Shares allotted-645 shares of Rs. 100 each to Mr. Rajendra and 255 shares of Rs. 100 each to Mr. Surendra.)				

नोट—ख्याति की रकम इस प्रकार ज्ञात की गई है :—

खरीदी गई सम्पत्तियों का क्रय मूल्य : (30,000+30,000+8,000+70,000+8,000—1,500)रु०	=	1,44,500 रु०
खरीदे गये दायित्वों का क्रय मूल्य	=	61,000 रु०
खरी सम्पत्तियों का मूल्य	=	83,500 रु०
व्यवसाय खरीदने का प्रतिफल	=	90,000 रु०
ख्याति का मूल्य	=	6,500 रु०

Cash Account

1968 Jan. 1	To Balance b/d	Rs. 8,000	1968 Jan. 1	By Balance c/d	Rs. 8,000

Investments Account

1968 Jan. 1	To Balance b/d	Rs. 10,000	1968 Jan. 1	By Rajendra's Capital a/c	Rs. 7,500
			"	By Surendra's Capital a/c	2,500
		10,000			10,000

Debtors Account

1968 Jan. 1	To Balance b/d	Rs. 30,000	1968 Jan. 1	By Balance c/d	Rs. 30,000

Stock Account

1968 Jan. 1	To Balance b/d	Rs. 25,000	1968 Jan. 1	By Balance c/d	Rs. 30,000
"	To Revaluation a/c	5,000			
		30,000			30,000

Furniture Account

1968 Jan. 1	To Balance b/d	Rs. 10,000	1968 Jan. 1	By Revaluation a/c	Rs. 2,000
			"	By Balance c/d	8,000
		10,000			10,000

Machinery Account

1968 Jan. 1	To Balance b/d	Rs. 60,000	1968 Jan. 1	By Balance c/d	Rs. 70,000
"	To Revaluation a/c	10,000			
		70,000			70,000

Sundry Creditors Account

1968 Jan. 1	To Balance c/d	Rs. 61,000	1968 Jan. 1	By Balance b/d	Rs. 60,000
			"	By Revaluation a/c	1,000
		61,000			61,000

General Reserve Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Rajendra's Capital a/c	1,800	Jan. 1	By Balance b/d	3,000
,,	To Surendra's Capital a/c	1,200			
		3,000			3,000

Revaluation Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Furniture a/c	2,000	Jan. 1	By Stock a/c	5,000
,,	To Provision for Bad Debts a/c	1,500	,,	By Machinery a/c	10,000
,,	To Sundry Creditors a/c	1,000			
,,	To Rajendra's Capital a/c	6,300			
,,	To Surendra's Capital a/c	4,200			
		15,000			15,000

Provision for Bad Debts Account

1968		Rs.	1968		Rs.,
Jan. 1	To Balance c/d	1,500	Jan. 1	By Revaluation a/c	1,500

Goodwill Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Rajendra's Capital a/c	3,900	Jan. 1	By Balance c/d	6,500
,,	To Surendra's Capital a/c	2,600			
		6,500			6,500

Equity Share Capital Account

1968		Rs.	1968		Rs.
Jan. 1	To Balance c/d	90,000	Jan. 1	By Rajendra's Capital a/c	64,500
			,,	By Surendra's Capital a/c	25,500
		90,000			90,000

Partners' Capital Accounts

		Rajendra	Surendra			Rajendra	Surendra
		Rs.	Rs.			Rs.	Rs.
1968 Jan. 1	To Investments a/c	7,500	2,500	1968 Jan. 1	By Balance b/d	60,000	20,000
,,	To Equity Share Capital a/c	64,500	25,500	,,	By Revaluation a/c	6,300	4,200
				,,	By Goodwill a/c	3,900	2,600
				,,	By General Reserve a/c	1,800	1,200
		72,000	28,000			72,000	28,000

Fresh Trial Balance

(In the books taken over by the company)

Ledger Accounts	Dr. Amount	Cr. Amount
	Rs.	Rs.
1. Cash Account	8,000	
2. Debtors Account	30,000	
3. Stock Account	30,000	
4. Furniture Account	8,000	
5. Machinery Account	70,000	
6. Sundry Creditors Account		61,000
7. Provision for Bad Debts Account		1,500
8, Goodwill Account	6,500	
9. Equity Share Capital Account		90,000
	1,52,500	1,52,500

समामेलन से पूर्व का लाभ व हानि (Profit or Loss prior to Incorporation) :—

एक निजी कम्पनी समामेलन के तुरन्त बाद ही व्यापार प्रारम्भ कर सकती है किन्तु एक सार्वजनिक कम्पनी को समामेलन के प्रमाण-पत्र के अतिरिक्त व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण-पत्र भी लेना पड़ता है। कभी-कभी कम्पनी समामेलन के पूर्व की किसी तारीख से किसी व्यवसाय को खरीद लेती है और उस व्यवसाय को चालू रखती है। हो सकता है कि व्यवसाय खरीदने की तिथि को उसकी पुस्तकें बन्द करके अन्तिम खाते न बनाये गये हों तथा कम्पनी ने उस व्यवसाय के अन्तिम खाते समामेलन के बाद पड़ने वाली तिथि को तैयार करके पूर्ण वर्ष का लाभ व हानि ज्ञात किया हो। प्रश्न यह उठता है कि क्या पूर्ण वर्ष के लाभ को कम्पनी का रेवेन्यूगत लाभ माना जाय। लेखा सिद्धान्तों के दृष्टिकोण से उक्त लाभ को दो भागों में विभाजित करना आवश्यक है—समामेलन से पूर्व का लाभ तथा समामेलन के बाद का लाभ।

पूर्ण वर्ष के लाभ को उपरोक्त दो भागों में विभाजित करने के लिये सर्व प्रथम उस वर्ष के सकल लाभ (Gross Profit) को दो भागों में बांट लेना चाहिए—समामेलन से पूर्व का सकल लाभ तथा समामेलन के बाद का सकल लाभ। उक्त विभाजन समय अथवा विक्री के आधार पर किया जा सकता है। मान लीजिये, एक निजी कम्पनी का समामेलन 1 मई, 1967 को हुआ और उसने एक चालू व्यवसाय को 1 जनवरी, 1967 से खरीदा तथा उसके अन्तिम खाते 1 मई को तैयार न करके 31 दिसम्बर, 1967 को तैयार किये। 1967 का सकल लाभ 15,000 रु० है तो समय के आधार पर 1:2 के अनुपात में समामेलन के पूर्व का लाभ 5,000 रु० तथा समामेलन के बाद का लाभ 10,000 रु० होगा। यदि प्रश्न में प्रथम चार महीने की बिक्री 50,000 रु० तथा अन्तिम आठ महीनों की बिक्री 2,00,000 रु० दे रखी है तो सकल लाभ को बिक्री के अनुपात में विभाजित किया जाना चाहिए क्योंकि सकल लाभ का सम्बन्ध बिक्री से होता है। ऐसी दशा में सकल लाभ 1 : 4 के अनुपात में 3,000 रु० व 12,000 रु० माना जायेगा।

सकल लाभ को दो भागो में विभाजित करने के बाद लाभ-हानि खाते के डेबिट व क्रेडिट पक्ष में दिखाई गई मदों को भी दो भागों में बांट लेना चाहिये। इन मदों में से कुछ मदें तो ऐसी हो सकती हैं जो स्वभाव से (By Nature) समामेलन के पूर्व की अथवा बाद की ही नजर आयें। इन मदों के कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं तथा इनको दो भागों में विभाजित न करके सीधे ही समामेलन से पूर्व के लाभ अथवा बाद के सकल लाभ में से (जिससे भी सम्बन्धित हो) घटा देना चाहिए।

समामेलन से पूर्व की मदें—साझेदारों का वेतन, कमीशन, पूंजी पर व्याज, आहरण पर व्याज, इत्यादि।

समामेलन से बाद की मदें—संचालकों की फीस, प्रारम्भिक व्यय, ऋण-पत्रों पर व्याज, संचालकों का पारिश्रमिक, हस्तान्तरण फीस इत्यादि।

इन मदों के अतिरिक्त अन्य मदों को दो भागों में विभाजित करना पड़ेगा। उक्त विभाजन समय अथवा बिक्री के आधार पर हो सकता है। यदि प्रश्न में दोनों अवधियों की बिक्री नहीं दी हुई है तो अन्य मदों का विभाजन समय के आधार पर ही किया जायेगा। यदि प्रश्न में दोनों अवधियों की बिक्री दे रखी है तो कुछ मदों का विभाजन (जो समय से अधिक सम्बन्ध रखती हैं) समय के आधार पर किया जायेगा तथा कुछ मदों का विभाजन (जो बिक्री से अधिक सम्बन्ध रखती हैं) बिक्री के आधार पर किया जायेगा। समय व बिक्री से अधिक सम्बन्ध रखने वाली मदें निम्नलिखित हो सकती हैं—

समय से अधिक सम्बन्ध रखने वाली मदें—वेतन, किराया, बीमा व्यय; मूल्य ह्रास, बिजली व्यय, अन्य आफिस व्यय, अंकेक्षकों की फीस (आदि)

बिक्री से अधिक सम्बन्ध रखने वाली मदें—बिक्री व्यय, यात्रा व्यय, गाड़ी भाड़ा, विज्ञापन व्यय, डूबत ऋण, आदि।

समामेलन से पूर्व व बाद का लाभ-हानि ज्ञात करने के लिए एक विवरण (Statement) बनाना चाहिए। कभी-कभी लाभ-हानि खाते को स्तम्भाकार (In columnar form) में बना लिया

जाता है। इन दोनों खानों में क्रमशः समामेलन के पूर्व तथा समामेलन के बाद की मदों को दिखाया जाता है। डेबिट व क्रेडिट पक्ष का अन्तर समामेलन से पूर्व व बाद का शुद्ध लाभ या हानि (Net Profit or Loss) बतलायेगा। समामेलन के बाद का लाभ कम्पनी का रेवेन्यूगत लाभ होगा किन्तु समामेलन के पूर्व का लाभ पूंजीगत लाभ माना जायेगा। इस पूंजीगत लाभ का प्रयोग ख्याति को अपलिखित करने या अन्य पूंजीगत हानियों को अपलिखित करने के प्रयोग में लिया जा सकता है अन्यथा इसे कैपीटल रिजर्व में हस्तान्तरित किया जाना चाहिए। इसका प्रयोग लाभ विभाजन के लिये नहीं किया जाता है। समामेलन के पूर्व हानि पूंजीगत हानि होती है और उसे 'ख्याति खाते' में डेबिट किया जा सकता है।

Illustration 35

'A' Private Ltd., was incorporated on 1st May, 1963, to take over the business of X Co. Ltd. as a going concern as from 1st January, 1963. The Profit & Loss Account for the year ending 31st December, 1963 is as follows. ('ए' प्राइवेट लिमिटेड का समामेलन 1 मई, 1963 को एक्स कम्पनी लि० के व्यापार को 1 जनवरी, 1963 से ग्रहण करने हेतु हुआ। वर्ष के अन्त में 31 दिसम्बर, 1963 को लाभ-हानि खाता इस प्रकार है) :—

Profit and Loss Account of 'A' Private Ltd.

	Rs.		Rs.
To Rent & Taxes	12,000	By Gross Profit b/d	1,55,000
To Insurance	3,000		
To Electricity Charges	2,400		
To Salaries	36,000		
To Directors' Fees	3,000		
To Auditors' Fees	1,600		
To Commission	6,000		
To Advertisement	4,000		
To Discount	3,500		
To Office Expenses	7,500		
To Carriage	3,000		
To Bank Charges	1,500		
To Preliminary Expenses	6,500		
To Bad Debts	2,000		
To Interest on Loan	3,000		
To Net Profit	60,000		
	1,55,000		1,55,000

The total turnover for the year ending 31st December, 1963 was Rs. 5,00,000 divided into Rs. 1,50,000 for the period before 1st May 1963 and Rs. 3,50,000 for the period thereafter.

Ascertain the profits earned prior and subsequent to incorporation of the company.

(31 दिसम्बर, 1963 को वर्ष की कुल विक्री 5,00,000 रु० थी, उसमें से 1,50,000 रु० की विक्री 1 मई 1963 से पूर्व और 3,50,000 रु० की विक्री उसके बाद की थी।

समामेलन से पहले तथा बाद के लाभों को ज्ञात कीजिये।

Solution :

Time Ratio 1 : 2

Turnover Ratio or Sales Ratio 3 : 7

Statement Showing Profits Prior and Subsequent to Incorporation of 'A' Pvt. Ltd.

Particulars	Total amount	Ratio	Pre-incorporation	Post-incorporation
	Rs.		Rs.	Rs.
Rent and Taxes	12,000	1 : 2	4,000	8,000
Insurance	3,000	1 : 2	1,000	2,000
Electricity	2,400	1 : 2	800	1,600
Salaries	36,000	1 : 2	12,000	24,000
Directors' Fees	3,000	1 : 2	1,000	2,000
Auditors' Fees	1,600	1 : 2	533	1,067
Commission	6,000	3 : 7	1,800	4,200
Advertisement	4,000	3 : 7	1,200	2,800
Discount	3,500	3 : 7	1,050	2,450
Office Expenses	7,500	1 : 2	2,500	5,000
Carriage	3,000	3 : 7	900	2,100
Bank Charges	1,500	3 : 7	450	1,050
Preliminary Expenses	6,500	—	—	6,500
Bad Debts	2,000	3 : 7	600	1,400
Interest on Loan	3,000	1 : 2	1,000	2,000
Total Expenses	95,000		28,833	66,167
Gross Profits	1,55,000	3 : 7	46,500	1,08,500
Less total expenses	95,000		28,833	66,167
Net Profits	60,000		17,667	42,333

Profit prior to incorporation is Rs. 17,667

Profit subsequent to incorporation is Rs. 42,333

नोटः—सामान्यतया संचालकों की फीस समामेलन के बाद वाले समय (Post-incorporation Period) में ले जाई जाती है। यह खर्च समामेलन के पूर्व के समय में नहीं आता है परन्तु उपरोक्त उदाहरण में बिकने वाला व्यवसाय कम्पनी है, अतः यह खर्चा दोनों अवधियों में बांटा जायेगा।

Illustration 36.

Narendra Private Ltd., which was incorporated on 1st May 1960, acquired the business of Narendra with effect from 1st January, 1960. The accounts of the company were closed for the first time on 30th September, 1960 disclosing a gross

profit of Rs. 84,000. The office expenses were Rs. 21,330, directors fees Rs. 1,500 per month and preliminary expenses Rs. 2,250. Rent upto 30th June was Rs. 150 per month, but thereafter it was increased to Rs. 375 per month. Included in the directors fees was salary to the manager at Rs. 750 per month. He was appointed a director at the time of incorporation of the company.

Prepare a statement showing profits prior and subsequent to incorporation assuming that the net sales were Rs. 12,30,000, the monthly average of which for the first four months of 1960 being half that of the remaining period. The business earned profits at a uniform rate.

नरेन्द्र प्राइवेट लि०, जिसका समामेलन 1 मई 1960 को हुआ, ने 1 जनवरी 1960 से नरेन्द्र का व्यापार ग्रहण किया। कम्पनी के लेखे, पहली वार, 30 सितम्बर, 1960 को 84,000 रु० का सकल लाभ बताते हुए बन्द किये गये। दफ्तर के खर्चे 21,330 रु० थे, संचालकों की फीस 1,500 रु० प्रति माह और प्रारम्भिक खर्चे 2,250 रु० थे। 30 जून तक किराया 150 रु० माहवार था परन्तु बाद में बढ़ाकर 375 रु० माहवार कर दिया गया। संचालकों की फीस में मैनेजर का वेतन 750 रु० प्रति माह के हिसाव से सम्मिलित था। उसको समामेलन के समय कम्पनी का संचालक नियुक्त कर दिया गया।

समामेलन से पहले तथा समामेलन से वाद का लाभ ज्ञात कीजिये यह मानतें हुए कि खरी विक्री 12,30,000 रु० थी, जिसका प्रथम चार माह का मासिक औसत शेष समय से आधा था। व्यापार में लाभ समान दर पर हुआ।

Solution :

Statement showing profits prior and subsequent to Incorporation

Particulars	Total amount	Ratio	Pre-incorporation	Post-incorporation
	Rs.		Rs.	Rs.
Office Expenses	21,330	4 : 5	9,480	11,850
Director's Fees	7,500	—	—	7,500
Preliminary Expenses	2,250	—	—	2,250
Rent on the basis of the actual rent paid	2,025	—	600	1,425
Manager's Salary	3,000	—	3,000	—
Total Expenses	36,105	—	13,080	23,025
Gross Profits	84,000	2 : 5	24,000	60,000
Less total expenses	36,105		13,080	23,025
Net Profits	47,895		10,920	36,975

Working Notes :

(1) हिसाव केवल 9 महीनों का ही तैयार किया गया है। उसमें से प्रथम चार महीने समामेलन से पूर्व के हैं और अन्तिम 5 महिने समामेलन के वाद के हैं, अतः समय अनुपात (Time Ratio) 4:5 हुआ।

(2) 9 महीनों में विक्री समान नहीं हुई है। प्रथम चार महीनों में बिक्री का औसत अन्तिम महीनों के विक्री के औसत से आधा है।

मानलो, प्रथम चार महीनों में विक्री की औसत 1 है। तो प्रथम चार महीनों की कुल विक्री :

January	1
February	1
March	1
April	1
Total Sales of 1st four months	4

चूंकि अन्तिम महीनों की विक्री की औसत प्रथम चार महिनों की औसत से दुगनी है, अतः अन्तिम महीनों में कुल विक्री :—

May	2
June	2
July	2
August	2
September	2
Total Sales of the last 5 months	10

औसत विक्री का अनुपात 4:10 अर्थात् 2:5 रहा।

(3) किराया जो दिया गया है, वह व्यावसायिक काल (9 माह) के लिये समान नहीं है। पहले किराया केवल 150 रु० प्रति माह था परन्तु 1 जुलाई से किराया 375 रु० प्रति माह दिया गया है कुल किराया इस प्रकार ज्ञात किया गया—

	रु०
किराया—प्रथम 6 माह का, दर 150 रु० प्रति माह	900
किराया—अन्तिम 3 माह का, दर 375 रु० प्रति माह	1,125
कुल किराया	2,025

चूंकि किराये की दी गई राशि प्रति माह समान नहीं है, अतः किराया वास्तविक भुगतान के आधार पर बांटा जावेगा।

किराया दिया गया-समामेलन के पूर्व के चार महीनों में (150×4) रु०=600 रु०

किराया दिया गया-समामेलन के बाद के पांच महिनों में

2 माह का किराया (150×2) रु०= 300 रु०

3 माह का किराया (375×3) रु०=1,125 रु०

कुल किराया 5 माह का 1,425 रु०

(4) संचालकों को फीस केवल समामेलन के बाद ही दी जायेगी, अतः वह केवल 5 माह को लगाई गई है।

(5) समामेलन के पश्चात् मैनेजर को संचालक बना दिया गया, उसको मैनेजर के रूप में वेतन समामेलन के पूर्व के समय में ही मिलेगा और वह समामेलन के पूर्व का ही चार्ज होगा।

Illustration 37

Kohinoor Ltd. was incorporated on 1st May, 1967 to buy over the business of Kohinoor Brothers from 1st January 1967.

Kohinoor Ltd. obtained its certificate for commencement of business on 1st June, 1967.

The accounts of the company were prepared for the first time upto 31st December, 1967. The accounts of the concern disclosed the following facts :

(1) The turnover for the 12 months amounted to Rs. 3,20,000 out of which sales from 1st January to 31st March amounted to Rs. 50,000 and that of from 1st April to 31st December amounted to Rs. 2,70,000 including sales for the month of April amounting to Rs. 20,000.

(2) The Trading Account showed a gross profit of Rs. 1,00,000.

(3) The details of the P. & L. a/c are as follows :

	Rs.	
Directors' fees	2,000	
Auditors' fees	500	
Rent, Rates etc.	5,000	
Bad Debts	3,000	— (Out of this amount Rs. 700 related to the period prior to incorporation.)
Staff salaries	15,000	
Debenture Interest	7,000	
Depreciation of Plant & Machinery	9,000	
Preliminery Expenses	3,000	
General Expenses	3,000	
Commission on sales	4,000	
Printing & Stationery	3,500	
Advertising	3,400	
Travellers' Expenses	7,000	
Interest to Vendors @ 5% from 1st January to 30th June	Rs. 3,775	

Prepare a statement showing profits prior and subsequent to incorporation.

कोहिनूर लि० का समामेलन 1 मई, 1967 को कोहिनूर ब्रदर्स का व्यापार 1 जनवरी 1967 से खरीदने के उद्देश्य से हुआ। कोहिनूर लि० को व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण-पत्र 1 जून, 1967 से प्राप्त हुआ।

कम्पनी के हिसाब पहली बार 31 दिसम्बर 1967 तक बनाये गये। संस्था के हिसाब से निम्नलिखित तथ्य प्रकट हुये—

(1) 12 महीने की विक्री 3,20,000 रु० थी जिसमें से 1 जनवरी से 31 मार्च तक की विक्री 50,000 रु० थी और 1 अप्रैल से 31 दिसम्बर तक की विक्री 2,70,000 रु० थी जिसमें अप्रैल माह की 20,000 रु० की विक्री सम्मिलित थी।

(2) व्यापारिक खातें ने 1,00,000 रु० का सकल लाभ प्रदर्शित किया।

(3) लाभ-हानि खातें का व्यौरा निम्न प्रकार से है:—

			रु०	
संचालकों की फीस	....	....	2,000	
अंकेक्षकों की फीस	....	....	500	
किराया, कर आदि	....	....	5,000	
डूबत ऋण	....	....	3,000	–(इसमें से 700 रु० की राशि
कर्मचारियों का वेतन	....	....	15,000	समामेलन से पूर्व की थी)
ऋण–पत्रों पर व्याज	....	....	7,000	
प्लान्ट और मशीन पर ह्रास		....	9,000	
प्रारम्भिक खर्च	....	....	3,000	
सामान्य खर्चे	....	....	3,000	
विक्री पर कमीशन	....	....	4,000	
छपाई व स्टेशनरी	....	....	3,500	
विज्ञापन	....	....	3,400	
यात्रा खर्चे	....	....	7,000	
विक्रेता को व्याज 5% की दर से 1 जनवरी से 30 जून तक	....	....	3,775	

समामेलन से पहले तथा बाद के लाभों को ज्ञात कीजिये।

Solution :

Statement showing profits prior and subsequent to incorporation

Particulars	Total amount	Ratio	Pre-incorporation	Post-incorporation
	Rs.		Rs.	Rs.
Directors' Fees	2,000	—	—	2,000
Auditors' Fees	500	1 : 2	167	333
Rent, Rates etc.	5,000	1 : 2	1,667	3,333
Bad Debts	3,000	—	700	2,300
Salaries	15,000	1 : 2	5,000	10,000
Debenture Interest	7,000	—	—	7,000
Depreciation of Plant and Machinery	9,000	1 : 2	3,000	6,000
Preliminary Expenses	3,000	—	—	3,000
General Expenses	3,000	1 : 2	1,000	2,000
Commission on Sales	4,000	7 : 25	875	3,125
Printing & Stationery	3,500	1 : 2	1,167	2,333
Advertising	3,400	7 : 25	744	2,656
Travellers Expenses	7,000	7 : 25	1,531	5,469
Interest to Vendors	3,775	2 : 1	2,517	1,258
Total Expenses	69,155	—	18,368	50,807
Gross Profit	1,00,000	7 : 25	21,875	78,125
Net Profits	30,825		3,507	27,318

टिप्पणियां:—

(1) एक सार्वजनिक कम्पनी का व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण-पत्र प्राप्त करने से पूर्व का समस्त लाभ पूंजीगत लाभ है, लेकिन प्रश्न में समामेलन से पूर्व व समामेलन से पश्चात् का लाभ ज्ञात करवाया गया है, अतः प्रश्न का हल उसी प्रकार किया गया है।

(2) समय का अनुपात इस प्रकार निकाला गया है:—

1 जनवरी से 1 मई तक   4 माह

1 मई से 31 दिसम्बर तक   8 माह

समय का अनुपात = 4:8 अर्थात् 1:2

(3) चूंकि व्यवसाय के पूरे वर्ष के हिसाब का अंकेक्षण किया जाता है, अतः अंकेक्षण फीस को समामेलन से पूर्व तथा समामेलन के बाद वाली अवधियों में समय के अनुपात में बाँट दिया गया है।

(4) बिक्री का अनुपात निम्न प्रकार से ज्ञात किया गया है:—

1 जनवरी से 30 अप्रैल तक की बिक्री (50,000+20,000) रु०=70,000 रु०

1 मई से 31 दिसम्बर तक की बिक्री (2,70,000—20,000) रु०=2,50,000 रु०

बिक्री का अनुपात = 70,000 : 2,50,000=7:25

(5) ऋण-पत्रों पर ब्याज, समामेलन के वाद वाले समय में ही दिया जावेगा।

(6) संचालकों की फीस व प्रारम्भिक खर्चे का भी विभाजन नहीं होगा। इन खर्चों का भार केवल समामेलन के बाद वाले समय पर ही पड़ेगा।

(7) व्यापार विक्रेता को दिए गए ब्याज का अनुपात निम्न प्रकार निकाला गया है:—
1 जनवरी से 30 अप्रैल : 1 मई से 30 जून अर्थात् 2 : 1

Illustration 38.

Rajasthan Udyog Limited, incorporated on May 1, 1968, received the certificate to commence business on May 31, 1968. It had acquired a running business from M/s Gupta & Co. with effect from January 1, 1968. The purchase consideration was Rs. 5,00,000 of which Rs. 1,00,000 was to be paid in cash and Rs. 4,00,000 in the form of fully paid shares. The company also issued shares for Rs. 4,00,000 for cash. Machinery costing Rs. 2,50,000 was then installed. Assets acquired from the vendors were : Machinery Rs. 3,00,000; Stock Rs. 60,000; Patents Rs. 40,000.

During the year 1968, the total sales were Rs. 18,00,000 ; the sales per month in the first half-year were one-half of what they were in the latter half year. The net profit of the company, after charging the following expenses, was Rs. 1,00,000 :-Depreciation Rs. 54,000 ; Audit fees Rs. 7,500 ; Directors fees Rs. 25,000 ; Preliminary expenses Rs. 6,000 ; Office expenses Rs. 39,000 ; Selling expenses Rs. 36,000; Interest to vendors up to May 31, 1968 Rs. 2,500.

Ascertain the pre-incorporation and post-incorporation amounts of profit, and prepare the Balance Sheet of the company as on December 31, 1968. Closing stock was valued at Rs. 70,000.

1 मई, 1968 को राजस्थान उद्योग लिमिटेड का समामेलन हुआ और 31 मई, 1968 को इसे व्यापार प्रारम्भ करने का प्रमाण-पत्र प्राप्त हो गया। कम्पनी ने 1 जनवरी, 1968 से गुप्ता एण्ड कम्पनी का चालू व्यापार ग्रहण कर लिया। क्रय-मूल्य 5,00,000 रु० निश्चित हुआ जो कि 1,00,000 रु० रोकड़ी और 4,00000 रु० पूर्ण-प्रदत्त अंशों के रूप में देय था। कम्पनी ने 4,00,000 रु० के अंश नकद भी वेचे। तव 2,50,000 रु० की लागत की एक मशीन लगाई गई। गुप्ता एण्ड कम्पनी से क्रय की गई सम्पत्ति निम्न प्रकार थी : मशीन 3,00,000 रु० ; स्टॉक 60,000 रु०; पेटेण्ट 40,000 रु०।

1968 में कुल विक्री 18,00,000 रु० हुई। पहले 6 महीनों में प्रति मास विक्री अन्तिम 6 महीनों की प्रति मास विक्री से आधी थी। निम्न व्यय घटाने के वाद कम्पनी का शुद्ध लाभ 1,00,000 रु० था : मूल्य ह्रास 54,000 रु० ; अंकेक्षकों की फीस 7,500 रु०; संचालकों की फीस 25,000 रु० ; प्रारम्भिक व्यय 6,000 रु०; कार्यालय व्यय 39,000 रु०; विक्री व्यय 36,000 रु०; विक्रेता को ब्याज (31, मई, 1968 तक) 2,500 रु०।

समामेलन के पहले तथा बाद के लाभों को ज्ञात कीजिए और 31 दिसम्बर, 1968 को कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिए। अन्तिम स्टॉक का मूल्य 70,000 रु० था।

Solution :

Statement showing profits prior and subsequent to incorporation

Particulars	Total amount	Ratio	Pre-incorporation	Post-incorporation
	Rs.		Rs.	Rs.
Depreciation	54,000	1 : 2	18,000	36,000
Audit Fees	7,500	1 : 2	2,500	5,000
Directors' Fees	25,000	—	—	25,000
Preliminary Expenses	6,000	—	—	6,000
Office Expenses	39,000	1 : 2	13,000	26,000
Selling Expenses	36,000	2 : 7	8,000	28,000
Interest to Vendors	2,500	4 : 1	2,000	500
Total Expenses	1,70,000	—	43,500	1,26,500
Gross Profits,	2,70,000	2 : 7	60,000	2,10,000
Less Total Expenses	1,70,000	—	43,500	1,26,500
Net Profits	1,00,000	—	16,500	83,500

Balance Sheet of Rajasthan Udyog Ltd. as on December 31, 1968.

Liabilities		Rs.	Assets		Rs.
Issued and Subscribed Capital :	Rs.		Goodwill	Rs. 1,00,000	
Shares issued for cash as fully paid	4,00,000		Less written off	Rs. 16,500	83,500
Shares issued to vendors as fully paid	4,00,000	8,00,000	Machinery	Rs. 5,50,000	
			Less Depreciation	Rs. 54,000	4,96,000
Profit and Loss Account		83,500	Patents		40,000
			Current Assets :		
			Stock in trade		70,000
			Other assets including cash (Balancing Figure)		1,94,000
		8,83,500			8,83,500

टिप्पणियां :—

(1) चूंकि प्रश्न में समामेलन से पूर्व का लाभ पूछा गया है, अतः व्यापार प्रारम्भ करने के प्रमाण-पत्र मिलने की तिथि का ध्यान नहीं रखा गया है। समामेलन से पूर्व के लाभ को ख्याति की राशि के अपलिखित करने में प्रयोग किया गया है।

(2) समय का अनुपात निम्न प्रकार ज्ञात किया गया है :—

जनवरी से अप्रैल		:	मई से दिसम्बर
अर्थात्	4	:	8
,,	1	:	2

(3) बिक्री का अनुपात निम्न प्रकार ज्ञात किया गया है :—मानाकि अंतिम 6 महीनों में बिक्री प्रति माह 1 रु० थी। तब प्रथम 6 महीनों में बिक्री प्रति माह $\frac{1}{3}$ रु० रही। अतः बिक्री का महीनानुसार ब्योरा इस प्रकार रहा :

जनवरी	$\frac{1}{3}$ रु०	मई	$\frac{1}{3}$ रु०	सितम्बर	1 रु०
फरवरी	$\frac{1}{3}$ रु०	जून	$\frac{1}{3}$ रु०	अक्टूबर	1 रु०
मार्च	$\frac{1}{3}$ रु०	जुलाई	1 रु०	नवम्बर	1 रु०
अप्रैल	$\frac{1}{3}$ रु०	अगस्त	1 रु०	दिसम्बर	1 रु०

अतः जनवरी से अप्रैल तथा मई से दिसम्बर तक की बिक्री का अनुपात = 2 : 7

(4) वर्ष का सकल लाभ इस प्रकार ज्ञात किया गया है :

		रु०
शुद्ध लाभ		1,00,000
जोड़िये वर्ष भर के खर्चे :	रु०	
मूल्य ह्रास	54,000	
अंकेक्षकों की फीस	7,500	
संचालकों की फीस	25,000	
प्रारम्भिक व्यय	6,000	
कार्यालय व्यय	39,000	
बिक्री व्यय	36,000	
विक्रेता को ब्याज	2,500	
		1,70,000
सकल लाभ		2,70,000

Questions

1. What do you mean by 'Allotment' ? Discuss, in brief, its procedure.

'बंटन' से आप क्या समझते हैं ? संक्षेप में इसकी प्रक्रिया दीजिए।

2. What is meant by 'Forfeiture' in relation to the shares of a company ? When can the shares be forfeited ? Give its procedure in brief. Also state how the forfeited shares can be dealt with by the directors of a company.

एक कम्पनी के अंशों के सम्बन्ध में 'हरण' से क्या तात्पर्य है ? अंशों का हरण कब किया जा सकता है ? संक्षेप में इसकी प्रक्रिया दीजिए। यह भी बताइये कि हरण किये हुए अंशों के साथ कम्पनी के संचालकों द्वारा किस प्रकार व्यवहार किया जा सकता है।

3. What are the provisions of the Indian Companies Act, 1956 as regards:—
(i) Issue of shares at a discount;
(ii) Utilisation of premium on issue of shares; and
(iii) Redemption of redeemable preference shares.
भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 में निम्नलिखित के सम्बन्ध में क्या प्रावधान हैं :—
(i) अंशों का बट्टे पर निर्गमन;
(ii) अंश-निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम का उपयोग; और
(iii) शोधनीय अधिमान अंशों का शोधन।

4. Describe the different classes of shares into which the share capital of a company can be divided.
अंशों की उन विभिन्न श्रेणियों का वर्णन कीजिए जिनमें एक कम्पनी की अंश पूंजी का विभाजन किया जा सकता है।

5. What is a 'debenture' ? Explain its different forms. Also give the different methods of redeeming it.
एक 'ऋण-पत्र' क्या है ? इसके विभिन्न रूप समझाइये। इसके शोधन के विभिन्न प्रकार भी दीजिए।

6. What do you mean by the term "Issue of debentures as a collateral security ?" How is this item shown in the Balance Sheet ?
"ऋण-पत्रों का समर्थक ऋणाधार के रूप में निर्गमन" से आप क्या समझते हैं ? वह मद चिट्ठे में किस प्रकार दिखाई जाती है ?

7. How are "profits prior to incorporation" ascertained ? How are they dealt with ?
समामेलन से पूर्व के लाभों का निर्धारण किस प्रकार किया जाता है ? उनके साथ किस प्रकार व्यवहार किया जाता है ?

8. Write short notes on :—
(i) Minimum Subscription;
(ii) Issued Capital;
(iii) Subscribed Capital; and
(iv) Reserve Capital.
संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए :—
(i) न्यूनतम अभिदान;
(ii) निर्गमित पूंजी;
(iii) अभिदत्त पूंजी; और
(iv) संचित पूंजी।

9. Show your understanding of the following and discuss how you will deal with them in the accounts of a company: —
(i) Over-subscription, (ii) Calls in arrears, (iii) Calls in advance, and (iv) Conversion of debentures.

बताइये कि निम्नलिखित के सम्बन्ध में आप क्या समझते हैं और कम्पनी के खातों में इनके साथ आप किस प्रकार व्यवहार करेंगे:—

(i) अधि-अभिदान;

(ii) बकाया मांग;

(iii) अग्रिम मांग; और

(iv) ऋण-पत्रों का परिवर्तन।

10 Write explanatory notes on:—

(i) Underwriting, (ii) Sub-underwriting, and (iii) Firm underwriting.

स्पष्ट करते हुए टिप्पणियां लिखिये:—

(i) अभिगोपन;

(ii) उप-अभिगोपन; और

(iii) फ़र्म-अभिगोपन।

11. On 1st January, 1968 a company was registered with an authorised capital of Rs. 5,00,000 divided into 5,000 equity shares of Rs. 100 each.

On 1st February, it issued 3,000 shares, payable fully on application. *All* these shares were subscribed and duly allotted on 10th February, 1968.

Journalise.

1 जनवरी 1968 को एक कम्पनी का पंजीयन 5 लाख रु० की अविकृत पूंजी से हुआ जो 100 रु० वाले 5,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित थी। 1 फरवरी को इसने 3,000 अंश निर्गमित किये, जिन पर सम्पूर्ण राशि प्रार्थना-पत्र के साथ देय थी। ये सभी अंश पूर्ण रूप से अभिदत्त हुए तथा इनका बंटन 10 फरवरी 1968 को कर दिया गया। [131]

जर्नल में प्रविष्टियां कीजिये।

12. A company, with an authorised capital of Rs. 10 lakhs divided into 5,000 equity shares of Rs. 100 each and 5,000 preference shares of Rs. 100 each, issued 3,000 equity shares and 3,000 preference shares, payable as to Rs. 30 on application, Rs. 30 on allotment, Rs. 25 on first call and Rs. 15/- on second call. Both classes of shares were fully subscribed and all amounts were received.

Journalise the above transactions in the company's books.

एक कम्पनी, जिसकी अधिकृत पूंजी 10 लाख रु० थी और जो 100 रु० वाले 5,000 ईक्विटी अंशों में तथा 100 रु० वाले 5,000 अधिमान अंशों में विभक्त थी, ने 3,000 ईक्विटी अंश तथा 3,000 अधिमान अंश निर्गमित किये जिनका भुगतान इस प्रकार किया जाना था— 30 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 30 रु० बंटन पर, 25 रु० प्रथम माँग पर और 15 रु० द्वितीय माँग पर। दोनों ही श्रेणियों के अंश पूर्ण रूप से अभिदत्त हुये और पूर्ण धन राशि वसूल हो गई।

कम्पनी की पुस्तकों में उपरोक्त सौदों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। [132]

Answer : Total cash received Rs. 6 lakhs.

13. The Hari Oil Mills Ltd. was registered on 1st January, 1968 with a capital of Rs. 10,00,000 divided into 1,00,000 equity shares of Rs. 10 each. The company issued 60,000 equity shares of which 40,000 shares were taken up by the public and Re. 1 per share was received with application. On 1st February, these shares were allotted and Rs. 2 per share was duly received on 28th February as allotment money. A first call of Rs. 3 per share was made on 1st April and the call money on all shares with the exception of 100 shares was received on 30th April. The final call of Rs. 4 per share was made on 1st June and the amount due, with the exception of 400 shares was received by 30th June. Pass the necessary Journal and Cash Book entries and prepare Balance Sheet on 30th June, 1968.

हरि आइल मिल्स लि० का पंजीयन 1 जनवरी 1968 को 10 लाख रु० की पूंजी से हुआ जो 10 रु० वाले 1 लाख ईक्विटी अंशों में विभाजित थी। कम्पनी ने 60,000 ईक्विटी अंश निर्गमित किये जिनमें से जनता ने केवल 40,000 अंश खरीदे। अंशों पर 1 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ प्राप्त हुआ। 1 फरवरी को इन अंशों का वंटन कर दिया गया और 28 फरवरी को वंटन राशि 2 रु० प्रति अंश के हिसाब से प्राप्त हो गई। 1 अप्रैल को 3 रु० की प्रथम मांग की गई और 100 अंशों को छोड़कर इस मांग (Call) पर मांगी गई राशि 30 अप्रैल को प्राप्त हो गई। 4 रु० प्रति अंश की अन्तिम मांग 1 जून को की गई और 30 जून को 400 अंशों को छोड़कर इस मांग की देय राशि प्राप्त हो गई। जर्नल तथा रोकड़ वही में प्रविष्टियां कीजिये तथा 30 जून 1968 को चिट्ठा बनाइये। [133]

Ans:–Total of Balance Sheet Rs. 3,98,100; Calls in arrears Rs. 1,900.

14. Deepesh Ltd. was registered with an authorised capital of Rs. 10,00,000 divided into 50,000 equity shares of Rs. 10 each and 50,000 preference shares of Rs. 10 each. The company issued 40,000 equity shares and 35,000 preference shares at a premium of 10 per cent, payable as to Rs. 2 on application, Rs. 3 (including premium) on allotment, Rs. 3 on first call and Rs. 3 on final call. All these amounts were received on the due dates.

Journalise the above transactions.

दीपेश लिमिटेड का पंजीयन 10 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से हुआ जो 10 रु० वाले 50,000 ईक्विटी अंशों में तथा 10 रु० वाले 50,000 अधिमान अंशों में विभाजित थी। कम्पनी ने 40,000 ईक्विटी अंश तथा 35,000 अधिमान अंश 10% प्रीमियम पर निर्गमित किए जो इस प्रकार देय थे– 2 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 3 रु० (प्रीमियम सहित) बंटन पर, 3 रु० प्रथम मांग पर और 3 रु० अन्तिम मांग पर। सभी धन राशियों की प्राप्ति देय तिथियों पर हो गई है।

उपरोक्त सौदों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। [134]

15. A company issues 10,000 equity shares of the face value of Rs. 10 each at a premium of 10% payable as to Rs. 3 on application, Rs. 4 on allotment (including premium of Re. 1 per share), Rs. 2 on first call and Rs. 2 on final call. All the shares are subscribed and duly allotted, and both the calls were made. All cash is

duly received except that a holder of 200 shares had not paid the final call. A holder of 300 shares had paid the entire balance on his holding of 300 shares with the allotment.

Journalise the above transactions.

एक कम्पनी ने 10 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंश 10% प्रीमियम पर निर्गमित किये। भुगतान इस प्रकार देय था—3 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 4 रु० वंटन पर (1 रु० प्रीमियम सहित), 2 रु० प्रथम मांग पर और 2 रु० अन्तिम मांग पर। सभी अंशों को खरीदने के लिये प्रार्थना-पत्र आये, उनका वंटन कर दिया गया। दोनों मांगें मंगवाली गईं। एक धारक को छोड़कर, जिसने 200 अंशों पर अन्तिम मांग का भुगतान नहीं किया है, शेष अंशों पर देय राशि यथा समय प्राप्त हो गई। एक धारक ने, जिसके पास 300 अंश हैं, वंटन राशि के भुगतान के साथ ही सभी अंशों पर बाकी राशि अग्रिम जमा करादी।

उपरोक्त सौदों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिये। [135]

16. A company was registered in the year 1965 with an authorised capital of Rs. 20 lakhs divided into 16,000 equity shares of Rs. 100 each, and 4,000 preference shares of Rs. 100 each. In the year of its incorporation, it issued 10,000 equity shares on which full amount had been received. In the year 1967, the company issued 4,000 equity shares at a discount of 5 per cent, payable as to Rs. 25 on application, Rs. 20 on allotment, Rs. 30 on first call and the balance on second call. All these calls were made and amounts received thereon except that a shareholder who holds 100 shares did not pay the amount due on allotment. He, however, paid this amount with first call. Another holder of 200 shares paid the entire balance on his holdings with the allotment dues.

(a) Journalise the above transactions and show how these items will appear in the Balance Sheet.

(b) Being short of funds, the directors desire to issue the whole lot of 4,000 preference shares at a discount of 5% and seek your opinion whether they can issue these shares at discount. Submit your opinion.

1965 में एक कम्पनी का पंजीयन 20 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से हुआ जो कि 100 रु० वाले 16,000 ईक्विटी अंशों में तथा 100 रु० वाले 4,000 अधिमान अंशों में विभाजित है। अपने समामेलन के वर्ष में इसने 10,000 ईक्विटी अंश जनता में निर्गमित किए जिन पर पूरी धन राशि प्राप्त हो गई है। 1967 में कम्पनी ने 4,000 ईक्विटी अंश 5 प्रतिशत बट्टे पर निर्गमित किये जो इस प्रकार देय थे—25 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 20 रु० वंटन पर, 30 रु० प्रथम मांग पर और शेष धन राशि द्वितीय मांग पर। ये सभी मांगें कर ली गईं तथा उन पर पूर्ण रकम प्राप्त हो गई, केवल एक अंशधारी ने जिसके पास 100 अंश हैं, वंटन राशि का देय तिथि को भुगतान नहीं किया अपितु इसका भुगतान प्रथम मांग के साथ किया। एक दूसरे अंशधारी ने, जिसके पास 200 अंश थे, अपने अंशों पर शेष धन राशि का वंटन राशि के साथ अग्रिम भुगतान कर दिया।

(अ) उक्त सौदों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिये तथा यह बतलाइये कि ये मदें चिट्ठे में किस प्रकार प्रकट होंगी।

(ब) धन की कमी के कारण, संचालक सभी 4,000 अधिमान अंशों को भी 5% बट्टे पर निर्गमित करना चाहते हैं तथा आपसे यह राय मांगते हैं कि क्या वे उन अंशों को बट्टे पर निर्गमित कर सकते हैं। अपनी राय बताइये। [136]

✓17. A limited company offered to the public 500 equity shares of Rs. 100 each on the following terms:—Rs. 10 per share payable on application, Rs. 40 on allotment and the balance on first call. The applications were received for the purchase of 700 shares. Applicants for the purchase of 200 shares were refused allotment by the company and their application money returned. The rest were allotted shares in the company. All the amounts were received on the due dates except that a holder holding 10 shares failed to pay the call money.

Pass necessary Journal entries, give Cash Book and prepare the Balance Sheet of the company.

एक लिमिटेड कम्पनी ने 100 रु० वाले 500 ईक्विटी अंश जनता को निम्न शर्तों पर प्रस्तावित किये :—

प्रार्थना-पत्र के साथ 10 रु० देने थे, 40 रु० वंटन पर और शेष प्रथम मांग पर। 700 अंशों को खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये। 200 अंशों के प्रार्थियों को कोई वंटन नहीं किया गया और उनकी प्रार्थना-पत्र के साथ भेजी हुई धन राशि को लौटा दिया गया। शेष प्रार्थियों को कम्पनी में उनकी प्रार्थनानुसार अंशों का वंटन कर दिया गया। एक अंशधारी को छोड़कर, जिसके पास 10 अंश हैं और जिसने मांग-राशि का भुगतान नहीं किया, सभी देय धन की प्राप्ति हो गई।

जर्नल में प्रविष्टियां कीजिये, रोकड़ बही बनाइये तथा कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये। [137]

Answer : Total of Balance Sheet Rs. 49,500

✓18. A company issued 10,000 equity shares of Rs. 100 each at a premium of 10% payable as to Rs. 25 on application, Rs. 30 on allotment (including premium), Rs. 25 on first call and Rs. 30 on second call.

Applications for 15,000 equity shares were received of which applications for 2,500 shares were refused allotment and the application money returned. Allotment was made prorata to the remaining applicants, excess application moneys being applied towards the amount due on allotment.

X to whom 100 shares were allotted failed to pay the amount due from him on allotment and subsequent calls.

Journalise the above transactions.

एक कम्पनी ने 100 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंश 10% प्रीमियम पर निर्गमित किये जो इस प्रकार देय थे—25 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 30 रु० वंटन पर (प्रीमियम सहित), 25 रु० प्रथम मांग पर और 30 रु० द्वितीय मांग पर।

15,000 ईक्विटी अंशों को खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये। इनमें से 2,500 अंशों के प्रार्थियों को अंटन करने से इन्कार कर दिया गया तथा उनको प्रार्थना राशि लौटा दी गई। शेष प्रार्थियों को यथानुपात वंटन किया गया। प्रार्थना-पत्रों के साथ प्राप्त अतिरिक्त धन राशि का वंटन की देय राशि के भुगतान करने में प्रयोग किया गया।

एनन जिसको 100 अंशों का वंटन किया गया था, वंटन पर देय धन तथा वंटन के बाद की गई मांगों का भुगतान करने में असमर्थ रहा।

उपरोक्त सौदों को जर्नल में प्रविष्टियां दीजिए। [138]

19. A limited company issued share capital of Rs. 5,00,000 divided into 5,000 equity shares of Rs. 100 each, payable as to Rs. 25 on application, Rs. 25 on allotment, Rs. 25 on first call, the balance as and when required by the company. All the amounts were received except from a holder of 200 shares who had not paid the amount due on first call After giving him sufficient notice, the directors forfeited his holdings. Make the necessary Journal entries and show the effect on the company's Balance Sheet.

एक लिमिटेड कम्पनी ने 5,00,000, रु० की अंश पूंजी निर्गमित की जो 100 रु० वाले 5,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है तथा जिन पर 25 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 25 रु० वंटन पर, 25 रु० प्रथम मांग के साथ तथा शेष आवश्यकता पड़ने पर देय हैं। 200 अंशों के धारक को छोड़ कर, जिससे प्रथम मांग की देय राशि प्राप्त नहीं हुई है, शेष सभी धन राशि प्राप्त हो गई हैं। पर्याप्त नोटिस देने के पश्चात् संचालकों ने उसके अंशों को जब्त कर लिया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा इसका असर चिट्ठे पर बतलाइये। [139]

20. A company was registered with a capital of Rs. 20 lakhs divided into 10,000 equity shares of Rs. 100 each and 10,000 6% preference shares of Rs. 100 each payable as to Rs. 25/-on application; Rs. 30 on allotment and the balance on first call. All these issues were made at a premium of 5%. Applications were received for the purchase of 15,000 preference shares and 8,000 equity shares. All the applicants for the purchase of equity shares were allotted shares in the company. The applicants for the purchase of preference shares were allotted shares prorata in the company. All the amounts were received except that a holder of 200 preference shares failed to pay the amounts due on allotment and first call. The shares remaining unpaid were forfeited by the directors.

Journalise the above transactions and show these items in the Balance Sheet.

एक कम्पनी का पंजीयन 20 लाख रु० की पूंजी से हुआ जो 100 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंशों में तथा 100 रु० वाले 10,000 6% अधिमान अंशों में विभाजित थी। अंशों पर भुगतान इस प्रकार देय था—25 रु० प्रार्थना-पत्र पर, 30 रु० वंटन पर और शेष प्रथम मांग पर। इन सभी अंशों को 5% प्रीमियम पर निर्गमित कर दिया गया। 15,000, 6% अधिमान अंशों को खरीदने के लिये तथा 8,000 ईक्विटी अंशों को खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये। ईक्विटी अंशों के खरीदने वाले सभी अंशधारियों को अंशों का वंटन कर दिया गया। अधिमान अंशों के प्रार्थियों को यथानुपात

बंटन किया गया। एक अधिमान अंशधारी को छोड़कर, जिससे 200 अधिमान अंशों के बंटन तथा प्रथम मांग पर देय राशि प्राप्त नहीं हुई है, सभी धन राशि प्राप्त हो गई। संचालकों ने इन अंशों को जब्त कर लिया। जर्नल में प्रविष्टियां दीजिए तथा इन मदों को चिट्ठे में बतलाइए। [140]

Answer:—Balance Sheet Total Rs. 18,76,500

✓21. The directors of a company forfeited 500 equity shares of Rs. 20 each, Rs. 15 called up on which Rs. 10 has been paid by B. They re-issue the shares to D as Rs. 15 paid up at Rs. 8 per share and make a further call of Rs. 5 per share and this is paid by D. Show the transactions in the company's Journal.

कम्पनी के संचालको ने 20 रु० वाले 500 ईक्विटी अंशों को जब्त कर लिया। इन अंशों पर 15 रु० प्रति अंश के हिसाब से मांगे गये थे और 'बी' ने इन अंशों पर 10 रु० प्रति अंश के हिसाब से भुगतान किया था। उन्होंने (संचालकों ने) इन अंशों को 15 रु० प्रदत्त मानते हुए 8 रु० प्रति अंश के हिसाब से 'डी' को पुनर्निर्गमित किया है तथा इन अंशों पर 5 रु० की मांग और की गई है। 'डी' ने इस मांग का भुगतान कर दिया है। कम्पनी के जर्नल में इन सौदों को दिखाइये। [141]

Answer : Balance of Forfeited Shares a/c transferred to Capital Reserve Rs. 1,500

✓22. The nominal capital of Ashoka Limited consists of 20,000 equity shares of Rs. 5 each. The whole of these shares were issued in 1966 and were fully paid up in four instalments of Rs. 1.25 each. On 12th Feb. 1967, after due notice, the directors passed a resolution forfeiting 500 shares held by M. Lall, the final instalment due upon his holding not having been paid. On 1st May 1967, the 500 shares thus forfeited were re-issued as fully paid to C. L. Gangan who paid Rs. 1,250 for them.

Give Journal entries regarding forfeiture and re-issue of the above forfeited shares.

अशोक लिमिटेड की अंकित पूंजी 5 रु० वाले 20,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है। सम्पूर्ण अंशों का निर्गमन 1966 में किया गया और इनका पूर्ण भुगतान 1.25 रु० वाली प्रति किस्त के हिसाब से चार किस्तों में माँग लिया गया। पर्याप्त नोटिस देने के पश्चात्, 12 फरवरी 1967 को प्रस्ताव पास करके एम. लाल के 500 अंशों को जब्त कर लिया गया। इन अंशों पर अन्तिम मांग का भुगतान नहीं हुआ था। जब्त किये गये 500 अंशों को पूर्ण प्रदत्त रूप में सी. एल. गंगन को 1 मई, 1967 को पुनः निर्गमित कर दिया गया। उसने उन अंशों के 1,250 रु० दिये।

उपरोक्त अंशों के जब्त तथा पुनर्निर्गमन सम्बन्धी जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। [142]

Answer : Balance of Forfeited Shares a/c transferred to Capital Reserve Rs. 625.

✓23. A company, with a capital of Rs. 1,00,000 divided into 2,000 equity shares of Rs. 50 each, offers its shares to the public payable as follows:—Rs. 10 on application, Rs. 10 on allotment, Rs. 15 on first call and the balance on second call.

Shareholder A, who holds 30 shares, has paid only his application money.

Shareholder B, who holds 20 shares, has paid application money on 20 shares and allotment money on 10 shares only.

Shareholder C, who holds 8 shares, has paid only application and allotment moneys.

Shareholder D, who holds 5 shares, has paid application, allotment and first call moneys.

Shareholder E, who holds 3 shares has paid application, allotment and first call moneys in full and the second call money only on 2 shares.

The company forfeits the shares of all the above shareholders who have not paid the arrears. The remaining shares are paid for in cash in full. Half the number of above forfeited shares are subsequently re-issued at a discount of 10% and they are fully paid for.

Journalise the above transactions and show the Share Capital and the Forfeited Shares a/c in the company's Balance Sheet.

एक कम्पनी, जिसकी पूंजी 1 लाख रु० है और जो 50 रु० वाले 2,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है, जनता में अपने अंशों को प्रस्तावित करती है, जो (अंश) निम्न प्रकार देय हैं:—

10 रु० प्रार्थना-पत्र के साथ, 10 रु० बंटन पर; 15 रु० प्रथम मांग पर और शेष द्वितीय मांग पर।

अंशधारी 'ए' ने जिसके पास 30 अंश हैं, केवल प्रार्थना राशि दी है।

अंशधारी 'बी' ने, जिसके पास 20 अंश है, प्रार्थना राशि 20 अंशों पर दी है तथा 10 अंशों पर बंटन राशि दी है।

अंशधारी 'सी' ने जिसके पास 8 अंश हैं, केवल प्रार्थना राशि तथा बंटन राशि का भुगतान किया है।

अंशधारी 'डी' ने, जिसके पास 5 अंश हैं, प्रार्थना राशि, बंटन राशि तथा प्रथम मांग राशि का भुगतान किया है।

अंशधारी 'ई' ने जिसके पास 3 अंश हैं, पूर्ण रूप में प्रार्थना राशि, बंटन राशि तथा प्रथम मांग राशि का भुगतान किया है तथा द्वितीय मांग केवल 2 अंशों पर चुकाई है।

कम्पनी ने उन सभी अंशधारियों के अंशों को जब्त कर लिया है जिन पर देय धन राशियां प्राप्त नहीं हुई हैं। शेष अंशों पर देय राशि पूर्ण रूप से प्राप्त करली गई है। जब्त किये गये अंशों की संख्या में से आधे अंशों को 10% बट्टे पर पुनर्निर्गमित कर दिया गया है और उनका पूर्ण भुगतान हो गया है।

उपरोक्त सौदों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिये तथा अंश पूंजी और जब्त अंश खाते को चिट्ठे में दिखलाइये। [143]

Answer : Balance of Share Capital Account Rs. 98,400.

✓24. X Co. Ltd. had an authorised capital of Rs. 20,00,000, divided into 20,000 equity shares of Rs. 100 each, out of which 15,000 shares were issued to the public for subscription. The terms of issue were that Rs. 20 per share was payable on application, Rs. 20 per share on allotment, Rs. 30 per share on first call and the

balance of Rs. 30 per share on second call. All the amounts were duly received except the following :

From A—Holding 30 shares on which the allotment money, and money due on first and second calls were in arrears.

From B—Holding 20 shares, on which the first and second calls were in arrears.

From C—Holding 10 shares, on which the second call money only was in arrears.

The Directors forfeited the shares and re issued the same to D on the following terms:—

A's shares were issued at Rs. 90 per share.

B's shares were issued at Rs. 70 per share.

C's shares were issued at Rs. 50 per share.

Give the Journal entries necessary to record the above transactions, assuming that D had paid the whole amount due from him.

एक्स कम्पनी लिमिटेड की अधिकृत पूंजी 20,00,000 रु० है जो 100 रु० वाले 20,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है। इनमें से 15,000 अंश जनता में निर्गमित किये गये हैं। निर्गमन की शर्तों के अनुसार 20 रु० प्रार्थना पत्र के साथ, 20 रु० बंटन पर, 30 रु० प्रथम मांग पर और शेष 30 रु० द्वितीय मांग पर देने हैं। निम्नलिखित के सिवाय सभी धन राशियां प्राप्त हो गई हैं:—

अ से—30 अंशों का धारक जिस पर बंटन, प्रथम मांग तथा द्वितीय मांग पर देय राशि बाकी है।

ब से—20 अंशों का धारक जिस पर प्रथम तथा द्वितीय मांग पर देय राशि शेष है।

स से—10 अंशों का धारक जिस पर द्वितीय मांग की देय राशि शेष है।

संचालकों ने इन अंशों को जब्त कर लिया और 'द' को निम्नलिखित शर्तों पर निर्गमन किया—

अ के अंश 90 रु० प्रति अंश के हिसाब से निर्गमित किये गये।

ब के अंश 70 रु० प्रति अंश के हिसाब से निर्गमित किये गये।

स के अंश 50 रु० प्रति अंश के हिसाब से निर्गमित किये गये।

उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिये आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये, यह मानते हुए कि 'द' ने देय सम्पूर्ण राशि का भुगतान कर दिया है। [144]

Answer : Balance of Forfeited Shares Account Rs. 700.

25. A limited company had a nominal capital of Rs. 2,50,000 in 25,000 equity shares of Rs. 10 each. Of these, 4,000 shares were issued to the vendors as fully paid, 8,000 shares were subscribed for by the public and during the Ist year Rs. 5 per share was called up. 2,000 shares were also issued, as fully paid, to persons other than the vendors in payment of the property purchased. On the 8,000 shares subscribed for by the public there had been paid at the end of the first year :

On 6,000 shares, the full amount called.

On 1,250 shares, Rs. 4/- per share.

On 500 shares, Rs. 3/- per share.

On 250 shares, Rs. 2/- per share.

The directors forfeited the 750 shares on which less than Rs. 4 per share had been paid. Give the Journal and Cash Book entries to record these transactions and set out the capital as it should appear in the company's Balance Sheet at the end of the Ist year.

एक लिमिटेड कम्पनी की अंकित पूंजी 2,50,000 रु० है जो 10 रु० वाले 25,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है। इनमें से 4,000 पूर्ण प्रदत्त अंश व्यापार-विक्रेताओं को निर्गमित कर दिये गये। 8,000 अंश जनता के द्वारा प्रार्थित किये गये और प्रथम वर्ष में 5 रु० मंगवाये गये। 2,000 पूर्ण दत्त अंश व्यापार विक्रेताओं के अतिरिक्त अन्य व्यक्तियों को सम्पत्ति खरीदने के बदले निर्गमित किये गये। प्रथम वर्ष के अन्त में 8,000 अंशों के अंशधारियों से निम्नलिखित धन राशि प्राप्त हुई है :—

6,000 अंशों पर पूर्ण मांगी गई राशि प्राप्त हो गई है।
1,250 अंशों पर 4 रु० प्रति अंश के हिसाब से राशि प्राप्त हो गई है।
500 अंशों पर 3 रु० प्रति अंश के हिसाब से राशि प्राप्त हो गई है।
250 अंशों पर 2 रु० प्रति अंश के हिसाब से राशि प्राप्त हो गई है।

संचालकों ने 750 अंशों को जब्त कर लिया जिन पर 4 रु० से कम [प्रति अंश के हिसाब से) प्राप्त हुए थे। उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिये जर्नल में प्रविष्टियां दीजिये, रोकड़ वही बनाइये, तथा प्रथम वर्ष के अन्त में कम्पनी के चिट्ठे में पूंजी को बताइये। [145]

Answer : Balance of Cash Book Rs. 37,000

26. On February 1, 1956 the directors of Alpha Ltd. issued 50,000 equity shares of Rs. 10 each at Rs. 12 per share, payable as to Rs. 5 on application (including premium), Rs. 4 on allotment and the balance on May 1, 1956.

The lists were closed on February 10, 1956 by which date applications for 70,000 shares had been received. Of the cash received Rs. 40,000 was returned and Rs. 60,000 was applied towards the amount due on allotment, the balance of which was paid on February 16, 1956. All shareholders paid the call due on May 1, 1956 with the exception of one allottee of 500 shares. These shares were forfeited on September 29, 1956 and re-issued as fully paid at Rs. 8 per share on November, 1,1956.

Journalise.

1 फरवरी, 1956 को आल्फा लिमिटेड के संचालकों ने 10 रु० वाले 50,000 ईक्विटी अंश 12 रु० प्रति अंश के हिसाब से निर्गमित किये जिनका भुगतान निम्न प्रकार करना था :—

प्रार्थना-पत्र के साथ 5 रु० (प्रीमियम सहित), बंटन पर 4 रु० तथा शेष 1 मई 1956 को।

10 फरवरी 1956 को सूचियां बन्द हो गई और उस तिथि तक 70,000 अंश खरीदने के लिए प्रार्थना-पत्र आये। प्राप्त धन में से 40,000 रु० लौटा दिये गये तथा 60,000 रु० का उपयोग बंटन के लिये किया गया। बंटन पर शेष राशि 16 फरवरी 1956 को प्राप्त हो गई। सभी अंशधारियों ने 1 मई 1956 को देय मांग का भुगतान कर दिया। केवल एक अंशधारी ने, जिसके पास 500 अंश हैं, 1 मई वाली मांग का भुगतान नहीं किया। 29 सितम्बर 1956 को इन अंशों को

जब्त कर लिया गया और 1 नवम्बर 1956 को इन अंशों को पूर्ण प्रदत्त मानते हुए 8 रु० प्रति अंश के हिसाब से निर्गमित कर दिया गया।

जर्नल प्रविष्टियां दीजिये। [146]

Answer : Total Cash received Rs. 6,02,500; Balance of Forfeited Shares a/c transferred to Capital Reserve Rs. 2,500.

✓27. Bhawani Ltd. invited applications for 2,00,000 of its equity shares of Rs. 10 each on the following terms :

Payable on application on January 31, 1967—Rs. 5/- per share.
Payable on allotment on February 28, 1967—Rs. 3/- per share.
Payable on first & final call on June 30, 1967—Rs. 3/- per share.

Applications for 2,50,000 shares were received. It was decided :

(a) to refuse allotment to the applicants for 10,000 shares;
(b) to allot in full to applicants for 40,000 shares;
(c) to allot the balance of the available shares prorata among the other applicants; and
(d) to utilise excess application moneys in part payment of allotment moneys.

One applicant to whom shares had been allotted on prorata basis did not pay the amount due on allotment and on call and his 200 shares were forfeited. The shares were reissued on Oct. 31, 1967 at Rs. 9 per share.

Show the Journal and Cash Book entries necessary to record the foregoing transactions.

भवानी लि० ने 10 रु० वाले 2,00,000 ईक्विटी अंशों का निम्न शर्तों पर निर्गमन किया:-

31 जनवरी 1967 को प्रार्थना पत्र के साथ देय—5 रु० प्रति अंश
28 फरवरी 1967 को वंटन पर देय—3 रु० प्रति अंश
30 जून 1967 को प्रथम व अन्तिम मांग पर देय—3 रु० प्रति अंश

2,50,000 अंशों को खरीदने के लिये प्रार्थना पत्र आये। यह निश्चय किया गया कि :

(अ) 10,000 अंशों के प्रार्थियों को वंटन के लिये मना कर दिया जाय;
(व) 40,000 अंशों के प्रार्थियों को उनके द्वारा प्रार्थित सम्पूर्ण अंशों का वंटन कर दिया जाय;
(स) वचे हुए अंशों का शेष प्रार्थियों में यथानुपात बंटन कर दिया जाय; तथा
(द) प्रार्थना पत्र के साथ प्राप्त अतिरिक्त धन राशि को वंटन की देय राशि के आंशिक भुगतान में प्रयोग किया जाय।

एक अंशधारी ने जिसको कि अंशों का यथानुपात वंटन हुआ है, अपने 200 अंशों पर देय वंटन राशि तथा प्रथम मांग राशि का भुगतान नहीं किया है। उसके अंशों को जब्त कर लिया गया है। 31 अक्टूबर 1967 को इन अंशों को 9 रु० प्रति अंश के हिसाब से पुनर्निर्गमित कर दिया गया है।

उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिये जर्नल तथा रोकड़ वही में प्रविष्टियां कीजिये। [147]

Answer : Balance of Cash Book Rs. 22,00,850.

✓28. A limited company issued at par on 1st July, 1959 1,000 redeemable preference shares of Rs. 100 each, such shares being redeemable at a premium of 5%. One half of this issue was redeemed out of profits on 10th January, 1967.

On 15th December, 1967 the company issued 10,000 equity shares of Rs. 10 each for cash at a premium of Rs. 5/- per share and out of the proceeds it redeemed the balance of the redeemable preference shares.

Make Journal entries to record all these transactions in the books of the company.

1 जुलाई 1959 को एक लिमिटेड कम्पनी ने 100 रु० वाले 1,000 शोध्य अधिमान अंशों का निर्गमन किया। इन अंशों का शोधन 5% प्रीमियम पर करना है। 10 जनवरी 1967 को लाभों में से आधे अंशों का शोधन कर दिया गया है।

15 दिसम्बर 1967 को कम्पनी ने 10 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंश (5 रु० प्रीमियम प्रति अंश पर) निर्गमित किये और प्राप्त धन राशि में से शेष शोध्य अधिमान अंशों का शोधन कर दिया।

कम्पनी की पुस्तकों में इन सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। [148]

✓29. The Madras Industries Ltd. had, as a part of its share capital, 2,000 redeemable preference shares of Rs. 100 each, fully paid. These shares have now become due for redemption. The company, therefore, issued 10,000 equity shares of Rs. 10 each at a premium of 15% with the object of redeeming the said preference shares. The whole amount was received in cash. The redeemable preference shares were then paid out of the proceeds of the new issue, the balance having been met out of the General Reserve which stood at Rs. 1,20,000.

Journalise the above transactions and also show the appropriate ledger accounts in the books of the company.

मद्रास इन्डस्ट्रीज लिमिटेड की अंश पूंजी का एक हिस्सा 100 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त 2,000 शोध्य अधिमान अंशों में था। ये अंश अब शोधन के लिए परिपक्व हो गये हैं। इन अधिमान अंशों के शोधन हेतु कम्पनी ने 10 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंश 15% प्रीमियम पर निर्गमित किये हैं। इनकी सम्पूर्ण धन राशि प्राप्त हो गई। प्राप्त धन राशि में से शोध्य अधिमान अंशों का भुगतान कर दिया गया, शेष की पूर्ति 1,20,000 रु० के सामान्य संचय से की गई।

उपरोक्त सौदों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा कम्पनी की पुस्तकों में उचित खाते खोलिये। [149]

Answer: Redemption out of profits Rs. 85,000.

✓30. The following is the summarised Balance Sheet of a limited company as on 31st December, 1967: Issued Share Capital: 20,000 equity shares of Rs. 10 each fully paid and 1,000 6% redeemable preference shares of Rs. 100 each fully paid; Sundry Creditors Rs. 15,000; Profit and Loss Account (Cr.) Rs. 1,15,000; Sundry Assets Rs. 3,20,000; Bank Balance Rs. 1,10,000.

The company resolved to redeem its preference share capital at a premium of 2 per cent out of profits.

Prepare the ledger accounts necessary to record the transactions and the company's Balance Sheet showing the position on completion of the redemption.

31 दिसम्बर 1967 को एक कम्पनी का संक्षिप्त चिट्ठा निम्न प्रकार से है:—

निर्गमित अंश पूंजी : 10 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त 20,000 ईक्विटी अंश तथा 100 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त 1000 6% शोध्य अधिमान अंश; विभिन्न लेनदार 15,000 रु०; लाभ-हानि खाता (क्रेडिट) 1,15,000 रु०; विभिन्न सम्पत्तियाँ 3,20,000 रु०; बैंक शेष 1,10,000 रु० ।

कम्पनी ने लाभों में से 2% प्रीमियम पर शोध्य अधिमान अंशों को शोधन करने का निश्चय किया ।

उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक खाते बनाइये तथा शोधन के पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा तैयार कीजिये । [150]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 3,28,000

31. The following is a summarised Balance Sheet of Halda Ltd. as on 31st December, 1967. (हाल्डा लिमिटेड का संक्षिप्त चिट्ठा 31 दिसम्बर, 1967 को इस प्रकार है)—

	Rs.		Rs.
Capital : Issued and fully paid :		Sundry Assets	2,00,000
1,00,000 Equity Shares of Re. 1 each fully paid.	1,00,000	Bank Balance	85,000
50,000 Redeemable Preference Shares of Re. 1 each.	50,000		
Profit and Loss a/c	60,000		
Sundry Creditors	75,000		
	2,85,000		2,85,000

The directors decide to redeem the preference shares on 1st Jan. 1968, at a premium of 10% out of profits.

Prepare the Ledger Accounts necessary for recording the transactions, and a summarised Balance Sheet showing the position on completion of the redemption.

(1 जनवरी 1968 को संचालकों ने शोध्य अधिमान अंशों का शोधन 10% प्रीमियम पर लाभों में से करने का निश्चय किया ।

सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक खाते तैयार कीजिये तथा शोधन के पश्चात् का संक्षिप्त चिट्ठा तैयार कीजिये) [151]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 2,30,000

32. Ravi Limited wishes to redeem for cash its preference shares. The liabilties side of the Balance sheet is as follows. (रवि लिमिटेड अपने अधिमान अंशों का

शोधन करना चाहती है। चिट्ठे का दायित्व पक्ष इस प्रकार से हैं) :—

	Rs.
50,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid	5,00,000
20,000 6% Redeemable Preference Shares of Rs. 10 each fully paid	2,00,000
10,000 7% Redeemable Preference Shares of Rs. 10 each, Rs. 5 paid	50,000
	7,50,000
Sundry Creditors	2,00,000
General Reserve	1,50,000
Profit & loss Account	1,00,000

The preference shares are redeemable at a premium of 5% at any time after 31st December, 1967. In the year 1968, the directors desire to redeem the above preference shares and seek your opinion for their redemption.

Suggest the necessary procedure for the same giving your opinion.

(31 दिसम्बर 1967 के पश्चात् अधिमान अंशों का 5% प्रीमियम पर शोधन किया जाना है। 1968 में संचालक गण इन अंशों का शोधन करना चाहते हैं और शोधन के लिए आपकी परामर्श चाहते हैं।

परामर्श देते हुए इन अंशों के शोधन की आवश्यक विधि बतलाइये।) [152]

33. A company was registered on 1st January, 1967 with an authorised share capital of Rs. 10,00,000 divided into 10,000 equity shares of Rs. 100 each. It offered to the public for subscription, 5,000 equity shares at a premium of Rs. 10 per share payable as to Rs. 25 on application, Rs. 35 (including premium) on allotment, and the balance in two equal instalments of Rs. 25 each. It further issued 1,000 debentures of Rs. 100 each at par, payable as to Rs. 10 on application, Rs. 40 on allotment and the balance two months after allotment. The shares and debentures were all taken up and duly paid for. Show the necessary journal entries in the books of the company to record these transactions. How the items will appear in the Balance Sheet of the company ?

1 जनवरी, 1967 को एक कम्पनी की 10 लाख रु० की अधिकृत पूंजी से स्थापना हुई, जो 100 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित थी। उसने जनता को 10 रु० प्रति अंश के प्रीमियम पर 5,000 ईक्विटी अंश अभिदान के लिए प्रस्तावित किए जो इस प्रकार देय हैं : प्रार्थना-पत्र पर 25 रु०, वंटन पर 35 रु० (प्रीमियम सहित), तथा शेष राशि 25 रु० की बराबर-बराबर दो किस्तों में। उसने आगे 100 रु० वाले 1,000 ऋण-पत्र सम-मूल्य पर निर्गमित किये जो इस प्रकार देय होंगे—प्रार्थना पत्र पर 10 रु०, वंटन पर 40 रु० तथा शेष राशि वंटन के दो महीने बाद। इन सौदों को दर्ज करने के लिए कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दिखाइये। कम्पनी के चिट्ठे में मदें किस प्रकार दिखाई जायेंगी ? [153]

Answer : Total of Balance sheet—Rs. 6,50,000

Balance of Cash Book—Rs. 6,50,000

✓34. A Ltd. made an issue, which was fully subscribed, of Rs. 2,00,000 6% First Mortgage Debentures (Rs. 100 each) at Rs. 98. The debentures were allotted on 31st March, subscription being payable 10% on application, 40% on allotment, 25% on 30th September and the balance on 30th November. Under the terms of the issue, payment could be made in full on allotment, interest on any amounts prepaid being allowable at the rate of 5 per cent per annum, such interest was payable by the company on 31st December. The allottees of one half of the debentures took advantage of the pre-payment terms. The others paid on the due dates.

Journalise the above transactions in the books of the company.

एक कम्पनी ने 2,00,000 रु० के 6% प्रथम बन्धक ऋण-पत्र (प्रत्येक 100 रु० का) 98 रु० पर निर्गमित किये जो पूर्णतया अभिदान किये गये। ऋण-पत्रों का बंटन 31 मार्च को किया गया, भुगतान निम्न प्रकार देय था—प्रार्थना-पत्र के साथ 10 प्रतिशत; बंटन पर 40 प्रतिशत; 30 सितम्बर को 25 प्रतिशत; तथा शेष राशि 30 नवम्बर को। निर्गमन की शर्तों के आधीन, बंटन पर पूर्ण भुगतान किया जा सकता था। इस प्रकार अग्रिम भुगतान की गई राशि पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज दिया जाना था जोकि कम्पनी द्वारा 31 दिसम्बर को देय है। ऋण-पत्रों के आधे आवंटियों ने अग्रिम भुगतान की शर्तों का लाभ उठाया, अन्य आवन्टियों ने देय तिथियों पर भुगतान किया।

उपरोक्त सौदों को कम्पनी के जर्नल में दर्ज कीजिए। [154]

✓35 (a) Explain what is meant by the issue of debentures

(i) at a premium and
(ii) at a discount ?

(b) B Ltd. made the following issue of debentures :—

(i) For cash 6,000 7% debentures of Rs. 100 each at a premium of 5 per cent,

(ii) To a creditor who supplied machinery costing Rs. 1,00,000, 1,100 debentures of Rs. 100 each, and

(iii) To Bank for a loan of Rs. 7,00,000 as collateral security, 10,000 debentures of Rs. 100 each.

Journalise the above transactions and show how the item 'Debentures' will appear in the Balance Sheet ?

(अ) कम्पनी द्वारा (i) प्रीमियम पर, तथा (ii) बट्टे पर ऋण-पत्रों के निर्गमन से आप क्या समझते हैं, वर्णन करिये।

(ब) बी लिमिटेड ने ऋण-पत्रों के निम्न निर्गमन किए :—

(i) नकद—6,000 7% ऋण-पत्र (100 रु० वाले) 5 प्रतिशत प्रीमियम पर;

(ii) एक लेनदार को जिसने 1,00,000 रु० लागत की मशीनरी बेची थी—1,100 ऋण-पत्र (100 रु० वाले); तथा

(iii) 7,00,000 रु० के ऋण के लिए एक बैंक को समर्थक ऋणाधार के रूप में 10,000 ऋण-पत्र (100 रु० वाले)।

उपरोक्त सौदों को जर्नल में दर्ज कीजिए तथा बतलाइए कि चिट्ठे में 'ऋण-पत्र' का मद किस प्रकार दिखाया जावेगा। [155]

Answer: Total of Debentures Account Rs. 7,10,000.

36. R Ltd. issued 4,000 6% debentures of Rs. 100 each at Rs. 105. The debentureholders had the option of converting, within one year, debentures into 8 per cent preference shares of Rs. 100 each at Rs. 125.

At the end of the first year, the interest on debentures was outstanding. Holders of 200 debentures decided to take advantage of the option. Give journal entries and show these items in the balance-sheet of the company.

आर० लिमिटेड ने 100 रु० वाले 4,000 6% ऋण-पत्रों का 105 रु० पर निर्गमन किया। ऋण-पत्र धारियों को एक वर्ष के भीतर यह विकल्प था कि वे अपने ऋण-पत्रों को 100 रु० वाले 8% अधिमान अंशों में 125 रु० के हिसाब से परिवर्तन करा सकते हैं।

प्रथम वर्ष के अन्त का ऋण-पत्रों पर ब्याज बकाया है। 200 ऋण-पत्रों के धारकों ने विकल्प का लाभ उठाने का निश्चय किया। जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा इन मदों को कम्पनी के चिट्ठे में दिखाइये। [156]

37. On 1st January, 1960 a company had issued 10,000 ten year debentures of Rs. 100 each, bearing interest at 5 per cent per annum. One of the terms of the issue was that the debentures could be redeemed by the company at a premium of 2% by giving six months' notice at any time after five years either by payment of cash or by allotment of shares and/or other debentures according to the option of the debenture-holders.

The necessary notice was given on 1st January, 1965, informing the debenture-holders about the intention of the company to redeem the debentures on 1st July, 1965 either by payment of cash or by allotment of 8% preference shares of Rs. 100 each at Rs. 120 per share or debentures of Rs. 100 each bearing interest at 6 per cent per annum issued at Rs. 98 each.

Holders of 2,000 debentures accepted the offer of preference shares, holders of 4,900 debentures accepted the offer of 6% debentures and the rest demanded cash.

Give journal entries recording the above transactions.

1 जनवरी, 1960 को एक कम्पनी ने 100 रु० वाले दस वर्षीय 10,000 ऋण-पत्र निर्गमित किये थे जिन पर 5 प्रतिशत वार्षिक दर से ब्याज देय था। निर्गमन की शर्तों में एक शर्त यह थी कि पांच वर्ष बाद किसी भी समय छः माह की सूचना देकर कम्पनी ऋण-पत्रों का 2% प्रीमियम पर शोधन कर सकती है। शोधन पर या तो नकद भुगतान कर दिया जायेगा अथवा ऋण-पत्र धारियों को विकल्प होगा कि वे अपने ऋण-पत्रों के बदले में अंश तथा/अथवा अन्य ऋण-पत्र बंटित करालें।

1 जनवरी, 1965 को ऋण-पत्र धारियों को सूचित करते हुए आवश्यक नोटिस दे दिया गया कि कम्पनी का विचार, 1 जुलाई 1965, को ऋण-पत्रों के शोधन करने का है। शोधन का भुगतान या तो नकद किया जा सकता है अथवा 100 रु० वाले 8% अधिमान अंशों का 120 रु० प्रति अंश के हिसाब से बंटन करवाया जा सकता है अथवा 100 रु० वाले 6% ऋण-पत्र 98 रु० प्रति ऋण-पत्र के हिसाब से लिये जा सकते हैं।

2,000 ऋण-पत्रों के धारकों ने अधिमान अंशों का प्रस्ताव स्वीकार किया, 4 900 ऋण-पत्रों के धारकों ने 6% वाले ऋण-पत्रों के प्रस्ताव को स्वीकार किया तथा शेष ने नकद भुगतान की मांग की।

उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। [157]

38. A company issued 5,000 debentures of Rs. 100 each at par on Ist January, 1963 redeemable at par on 31st December, 1967. A cumulative sinking fund was established for the purpose. It was expected that investments would earn 5 per cent net. Sinking Fund tables show that Re. 0.180975 a ounts to Re. 1 at the end of 5 years @ 5%. On 31st December, 1967 the investments realised Rs. 3,9 ,000. On that date the company's bank balance stood at Rs. 1,45,600. The debentures were duly redeemed. Pass necessary Journal entries and post them into ledger accounts.

1 जनवरी, 1963 को एक कम्पनी ने 100 रु० वाले 5,000 ऋण-पत्रों का सम मूल्य पर निर्गमन किया जिनका शोधन, 31 दिसम्बर, 1967 को, सम मूल्य पर किया जाना था। उक्त कार्य के लिए संचयी सिंकिंग फंड की स्थापना की गई। अनुमान लगाया गया कि विनियोगों पर 5% शुद्ध ब्याज प्राप्त होगा। सिंकिंग फंड तालिकाओं से ज्ञात हुआ है कि 0.180975 रु० का विनियोग 5% के दर पर 5 वर्ष के अन्त में, 1 रु० प्रदान करेंगे। 31 दिसम्बर, 1967 को विनियोगों से 3,90,000 रु० प्राप्त हुए। उस तिथि को कम्पनी का बैंक बैलेंस 1,45,600 रु० था। ऋण-पत्रों का शोधन कर दिया गया। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा उनकी खाता वही में खतौनी भी कीजिये। [158]

Answer : Loss on sale of investments-Rs. 12·44

39. (a) Distinguish between sinking fund to repay a liability and sinking fund to replace a wasting asset.

(b) Illustrate your answer by showing the operation of ledger accounts at the end of five years in the following cases :—

(i) Sinking Fund to repay Rs. 60,000 debentures at the end of five years ;

(ii) Sinking Fund to replace leasehold property valued at Rs. 60,000 at the end of five years.

(अ) दायित्वों के भुगतान के लिए निर्मित सिंकिंग फंड तथा क्षयी सम्पत्ति के पुनर्स्थापन के लिये निर्मित सिंकिंग फंड में अन्तर बतलाइये।

(ब) निम्नलिखित परिस्थितियों में पाँच वर्षों के अन्त में खाता बही में विभिन्न खाते खोलकर अपने उत्तर को प्रदर्शित कीजिए:—

(i) पांच वर्षों के अन्त में 60,000 रु० के ऋण-पत्रों का भुगतान करने के लिये निर्मित सिंकिंग फंड;

(ii) पांच वर्षों के अन्त में 60,000 रु० की लागत की पट्टे पर सम्पत्ति के पुनर्स्थापनः के लिये निर्मित सिंकिंग फंड। [159]

✓40. Kumar Limited has an authorised share capital of Rs. 15,00,000 in equity shares of Rs. 10 each of which 80,000 shares have been issu-d and are fully paid. The following is the summary of the balance-sheet as on October 31, 1967. (कुमार लिमिटेड को 10 रु० वाले अंशों में विभाजित 15,00,000 रु० की अधिकृत ईक्विटी अंश पूंजी थी, जिसमें से 80,000 अंश पूर्ण प्रदत्त रूप से निर्गमित थे। 31 अक्टूबर, 1967 को कम्पनी का चिट्ठा निम्नलिखित था):—

	Rs.		Rs.
Equity Share Capital	8,00,000	Fixed Assets	12,50,000
Debenture Redemption Reserve	3,00,000	Stock in Trade	1,80,000
Profit and Loss a/c	2,00,000	Sundry Debtors	1,07,000
6% Debentures	4,00,000	Investments at cost	1,85,000
Current Liabilities	1,70,000	Balance at Bank	1,48,000
	18,70,000		18,70,000

The following transactions took place :

(i) On March 1, 1968 equity shares were offered to existing shareholders, in the ratio of one for every five held, new shares at a price of Rs. 12·50 per share, payable as to Rs. 5 on application, and the balance on allotment. The shareholders took up all the shares to which they were entitled and the amounts due on allotment, which took place on March 17, 1968, were all received by March 22, 1968.

(ii) On April 1, 1968 all the investments were realised, the net proceeds, amounting to Rs. 1,66,000, being received on April 12.

(iii) On April 30, 1968 all outstanding debentures were redeemed at a premium of 5 per cent and the half year's interest due on that date was paid.

(iv) Expenses of the share-issue amounted to Rs. 5,000 and were paid on April 20.

Journalise the entries to record the above transactions utilising the Share Premium Account to the full extent permitted by law. Also prepare the new Balance Sheet of the company.

(कम्पनी के निम्नलिखित सौदे हुए :—

(i) 1 मार्च, 1968 को वर्तमान अंशधारियों को, 12·50 रु० प्रति अंश के मूल्य पर नये अंश प्रस्तावित किये गये। पुराने प्रति 5 अंश के लिए एक नया अंश दिया जाना था जो इस प्रकार देय था—प्रार्थना-पत्र के साथ 5 रु० तथा शेष राशि वंटन पर। अंशधारियों ने समस्त अंशों को खरीद लिया। वंटन 17 मार्च, 1968 को किया गया तथा वंटन पर देय राशि 22 मार्च, 1968 तक प्राप्त हो गई।

(ii) 1 अप्रैल, 1968 को समस्त विनियोगों को बेचा गया तथा 12 अप्रैल को 1,66,000 रु० की शुद्ध प्राप्ति हो गई।

(iii) 30 अप्रैल, 1968 को समस्त बकाया ऋण-पत्रों का 5% प्रीमियम पर शोधन कर दिया गया तथा उस तिथि पर देय आधे वर्ष का ब्याज भी चुका दिया गया।

(iv) अंश निर्गमन व्यय 5,000 रु० हुआ जिसका 20 अप्रैल को भुगतान कर दिया गया।

उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। विधान जिस सीमा तक अंश प्रीमियम खाते के उपयोग की आज्ञा देता है, उस सीमा तक उसका प्रयोग कर लीजिए। कम्पनी का नया चिट्ठा भी दिखाइए। [160]

Answer : Balance Sheet Total Rs. 16,14,000

✓41. The following balances appeared in the books of a company as on 31st December, 1967 :—6% First Mortgage Debentures Rs. 5,00,000; Debenture Redemption Fund Rs. 5,21,000; Debenture Redemption Fund Investment : Rs. 2,64,000 4% Govt. Loan purchased at par and Rs. 2,80,000 $3\frac{1}{2}$% Government Paper purchased for Rs. 2,71,000.

On 29th February, 1968, the investments were sold at Rs. 110 and Rs. 99 respectively, and the debentures were paid off at Rs. 102 together with accrued interest. The interest on debentures had been paid upto 31st December, 1967.

Write up the ledger accounts concerned.

31 दिसम्बर, 1967 को कम्पनी की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष पाये गये :—6% प्रथम बन्धक ऋण-पत्र 5,00,000 रु०; ऋण-पत्र शोधन फंड 5,21,000 रु०; ऋण-पत्र शोधन फंड विनियोग : 2,64,000 रु० 4% सरकारी ऋण (सम मूल्य पर खरीदा हुआ) तथा 2,80,000 रु० $3\frac{1}{2}$% सरकारी पत्र (2,71,000 रु० में खरीदा हुआ)।

29 फरवरी, 1968 को विनियोगों को क्रमशः 110 रु० तथा 99 रु० के हिसाब से बेचा गया तथा ऋण-पत्रों का 102 रु० के हिसाब से, अर्जित ब्याज सहित, भुगतान कर दिया गया। ऋण-पत्रों पर 31 दिसम्बर, 1967 तक के ब्याज का भुगतान किया गया था।

सम्बन्धित लेजर खाते खोलिये। [161]

Answer : Profit on sale of Investments—Rs. 32,600; Rs 5,43,600 transferred to General Reserve.

✓42. A number of years ago, a limited company had issued 5% debentures, redeemable at the company's option at 105 per cent on any interest date (30th June and 31st December) on giving three months' notice. The company had subsequently built up a Debenture Sinking Fund partly represented by investments.

On 31st December, 1966, Rs. 3,00,000 of the debentures were outstanding, the debenture sinking fund stood at Rs. 1,21,500 and the investments appeared in the books at cost Rs. 1,17,800.

On 30th September, 1967 the directors of the company gave notice of their intention to repay the whole of the debentures three months after date, at the same time offering holders the right to subscribe for new 6% debentures at the issue price of 98 per cent upto a total nominal amount of Rs. 2,00,000. The whole of these were taken up.

The balance of cash required to pay off the old debentures was provided as to Rs. 96,700 by the sale of investments having a book value of Rs. 89,300 and as to the remainder out of current funds.

Set out the relevant ledger accounts in the books of the company making any transfer or adjustments you consider appropriate.

कुछ वर्षों पहले, एक लिमिटेड कम्पनी ने 5% ऋण-पत्र निर्गमित किये थे जिनका कम्पनी द्वारा किसी भी व्याज की तिथि (30 जून तथा 31 दिसम्बर) को तीन माह की सूचना द्वारा 105 प्रतिशत पर शोधन किया जा सकता था। बाद में कम्पनी ने ऋण-पत्र शोधन फंड बना लिया था जो कि आंशिक रूप से विनियोगों में विनियोजित था।

31 दिसम्बर, 1966 को 3,00,000 रु० के ऋण-पत्र बकाया थे। ऋण-पत्र शोधन-फंड का शेष 1,21,500 रु० तथा विनियोग खाते का शेष 1,17,800 रु० था।

30 सितम्बर, 1967 को कम्पनी के संचालकों ने तीन माह बाद सम्पूर्ण ऋण-पत्रों को शोधन करने का अपना विचार सूचना द्वारा बतला दिया। ऋण-पत्र धारकों को यह अधिकार भी दिया गया कि वे 2,00,000 रु० के अंकित मूल्य तक नये 6% ऋण-पत्र का 98 प्रतिशत पर अभिदान कर सकते हैं। ये नये समस्त ऋण-पत्र खरीद लिये गये।

पुराने ऋण-पत्रों का भुगतान करने के लिए जितनी शेष रोकड़ की आवश्यकता थी उसकी पूर्ति हेतु 89,300 रु० के पुस्तक मूल्य के विनियोग 96,700 रु० में बेच दिये गये तथा बाकी रकम चालू कोषों में से भी गई।

उचित हस्तान्तरण अथवा समायोजन करते हुए कम्पनी की पुस्तकों में सम्बन्धित लेजर खाते बनाइये। [162]

Answer : Profit on sale of investments Rs. 7,400.

✓43. S Ltd. made an issue of 1,000 6% debentures of Rs. 1,000 each on 1st January, 1962, at the issue price of Rs. 960 per debenture. The terms of issue provided that beginning with 1964 Rs. 20,000 debentures should be redeemed every year either by purchase in the market or by drawings by lot at par. The expenses of issue amounted to Rs. 4,000 which were written off in 1962. Rs. 5,000 were written off the discount on issue of debentures every year.

Towards the end of 1964, the company purchased Rs. 6,000 debentures @ Rs. 940 and Rs. 10,000 debentures @ Rs. 950, the expenses being Rs 400. On 31st December, the remaining debentures, necessary to be redeemed, were paid off

at par by drawings by lot. Assuming the interest is payable on 30th June and 31st December, pass necessary journal entries to record the above transactions. Also show the items relating to debentures in the Balance Sheet of the company.

1 जनवरी 1962 को एस` लिमिटेड ने 1000रु० वाले 1,000 6% ऋण-पत्र 960 रु० प्रति ऋण-पत्र के मूल्य पर निर्गमित किये। निर्गमन की शर्तों में प्रावधान था कि 1964 वर्ष से प्रारम्भ होकर 20,000 रु० के ऋण-पत्रों का या तो बाजार में खरीद द्वारा अथवा सममूल्य पर वार्षिक आहरण द्वारा प्रति वर्ष शोधन किया जायेगा। निर्गमन व्यय 4,000 रु० हुआ जिसको 1962 में अपलिखित कर दिया गया। ऋण-पत्र के निर्गमन पर बट्टे में से प्रति वर्ष 5,000 रु० अपलिखित किये जाते हैं।

1964 वर्ष के अन्त में कम्पनी ने 6,000 रु० के ऋण-पत्र 940 रु० की दर पर तथा 10,000 रु० के ऋण-पत्र 950 रु० की दर पर खरीद लिये। खरीद खर्चा 400 रु० हुआ। 31 दिसम्बर, 1964 को अनिवार्य रूप से शोधन किये जाने वाले ऋण-पत्रों की बाकी राशि का सम मूल्य पर भुगतान कर दिया गया। यह मानते हुए कि ब्याज का भुगतान 30 जून व 31 दिसम्बर को किया जाता है, उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। ऋण-पत्रों से सम्बन्धित मदों को कम्पनी के चिट्ठे में भी दिखाइये। [163]

44. (a) D Ltd. issued 10,000 debentures of Rs 100 each at a discount of 6 per cent. The debentures have to be redeemed at the rate of Rs. 1,00,000 each year commencing with the end of fifth year. How much discount should be written off each year ?

(b) A limited company issues Rs. 1,00,000 debentures at a discount of 5 per cent repayable at a premium of 5 per cent at the end of 5 years. What entry should be passed at the time of issue ? What provision should the company make for the redemption of such debentures and how would the various accounts concerned be dealt with at the time of payment of the debentures ?

(अ) डी लिमिटेड ने 100 रु० वाले 10,000 ऋण-पत्रों का 6 प्रतिशत बट्टे पर निर्गमन किया। पांचवे वर्ष के अन्त से प्रारम्भ होकर 1,00,000 रु० के ऋण-पत्रों का प्रति वर्ष शोधन किया जाना है। प्रति वर्ष बट्टे की कितनी रकम अपलिखित की जाये।

(ब) एक लिमिटेड कम्पनी ने 1,00,000 रु० के ऋण-पत्र 5 प्रतिशत बट्टे पर निर्गमित किये जिनका 5 वर्ष के अन्त में 5 प्रतिशत प्रीमियम पर शोधन किया जाना है। निर्गमन पर क्या प्रविष्टि होगी ? इन ऋणपत्रों के शोधन के लिए कम्पनी को क्या प्रावधान बनाने चाहियें तथा ऋण-पत्रों के भुगतान के समय विभिन्न खातों में क्या प्रविष्टियां की जायें ? [164]

45. P Ltd. made an issue of 10,000 6% First Mortgage Debentures of Rs. 100 each at Rs. 96 per debenture. The whole of the issue was underwritten by M/s P. C. & Co., 8,500 debentures were applied for and allotted to the public. The underwriters discharged their liability and were paid their commission which was at the rate of 2 per cent on the nominal value of the debentures. Give journal entries, and ledger accounts in the books of both the parties.

पी लिमिटेड ने 100 रु० वाले 10,000 6% प्रथम वंधक ऋण-पत्र 96 रु० प्रति ऋण-पत्र के हिसाब से निर्गमित किये। समस्त निर्गमन का मेसर्स पी० सी० एण्ड कम्पनी द्वारा अभिगोपन किया गया। 8,500 ऋण-पत्रों के प्रार्थना-पत्र आये तथा उनका वंटन कर दिया गया। अभिगोपकों ने अपने दायित्व को पूरा किया और उनको ऋण-पत्रों के अंकित मूल्य पर 2 प्रतिशत की दर पर कमीशन का भुगतान कर दिया गया। दोनों पक्षों की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा लेजर खाते खोलिये। [165]

'46. A banking company underwrote 10,000 Rs. 10 shares in a new issue made by B Co. Ltd. The agreed commission was 5% payable as to 75% in fully paid shares and 25% in cash.

In addition to underwriting these shares, the banking company made a firm application in the ordinary course for a further 2,500 shares.

The issue was not fully subscribed by the public and the banking company was obliged to take up 25% of the shares underwritten. The shares in B Co. Ltd. were subsequently quoted at a discount of $12\frac{1}{2}$%.

Prepare accounts showing the position as it would appear in the books of the banking company.

एक बैंकिंग कम्पनी ने बी कम्पनी लिमिटेड द्वारा 10 रु० वाले 10,000 अंशों के नये निर्गमन का अभिगोपन किया। कमीशन 5 प्रतिशत तय हुआ जो 75 प्रतिशत पूर्ण प्रदत्त अंशों में तथा 25% नकद देय था।

इन अंशों के अभिगोपन के अतिरिक्त बैंकिंग कम्पनी ने, साधारण गतिविधि में, 2,500 और अंशों के लिये फर्म आवेदन किया है।

जनता द्वारा निर्गमन का समस्त अभिदान नहीं किया गया तथा बैंकिंग कम्पनी को अभिगोपित अंशों का 25 प्रतिशत लेना पड़ा। बाद में बी कम्पनी लिमिटेड के अंशों का मूल्य $12\frac{1}{2}$ प्रतिशत बट्टे पर उद्धृत किया गया। [166]

बैंकिंग कम्पनी की पुस्तकों में, स्थिति बतलाते हुए, खाते खोलिये।

Answer : Balance of Shares in B Co. Ltd Rs. 47,031·25

✓47. A company was formed to take over the business of an old established firm. The assets of the firm consisted of:—

Land & Buildings Rs. 1,50,000; Machinery and Plant Rs. 3,25,000; Furniture and Fittings Rs. 5,000; Stock in trade Rs. 1,00,000; Sundry Debtors Rs. 1,00,000; Work-in-progress Rs. 40,000 (Rs. 70,000 gross minus Rs. 30,000 received on account); Cash at Bank Rs. 20,000; Cash in hand Rs. 300; Total Rs. 7,40,300.

The liabilities of the firm were: Trade and Cash Creditors Rs. 2,40,300; Partners' Capital Rs. 5,00,000; Total Rs. 7,40,300.

The company took over all the assets and agreed to discharge the liabilities.

The purchase consideration was Rs. 8,50,000 in 40,000 fully paid equity shares of Rs. 10 each, Rs. 1,00,000 in 6 per cent debentures and the balance in cash.

Rs. 3,50,000 in Rs. 10 equity shares were invited and obtained from the public, as well as Rs. 1,50,000 debentures as follows:—

	Shares	Debentures
	Rs.	
On application	1.25	10 per cent
On allotment	2.50	25 ,, ,,
On first call	2.50	25 ,, ,,
On second call	2.50	25 ,, ,,
On final call	1.25	15 ,, ,,

Pass the necessary journal entries to record the purchase of the business and the issue of the capital and draw up the Balance Sheet assuming that the vendors have been paid. Ignore the question of interest.

एक पुराने फर्म का व्यापार लेने के लिए एक कम्पनी का निर्माण किया गया। फर्म की सम्पत्तियों में थी :—

भूमि और भवन 1,50,000 रु०; मशीन और प्लान्ट 3,25,000 रु०; फर्नीचर और फिटिंग्स 5,000 रु०; व्यापार मध्य स्टॉक 1,00,000 रु०, विभिन्न देनदार 1,00,000 रु०; अर्ध-निर्मित माल 40,000 रु० (70,000 रु० कुल जिनमें से 30,000 रु० प्राप्त हो चुका); बैंक में नकद 20,000 रु०; हस्तगत नकद 300 रु०; योग 7,40,300 रु०।

फर्म के दायित्व थे : व्यापारिक और नकद लेनदार 2,40,300 रु०; साझियों की पूंजी 5,00,000 रु०; योग 7,40,300 रु०।

कम्पनी ने सभी सम्पत्तियों को ले लिया और दायित्वों के भुगतान करने का समझौता किया।

क्रय प्रतिफल 8,50,000 रु० था : 10 रु० वाले 40,000 पूर्ण प्रदत्त ईक्विटी अंशों में, 1,00,000 रु० 6% ऋण-पत्रों में, और शेष नकद में।

3,50,000 रु० 10 रु० वाले ईक्विटी अंशों में आमन्त्रित किये गये और जनता से प्राप्त हो गये और 1,50,000 रु० ऋण-पत्रों के भी प्राप्त हो गये। यह प्राप्ति इस प्रकार थी:—

	अंश	ऋण-पत्र
	रु०	
प्रार्थना-पत्र देने पर	1.25	10%
वंटन पर	2.50	25%
प्रथम मांग पर	2.50	25%
द्वितीय मांग पर	2.50	25%
अंतिम मांग पर	1.25	15%

व्यापार के क्रय और पूंजी के निर्गमन के सम्बन्ध में लेखा करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और चिट्ठा बनाइये यह मानते हुए कि व्यापार विक्रेताओं को भुगतान कर दिया गया। ब्याज को ध्यान में नहीं रखना है। [167]

Answer : Total of Balance Sheet Rs. 12,40,300

18. The Balance Sheet of D and R stood as under when they sold off the concern to a newly formed joint stock company. (डी और आर का चिट्ठा निम्नलिखित था जब उन्होंने अपना व्यापार एक नई स्थापित संयुक्त स्कन्ध कम्पनी को बेच दिया) :—

		Rs.		Rs.
Sundry Creditors		16,000	Land and Buildings	56,000
Capital Accounts :			Machinery	28,000
D	1,20,000		Stock	52,000
R	60,000		Bills Receivable	24,000
		1,80,000	Debtors	36,000
		1,96,000		1,96,000

The company is started with a capital of Rs. 4,00,000 divided into 2,000 equity shares of Rs. 200 each. It also issues debentures for Rs. 2,00,000 at a discount of 5%. The entire concern of D and R is taken up by the company on agreeing to pay them Rs. 96,000 by the issue of 480 equity shares fully paid and Rs. 96,000 in cash.

All the debentures and the remaining shares are issued to the public which are all taken up and paid for with the exception of 200 shares held by S on which he has not paid the final call of Rs. 80 per share which were forfeited and reissued as fully paid at a discount of Rs. 40 per share. The company paid Rs. 2,000 for preliminary expenses. The balance of the Forfeited Shares Account is utilised firstly to write off preliminary expenses and discount on issue of debentures entirely and then towards goodwill.

Pass the necessary journal entries in the books of the company and prepare also the balance-sheet.

(कम्पनी 4,00,000 रु० की पूंजी से प्रारम्भ की जाती है जो 200 रु० वाले 2,000 ईक्विटी अंशों में विभाजित है। वह 2,00,000 रु० के ऋण-पत्र भी 5% बट्टे पर निर्गमित करती है। डी और आर का सम्पूर्ण व्यापार, उनके 96,000 रु० का भुगतान 480 ईक्विटी अंशों के निर्गमन द्वारा और 96,000 रु० का भुगतान नकद में स्वीकार करने पर, कम्पनी द्वारा ले लिया जाता है।

समस्त ऋण-पत्र और शेष अंश जनता को निर्गमित किये जाते हैं जो कि सब ले लिये जाते हैं और चुका दिये जाते हैं, सिवाय 200 अंशों के जो एस के पास थे, जिस पर उसने 80 रु० प्रति अंश की

अंतिम मांग का भुगतान नहीं किया और जो जब्त कर लिये गये और 40 रु० प्रति अंश वट्टे के हिसाब से पूर्ण प्रदत्त निर्गमित कर दिये गये। कम्पनी ने 2,000 रु० प्रारम्भिक व्यय के चुकाये। अंश-हरण खाते के शेष का पहले प्रारम्भिक व्यय को अपलिखित करने में, फिर ऋण-पत्रों पर वट्टे को पूर्ण रूप से अपलिखित करने में और तब ख्याति को अपलिखित करने मे उपयोग किया गया।

कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए और चिट्ठा भी बनाइये।) [168]

Answer : Total of Balance sheet Rs. 6,16,000

✓49. B Ltd. was formed to acquire the business of A and B who shared profits $\frac{2}{3}$ and $\frac{1}{3}$ respectively, and whose Balance Sheet was as under on 31st March, 1968. (ए और वी के व्यापार को लेने के लिए वी लिमिटेड की स्थापना की गई। ए और वी क्रमशः $\frac{2}{3}$ और $\frac{1}{3}$ के अनुपात में लाभ-विभाजन करते थे और 31 मार्च, 1968 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था):—

		Rs.		Rs.
Bills Payable		7,200	Land & Buildings	40,000
Sundry Creditors		21,600	Machinery	20,000
Mrs. A's Loan		3,200	Stock	24,000
Capitals :			Debtors	23,200
	A Rs. 64,000		B/R	6,400
	B Rs. 40,000		Investments	4,800
		1,04,000	Cash at Bank	9,600
			Goodwill	8,000
		1,36,000		1,36,000

B Ltd. agreed to take over the assets at book values with the exception of land and buildings and stock which are taken over at Rs. 45,000 and Rs. 20,000 respectively. The investments are retained by the firm and sold by them for Rs. 4,000. They also discharged the loan of Mrs. A. The company took over the remaining liabilities.

The purchase consideration is fixed at Rs. 1,51,600 payable as follows : Rs. 76,000 in 7% debentures issued at Rs. 95; 608 fully paid equity shares of Rs. 100 each and the balance in cash. The company issued 392 equity shares to the public which were taken up and paid for in cash fully.

Close the books of the firm and pass journal entries opening the books of B Ltd. and prepare the balance-sheet of the company after the transactions are completed.

भूमि और भवन तथा स्टॉक को छोड़कर, जोकि क्रमशः 45,000 रु० और 20,000 रु० में लिये गये, वी लिमिटेड ने सम्पत्तियों को पुस्तक मूल्य पर लेना स्वीकार कर लिया। विनियोग फर्म द्वारा रख लिये जाते हैं और 4,000 रु० में बेच दिये जाते हैं। उन्होंने श्रीमती ए के ऋण का भी भुगतान कर दिया। शेष दायित्व कम्पनी द्वारा ले लिये गये।

क्रय-प्रतिफल 1,51,600 रु० तय हुआ जो इस प्रकार देय था : 76,000 रु० 100 रु० वाले 7% ऋण-पत्र 95 रु० पर निर्गमित; 100 रु० वाले 608 पूर्ण दत्त ईक्विटी अंश और शेष नकद। कम्पनी ने 392 ईक्विटी अंश जनता को निर्गमित किये जोकि पूर्ण रूप से ले लिये गये और चुका दिये गये।

फर्म की पुस्तकें बन्द कीजिए और वी लिमिटेड की पुस्तकें खोलते हुये जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा व्यवहारों के पूर्ण हो जाने के पश्चात् कम्पनी का चिट्ठा बनाइये। [169]

Answer : Total of Balance Sheet Rs. 2,08,800.

50. Deepak and Ravi sharing profits equally wanted to convert their partnership into a limited company, their Balance Sheet on 31st December, 1967 was as under. (दीपक और रवि बराबर-बराबर लाभ विभाजित करते हैं। उन्होंने अपनी साझेदारी को एक सीमित कम्पनी में बदलना चाहा। 31, दिसम्बर, 1967 को उनका चिट्ठा इस प्रकार था) :—

Balance Sheet

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	27,000	Sundry Debtors	50,000
Loan Creditor	25,000	B/R	7,000
Bank Overdraft	10,000	Stock in Trade	20,000
Reserve	15,000	Patents	5,000
Deepak's Capital	25,000	Plant and Machinery	10,000
Ravi's Capital	25,000	Land & Buildings	35,000
	1,27,000		1,27,000

(a) The goodwill of the firm was to be valued on the basis of twice the average of the previous three years' profits.

(b) The loan creditor of the firm agreed to take up 6% preference shares to the value of the loan.

(c) The land & buildings and plant & machinery were taken over at a revaluation of Rs. 75,000 and Rs. 15,000 respectively.

(d) 6% Debentures, Rs. 1,00,000 were issued at a discount of 5%.

(e) The past working results of the partnership showed the following profits : 1964 Rs. 20,000, 1965 Rs. 23,000, and 1966 Rs. 26,000 after setting aside Rs. 5,000 each year to reserve and charging Rs, 1,500, Rs. 1,800 and Rs. 2,100 respectively in respect of income tax.

(f) The company did not take over the debtors and creditors but agreed to act as agent of the vendors for collection of debts and payment of creditors.

(g) The bank overdraft was paid off.

(h) The amounts due to the partners were settled in the form of fully paid equity shares.

You are required to prepare :

(i) A statement showing how the purchase consideration was arrived at.

(ii) The opening Balance Sheet of the company, assuming that all transactions are duly completed.

Give working notes in detail.

(i) फर्म की ख्याति पिछले तीन वर्षों के औसत लाभ के दो गुने के आधार पर आंकी गई।

(ii) फर्म का ऋण-लेनदार ऋण के मूल्य के लिए 6% अधिमान अंश लेने के लिए राजी हो गया।

(iii.) भूमि और भवन तथा प्लान्ट और मशीन क्रमशः 75,000 रु० और 15,000 रु० के मूल्यांकन पर लिये गये।

(iv) 1,00,000 रु० के 6% ऋण-पत्र 5% वट्टे पर निर्गमित किये गये।

(v) साझेदारी के पिछले परिणाम निम्न लाभ बताते थे:—
1964, 20,000 रु०; 1965, 23,000 रु०; और 1966, 26,000 रु०। ये लाभ प्रति वर्ष 5,000 रु० संचय में ले जाने और क्रमशः 1,500 रु०, 1,800 रु० और 2,100 रु० आयकर के चार्ज करने के बाद थे।

(vi) कम्पनी ने देनदार और लेनदार नहीं लिए लेकिन देनदारों से लेने और लेनदारों को चुकाने के लिए व्यापार विक्रेताओं की ओर से एजेन्ट के रूप में काम करना स्वीकार कर लिया।

(vii) बैंक अधिविकर्ष का भुगतान कर दिया गया।

(viii) साझियों को देय रकम पूर्ण दत्त ईक्विटी अंशों में चुका दी गई।

आपको तैयार करना है :

(अ) क्रय-प्रतिफल किस प्रकार निकाला गया, यह दिखाते हुए एक विवरण-पत्र;

(ब) यह मानते हुए कि व्यवहार ठीक तरह से पूर्ण हो जाते हैं, कम्पनी का प्रारम्भिक चिट्ठा।

विस्तार से कार्य सम्बन्धी टिप्पणियां दीजिए। [170]

Answer:—Total of Balance Sheet Rs. 2,71,600.

51. A company which purchased the business of a sole trader agreed to collect his book debts and pay off his creditors at a commission of 5 per cent on amounts collected and 3 per cent on amounts paid, any loss or profit in the process being that of the vendors. The debtors on the date of purchase were Rs. 80,000 and creditors were Rs. 12,000.

Three months later the company reported that out of the debtors, Rs. 48,000 had been collected including Rs. 3,000 previously written off as a bad debt. Discount allowed were Rs. 1,200. Creditors were paid off in full, the discount earned being Rs. 400. A claim of Rs. 1,000 for damages had to be admitted and paid in respect of a late supply of goods to one of their customers by the firm.

Journalise the transactions in the books of the company.

एक कम्पनी ने, जिसने एक एकाकी व्यापारी का व्यापार खरीदा, उसके पुस्तक ऋण वसूल करने और उसके लेनदारों को चुकाने का समझौता किया जिसके लिए वसूल किये गये धन का 5% और चुकाये गये धन का 3% कमीशन तय हुआ। इस प्रक्रिया में कोई भी लाभ-हानि व्यापार विक्रेताओं की थी। क्रय की तारीख को देनदार 80,000 रु० और लेनदार 12,000 रु० के थे।

तीन महीने बाद कम्पनी ने सूचना दी कि देनदारों से 48,000 रु० वसूल हो गये हैं जिनमें 3,000 रु० की ऐसी राशि शामिल है जिसे पहले अपलिखित किया जा चुका था। 1,200 रु० की छूट दी गई। लेनदारों को पूरा चुका दिया गया; 400 रु० छूट प्राप्त हुई। फर्म के द्वारा उसके ग्राहकों में से एक को देर से माल भेजने के कारण 1,000 रु० की क्षति-पूर्ति का दावा स्वीकार करना पड़ा।

कम्पनी की पुस्तकों में इन व्यवहारों की जर्नल प्रविष्टियां कीजिए। [171]

52. Kamal sold his business to Kamal Ltd. for Rs. 1,25,000, the company taking over the following assets and liabilities : Goodwill Rs. 10,000. Premises Rs. 60,000; Plant Rs. 35,000, Furniture Rs. 3,000; Stock Rs. 5,000; Sundry Debtors Rs. 15,000; Provision for Doubtful Debts Rs. 1,000; Sundry Creditors Rs. 13,000.

Kamal was paid Rs. 2,760 in cash, Rs. 3,000 were transferred towards his Guarantee Account and for the remaining amount he was allotted equity shares in the company at 10% premium.

The company issued 3,000 equity shares of Rs. 100 each at a premium of 10% and these were paid up in full.

Kamal guaranteed that the debtors would realise Rs. 14,000 and creditors would not exceed the book figure. The debtors realised only Rs. 10,000 and creditors proved to be Rs. 14,000.

Kamal also guaranteed that dividends during each of the first three years would amount to 8%. The actual dividends paid were 6%, 11% and 5%.

Give the necessary Journal entries to record the purchase of business and write up Kamal's Guarantee Account in the books of the company.

कमल ने अपना व्यापार 1,25,000 रु० में कमल लिमिटेड को बेच दिया। कम्पनी ने निम्न सम्पत्तियों एवं दायित्वों को लियाः—

ख्याति 10,000 रु०; भवन 60,000 रु०; प्लान्ट 35,000 रु०;
फर्नीचर 3,000 रु०; स्टॉक 5,000 रु०; विविध देनदार 15,000 रु०;
संदिग्ध ऋण के लिए आयोजन 1,000 रु०; विविध लेनदार 13,000 रु०

कमल को 2,760 रु० नकद दिया गया और 3,000 रु० उसके गारन्टी खाते को हस्तान्तरित किये गये और शेष रकम के लिए उसे कम्पनी में 10% प्रीमियम पर ईक्विटी अंशों का वंटन किया गया।

कम्पनी ने 100 रु० वाले 3,000 ईक्विटी अंशों का 10% प्रीमियम पर निर्गमन किया और इनका पूरा भुगतान कर दिया गया।

कमल ने गारन्टी दी थी कि देनदारों से 14,000 रु० वसूल होंगे और लेनदार पुस्तक में दिखाई गई राशि से अधिक नहीं होंगे। देनदारों से केवल 10,000 रु० वसूल हुआ और लेनदार 14,000 रु० के निकले।

कमल ने यह भी गारण्टी दी कि प्रथम तीन वर्षों में प्रत्येक वर्ष लाभांश 8% होगा। वास्तविक लाभांश 6%, 11% और 5% चुकाया गया।

व्यापार के क्रय के सम्बन्ध में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए और कम्पनी की पुस्तकों में कमल का गारन्टी खाता बनाइये। [172]

Answer : Credit Balance of Kamal's Guarantee a/c Rs. 1,428 paid at the end of the third year assuming that the dividend for the third year has not been credited to his Guarantee Account.

53. The following is the Balance Sheet of X and Y as at December 31, 1967 (31 दिसम्बर, 1967 को एक्स और वाई का चिट्ठा निम्नलिखित था):—

	Rs.		Rs.
Sundry Creditors	40,000	Land & Buildings	2,00,000
Mrs. X's Loan	1,80,000	Plant and Machinery	1,60,000
Capitals :—		Stock in trade	60,000
X Rs. 2,40,000		Sundry Debtors	1,00,000
Y Rs. 1,60,000	4,00,000	Investments	80,000
		Cash at Bank	20,000
	6,20,000		6,20,000

Profits were shared $\frac{2}{3}$ to X and $\frac{1}{3}$ to Y. On Ist January, 1968 XY Ltd. purchased the business of X and Y for a payment of Rs. 6,00,000 to be made in the form of equity shares of Rs. 100 each credited as Rs. 80 paid. The company does not take over the investments and Mrs. X's Loan. The company also decides to revalue the land and buildings at Rs. 2,70,000, plant and machinery at Rs. 1,40,000 and to create a provision for doubtful debts on debtors@ 5%. There was a claim by a worker for Rs. 6,000 for injuries in an accident. The company decided to admit the claim. Out of the investments, Rs. 12,000 are worthless. Mrs. X agreed to receive the remaining investments and 1,400 shares of X Y Ltd. in settlement of her loan. X agrees to sell his fraction of share to Y.

The company decides to retain the books of accounts of the firm. Journalise these transactions, post them into ledger and prepare fresh trial balance.

(लाभों का बंटवारा एक्स में $\frac{2}{3}$ और वाई में $\frac{1}{3}$ होता था। 1 जनवरी, 1968 को एक्स वाई लिमिटेड ने 6,00,000 रु० के भुगतान में एक्स और वाई का व्यापार खरीद लिया जो 100 रु० वाले 80 रु० प्रदत्त ईक्विटी अंशों में देय था। कम्पनी ने विनियोग और श्रीमती एक्स का ऋण नहीं लिया। कम्पनी भूमि और भवन का 2,70,000, रु० पर तथा प्लान्ट और मशीन का 1,40,000 रु० पर पुनर्मूल्यांकन करना, तथा देनदारों पर संदिग्ध ऋण के लिए 5% आयोजन करना भी तय करती है। एक मजदूर का दुर्घटना में चोट लगने के कारण 6,000 रु० का दावा था। कम्पनी ने इस दावे को स्वीकार करने का निश्चय किया। विनियोगों में 12,000 रु० के विनियोग बेकार हैं। श्रीमती एक्स शेष विनियोगों को और एक्स वाई लिमिटेड के 1,400 अंश अपने ऋण के पूर्ण भुगतान के रूप में लेने के लिए राजी हो गई। एक्स ने अपना अंश का टुकड़ा वाई को बेचना स्वीकार कर लिया है।

कम्पनी फर्म की पुस्तकों को चालू रखना तय करती है। इन व्यवहारों को जर्नल में लिखिए, खतौनी कीजिए और नया तलपट बनाइये। [173]

Answer : Trial Balance Total Rs. 6,51,000; 3,733 equity shares and 2,367 equity shares allotted to X and Y respectively.

54. Unique Private Limited was incorporated on 1st July, 1967 to purchase the business of X as on April 1, 1967. The fully paid up capital of the company consisted of Rs. 20,00,000 in equity shares of Rs. 100 each.

500 6% Debentures of Rs. 1,000 each were also issued and fully paid up.

The accounts for the year ended 31st March, 1968 disclosed the following particulars :—

Sales for the year Rs. 32,10,400 (from 1st April 1967 to 1st July 1967—Rs. 8,02,600); Gross Profit for the year Rs. 4,12,800; Managing director's salary, Director's fees etc. Rs. 53,000; Preliminary expenses Rs. 5,000; Bad debts Rs, 14,890 (prior to 1st July 1967 Rs. 4,020, and after Rs. 10,870); Interest on debentures Rs. 20,000; Depreciation on Machinery and Plant etc. Rs. 25,200; Advertising and General expenses Rs. 58,400.

You are required to prepare a statement showing (a) profit prior to incorporation, and (b) profit after incorporation. How would you deal with the profit prior to incorporation ?

1 अप्रैल, 1967 को एक्स का व्यापार खरीदने के लिए यूनिक प्राइवेट लिमिटेड का 1 जुलाई, 1967 को समामेलन हुआ। कम्पनी की पूर्ण प्रदत्त पूंजी 100 रु० वाले 20,00,000 रु० के ईक्विटी अंशों में थी।

1,000 रु० वाले 6% 500 ऋण-पत्र भी निर्गमित किये गये जिनका पूर्ण भुगतान हो गया।

31 मार्च, 1968 को समाप्त हुए वर्ष के खाते निम्नलिखित विवरण देते थे :—

वर्ष की बिक्री 32,10,400 रु०, (1 अप्रैल, 1967 से 1 जुलाई 1967 तक 8,02,600 रु०);

वर्ष का सकल लाभ 4,12,800 रु०; प्रबन्ध संचालक का वेतन, संचालकों का शुल्क आदि 53,000 रु०; प्रारम्भिक व्यय, 5,000 रु०; डूबत ऋण 14,890 रु० (1 जुलाई, 67 से पहले का 4,020 रु० तथा बाद का 10,870 रु०); ऋण-पत्रों पर ब्याज 20,000 रु०; प्लान्ट और मशीन आदि पर मूल्य ह्रास 25,200 रु०; विज्ञापन और सामान्य खर्चे 58,400 रु०।

(अ) समामेलन से पूर्व, और (ब) समामेलन से पश्चात् का लाभ बताते हुये आपको एक विवरण-पत्र बनाना है। समामेलन से पूर्व के लाभ के साथ में आप किस प्रकार से व्यवहार करेंगे। [174]

Answer : Profit prior to incorporation Rs. 78,280 and post-incorporation Rs. 1,58,030.

55. A private company was incorporated on 1st May, 1967 to take over a business from 1st January 1967. The Trading and Profit & Loss Account for the year ending 31st December, 1967 showed the following results. (1 जनवरी, 1967 से व्यापार लेने के लिए 1 मई, 1967 को एक निजी कम्पनी का समामेलन हुआ। 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त हुये वर्ष का व्यापार तथा लाभ-हानि खाता निम्नलिखित परिणाम दिखाता था) :—

Dr.	Rs.		Cr. Rs.
To Opening Stock	28,000	By Sales	2,80,000
To purchases	1,82,000	By Closing Stock	14,000
To Gross Profit c/d	84,000		
	2,94,000		2,94,000
To Rent, Rates and Insurance	3,600	By Gross Profit b/d	84,000
To Director's fees	4,000		
To Salaries	12,000		
To Office Expenses	9,000		
To Travelling Commission	2,800		
To Discount	3,500		
To Bad debts	700		
To Auditors fees	500		
To Depreciation	1,200		
To Debenture Interest	900		
To Interest on purchase consideration to 31st August	3,200		
To Net Profit	42,600		
	84,000		84,000

It is ascertained that the sales for January, March and September are one and half times the average of those for the year, whilst those for December are twice the average and those for February only half the average.

Apportion the year's profit between pre-incorporation period and post incorporation period.

(यह ज्ञात होता है कि जनवरी, मार्च और सितम्बर की बिक्री वर्ष की औसत बिक्री से डेढ़ गुना थी जब कि दिसम्बर की बिक्री औसत से दुगुनी और फरवरी की बिक्री औसत से केवल आधी थी।

वर्ष के लाभ को समामेलन से पूर्व और समामेलन से बाद लाभों में विभाजित कीजिए।) [175]

Answer : Profit prior to Incorporation Rs. 16,675 and Post Incorporation Rs. 25,925.

नोट—आडिट फीस को दोनों अवधियों में समय के अनुपात में बांटा गया है।

56. Lucky Ltd. agreed to purchase as at June 30, 1965 the business of a firm whose Balance Sheet at that date was as follows. (लकी लिमिटेड ने 30 जून, 1965 को एक फर्म का व्यवसाय खरीदने का समझौता किया जिसका चिट्ठा उस दिन निम्नलिखित था):—

	Rs.		Rs.
Creditors	2,80,000	Goodwill	1,00,000
Bank Overdraft	90,000	Land and Buildings	6,50,000
Capital	15,70,000	Plant and Machinery	2,80,000
		Stock in-trade	2,40,000
		Debtors	6,70,000
	19,40,000		19,40,000

The purchase consideration was decided at Rs. 15 lakhs and the company took over all the assets and liabilities except bank overdraft which was discharged by the firm. For the purpose of purchase consideration, stock-in-trade was valued at Rs. 2,10,000; plant and machinery at Rs. 3,00,000 and a provision Rs. 50,000 was considered necessary in respect of doubtful debts.

To provide funds for the purchase of business and further working capital, the company decided to issue 2,00,000 new equity shares of Rs. 10 each at Rs. 11 per share. Of these new shares the vendor agreed to accept 50,000 shares in part satisfaction of the purchase consideration and these were allotted as fully paid on July 15, 1965, the balance of consideration being payable on September 1, 1965 in cash.

Lucky Ltd. offered the remaining equity shares to the public on July 1, 1965, payable as follows : Rs. 2·50 on application, Rs. 3·50 on allotment on July 15 (including premium) and Rs. 5 on August 14, 1965. The public applied for 2,00,000 shares and allotment was made prorata. All balances due on allotment and call moneys were received with the exception of the call on 5,000 shares. On October 31, 1965, these 5,000 shares were forfeited and were reissued as fully paid on November 10, 1965 for a consideration of Rs. 10 per share received in cash. The issue expenses amounted to Rs. 2,000.

The company was further in need of capital funds and decided to issue 5,000 6% First Mortgage Debentures of Rs. 1,000 each at Rs. 995 on September 1, 1966. Eighty per cent of this issue was underwritten by M/s A. B. & Co. for a commission of 2 per cent on the nominal value of the debentures. Applications were

received for all the debentures and allotment was made on September 15, 1966. All the moneys were received on due dates.

According to the terms of the issue, the company was to redeem Rs. 50,000 debentures each year, beginning with 1967-68, by drawings by lot or by purchase in the open market. *On 30th June, 1968 when the accounting books are closed,* the company purchases Rs. 30,000 debentures in the open market at Rs. 990 and the remaining debentures necessary to be redeemed that year were paid cash at par.

Journalise in the books of the company.

(क्रय-प्रतिफल 15 लाख रुपया तय हुआ और कम्पनी ने बैंक अधिविकर्ष को छोड़कर, जिसका भुगतान फर्म द्वारा कर दिया गया, सभी सम्पत्तियों एवं दायित्वों को ले लिया। क्रय प्रतिफल के लिए स्टॉक 2,10,000 रु० पर, और प्लान्ट और मशीन 3,00,000 रु० पर आंके गये और संदिग्ध ऋण के लिए 50,000 रु० का आयोजन आवश्यक समझा गया।

व्यापार को खरीदने और कार्यशील पूंजी के लिए धन की व्यवस्था करने हेतु कम्पनी ने 10 रु० वाले 2,00,000 नये ईक्विटी अंशों का 11 रु० प्रति अंश के हिसाब से निर्गमन करने का निश्चय किया। इन नये अंशों में से व्यापार विक्रेताओं ने क्रय प्रतिफल के आंशिक भुगतान के रूप में 50,000 अंशों को लेना स्वीकार किया और इनका 15 जुलाई 1965 को उनको पूर्ण प्रदत्त वंटन कर दिया गया; प्रतिफल का शेष 1 सितम्बर, 1965 को नकद में देय था।

लकी लिमिटेड ने शेष अंशों को जनता के सामने 1 जुलाई 1965 को प्रस्तावित किया जो निम्न प्रकार देय थे :—

2·50 रु० प्रार्थना पर; 3·50 रु० बंटन पर 15 जुलाई को (प्रीमियम सहित); और 5 रु० 14 अगस्त, 1965 को। जनता ने 2,00,000 अंशों के लिए प्रार्थना-पत्र दिये और बंटन यथानुपात कर दिया गया। 5,000 अंशों पर मांग-राशि को छोड़कर बंटन और मांग की समस्त देय राशि प्राप्त हो गई। 31 अक्टूबर, 1965 को इन 5,000 अंशों को जब्त कर लिया गया और 10 नवम्बर, 1965 को इन्हें 10 रु० प्रति अंश नकद प्रतिफल के बदले पुनर्निर्गमित किया गया। निर्गमन के खर्चे 2,000 रु० हुए।

कम्पनी को फिर पूंजी की आवश्यकता हुई और उसने 1 सितम्बर, 1966 को 1,000 रु० वाले 995 रु० के हिसाब से 5,000, 6% प्रथम बन्धक ऋण-पत्र निर्गमन करने का निश्चय किया। इस निर्गमन का 80% मेसर्स ए० बी० एण्ड कम्पनी द्वारा ऋण-पत्रों के अंकित मूल्य के 2% कमीशन पर अभिगोपित किया गया। सभी ऋण-पत्रों के लिए प्रार्थना-पत्र प्राप्त हो गये और 15 सितम्बर, 1966 को बंटन किया गया। सभी रकम देय तिथियों को प्राप्त हो गई।

निर्गमन की शर्तों के अनुसार कम्पनी को 50,000 रु० के ऋण-पत्र प्रति वर्ष 1967-68 से प्रारम्भ होते हुए लाटरी द्वारा निकाल कर या खुले बाजार में खरीद कर शोधन करने थे। 30 जून, 1968 को (जब कि लेखा पुस्तकें बन्द होती हैं) कम्पनी खुले बाजार में 990 रु० के हिसाब से 30,000 रु० के ऋण-पत्र खरीदती है और उस वर्ष शोधन किये जाने वाले शेष ऋण-पत्र सम मूल्य पर नकद में चुका दिये गये।

कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।) [176]

Revisional Problems

57. On 31st December, 1966, the Balance-Sheet of the Bharat Cotton Mill Co. Ltd. contained, inter alia, the following items :—

(a) Authorised Capital : 10,000 equity shares of Rs. 100 each.

(b) Issued Capital : 6,000 equity shares (issued for cash) Rs. 80 per share called up.

(c) Calls in Arrear : Rs. 1,05,000.

(d) Staff Provident Fund Rs. 22,500.

Given below are some of the company's transactions for the year 1967 :—

Jan. 25	Made final call of Rs. 20 per share.
Feb. 10	Received Rs. 1,15,000 on account of final call.
March 31	Forfeited 200 shares on which Rs. 14,000 was unpaid.
April 15	Offered 2,000 further shares to existing shareholders at a premium of Rs. 25 per share, payable as to Rs. 75 (including the premium) on application and balance on allotment.
May 10	Allotted 2,000 shares which had been applied for and for which the necessary application deposits had been received.
June 1	Received as allotment money Rs. 99,000.
July 25	Issued 1,000 Equity Shares as fully paid to Patel Engineering Co. Ltd. for machinery purchased from them.
Sept. 30	An employee of the company was discharged and was paid Rs. 2,150 on account of his Provident Fund.
Oct. 1	Received Rs. 50,000 as public deposits at 6% per annum.
Dec. 31	Company's contribution to the Staff Provident Fund for the year 1967 amounted to Rs. 8,750.

Enter these transactions in the company's Journal and Cash Book, and show how Share Capital, Forfeited Shares, Premium on Shares, Staff Provident Fund and Public Deposits would appear in the Balance Sheet as on 31st December, 1967.

भारत कॉटन मिल कं० लि० के 31 दिसम्बर, 1966 के चिट्ठे में अन्य बातों के साथ-साथ निम्नलिखित मदें थीं :—

(अ) अधिकृत पूँजी : 100 रु० वाले 10,000 ईक्विटी अंश;

(ब) निर्गमित पूँजी : 6,000 ईक्विटी अंश (रोकड़ के बदले निर्गमित) जिन पर 80 रु० प्रति अंश मांगा गया;

(स) बकाया मांग : 1,05,000 रु०

(द) स्टाफ प्रॉविडेण्ट फण्ड : 22,500 रु०

कम्पनी के 1967 वर्ष के व्यवहारों में से कुछ व्यवहार नीचे दिये जाते हैं :-

जनवरी 25—20 रु० प्रति अंश के हिसाब से अन्तिम मांग की गई;

फरवरी 10—अन्तिम मांग पर 1,15,000 रु० प्राप्त हुए;

मार्च 31—200 अंश जब्त किये जिन पर 14,000 रु० नहीं चुकाये गये थे;

अप्रैल 15—वर्तमान अंशधारियों को 2,000 रु० और अंश 25 रु० प्रति अंश प्रीमियम पर प्रस्तावित किये गये जोकि 75 रु० (प्रीमियम सहित) आवेदन पर और शेष बंटन पर देय हैं;

मई 10—2,000 अंशों का बंटन किया गया जिनके लिए प्रार्थना-पत्र व आवश्यक आवेदन राशि प्राप्त हो गई थी;

जून 1—99,000 रु० बंटन राशि प्राप्त हुई;

जुलाई 25—पटेल इन्जीनियरिंग कम्पनी लि० को, उनसे खरीदी गई मशीन के प्रतिफल में, पूर्ण प्रदत्त 1,000 ईक्विटी अंश निर्गमित किये;

सितम्बर 30-कम्पनी के एक कर्मचारी को सेवा मुक्त किया गया और उसे प्रॉविडेण्ट फण्ड के 2,150 रु० चुकाये गये;

अक्टूबर 1-6% वार्षिक पर 50,000 रु० सार्वजनिक निक्षेप प्राप्त किये;

दिसम्बर 31-1967 के लिए स्टॉफ प्रॉविडेण्ट फण्ड में कम्पनी का योगदान 8,750 रु० हुआ।

इन व्यवहारों को कम्पनी की जर्नल व रोकड़ बही में लिखिये और 31 दिसम्बर, 1967 के चिट्ठे में अंश पूंजी, जब्त अंश, अंश प्रीमियम, स्टाफ प्रॉविडेन्ट फण्ड और सार्वजनिक निक्षेप को दिखलाइये। [177]

58. The Hindustan Trading Co. Private Ltd. issued a prospectus offering 20,000 equity shares of Rs. 100 each, for subscription on the following terms :

	Rs.
On application	5 per share
On allotment (including a premium of Rs. 20 per share)	35 ,, ,,
On first call (3 months after allotment)	40 ,, ,,
On second call (6 months after allotment)	40 ,, ,,

Subscriptions were received for 31,700 equity shares on 23rd April, 1967 and the directors proceeded to allotment on 30th April as follows :

	shares allotted
(a) Allotment in full (two applicants paid in full on allotment in respect of 400 shares each)	3,800
(b) Allotment of two-thirds of shares applied for	16,000
(c) Allotment of one-fourth of shares applied for	200

Cash amounting to Rs. 15,500 (being application money received with applications for 3,100 shares upon which no allotments were made) was returned to applicants on 6th May.

Cash received in advance of calls was retained until the due dates. The amounts on allotment, first and second calls were transferred to the general funds (i. e. the General cash Book) of the company on the 15th May, August and November respectively; the whole of the cash due was received prior to those dates.

You are required to show :—

(a) The Cash Account relating to the issue, and

(b) The Application, Allotment and the Call Accounts. (Journal entries are not required.)

हिन्दुस्तान ट्रेडिंग कम्पनी प्रा० लिमिटेड ने निम्नलिखित शर्तों पर 100 रु० वाले 20,000 ईक्विटी अंश अभिदान के लिए प्रस्तावित करते हुए एक प्रविवरण का निर्गमन किया :—

	रु०
आवेदन पर	5 प्रति अंश
वंटन पर (20 रु० प्रति अंश प्रीमियम सहित)	35 „ „
प्रथम मांग पर (वंटन के 3 माह पश्चात्)	40 „ „
द्वितीय मांग पर (वंटन के 6 माह पश्चात्)	40 „ „

23 अप्रैल, 1967 को 31,700 ईक्विटी अंशों के लिए अभिदान प्राप्त हुआ और संचालकों ने 30 अप्रैल को निम्न प्रकार से वंटन किया:

	अंश वंटित किये
(अ) पूर्ण वंटन (इनमें से दो आवेदकों में से प्रत्येक ने 400 अंशों पर पूर्ण राशि वंटन पर चुका दी)	3,800
(ब) आवेदित अंशों का दो-तिहाई वंटन	16,000
(स) आवेदित अंशों का एक-चौथाई वंटन	200

6 मई को 3,100 अंशों के आवेदकों को जिन्हें कोई वंटन नहीं किया गया प्रार्थना-पत्रों के साथ प्राप्त आवेदन राशि के 15,500 रु० लौटा दिये गये।

मांगों पर अग्रिम प्राप्त रोकड़ देय तिथियों तक रोक ली गई। वंटन, प्रथम मांग व द्वितीय मांग पर देय राशि क्रमशः 15 मई, अगस्त और नवम्बर को कम्पनी की साधारण रोकड़ वही में हस्तान्तरित की गई; समस्त देय रोकड़ उन तिथियों से पूर्व ही प्राप्त हो गई थी।

आपको दिखाना है :

(अ) निर्गमन के सम्बन्ध में रोकड़ खाता; और

(ब) आवेदन, वंटन और मांग खाते (जर्नल प्रविष्टियां नहीं देनी है।) [178]

Answer : Balance of Cash Account Rs. 24,00,000.

59. On 31st December, 1967, the Balance Sheet of Gangan Ltd. was as follows. (31 दिसम्बर, 1967 को गंगन लिमिटेड का चिट्ठा निम्न प्रकार था) :—

	Rs.		Rs.
Issued Capital : 40,000 6% Redeemable Pref. Shares of Rs. 10 each fully paid	4,00,000	Sundry Assets	8,40,000
20,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid	2,00,000	Cash at Bank	3,00,000
Share Premium Account	50,000		
Profit and Loss Account	2,50,000		
General Reserve	30,000		
Sundry Creditors	2,10,000		
	11,40,000		11,40,000

By the terms of their issue, the preference shares were redeemable at a premium of 5 per cent on the following January 1, and it was decided to arrange this as far as possible out of the company's resources subject to leaving a balance of Rs. 12,000 to remain to the credit of the Profit and Loss Account. It was also decided to raise the balance of funds required by the issue of sufficient number of equity shares at a premium of 10%.

Show the necessary Journal entries and ledger accounts giving effect to the transactions and the Balance Sheet thereafter.

(निर्गमन की शर्तों के अनुसार अधिमान अंश आगामी 1 जनवरी को 5% प्रीमियम पर शोधनीय हैं। यह निश्चय किया गया कि लाभ-हानि खाते में 12,000 रु० छोड़ते हुये यथा संम्भव कम्पनी के साधनों से ही इसका प्रबन्ध किया जाय। यह भी निश्चय किया गया कि आवश्यक शेष कोष पर्याप्त मात्रा में ईक्विटी अंशों के 10% प्रीमियम पर निर्गमन द्वारा प्राप्त किया जाय।

उपरोक्त व्यवहारों को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियाँ व खाते और उनके पश्चात् का चिट्ठा दिखाइये।) [179]

Answer : 12,000 Equity shares were issued.

60 On 31st December, 1967, a limited company had outstanding Rs. 5,00,000 6% Debentures 1964-1968 redeemable at 101% and a Debenture Redemption Fund of Rs. 4,60,000.

On 1st January, 1968, it was decided:—

(i) To give the holders of these debentures the option to convert at par their holdings into 7% Debentures 1980, redeemable at 105%;

(ii) To redeem any balance; and

(iii) To issue a corresponding nominal amount of the 7% Debentures for cash at 102%.

On 31st March 1968, holders of Rs. 3,50,000 of the old debentures had exercised their option for conversion and the company then issued the remaining amount of the new debentures to an investment trust company. The cash for these was received in full on 1st April, 1968.

Draft journal entries to record these transactions and any consequential transfers which you consider to be necessary.

31 दिसम्बर, 1967 को एक सीमित कम्पनी के पास 5,00,000 रु० के 101% पर शोध्य 1964–68 6% ऋण-पत्र तथा 4,60,000 रु० का ऋण-पत्र शोधन कोष था।

1 जनवरी, 1968 को यह निश्चय किया गया कि :—

(i) इन ऋण-पत्रों के धारकों को यह विकल्प दिया जाय कि वे अपने ऋण-पत्रों को 105% पर शोध्य 1980 7% ऋण-पत्रों में बदल सकें;

(ii) शेष ऋण-पत्रों का शोधन कर दिया जावे; और

(iii) 102% नकद पर तदनुरूपी अंकित मूल्य के 7% ऋण-पत्र निर्गमित कर दिये जाँय।

31 मार्च, 1968 को 3,50,000 रु० के पुराने ऋण-पत्रों के धारकों ने परिवर्तन के अपने विकल्प का उपयोग किया और कम्पनी ने तब नये ऋण-पत्रों की शेष राशि एक विनियोग प्रन्यास कम्पनी को निर्गमित कर दी। इन पर पूर्ण राशि 1 अप्रैल, 1968 को प्राप्त हो गई।

इन व्यवहारों एवं आवश्यक परिणामी हस्तान्तरणों का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिये। [180]

61. A company issued Rs. 1,00,000 4% debentures at 98 on 1st January 1963, the interest being payable half-yearly on 30th June and 31st December. The debentures are to be redeemed at the end of 20 years at $102\frac{1}{2}$, but the company has power to redeem on any earlier date after the first year at 105, upon giving six months' written notice of its intention. Provision is made for the establishment of a sinking fund, and the annual contribution of Rs. 2,000, together with the interest received during the preceding year, is to be invested on the 1st January in each year. The first investment being made at the beginning of the second year. The trustees are empowered to purchase debentures in the open market should they be below par, and to realise the sinking fund investments for this purpose. Investments were realised as follows in order to purchase debentures:—

	Original Cost	Produced	Nominal value of Debentures purchased
	Rs.	Rs.	Rs.
30th June, 1964	1,050	1,062	1,100
31st December, 1965	2,000	2,100	2,150

The amounts of interest received on the sinking fund investments for 1964, 1965 and 1966 were Rs. 40, Rs. 80 and Rs, 120 respectively.

Prepare accounts showing the transactions upto 31st December, 1966. Ignore income tax and calculate to the nearest rupee.

एक कम्पनी ने 1 जनवरी, 1963 को 1,00,000 रु० के 4% ऋण-पत्र 98 की दर पर निर्गमित किये। ब्याज अर्ध-वार्षिक 30 जून और 31 दिसम्बर को देय है। ऋण-पत्र $102\frac{1}{2}$ की दर पर 20 वर्ष पश्चात् शोध्य हैं लेकिन कम्पनी को एक वर्ष पश्चात 105 की दर पर 6 महीने का लिखित नोटिस देकर भी शोधन करने का अधिकार है। एक शोधन कोष की स्थापना की व्यवस्था की गई। प्रति वर्ष 1 जनवरी को 2,000 रु० वार्षिक योगदान पिछले वर्ष में प्राप्त ब्याज सहित विनियोजित किया जाना है। प्रथम विनियोग दूसरे वर्ष के प्रारम्भ में किया जाना है। प्रन्यासियों को खुले बाजार में ऋण-पत्र खरीदने का अधिकार है, यदि वे सम-मूल्य से कम पर उपलब्ध हों। इस कार्य के लिए उन्हें शोधन कोष विनियोगों को भी बेचने का अधिकार है। ऋण-पत्रों को खरीदने के लिए विनियोगों से इस प्रकार वसूली हुई :

	मूल लागत	वसूली मूल्य	क्रय किये गये ऋण-पत्रों का अंकित मूल्य
	रु०	रु०	रु०
30 जून, 1964	1,050	1,062	1,100
31 दिसम्बर, 1965	2,000	2,100	2,150

शोधन कोष विनियोगों पर 1964, 1965 और 1966 में प्राप्त ब्याज क्रमशः 40 रु०, 80 रु० और 120 रु० है।

31 दिसम्बर, 1966 तक के व्यवहारों को दिखाते हुये खाते तैयार कीजिये। आयकर का ध्यान न रखें तथा गणना निकटतम रुपये तक करें। [181]

62. Income Ltd. was formed with an authorised capital of 3,000 equity shares of Rs. 100 each to purchase the business of Income company for Rs. 2,00,000 to be satisfied by the allotment of fully paid shares in the company.

On Ist January 1957, the purchase consideration was satisfied and 600 equity shares were subscribed for by the public at par at Rs. 20 per share being payable on application and Rs. 10 per share on allotment. A first call of Rs. 25 per share was due on 1st March and a second call of Rs. 20 per share on Ist May.

On 31st December 1957, the position as regards the shares subscribed for by the public was as follows :

The full amount called had been paid on 500 shares.
Rs. 55 per share had been paid on 70 shares.
Rs. 30 per share had been paid on 20 shares.
Rs. 20 per share had been paid on 10 shares.

On 31st December, 1957 all shares on which less than Rs. 55 per share had been paid were forfeited.

On 28th February, 1958 the arrears on 70 shares were collected.

On 1st March, 1958 the forfeited shares were reissued as fully paid up to Ibrahim Hussan at the price of Rs. 80 per share which he paid on that day.

On 1st April, 1958 the directors made a final call of Rs. 25 per share, payable on 1st June, the whole amount due thereon was received on that date.

Pass Journal entries to record all the above transactions, prepare Cash Book and set out the capital items as they should appear in the company's Balance Sheet as on 31st December, 1957 and 1958.

इनकम कम्पनी का 2,00,000 रु०, जो पूर्ण दत्त अंशो के बंटन द्वारा चुकाये जावेंगे, में व्यापार खरीदने के लिए इनकम लिमिटेड की 100 रु० वाले 3,000 ईक्विटी अंशों की अंकित पूंजी के साथ स्थापना हुई।

1 जनवरी, 1957 को क्रय प्रतिफल चुका दिया गया और 600 ईक्विटी अंश सम मूल्य पर जनता द्वारा अभिदत्त हुये जिन पर 20 रु० प्रति अंश प्रार्थना-पत्र पर तथा 10 रु० प्रति अंश बंटन पर देय थे। 25 रु० प्रति अंश की प्रथम मांग 1 मार्च को तथा 20 रु० प्रति अंश की द्वितीय मांग 1 मई को देय थी।

31 दिसम्बर 1957 को जनता द्वारा अभिदत्त अंशों की स्थिति इस प्रकार थी :

500 अंशों पर मांगी गई पूर्ण राशि चुका दी गई;
70 अंशों पर 55 रु० प्रति अंश चुकाया गया;
20 अंशों पर 30 रु० प्रति अंश चुकाया गया; तथा
10 अंशों पर 20 रु० प्रति अंश चुकाया गया।

31 दिसम्वर, 1957 को ऐसे समस्त अंशों को जब्त कर लिया गया जिन पर 55 रु० प्रति अंश से कम चुकाये गये थे।

28 फरवरी, 1958 को 70 अंशों पर बकाया राशि वसूल हुई।

जब्त अंश 1 मार्च, 1958 को इब्राहिम हुस्सेन को 80 रु० प्रति अंश की दर पर पुनर्निर्गमित कर दिये गये। यह राशि उसने उसी दिन चुका दी।

संचालकों ने 1 अप्रैल, 1958 को 25 रु० प्रति अंश की अन्तिम मांग की जो 1 जून को देय थी; उस पर देय समस्त राशि उसी दिन प्राप्त हो गई।

उपरोक्त समस्त व्यवहारों का लेखा करने के लिए जर्नल प्रविष्टियां कीजिए, रोकड़ वही बनाइये और 31 दिसम्वर, 1957 तथा 1958 को कम्पनी के चिट्ठे में पूंजी सम्बन्धी मदों को दिखाइये। [182]

63. Black and White carried on business as partners sharing profits and losses equally. Their business was divided into A and B departments, and the following is their balance-sheet as on March 31, 1966 (ब्लैक और व्हाइट लाभ-हानि को

बराबर-बराबर बाँटते हुए व्यापार करते थे। उनका व्यवसाय अ और ब विभागों में विभक्त था तथा 31 मार्च, 1966 को उनका चिट्ठा निम्नलिखित था) :—

	Rs.		Rs.
Creditors ;		Land and Buildings	18,650
A Deptt.	15,400	Furniture	500
B Deptt.	2,600	Debtors :	
Loans	1,200	A Deptt.	6,400
Bank Overdraft	8,950	B Deptt.	10,800
Capital Accounts :		Stock	
Black	26,300	A Deptt.	23,000
White	16,200	B Deptt.	11,250
		Cash in hand	50
	70,650		70,650

As from 31st March, 1966, it was arranged that the business should be taken over by two limited companies, one called Black and Company Limited, to take over A Department, and the other called White and Company Limited to take over B Department. The loanholders agreed to accept 7% preference shares of Rs. 10 each fully paid for their loans, 72 of these being in Black and Co. Ltd. and 48 in White and Co. Ltd.

Black and Co. Ltd. took over the Land and Buildings, Furniture, Cash and the liability to the bank.

The assets and liabilities were transferred at the balance-sheet figures, and the partners were to be paid Rs. 5,000 for the goodwill of A Department and Rs. 4,000 for that of B Department.

The whole of the purchase price was satisfied by the allotment of fully paid equity shares of Rs. 10 each in the respective companies as follows :—

Black : 2,375 shares in Black and Co. Ltd. and the balance by shares in White and Co. Ltd.

White : 1,592 shares in White and Co. Ltd. and the balance by shares in Black and Co. Ltd.

The bank overdraft was paid off out of the proceeds of a mortgage of Rs. 10,000 which was raised on the land and buildings by Black and Co. Ltd. The cost of the mortgage was Rs. 3.50.

Equity Shares, as follows, were taken up and paid for in full by some mutual friends :

Black and Co. Ltd. 100; White and Co. Ltd. 150.

The formation expenses which were payable by the respective companies were :

Black and Co. Ltd. Rs. 650; White and Co. Ltd. Rs. 400.

Set out the Balance Sheets of the new companies after the foregoing transactions had taken place;

(31 मार्च 1966 से यह तय हुआ कि यह व्यवसाय दो सीमित कम्पनियों द्वारा ले लिया जाय, एक ब्लैक एण्ड कम्पनी कहलावे जो अ विभाग को ले और दूसरी व्हाइट एण्ड कम्पनी कहलावे जो ब विभाग को ले। ऋण के धारक अपने ऋण के बदले में 10 रु० वाले 7% अधिमान अंश (पूर्ण दत्त) स्वीकार करने को राजी हो गये। इनमें से 72 ब्लैक एण्ड कम्पनी लिमिटेड में और 48 व्हाइट एण्ड कम्पनी लिमिटेड में थे।

ब्लैक एण्ड कम्पनी ने भूमि और भवन, फर्नीचर, रोकड़ तथा बैंक अधिविकर्ष लिया। सम्पत्तियों एवं दायित्वों का हस्तान्तरण चिट्ठे की रकम पर हुआ और साझियों को अ विभाग की ख्याति के 5000 रु० और ब विभाग की ख्याति के 4,000 रु० चुकाये जाने थे।

सम्पूर्ण क्रय मूल्य का अपनी-अपनी कम्पनियों में 10 रु० वाले पूर्ण दत्त ईक्विटी अंशों के बंटन द्वारा निम्न प्रकार समाधान हुआ:—

ब्लैक : 2,375 अंश ब्लैक एण्ड कम्पनी में और शेष अंश व्हाइट एण्ड कम्पनी में;
व्हाइट : 1,592 अंश व्हाइट एण्ड कम्पनी में और शेष अंश ब्लैक एण्ड कम्पनी में।

ब्लैक एण्ड कम्पनी द्वारा भूमि और भवन के बन्धक पर 10,000 रु० की प्राप्ति से बैंक अधिविकर्ष का भुगतान कर दिया गया। बन्धक का खर्च 350 रु० था। कुछ मित्रों द्वारा ईक्विटी अंश निम्न प्रकार से ले लिये गये और पूर्ण रूप से चुका दिये गये :

ब्लैक एण्ड कम्पनी में 100; व्हाइट एण्ड कम्पनी में 150।
स्थापना सम्बन्धी खर्चे, जो अपनी-अपनी कम्पनियों द्वारा देय थे, इस प्रकार थे :
ब्लैक एण्ड कम्पनी 650 रु०; व्हाइट एण्ड कम्पनी 400 रु०
उपरोक्त व्यवहारों के हो जाने के पश्चात् नई कम्पनियों के चिट्ठे बनाइये। [183]

Answer : Balance Sheet Total : Black and Company Ltd. Rs. 55,650; White and Company Ltd. Rs. 27,550.

64. The balance sheet of C. L. Gangan on December 31, 1967 was as follows. (31 दिसम्बर, 1967 को सी० एल० गङ्गन का चिट्ठा इस प्रकार था):—

		Rs.			Rs.
Creditors	Rs. 31,000		Sundry Assets		1,05,000
Less Reserve	Rs. 1,000	30,000	Debtors	Rs. 67,200	
			Less Provision	Rs. 2,200	65,000
Loans		20,000			
C. L. Gangan		1,20,000			
		1,70,000			1,70,000

On 30th April 1968, Gangan Ltd. was incorporated, taking over all the assets (except debtors) and the liability for loans; interest at 6 per cent per annum on the purchase price to be allowed to the vendors from 1st January, 1968, to the date of completion. The credit balance of C. L. Gangan's capital to be satisfied by the issue of equity shares in Gangan Ltd.

The loanholders accept 8 per cent preference shares in discharge of their debts. The company as agent for the vendor, agrees to collect the debts, which realise ultimately Rs. 63,000 out of which they pay, as agent for the vendor, the creditors at the net figure shown in the Balance Sheet. Of the balance, they paid on account to C. L. Gangan the sum of Rs. 10,000; the amount remaining undrawn by C. L. Gangan, including interest to be discharged in the form of Rs. 25,000 debentures at 96 and cash. The new company is entitled to all intervening profit (i. e. between 1st January, 1968 and 30th April, 1968).

Show the opening journal entries of Gangan Ltd. and closing journal entries of C. L. Gangan in respect of the above, assuming that the date of completion is 31st May, 1968. Ignore Income tax.

(30 अप्रैल, 1968 को समस्त सम्पत्तियों (देनदारों को छोड़कर) एवं ऋण सम्बन्धी दायित्व को लेते हुये गंगन लिमिटेड का समामेलन हुआ। 1 जनवरी, 1968 से समाप्ति की तिथि तक क्रय मूल्य पर 6% वार्षिक व्याज विक्रेताओं को स्वीकार किया गया। सी. एल. गंगन को पूंजी के जमा शेष का गंगन लिमिटेड में ईक्विटी अंशों के निर्गमन द्वारा समाधान किया गया।

ऋण के धारक अपने ऋण के भुगतान में 8% अधिमान अंश स्वीकार करते हैं। विक्रेता के अभिकर्ता के रूप में कम्पनी ऋणों को वसूल करना स्वीकार करती है जिनसे अन्ततः 63,000 रु० वसूल होते हैं जिसमें से वह, विक्रेता के अभिकर्ता के रूप में, चिट्ठे में दिखाई गई राशि पर लेनदारों को चुकाती है। शेष राशि में से उन्होंने सी. एल. गंगन को 10,000 रु० का आंशिक भुगतान किया। सी. एल. गंगन द्वारा नहीं ली गई शेष राशि, व्याज सहित, 25,000 रु० के ऋण-पत्र 96 की दर पर और शेष नकद चुकानी है। नई कम्पनी समस्त मध्यवर्ती लाभ (1 जनवरी, 1968 और 30 अप्रैल, 1968 के मध्य के) की अधिकारी है।

यह मानते हुये कि समाप्ति की तारीख 31 मई, 1968 है, गंगन लिमिटेड की पुस्तकों में प्रारम्भिक जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए और सी. एल. गंगन की पुस्तकों में अंतिम जर्नल प्रविष्टियाँ दीजिए। आयकर का ध्यान नहीं रखना है। [184]

65. Bhawani Ltd., was incorporated as a private limited company on 1st August, 1967 to take over a business as a going concern as from 1st February, 1967. The purchase price of the business for such acquisition was fixed on the basis of the Balance Sheet of the firm as at 31st January, 1967, but the agreement provided that the vendors would get 80 per cent of the profits earned prior to 1st August, 1967 as compensation. Company's accounts were made up to 31st January each year and the summarised Trading and Profit & Loss Account for the year ended 31st January, 1968 disclosed the following results. (एक चालू व्यवसाय को 1 फरवरी, 1967 से लेने के लिए 1 अगस्त, 1967 को भवानी लिमिटेड का समामेलन हुआ। व्यवसाय का क्रय-मूल्य फर्म के 31 जनवरी 1967 के चिट्ठे के आधार पर निर्धारित हुआ, लेकिन समझौते में व्यवस्था थी कि विक्रेताओं को 1 अगस्त, 1967 से पूर्व कमाये गये लाभ का 80% क्षति पूर्ति के रूप में मिलेगा। कम्पनी के खाते

प्रति वर्ष 31 जनवरी तक बनाये जाते थे और 31 जनवरी, 1968 को समाप्त हुये वर्ष के लिए बनाया गया संक्षिप्त व्यापार व लाभ-हानि खाता निम्नलिखित परिणाम प्रकट करता था):—

	Rs.		Rs.
To Material Consumed	1,86,000	By Net Sales	2,60,000
,, Manufacturing Wages	48,500	By Stock :	
,, Misc. Expenses of Manufacture	18,600	Finished Goods	49,000
,, Carriage Inwards	6,300	Incompleted goods	6,000
,, Gross Profit c/d	55,600		
	3,15,000		3,15,000
To Salaries and Establishment charges	18,300	By Gross Profit b/d	55,600
,, Office Expenses	2,750		
,, Directors' Fees	1,800		
,, Bad Debts	2,300		
,, Debenture Interest	1,250		
,, Commission & Discount	7,800		
,, Carriage Outwards	1,600		
,, Depreciation	10,300		
,, Net Profit for the year	9,500		
	55,600		55,600

Further information available was that sales made by the company amounted to Rs. 1,16,000 and bad debts amounting to Rs. 1,100 were written off prior to August 1, 1967.

Prepare a statement showing the profits earned prior to and after incorporation. State also the amount of profit prior to August 1, 1967 payable to the vendors.

How should the company deal with its share of profits in the year ending January 31, 1968 ?

आगे उपलब्ध सूचना यह थी कि कम्पनी की बिक्री 1,16,000 रु० हुई और 1 अगस्त, 1967 से पूर्व 1,100 रु० के डूबत ऋण अपलिखित किये जा चुके थे।

समामेलन से पूर्व तथा बाद में अर्जित लाभों को दिखाते हुये एक विवरणपत्र तैयार कीजिए। 1 अगस्त, 1967 से पूर्व का विक्रेताओं को देय लाभ भी बताइये।

31 जनवरी, 1968 को समाप्त हुये वर्ष में अपने हिस्से के लाभों के साथ कम्पनी को कैसा व्यवहार करना चाहिए ? [185]

Answer : Profit prior to Incorporation Rs. 8,813;
Profit after Incorporation Rs. 687;
Amount of profit payable to vendors Rs. 7050·40.

2

कम्पनी लेखे–2

(Company Accounts–2)

एकाकी व्यवसाय एवं साझेदारी फर्म की भाँति प्रत्येक वर्ष के अन्त में कम्पनी का लाभ-हानि खाता एवं चिट्ठा बनाया जाता है। लाभ-हानि खाता कम्पनी का शुद्ध लाभ अथवा हानि प्रदर्शित करता है तथा चिट्ठा व्यापार की सही आर्थिक स्थिति प्रकट करता है। लाभ-हानि खाते को कई भागों (Sections) में विभाजित किया जाता है। उसका प्रथम भाग व्यापार खाता (Trading Account) कहलाता है। इसमें माल का प्रारम्भिक रहतिया (Opening Stock), शुद्ध क्रय (Net Purchases) प्रत्यक्ष खर्चे (Direct Expenses), शुद्ध बिक्री (Net Sales) एवं माल का अंतिम रहतिया (Closing Stock), दिखलाए जाते हैं। व्यापार खाते से व्यापार के सकल लाभ अथवा हानि (Gross Profit or Loss) को ज्ञात किया जा सकता है।

उक्त सकल लाभ या हानि को लाभ-हानि खाते के द्वितीय भाग (Second Section) में हस्तान्तरित कर दिया जाता है। तत्पश्चात् उस वर्ष से सम्बन्धित व्यापार के समस्त रेवेन्यूगत आय व व्यय इस भाग में दर्ज कर दिये जाते हैं। दोनों पक्षों का अन्तर व्यापार का शुद्ध लाभ या हानि (Net Profit or Loss) बतलाता है। शुद्ध लाभ की स्थिति में, उसे लाभ-हानि खाते के तीसरे भाग (Third Section) में हस्तान्तरित किया जाता है। इस भाग को लाभ-हानि नियोजन खाता (Profit and Loss Appropriation Account) कहते हैं। इस भाग का उद्देश्य यह बतलाना होता है कि शुद्ध लाभ की कितनी राशि वितरण के लिए उपलब्ध है तथा उसका नियोजन किस प्रकार किया गया है। सामान्यतया कम्पनी के लाभों का नियोजन निम्न कार्यों के लिए किया जाता है :—

(i) संचयों में हस्तान्तरण; तथा

(ii) लाभांशों का भुगतान।

कम्पनी के संचालकों को यह अधिकार है कि वे कम्पनी के लाभों में से उचित राशि संचयों में हस्तान्तरण कर सकें [Bond v. Barrow Haematite Ltd.]। ये संचय दो प्रकार के हो सकते हैं : (i) पूंजीगत संचय (Capital Reserve) व (ii) रेवेन्यूगत संचय (Revenue Reserve)। शेष राशि में से लाभांश * (Dividend) का भुगतान किया जा सकता है। जिन लाभों में से कम्पनी को लाभांश बाँटने का वैधानिक अधिकार होता है, उन्हें विभाजन योग्य लाभ (Divisible Profits) कहते हैं।

---

* 'लाभांश' का आशय कम्पनी के लाभ के उस भाग से है जो अंशधारियों में प्रतिशत के आधार पर अथवा कम्पनी के निर्गमित अंशों पर प्रति अंश की दर से कुछ निश्चित राशि के रूप में बाँटा जाता है।

कम्पनी अधिनियम एवं विभाजन योग्य लाभ

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 205 विभाजन योग्य लाभों के सम्वन्ध में प्रकाश डालती है। इस धारा में निम्नलिखित चार वातों के सम्वन्ध में नियम दिये गये हैं :

(i) लाभांश के श्रोत (Sources of Dividend) [धारा 205 (1)]
(ii) चालू मूल्य ह्रास (Current Depreciation) [धारा 205 (2)]
(iii) मूल्य ह्रास की वकाया (Arrears of Depreciation) [धारा 205 (1) (अ)]
(iv) पिछली हानियां (Past Losses) [धारा 205 (1) (व)]

इनका विस्तृत वर्णन निम्न प्रकार है :—

(i) लाभांश के श्रोत (Sources of Dividend) —

कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 205 (i) के अन्तर्गत एक कम्पनी किसी वर्ष के लिए लाभांश का वितरण केवल निम्नलिखित साधनों से कर सकती है :

(अ) उस वर्ष के लाभ ;
(व) उस वर्ष से पूर्व के वर्षों के लाभ;
(स) उपरोक्त (अ) और (व) का योग; तथा
(द) लाभांश के वितरण के लिए केन्द्रीय सरकार या किसी राज्य सरकार द्वारा दी गई गारन्टी के अन्तर्गत उस समय सरकार से प्राप्त राशि।

उपरोक्त साधनों में से प्रथम तीन में धारा 205 (2) के अन्तर्गत चालू मूल्य ह्रास, धारा 205 (1) (अ) के अन्तर्गत मूल्य ह्रास की वकाया राशि तथा धारा 205 (1) (व) के अन्तर्गत पिछली हानियों को घटाने के पश्चात् ही शेष राशि को लाभांश के रूप में वांटा जा सकता है।

(ii) चालू मूल्य ह्रास (Current Depreciation)—

कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (2) के अनुसार लाभांश का वितरण करने से पूर्व लाभ में से प्रत्येक ह्रास योग्य सम्पत्ति(Depreciable Asset) का इस वर्ष का मूल्य ह्रास अपलिखित किया जाना अनिवार्य है। इस धारा के द्वारा ह्रास की तीन विधियां निर्धारित की गई हैं। इनमें से किसी भी एक को अपनाया जा सकता है। ये विधियां निम्नलिखित हैं :

(अ) कम्पनी अधिनियम की धारा 350 द्वारा निर्धारित विधि के अनुसार मूल्य ह्रास अपलिखित कर दिया जावे। इस धारा में यह निर्दिष्ट है कि :

1. मूल्य ह्रास क्रमागत ह्रास विधि से अपलिखित किया जावेगा ;
2. भारतीय आयकर अधिनियम अथवा आयकर नियमों में दी गई मूल्य ह्रास की दर को अपनाया जावेगा; तथा
3. यदि कोई सम्पत्ति किसी विशेष वर्ष में बेची जाती है, नष्ट हो जाती है अथवा उस उपयोग से हटा दिया जाता है तो उस सम्पत्ति पर हुई हानि को उसी विशेष वर्ष के लाभ में अपलिखित किया जावेगा। हानि से तात्पर्य उस राशि से है [illegible] मूल्य उसके विक्रय मूल्य अथवा [illegible]

Loss=Written down Value–Sale Proceeds of Scrap Value इस विधि को क्रमागत ह्रास विधि कहा जा सकता है।

(ब) किसी ह्रास योग्य सम्पत्ति के सम्बन्ध में प्रति वर्ष इतनी राशि मूल्य ह्रास के रूप में अपलिखित की जावे जो उस सम्पत्ति की मूल लागत (Original Cost) के 95% में **निर्धारित समय** (स्पष्टीकरण आगे देखें) का भाग देने पर आवे। अर्थात्

Annual Depreciation = 95% of the Original Cost ÷ Specified Period

इस विधि के अनुसार एक ही राशि प्रति वर्ष मूल्य ह्रास के रूप में अपलिखित की जाती है, अतः इसे 'स्थायी किस्त विधि' (Fixed Instalment System) कहा जा सकता है।

(स) केन्द्रीय सरकार की अनुमति से अन्य किसी ऐसी विधि के अनुसार मूल्य ह्रास अपलिखित किया जा सकता है जिसके द्वारा उस सम्पत्ति की मूल लागत के 95% को निर्धारित समय में अपलिखित किया जा सके।

निर्धारित समय (Specified Period) का स्पष्टीकरण

निर्धारित समय से तात्पर्य उतने वर्षों से है जितने में यदि किसी सम्पत्ति का धारा 350 के अनुसार ह्रास अपलिखित किया जावे तो उस सम्पत्ति की मूल लागत का कम से कम 95% भाग अपलिखित किया जा चुकेगा।

ह्रास की विधियों का उदाहरण द्वारा स्पष्टीकरण

सम्पत्ति की लागत 10,000 रु०

आयकर विधान के अनुसार ह्रास की दर 30 प्रतिशत

(अ) क्रमागत ह्रास विधि के अनुसार

प्रथम वर्ष में 10,000 रु० का 30% अर्थात् 3,000 रु० और द्वितीय वर्ष में (10,000—3,000) रु० का 30% अर्थात् 2,100 रु० मूल्य ह्रास अपलिखित किया जावेगा और आगे भी इस क्रम में मूल्य ह्रास अपलिखित किया जाता रहेगा।

(ब) स्थायी किस्त विधि के अनुसार

निर्धारित समय की गणना—चूँकि सम्पत्ति की मूल लागत 10,000 रु० है, अतः उसका 95% = 9500 रु० होगा; तथा निर्धारित समय उतने वर्ष होंगे जिनके अन्त में इस सम्पत्ति में से कम से कम 9,500 रु० मूल्य ह्रास अपलिखित हो जावे, यदि मूल्य ह्रास धारा 350 [अर्थात् उपरोक्त (अ)] के अनुसार अपलिखित किया जावे। यह संख्या 9 वर्ष आवेगी। अतः प्रति वर्ष अपलिखित किये जाने वाले मूल्य ह्रास की राशि =

95% of the Original Cost ÷ Specified Period

अर्थात् 9,500 रु० ÷ 9 = 1,055 रु० 56 पैसे

(स) अन्य विधि—

इस सम्पत्ति के सम्बन्ध में केन्द्रीय सरकार की अनुमति से कोई भी ऐसी विधि अपनाई जा

सकती है जिसके द्वारा 9 वर्ष के अन्त में कम से कम 9,500 रु० मूल्य ह्रास अपलिखित हो सकेगा।

नोटः (1) किसी सम्पत्ति को बेचने, उपयोग से हटाने या नष्ट होने के कारण हुई हानि को दूसरी तथा तीसरी विधि के अनुसार मूल्य ह्रास काटने पर भी अपलिखित किया जावेगा।

(2) यदि किसी सम्पत्ति के सम्बन्ध में आयकर विधान या आयकर नियमों के अन्तर्गत मूल्य ह्रास की कोई दर नहीं दी गई है तो उस सम्पत्ति पर मूल्य ह्रास केन्द्रीय सरकार के किसी सामान्य या विशेष आदेश द्वारा संमत (Approved) विधि के अनुसार अपलिखित किया जावेगा।

(iii) मूल्य ह्रास की बकाया (Arrears of Depreciation)—

कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (1) (अ) ह्रास को बकाया राशि को अपलिखित करने के सम्बन्ध में निम्नलिखित दो नियम देती है :

(अ) एक कम्पनी 28 दिसम्बर, 1960 से पूर्व समाप्त हुए वित्तीय वर्षों के लाभ को ऊपर नं० (ii) में बताये गये मूल्य ह्रास को अपलिखित किये बिना भी किसी वित्तीय वर्ष में लाभांश घोषित करने के काम में ले सकती है।

(ब) यदि कोई कम्पनी 27 दिसम्बर, 1960 के पश्चात् समाप्त होने वाले किसी वित्तीय वर्ष के सम्बन्ध में ऊपर नं० (ii) में बताये गये मूल्य ह्रास को अपलिखित नहीं कर सकी है तो ह्रास की इस बकाया को, इसी तिथि के पश्चात् समाप्त हुये किसी वित्तीय वर्ष के लिए लाभांश की घोषणा करने से पूर्व, उस वर्ष के लाभ में से या पिछले वर्षों के लाभ में से अपलिखित करना अनिवार्य है।

उदाहरण : माना कि किसी कम्पनी का वित्तीय वर्ष 31 दिसम्बर को समाप्त होता है और 1961 के अन्त में उसकी स्थिति इस प्रकार है :

1. 1959 तक के वर्षों का संचित लाभ (Accumulated Profits) = 40,000 रु०
2. 1960 में मूल्य ह्रास अपलिखित करने से पूर्व लाभ = 10,000 रु० और
   मूल्य ह्रास = 40,000 रु०
3. 1961 के लाभ (चालू मूल्य ह्रास काटने के पश्चात्) = 80,000 रु०

∴ लाभांश के लिए उपलब्ध रकम :

1. कम्पनी 40,000 रु० (1959 तक के संचित लाभ) को 1960, 1961 या किसी भी वर्ष लाभांश वितरण के काम में ले सकती है।
2. यदि कम्पनी 1961 के लाभ (80,000 रु०) में से लाभांश बांटना चाहे तो उसे 30,000 रु० (1960 का बकाया मूल्य ह्रास) को पहले या तो 1961 के लाभ (80,000 रु०) में से या पूर्व वर्ष के संचित लाभों (40,000 रु०) में से अपलिखित करना होगा।

पिछली हानियां (Past Losses)

कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (1) (ब) के अनुसार यदि किसी कम्पनी को 27 दिसम्बर 1960 के पश्चात् समाप्त होने वाले किसी गत वित्तीय वर्ष (Previous Financial Year) में हानि हुई हो तो उस हानि की रकम या उस वर्ष में अपलिखित की गई मूल्य ह्रास की रकम, जो भी कम हो को अग्राङ्कित में से घटाया जाना चाहिए।

(अ) उस वर्ष के लाभ में से जिसके लिए कम्पनी लाभांश घोषित करने का प्रस्ताव करती है;

(ब) कम्पनी के पिछले वित्तीय वर्षों के लाभ में से;

(स) उपरोक्त (अ) और (ब) के योग में से।

उदाहरणार्थ, यदि कम्पनी का वित्तीय वर्ष 31 दिसम्बर को समाप्त होता है और कम्पनी ने 1955 में 10,000 रु० मूल्य ह्रास अपलिखित करने के पश्चात् 7,000 रु० का नुकसान उठाया है तो ऐसी स्थिति में कम्पनी 1969 के पश्चात् के किसी भी वर्ष के लिए लाभांश का वितरण तब तक नहीं नहीं कर सकेगी जब तक कि 1969 के 7,000 रु० के नुकसान को अपलिखित नहीं कर दिया जाता। यह ध्यान रहे कि यदि कम्पनी के पास 28 दिसम्बर, 1960 से पूर्व समाप्त हुये वित्तीय वर्ष के लाभ हैं तो उन पर यह प्रतिबन्ध लागू नहीं होता।

मूल्य ह्रास से मुक्ति—

केन्द्रीय सरकार जन हित में किसी कम्पनी को मूल्य ह्रास अपलिखित किये बिना किसी वित्तीय वर्ष के लिए लाभांश की घोषणा करने की अनुमति दे सकती है।

धारा 205 पूंजीगत लाभों (Capital Profits) के वितरण पर रोक नहीं लगाती। पूंजीगत लाभ वे होते हैं जोकि व्यापार के सामान्य व्यवहारों से उत्पन्न न होकर अन्य साधनों से उत्पन्न होते हैं। इनमें निम्न मदें शामिल हो सकती हैं:—

(i) अंशों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम;

(ii) ऋणपत्रों के निर्गमन पर प्राप्त प्रीमियम;

(iii) जब्त अंशों के पुनर्निर्गमन के पश्चात् 'अंश हरण खाते' में बची हुई जमा राशि;

(iv) कम्पनी द्वारा समामेलन से पूर्व कमाया गया लाभ;

(v) कम्पनी के ऋणपत्रों के शोधन पर प्राप्त बट्टा;

(vi) स्थायी सम्पत्ति बेचने से प्राप्त लाभ।

अब प्रश्न यह उठता है कि क्या उपरोक्त पूंजीगत लाभों को लाभांश के रूप में बांटा जा सकता है। प्रथम पांच प्रकार के पूंजीगत लाभों के सम्बन्ध में कम्पनी लेखे (प्रथम) में वर्णन कर दिया गया है। स्थायी सम्पत्ति बेचने से जो पूंजीगत लाभ उत्पन्न होते हैं उनका लाभांश के रूप में वितरण तभी किया जा सकता है जबकि वे (i) नकद में प्राप्त हो गये हों, (ii) कम्पनी के अन्तर्नियम उसकी आज्ञा देते हों, तथा (iii) समस्त सम्पत्तियों का पुनर्मूल्यांकन करने के बाद आधिक्य (Surplus) बचता हो। (Lubbock v. British Bank of South America, 1892 and Foster v. The Trinidad Lake Asphalte Co. Ltd. 1901)

कभी-कभी कम्पनी की स्थायी सम्पत्तियों का बाजार मूल्य गिर जाता है और इस प्रकार पुस्तक मूल्य अत्यधिक ऊँचा नजर आने लगता है। कम्पनी की इस प्रकार की हानि पूंजीगत हानि है। भारतीय कम्पनी अधिनियम के अन्तर्गत यह आवश्यक नहीं है कि लाभांश बांटने से पूर्व इस प्रकार की पूंजीगत हानियों को अपलिखित किया जावे। समय-समय पर न्यायालयों के द्वारा दिये गये निर्णयों के आधार पर भी यह कहा जा सकता है कि स्थायी सम्पत्ति की हानि को लाभांश घोषित करने से पूर्व

लाभ में से अपलिखित करना अनिवार्य नहीं है (Bolton v. Natal Land & Colonisation Co. Ltd. 1892 and Verner v. General and Commercial Investment Trust Ltd.) । वैधानिक दृष्टिकोण से पूंजीगत हानि को लाभांश घोषित करने से पूर्व अपलिखित करना अनिवार्य नहीं है लेकिन व्यावहारिक दृष्टिकोण से यही उचित होगा कि इस हानि को थोड़ा-थोड़ा करके कुछ वर्षों में अपलिखित कर दिया जावे।

Illustration 39

A company started business in 1959 and closes its accounts on 31st December each year. The position in different years is given below. (एक कम्पनी ने 1959 में व्यापार प्रारम्भ किया और वह प्रति वर्ष 31 दिसम्बर को अपने लेखे बन्द करती है। विभिन्न वर्षों में उसकी स्थिति निम्न प्रकार थी):—

Year	Depreciation charged	Net Profit or Loss	Dividend declared
	Rs.	Rs.	Rs.
1959	15,000	10,000 (Loss)	—
1960	18,000	16,000	10,000
1961	20,000	30,000 (Loss)	—
1962	30,000	35,000	10,000
1963	28,000	10,000 (Loss)	—
1964	32,000	18,000	—

The company wants to know the amount of divisible profit available on 31st December, 1964 in order to determine the rate of dividend that can be declared.

(31 दिसम्बर, 1964 को कम्पनी अपने विभाजन योग्य लाभ की राशि जानना चाहती है ताकि लाभांश घोषणा की दर निर्धारित कर सके।)

Solution :

1959—इस वर्ष के ह्रास या हानि की राशि को किसी भी वर्ष के लाभों में से लाभांश की घोषणा करने से पूर्व अपलिखित करना आवश्यक नहीं है क्योंकि यह राशि 28 दिसम्बर, 1960 से पूर्व समाप्त हुए वित्तीय वर्ष से सम्बन्ध रखती है।

	विभाजन योग्य लाभ
	रु०
1960—लाभ 16,000 रु० में से 10,000 रु० लाभांश के घटाने पर शेष बची हुई राशि	+6,000
1961—ह्रास अथवा हानि जो भी कम हो, उसका प्रावधान किया जायेगा, अतः 20,000 रु० का प्रावधान किया जावेगा।	—20,000
	—14,000
1962—लाभ के 35,000 रु० में से 10,000 रु० लाभांश के घटाने पर शेष बची हुई राशि	+25,000
	+11,000
1963—ह्रास अथवा हानि जो भी कम हो, उसका प्रावधान किया जायेगा, अतः 10,000 रु० का प्रावधान किया जावेगा।	—10,000
	+ 1,000
1964—शुद्ध लाभ	+18,000
31 दिसम्बर, 1964 को विभाजन योग्य लाभ	19,000

लाभांश (Dividends)

लाभांश की घोषणा के सम्बन्ध में प्रायः कम्पनी के अन्तर्नियमों में नियम बने होते हैं। अधिमान अंशों के सम्बन्ध में लाभांश की घोषणा एवं भुगतान करने का अधिकार कम्पनी के अन्तर्नियमों द्वारा संचालकों को दे दिया जाता है लेकिन ईक्विटी अंशों के सम्बन्ध में संचालकों को लाभांश का सिफारिश करने का ही अधिकार दिया जाता है और इसके आधार पर अंशधारियों की साधारण सभा घोषणा करती है। लाभांश घोषणा एवं भुगतान के सम्बन्ध में कुछ नियम नीचे दिए जाते हैं :—

(i) कम्पनी साधारण सभा में लाभांश घोषित कर सकती है लेकिन यह राशि संचालकों द्वारा सिफारिश की गई राशि से अधिक नहीं हो सकती [नियम 85, सारणी ए]।

(ii) लाभांश की सिफारिश करने से पूर्व, संचालक कम्पनी के लाभों में से किसी धन को सुरक्षित संचय अथवा संचयों के लिये नियोजित कर सकते हैं और इनका प्रयोग ऐसे कार्यों में कर सकते हैं जिन कार्यों में कम्पनी के लाभों का प्रयोग किया जा सकता है [नियम 87 (1) सारणी ए]।

(iii) संचालक मंडल जिस लाभ का वितरण करना उचित नहीं समझते, उसे संचयों में हस्तान्तरित किये बिना लाभ-हानि खाते में भी आगे ले जा सकते हैं। [नियम 8‾ (2) सारणी ए]।

(iv) कम्पनी के पास पर्याप्त धन होते हुए भी यदि संचालक लाभांश घोषित नहीं करना चाहते तो, कपट की दशा को छोड़कर, अंशधारी लाभांश के भुगतान के लिए दबाव नहीं डाल सकते [Bond v. Barrow Haematite Ltd. 1902]।

(v) लाभांश का भुगतान नकद में किया जायेगा। लेकिन एक कम्पनी लाभों का पूंजीकरण करके बोनस अंशों का निर्गमन भी कर सकती है।

(vi) नक़द में देय लाभांश को चैक या अधिपत्र (Warrant) द्वारा अंशधारी के रजिस्टर्ड पते पर भेजा जायेगा।

(vii) लाभांश की घोषणा के 42 दिन के भीतर कम्पनी को लाभांश का भुगतान करना अनिवार्य होगा। उक्त अवधि में लाभांश अधिपत्र (Dividend Warrants) अवश्य भेज दिये जाने चाहिये।

(viii) लाभांश पर व्याज नहीं दिया जावेगा। [नियम 94 सारणी अ]

(ix) लाभांश, कम्पनी पर, घोषणा की तिथि से एक ऋण हो जाता है और एक अंशधारी इसे प्राप्त करने के लिए मुकदमा चला सकता है [Re severn etc. Rly. 1896]।

वार्षिक साधारण सभा में घोषणा हो जाने के बाद लाभांश सूचियां बनाई जाती हैं जिसमें प्रत्येक अंशधारी को देय लाभांश की रकम, लाभांश में से घटाया जाने वाला आयकर तथा शुद्ध लाभांश, आदि लिख होते हैं। लाभांश सूची के पश्चात् कम्पनी लाभांश अधिपत्र (Dividend warrants) तैयार करती है। लाभांश अधिपत्र कम्पनी द्वारा बैंक को दिया गया एक ऐसा लिखित आदेश है जिसमें वर्णित रकम का सम्बन्धित सदस्य को भुगतान कर देने को कहा जाता है। इसके साथ आयकर का प्रमाण पत्र भी नत्थी होता है जो इस बात का प्रमाण है कि सम्बन्धित लाभांश से आयकर काट लिया गया है। लाभांश अधिपत्र तैयार होने के पश्चात् बैंक में "लाभांश खाता" खोला जाता है जिसमें लाभांश की कुल राशि जमा करा दी जाती है और बैंक, लाभांश अधिपत्र उपस्थित करने वालों को, उस रकम में से भुगतान करता है। कम्पनी सचिव इस खाते के भुगतानों की समय-समय पर जांच करता रहता है और लाभांश-सूची में भुगतान को दर्ज करता है। यदि कुछ अंशधारी चिट्ठे की तारीख तक लाभांश का भुगतान नहीं लेते हैं तो उस राशि को 'न मांगा गया लाभांश' (Unclaimed Dividends) कहते हैं। 'न मांगा गया लाभांश' कम्पनी का दायित्व है और इसे अंशधारी 6 वर्ष तक प्राप्त करने का अधिकार रखते हैं। अतः उक्त समय तक इसे चिट्ठे में दायित्व के रूप में दिखाना आवश्यक है। संचालक, कम्पनी के अंतर्नियमों द्वारा, 'न मांगे गये लाभांश' को जब्त करने का अधिकार प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन सामान्यतया ऐसा नहीं होता है।

अंतरिम लाभांश (Interim Dividends)

'अंतरिम लाभांश' से तात्पर्य उस लाभांश से है जो कम्पनी के सदस्यों को, किसी अवधि के लाभों की आशा में उस अवधि के लिए कम्पनी के हिसाब तैयार होने और वार्षिक साधारण सभा द्वारा उस हिसाब को पास किए जाने से पूर्व ही, कम्पनी के संचालकों द्वारा घोषित कर दिया जावे। वह लाभांश वित्तीय वर्ष के मध्य, कम्पनी के संचालकों द्वारा कम्पनी के अन्तर्नियमों द्वारा प्रदत्त अधिकारों के अन्तर्गत, घोषित कर दिया जाता है। इसकी घोषणा दो वार्षिक साधारण सभाओं के मध्य में किसी भी समय कर दी जाती है। जब संचालकों द्वारा अंतरिम लाभांश की घोषणा की जाती है तब कम्पनी की वार्षिक साधारण सभा में घोषित किया जाने वाला लाभांश अंतिम लाभांश (Final Dividend) कहलाता है। अंतरिम लाभांश के भुगतान की भी वही विधि होती है जो वार्षिक लाभांश की, अन्तर केवल इतना होगा कि इसकी घोषणा के लिए साधारण सभा बुलाने की आवश्यकता नहीं होगी।

अधिमान अंशों पर लाभांश (Preference Share Dividend)

लाभांश के सम्बन्ध में, अधिमान अंशों के अधिकार का वर्णन कम्पनी के अंतर्नियमों में किया जाता है। अधिमान अंश चाहे संचयी हों अथवा असंचयी, उन्हें प्रतिवर्ष लाभों में से एक निश्चित प्रतिशत पर लाभांश दिया जाता है। यदि संचयी अधिमान अंशों को किसी वर्ष लाभांश नहीं चुकाया जाता है तो

वह कम्पनी का संदिग्ध दायित्व (Contingent Liability) है और इसे चिट्ठे में नीचे नोट के रूप में दिखाना चाहिए। वहाँ यह भी लिखा जाना चाहिए कि उक्त लाभांश कितने वर्षों से बकाया है।

कम्पनी की नई कर-प्रणाली लागू होने के फलस्वरूप अधिमान अंश (लाभांश नियंत्रण) अधिनियम, 1960 [Preference Shares (Regulation of Dividends) Act, 1960] पास किया गया। उक्त अधिनियम के अनुसार, **1 अप्रैल, 1960** से पहले निर्गमित अधिमान अंशों की स्थिति में उन पर देय लाभांश की राशि को निम्नलिखित से बढ़ा कर लाभ-हानि नियोजन खाते में दिखाया जायेगा :

(i) यदि अधिमान अंश कर-मुक्त (tax free) हैं तो लाभांश को 30% से बढ़ाया जायेगा;

(ii) यदि अधिमान अंश कर-योग्य (taxable) हैं तो लाभांश को 11% से बढ़ाया जायेगा।

लाभ नियोजन के लिए लेखा प्रविष्टियाँ (Accounting entries for profit appropriations):–

(अ) संचयों अथवा कोषों में हस्तान्तरण—

(i) जहाँ संचालकों को, अंशधारियों को साधारण सभा में स्वीकृति के बिना ही, संचयों या कोषों में हस्तान्तरण का अधिकार है—

Profit and Loss Appropriation a/c...... Dr. (हस्तान्तरण की राशि से)
To (particular) Fund or Reserve a/c
(Transfer made.)

इसका उदाहरण ऋण-पत्र शोधन कोष (Debenture Redemption Fund) हो सकता है। इन कोषों या संचयों को चिट्ठे में 'संचय एवं आधिक्य (Reserve and Surplus) शीर्षक के अन्तर्गत दिखाया जायेगा।

(ii) जहाँ संचालकों को, संचयों अथवा कोषों में हस्तान्तरण करने के लिए, अंशधारियों की साधारण सभा में अनुमति लेना आवश्यक है, वहां संचालक केवल सिफारिश मात्र या प्रस्ताव-मात्र करते हैं। अतः प्रस्ताव किये जाने पर—

Profit and Loss Appropriation a/c ....Dr. (प्रस्तावित राशि से)
To Proposed Additions to Reserve a/c
(Proposal made.)

इसका उदाहरण सामान्य संचय (General Reserve) में हस्तान्तरण हो सकता है। वार्षिक चिट्ठे में इन्हें सम्बन्धित संचय में वृद्धि के रूप में नहीं बल्कि संचयों में प्रस्तावित वृद्धि' (Proposed additions to Reserves) के रूप में दिखाना चाहिये।

साधारण सभा में अंशधारियों की अनुमति मिलने पर—

Proposed Additions to Reserves a/c Dr.
To (particular) Reserve a/c
(Transfer made after carrying out the proposal.)

(ब) लाभांश की घोषणा एवं भुगतान—

(i) अंशधारियों की अनुमति के लिए जब संचालक सिफारिश या प्रस्ताव मात्र करते हैं—

Profit and Loss Appropriation a/c Dr. (प्रस्ताव की राशि से)
To Proposed Dividend a/c
(Proposal for declaration of dividends made.)

इनको चिट्ठे में 'चालू दायित्व एवं आयोजन' (Current liabilities and provisions) शीर्षक के अन्तर्गत 'ब' भाग में 'प्रस्तावित लाभांश' के रूप में दिखाया जायेगा।

(ii) अंशधारियों की अनुमति मिलने पर—

Proposed Dividend a/c... ...Dr. (प्रस्ताव पास होने की राशि से)
To Dividend a/c
(Transfer made after carrying out the proposal.)

अंशधारियों द्वारा लाभांश को नकद लेने पर :—

Dividend a/c ....Dr. (भुगतान की राशि से)
To Cash or Bank a/c
(Payment made.)

वर्ष के अंत में लाभांश खाते का यदि क्रेडिट शेष रहता है तो वह 'न मांगा गया लाभांश' (Unclaimed dividends) होगा तथा चिट्ठे में 'चालू दायित्व एवं आयोजन' शीर्षक के अन्तर्गत 'अ' भाग में दिखाया जायेगा। किन्तु व्यवहार में उपरोक्त प्रविष्टि नहीं होती क्योंकि कम्पनियां बैंक में अलग खाता खोलकर लाभांशों का भुगतान करती है जिसको आगे एक उदाहरण द्वारा समझाया गया है।

Illustration 40

The distributable profits of a newly started company for the year ended 31st March, 1968 amounted to Rs. 5,00,000. The directors decided as follows :—

(i) To transfer Rs. 1,00,000 to Debenture Redemption Fund and Rs. 50,000 to Staff Gratuity Fund;

(ii) To recommend to the annual general meeting to transfer Rs. 1,20,000 to General Reserve;

(iii) To recommend to the annual general meeting to pay 10 per cent dividend on its Rs. 19,00,000 share capital; and

(iv) To carry forward the balance.

The directors' recommendations were approved by the shareholders in annual general meeting held on 18th June, 1968.

Show by journal entries how the profit appropriations would be recorded in the books of the company. Also show Profit and Loss Appropriation Account for the year ending 31st March, 1968. Ignore income tax.

31 मार्च 1968 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये एक नई स्थापित कम्पनी के विभाजन योग्य लाभ 5 लाख रु० थे। संचालकों ने निम्न निश्चय किये :—

(i) ऋण-पत्र शोधन कोष में 1,00,000 रु० तथा स्टाफ ग्रेच्यूटी फण्ड में 50,000 रु० हस्तान्तरित किये जावें;

(ii) सामान्य संचय में 1,20,000 रु० हस्तान्तरण करने की वार्षिक साधारण सभा को सिफारिश की जाये; तथा

(iii) 19,00,000 रु० की अंश पूंजी पर 10 प्रतिशत लाभांश वांटने की वार्षिक साधारण सभा को सिफारिश की जावे;

(iv) शेष राशि को अगले वर्ष के लिये ले जाया जावे।

18 जून, 1968 को हुई वार्षिक साधारण सभा में अंशधारियों द्वारा संचालकों की उक्त सिफारिशों की पुष्टि कर दी गई।

जर्नल प्रविष्टियों द्वारा दिखाइये कि कम्पनी की पुस्तकों में उक्त नियोजनों को किस प्रकार दर्ज किया जावेगा। 31 मार्च, 1968 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ-हानि नियोजन खाता भी बनाइये। आयकर का ध्यान नहीं रखना है।

Solution :

Journal of...........

1968			Rs.	Rs.
March 31	Profit and Loss Appropriation a/c......Dr.		1,50,000	
	To Debenture Redemption Fund a/c			1,00,000
	To Staff Gratuity Fund a/c			50,000
	(Transfers made.)			
,,	Profit and Loss Appropriation a/c.... Dr.		1,20,000	
	To Proposed Additions to Reserve a/c			1,20,000
	(Transfers propos d to annual general meeting.)			
,,	Profit and Loss Appropriation a/c......Dr.		1,90,000	
	To Proposed Dividend a/c			1,90,000
	(Dividends proposed @ 10% on shares.)			
June 18	Proposed Additions to Reserve a/c Dr.		1,20,000	
	To General Reserve a/c			1,20,000
	(Proposed transfer to General Reserve approved.)			
,,	Proposed Dividend a/c Dr.		1,90,000	
	To Dividend a/c			1,90,000
	(Proposed dividend approved.)			

Profit and Loss Appropriation Account

(Third Section of P. & L. Account)

for the year ending 31st March, 1968

	Rs.		Rs.
To Deb. Red. Fund	1,00,000	By Balance b/d	5,00,000
To Staff Gratuity Fund	50,000		
To Proposed additions to Reserve	1,20,000		
To Proposed Dividend	1,90,000		
To Balance c/d	40,000		
	5,00,000		5,00,000

V. 1501

Illustration 41

The Profit & Loss Account of Harish & Co. Ltd. disclosed a net profit of Rs. 66,500 for the year ended 30th June 1967. The subscribed capital of the company consisted of Rs. 6,00,000 divided into 3,000 6% preference shares of Rs. 100 each fully paid up and 30,000 equity shares of Rs. 10 each, Rs 7 per share paid up. There was a credit balance of Rs. 11,500 brought forward on Profit and Loss Account from the previous year. The directors made the undermentioned recommendations for the disposal of available profits, which were approved by the shareholders at the annual meeting:—

(i) To pay the year's dividend on preference shares.

(ii) To pay a dividend of 10% on equity shares.

(iii) To make a provision of Rs. 7,500 for income tax.

(iv) To transfer Rs. 15,000 to General Reserve.

(v) To carry forward the balance to next year.

Show the Profit and Loss Appropriation Account for the year ended 30th June 1967.

30 जून 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष को हरीश एण्ड कं० लिमिटेड का लाभ-हानि खाता 66,500 रु० का शुद्ध लाभ बताता था। कम्पनी की अभिदत्त पूंजी 6,00,000 रु० थी जोकि 100 रु० वाले 3,000, 6% पूर्ण दत्त अधिमान अंश और 10 रु० वाले 30,000 ईक्विटी अंश, जिस पर 7 रु० प्रति अंश भुगतान किया जा चुका था, में विभाजित थी। पिछले वर्ष से आगे लाया गया लाभ का क्रेडिट शेष 11,500 रु० था। कम्पनी के संचालकों ने लाभ विभाजन के लिये निम्नलिखित सुझाव दिये जिन्हें कम्पनी के अंशधारियों ने वार्षिक सभा में स्वीकार कर लिया :—

(i) अधिमान अंशों पर वर्ष का लाभांश देना।

(ii) ईक्विटी अंशों पर 10% लाभांश देना।

(iii) आयकर के लिये 7,500 रु० का प्रबन्ध करना।

(iv) 15,000 रु० साधारण कोष में हस्तान्तरित करना।

(v) शेष आगामी वर्ष के लिये ले जाना।

30 जून 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए हानि-लाभ नियोजन खाता बनाइये।

Solution :

Profit and Loss Appropriation Account for the year ending June 30, 1967

(Third Section of P. & L. Account)

	Rs.		Rs.
To Provision for income-tax	7,500	By Balance b/f from previous year.	11,500
To Proposed addition to General Reserve	15,000	,, Balance of Profit for the year	66,500
To Proposed Dividend :			
Pref. Share Dividend	18,000		
Equity Share Dividend	21,000		
To Balance c/d	16.500		
	78,000		78,000

नोटः—यह मान लिया गया है कि हरीश एण्ड कं० लिमिटेड द्वारा अधिमान अंश 1 अप्रैल, 1960 के बाद निर्गमित किये गये थे।

Illustration 42

The issued and subscribed share capital of Z Ltd. on 31st December, 1967 was as follows (31 दिसम्बर, 1967 को जैड लिमिटेड की निर्गमित व अभिदत्त पूंजी निम्न प्रकार थी):—

	Rs.
5,000 6% (tax-free) Pref. Shares of Rs. 100 each fully paid issued in January 1958	5,00,000
3,500 6½% (tax-free) Pref. Shares of Rs. 100 each fully paid issued in July, 1960	3,50,000
2,000 7% (taxable) Pref. Shares of Rs. 100 each fully paid issued in March, 1960	2,00,000
1,500 7½% (taxable) Pref. Shares of Rs. 100 each fully paid issued in November, 1964	1,50,000
1,00,000 Equity Shares of Rs. 10 each issued for cash fully paid up	10,00,000
20,000 Equity Shares of Rs. 10 each, Rs. 7 called up less unpaid calls Rs. 4,000	1,36,000
Calls in Advance on above shares	6,000
10,000 Equity Shares of Rs. 10 each issued as fully paid to vendors for consideration other than cash	1,00,000

The net profits of the company for the year ended 31st December, 1967 amounted to Rs. 3,85,000 to which is to be added the sum of Rs. 10,000 being the balance brought forward from the previous year. Out of this amount the directors

have transferred Rs. 80,000 to General Reserve and Rs. 75,000 to Development Rebate Reserve.

The directors recommended to the general meeting to declare Pref. Share Dividend and 10% dividend on equity share capital. The recommendation of the directors was approved in the general meeting held on 28th April, 1968.

Prepare a statement showing the total amount of dividends to be paid by the company. Pass necessary journal entries and show Profit & Loss Appropriation Account for the year ending 31st December, 1967.

(31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष में कम्पनी को 3,85,000 रु० का शुद्ध लाभ हुआ जिसमें गत वर्ष से लाये गये शेष के 10,000 रु० जोड़े गये। इस रकम में से संचालकों ने 80,000 रु० सामान्य संचय खाते में तथा 75,000 रु० विकास रिबेट संचय खाते में हस्तान्तरित किये।

संचालकों ने वार्षिक साधारण सभा को अधिमान अंश-लाभांश तथा ईक्विटी अंश पूंजी पर 10% लाभांश घोषित करने की सिफारिश की। 28 अप्रैल, 1968 को वार्षिक साधारण सभा में संचालकों की सिफारिश की पुष्टि कर दी गई।

कम्पनी द्वारा भुगतान किये जाने वाले लाभांश की कुल रकम का एक विवरण बनाइये। आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये तथा 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष का लाभ-हानि नियोजन खाता बनाइये।)

Solution :

Statement showing Amount of Dividends to be paid by Z Ltd.
for the year ending 31st December, 1967

		Rs.
(i)	On 5,000 6% (tax free) Pref. Shares @ 7·80% (Rs. 6+30% of Rs. 6)	39,000
(ii)	On 3,500 $6\frac{1}{2}$% (tax free) Pref. Shares @ 6·50%	22,750
(iii)	On 2,000 7% (taxable) Pref. Shares @ 7·77% (Rs. 7+11% of Rs. 7)	15,540
(iv)	On 1,500 $7\frac{1}{2}$% (taxable) Pref. Shares @ 7·50%	11,250
(v)	On 1,00,000 Equity Shares @ 10%	1,00,000
(vi)	On 20,000 Equity Shares partly paid @ 10%	13,600
(vii)	On 10,000 Equity Shares fully paid @ 10%	10,000
		2,12,140

Journal of Z Ltd.

			Rs.	Rs.
1967 Dec. 31	Profit and Loss Appropriation a/c Dr. To General Reserve a/c To Development Rebate Reserve a/c (Transfer made.)		1,55,000	 80,000 75,000
,,	Profit and Loss Appropriation a/c Dr. To Proposed Pref. Share Dividend a/c To Proposed Equity Share Dividend a/c (Proposals for Dividend made.)		2,12,140	 88,540 1,23,600
April 28	Proposed Pref. share Dividend a/c Dr. To Pref. Share Dividend a/c (Proposal for Pref. Share Dividend approved.)		88,540	 88,540
,,	Proposed Equity Share Dividend a/c Dr. To Equity Share Dividend a/c (Proposal for Equity Share Dividend approved.)		1,23,600	 1,23,600

Profit and Loss Appropriation Account

(Third Section of P. & L. a/c)

for the year ending 31st Dec. 1967

	Rs.		Rs.
To General Reserve	80,000	By Balance brought forward from last year	10,000
To Development Rebate Reserve	75,000	By Profit for the current year	3,85,000
To Proposed Dividend :—			
Pref. Share Dividend	88,540		
Equity Share Dividend	1,23,600		
To Balance c/d	27,860		
	3,95,000		3,95,000

Illustration 43 :

The following balances (amongst others) appear in the books of Z Ltd. as on 31st December, 1967 :—

Pref. Share Capital (detailed as follows) :—

	Rs.
4,000 6% (Tax-free) Pref. Shares of Rs. 100 each issued as fully paid in 1964	4,00,000
Equity Share Capital divided into 5,000 shares of Rs. 100 each	5,00,000
Unclaimed Equity Share Dividend Account	4,000
Unclaimed Equity Share Dividend Bank Account	4,000

In the annual general meeting held on 15th April, 1968, the recommendation of the directors regarding payment of pref. share dividend and equity share dividend @ 12% (both out of current year's profits) was approved by the shareholders. As usual, two dividend bank accounts, separately for pref. share dividend and equity share dividend, were opened with the Bank of Rajasthan Ltd. on 16th April, 1968

Upto the end of 1968, all the shareholders claimed the amount of dividends except one shareholder holding 100 equity shares. During the year, 1968, the bank also paid Rs. 1,800 out of Unclaimed Dividend Bank Account.

Pass necessary journal entries in the books of the company for the year 1968 assuming that the balances outstanding in Dividend Bank Accounts are transferred to unclaimed Dividend Bank Account at the end of the year. Also prepare ledger accounts concerning declaration and payment of dividends.

31 दिसम्बर, 1967 को एक्स लि० की पुस्तकों में निम्नलिखित शेष (अन्य के अतिरिक्त) थे :—
अधिमान अंश पूंजी (विवरण निम्न प्रकार थे) :—

	रु०
4,000 100 रु० वाले 6% पूर्ण प्रदत्त अधिमान अंश, जो 1964 में निर्गमित किये गये	4,00,000
ईक्विटी अंश पूंजी जो 100 रु० वाले 5,000 अंशों में निर्गमित थी।	5,00,000
'न मांगे गये' ईक्विटी अंश लाभांश खाता	4,000
'न मांगे गये' ईक्विटी अंश लाभांश बैंक खाता	4,000

15 अप्रैल, 1968 को वार्षिक साधारण सभा में 1967 वर्ष के लिए अधिमान अंश लाभांश तथा 12 प्रतिशत दर पर ईक्विटी अंश लाभांश (दोनों ही चालू लाभों में से) सम्बन्धी संचालकों की सिफारिश की अंशधारियों द्वारा पुष्टि कर दी गई। पूर्वानुभांति, 16 अप्रैल 1968 को दो लाभांश खाते (अधिमान अंश लाभांश खाता तथा ईक्विटी अंश लाभांश खाता) बैंक आफ राजस्थान लिमिटेड में खोले गये।

1968 के अन्त तक 100 ईक्विटी अंशों के एक धारक के अतिरिक्त सभी अंशधारियों ने लाभांश का भुगतान प्राप्त कर लिया। 1968 वर्ष में, बैंक ने 'न मांगे गये ईक्विटी अंश लाभांश बैंक खाते' से 1,800 रु० का भुगतान किया।

यह मानते हुए कि वर्ष के अन्त में लाभांश बैंक खाते का शेष न मांगे गये लाभांश खाते में हस्तांतरित कर दिया जाता है, 1968 वर्ष के लिए कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिये। लाभांश की घोषणा एवं उसके भुगतान सम्बन्धी खातों को भी दिखाइये।

Solution :

Journal of X Ltd.

1968			Rs.	Rs.
April 15	Proposed Pref. Share Dividend a/c Dr. To Pref. Share Dividend a/c (Proposal for declaration of pref. share dividend approved.)		24,000	24,000
,,	Proposed Equity Share Dividend a/c Dr. To Equity Share Dividend a/c (Proposal for declaration of equity share dividend approved.)		60,000	60,000
April 16	Pref Share Dividend Bank a/c Dr. Equity Share Dividend Bank a/c Dr. To Bank a/c (Dividend Bank Accounts opened.)		24,000 60,000	84,000
Dec. 31	Pref. Share Dividend a/c Dr. To Pref. Share Dividend Bank a/c (Payment of pref. share dividend made.)		24,000	24,000
,,	Equity Share Dividend a/c Dr. To Equity Share Dividend Bank a/c (Payment of equity share dividend made.)		58,800	58,800
,,	Unclaimed Dividend a/c Dr. To Unclaimed Dividend Bank a/c (Unclaimed dividends of previous years paid.)		1,800	1,800
,,	Equity Share Dividend a/c Dr. To Unclaimed Dividend a/c (Balance transferred.)		1,200	1,200
,,	Unclaimed Dividend Bank a/c Dr. To Equity Share Dividend Bank a/c (Balance transferred.)		1,200	1,200

Ledger Accounts :

Proposed Pref. Share Dividend Account

		Rs.			Rs.
15-4-68	To Pref. Share Dividend a/c	24,000	1-1-68	By Balance b/d	24,000

Proposed Equity Share Dividend Account

		Rs.			Rs.
15-4-68	To Equity Share Dividend a/c	60,000	1-1-68	By Balance b/d	60,000

Pref. Share Dividend Account

		Rs.			Rs.
31-12-68	To Pref. Share Dividend Bank a/c	24,000	15-4-68	By Proposed Pref. Share Dividend a/c	24,000

Equity Share Dividend Account

		Rs.			Rs.
31-12-68	To Equity Share Dividend Bank a/c	58,800	15-4-68	By Proposed Equity Share Dividend a/c	60,000
,,	To Unclaimed Dividend a/c	1,200			
		60,000			60,000

Pref. Share Dividend Bank Account

		Rs.			Rs.
16-4-68	To Bank a/c	24,000	31-12-68	By Pref. Share Dividend a/c	24,000

Equity Share Dividend Bank Account

		Rs.			Rs.
16-4-68	To Bank a/c	60,000	31-12-68	By Equity Share Dividend a/c	58,800
			,, ,, ,,	By Unclaimed Dividend Bank a/c	1,200
		60,000			60,000

Unclaimed Dividend Account

		Rs.			Rs.
31-12-68	To Unclaimed Dividend Bank a/c	1,800	1-1-68	By Balance b/d	4,000
" " "	To Balance c/d	3,400	31-12-68	By Equity Share Dividend a/c	1,200
		5,200			5,200

Unclaimed Dividend Bank Account

		Rs.			Rs.
1-1-68	To Balance b/d	4,000	31-12-68	By Unclaimed Dividend a/c	1,800
" " "	To Equity Share Dividend Bank a/c	1,200	" " "	By Balance c/d	3,400
		5,200			5,200

पूंजी में से ब्याज देना (*Interest out of Capital*) :—

एक कम्पनी अपनी पूंजी में से लाभांश वितरित नहीं कर सकती, किन्तु कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 208 के अन्तर्गत पूँजी में से ब्याज का भुगतान किया जा सकता है। यह भुगतान वैधानिक तभी होगा जब कि निम्न शर्तों को पूरा किया जावे—

(i) कम्पनी ने अंशों का निर्गमन किसी ऐसे भवन या कर्मशाला (Works) के निर्माण के लिये या प्लान्ट के आयोजन के लिए किया है जिनसे एक कम्पनी को लम्बे समय तक लाभ नहीं होगा।

(ii) भुगतान कम्पनी के अन्तर्नियमों द्वारा अधिकृत है या कम्पनी के विशेष प्रस्ताव द्वारा इसकी अनुमति दे दी गई है।

(iii) केन्द्रीय सरकार से अनुमति प्राप्त कर ली गई है। पूंजी में से ब्याज के भुगतान की अनुमति देने के पूर्व केन्द्रीय सरकार कम्पनी के व्यय से एक व्यक्ति की नियुक्ति कर सकती है तथा इसकी रिपोर्ट पर ही ऐसी स्वीकृति देना या नहीं देना निश्चित है।

(iv) भुगतान, केन्द्रीय सरकार द्वारा निर्धारित अवधि के लिये ही, किया गया है। जिस छमाही में कर्मशाला या भवन पूर्ण हो चुका है या प्लान्ट का आयोजन हो चुका है, उसकी अगली छमाही तक ही यह ब्याज दिया जा सकता है।

(v) ब्याज की दर 4% या केन्द्रीय सरकार द्वारा निश्चित दर से अधिक नहीं हो सकती।

उपरोक्त शर्तों के आधार पर जो ब्याज चुकाया जाता है, उसे पूंजीगत खर्चा मानकर उस वस्तु की लागत में जोड़ा जा सकता है इसके लिए अंशों का निर्गमन किया गया था।

अंशधारियों को बोनस का वितरण (Distribution of Bonus to Shareholders)

जब एक कम्पनी के पास बहुत से संचय (पूंजीगत व रेवेन्यूगत) व लाभ हों तो कम्पनी अपने अंशधारियों को बोनस वितरित कर सकती है। यह बोनस नियमित वार्षिक लाभांश के अतिरिक्त दिया जाता है तथा इसका वितरण निम्न विधियों द्वारा किया जा सकता है :—

(i) नकद भुगतान करके;

(ii) अंशतः प्रदत्त अंशों (Partly paid up shares) को पूर्ण प्रदत्त बना करके;

(iii) नये पूर्ण प्रदत्त अंशों का मुफ्त निर्गमन करके।

बोनस का नकद भुगतान करने पर 'बोनस खाते' को डेबिट तथा रोकड़ी खाते को क्रेडिट किया जाता है। इस प्रकार के बोनस को रोकड़ी बोनस (Cash Bonus) कहते हैं। किन्तु प्रायः बोनस का भुगतान नकद में नहीं किया जाता बल्कि अन्य दो विधियों द्वारा किया जाता है। इन दो विधियों के अनुसार वितरित किये गये बोनस को 'कैपिटल बोनस' कहते हैं।

जब अंशतः प्रदत्त अंशों को पूर्ण प्रदत्त अंश बनाने में बोनस का उपयोग किया जाता है तो अंशधारियों का उन अंशों पर मांग सम्बन्धी दायित्व समाप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए एक कम्पनी ने 10 रु० वाले 5,000 ईक्विटी अंश निर्गमित कर रखे हैं जिन पर 7.50 रु० प्रति अंश के हिसाब से मांगा व भुगतान किया जा चुका है। कम्पनी ने निर्णय किया कि लाभों में से बोनस का वितरण किया जावे तथा इसका उपयोग 5,000 ईक्विटी अंशों को पूर्ण प्रदत्त बनाने मे किया जावे। इसका अर्थ यह हुआ कि 5,000 ईक्विटी अंशों पर जो 2·50 रु० (प्रति अंश) अब तक नहीं मांगा गया, वह अब कभी भी नहीं मांगा जायेगा। इससे वर्तमान अंशधारियों का मांग के भुगतान सम्बन्धी दायित्व समाप्त हो गया। इसमें लाभों के कुछ भाग को स्थायी रूप से कम्पनी की अभिदत्त पूंजी (Subscribed Capital) में परिवर्तित कर लिया जाता है। अतः इसे हम लाभों का पूंजीकरण (Capitalisation of Profits) कहते हैं। कम्पनी अधिनियम की धारा 205 (3) के अनुसार भी इस प्रकार के बोनस वितरण को 'लाभों का पूंजीकरण' माना गया है।

बोनस का भुगतान नये पूर्ण प्रदत्त अंशों का मुफ्त निर्गमन करके भी किया जा सकता है। ये नये अंश 'बोनस अंश' के नाम से जाने जाते हैं। एक कम्पनी ईक्विटी अथवा अधिमान अंशों को बोनस अंश के रूप में निर्गमित कर सकती है। ऋण-पत्रों को बोनस के रूप में निर्गमित नहीं किया जा सकता। बोनस अंश केवल लाभांश को निश्चित न रखे हुए ईक्विटी अंशधारियों को ही निर्गमित किये जाते हैं। बोनस अंशों के निर्गमन से पहले प्रत्येक कम्पनी को पूंजी निर्गमन नियंत्रक (Controller of Capital Issues) की आज्ञा लेनी पड़ती है। उक्त बोनस अंशों को पूर्ण प्रदत्त अंशों (Fully paid up shares) के रूप में ही निर्गमित किया जा सकता है। [धारा 205 (3)]

बोनस अंशों के निर्गमन के कारण कम्पनी के संचयों व लाभों का उतना भाग, जितने के लिये नये अंश मुफ्त निर्गमित किये गये हैं, स्थायी रूप से कम्पनी की अभिदत्त पूंजी (Subscribed Capital) बन जाता है, अतः बोनस भुगतान की इस प्रकार की विधि को भी लाभों का पूंजीकरण (Capitalisation of Profits) कहते हैं। इस प्रकार लाभों का पूंजीकरण (Capitalisation of Profits) दो प्रकार से हो सकता है*:—

*No dividend shall be payable except in cash, provided that nothing in the sub-section shall be deemed to prohibit the capitalisation of profits or reserves of a company for the purpose of issuing fully paid up bonus shares or paying up any amount for the time being unpaid on any shares held by the members of the company. (Section 205 (3) of Indian Companies Act, 1956)

(i) विना बोनस अंश निर्गमित किये लाभों का पूंजीकरण (Capitalisation of Profits without Issue of Bonus Shares)—जबकि अंशतः प्रदत्त अंशों को पूर्ण प्रदत्त अंशों के बनाने में लाभों का उपयोग किया गया हो।

(ii) बोनस अंशों का निर्गमन करके लाभों का पूंजीकरण (Capitalisation of Profits by Issue of Bonus Shares)—जबकि नये अंश मुफ्त निर्गमित करने में लाभों का उपयोग किया गया हो।

पहले कुछ कम्पनियां कभी-कभी लाभांश का या बोनस का भुगतान नकद में या अपने स्वयं के अंशों में नहीं करती थी बल्कि दूसरी कम्पनियों से जो अंश बोनस के रूप में मिलते थे, उन्हें अपने अंशधारियों को बांट देती थी। उदाहरणार्थ, अ कम्पनी ने ब कम्पनी में 5,000 अंश (100 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त) विनियोग के रूप में खरीद रखे हैं। सन् 1954 में ब कम्पनी ने प्रत्येक 5 अंशों के धारक को एक अंश के हिसाब से बोनस अंश वितरित किये। परिणामस्वरूप अ कम्पनी को भी ब कम्पनी के 1,000 अंश बोनस अंश के रूप में मिले। सन् 1955 में अ कम्पनी ने अपने अंशधारियों को इन 1,000 अंशों को जो उसे ब कम्पनी से मिले थे, बोनस अंशों के रूप में बांट दिया। इससे अ कम्पनी के अंशधारियों को बोनस अंश तो मिल गये किन्तु अ कम्पनी को अभिदत्त पूंजी में जरा भी वृद्धि नहीं हुई। अतः इसे 'लाभों का पूंजीकरण किये बिना बोनस अंशों का निर्गमन' (Issue of Bonus Shares without Capitalisation of Profits) कहते हैं। कुछ लेखापाल इसे 'अंश लाभांश' (Scrip Dividend) भी कहते हैं।

कम्पनी (संशोधन) अधिनियम, 1960 के 28 दिसम्बर, 1960 से लागू होने के बाद लाभांशों का भुगतान नकद में ही किया जा सकता है, अतः अन्य कम्पनियों के अंशों को बोनस के रूप में नहीं बाँटा जा सकता।

कैपिटल बोनस से लाभ—

(i) कम्पनी अंशधारियों को लाभ बांट कर भी अपने तरल साधन कायम रख सकती है।

(ii) अंशधारी यदि नकद रोकड़ चाहें तो वे उन अंशों को बाजार में बेचकर इसे प्राप्त कर सकते हैं।

(iii) इसके द्वारा कम्पनी की अंश पूंजी एवं सम्पत्तियों के अन्तर को कम किया जा सकता है।

(iv) इसके द्वारा अंशधारियों को भविष्य में अधिक लाभ मिल जाता है जबकि लाभांश की दर में कोई वृद्धि नहीं करनी पड़ती। इससे मजदूरों में असन्तोष नहीं फैलने पाता।

(v) कम्पनी का चिट्ठा अधिक सन्तुलित रूप प्रस्तुत करता है।

कपिटल बोनस से हानियां

(i) यदि भविष्य में कम्पनी के लाभ नहीं बढ़ते तो कम्पनी के लिए लाभांश की वर्तमान दर को कायम रखना कठिन हो जाता है।

(ii) बोनस अंशों के कारण कम्पनी के अंशों में सट्टे को बढ़ावा मिल सकता है।

(iii) यदि कम्पनी अपनी लाभांश की दर कायम न रख सकी तो इसकी प्रतिष्ठा गिर जावेगी।

बोनस वितरण प्रक्रिया (Procedure for Bonus distribution):—

सर्व प्रथम संचालक मण्डल यह निर्णय करता है कि बोनस वितरित किया जावे। इस आशय का एक प्रस्ताव संचालक मण्डल की सभा द्वारा पास किया जाता है जिसमें बोनस की राशि, किन मदों से बोनस की राशि ली जावेगी तथा बोनस का भुगतान किस विधि से किन अंशधारियों को किया जावेगा, आदि बातें स्पष्ट कर दी जाती हैं। उक्त प्रस्ताव द्वारा संचालक मण्डल कम्पनी की साधारण सभा (General Meeting) को बोनस वितरण करने की सिफारिश करता है। कम्पनी की साधारण सभा में संचालक मंडल के प्रस्ताव को पुष्टि की जाती है तथा केन्द्रीय सरकार की अनुमति ली जाती है। वैधानिक आवश्यकताएं पूरी हो जाने पर बोनस घोषित करने की सूचना विज्ञापित कर दी जाती है। बोनस सूचियां (Bonus Schedules) बनाई जाती हैं जो इस बात का स्पष्ट संकेत करती हैं कि किस-किस अंशधारी को कितना बोनस के रूप में देय है।

बोनस का नकद भुगतान करने पर बोनस अधिपत्र (Bonus warrant) भेज दिये जाते हैं जिसके साथ बोनस की राशि का चैक नत्थी होता है। यदि अंशतः प्रदत्त अंशों को पूर्ण प्रदत्त अंश बनाने में बोनस का उपयोग किया जाता है तो साधारण सभा के प्रस्ताव में ही यह स्पष्ट कर दिया जाता है कि मांग की कितनी राशि का समायोजन किया जायेगा। अंशधारियों को तत्सम्बन्धी सूचना भेज दी जाती है तथा सदस्य रजिस्टर में प्रविष्टियां कर दी जाती हैं। बोनस का वितरण यदि नये अंशों को निर्गमित करके किया गया है तो साधारण सभा के प्रस्ताव के आधार पर बोनस सूचियों के अनुसार सम्बन्धित अंशधारियों को बंटन-पत्र भेज दिये जाते हैं तथा सदस्य रजिस्टर में प्रविष्टियां कर ली जाती हैं।

बोनस वितरण सम्बन्धी लेखा प्रविष्टियां (Accounting Entries) :—

(i) जब संचालक मण्डल चालू वर्ष के लाभों में से बोनस वितरण की सिफारिश करते हैं :—

Profit & Loss Appropriation a/c Dr.
To Proposed Bonus to Shareholders a/c
(Bonus to shareholders proposed.)

प्रस्तावित बोनस की रकम कम्पनी के चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर 'चालू दायित्व एवं प्रावधान' (Current liabilities & Provisions) शीर्षक के अन्तर्गत ब भाग में दिखाये जावेंगे। यदि संचालक मण्डल गत वर्षों के संचयों में से बोनस वितरण की सिफारिश करते हैं तो उक्त प्रविष्टि की आवश्यकता नहीं है। ऐसी परिस्थिति में साधारण सभा के प्रस्ताव पास करने पर ही प्रविष्टि की जावेगी जो आगे बतलाई गई है। यदि आंशिक रूप से गत वर्ष के संचयों में से तथा आंशिक रूप से चालू वर्ष के लाभों में से बोनस वितरण की सिफारिश की गई है तो चालू वर्ष के लाभों में से किये जाने वाले बोनस वितरण के आंशिक भाग के लिए ही उक्त प्रविष्टि की जावेगी।

(iii) जब कम्पनी की साधारण सभा में प्रस्ताव पास हो जाता है:—

(अ) यदि संचालकों ने चालू वर्ष के लाभों में से बोनस वितरण की सिफारिश की हो तब

प्रस्ताव सम्बन्धी प्रविष्टि उस समय की जा चुकी थी—

Proposed Bonus to Shareholders a/c Dr.
To Bonus to Shareholders a/c
(Balance of Proposed Bonus to Shareholders a/c transferred on declaration.)

(ब) यदि संचालकों ने गत वर्षों के संचयों में से बोनस वितरण की सिफारिश की थी—

(particular) Reserve or Fund a/c Dr.
To Bonus to Shareholders a/c
(Bonus declared out of.........reserve or fund.)

(iii) जब बोनस का भुगतान किया जावे—

(अ) नकद रूप में

Bonus to Shareholders a/c Dr.
To Bank a/c
(Bonus paid in cash.)

सामान्यतया बोनस का नकद भुगतान करने के लिये बैंक में एक अलग खाता खोला जाता है तथा उस खाते में से अंशधारियों को भुगतान किया जाता है। वर्ष के अन्त में 'न मांगे गये बोनस' (Unclaimed Bonus) को चिट्ठे के दायित्व पक्ष की ओर दिखलाया जावेगा।

(ब) अंशतः प्रदत्त अंशों को पूर्ण प्रदत्त अंश बनाने में—

Share Call a/c Dr.
To Share Capital a/c
(Share call money due @ Rs....per share on...shares.)

Bonus to Shareholders a/c Dr.
To Share Call a/c
(Bonus money applied towards share call.)

(स) नये पूर्ण प्रदत्त अंशों को मुफ्त निर्गमित करने में—

Bonus to Shareholders a/c Dr.
To Share Capital a/c (If issued at par)
(Bonus shares issued at par.)

Bonus to Shareholders a/c Dr.
To Share Capital (If issued at premium)
To Share Premium a/c
(Bonus shares issued at premium.)

Illustration 44

The Balance Sheet of X Ltd. on 31st March, 1968 was as follows. (31 मार्च 1968 को एक्स लि० का चिट्ठा निम्न प्रकार था):—

	Rs.		Rs.
Share Capital :			
5,000 Equity Shares of		Sundry Assets	7,75,000
Rs. 100 each fully paid up	5,00,000		
Share Premium	50,000		
General Reserve	1,40,000		
P. & L. a/c	40,000		
Sundry Creditors	45,000		
	7,75,000		7,75,000

The directors recommended that fully paid up bonus shares may be issued at the rate of three equity shares for every 10 equity shares held and for this purpose, full share premium. and the balance out of general reserve may be utilised. The company, in its annual general meeting held on 18th July, 1968, approved the recommendation of the directors.

Pass journal entries in the books of the company and prepare the amended Balance Sheet.

(संचालकों ने सिफारिश की कि प्रति 10 ईक्विटी अंशों के धारक को 3 ईक्विटी अंशों के हिसाब से पूर्ण प्रदत्त अंश निर्गमित किये जावें तथा इस कार्य के लिये सम्पूर्ण अंश प्रीमियम तथा शेष राशि सामान्य संचय से उपयोग में ली जावे । 18 जुलाई, 1968 को वार्षिक साधारण सभा में कम्पनी ने संचालकों की सिफारिश की पुष्टि कर दी।

कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिये तथा संशोधित चिट्ठा बनाइये।)

Solution :

Journal of X Ltd.

1968			Rs.	Rs
July 18	Share Premium a/c Dr. General Reserve a/c Dr. To Bonus to Shareholders a/c (Bonus declared at the rate of three equity shares for every 10 equity shares held.)		50,000 1,00,000	1,50,000
,,	Bonus to Shareholders a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Bonus shares issued at par.)		1,50,000	1,50,000

Amended Balance Sheet of X Ltd. as on 18th July, 1968.

	Rs.		Rs.
Share Capital :—		Sundry Assets	7,75,000
6,500 Equity Shares of Rs. 100 each fully paid out of which 1,500 shares were issued as bonus shares	6,50,000		
General Reserve	40,000		
Profit & Loss a/c	40,000		
Sundry Creditors	45,000		
	7,75,000		7,75,000

स्पष्टीकरण:—31 मार्च, 1968 को चिट्ठे के योग तथा 18 जुलाई, 1968 को संशोधित चिट्ठे के योग में कोई अन्तर नहीं है। दोनों का योग 7,75,000 रु० है। अन्तर केवल इतना है कि अंश प्रीमियम के 50,000 रु० तथा सामान्य संचय के 1,00,000 रु० कम होकर अंश पूंजी की मद में 1,50,000 रु० की वृद्धि हो गई है अर्थात् संचयों का स्थान पूंजी ने ले लिया है। इसको संचयों अथवा लाभों के पूंजीकरण (Capitalisation of Profits or Reserves) कहते हैं।

Illustration 45

Y Ltd. had an issued share capital of Rs. 10,00,000 in equity shares of Rs. 10 each of which Rs. 7·50 has been called up and paid. On the recommendations of the Board of Directors, the company passed the following resolutions in its annual general meeting held on 15th June, 1968 :—

(i) That a capital bonus be distributed out of the profits for the year ending 31st December, 1967 to make the existing equity shares fully paid up.

(ii) That 25,000 new equity shares be issued for cash at a premium of 10 per cent on the basis of one equity share for every four existing equity shares held.

The new shares were all fully subscribed and paid for upto 30th June, 1968.

Give necessary journal entries in the books of the company.

वाई लिमिटेड की निर्गमित अंश पूंजी इस प्रकार थी—10 रु० वाले ईक्विटी अंशों में विभाजित 10,00,000 रु० जिस में से 7·50 रु० (प्रति अंश) मांगे तथा भुगतान किये जा चुके थे। संचालक मण्डल की सिफारिश पर, 15 जून, 1968 को कम्पनी ने वार्षिक साधारण सभा में निम्न प्रस्ताव पास किये :—

(i) कि वर्तमान ईक्विटी अंशों को पूर्ण प्रदत्त बनाने के लिये 31 दिसम्बर, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लाभों में से पूंजीगत बोनस का वितरण किया जावे;

(ii) कि 10% प्रीमियम पर 25,000 नये ईक्विटी अंश नकद प्रतिफल के बदले में निर्गमित किये जावें तथा ये अंश वर्तमान 4 ईक्विटी अंशों के धारक को एक ईक्विटी अंश के हिसाब से दिये जावें।

नये निर्गमन के लिए 30 जून, 1968 तक प्रार्थना पत्र आगये तथा सम्पूर्ण भुगतान हो गया। कम्पनी की पुस्तकों में आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां कीजिए।

Solution :

Journal of Y Ltd.

			Rs.	Rs.
1967 Dec. 31	Profit and Loss Appropriation a/c Dr. To Proposed Bonus to Shareholders a/c (Bonus to shareholders out of current year's profits proposed.)		2,50,000	2,50,000
1968 June 15	Proposed Bonus to Shareholders a/c Dr. To Bonus to Shareholders a/c (Balance of proposed bonus to shareholders a/c transferred on declaration.)		2,50,000	2,50,000
,,	Equity Share Final Call a/c Dr. To Equity Share Capital a/c (Final call of Rs. 2·50 on 1,00.000 equity shares.)		2,50,000	2,50,000
,,	Bonus to Shareholders a/c Dr. To Equity Share Final Call a/c (Bonus applied towards payment of final call by shareholders.)		2,50,000	2,50,000
June 30	Bank a/c Dr. To Equity Share Application a/c (Application money received on 25,000 equity shares.)		2,75,000	2,75,000
Date of Allotment	Equity Share Application a/c Dr. To Equity Share Capital a/c To Share Premium a/c (Balane of Share Application a/c transferred on allotment.)		2,75,000	2,50.000 25,000

नोट :—यह मान लिया गया है कि कम्पनी की अधिकृत पूंजी इतनी अधिक थी कि नये अंशों का निर्गमन किया जा सकता था ।

Illustration 46.

The following items appeared in the Balance Sheet of Z Ltd. on 31st March, 1968. (31 मार्च, 1968 को जैड लिमिटेड के चिट्ठे में निम्नलिखित मदें थीं):—

Authorised Share Capital—	50,000 shares of Rs. 10 each
Issued & Subscribed Share Capital—	40,000 shares of Rs. 10 each of which Rs. 9 per share has been called up and paid
General Reserve	Rs. 2,40,000
Profit & Loss Account (Cr.)	Rs. 16,325
Proposed Dividend	Rs. 36,000

At the company's annual general meeting held on 10th August, 1968, the resolutions were passed for the following :—

(i) To declare the dividend proposed by directors.

(ii) To declare a capital bonus of Rs. 5 per share as recommended by the directors to be satisfied partly by making the existing shares fully paid and partly by issuing fully paid bonus shares at a premium of 60 per cent.

The resolutions were carried into effect on 30th August, 1968. A separ te 'Dividend Bank Account' was opened with State Bank of India and all the shareholders claimed the amount of dividends from the bank up to 15th September, 1968.

Pass Journal entries to record these transactions in the books of the company and show how the items will be shown on the liabilities side of the Balance Sheet.

(10 अगस्त, 1968 को कम्पनी की वार्षिक साधारण सभा में निम्नलिखित के लिये प्रस्ताव पास किये गये :—

(i) संचालकों द्वारा प्रस्तावित लाभांश की घोषणा करने के लिए।

(ii) संचालकों की सिफारिश पर 5 रु० प्रति अंश के हिसाब से पूंजीगत वोनस की घोषणा करने के लिए। उक्त बोनस में से आंशिक रूप से वर्तमान अंशों को पूर्ण प्रदत्त बनाया जावेगा तथा आंशिक रूप से 60% प्रीमियम पर पूर्ण प्रदत्त वोनस अंश निर्गमित किये जावेंगे।

30 अगस्त, 1968 को प्रस्तावों को प्रभावी बनाया गया। स्टेट बैंक आफ इण्डिया में एक अलग 'लाभांश बैंक खाता' खोला गया तथा 15 सितम्बर, 1968 तक समस्त अंशधारियों ने बैंक से लाभांश का भुगतान मांग लिया।

उपरोक्त सौदों को दर्ज करने के लिए कम्पनी की पुस्तकों में जर्नल प्रविष्टियां कीजिए तथा बतलाइये कि कम्पनी के चिट्ठे में दायित्व पक्ष की ओर मदों को किस प्रकार दिखाया जावेगा ?

Solution :

Journal of Z Ltd.

1968			Rs.	Rs.
Aug. 10	Proposed Dividend a/c Dr. To Dividend a/c (Balance of proposed dividend a/c transferred on declaration.)		36,000	36,000
"	General Reserve a/c Dr. To Bonus to Shareholders a/c (Capital Bonus declared at Rs. 5 per share on 40,000 shares.)		2,00,000	2,00,000

Journal Contd.

1968			Rs.	Rs.
Aug. 30	Share Final Call a/c Dr. To Share Capital a/c (Final call of Re. 1 per share made on 40,000 shares.)		40,000	40,000
Aug. 30	Bonus to Shareholders a/c Dr. To Share Final Call a/c To Share Capital a/c To Share Premium a/c (Capital bonus applied partly towards payment of final call and partly towards issuing bonus shares at a premium of 60 per cent.)		2,00,000	40,000 1,00,000 60,060
Aug. 30	Dividend Bank a/c Dr. To Bank a/c (Dividend Bank a/c opened with State Bank of India for payment of dividends.)		36,000	36,000
Sept. 15	Dividend a/c Dr. To Dividend Bank a/c (Dividends paid in full by State Bank of India out of Dividend Bank Account.)		36,000	36,000

Balance Sheet of Z Ltd. as on............

	Rs.		Rs.
Share Capital :			
Authorised :			
50,000 Shares of Rs. 10 each	5,00,000		
Issued and Subscribed :			
40,000 Shares of Rs. 10 each fully paid of which Rs. 9 per share was received in cash and Re. 1 per share was adjusted against capital bonus	4,00,000		
10,000 Shares of Rs. 10 each fully paid issued as bonus shares	1,00,000		
Reserve and Surplus :			
Share Premium Account	60,000		
General Reserve	40,000		
Profit and Loss Account	16,325		

कम्पनियों के वार्षिक खाते (Annual Accounts of Companies)

अन्य व्यवसाय-गृहों की भाँति कम्पनियों को भी वार्षिक खाते तैयार करने पड़ते हैं। कम्पनी अधिनियम, 1956 की धारा 210 व 211 कम्पनियों के वार्षिक खातों सम्बन्धी प्रावधानों पर प्रकाश

डालती है। कम्पनी के वार्षिक खातों में चिट्ठा (Balance Sheet) व लाभ-हानि खाता (Profit & Loss Account) सम्मिलित हैं। कम्पनी अधिनियम, 1956 के साथ संलग्न अनुसूची VI के भाग प्रथम में दिये गये आकार (Form) में अथवा उससे मिलते-जुलते आकार में कम्पनी का चिट्ठा तैयार किया जाना चाहिये तथा उसी अनुसूची के भाग द्वितीय में दी गई आवश्यकताओं का पालन करते हुए कम्पनी का लाभ-हानि खाता बनाना चाहिए। अन्य कम्पनियों जैसे बैंक, बीमा, बिजली, इत्यादि को अलग-अलग विधानों के अंतर्गत दिये हुए आकार में चिट्ठे तैयार करने पड़ते हैं।

सदस्यों के सामने वार्षिक खाते रखना

(Laying Annual Accounts before Annual General Meeting)

प्रत्येक वार्षिक साधारण सभा में कम्पनी के संचालक मंडल को कम्पनी के अंशधारियों अथवा सदस्यों के सामने निम्न प्रपत्र प्रस्तुत करने पड़ते हैं :—

(i) सम्बन्धित वित्तीय वर्ष (Financial year) की समाप्ति के दिन का चिट्ठा; तथा

(ii) उस वित्तीय वर्ष के लिये तैयार किया गया लाभ-हानि खाता।

उपरोक्त चिट्ठा एवं लाभ-हानि खाता किसी योग्य अंकेक्षक द्वारा अंकेक्षित किया हुआ होना चाहिये तथा अंकेक्षक की रिपोर्ट भी साथ में संलग्न होनी चाहिए।

ये वार्षिक खाते आर्थिक वर्ष के सम्बन्ध में बनाये जाते हैं जो कि बारह महीने से कम या अधिक का हो सकता है लेकिन 15 महीने से अधिक का नहीं होना चाहिए। रजिस्ट्रार इसकी अवधि 18 माह तक बढ़ा सकता है। कम्पनी के वार्षिक खाते आर्थिक वर्ष की समाप्ति के 6 माह के भीतर ही वार्षिक साधारण सभा में प्रस्तुत कर दिये जाने चाहिए। यदि रजिस्ट्रार ने कुछ समय के लिए वार्षिक साधारण सभा की अवधि बढ़ा दी है तो वार्षिक खाते प्रस्तुत करने की अवधि भी उतने समय से ही बढ़ जावेगी।

वार्षिक खातों का प्रमाणन (Authentication of Annual Accounts) :—

बैंकिंग कम्पनी का चिट्ठा व लाभ-हानि खाता तीन संचालकों व मैनेजर द्वारा प्रमाणित तथा हस्ताक्षरित होना चाहिये; किन्तु अन्य कम्पनी का चिट्ठा व लाभ-हानि खाता दो संचालकों व प्रबंध संचालक अथवा मैनेजर अथवा सचिव द्वारा प्रमाणित व हस्ताक्षरित होना चाहिये।

वार्षिक खातों का प्रकाशन (Publication of Annual Accounts) :—

कम्पनी को अपने वार्षिक खातों की एक-एक प्रति, वार्षिक साधारण सभा से कम से कम 21 दिन पहले प्रत्येक सदस्य व ऋण-पत्र धारी को भेजना आवश्यक है। चिट्ठे व लाभ-हानि खाते के अतिरिक्त अंकेक्षकों की रिपोर्ट तथा संचालकों की रिपोर्ट (Directors' Report) भी भेजा जाना अनिवार्य है। इन्हें 'प्रकाशित वार्षिक रिपोर्ट' (Published Annual Report) कहते हैं। कुछ कम्पनियां अध्यक्षीय भाषण (Chairman's Speech) भी वार्षिक रिपोर्ट में नत्थी कर देती हैं; किन्तु यह अनिवार्य नहीं है। आजकल बड़ी-बड़ी कम्पनियां अपनी वार्षिक रिपोर्टों को बहुत ही सूचनात्मक (Informative) बना देती हैं ताकि सदस्यों व ऋण-पत्र धारियों को अधिक से अधिक सूचनायें मिल सकें। रेखा-चित्र (Graphs) व आरेख (Diagrams) भी काफी संख्या में दे दिये जाते हैं जिससे साधारण ज्ञान वाले व्यक्ति को भी कम्पनी की प्रगति व वित्तीय स्थिति का सही ज्ञान हो सके।

वार्षिक खातों पर विचार विमर्श (Consideration of Annual Accounts) :—

कम्पनी के वार्षिक खाते, जिनकी एक प्रति सदस्यों को भेजी जा चुकी है, सदस्यों के सम्मुख वार्षिक साधारण सभा में रखे जाते हैं और सदस्य उन पर विचार विमर्श करते हैं। विचार-विमर्श के पश्चात् या तो उन्हें स्वीकार कर लिया जाता है अथवा कारण सहित उन्हें अस्वीकार कर दिया जाता है।

वार्षिक खातों का फाइल किया जाना (Filing of Annual Accounts) :—

जब वार्षिक खातों को वार्षिक साधारण सभा में रखा जा चुके तो प्रत्येक कम्पनी को, उक्त वार्षिक साधारण सभा के 30 दिन के भीतर वार्षिक खातों की तीन प्रतियां रजिस्ट्रार के पास फाइल करनी होंगी। यदि वार्षिक साधारण सभा में खातों को अस्वीकार कर दिया गया है तो, वार्षिक खातों के साथ अस्वीकृति के कारणों एवं तथ्यों (Reasons and Facts) को देते हुए एक विवरण भी नत्थी किया जायेगा। रजिस्ट्रार चाहे तो कोई भी अन्य सूचना या स्पष्टीकरण मांग सकता है और कम्पनी को उक्त सूचना तथा स्पष्टीकरण को रजिस्ट्रार को भेजना चाहिये।

वार्षिक खातों का स्वरूप एवं विवरण (Form and Contents of Annual Accounts) :—

कम्पनी अधिनियम की धारा 211 के अन्तर्गत कम्पनी के वार्षिक खाते कम्पनी अधिनियम में दी गई अनुसूची VI के अनुसार होने चाहिये। इस अनुसूची के तीन भाग हैं :—

(i) प्रथम भाग चिट्ठे का रूप प्रस्तुत करता है। कम्पनी का चिट्ठा इसी रूप में होना चाहिये या इससे मिलता-जुलता रूप, परिस्थितियों के अनुसार, अपनाया जा सकता है। यदि किसी कम्पनी के चिट्ठे का रूप उस पर लागू होने वाले अधिनियम के अन्तर्गत दिया गया है तो उस कम्पनी पर यह फार्म लागू नहीं होगा, जैसे एक बैंकिंग कम्पनी, बीमा कम्पनी इत्यादि।

(ii) दूसरे भाग में लाभ-हानि खाते के सम्बन्ध में आवश्यक बातें दी गई हैं। लाभ-हानि खाता इन सब बातों का ध्यान रखकर बनाया जाना चाहिए।

(iii) तीसरे भाग में कुछ विशेष शब्दों (जैसे आयोजन, कोष आदि) का स्पष्टीकरण किया गया है।

संदर्भ हेतु, कम्पनी अधिनियम की अनुसूची VI का प्रथम भाग यहां प्रस्तुत किया जा रहा है तथा द्वितीय व तृतीय भाग का आगे संक्षेप में वर्णन कर दिया गया है।

SCHEDULE VI
(Section 211)

PART I
FORM OF BALANCE SHEET

Balance Sheet of............(Here enter the name of the company)

As at.........(Here enter the date as at which the balance-sheet is made out)

Instructions in accordance with which Liabilities should be made out	Liabilities: Figures for the previous year	Liabilities: Figures for the current year	Assets: Figures for the previous year	Assets: Figures for the current year	Instructions in accordance with which assets should be made out
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	
Terms of redemption or conversion (if any) of any Redeemable Preference Capital to be stated, together with earliest date of redemption or conversion. Particulars of any option on unissued share capital to be specified. 2 Particulars of the different classes of preference shares to be given. 3 Specify the source from which bonus shares are issued	I SHARE CAPITAL : Authorised......shares of Rs............each Issued 1 (distinguishing between the various classes of capital and stating the particulars specified below, in respect of each class)...... shares of Rs.......each. Subscribed 2 (distinguishing between the various classes of capital and stating the particulars specified below in respect of each class)... shares of Rs.......each.		I FIXED ASSETS 1 : Distinguishing as far as possible between expenditure upon (a) goodwill, (b) land, (c) building, (d) leaseholds (e) railway sidings, (f) plant and machinery, (g) furniture and fittings, (h) development of property, (i) patents, trade marks and designs (j) livestock and (k) vehicles, etc.		1 Under each head the original cost and the additions thereto and deductions therefrom during the year, and the total depreciation written off or provided up to the end of the year to be stated. In every case where original cost cannot be ascertained, without unreasonable expense or delay, the valuation shown by the books shall be given. For the purpose of this paragraph, such valuation shall be the net amount

e.g., capitalisation of profits or reserves or from Share Premium Account

4 Any capital profits on reissue of forfeited shares should be transferred to Capital Reserve.

5 Additions and deductions since last balance-sheet to be shown, under each of the specified heads.

The word "fund" in relation to any "Reserve" should be used only where such Reserve is specifically represented by ear marked investments.

5 Loans from Directors, and Manager should be shown separately.

Interest accrued and due on Secured Loans should be included under the appropriate sub-heads under the head "Secured Loans"

Rs. called up.

Of the above shares. shares are allotted as fully paid up pursuant to a contract without payments being received in cash. Of the above shares,...shares are allotted as fully paid up by way of bonus shares.3

Less : Calls unpaid :

(i) By directors

(ii) By others

Add Forfeited shares (amount originally paid up)4

II Reserves and Surplus5

(i) Capital Reserves.

(ii) Capital Redemption Reserve.

(iii) Share Premium Account.

(iv) Other Reserves specifying the nature of each reserve and the amount in respect thereof.

II Investments :2

Showing nature of investments and mode of valuation, for example, cost or market value and distinguishing between—

(i) Investments in Govt. or Trust Securities.

(ii) Investments in shares, debentures or bonds (showing separately shares fully paid up and also partly paid up and also distinguishing the different classes of shares and showing also in similar details investments in shares, debentures or bonus of subsidiary companies.)

(iii) Immovable Properties.

III CURRENT ASSETS, LOANS AND ADVANCES :

Current Assets–

(i) Interest accrued on Investments.

at which an asset stood in company's books at the commencement of this Act after deduction of the amounts previously provided or written off for depreciation or diminution in value, and where any such asset is sold, the amount of sale proceeds shall be shown as deduction.

Where sums have been written off on a reduction of capital or a revaluation of assets, every balance sheet, (after the first balance sheet) subsequent to the reduction or revaluation shall show the balanced figures and with the date of reduction in place of the original cost. Each balance sheet for the first five years subsequent to the date of the reduction shall show also the amount of the reduction made.

Similarly, where sums have been added by writing up

The nature of the security to be specified in each case. Where loans have been guaranteed by manager and/or directors, a mention thereof shall also be made and also aggregate amount of such loans under each head.

Terms of redemption or conversion (if any) of debentures issued to be stated together with earliest date of redemption or conversion.

Loans from Directors, Manager should be shown separately.

Interest accrued and due on unsecured loans should be included under the appropriate sub heads under the head "Unsecured Loans."

Where loans have been guaranteed by managers and/or directors, a mention

Less : Debit balance in profit and loss account (if any).

(v) Surplus, i.e., balance in profit and loss account after providing for proposed allocations namely, Dividend, Bonus, or Reserves.

(vi) Proposed Additions to Reserves.

(vii) Sinking Funds.

III SECURED LOANS[6]

(i) **Debentures**[7]

(ii) Loans and Advances from Banks.

(iii) Loans and Advances from subsidiaries.

(iv) Other Loans and Advances.

IV UNSECURED LOANS :[8]

(i) Fixed Deposits.

(ii) Stores and Spare Parts.

(iii) Loose Tools.

(iv) Stock-in trade.[3]

(v) Works-in Progress.[4]

(vi) Sundry Debtors.[5]

(a) Debts outstanding for a period exceeding six months

(b) Other debts.
Less Provisions.

(vii) Cash and bank balance[6]

(B) Loans and Advances.[7]

(viii) Advances and Loans to Subsidiaries.

(ix) Bill of Exchange.

(x) Advance recoverable in cash or in kind or for value to be received, e. g., Rates, Taxes, Insurance etc.

the assets, every balance sheet subsequent to such writing up shall show the increased figures with the date of the increase in place of the original cost. Each Balance Sheet for the first five years subsequent to the date of writing up shall also show the amount of increase made.

2 Aggregate amount of company's quoted investments and also the market value thereof shall be shown,
Aggregate amount of company's unquoted investments shall also be shown.

3 Mode of valuation of stock shall be stated and the amount in respect of raw materials shall also be stated separately where practicable.

4 Mode of valuation of work-in-progress shall be stated.

thereof shall also be made and also the aggregate amount of such loans under each head.

9 The period for which the dividends are in arrear or if there is more than one class of shares, the dividend on each such class are in arrear, shall be stated.

The amount shall be stated before deduction of income tax, except that in the case of tax-free dividends the amount shall be shown free of income tax and the fact that it is so shown shall be stated.

10 The amount of any guarantee given by the company on behalf of directors or other officers of the company shall be stated and where practicable, the general nature and amount of each such contingent liability, if material, shall also be specified.

(ii) Loans and Advances from subsidiaries

(iii) Short term Loans and Advances :

(a) From Bank.
(b) From others.

(iv) Other Loans and Advances

(a) From Banks.
(b) From others.

V CURRENT LIABILITIES AND PROVISIONS :

A. Current Liabilities.

(i) Acceptances.

(ii) Sundry Creditors.

(iii) Subsidiary Companies.

(iv) Advance payments and unexpired discounts for the portion for which value has still to be given, e.g., in the case of the following classes of companies :—

(xi) Balances with Customs, Port Trust, etc. (where payable on demand).

IV MISCELLANEOUS EXPENDITURE

(to the extent not written off or adjusted):

(i) Preliminary expenses.

(ii) Expenses including commission or brokerage on underwriting of subscription of shares or debentures.

(iii) Discount allowed on the issue of shares or debentures.

(iv) Interest paid out of capital during construction (also stating the rate of interest).

(v) Development expenditure not adjusted.

(vi) Other items (specifying nature).

5 In regard to Sundry Debtors particulars to be given separately of—(a) debts considered good and in respect of which the company is fully secured; and (b) debts considered good for which the company holds no security other than the debtor's personal security; and (c) debts considered doubtful or bad.

Debts due by directors or other officers of the company or any of them either severally or jointly with any other person or debts due by firms or private companies respectively in which any director is a partner or a director or a member to be separately stated.

Debts due from other companies under the same management to be disclosed with the names of the companies (vide section 370.)

Newspaper, Fire Insurance, Theatres, Clubs, Banking, Steamship companies etc. (v) Unclaimed Dividends (vi) Other Liabilities (if any) (vii) Interest accrued but not due on loans. **B. Provisions** (viii) Provision for Taxation. (ix) Proposed Dividends. (x) For Cotingencies (xi) For Provident Fund Scheme, (xii) For insurance, pension and similar staff benefit schemes, (xiii) Other provisions. A foot-note to the balance-sheet may be added to show separately :— (i) Claims against the debts.	**V Profit and Loss Accounts**	The maximum amount due by the directors or other officers of the company at any time during the year to be shown by way of a note. The provision to be shown under this head should not exceed the amount of debts stated to be considered doubtful or bad and any surplus of such provision if already created, should be shown at every closing under "Reserves and Surplus" (in the liabilities side) under a separate sub-head "Reserve for doubtful or Bad Debts". 6 The balance lying with bankers on current accounts, call accounts and deposits accounts shall be shown separately; 7 The above instructions regarding 'Sundry Debtors"

(ii) Uncalled liability on shares partly paid. (iii) Arrears of fixed cumulative dividends.[9] (iv) Estimated amount of contracts remaining to be executed on capital account and not provided for. (v) Other money for which the company is contingently liable.[10]		apply to Loans and Advances" also. 8 Show here the debit balance of profit and loss account carried forward after deduction of the uncommitted reserves, if any.

NOTES

General instructions for preparation of balance-sheet—(a) The information required to be given under any of the items or sub-items in this form, if it cannot be conveniently included in the balance-sheet itself, shall be furnished in a separate schedule or schedules to be annexed to and to form part of the balance-sheet. This is recommended when items are numerous.

(b) Paise can also be given in addition to Rupees, if desired.

(c) In the case of subsidiary companies, etc., the number of shares held by the holding company as well as by the ultimate holding company and its subsidiaries must be separately stated.

The auditor is not required to certify the correctness of such shareholdings as certified by the management.

(cc) The item "Share Premium Account" shall include full details of its utilisation in the manner provided in section 78.

(d) Short Term Loans will include those which are due for not more than one year as at the date of the balance-sheet.

(e) Depreciation written off or provided shall be allocated under the different asset heads and deducted in arriving at the value of Fixed Assets.

(f) Dividends declared by subsidiary companies after the date of the balance-sheet cannot be included unless they are in respect of period which closed on or before the date of the balance-sheet.

(g) Any reference to benefits expected from contracts to the extent not executed shall not be made in the balance-sheet but shall be made in the Board's report.

(h) The debit balance in the Profit and Loss Account shall be set off against the General Reserve, if any.

(i) As regards Loans and Advances, amounts due from other companies under the same management should also be given with the names of the companies *vide* section 370; the maximum amount due from every one of these at any time during the year must be shown.

(j) Particulars of any redeemed debentures which the company has power to issue should be given.

(k) Where any of the company's debentures are held by a nominee or a trustee for the company, the nominal amount of the debentures and the amount at which they are stated in the books of the company shall be stated.

(l) A statement of investments (whether shown under "Investments" or under 'Current Assets' as stock-in-trade) separately classifying trade investments and other investments should be annexed to the balance-sheet showing the names of the bodies corporate, indicating separately the names of the bodies corporate in the same

group in whose shares or debentures investments have been made (including all investments whether existing or not, made subsequent to the date as at which the previous balance-sheet was made out) and the nature and extent of the investments so made in each such body corporate: provided that in the case of an investment company, that is to say, a company whose principal business is the acquisition of shares, stock, debentures or other securities, it shall be sufficient if the statement shows only the investments existing on the date as at which the balance-sheet has been made out.

A 'Trade Investment' means an investment by a company in the shares or debentures of another company, not being its subsidiary, for the purpose of promoting the trade or business of the first company.

(m) If in the opinion of the Board, any of the current assets have not a value on realisation in the ordinary course of business at least equal to the amount at which they are stated, the fact that the Board, is of that opinion shall be stated.

(n) Except in the case of the first balance-sheet laid before the company after the commencement of the Act, the corresponding amounts for the immediately preceding financial year for all items shown in the balance-sheet shall also be given in the balance-sheet. The requirement in this behalf shall in the case of companies preparing quarterly or halfy-early accounts, etc., relate to the balance-sheet for the corresponding date in the previous year.

(o) The amounts to be shown under Sundry Debtors shall include the amounts due in respect of goods sold or services rendered or in respect of other contractual obligations but shall not include the amounts which are in the nature of loans or advances.

(p) Current accounts with Directors and Managers whether they are in credit or debit shall be shown separately.

कम्पनी के चिट्ठे का संक्षिप्त आकार (Summarised Form of Balance Sheet) :—

कम्पनी की सम्पत्ति एवं दायित्व नीचे लिखे शीर्षकों में क्रमानुसार दिखाई जाती हैं :—

Liabilities	Assets
1. Share Capital	1. Fixed Assets
2. Reserves and Surplus	2. Investments
3. Secured Loans	3. Current Assets and Loans and Advances :
4. Unsecured Loans	(A) Current Assets
5. Current liabilities and Provisions :	(B) Loans and Advances
(A) Current liabilities	4. Miscellaneous Expenditure
(B) Provisions	5. Profit and Loss Account
Contingent liabilities	

आजकल बड़ी-बड़ी कम्पनियां अपने चिट्ठे को उपरोक्त संक्षिप्त रूप में तैयार करती हैं तथा प्रत्येक मद के अन्तर्गत दिखाई जाने वाली खुलासा विवरणों (Detailed particulars) की अलग-अलग सूचियां (Schedules) बनाकर चिट्ठे के साथ संलग्न कर देती हैं। ये सूचियां चिट्ठे के साथ संलग्न होती हैं तथा चिट्ठे का भाग समझी जाती हैं।

औद्योगिक रूप से विकसित देशों में चिट्ठे को तैयार करने का पुराना तरीका खत्म होता जा रहा है। इन देशों में कम्पनियां चिट्ठे को सम्पत्ति एवं दायित्व पक्षों के रूप में नहीं बनाती बल्कि एक विवरण (sttaement) के रूप में बनाती हैं जिससे यह ज्ञात होता है कि कम्पनी द्वारा कितनी पूंजी लगाई गई है, उसे किन-किन श्रोतों से प्राप्त किया गया है तथा उसे पूंजी का उपयोग किस प्रकार किया गया है। इस प्रकार के विवरण का एक नमूना नीचे दिया जाता है :—

Summarised Balance Sheet as on...........

Particulars		Amount	Amount
	Rs.	Rs.	Rs.
1. Sharc Capital : (as per schedule A)			
(a) Pref. Share Capital	5,00,000		
(b) Equity Share Capital	20,00,000		
		25,00,000	
2. Reserves & Surplus : (as per Schedule B)			
(a) Capital Reserves	8,00,000		
(b) Revenue Reserves	17,00,000		
		25,00,000	
Shareholders' Total Funds (i)			50,00,000
3. Long Term Borrowings : (As per Schedule C)			
(a) Secured Loans		24,00,000	
(b) Unsecured Loans		8,00,000	
Total Borrowed Funds (ii)			32,00,000
Total Capital Funds (i) & (ii)			82,00,000
Employment of Capital Funds :			
4. Fixed Assets etc. : (as per Schedule D)			
(a) Fixed Assets		58,00,000	
(b) Investments		6,00,000	
(c) Miscellaneous Capitalised Expenditure		1,00,000	
Total (iii)			65,00,000
5. Current Assets : (as per Schedule E)			
(a) Current Assets	32,00,000		
(b) Loans and Advances	8,00,000		
Total Current Assets (iv)		40,00,000	
6. Current Liabilities : (as per Schedule F)			
(a) Current Liabilities	15,00,000		
(b) Provisions	8,00,000		
Total Current Liabilities (v)		23,00,000	
Net Current Assets or Net Working Capital (iv)-(v)			17,00,000
Total Net Assets or Total Net Capital employed			82,00,000

लाभ-हानि खाता (Profit and Loss Account) :—

अनुसूची VI में चिट्ठे की भांति लाभ-हानि खाते का कोई आकार निर्धारित नहीं किया गया है बल्कि उसके द्वितीय भाग में कुछ 'आवश्यकतायें' (Requirements) दी हुई हैं जिनका ध्यान रखकर लाभ-हानि खाता बनाना चाहिये। कम्पनी का लाभ-हानि खाता इस प्रकार बनाना चाहिये कि वह एक निश्चित अवधि में कम्पनी के कार्यों का सही एवं उचित परिणाम प्रस्तुत करे। लाभ-हानि खाते में प्रत्येक महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट किया जाना चाहिये जोकि कम्पनी के आय एवं व्यय से सम्बन्ध रखता है। कम्पनी के आय-व्यय को उपयुक्त शीर्षकों के अन्तर्गत दिखाया जाना चाहिये।

अनुसूची VI को देखने से पता चलता है कि कम्पनी अधिनियम 1956 की यह अनिवार्यता नहीं है कि निर्माण खाता (Manufacturing Account), माल खाता (Trading Account), लाभ हानि खाता (Profit and Loss Account) तथा लाभ-हानि नियोजन खाता (Profit & Loss Appropriation Account) को अलग-अलग बनाया जाये। लेकिन चूंकि मदों को उपयुक्त शीर्षकों के अन्तर्गत दिखाना होता है, अतः लाभ-हानि खाते को विभागों (Sections) में तैयार किया जा सकता है तथा प्रत्येक विभाग में अलग-अलग सूचनायें दी जा सकती हैं। लाभ-हानि खाते को डेबिट व क्रेडिट पक्ष के रूप में बनाया जाता है किन्तु आजकल बड़ी-बड़ी कम्पनियां लाभ-हानि खाते को इस रूप में नहीं बनाती बल्कि विवरण पत्र (Statement) के रूप में बनाती हैं। इस विवरण पत्र में पहले बिक्री व अन्य मदों को दिखाकर उनका योग दिखाया जाता है। प्रत्येक मद की खुलासा (Details) विवरण-पत्र में नहीं दी जाती बल्कि अलग-अलग सूचियों (Schedules) में दी जाती हैं।

लाभ-हानि खाते में रकम के दो खाने (Column) होते हैं प्रत्येक मद के सामने एक खाने में गत वर्ष (Previous year) की रकमें तथा दूसरे खाने में (Current year) की रकमें लिखी जाती हैं ताकि तुलनात्मक अध्ययन किया जा सके। लाभ-हानि खाते में उन सब रकमों के खुलासा विवरण होने चाहियें जिनका भुगतान प्रबन्धकों (Managerial Personnel) तथा अंकेक्षकों को किया गया है।

यदि लेखा विधि (Method of Accounting) में परिवर्तन के कारण लाभ-हानि खातों में दिखाई गई किसी मद की रकम में महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है तो उसे भी अलग से नोट के रूप में दिखाना चाहिये। उदाहरण के लिए स्टाक मूल्यांकन की विधि में परिवर्तन करने के कारण 'प्रारम्भिक स्टॉक' (Opening Stock) की रकम में महत्वपूर्ण परिवर्तन हो सकता है। 28 दिसम्बर, 1960 के बाद समाप्त होने वाले वित्तीय वर्षों में यदि मूल्य ह्रास की राशि बकाया (Arrears) है तो उसे अलग से एक नोट के रूप में दिखाना चाहिये।

वार्षिक खाते तैयार करना (Preparation of Annual Accounts) :—

खाता बही में खुले हुए खातों के शेषों के आधार पर लाभ-हानि खाता एवं चिट्ठा तैयार किये जाते हैं। समायोजनों (Adjustments) का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। लाभ-हानि खाता बनाते समय कानूनी आदेशों का विशेष रूप से ध्यान रखना चाहिये। प्रायः कम्पनी की वार्षिक रिपोर्टों में चिट्ठा पहले तथा लाभ-हानि खाता बाद में दिया रहता है।

Illustration 47

The Alpha Manufacturing Company Limited was registered with a nominal capital of Rs. 6,00,000, in equity shares of Rs. 10 each. The following is the list of balances extracted from its books on 31st December, 1967 (दी अलफा मेन्युफेक्चरिंग कम्पनी लिमिटेड का 10 रु० वाले ईक्विटी अंशों में विभाजित 6,00,000 रु० की अंकित पूंजी से पंजीयन हुआ। उसकी पुस्तकों से 31 दिसम्बर, 1967 को बनाये गयेशे षों की सूची निम्नलिखित है) :—

	Rs,
Call in Arrears	7,500
Premises	3,00,000
Plant & Machinery	3,30,000
Interim Dividend paid on 1st August, 1967	37,500
Stock, 1st January, 1967	75,000
Fixtures	7,200
Sundry Debtors	87,000
Goodwill	25,000
Cash in hand	750
Cash at Bank	39,900
Purchases	1,85,000
Preliminary Expenses	5,000
Wages	84,865
General Expenses	16,835
Freight and Carriage	13,115
Salaries	14,500
Directors' Fees	5,725
Bad debts	2,110
Debenture Interest paid	9,000
Subscribed and fully called up Capital	4,00,000
6% Debentures	3,00,000
Profit & Loss Account (Cr. Balance)	14,500
Bills Payable	38,000
Sundry Creditors	50,000
Sales	4,15,000
General Reserve	25,000
Bad debts Provision 1-1-67	3,500

Prepare Trading and Profit and Loss Account and Balance Sheet in proper form after making the following adjustments. (निम्नलिखित समायोजनों के बाद उचित आकार में माल एवं लाभ-हानि खाता तथा चिट्ठा बनाइये):—

(i) Depreciate Plant & Machinery by 10% (प्लांट व मशीनरी पर 10% मूल्य ह्रास काटिये ।)

(ii) Write off Rs. 500 from preliminary expenses. (प्रारम्भिक व्ययों से 500 रु० अपलिखित कीजिये ।)

(iii) Provide half year's debenture interest due. (ऋण-पत्रों पर आधे वर्ष के ब्याज के लिए प्रावधान कीजिये ।)

(iv) Leave Bad and Doubtful Debts Provision at 5% on Sundry Debtors. (विविध देनदारों पर डूबत एवं संदिग्ध ऋण के प्रावधान को 5% दर पर रखिये ।)

(v) Stock on 31st December, 1967 was Rs. 95,000 (31 दिसम्बर 1967 को रहतिये का मूल्य 95,000 रु० था ।)

Solution :

The Alpha Manufacturing Company Limited
Balance Sheet as at 31st December, 1967

Figures for previous year	Liabilities	Figures for current year	Figures for previous year	Assets	Figures for Current year
Rs.		Rs.	Rs.		Rs.
	Share Capital :			*Fixed Assets :*	
	Authorised :			Goodwill	25,000
	60,000 Equity Shares of Rs. 10 each.	6,00,000		Premises	3,00,000
				Plant and Machinery Rs. 3,30,000 Less Dep. 33,000	2,97,000
	Issued & Subscribed : 40,000 Equity Shares of Rs. 10 each fully called up. Rs. 4,00,000 Less calls in arrears 7,500	3,92,500		Fixtures	7,200
				Investments :	Nil
				Current Assets, Loans and Advances :	
	Reserves & Surplus :			Stock	95,000
	General Reserve	25,000		Debtors Rs. 87,000 Less provision 4,350	82,650
	Profit & Loss Account	37,500			
	Secured Loans :				
	6% Debentures	3,00,000		Cash at Bank	39,900
	Unsecured Loans :	Nil		Cash in hand	750
	Current Liabilities and Provisions			*Miscellaneous Exp. :*	
	Bills Payable	38,000		Preliminary Exp.	4,500
	Sundry Creditors	50,000			
	Interest on Debentures	9,000			
		8,52,000			8,52,000

Trading and Profit & Loss Account
for the year ending 31st December, 1967

Dr.

Figures for previous year	Particulars		Figures for current year	Figures for previous year	Particulars	Figures for current year
Rs.			Rs.	Rs.		Rs.
	To Opening Stock		75,000		By Sales	4,15,000
	To Purchases		1,85,000		By Closing Stock	95,000
	To Wages		84,865			
	To Freight & Carriage		13,115			
	To Gross Profit c/d		1,52,020			
			5,10,000			5,10,000
	To Salaries	Rs.	14,500		By Gross Profit b/d	1,52,020
	To Interest on debentures	9,000				
	Add outstanding	9,000				
			18,000			
	To General Expenses		16,835			
	To Preliminary Exp.		500			
	To Directors' fees		5,725			
	To Bad Debts	2,110				
	Add New Provision	4,350				
		6,460				
	Less Existing Provision	3,500				
			2,960			
	To Dep. on Plant & Machinery		33,000			
	To Net Profit		60,500			
			1,52,020			1,52,020
	To Interim Dividend		37,500		By Balance brought forward from last year	14,500
	To Balance carried to B/S		37,500		By Net Profit for current year	60,500
			75,000			75,000

Illustration 48

From the following trial balance of Kailash Paper Mills Ltd., prepare a Profit and Loss Account for the year ending 31st March, 1968 and a Balance Sheet as on that date. (कैलाश पेपर मिल्स लिमिटेड के निम्नलिखित तलपट से 31 मार्च, 1968 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिये लाभ-हानि खाता तथा उक्त तिथि को चिट्ठा बनाइये) :—

	Rs.		Rs.
Block	46,83,950	Share Capital	40,94,500
Stock of Paper	2,51,000	Forfeited Shares	3,000
Material Consumed	19,48,235	Unclaimed Dividend	2,36,900
Stock of Material	13,40,027	5% Debentures	10,00,000
Productive wages	6,98,000	Creditors	4, 25,461
Debenture Interest	50,000	Depreciation a/c	13,04,725
General Exp.	3,06,000	P. & L. a/c	1,92,143
Investments	3,57,000	Sales	37,30,000
Debtors	3,02,415	Transfer fee	1,000
Cash in hand	92,602	Interest	18,000
Cash at Bank	12,33,000	General Reserve	4,60,000
Interim Dividend	2,03,500		
	1,14,65,729		1,14,65,729

The following points are to be considered (निम्नलिखित बातों को ध्यान में रखना है):—

The Authorised Share Capital of the company is Rs. 1,00,00,000 divided into Rs. 10 shares; Stock of Paper on 31st March, 1968 was Rs. 9,87,556; Depreciate Block by Rs. 3,00,000; Increase General Reserve by Rs. 3,50,000; Commission payable Rs. 1,28,914; Interest accrued on Investments Rs. 3,450; The Directors recommended to pay a dividend @ 10% on paid up share capital of the company for the year 1967-68.

(कम्पनी की अधिकृत पूंजी 10 रु० वाले शेयरों में विभाजित 1 करोड़ रु० है; पेपर का स्टॉक (31-3-68) 9,87,556 रु० है; सम्पत्ति पर 3,00,000 रु० से मूल्य ह्रास काटिये; सामान्य संचय को 3,50,000 रु० से बढ़ाइये; कमीशन के 1,28,914 रु० देने हैं; विनियोग पर अर्जित ब्याज 3,450 रु०,

(a) Cost to 31st December, 1965 :

	Rs.
Land and Building	1,59,43,140
Plant & Machinery	3,58,92,542
Electric Installations	44,28,261
Furniture & Fixtures	2,18,947
Vehicles	2,54,011

(b) Additions in 1966 :

Land & Buildings	13,85,721
Plant & Machinery	13,36,588
Electric Installations	2,73,648
Furniture & Fixtures	71,404
Vehicles	45,568

(c) Sales in 1966 :

Land & Buildings	1,960
Plant & Machinery	1,754
Furniture & Fixtures	169

(d) Depreciation Provided upto 31-12-1965 :

	Rs.
Land & Buildings	39,10,720
Plant & Machinery	2,08,82,915
Electric Installations	19,83,508
Furniture & Fixtures	61,100
Vehicles	89,979

(e) Depreciation Provided for 1966 :

	Rs.
Land & Buildings	5,53,547
Plant & Machinery	23,97,005
Electric Installations	2,16,167
Furniture & Fixtures	21,605
Vehicles	43,494

(f) Depreciation in respect of assets sold during the year :

	Rs.
Land & Buildings	399
Plant & Machinery	920
Furniture & Fixtures	40

Solution :

Union Limited

Schedule of Fixed Assets to be attached to and forming part of the Balance Sheet as at 31st Dec., 1966

Particulars	Land and Buildings	Plant and Machinery	Electric Installations	Furniture & Fixtures	Vehicles
	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.	Rs.
Cost upto 31-12-65	1,59,43,140	3,58,92,542	44,28,261	2,18,947	2,54,011
Additions in 1966	13,85,721	13,36,588	2,73,648	71,404	45,568
	1,73,28,861	3,72,29,130	47,01,909	2,90,351	2,99,579
Less Cost of Sales in 1966	1,960	1,754	—	169	—
	1,73,26,901	3,72,27,376	47,01,909	2,90,182	2,99,579
Less Dep. to date	44,63,868	2,32,79,000	21,99,675	82,705	1,33,473
Written down value on 31-12-66	1,28,63,033	1,39,48,376	25,02,234	2,07,477	1,66,106

*The amount of depreciation to date has been calculated as follows:—

	Rs.
Land & Buildings—Rs. (39,10,720+5,53,547—399)=	44,63,868
Plant & Machinery—Rs. (2,08,82,915+23,97,005—920)=	2,32,79,000
Electric Installations—Rs. (19,83,508+2,16,167)=	21,99,675
Furniture & Fixtures—Rs. (61,100+21,605)=	82,705
Vehicles—Rs. (89,979+43,494)=	1,33,473

Questions

1. (a) What is the difference between 'Net Profit' and 'Divisible Profit' of a Joint Stock Company ?

(b) Can dividend be declared out of (i) Capital Profits, (ii) Current Profits without making good past losses, and (iii) Balance of profit from previous year without making good the loss sustained during the current year ?

(अ) एक संयुक्त स्कन्ध कम्पनी के 'शुद्ध लाभ' तथा 'विभाजन योग्य लाभ' में क्या अन्तर है ?

(ब) क्या लाभांशों की घोषणा, (i) पूंजीगत लाभों में से; (ii) पिछली हानियों को अपलिखित किये बिना चालू में से; तथा (iii) चालू वर्ष की हानि को अपलिखित किये बिना गत वर्ष के लाभों में से की जा सकती है ?

2. State briefly the law and procedure regarding declaration and payment of dividends by a company. What accounting entries are passed at the time of declaration and payment of dividends ?

एक कम्पनी द्वारा लाभांश घोषणा तथा भुगतान सम्बन्धी कानून तथा प्रक्रिया का संक्षेप में वर्णन कीजिए। लाभांश की घोषणा एवं भुगतान पर क्या-क्या लेखा प्रविष्टियां की जाती हैं ?

3. Discuss the difference between (a) Capitalisation of Profits by Issue of bonus shares, (b) Capitalisation of Profits without issue of bonus shares, and (c) Issue of bonus shares without Capitalisation of Profits. Illustrate your answer by giving examples.

Can the bonus shares still be issued without capitalisation of profits?

(अ) बोनस अंशों के निर्गमन द्वारा लाभों का पूंजीकरण; (ब) बोनस अंशों के निर्गमन बिना लाभों का पूंजीकरण तथा (स) लाभों के पूंजीकरण बिना बोनस अंशों का निर्गमन; इन तीनों में अन्तर बताइये। उदाहरण द्वारा अपने उत्तर को स्पष्ट कीजिए।

लाभों के पूंजीकरण बिना बोनस अंश क्या अब भी निर्गमित किये जा सकते हैं?

4. What are bonus shares? In what circumstances is the issue of bonus shares justified? What accounting entries are passed if bonus shares are paid (i) out of current profits; (ii) out of past profits or reserves and (iii) partly out of current profits and partly out of past profits?

बोनस अंश क्या हैं? बोनस अंशों का निर्गमन किन परिस्थितियों में न्यायोचित है? यदि बोनस अंश (i) चालू लाभों में से; (ii) गत लाभों अथवा संचयों में से; तथा (iii) आंशिक चालू लाभों में से व आंशिक गत लाभों में से, भुगतान किये जायें तो क्या प्रविष्टियां की जावेंगी?

5. *Write Short notes on:* (a) Interim Dividend, (b) Interest out of Capital, (c) Profit and Loss Appropriation Account, and (d) Publication of Annual Accounts of a Joint Stock Company.

संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिये:—(अ) अंतरिम लाभांश, (ब) पूंजी में से ब्याज, (स) लाभ व हानि नियोजन खाता, (द) एक संयुक्त स्कन्ध कम्पनी द्वारा वार्षिक खातों का प्रकाशन।

6. Discuss the provisions of Section 205 of the Indian Companies Act with respect to:

(i) Current Year's depreciation;
(ii) Arrears of depreciation; and
(iii) Past Losses;

भारतीय कम्पनी अधिनियम की धारा 205 के निम्नलिखित के सम्बन्ध में प्रावधानों की विवेचना कीजिए:

(i) चालू वर्ष का मूल्य ह्रास;
(ii) मूल्य ह्रास का बकाया; तथा
(iii) पिछली हानियां

7. The accounts of Midland Industries Ltd. showed an amount of Rs. 1,00,000 to the credit of P. & L. a/c on 31st December, 1967 out of which directors decided to place Rs. 20,000 to General Reserve and Rs. 5,000 to Debenture Redemption Fund. The directors further recommended to place Rs. 10,000 to a special Reserve Fund (to provide for contingencies) and to pay bonus of $2\frac{1}{2}\%$ of the

profits to employees. The payment of annual dividend on Rs. 2,50,000 6% cumulative pref. shares and a dividend @ 10% on equity share capital of Rs. 3,00,000 was also recommended by the Board of Directors. The recommendations were approved by the shareholders in the annual general meeting on 12th May, 1968.

Prepare Profit and Loss Appropriation Account for the year ending 31st December, 1967 and pass necessary journal entries to record the above transactions during the years 1967 and 1968.

31 दिसम्बर, 1967 को मिडलैण्ड इन्डस्ट्रीज लिमिटेड के लेखों द्वारा लाभ-हानि खाते के क्रेडिट पक्ष में 1,00,000 रु० की राशि बतलाई गई जिसमें से संचालकों ने सामान्य संचय में 20,000 रु० तथा ऋण-पत्र शोधन कोष में 5,000 रु० ले जाने का निश्चय किया। संचालकों ने आगे सिफारिश की कि विशेष रिजर्व फंड (संभावित हानियों की पूर्ति हेतु) में 10,000 रु० ले जाये जायें तथा कर्मचारियों को लाभ का $2\frac{1}{2}$% बोनस भुगतान किया जाये। 2,50,000 रु० की 6% अधिमान अंश पूंजी पर वार्षिक लाभांश तथा 3,00,000 रु० की ईक्विटी अंश पूंजी पर 10% लाभांश भुगतान की भी संचालक मण्डल द्वारा सिफारिश की गई। 12 मई, 1968 को वार्षिक साधारण सभा में अंशधारियों द्वारा उक्त सिफारिश की पुष्टि कर दी गई।

31 दिसम्बर 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए लाभ-हानि नियोजन खाता बनाइये तथा उपर्युक्त सौदों को 1967 व 1968 में दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए। [186]

8. On 31st March, 1968 the subscribed capital of a public limited company was as follows. (31 मार्च, 1968 को एक सार्वजनिक सीमित कम्पनी की अभिदत्त पूंजी निम्न प्रकार थी):—

		Rs.
5,000	6%(Tax-free) Preference Shares of Rs. 100 each fully paid, issued in 1958	5,00,000
5,000	7%(Taxable) Pref. Shares of Rs. 100 each fully paid, issued in 1959	5,00,000
3,000	9%(Taxable) Pref. Shares of Rs. 100 each fully paid, issued in 1962	3,00,000
		Rs.
2,00,000	Equity Shares of Rs. 10 each fully paid, issued in 1957	20,00,000
50,000	Equity Shares of Rs. 10 each issued as rights shares in July, 1967 to rank for dividend from 1st August, 1967 fully called up less Rs. 20,000 calls in arrear	4,80,000

The net profit for the current year amounted to Rs. 3,13,198 to which an amount of Rs. 16,327 brought forward from last year was added, thus making a total

of Rs. 3,29,525. The directors recommended to pay the dividend due on preference shares and maintain the rate of dividend on equity shares at 10% per annum as in past two years. The directors also decided to carry forward a balance of Rs. 12,675 to the next year. Being short of funds, *the necessary amount was to be transferred* from General Reserve.

Prepare a statement showing the amount of dividends to be paid by the company for the year 1967-68 and give the Profit & Loss Appropriation Account.

(चालू वर्ष के लिए शुद्ध लाभ 3,13,198 रु० थे जिनमें गत वर्ष से लाये गये 16,327 रु० जोड़े गये; इस प्रकार 3,29,525 रु० का योग हो गया। संचालकों ने अधिमान अंशों पर देय लाभांश के भुगतान करने और गत दो वर्षों की भाँति, इस वर्ष भी ईक्विटी अंशों पर 10 प्रतिशत वार्षिक दर से लाभांश देने की सिफारिश की। संचालकों ने अगले वर्ष के लिए 12,675 रु० की राशि ले जाने का भी निश्चय किया। धन की कमी के कारण, आवश्यक राशि सामान्य संचय से हस्तान्तरित की जाती है।

1967-68 वर्ष के लिए कम्पनी द्वारा देय लाभांश की राशि दिखाते हुए एक विवरण बनाइये तथा लाभ-हानि नियोजन खाता भी दीजिए।) [187]

Answer. Pref. Share Dividend Rs. 1,04,850: Equity Share Dividend Rs. 2,32,000; Amount transferred from General Reserve Rs. 20,000.

9. On 31st December, 1967, the subscribed share capital of X Co. Ltd. was as follows :—

		Rs.
20,000	5% Participating Pref. Shares of Rs. 100 each fully Paid	20,00,000
15,000	Equity Shares of Rs. 100 each fully paid	15,00,000

According to the terms of issue, after paying 10 per cent annual dividend on equity shares, the preference shareholders would participate equally with the equity shareholders in the surplus available after transfer to general reserve, etc. by the directors. The net profit for the current year was Rs. 3,57,000 to which Rs. 15,000 brought forward from last year was added. The directors decided to transfer Rs. 50,000 to general reserve and carry forward Rs. 12,000 to next year. The directors recommended to pay pref. share dividend and 10% dividend on equity shares and further to distribute the surplus according to the terms of the issue.

Prepare P. & L. Appropriation Account and *show what additional rate of* dividend would be available to preference shareholders.

31 दिसम्बर, 1967 को एक्स कम्पनी लिमिटेड की अभिदत्त पूंजी निम्न प्रकार थी :—

		रु०
20,000	100 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त अवशिष्टभागी अधिमान अंश	20,00,000
15,000	100 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त ईक्विटी अंश	15,00,000

निर्गमन की शर्तों के अनुसार, ईक्विटी अंशों पर 10% वार्षिक लाभांश चुकाने के बाद, अधिमान अंशधारक, संचालकों द्वारा सामान्य संचय इत्यादि में हस्तान्तरण के पश्चात् उपलब्ध आधिक्य में से, ईक्विटी अंशधारियों के साथ बराबर हिस्सा बंटायेंगे। चालू वर्ष का शुद्ध लाभ 3,57,000 रु० था जिसमें गत वर्ष से लाये गये 15,000 रु० जोड़े गये। संचालकों ने 50,000 रु० सामान्य संचय में तथा अगले वर्ष के लिए 12,000 रु० ले जाने का निश्चय किया।

संचालकों ने अधिमान अंश-लाभांश तथा ईक्विटी अंशों पर 10% लाभांश देने की सिफारिश की तथा आगे उपलब्ध आधिक्य को भी, निर्गमन की शर्तों के अनुसार बांटने की सिफारिश की।

लाभ-हानि नियोजन खाता बनाइये तथा बतलाइये कि अधिमान अंशधारकों को अतिरिक्त लाभांश की क्या दर मिलेगी। [188]

Answer : Additional rate of dividend to Pref. Shareholders $1\frac{1}{2}\%$

10. Green Ltd. has an issued share capital of Rs. 2,00,000 divided in equity shares of Rs. 10 each fully paid and makes up its accounts annually to 31st march.

On 31st March, 1967, the following balances (inter alia) appear in the books.

	Rs.
Unclaimed Dividends Account	527
Unclaimed Dividend Bank Account	527

On 10th July, 1967, a dividend of 16 per cent was declared for the year ending 31st March, 1967, warrants being despatched on the following day. On 11th July, 1967 a separate banking account was opened for the payment of dividends. During the year ended 31st March, 1968, the following payments were made :—

July, 1967	Rs. 29,888 (all for current year's dividends)
August, 1967	Rs. 1,200 (including Rs. 160 on account of past years' dividends)
Sept., 1967	Rs. 480 (including Rs. 32 on account of past years' dividends)

On 31st March, 1968, the balance of Dividend Bank Account was transferred to Unclaimed Dividend Bank Account.

Pass necessary journal entries to record these transactions and post them into ledger.

ग्रीन लिमिटेड की निर्गमित अंश पूंजी, 10 रु० वाले पूर्ण प्रदत्त ईक्विटी अंशों में विभाजित, 2,00,000 रु० की थी तथा वह अपने वार्षिक खाते 31 मार्च को तैयार करती है।

31 मार्च, 1967 को (अन्य के अतिरिक्त) पुस्तकों में निम्न शेष थे :—

	रु०
न मांगे गये लाभांश खाता	527
न मांगे गये लाभांश बैंक खाता	527

10 जुलाई, 1967 को 16% का लाभांश (31 मार्च, 1967 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए) घोषित किया गया; अधि-पत्र अगले दिन प्रेषित कर दिये गये। लाभांश के भुगतान के लिए, 11 जुलाई, 1967 को एक अलग बैंक खाता खोला गया। 31 मार्च, 1968 को समाप्त होने वाले वर्ष में निम्नलिखित भुगतान किये गये :—

जुलाई	1967	—	29,888 रु०	(चालू वर्ष के लाभांशों के लिए)
अगस्त,	1967	—	1,200 रु०	(जिसमें गत वर्षों के लाभांशों के 160 रु० सम्मिलित हैं)
सितम्बर,	1967	—	480 रु०	(जिसमें गत वर्षों के लाभांशों के 32 रु० सम्मिलित हैं)

31 मार्च 1968 को 'लाभांश बैंक खाते' का शेष 'न मांगे गये लाभांश बैंक खाते' में हस्तान्तरित कर दिया गया।

इन सौदों को दर्ज करने के लिए आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिए तथा उनकी खाता बही में खतौनी कीजिए। [189]

Answer : Balance of Unclaimed Dividend Account Rs. 959

11. Pass Journal entries in the following circumstances :—

(a) A limited company with a subscribed capital of Rs. 1,00,000 in shares of Rs. 10 each, had called up Rs. 7.50 per share. A bonus of Rs. 25,000 is declared out of General Reserve to be applied for making the existing shares fully paid up.

(b) A limited company having a paid up capital of Rs. 5,00,000 in shares of Rs. 10 each, had a General Reserve of Rs. 90,000 built up out of profits. It was resolved to capitalise Rs. 50,000 out of the General Reserve by issuing 5,000 fully paid bonus shares of Rs. 10 each, each shareholder to get one such share for every ten shares held by him in the company.

(c) A limited company with a paid up capital of Rs. 80,000 in shares of Rs. 5 each declared a bonus of Rs. 30,000 out of current year's profits; payable in fully paid up shares of Rs. 5 each at a premium of Rs. 2·50 per share, each shareholder to get one such share for every four shares that he held in the company.

निम्नलिखित परिस्थितियों में जर्नल प्रविष्टियां दीजिए:—

(अ) एक सीमित कम्पनी 10 रु० वाले अंशों में विभाजित 1,00,000 रु० की अपनी अभिदत्त पूंजी पर 7·50 रु० प्रति अंश के हिसाब से मांग चुकी है। वर्तमान अंशों को पूर्ण प्रदत्त बनाने के लिए सामान्य संचय में से 25,000 रु० के बोनस की घोषणा की जाती है।

(ब) एक सीमित कम्पनी, जिसकी चुकता पूंजी 10 रु० वाले अंशों में विभाजित 5,00,000 रु० की थी, के पास गत वर्षों के लाभों में से संचित 90,000 रु० का सामान्य संचय था। सामान्य संचय में से 50,000 रु० की राशि का पूंजीकरण करने का निश्चय किया गया। उक्त निश्चय के फलस्वरूप प्रत्येक 10 अंशों के धारक को एक अंश के हिसाब से 10 रु० वाले 5,000 पूर्ण प्रदत्त बोनस अंश निर्गमित किये जावेंगे।

During the year, 1968, resolutions were duly passed for the following :—

(i) The proposed dividends be declared; and

(iii) The proposed bonus of 20 per cent on equity shares out of current year's profits be paid by issue of one fully paid equity share for every five equity shares held.

Pass necessary Journal entries to carry out the above resolutions, assuming that the dividend has been paid in full through the bank.

(1968 वर्ष में निम्नलिखित के लिए प्रस्ताव पास किये गये :—

(i) प्रस्तावित लाभांशों की घोषणा की जाय; तथा

(ii) चालू वर्ष के लाभों में से ईक्विटी अंशों पर 20% की दर पर प्रस्तावित बोनस का, प्रत्येक 5 ईक्विटी अंशों के लिए 1 पूर्ण प्रदत्त ईक्विटी अंश के हिसाब से, भुगतान किया जाय।

यह मानते हुए कि लाभांश का बैंक के जरिये पूर्ण भुगतान हो जाता है, उक्त प्रस्तावों के पालनार्थ आवश्यक जर्नल प्रविष्टियां दीजिये।) [193]

15. The following is the trial balance of Nav Bharat Co. Ltd. as at 30th June, 1968. Prepare the Trading and Profit and Loss Account for the year ending 30th June, 1968 and a Balance Sheet on that date in the form prescribed by the Indian Companies Act, 1956. (30 जून, 1968 को नव भारत कम्पनी लिमिटेड का निम्नलिखित तलपट है। 30 जून, 1968 को समाप्त होने वाले वर्ष के लिए व्यापार तथा लाभ-हानि खाता व उक्त तिथि को उस आकार में चिट्ठा बनाइये जैसा कि भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 द्वारा निर्धारित किया गया है।) :—

	Rs.		Rs.
Calls in Arrears	6,400	Authorised Capital	
Land & Buildings	35,000	50,000 shares of Rs. 10 each	
Plant & Machinery	15,000	Subscribed Capital	
Furniture	3,200	10,000 shares of Rs. 10 each	1,00,000
Carriage Inwards	3,000	Provision for bad debts	1,400
Wages	21,400	Sales	80,000
Salaries	4,600	Purchases Returns	3,400
Sales Returns	1,700	Sundry Creditors	13,200
Rates & Taxes	900	Share Premium	6,000
Purchases	50,000	General Reserve	24,000
Bills Receivable	1,200		
General Expenses	1,900		
Sundry Debtors	42,800		
Stock	25,000		
Insurance	400		
Cash at Bank	13,000		
Cash in hand	2,500		
	2,28,000		2,28,000

Charge depreciation on Buildings Rs. 625, on Plant and Machinery and Furniture at 10%. Make a provision of 5% on Sundry Debtors for Bad debts. Carry forward Unexpired Insurance Rs. 120/-; Outstanding Wages Rs. 3,200, Salaries Rs. 500, and Rates & Taxes Rs. 200. The value of Stock on 30th June, 1968 was Rs. 30,000.

(भवन पर 625 रु०, प्लान्ट व मशीन तथा फर्नीचर पर 10% मूल्य ह्रास अपलिखित कीजिए। विविध देनदारों पर डूबत ऋण के लिये 5% का प्रावधान रखिये। बीमा के 120 रु० अगले वर्ष के लिए ले जाइये। बकाया मजदूरी 3,200 रु०, बकाया वेतन 500 रु०, बकाया दर व कर 200 रु०। 30 जून, 1968 को रहतिया का मूल्य 30,000 रु० था।) [194]

Answer : G. P.—Rs. 9,100; Net Loss—Rs. 2,465; B/S Total Rs. 1,38,235.

16. The following is the trial balance at 30th June, 1968 of X Y Company Limited. (30 जून, 1968 को एक्स वाई कम्पनी लिमिटेड का निम्नलिखित तलपट है):—

Trial Balance as on 30th June, 1968

	Rs.	Rs.
Stock	7,500	
Purchases and Sales	24,500	35,000
Productive Wages	5,000	
Discounts	700	500
Salaries	750	
Rent	495	
General Expenses	1,705	
Profit & Loss Account (July 1, 1967)		1,503
Dividend paid August, 1967	500	
Interim Dividend paid Feb., 1968	400	
Share Capital—10,000 shares Re: 1/- each		10,000
Debtors & Creditors	3,750	1,750
Plant & Machinery	2,900	
Cash in hand	450	
Cash at Bank	1,495	
General Reserve		1,550
Bad debts	158	
	50,303	50,303

Take care of the following adjustments and prepare Profit and Loss Account for the year ending 30th June, 1968 and a Balance Sheet as on that date :—

Depreciate Machinery @ 10% p. a. Provide for 5% discount on debtors; Allow 2½% discount on creditors; One month's rent Rs. 45 was due; Six months' insurance (included in General Expenses) was unexpired at Rs. 75 per annum; Closing stock was valued at Rs. 8,200. (calculations to the nearest rupee)

(निम्नलिखित समायोजनों का ध्यान रखिये और 30 जून, 1968 को समाप्त होने वाले वर्ष वे लिये लाभ-हानि खाता तथा उस तिथि को चिट्ठा तैयार कीजिए :—

मशीनरी पर 10% वार्षिक मूल्य ह्रास काटिये; देनदारों पर छूट के लिए 5% प्रावधान करिये लेनदारों पर छूट के लिये 2½% रखिये; एक महीने का किराया 45 रु० बकाया है; छः महीने के बीमे के खर्चे को (जो सामान्य खर्चों में शामिल हैं) 75 रु० वार्षिक में से आगे ले जाइये; अन्तिम रहतिये का मूल्य 8,200 रु० था। (निकटतम रुपयों में गणना कीजिए) [195]

Answer : G. P.—Rs. 6,200; N. P.—Rs. 2,451; P. & L. Appropriation a/c balance Rs. 3,054, B/S Total—Rs. 16,355.

17. An inexperienced accountant has prepared the Balance Sheet of Y Ltd. as at 31st March, 1968 as follows. Redraft the Balance Sheet in the form prescribed by Indian Companies Act, 1956, giving comments as you deem necessary. (एक गैर अनुभवी लेखापाल ने 31 मार्च, 1968 को वाई लिमिटेड का चिट्ठा निम्न प्रकार तैयार किया है। भारतीय कम्पनी अधिनियम, 1956 द्वारा निर्धारित आकार में चिट्ठे को पुनः तैयार कीजिये तथा जिन टिप्पणियों को आप आवश्यक समझें, उन्हें भी दीजिए।):—

Balance Sheet of Y Ltd. as on 31st March, 1968

Liabilities	Amount	Assets		Amount
	Rs.			Rs.
Trade Creditors	80,900	Stock :	Rs.	
Advances from customers	42,260	In hand	3,60,480	
Share Capital	8,00,000	With Agent	24,300	
Profit & Loss Account	45,630			3,84,78
Provision for taxation	95,000	Cash in hand and at Bank		23,54
Proposed Dividends	59,000	Investments		20,00
Loan to Managing Director	5,000	Fixed Assets :		
General Reserve	75,000	Freehold Premises	1,80,000	
Development Rebate Reserve	30,000	Plant & Machinery (less depreciation)	4,10,000	
				5,90,00
Provision for contingencies	23,000	Debtors	2,15,450	
Share Premium Account	22,000	Less Provision for bad debts	9,300	
Forfeited Shares Account	3,000			2,06,15
		Bills Payable		5,00
		Amount due from Agents		51,3[illegible]
	12,80,790			12,80,7[illegible]

Supply imaginary details wherever necessary. (जहाँ आवश्यकता हो, काल्पनिक [illegible] विवरण दीजिये।) [196]

Answer : B/s Total Rs. 12,80,790

Revisional Problems

18. The subscribed share capital of X Cement Co. Ltd. on December 31, 1964 was as follows :

	Rs.
6,65,746 Cumulative Preference Shares of Rs. 10 each fully paid up	66,57,460
18,59,965 Equity Shares of Rs. 10 each fully paid up	1,85,99,650
	2,52,57,110

The net profit of the company (before taxation) for the year ended December 31, 1964 amounted to Rs. 1,32,33,246 to which is to be added the sum of Rs. 34,258 being the balance brought forward from the previous year. A provision of Rs. 73,00,000 was made for taxation and the directors appropriated the remaining amount as follows :

Transfer to :	
General Reserve	[illegible]
Contingency Reserve	10,50,000
Development and Rehabilitation Reserve	5,24,185
Dividend Reserve	34,20,060

Out of Dividend Reserve, the directors have recommended for the consideration of the shareholders the payment of dividend as follows :

On preference shares Rs. 0.78 per share;

On equity shares Rs. 1.25 per share;

The directors further recommended the payment of supplementary dividend @ Re. 0.12 per preference share and Re. 0.25 per equity share so that the shareholders may also join the happiness of the silver jubilee of the cement industry.

The above recommendations were approved by the shareholders in the annual general meeting held on June 10, 1965. The dividend warrants were despatched on the following day and the payment of dividend was claimed in full by June 30, 1965.

Prepare Profit and Loss Appropriation a/c and pass necessary journal entries assuming that the payment of dividend was made through a separate dividend bank account.